

विश्व-इतिहास (प्राचीन काल)

हिन्दी समिति-ग्रन्थमाला-५४

विश्व-इतिहास

(प्राचीन काल)

लेखक

डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी

सागर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति

हिन्दी समिति

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश

प्रथम सम्पादन-१०६०
द्वितीय सम्पादन-१०६१

मू-य
१४ ' ० रूपय

प्रकाशकोय

द्विविध संचार-माघना क विस्तार और पारस्परिक विचार विनिमय की सुविधाओं की अभिवृद्धि के कारण आज ममस्त सगर क निवासी एक दूसरे क अधिक निकट हाते चले जा रह ह । रमल टगार तथा गाधीजी जस विश्वव बुर क प्रवतका की विचारधारा मानव का विश्व मानव बनान म सहायक हुई है । ऐसी दशा म मानव-जाति की विभिन्न दशा म वसा हुई टकडिया क अनुभव जा रह विश्वासा के तथा उनक विगत जीवन की घटनाओं के विवरण, उनके साहित्य, दान और कला क परिपाक तथा उनके चारित्रिक गुण-दापा के इतिवत्त का अध्ययन वतमान आर भविष्य की मानवता का जनेक गडडा म गिरने म बचा सकेगा तथा उसका जिनामा शान्त कर उसका माग दान भी कर सकगा । अभी लिए इतिहास के अध्ययन का क्षेत्र दान विनेप जथवा काल विगप के इतिहास तक ही सीमित न रहकर विश्व इतिहास तक व्यापक हो गया है । हिंदी म इमी आवश्यकता का पूर्ति का दृष्टि से यह पुस्तक लिखी गयी ह ।

हिंदी समिति प्रथमांक क ५४ व पुष्प का यह तीथ मस्करण है । उमक संस्कृत समिति के मतपूर्व तथा प्रथम अध्यक्ष डा० रामप्रसाद त्रिपाठी ह । आप इतिहास के प्रसार विद्वान आर अपने विषय के ममन ह । आपन प्राचीन जगन की प्रतापी हिंदी मिट्टनी जमीरियाई, मिला यहूना, सुमरियन सिंधुघाटीय जाय ईरानी गमन, यनानी तथा चीना मानव-जातिया के नमविकाम का थाडे म बषन कर गागर म भागर भरने का सफल प्रयास किया ह । आपा ह हिंदी के पाठका का यह ग्रथ रचिकर प्रतीन हागा और उनके ज्ञान-वधन म विनेप सहायक हागा ।

लीलाधर शर्मा 'पवतीय'

मचिव हिंदी समिति उत्तर प्रदेश

विषय-सूची

प्राक्कथन	११
सूचिका	१२

प्रथम खण्ड

१ मेनापट्टेमिया	१
२ मिश्र	१९
३ हिट्टनी आर मिट्टना	३२
४ मिश्र साम्राज्य क नये युग का उत्थान और पतन	८४
५ राम	७६
६ भारतवर्ष	१६८

द्वितीय खण्ड

७ श्रीट टापू	२१७
८ ग्रीस	२२०
९ ईरान	२९५
१० चान	३३५
अनुष्मणिका	४०१
मानचित्र १ २ ३ ४, ५	४१७
चिन्तावली (अन मे)	

चित्रावली

- १ राजपुत्राहित मूर्त्तिया (पृ० १)
- २ मंगल मूर्त्तिका (पृ० २०)
- ३ गोजा का पिरामिड (पृ० ४१)
- ४ प्राचीन मिस्र व शृषका द्वारा बनाए गए मंगल मूर्त्तिका और शृषका (पृ० २)
- ५ शृषुपति मूर्त्तिका (पृ० ३०)
- ६ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ३०)
- ७ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- ८ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- ९ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- १० मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- ११ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- १२ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- १३ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- १४ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- १५ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- १६ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- १७ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- १८ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- १९ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- २० मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- २१ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- २२ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)
- २३ मंगल मूर्त्तिका और उनका पत्नी मूर्त्तिका (पृ० ६३)

- २४ गांधार बला व बुद्ध (प० १८१)
२५ साचा स्तूप (प० १९५)
२६ कार्लि चत्य (प० १९५)
२७ पौरवगज (प २ ०)
२८ प्लटा जरस्तू (प० २७१)
२९ मुकरात (प० २७३)
३० हामर (प० २८८)
३१ गारा महान की मति (प० ३०१)
३२ पारसिपालिस व स्तम्भ (प० ३११)
३३ जग्घुष्ट (प० ३१२)
३४ पशघर अट्टरमज्जा (प० ३१२)
३५ मन्नाट गापुर म प्रथम रामन मन्नाट क्षमा माग रहा = (प० ३३०)
३६ मदिरा पात्र (जाटवी गताली) (प० ३७३)
३७ वन्ध्यामियम (प० ३८९)
३८ लाजात्म (प० ३९०)

प्राक्कथन

राजनीति, आर्थिक, सामाजिक, सामूहिक जादि घटनाओं तथा प्रवृत्तियों का समग्र सन्दर्भ इतिहास की रूपरेखा बनती है। उनका पारस्परिक सम्बन्ध इतना घनिष्ठ है कि एक अंग का भी अभाव होने से इतिहास विकृत-मूर्च्छित हो जाता है। उपर्युक्त मानवीय व्यापारों की उत्पत्ति और उनका विकास प्रत्येक देश प्रदत्त भूमि भाग जाति का भौगोलिक स्थिति का अनुमान होता है। प्रकृति और मानव की क्रियाओं का परिनिर्णयनात्मक इतिहास का विकास होता है। साधारण पाठकों के लिए मर्यादित सूत्रों और छोट-छोटे आकार में छद्म सङ्ग्रहों का इतिहास का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना एक प्रकार का दुःसाध्य है। इसी कठिनाई से बचने के लिए संक्षेप इतिहास का एक अंग का ही वर्णन करना अतिसंभव समझते हैं। किन्तु अंग विशेष का सूक्ष्म वर्णन से भी व्यक्ति का स्वरूप मतिमान नहीं होता, उसी प्रकार मानव-व्यापार का किसी विशेष अंग के वर्णन से इतिहास का स्वरूप प्रकट नहीं होता। लक्ष्य छोटे चित्र के भी निर्माण करने के लिए इतिहास के मुख्य अंगों का उपेक्षा नहीं की जा सकती। स्थान तथा समय का अभाव में यह अनिवार्य हो गया कि इतिहासिक प्रवाह की माटी तथा महत्वपूर्ण घटनाओं और विषयों पर ही ध्यान रखा जाय। और जहाँ तक उचित हो ऐसी संज्ञाएँ दी जायें जिनमें पाठकों की कल्पना एवं उत्सुकता का कुछ उत्तेजन प्राप्त हो और उन्हें अधिक ज्ञान की प्रेरणा हो।

पुरातन इतिहास में सम्बन्धित नवान् सामग्री कभी कभी निकलती रहती है जिसमें प्रचलित विचारों में कान्-छोट हो जाती है। कभी कभी नये दृष्टिकोण भी उपस्थित हो जाते हैं। जो यह आवश्यक हो जाता है कि यदि हाँ सके तो प्रति पाठक या दश वर्ष के बाद पुरातन इतिहास की पुस्तक का सम्धार होता रहे। फिर भी माटी तथा मुख्य घटनाओं की रूपरेखा में अमर परिवर्तन बहुत कम पाया जाता है।

विभिन्न भाषाओं और देशों के शब्दों का ठीक ठीक उच्चारण तथा लक्षणों का भी बड़ा कठिन है। पुरातन और प्राचीन देश तथा भाषाओं का नाम दुस्मर-माह। इस समस्या का हल करने का बाद रास्ता न पाने के कारण उन नामों और

सागर का जन्मिन् ही न था। आ अंधारा में लगीया और वही में युगत जाता सम्मन्न था। रंगा मन का पाठन करत हुए गर आधर वाय न एत नरा गुणार शिया है। उदान जत्राय त्रानु आरि का विचार कर एत कार्यारि रगा र्गा ॥

जिगरा एत छार अंधारा का पन्निमा तत् है। मन्गर रगिगाता रा उाग मीम। छती हूर् वत् पूव का आर अरर इाकर रिमात्य व पन्निमा भाग म मिन् जाना है और उमर महार-मन्गर वमी आर तात गन्गर रिगागात्त शायमन् व पाम र्ग जाती है। (वाय का धारणा करि कारिगाम रा उरिा हिमात्या नाम नगाभिगज। पूथापगे नायनिघा वगाहा म्दिन पथिगाम श्य मानल्ल म भन् राना है।) उरयस्त रगा म उत्तर व गगा वा र्गा का र्ग निपरता हुआ धार धीर पान अथवा र्गन रा गया। विन्नु रगा व र्गिा म भाग व निवामिया का र्ग ह्त्त मीयत् म नितान्त वृष्णरु, रा गया।

उरयस्त रगा व उत्तरी भाग वा वाय न फिर रा रिमा म विभरत विजा। र्म विभाजन की रगा रिमालय व पन्निमी वान म र्गत्त तत् जाना है। वत् हिमालय व उत्तरी आर पूर्वी मभाग वा जिग मिन (वान) क्तन् पथर करता है। उसक् पन्निमी भाग म जिनका जम आर सबघन ट्हा उन गगा वा कार्गियन और जिनका उत्तरी और पूर्वी भाग म ट्हा उनका मगालियन अथवा चाना नाम म मन्वाधित विया गया। रिमालय म पश्चिमान्तर की आर जानरागी उरयस्त रगा म निक्लकर वुछ समरु फारम मारत पन्निमा र्गिया तथा अर्य तत् जा वम। उसा प्रकार पूर्वी र्गिणी भाग व गग मलय द्वापममरु तत् पत्त गय। अरव और फारम म उत्तरी आर द्गिणिया व ममिधण म उत्तम मीयत् आर कात् रग के गग अरव, फारम म मी पाय जात ह। कार्गियना व जा व पूव श्याम वण व ही गग र्गिणी अरव (फारम व अरविस्तान) वर्रिचस्तान (वट्टुई लाग) तथा भारत म (द्रविण गग) पत्त हुए थ। द्गिणी भारत व द्रविणा की रूपरखा अफाका व ह्मटिक गगा म मिन्ती-जन्ती =।

मारग यत् ह कि वाय साह्य व मतानुमार मन्प्या की उत्पत्ति र्गाका म हुई और वहां म निक्लकर व म मण्ल म छा गय। र्म घन्ता म ह्जारा वप लग गय हाग। इतस्तत वस ह्ग ममलाया के रूप र्ग व्यवहारा वातावरणा माजन रहन-सहन की व्यवस्था म वड हर फर हुए हाग। नयी नया मल्ल जमीम सन्ध्या म बनती रिग ती चन्गी गयी। मवत् वच गयी निक्ल लट्ट हा गया ह्जारा सम्भव है लावा वपों म वण-मन्तरा की यह लीग पन्धी मडल पर चल र्गी है।

'हमरा उल्लेखनीय मत डा० डेविडसन ट्रेक का है। आपकी राय में जादिम मानवमष्टि पूर्व मायासीन युग (सवा बगट वर्ष पूर्व) में वानरा की उम काटि स उत्पन्न हुई थी जिससे वनमानस नर प्रमाण मनष्य का विकास हुआ। उसका समूह उत्तरा भारत से ही अफ्रीका की ओर बढ़ता गया। यह मत मनुजी के कथन से मिलता-जुलता है। एतन्नाप्रमत्तस्य सकाशादप्रजमन इलाक के गोपाय का जग पवित्रा मवमानवा उमकी पुष्टि करता है। चरित्रम गण की व्याख्या व्यापक रूप में करने में आपसि की विशेष गुञाला न हानी चाहिए। मनु अथवा कारिकास के कथना का ज्ञान विज्ञानमूलक न हात हुए भी अनुश्रुति या विश्वास वस्तुस्थिति के अनुसार ही सकता है।

इस मत के मानने में कुछ 'काश' का दूर करने के लिए एतन्वध हृष्टिगतन ने यह निश्चित किया कि तिर्यत आर उमके आम पास के भूभाग में जातिम मनष्य का ज्ञान अत्रिक सम्भव है। यह शक्तिकारी घटना बीम या तीम लाख वर्ष पूर्व हुई जस हिमालय समुद्र की सतह में कुछ ऊंचा रहा हाया। उम युग में तिब्बत आर उमके आसपास के प्रमाण जल और वन्याणि वनस्पतिदा में भर हुए थे। ज्या ज्या हिमालय उठता गया आर वानावरण गणक ज्ञाना गया त्या-त्या वना की सघनता कम होती गयी आर घाटिया तथा भूतान निकलने गये जा घाम में हर भर थे। उनमें आरुपित हाकर अनेक प्रकार के पशु जिनमें हिमक पशु भी रहे हागे, धर उबर घमन फिरल रहे। पला के उरने आर भाजन की प्राप्ति के लिए बलिष्क आर उत्साहा वन जाग वनन विखरत आर पशुन चले गये। मनुष्या के कुछ वन नष्ट हो गये कुछ कम विकसित हुए आर कुछ वनमानुस की अवस्था में पीछे रहे गये। उपयुक्त बलिष्क और उद्यमशील वन्य की बद्धि और विकास अनुपातन शीघ्रता से हुए यथा तक कि वे वनमानुस में प्रगतिशील मानष्य बन जा गये आर चारा आर पशु गये। तिर्यत में जातिम मनष्य की सृष्टि का ज्ञान स्वामी दयानन्द भा मानत है यद्यपि काशगणना में भेद है। मनुभारत में एक अनुश्रुति के अनुसार मज्जर तीथ के पास वितम्बा की शकविश्रुत शकिका नटा के तट पर विप्रा की सृष्टि का सक्त है। एक विद्वान का राय में विप्र में जाय जाय का है। नर-नारायण के बदरिकाश्रम में तप करने की पौराणिक कथा सम्भव है कि जातिम मनष्य के बदरिकाश्रम के आम-पास ज्ञान का सक्त रखती है। 'मो प्रकार की जाय कल्पनाएँ हो सकती हैं किन्तु अभी तक कां सन्दरहित सिद्धान्त प्रतिष्ठित नहीं हो पाया। यह भी वदुस सम्भव है कि एशिया आर अफ्रीका

क्षमता नहीं पाया जाती। ऐतिहासिक युग में तो पुराना माप ऋषि मन्थना जन्तु पयाया एव सम्पन्न है। जातिवाद की वैज्ञानिक परिभाषा के अन्तर्गत में उमका माधारणतया सभी भाषाओं में अनेक अर्थों में प्रयोग किया जाता है। सम्यक् प्रकृति जयवा जय भावनाओं या विचारों पर अवलम्बित एकता में विश्वास करने वाले जनममह के लिए जातिवाद का माधारण प्रयोग होता है। यह आवश्यक नहीं कि एक समूह की बात छोटी हो सके या हो। प्रकृति का कुछ मात्र व्यक्त नारमन रामन श्रीव पारमी ब्रिटिश माज प्रिन्सिपल्स आदि के लिए बिना जाति मानस निकाले जाति (Race) का प्रयोग चलता जा रहा है। उमका वाइ सोमिन शत्रु प्रयत्न करने पर भी अभी तक निर्दिष्ट नहीं हो सका। यदि हाँ मक तथा जय का जय नि People Nation Community आदि का भी परिभाषा निर्दिष्ट हो गया तो अच्छा होगा। उन पर विचार करना यथेष्ट आवश्यक होगा।

प्रकृति के साथ संघर्ष

जाति मनस का प्रकृति के साथ अभी संघर्ष करना पड़ता होगा। हिमक पर्व जहरीले जीव-जन्तु दुग्ध जगल पहाड़ नद-नदी गर्मी वर्षा, जाड़ा गगन दाप जाति अनेक बाधाओं का सामना लग्ना वर्ष तक करना पड़ा होगा। न तो यथासिद्ध जाति के समान उमका टात या नावने के थ न हाथी भसा गन्त जादि के समान डाल डाल जाँर वर न मगर घण्टियाँ के समान जट में छिप रहने के साधन जाँर न विकराल बाज या गटाँर के समान चाँच जाँर उड़ने के शक्य है। किंतु उमके शत्रु में अनेक प्रकार के उपयोग की क्षमता और उमके मस्तिष्क में अभी क्षमता जय निर्माण, धारण स्मृति, चिंतन मनन आचन कल्पना अनुभूति तथा प्रित उद्योगात्मक समाधान एवं आविष्कारक शक्ति के सिवा शक्य के साधन भी थ। मस्तिष्क शक्य और वाष्प के वर उसन असाय कठिनाईयाँ जाँर जगणित प्रतिद्वन्द्विया का मन्त्रापुत्रक सामना किया। लावा वर्षा तक उम पर क्या भुजंग जाँर किस प्रकार में उसा विजय-भाग निकाले उन सबकी कथा जयत मतारजक एवं रामरूपक होगी किन्तु उमके जानने के लिए हम विज्ञान के युग में भी मानना का अन्तर्गत चिंत्य है। भगवत्पुत्रा जीव विज्ञान का मानव विज्ञान ब्रह्मा तथा पुरातत्त्वावपा कर्मा-कर्मों कुछ पकाय अवस्था के मन्त्र टाँरने के किन्तु न भी वन्त कर्म और सन्धि है। सम्भव है

कि इन कठिनार्थ का आभास प्राचीन चीनिया का हुआ है, क्योंकि उन्हो अपन प्राचीनतम काल के युग का कथना भौतिक आविष्कार के जगुमार की है।

लगभग पाँच लाख वर्ष प्रा जय रगिया एय मराप में कचर के गान का माम्माय था। प्रकृति की निष्ठर तथा अग्रहीय प्रगति के प्रतिहार के लिए मनुष्य ने आनी रथा के हित में अग्नि का आश्रय ढढ निकाला। कुछ विनाप प्रवार की लकड़िया की रग और चमक पत्थर की त्वर से धुआ जार फिर जाग निकलत देखकर उमका अग्नि जामरण करन की प्ररणा हुई हाणी। जनिमोड पुराहितम उक्त आविष्कार के अपार महत्त्व की विशय पुष्टि करता है। अग्नि के प्रकाश से उस मा तूढने में जा सहायता मिला उमकी स्मृति अग्न नय सुपथा राप जस्मान वेद के वाक्य में निहित मी प्रनीत जाना है। अग्नि की चमक और लपट तथा भस्म कर देन की शक्ति देखकर पशु भयमान हान आर भाग जात है। प्राची दिग्निरधिपति प्राची लिगाम मय तथा अग्नि के आन का सबग स्वागत हुआ जिमका सकत तम्या नम रभितम्या नम वाक्य से मिलता है। पुरातत्त्वना का अग्नि के प्रयाग का सम्भवत सरस पहला प्रमाण चान के पकिन नगर के समीप चाउ-काउ तिएन (Chou Kau Tien) की गुफा में मिला है। अग्नि का इच्छा के अनुकूल लकड़ी जयवा पत्थर से उत्पन्न करना उसका मन् अथवा तीव्र करना उससे मनने उबालने आदि की त्रियाआ का ज्ञान अनुमानत थाडे से यकिनया का ही पहले प्राप्त हुआ हागा। सबमाधारण का नजरा में के यकिन गुप्त शक्ति सम्पन्न मान गय हाय। मानवशास्त्र वाले उट्ट (Magic man) और वेदिक लाग उट्ट गायद ब्राह्मण ते मना ब्राह्मणाधीना कहत है। असम्भव नता है कि अहिताग्नि ऋत्तिक पुराहित कहलात है। पुराहिता अग्निसमान वचस (म० भा०) जादि गद साकृति है। मनुष्या का प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की सबसे पहली एक प्रवृत्त शक्ति प्राप्त हुई जिमके जनमानक प्रयोगा आर उपयोगा में मानव संसार उपकृत होना चंगा आ रहा है।

आच्छादन आर भोजन की समस्या

जादिम मनुष्य का तमरा आविष्कार पाला की माला से अपन शरीर को त्वक के त्रिए बस्त्र बनाता था। मगचम का प्याग ता वार और जसम्य ही नही बरन ऋषि मी करते थे। गरार के टकने का त्रिया तथा उमक गम मानव सम्यता में अपा महत्त्व रखने है।

तीसरी समस्या भाजन की थी। वानरो में कुछ ही एसा नस्ल है जा मास खाती है। कुछ विद्वाना का अनुमान है कि वह नस्ल वानर और मनुष्य के बीच की बड़ी है। बहुत सम्भव है कि पहले मनुष्य कद, भल, फल व सिवा मास भी खाते हैं। किंतु अग्नि के आविष्कार के बाद मनने की क्रिया का आरम्भ भाजन पकान की पहली सीढ़ी रही है। कच्चे मास से भूना मास अधिक स्वादिष्ट और सम्भवतः पचने योग्य पकाकर विविध प्रकार के पशु पक्षी और जल जन्तुओं के खाने का सुभोता हुआ गया। भाजन की समस्या हल होने लगी।

सामूहिक शक्ति की वृद्धि

स्मरण रखना चाहिए कि मनुष्य की जय विजयताओं में एक विशेषता यह भी है कि उनकी कामवासना केवल प्रतुआ पर अवलम्बित नहीं है, जैसा कि पशु जगत में बहुधा देखा जाता है। हर मौसम और हर समय, चाहे दिन हो या रात और हर जगह उसमें कामेच्छा जाग्रत होती है और यदि कोई विशेष बाधा न हो तो वह उनकी लक्ष्मि में सकाच नहीं करता। मामादनादि पौष्टिक भाजन से उनकी शरीर भी पुष्ट और अधिक सतति उत्पन्न करके योग्य हो गया। परिणाम यह हुआ कि मानवमण्डल की शक्ति में बढ़ने लगी जिसमें उनकी सामूहिक शक्ति तथा क्षमता बढ़ती गयी।

कृषि का आरम्भ

यह न समझना चाहिए कि मनुष्य किसी एक देश के स्थानविशेष में ही बढ कर बहुसंख्यक हो गये। सम्भावना यही मानी जाती है कि उनका छायी या बडी टापुिया जनेक देशा और स्थाना पर पडुची और बडी। भाजन की समस्या मा तदनुबल बढुनी चली। मनुष्य दा काटिया म बढ गये एक ता के जो गिकार करके अपना जीवन निवाह करत और दूमरे व जा कद मल फल और खान योग्य पानिया से काम चलत थे। ये विभाग नितान्त पत्रक न थे, किन्तु माट तार पर यह मान न म काई जापति नही जान पडती कि भाजन प्राप्त करत के लिए जलवायु और पानाकार के अनुसार उपयुक्त दा तरके थे। घूमन किन्तु मनुष्या का टालिया दूर-दूर चलता चले गयी। यहा तक कि ममण्डल के विभिन्न भागा म जा निकली। जा गम खाने-पाने का चीजा का बटोरत थे व उन स्थाना पर रक गये जहा ममि और जल की अनुबलता म अत्र आप म जाप उगता था। ऐस

कि इन कठिनार्थ का आभास प्राचीन चीनिया को हुआ है क्योंकि उहाँ ने अपने प्राचीनतम काल के युग की कल्पना मौलिक आविष्कारों के जगुमार की है।

जगमग पंचि लाल बंध हुए जग एगिया एग वराष में काल के ज्ञान का साम्राज्य था। प्रकृति की निष्ठर तथा जमहनीय प्रगति के प्रतिहार के लिए मनुष्य ने अपनी रक्षा के हित में अग्नि का आश्रय ढूँढ लिया। कुछ विषय प्रकार की लकड़ियाँ की रगड़ और चकमक पत्थर का टक्कर से धुआँ जा रहा फिर जाग निकलने देखकर उसका अग्नि जलप्रण करने की प्रेरणा हुई होगी। अग्निमीठे पुराहितम उक्त आविष्कार के जगार महत्त्व की विशय पुष्टि करता है। अग्नि के प्रकाश से उम माँ टूटने में आ महायता मिली उसकी स्मृति जग नय सुपथा राय जस्मान बंद के वाक्य में निहित-ही प्रतीत हाती है। अग्नि की चमक जार लपट तथा गस्म कर देन की गस्ति देखकर पगु मयमीत हात जार भाग जात ह। प्राचा दिगग्निरधिपति प्राची दिगा म म्य तथा अग्नि के आन का सबग स्वागत हुआ जिमका संकत तभ्या नम रति तभ्या नम वाक्य से मिलता ह। पुरातत्त्वज्ञा का अग्नि के प्रयाग का सम्भवतः सबसे पहला प्रमाण चान के पकिन नगर के समीप चाउ-काउ तिएन (Chou Kau Tien) की गुफा में मिला ह। अग्नि का इच्छा के अनुकूल लकड़ी अथवा पत्थर से उत्पन्न करना उमका नाम आवा तीव्र करना उससे भतन उवालने अग्नि की त्रियाआ का ज्ञान अनुमानत थाडे से यकिनया का ही पहले प्राप्त हुआ हागा। संवसाधारण की नजरा में के यकिन गुप्न शक्ति सम्पन्न मान गय हाग। मानवगारक वाटे उल्ह (Magic man) और बार्दिक गग उल्ह गायद ब्राह्मण त मन्ना ब्राह्मणीधाना कहत ह। जसम्भव नहा ह कि जहिताग्नि ऋत्विक् पुराहित बहलात हा पुराहिना जग्निममान बचस (म० भा०) जादि गन्द सार्त्तिक ग। मनुष्या का प्रकृति पर विषय प्राप्त करने की सबसे पहली एक प्रवृत्ति प्राप्त हुआ जिमके अनजानके प्रयाग आर उपयोग से मानव समाज उपजग जाता चगा जा रहा ह।

आच्छादन आर भोजन की समस्या

जाग्नि माप्य का दूसरा आविष्कार पगुआ का ग्याग से अपने शरीर का बचन के लिए बस्त्र बनाना था। गगचम का प्रयाग ती वार और असम्भ ही नहीं बरन ऋषि भी करत थे। गरार के लकन की त्रिया तथा उससे गग मानव सम्भ्यता में अपना महत्त्व रखत ह।

तीमगे ममस्या भाजन की थी। वानरा में कुछ ही ऐसी नस्ले ह जा मास खाती ह। कुछ विद्वाना का अनुमान है कि वह नस्ल वानर और मनुष्य के बीच की बड़ी ह। बहुत सम्भव है कि पहल मनुष्य कद, भल, फल के सिवा मास भी खाते हा किन्तु अग्नि के आविष्कार के बाद मनने की क्रिया का आरम्भ भाजन पचान की पन्ला सीटी रही हा। कच्चे माम से भूना गम अधिक स्वादिष्ट और मधुगवत पचन योग्य पकाकर विविध प्रकार के पशु-पक्षी और जल जन्तुआ के माने का मुभीता हा गया। भाजन का समस्या हल होने लगी।

सामहिक शक्ति की वृद्धि

स्मरण रखना चाहिए कि मनुष्य की अत्य विशेषताया में एक विशेषता यह भी है कि उसकी कामवायना केवल ऋतुजा पर अवलम्बित नहीं है जसा कि पशु-जगत में बहुधा द्रमा जाता ह। हर मौसम और हर समय चाह दिन हा या रात और हर जगह उसमें कामेच्छा जाग्रत हाती है और यदि कोई विशप बाधा न हा ता वह उसकी तपि में मकाच नहीं करना। मामात्नादि पौष्टिक भाजन से उसका शरीर भा पुष्ट और अधिक सतति उत्पन्न करने योग्य हो गया। परिणाम यह हुआ कि मातवक्षति शीघ्रता से बन्ने लगी जिससे उसकी सामहिक शक्ति तथा क्षमता बढ़ती गयी।

कृषि का आरम्भ

यह न समझना चाहिए कि मनुष्य किसी एक दश के स्थानविशेष में ही बट कर बहसम्बन्ध हा गये। सम्भावना यही मानी जाता है कि उनकी छाटी या बटी टालिया आक दशा और स्थाना पर पट्टची और रगे। भाजन का समस्या भी तदनुरूप बन्ती चली। मनुष्य दो काटिया में बट गये एक ता वे जा गिकार करके अपना जीवन निवाह करत और दूसरे व जा कद मल फल आर खाने योग्य पातया से काम चलाने थे। ये विभाग नितान पृथक न थे किन्तु माट तार पर यह मान लन में कोई आपत्ति नहीं जान पडती कि भाजन प्राप्त करने के लिए जलवाय और पन्जावर के अनुसार उपयुक्त दा लगके थे। धूमने फिन्द फनप्या की टालिया दूर-दूर बन्ती चनी गयी। यहा तक कि भ्रमण के विभिन्न भाशा में जा निकली। जा गग खाने-पाने का चीजा पा बटागते थे व उन स्थाना पर रुक गये जहा ममि और जल की अनुबलता से जन आप से आप उगता था। एम

स्थान नदियाँ व नितार विगप कर खाँिया व पाम अर्था उपजाऊ मराना में थे । मगाल तथा पुराने-व के अरु धान म पना चरना है कि एगियाँ काचक म पच्छिमा तथा उत्तरा अरुत हान म अफगानिस्तान वा प्ररुग नाउ नना आर गिनु नदा व तट तथा पजार अरु उपजान व गिग अरुत थ । मरु स्थाना म जहूँ रीगन वा पश्चिमी प्ररुग है जहाँ मव प्रकार का मूठू आर जा अप म गप उगाा था ।

एम प्ररुशा म अरु वरुमरु पउ प्ररुारु वारु रान गय । नरु आगा वा मरुया वहा वदी तव जगगा अरु वा उरुज उनका आवरुयकताशा वा पूनि न कर सकी । उनका मरुय वारुण यह था कि अरु निरनुनरु नना वरुन खाग मीगम म ही उपजना था । मामम की पनावार चरन पर गगा वा फिर वरुटनाँ उठाना पटती था । अनाज वा पत्तिया या वरुनना आरुि म मरुकर ररुग वा उनका न ज्ञान था आरु न उनक पाम माधन थे । यही नही धारु धारु जमीन का उपज भी कम हाती जाती थी कयाकि जमीन वा गानन या खाउ टन वा मा नन उरु न था ।

धारे पीरे लागा वा पता चरु गया कि गिर हुए अरु फिर उग आत ह आर यदि जमीन कुछ खाउ गी जाय ता कुछ अधिक उपज गती ह । उम नान म उनका अधिक लाभ न होने का वारुण उनक लकडी आरु पत्थर व जोजारु थ जा गहरी तुनाँ के गिए उपयकन न थ । मवस अधिक काम नदियाँ क तट तथा मुहाना की धरती से हुआ कयाकि वहा वाउ के वारुण मिट्टी की तह लग जाती था । यरुपि वृषि स यथष्ट लाभ ता न हाता किनु काम चल जाता था । हर मनुष्य उननी ही सेता कर सकता था जिनना कि उसस वन पडता थी । वृषि व आरुमन ने मानव इतिहास म अत्यत मरुत्वपूण दग का भाँ बीज वा निया । वृषि की उरुति के माथ ममाज ग्राम नगर राथ विधान वाणिज्य लिपि अक आरुि की उत्पत्ति एव वरुद्धि ह । भारुग यह ह कि सम्यता तथा मरुवृति के दरुवाजु एरुत चल गये ।

सम्यता और मरुवृति

सम्यता और मरुवृति मागारुणत परुयिवाचा शरुत माने जात ह । फिर मा उन दोना वा व्यजना एक ही गी नही है उनम कुछ भेे न । सम्यता का सम्बन्ध बाहरी ष्यवहारु रहन महन बाउ चारु साज मामान उरुन-वरुने तथा जान जाने म न । उसरे अतगत सामाजिक राजनीतिक वापारिक तथा नाग

रिक्त जीवन के व्यवहार मान जा सकते हैं। मरना, समान मार्गों, राहना की मजहद के लिए भी उसका प्रयास हो सकता है। सारास यह है कि सम्यता वस्त्रिणी है। यद्यपि सम्यता पर मस्वृति का और मस्वृति पर सम्यता का प्रभाव यथाधिक पाया जाता है तथापि मस्वृति का ही व्यञ्जना अन्तमुष्ठी है। उसके अन्तर जाचार विचार, भासा कलाआ मनापति, और धारणाआ तथा दष्टि काण की रिगिष्टता पर अत्रिक ध्यान लिया जाता है। यह आवश्यक नहीं कि मस्वृति और सम्यता के स्तर एक ही न हों। वही मस्वृति का स्तर उँचा और सम्यता का निम्न आर कटी सम्यता का स्तर उँचा और मस्वृति का नीचा हाता है। इससे सिवा सम्यता और मस्वृति के अपने-अपने क्षेत्रों में अनेक स्तर हात ह। कटा सम्यता की ता वही मस्वृति की गति तीव्र जयवा मः पायी जाती है। दाना के गुणान्ते में सम्यता की प्रगति प्रायः तीव्र पायी जाती है।

आर्थिक स्थिति

वृषि के गान के पूर्व मनष्या में उच्च-नीच और जमीर गरीब का पक्ष न था। यह माना जा सकता है कि उम युग में भी प्राकृतिक और अगोचर शक्तियाँ का जानने और सातुव करने वाले मायावी अभिचारी लोग का अर्थ यकितया से अधिक पतिष्टा रही है। किंतु वस व्यक्ति किसी ममुदाय में गिने चुने ही होंगे उनके मगठित वा होने की मभावना नहीं हो सकती। जत जनममुदाय के व्यक्तियाँ का प्राय अपनी आवश्यकताओं के सभी काम स्वयं करने पड़ते थे। प्रत्येक को अपना शरीर ढकने का वस्त्र धुनना रहने का चापटे बनना खाने के लिए कः मः फः लूना जल्वा शिकार करना पड़ता था। अज पशुजा का पालन और वृषि करने का बात बढ़ा तब ऐसे महायक की आवश्यकता हुई जा मनुष्य का उठित वाय कर और भाग पाड करने के लिए अधिक समय दे सकें मचिन साने पीने की चाजा तथा पशुजा की माधारण निगरानी कर मके आर जनसख्या बढ़ाने में महायक थ। जिस घर में तितन हाथ थे उपका स्थिति उतनी ही अच्छी हो सकता थी।

महस्थ मस्था

उन सब आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्त्री अत्यंत उपयुगी हो सकती थी। वृषि की जितनी उन्नति हाता गयी स्त्री तथा वस्त्रा की उतनी ही

आर्यसत्ता जोर उपागिता बरना गया। यद्यपि हर ओर मान्यता का दमनिक आर्यसत्ता और आर्यसत्ता का तथा गति तथा म भावनाका तथा जाता है तथापि तथापि रूप में कामनायाता का अर्थिता सामाजिक प्रथमि और रिपद रूप म आर्यसत्ता का पूर्ति क रिपद तथा गुणद व मध्य का साधिका तथापि वनाम का आर्यसत्ता क कारण महत्त्व जाता अर्थात् ३। ११ीं वर्ष १९५५ ई। का अनुभव करता गया। १९५५ प्रथम म १९५५-५६ म आर्य आर्यसत्ता का मूल रिपद रूप म रिपदता ५। उक्त रूप तथापि पर अर्थ रिपद विद्या जायगा।

वृषि तथा पण्डित की उन्नति क साथ मनुष्य म मध्य का जोर मान्यता का अर्थि मुमाना जग अर्थि उपजाऊ जगत गितार् क रिप आर्यसत्ता जग इत्यार्थि मिया जम्बर रहने उक्त। प्रथम समाज का मारणताक कोकम तथा म रिपद रिप विभिन्नता उक्त गया। यही तर्क रि उनर रिपिताण मगत्त रहने तथा में वान उक्त का पत्त है गया। मार तोर पर भावनाका १। भाषा म रिपदता मा है गया। यथा तथा वृषक-समाज म भावनाका बरने तथा। रिपता अर्थि मनाम इह उक्त आर्यसत्ता रिपद म उत्तमतर उन्नति हाने तथा। रिपम वृषक घटना का सामाजिक जोर अधिक मत्तर बर गया वृष का रिपद पत्त गया। धन और जन-बल क कारण वृष्ट वृष्टता का दम। पर मत्त आनक जमने तथा जोर उपजाऊ घनी पर उनका वृत्ता बरने तथा।

ईसा म १९५५ म मनाम रिपद वष पूव का दम मत्तृनि तब मध्यता क रिपद वृष्ट मत्तर का १। उक्त दम क आरिपता म एक का तथापि तथापि हवा का रिपद का वृषि तथा वान क रिपद उपयोग दूसरा तोर का मत्तर उक्त जयवा उक्त अर्थ घातु मिलाकर वृषि क रिपद रिप आरिप जाजार बरतने तथा जम्बर तथा वनाम का कोण। ईसा के १९५५ हजार वष पव मान जोर चाला का उपयोग मिय तथा ममापाटमिजा और मम्बवने जयवा भा हा जयवा। तामरा आविपार चत्र (मिर्का या पहिया) का बरतने रिपद आरिप वनाम वाहन जम रथ आरिप चलाने बाज्वाचन या रिपद क रिपद उपयोग जोर घोषा मय की गति क अन मार बाल गणता (मार्कर वृष्ण की रचना) मत्रम महत्त्वपण गित जाते १। उनी की महायता मत्तृनि तथा व्यापार धन धाय मध्यता और सत्तृति कला कोण उद्योग घोषा आरिप जनेक क्षत्रा म गानता से उन्नति हाने तथा रिपद मानव-जगत की रूपरता म तजी से परिवर्तन हाने तथा। उक्त महत्त्वपण आर

रात्रिकरुगे आविष्कार फिर हज़ारा वर तक न हा सके । उम क्रांति का जार म्मिक केन्द्र सम्भवत पश्चिमात्तर फारम और दृगक का प्रदेश कहा जाता है । तना तो निश्चिन-भा है कि उमका क्षेत्र था नील नदी से मिधु और सम्भवत गगा तक विस्तृत विगाल भभाग । चीन क उतने पुगने समय क इतिहास पर अभी यथे प्रकाश नहीं पया ह । सम्भव है कि वहाँ से कुछ चमत्कारपूण आविष्कार पूरुग में हुए हा । जम नि मय युग म हुए । चीनिया की अनुश्रुति के अनुसार ता वृद्ध वृष्ट हुआ किन्तु पुरातत्व अनुसार धान जभा तक उनके कथा का अमदिग्ध समथन नहा कर सका ।

जामग्या से वृद्धि

जिन स्थाना पर वृषि से लाभ हुआ वहा जनसंख्या उत्तरोत्तर बढ़ता गया कारण उसका यह था कि जितनी जमीन पहले चार भा मधुष्या का पाणन करती थी वृषि द्वारा वर एक लाभ अटटाईस हज़ार लागा का पालन करन म समथ हो गयी । पग चरावाले सचरणशील लागा के निर्वाह क लिए बहुत ज्यादा क्षेत्र की आवश्यकता हानी है । एक बगमील जमीन से तीन या अधिक से अधिक सात प्राणिया का पालन हा सकता था, किन्तु वृषि द्वारा उतनी जमीन से तीन से आधी पलते थे ।

रहाँ स्थिति और भी भीषण हा गयी जहा वृषि के लिए धानुआ का प्रयाग जाने लगा । वृषि के जाजार जार लडने मिडने क हथियारा के लिए पहले तावे का फिर कास का प्रयाग हुआ । खेती से अधिक लाभ और जम्ना से अधिक बल उही लागा का बग जिावे पास धानुआ को खगेदन क लिए काफी जनाज या जानवर थे । जिनके पास व साधन न थ उनका महम्ब त्तिनात्ति कम होता गया । वृषि तथा धानुआ के उपयोग के कारण नये नये पेगे बटन गये । पहले कुम्हार, चमकार, चण्ड आदि बनानेवाला से काम चरु जाता था किन्तु नयी स्थिति में तमक तथा धानु खाने डाने गलान जार उमसे अनक प्रकार की चीजें बनाने के लिए पग खल गये । अग्रादि तथा धानुआ के व्यापार की वृद्धि क कारण बाप हिमाव किताव नाप-आप दर निणय आत्ति के लिए जका तथा किसी न किसी प्रकार की लिपि की आवश्यकता की पूति के लिए नये-नये तरीके निकलन लगे । धन धाय न देन आयात निर्यात की वृद्धि के साथ सम्पन्न गेगा की जिनासा, कलाप्रियता जामाद प्रमाद के क्षेत्र बढ़ने लग । ऐगाजाराग के नये-नये ढग निकल । साथ हा

साथ जमान जन जोर जर के झगड़े बढ चल क्याकि उनस लाम हाता जोर जोक
 ष्छडाआ जोर वामनाआ की पूर्ति हा सकती गी । जत उनक लिए माह और लोभ
 की वद्वि के साथ छल बल का भी प्रयोग हागे लगा । घन की ततनी महिमा बटी
 कि उमकी प्राप्ति क लिए भीतरी और बाहरी तथण गहरा होना गया । बनेभ्य
 परा बाघदा नास्ति लाक वाली उक्ति उमी महावक्ति की म्मति है । जमीन
 की नाप खेता की हृवनी चरागाहा पर अधिकार मिचाई के लिए पानी के
 लिए नेन-दन के लिए ग्रामा तथा नगर म झगडे होत थे । सम्पन्न व्यक्ति साने
 पीने की चिन्ता से मुक्त हाकर ऐश्वर्य बढाने तथा प्रतिद्वन्द्विया का दमन करने म
 लगे । ऐसा परिस्थिति में शांति रखन जोर चाय करने क लिए कानून की आवश्यक
 आवश्यकता पनी । कानन बनाये जाने लगे । कही पुराहिता कही वयावद्धा
 प्रभावशाली व्यक्तिया जथवा मुख्याधिष्ठाता ने कानन बनाये । कानन के जाग
 करने जोर उनके उल्लघन करने वाला ना दण्ड देने क लिए अधिकारिया की नियुक्ति
 आवश्यक हा गयी ।

राजमत्ता की प्रतिष्ठा

आपसी थगटा जोर समस्याआ का वद्वि क साथ ही नगर म नगः 10 हा
 गय । राज्य का सामा व्यापार उमर मार्गों नशिया तथा साना पर अधिकार
 दूसर नगरा की सम्पत्ति छानन क लालच जाति क कारण थार-बन्द ग्रामा म
 विनाय रूप म नगरा म लाग टा और बढ होने लग । उनके सिवा नय-नय
 भ्रमणशील अथवा नये किन्तु उनीयमान जन-समहा । भी समय-समय पर
 आक्रमण शुरू कर लिय । बाहरी शत्रुआ तथा भीतरी उपद्रवा क दमन क लिए
 मन्दिना की आवश्यकता उत्तरात्तर बनी । विद्वान तथा शांति स्थापन मातंग
 उपद्रवा और शहरी आक्रमण का रक्षा तथा सना ना नियन्त्रण करने क लिए
 राजमत्ता का प्रतिष्ठा हुई । उमा क हाथ म बदानिक सामनिक मन्तिक
 शक्तियाँ कद्रित हा गया । जहा स्वय राजा धानुजा तथा जय लाभदायक शक्ति
 जोर सम्पत्ति-वपक पत्नियों का व्यापार अपन हाथ में रखा वहा ना उमरी
 शक्ति आर मत्ता बढत प्र गयी । मिस्र ना निहाम म कथन का विनायन
 पुष्टि करता है ।

वृद्धि की उन्नति क लिए पाना साने निरासन अथवा आवश्यक नियन्त्रण क
 लिए नगर नाशिया पुष्टि तथा पुष्टिया जोर पुत्रा क निर्माण क विविध विद्वान

विशेष कर मसोपटमिआ और मिम १२ इटरी म निकल । चीन मे भी जलप्लाव
 कारण नल्ल का निमाण आवश्यक हुआ । उन सब प्रयत्ना का प्रभाव कृषि,
 मत्स्याय स्वास्थ्य नगर निर्माण बाग-बगीचा पर ही नहीं बरत स्यापत्यन्त पर
 दर तक पहुँचा । जन का पनी व सिवा फल आर तल्लन उत्पन्न करने वाले पत्था का
 लगाना अधिक लाभप्रद हुआ । जतून पजर अजर जादि व पेडा व उगने
 और फलप्रद हानि म क वष लगत न त्रितु जब व फल देने लगत ह ता वस्त
 वर्षों तक फलते न जिमस अन्ततागतवा कृषि व मुत्तारल म अधिक लाभ हाता ह ।
 ग्राम दमिणी रगाप तथा अपीका म जायिक लाभ का विशय जागर वनी
 ग्हा ।

कृषि और बाग-बगीचा लगानेवाला का एक स्थान पर फिर हाकर रल्ला
 पडता है । सल्लिए ठागा का रहने व त्रिए मजबूत मनाता और मारता की
 जरूरत पती है । माल रखने के लिए गाताम बनान पहत ह । जाने जाने के
 मुमीन व त्रिए मटके और गलिया तथा पानी लान आर गदा पानी निवालन के
 लिए नात्रिया रतागी पती ह । दमी हग स नगर वनत गये, फिर उनके प्रप्रध
 और रथा व त्रिए गहरपनात् समामवन और गठ बनाय जाने लगे । धार्मिक काय
 व लिए यनगाता और स्वाठया की स्थापना हाता । नागरिक व आन्श्यकताआ
 का पति व लिए दुकान बाजार और जक उचाग बये खुलन लगे । इस प्रकार
 नगर श्रीमम्पत्र तथा कलागील गिथालया बार्दालगा से विभपित हाकर
 मभ्यता एव मस्कृति की उत्तति व प्रगतिशील साधन वनने लगे । ग्रामीण जीवन
 को मादगी के बदल नागरिक पचीलगी और ऐन-आराम का माग खुलने लगा ।

नगर व ऐन्वय एन-आराम राजगार आदि मे आकषित होकर भ्रमणशील
 जनममहा तथा गाव के लागा का जाना गुरू हा जाता । यदि त्रिसी पद्ध म नगर
 वासिया की विजय हुई ता हार हुए ठागा का गुलाम बनाकर उनमे अजरल्लनी
 मनमाना काम लिया जाता । गुलाम पुरप आर स्त्री मुक्त जथवा कीडिया के माल
 मित्र जात और उन पर गच बहुत कम हाता मल्लिए व मनमानी मत्था म
 रख त्रिये जात । विजेता उनके उपर जहा तक न सक्ता कामा का बाज लादत
 और स्वय किमी यमन जथवा विगोद से आराम स समय घ्यतीन करते । गुलामा
 व काग स्वतत्र किन्तु गगीव लागा का भाव मन्ता हाता जाता और बेकारी
 वनी जाती । उनके दापा का पल्लान मसोपटमिआ और राम तथा चीन व इति
 हास म विगोद रूप म पाया जाता है ।

१) नगर हार जाता उमरी व । टु गा हाती । एहन हरमन घन गोलन ममी चार्जे प्राय टट ला जाता और नगर विवस्त कर लिया जाता । बाग-बगीच काट डार जात मनी गैर डाला जाती मयकर अग्निवाड हत्याकांड और नगमता का प्रखन हाता । एम लाला क एवाप्यमान उताहरण बवालान एम पालिम कागधज आति ह । एतिवाम प्रतिष्ठित व्यक्ति जम अल्लखण्डर (मिक्कर) तदा भादिआ आति क पचिम म और घमप्राण भारत म भी पुरीमयस्वत लनाहि नानम मपाण रनानि हरामगगना क दाय अमाधारण नहा गित जात थ । समा गगि म चाह व पचिम चाट पूव क क्या न हा उम जघय प्रवलि का प्रचलन थ । कभो-कभा भमा और गानि का नाति का मा आश्रय दिया जाता था । सिन्धु एमक उताहरण अनुपातन कम मिन्त ह ।

उपयुक्त शता स्थितिदा म नागरिक गवन आर्थिक सामाजिक और नतिक समस्याभा क उत्पत्ता म फसता चला जाता जिमम विपमता बानी जाती और नगर राज्य का जवनति होता जाती । मतिक एव व्यापारिक श्रम क लाग क गित एक हा माया माय सिमार् सिवा जा पहल उतरा सिमन प्राणित राज्य और सिम माछाय का जार ल गया । यद्यपि उछ मनायिषा न जान म दनात तथा भारत म मिम नक मरल सामाज श्रम क जीवन क अनुपात म मुग और गानि का विरुध कर लाग को लीट । ता तिमल्ल लिया सिन्धु परिमि तिदा और प्रतामना क शान्त म प्रनार्मित मूल तथा एवय का राज म आधिपत्य और गगन मूड और बट्ट काट नक चला । जरी ददा व्यवस्था न हा मया । यही उमक प्रतिष्ठा एतिव भयता वर उमका स्थान का प्रयन करत ह ।

लोहे का प्रयोग

ताम और काम का महत्त्व लोहे के प्रयोग में नष्ट-सा हो गया। यद्यपि आज में पाच हजार वर्ष पहले लोहे का पता चल गया था, जिस कि मिश्र तथा ममापेमिया में प्राप्त बृष्ट अवशेषों में स्पष्ट है किन्तु उसका कम व्यय से निकालने तथा गगने की त्रिया का रहस्य जानने में अनुमानत डेढ़ हजार वर्ष लगे। तामे और काम से वह सस्ता तथा अधिक मजबूत और उपयोगी मिश्र हुआ। उसके बने औजार और हथियार मन्ने होने के कारण साधारण लोग खरीदने और उनका उपयोग कर लेने में उमने का नतीजे बड़े महत्त्व के निकले। साधारण लोगों का जीजारा और हथियारों के लिए धनिका का आश्रय उनका मन्वपुण और आवश्यक न रहा जितना कि पहले था। वे अधिक उपयोगी औजार और हथियारों का स्वयं खरीदने में जिम्मे उनका उत्पादन तथा मन्ने गति बनी। फलन साधारण जनता का अपनी गति और बल का नया अनुभव और नया उत्पाद प्राप्त होने लगा जिम्मे मन्विय में जनसत्तात्मक मन्थाओं के स्थापन की मन्मावना बढ़ती गयी।

पहले व्यापार विनिमय द्वारा होता था जिम्मे कारण प्रत्येक व्यक्ति को चाह वह पुरुष हो अथवा स्त्री कुछ न कुछ काम करना आवश्यक था। शिवा भी प्राय चर्चा चलता था। किन्तु जब से धातुओं का उपयोग बन्ने लगा और चाणों साधों का भी व्यापार और सिक्का का प्रयोग शुरू हुआ तब से आर्थिक स्थिति में विपत्ति उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। जितक पाम खाना चाणों था व उमका उपयोग कात्तारी या गगवानी कराने में तथा अन्य वस्तुओं का कच्चा या बना हुआ माल खरीदने तथा बेचने में करने लगे। उन धनिका का मुकाबला छाने-माटे कृषक न कर सके और अपनी सत्ता-दागे छोड़कर धनिका की गकरी सन्ती मजदूरी पर करने के लिए मजबूर हो गये। यदि धमा न करते तो काम करने के लिए गगमा का कमी न थी। धनिक दिन दिन सम्पत्तिगामी बान गये और धन के बल पर वे राजनीति तथा सामाजिक जीवन पर भी गहरा प्रभाव डालने लगे। उनका प्रभाव कुछ अग म धम्य हो सकता है। किन्तु उमका दुर्परणाम बहुत दूर तक पहुँचा। गम साम्राज्य का इतिहास उमका प्रबल साधा है। व्यापक विकास का गायद वह भा एक अनिवाय साधन था।

सामाजिक गतिविधि

यद्यपि मनुष्य अथवा उसने जतने कभी एक-स नती थे तथापि लाखा वर्ष

नव उनका गारोरिज मानसिक तथा सामन्त्रि गति म उतनी निपमता न था जरा कि परिस्थितिया की विभिन्नता जो उमम उत्तमना प्राप्त करके निराम न उत्पन्न कर दी । अत्यन्त पुगा युग क प्रलीक जब न इतन्त विन्तु विगत जमीका एव लक्षणी जमेरिका और जास्त्रिया में पाये जात ह । त्रुमिय जववा मयोगवा जिनक दल दूर जकल पट गय जार अय दगा म सम्पक स्थापित न कर सा व जाज तक पुरानी स्थिति से बाहर न जा सके । सम्भना के विकाम क लिए विभिन्न जनसमुदाया का आपन में सम्मिश्रण जार जागन "दान जावश्यक" है । विकसित ममहा की चचा मानवात्म्य का विषय "न क सिवा यह अप्रामागिक भी " । हम उस स्थिति का विचार कर रहे ह जा कृपि कम म विकसित होनी आ रही " ।

ग्रामा और नगरा म कृषि "यसमाय वाणिज्य आदि म जनक ममस्याएं उठ गयी ह" । गृह्य जीवन उम परिस्थिति क लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध आ । कुटम्ब का दृष्टि परिरम तथा श्रमता म कुठ गग अधिक सम्पन्न हा गये किन्तु जय कुम्भा या मफलता कम या वन्त कम मिग । उमी प्रचार पेनेवा में जनक श्रेणिया हा गया जिनमें कुठ अधिक रुच कम और कु उ वन्त कम मफल हा सके । ग्रामा तथा नगरा की समझि स जाकपित हाकर रोजगार का जागा में लग नगरा म आने "जिसस जनमगा ता वी किन्तु उमी क माथ जमीन जववा रजगार का कमी या अभाव म ममाज म विपमता जमीर गारा का म् शक्त वन्ते आ । आतरिक परिस्थिति क सिवा नगरा क आमपास गानावनागा के ल जानवर हाक ल जान अथवा "न्यमान" करन की ताक न मदगत पिरत द । नागरिका का जप जान माठ का चिन्ता वी । उमका गकन क लिए दा प्राता का तुल्ल जावश्यकता पी एक ता मन्त्रि की जा नगर म गति रगन क सिवा बाहर क आक्रमणकारिया म उमका रथा ल सके । दूसा जावश्यकता था जास्त्राना मकान जमीन जायगा का जापमी नाव-नहात म रक्षा करन क लिए कानना की । "यापार और "यसमाय या बाड म "न न का नियमित करना वन्त जमी था । मागा यह कि सना आर कानन का व्यवस्था करना जार उमक उल्लघन करनवागा क लिए "णविमान यनाना ममाज के लिए अनिवय न गया । "म्य परिचाजन क गिा वन्ति "गर तथा माहम तीर कौगा प्राप्त करने क गिा परिश्रम और अम्याग का जावश्यकता था एव कृपि करवागा क लिए दूमर न्य क अम्याग जार मावति वा । जगं म्वनन वृषक कृपि स हटकर दद-काय में लग वना प्राय द कृपि करन योग्य था ना " । कृपि गुगमा क

द्वारा कराया जाने लगी या चौपट हो गयी जयवा महाजना व हाथ बिक गयी । उस अदाछनीय व्यवस्था का गाम जोर उसमे भी अधिक प्रदग्गन राम के अतिहास में मिलता है । मिपहृगिरी के व्यवसाय मे लगे हुए समुदाय की एक श्रेणी जयवा एक त्रिगिष्ट वग बन गया । इतिहास में प्रायः कम वग की प्रवृत्ति राज्याधिकार प्राप्त करने जयवा स्वयं किमी सफल सेनापति के नेतृत्व में स्वतंत्र राज्य स्थापित करने की जोर दिखाइ देती है । सैनिक गामन माधारणतः बुरा है क्योंकि वह कठोर और अस्वस्थ ही प्रायः रहता है । गायद ही कभी उसमे लाभ होने की सम्भावना दिखाई पडती है । सैनिक बल के नियंत्रण के लिए प्रजा राजा की या अन्य शासन विधाता की गरण मागती है किन्तु वे दागा प्रवृत्ति और अल्प सेनापति के विरोध से सशक्ति रहने के कारण किसी दूसरे सेनापति की सहायता चाहता है । माराग यह कि राष्ट्र जोर प्रजा के एक स्वयं विपत्ति का कारण उसी प्रकार हा जाने है जमे कि सफल व्यापारी या महाजन जयलोचुपता के कारण निरुत्तर और स्वाभाव्य हा जाते हैं ।

उपयुक्त दाना प्रबल वर्गा को नियंत्रण में रखने के लिए प्राचीन समाज में क्या प्रयत्न हुए जाते हैं वहा तब सफलता मिल सकी इसके दो विधान उम वग के अतिहास में मिलते हैं । पहला यह कि राजा का महत्त्व जोर उमका जाग लगा व हृदय में जमा लिया जाय । दूसरा यह कि शासन के लिए जनता स्वयं अपने प्रतिनिधियों का चुने और उनको निश्चित अधिकार प्रदान करे । जनसत्तात्मक विधानों का गीस में प्रयोग हुआ कि तु उनको उतनी सफलता प्राप्त न हुई जितनी कि ब्रान जोर मित्र के सम्मालना या या सिकन्दर अथवा आगस्टस माजरा आदि रोमराज्य के सेनापतियों का मिली । यह स्मरण रखना चाहिए कि सफल सेनापति जेनेक बार सम्राट ब । । ग्रीस के जनसत्तात्मक राज्य का थोडे ही समय तक सफलता प्राप्त हा सकी । सब सिवा उम जनसत्तात्मक समाज की जे- म मा गुणागी लगी है ही और उसमें ईप्पा, ड्रेप वदमाना जादि दोषा की भी कम न थी । ग्रास में स्याग नामक राज्य जनसत्तात्मक न होने पर भी सबसे ज्यादा दीक्षजीवी हुआ ।

मित्र मगापटमिया देरान जोर चान में कुछ छाह माट कवीला का जोर राजा अथवा सम्राट का गामन रहा । प्रबल बनानाघणा जोर लजाव सैनिकता का नियंत्रण करे के लिए राजा और धार्मिक नेताओं वग में घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हुआ । धार्मिक नेताओं के वग ने राजा के दक्षिण गुणा और पराक्ष गकितया

क विविध कृपापात्र हों की घोषणा की। राजा ने समाज में उनका प्रमुख स्थान निर्धारित किया और विधान तथा कानून रचना में उनका अपना धनिष्ठ महत्वांगी बनाया। पुराहिता और घमाघ्यता का वगैरा गतिविधि में मग्न चित्त और राजा में प्रतिष्ठित हों के कारण अथ वर्गों से अधिग्रहण और सम्मान प्राप्त कर सका। कमी-कमी भक्ति वगैरा और धार्मिक वगैरा में मग्न हो जाता था, किन्तु उमम सामाजिक परिस्थिति में विविध उलट-गलट में ही मग्न। चीन में भी राजा विधान सम्बन्धी कार्य विना ही का महत्वांगीता में बराबर था। वहाँ भी राजा का देवपुत्र समझा जाता था यद्यपि वहाँ ईरान भारत आदि के समान बार्द सगठित वगैरा सिखा गिष्ट नौकरगणही के न था। राम में भी पहल कुला वगैरा का राज मत्ता थी किन्तु उमका ह्नाकर प्रबल मनापति मन्नाट बन गये और स्वत्व का दावा कर लें।

समाजशास्त्र तथा इतिहास से यह ज्ञान पता है कि प्रागैतिहासिक युग में ही सबन एक वगैरा चला आ रहा है जिसका सबध पुराण गतिविधि से माना जाता था। उससे अथ गग डरत और उसका सम्मान करते थे जब दामा का जारम्भ हुआ तब उन्होंने देवी-देवताओं के आलय बनाकर अपना सगठन किया। लग उनका विश्वास करते थे और राजा जानि उनसे महत्वांगीता मागत थे। नगर की वद्धि के साथ उन लोगो की भी वद्धि हुई। मनापत्तियाँ और मिस्र में जनता अपना अनाज उनके देवालयों में जमा करती और जावयकताओंसार लग उनसे लन करने करते थे। जहाँ देवालय नहीं थे वहाँ नग्नार ता न बन किन्तु उनका सगठन जारी रहा। वे लग अथ वर्गों की तरह अपने वगैरा का ही अपने परम्परागत अथवा आविष्कृत मन-नच और अथ विद्याएँ सिखाते थे। उहाँ लोगो में पटना लियना शिक्षा दना हिमाव कित्ताव रखना प्राय मोमित था। बौद्धिक और धार्मिक क्षेत्रों पर अधिकार रखने के कारण विना भक्ति गति के उनका समाज के सभी वर्गों पर गह्र प्रभाव हुआ। वे ही राजा अथवा समाजगति के समर्थक थे। भक्ति वगैरा में कमी-कमी उनका मग्न हो जाता था किन्तु उनका सामाजिक महत्त्व की व्यावहारिक क्षति न हुई। वे लोग युद्ध तथा व्यापार में देवा से प्राचना करने के सिवा बहुत कम भाग लेते थे। उनकी जीविका का मुख्य स्रोत श्रद्धालु लोगो का आनिध्य और गेष्ट-पूजा थी। सामाजिक व्यापारिक तथा औद्योगिक विविधिकाकरण के साथ उनका सगठन कतव्य तथा मस्कार जानि भी अधिग्रही मोमित प्रतिष्ठित हो गये। सामाजिक तथा राजनीतिक गतिविधि के संरक्षण

में उनका विशेष भाग रहना था। परम्परागत नीतिव्यवहार को ध्यान में रखकर उन्हीं लोगों के निर्देश अथवा सम्मति से एगिया और मिस्र में सशस्त्र यात्रा की सीमाएँ, सामाजिक, व्यापारिक वृत्तव्यापकसव्य के नियम ब्याये गये। वे बानन के समान विभिन्न नामों से अथवा देशों में प्रसिद्ध हुए। भारत में ये ही मशहूर घटनाएँ कहलाये। उनका प्रचलित करना राजा का वक्तव्य कमावेगा सभी एगियाई और मिस्री राज्या में समया जाता था। भारत में तो यह बहुत स्पष्ट था कि 'राजा प्रशास्तिधर्मेण स्वकमनिरता प्रजा।

सम्यक्ता के विकास तथा मनुष्यता के निर्माण में सशस्त्र विभिन्न वर्गों की गति एक-ही नहीं रही। वही और विभी समय एक वर्ग का, वही दूसरे का प्रभाव परिस्थितिया के अनुसार घटना-बढ़ता रहा। काथेज, ग्रीस और रोम में व्यापारिया और सैनिका का, प्राचीन युग के एगियाई प्रदेशों में पुराहिता और सनिवा का तथा चीन में सनिवा और परम्परावाण्याएव विचारका का अधिक महत्त्व रहा है।

उपयुक्त परिस्थिति मनुष्य के ज्ञान-बुद्धिकर नही गयी। जीवनरक्षा के लिए वह उसी प्रकार से स्वाभाविक थी जिस प्रकार पार्थिव सृष्टि में पहाड़, नदी, तल, पर्व पर्व, मनुष्य आदि का आविर्भाव हुआ। मनुष्य के जीवन में ऐसी परिस्थितिया उपस्थित होती गयी जिनसे विचारा होकर वह प्रवाह में बहने लगा जिसके ओर-छोर का पता उसे न मिला। परिस्थितिया का पूरा ज्ञान प्राप्त करना दुसाध्य ही नहीं गायद असम्भव भी है। तथापि इतना प्रकाश अवश्य पना है कि उसकी माटी मोटी बाता और उसके महत्त्व की रूप रेखा का आभास होने लगा है। उन सबका वर्णन किसी शास्त्रविशेष का विषय यदि कुछ हो सकता है तो सम्भवतः वह इतिहास है। अग प्रत्यग में कुछ गहराई से धुमने के लिए ओके शास्त्रा की रचनाएँ होती चली जा रही है। भूमिका में केवल मोटा बाता की ओर कुछ इशारा करना आवश्यक है, इसलिए प्रतीत होता है कि इस पुस्तक के पाठका को कुछ ऐसे सूत्र मिल जायें जिसे वे देश विदेश के इतिहास को कुछ समझ-बुझकर पढ़ सकें। इस उद्देश्य से विषय का कुछ मुख्य किन्तु साधारण श्रेणिया में मक्षिण लिखित देने का प्रयत्न किया गया है।

मनोवृत्ति

पृथ्वी के जटिल बर्चन से कुछ छुटकारा पाने के लिए मनुष्य को लाला बप तक भटकना और महान कष्ट झेलना पडा है। प्राण रक्षा उसका स्वभावजनित

उद्देश्य रहा। अतः प्राण उसके लिए केवल स्वाभाविक ही नहीं बल्कि सबसे महत्त्वपूर्ण विषय हो गया।

जब किसी समुदाय को ऋषि, गारक्षा के लिए सुन्दर और उपयोगी भूमिभाग मिल जाता है और उसके जन्म में वह परिचित हो जाता है तो उसका अपने अधिकार में रखने के लिए जी ताड़कर प्रयत्न करता है। उसी मनोवृत्ति का छोटा स्वरूप व्यक्ति अथवा कुटुम्ब के अपने हिस्से की रक्षा करने में दिखाई देता है। वह मनोवृत्ति पीढ़ी दर पीढ़ी मजबूत होती जाती है और देश भक्ति का रंग पकड़ लेती है। यद्यपि उसकी जन्म में अनिवाय स्वाध है फिर भी उम्र भावना का भावुकता और आत्मत्यागादि का रूप प्राप्त हो जाता है 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसा' हृदयवता अजमुल्के सुलमा खुशतर खारेवतन अज सम्बुले रैहा खुशतर जादि काव्याकितिया स वह सुसज्जित एव सुवर्णित हो जाती है। अथ भावा की तरह आरम्भ में उसका स्वरूप छोटा किन्तु स्थायी दिखाई पड़ता है किन्तु अनुकूल परिस्थितियों में धीरे धीरे वह देश राज्य एव साम्राज्य के आकार का एक विंगल हाता चलता है। यदि परिस्थितियाँ प्रतिकूल होती गयी तो प्रायः सन्तुष्टि होने-होते वह अपने प्रारम्भिक स्वरूप में चला जाता है अथवा कभी-कभी देश-काल को उल्लिखित करके किसी अनिश्चित काल्पनिक माय की आर सवेत एव आमरण करना है 'उत्तरचरिताना तु वसुध्व कुटुम्बकम्।

उपयुक्त संक्षिप्त वर्णन से यह अनुमान करने में कोई विशेष आपत्ति न होगी कि व्यक्ति और विनियत कुटुम्ब, समाज आदि में सम्पत्ता के आरम्भ में जमीन और जन की किन्तु आगे चलकर जरूरी प्राप्ति तथा उसकी रक्षा करने की लालसा परिस्थितिजय से स्वभावजय हो जाता है। अकेले अथवा छोटे कुटुम्ब कुल अथवा वगैरे का कुछ समय में यह स्पष्ट हो जाता है कि आत्मरक्षा के लिए विधान संगठन और गतिमध्य की अनिवाय आवश्यकता है। तदनुसार वह सामाजिक व्यावहारिक एव आर्थिक नानि का चिन्तन और उनकी रचना का प्रयत्न करता है और उसके कारण और प्रचलन के लिए राजनैतिक, सामाजिक आदि सम्धारण बनाता जाता है। ये सब धियाएँ देश काय पाय तथा मायन जाति के अनुकूल बनता चलती या घटना रहता है। पलीजन पतिजन स्वामिभक्ति राजमक्ति, परिवार-जनध्व जानिमशा दान-मवा जाति उन्नत मनावति के रूप रणान्तर अथवा मन्त्रमन्त्र है। मर्दानगपान्त जानिधम कुलधम कत्तव्याकत्तय विधि निषेध आदि का भावनाएँ उगा एक सात में निर्यात है।

मानवशास्त्र तथा इतिहास उपर्युक्त मनावृत्ति के अर्थ कुछ प्रतिष्ठा को प्रदर्शित करते हैं। प्रायः यह दखा जाता है कि प्रत्येक मनुष्य, कुटुम्ब, वंश, समाज जाति अपने को दूसरे से श्रेष्ठ समझते हैं। मिस्री, अरब ग्रीक, ईरानी चीनी, जापानी भारतीय जादि सब देशिका और जातियां में यह भाव मिलता है। उसके अति आत्मभिमान, आत्मममान जात्यभिमान, दशाभिमान आदि शब्दों का प्रयोग होता है। उनकी हानि दुःखद और निन्दनीय मानी जाती है। मनुष्य अपना अन्वेष, सम्मान तथा लाभ प्राप्त करने के लिए दूसरे से स्पर्धा करता, सघप करता और कभी-कभी दूसरे का अपवेष ही नहीं, विनाश करने से भी नहीं हिचकिचाता। यदि उससे कुछ जाति दश राज्य को लाभ हो तो वह अवगणन समझा जाकर गुण समझा जाता है। पयन, कटनीति सघप, युद्ध जादि की जट म ईर्ष्या लोभ, मत्सर द्राह आदि गुप्त अथवा प्रत्यक्ष रूप में उपस्थित रहते हैं। पार्थिव कारणों से जो मनावृत्तियां उत्पन्न होती गयीं उनका घान प्रतिघान-युक्त प्रवाह प्रारम्भ से आज तक चल रहा है। संसार के रगमच पर उसके प्रदर्शन की चल्क इतिहास शास्त्र में अथवा शास्त्रों की अपेक्षा कुछ अधिक दिग्दर्श पड़ती है। समय-समय पर उनकी प्रतिक्रिया होती रहती है जिसका सक्त उचित प्रतीत होती है।

धार्मिक स्थिति

मनुष्य का लाखा वर्षों तक प्राकृतिक कठिनाइयां और आपत्तियों के निवारण के लिए लड़ना मिटना पना। यहां तक कि युद्ध और सघप करना उसके जीवन का व्यवसाय हो गया। भाजन वसन एवं छाजन के सिवा उसके प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष शत्रुओं ने बचने और युग-युगान्तर की निरन्तर विपत्तियों का जोर जाघात प्रत्याघात की घका से विश्राम पाने की इच्छा स्वभाविक हो गयी। उसके लिए अनेक प्रयत्न होते आ रहे हैं जिनकी परिभाषाएँ घटती-बढ़ती चली जा रही हैं। रत्नाकरजी की उक्ति संक्षेप में इसी स्थिति की ओर संकेत करती है—“वित्त मन्तर निरन्तर व्यतीत ह्व ह वैनी पाप पुण्य परिभाषा जुटि जायगी। जहा या जब जिनकी जीवन की आवश्यकताएँ सरलता से पूरी हो जाती हैं वहा आरामतन्त्री बन्ती है और जहां कठिनाता प्राप्त होती है वहा परिश्रम की प्रशंसा होती है। सासारिक जीवन की विभीषिका से व्यथित होकर अथवा आरामतन्त्री की समीपता और भागवति की क्षीणता से चिन्तित होकर मनुष्य अक्षय सुख शांति की कल्पना करता हुआ निद्वन्द्व मुक्त हाने के विभिन्न विधान के दान, दाय प्रयोग, विप्रदाय

के माग मात्रा है और अज प्रचार के तब तित और नुत बना बना है । उभी पयन के पान्थन तात प्रचार के ता तागत उगरी गगना जगत विपना के छात है रहे है । मगति भीता के आगात कि कम विमताति नवसाप्यन मातिता । तभानि कार्यातापतिविषय पर विचार बनता था था है । प्रथम था वा परिस्थिति था का तागत को परितामिन्त दृष्टमि में था दष्टिवाण से था पर उगरी गगना आगात है जाता है । तागत वा बनता में मौलि और मन्वताति मियाया वा पयन तात के मम म तागत के समात प्रतिविम्बित हो लगता है ।

धम का विरास

धम के आरम्भ और विराग के विषय म भी को कतिाई है जा पुरातन गतात के अच क्षेत्रा म मिन्ती है । गभ्यात की विचार ताता म पने हुए मनुष्या के व्यवहारा और विस्वासा माविज्ञात तथा शात धर्मों के निमित्त अथवा अय प्रकार के अवरोधा के महारे धार्मिक विरास का अनुमातिया जाता है । विज्ञानवादी विगो मनुष्य अथवा ममूहविषय को दृष्टर द्वारा धमद्वारा का प्रगत या उपाटन नहा माने । उनर विचार से अच सस्थाभा के समात धम का भा धीरे धीरे विरास हुआ है । उगरी जड भी मनुष्य का अनुमति अनुमान, नात आति में ही दूना उचित है । उनक मन से मनुष्य को गिगिक घटनाभा का दग कर आरचध, भय और मन्जिनामा के साथ ही साथ अपनी दुबलता और बवभा का अनुभव हुआ हागा । जलप्लाव, दवाग्नि रिजली तूफानी वामु आराग तथा घरती के जोर-छोर की असीमता, सघन बना की रिमीपिका टिगक एक प्राण घातक जीव-जन्तुभा के उपद्रवा और जीवत की अस्थिरता आति का प्रभाव सामू-हिक रूप से उसको बन्त मयवर प्रनीत हुआ होगा । साथ ही साथ उसे जल अग्नि वायु कद मूल, फल, सूत, चद्र आदि से प्राप्त लाभ अथवा सुग का भी अनुभव हुआ होगा । जीवन के नाक तथा रक्षक दोना पक्षा के बीच म मानव की मन् बुद्धि बहुत समय तक झूलती रही हागी । कालातर में पराक्ष गकितया की सत्ता में उसका विस्वास जम गया होगा ।

दूसरी समन्या पराक्ष ककितया को सानुबल करती की रही होगी । अपनी अपनी ससृति के अनुबल उनको उही विधिया से प्रसन्न करने का प्रयत्न किया गया जिनस मनुष्या का तोप होता था । उन्हें रिदाने-मुक्ताने के लिए कोग्रहल,

गया है कि नसर्गिक घटनाओं से उनके पीछे संचालक शक्ति या की सत्ता में मनुष्य के विश्वास का आरम्भ हुआ। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि व शक्तियाँ मचल जाने अथवा अप्रसन्न होने पर हानि और प्रसन्न होने पर लाभ पहुँचा सकती ह। कालांतर में व्यक्त गुणा व पीछे भी देव या देवी की कल्पना बढ़ती गयी। उनके पश्चात् यह विचार उत्पन्न हुआ होगा कि शक्तियाँ के यक्त रूप में विभिन्नता होने हुए भी वस्तुतः एक प्रधान सत्ता है, जो विविध देवी-देवताओं में व्याप्त है। इस धारणा का भी स्रोत वाह्य जगत में पाया गया। जिस प्रकार वर्षा का जल नदी का जल, जलाशय या समुद्रों का जल वस्तुतः जल ही व विभिन्न प्रकार ह। देवग्न, सूर्याग्नि भाजन पशुओं की अग्नि मशाल की अग्नि आदि विभिन्न नामों में प्रयोग एक अग्नि नामक सत्ता का है। जो कभी प्रकट आर कभी अप्रकट रहती है— 'अग्नियथ का सुवन प्रविष्ट, जल हिम उपल विलग नहि जस।

दूसरी विचारधारा प्रकृति तथा मनुष्य के व्यापारों में कारण और कार्य के संबन्ध पर विचार करने से निकली। विना बीज के वक्ष त्रिणा अग्नि के उष्णता अथवा प्रकाश विना जनक या जननी के सन्तति की सम्भावना नहीं जमे ही त्रिणा सत्ता के सृष्टि का होना असम्भव है। इसलिए सृष्टि के साथ ही उसके विधाता की सत्ता मानना अनिवार्य है। जब मानव-समाज में नेतृत्व के विनाम न राजा तथा सम्राट की स्थिति प्राप्त की जिम्मे विना शांति, शान्ति अथवा सामाजिक जीवन की रक्षा नहीं हो सकती। तब एक ऐसी सत्ता की कल्पना हुई जो प्राकृतिक नियमों के विधानों को रचना और उन्हें नियंत्रित करती है। उम्क त्रिणा न तो सृष्टि का रचना और न प्रकृति का नियमित व्यापार चल सकता है। जिस प्रकार दुष्टा और अत्याचारियों ने राजा अथवा सम्राट रक्षा करता है उमी प्रकार ईश्वर आदि व्याधियों ने रक्षा करता है। वह साहूकार है त्वमेव माता च पिता त्वमेव अथवा त्वमेव शरण मम जाति शक्तियाँ उस विचार धारा का प्रतिबन्धित करती ह।

दूसरे देवी और देवताओं की कल्पना को दार्शनिक विचारकों ने तक से, प्रज्ञावादी यागियों ने प्रज्ञा और अनुमति से और कवियों ने भावनाओं से परिष्कृत और सुमज्जित करके अतना सूक्ष्म मानवनातिक मार्गभित और पुष्ट कर दिया कि उनका भौतिक आधार लुप्त-सा हो गया और वे जलैविक आधि-दविक तथा जाघ्यात्मिक विचार श्रेणियों में प्रतिष्ठित हो गये। देवताओं और विनोद कर ईश्वर की सत्ता का ज्ञान मानव का महान् आतिवारी अवयव एवं उपलब्ध सिद्ध हुआ। विज्ञान अपने ढंग से उनकी ग्राह्य करने में तत्पर है। साधा-

रण व्यक्तिनया के लिए विश्वास, कीर्तन, पूजन के सिवाय अथ कोई उपाय न मिल सका ।

प्राचीन मिस्र में वहाँ के सम्राट एखनातोन ने ईसा से १३७७ वष पूर्व एवेश्वर-वाद का खुल्लमखुल्ला प्रतिपादन किया, जिसके कारण वहाँ के लोग म असन्तोष फँल गया । उसकी मृत्यु के बाद उस सिद्धांत का मिस्र के सम्राटा द्वारा प्रचार न हुआ । किन्तु ईसा के पाच-छ सौ वष पूर्व तक एवेश्वरवाद का प्रचार भारत, ईरान फिलिस्तीन में हो गया । 'एका देवा सर्वमतेषु शून् सर्वव्यापी सर्वभूतात्-रात्मा । कर्माध्यक्ष सर्वभूताधिवास माश्री चेता केवला निगणश्च नये एवेश्वर वाद की पूण उपनिषदीय यान्या है । वस्तुतः वैदिक युग की मन्त्रिज्ञा म भी उसके इतस्तत प्रमाण मिलते ह । किन्तु उपनिषदा में उस पर विशेष जार दिया गया ह । एवेश्वरवाद के साथ ही साथ चीन को छाडकर सबन सविता की उपासना पायी जाती है ।

ईश्वर की जन्त कल्पना दुम्माध्य जाने के कारण सम्भवत सूक्ष्मतत्त्वदर्शिया नक सीमित रही होगी । सर्वभाधारण के लिए उसकी मत कल्पना ही सम्भव थी । विभिन्न वानावरणा तथा रचिया के कारण उसकी अनेक प्रकार की कल्पनाएँ की गयी, जो भयाना भय भीषण भीषणाना गनि प्राणिना पावन पावनानाम आदि वचना से प्रकट होती ह । कही उसक पुष्प रूप में, कही स्त्री रूप में कही दाना म सयुक्त और कही विज्रत पग पक्षी की मुखाकृति सहित, कही भयांक, कहा बीमरस और कही सौम्य रूप में कल्पना की गयी । परमेश्वर क सिवा अनेकानेक शक्तियो के अधिष्ठाता देवा और दविया की मूर्तिया बना ली गयी । (मूर्ति पूजा का प्रचार पश्चिमो एशिया, याना मिस्र जादि दगा म विशेष रूप से हुआ । सिन्धु नद की सस्कृति जयवा सम्यता समवत पश्चिम से भारत म जाकर बीह युग म अच्छी तरह प्रचलित हो गयी ।)

धम सम्बन्धी ठमरा महत्त्वपूर्ण प्रदन यह भी उठा कि क्या मनुष्य के गरीरगत के साथ उसका नितान्त विनाग हो जाता है जयवा कुछ बच जाता है । बीज स वष और दृश से बीग की उत्पत्ति, मूर्यादि का जन्त होकर उदय हाना रात्रि के बाद दिन जादि दैनिक अनुभवाने यह विचार पुष्ट किया कि शरीर क निरम के उपरान्त कही न कही व्यक्ति की सत्ता जवश्य रहती हागी । उस सत्ता के स्वरूप के सम्बन्ध म विविध विचार फँस, किन्तु सत्ता में विश्वास चीन से यूरोप और मिस्र तक किसी न किसी रूप में जमा रहा । शवा की रक्षा और दिवगत जीवा की पूजा

भट आदि का मलाधार यही विश्वास है। भारत में तो जीव के विषय में गूढ़त विचार हुए और उसको ब्रह्म का जश कह दिया गया, यथा 'न जायत म्रियते वा कदाचित्—अजा नित्य आदितोऽयं पुराणा न ह्यत ह्यमाने शरीरे।'।

जरा और मृत्यु की अवश्यम्भावी घटना ने मानव सत्ता पर विशेष कर दार्शनिका के लिए एक कठिन समस्या उपस्थित की। अधिकांश चिन्तका ने सामाजिक जीवन की अततो गत्वा विफलता देखकर मरणोपरांत सुख प्राप्ति की बसी ही कल्पना की जैसा नबी दवताआ के सम्बन्ध में उनकी धारणा था। कुछ का जीवनचक्र के अवसान में मुक्ति दिखाई पड़ी। किसी ने इसी जीवन में सामाजिक सुख के उपभोग को नकार सत्य मानकर मरणोपरांत स्थिति का कपालकल्पित कह डाला। अवाध एव अतिमाय स्वाध, अनियमित शारीरिक तथा मानसिक वासनाओं को समाज के लिए ही नहीं करन व्यक्ति के भी हित के विरुद्ध अनुभव कर उसका सीमित तथा नियमित करन के यम और नियम देने। धार्मिक एव नैतिक विचारा की जड़ उपयुक्त स्थितियाँ और अनुभवों के आधार पर बना निक इतिहासकार इसलिए मानते हैं कि वे स्वयंसिद्ध हैं और उन्हें किसी पराक्ष शक्ति द्वारा जगत संचालन का मानन की विशेष आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। कतव्याकतव्य पाप-पुण्य की परिमापाएँ या देश काल, पात्र की स्थितियाँ के अनुसार घटती बढ़ती रहती हैं।

फिर भी इतिहास दार्शनिका तत्त्वना, यागिया तथा धर्मप्रवतका के क्षेत्र में हस्तक्षेप की अनाधिकार चेष्टा नहीं करना चाहता, क्योंकि वह ऐतिहासिक दृष्टिकोण के निम्न अर्थ दृष्टिकोणों की सम्भावना का असम्भव अथवा मिथ्या कहने का आग्रह करना अनुचित एव अनावश्यक समझता है। उसका केवल यही कहना है कि मनुष्य की विचारधारा और धारणा उसका ऐहिक जीवन के अनुभवों सफलताओं विफलताओं, आशाओं और निराशाओं से उत्पन्न तथा विवसित पायी जाता है।

परिस्थितियों को जीतने का प्रयत्न

उपयुक्त विवेचन द्वारा मानवसत्ता की परिस्थितियों के महत्त्व पर विशेष ध्यान आकर्षित किया गया। सम्भव है कि कुछ पाठकों को यह प्रतीत हो कि मनुष्य केवल परिस्थितियों का दास है व जसा उसे घुमाती है वसा उसका व्यवहार होता जाता है कनापि देवेन हृदिम्यतेन तथा नियक्ताऽस्मि तथा करोमि' इसलिए दासता से मनुष्य की मुक्ति नहीं हो सक्ती। आर्थिक, सामाजिक, राज

नीतिव, नतिव आदि समस्याएँ कुछ ऐसी उलझ गयी हैं कि उनमें निस्तार पाना असम्भव मा है क्याकि विश्व की प्रवृत्ति गरगता की आर स जगित्ता की आर विव-
मिन हानी चली आ रही है । यदि प्रवृत्ति की यही निश्चित गति है ता और भी व
आर वान द्वातर चलने क मिवा वार्ई अय उपाय नहा दिस्ताद दना । इस प्रकार
की धारणाएँ ऐतिहासिक युगा म मा बनती रही ह जिनके पन्स्वरूप जनन मत
मनात्मरा का प्रचार हुआ । प्रत्येक धम का इतिहास उस विदग्ध्यापी राग का
चिचिन्मा निर्धारित करने का प्रयत्न-मा करता दिपाई पटना ह । राग के विविध
निदान निधारित किये गये और उनकी गान्ति के उपाय सुझाय गये तिनका अनु
मान प्रत्येक मुख्य धम और दाना क सन्निप्त बणन स विया जा सकता है । भव
चक्र से निकलने क लिए किमी ने तण्णा का नाग, रिमा न बराग्ध, किसी न ईश्वर
की गरण, किमी ने सष्टि के नतिव विधान का अनुसरण आदि उपाय बनाये ।
उन सवा म प्राय ससार का असार बनाने की धारणा प्रकट अथवा गुप्त रूप स
लियी ह । ससार जथवा चित्त क राग की सत्ता मानकर उसने निवारण के उपाया
में विचारव लगे हैं जिसमे यह कहा जा सकता है कि सम्यना अथवा सम्वृति
की गतिविधि स अमन्ताप बराबर जारी रहा ।

विस्तार की प्रवृत्ति

इतिहास के अध्ययन मे एक ता यह जान पडता है कि मनुष्य बबर अपान
की तथा प्रकृति की दामता स मुक्त हाता आर उस पर विजय पाता जाता है ।
प्रकृति के रम्भ्या क पदों हस्त चले जान ह जिमसे विमान, दान आदि की उत्पत्ति
निरन्तर हा रही ह । मनुष्य का सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक सम्बन्ध
छाटे-छाट क्षेत्रों में सीमित न रहकर उत्तरात्तर बडे क्षेत्रों की सीमाओं का उल्लंघन
कर किसी बडी व्वाई की आर जान-बूझकर जथवा विवग हाकर बन रहा है ।
छाटे ग्राम बन्कर नगर में, नगर राज्य में, राज्य साम्राज्य में प्रथम निमग्न होत
बन गये । मिन्न तथा दगा, अक्जेण्टर के साम्राज्य के गभ म लिय गय । राम
नगर ने बल्ल-बल्ल स्पाटलैण्ट स लेकर एशियाई काचक और मसापटेमिया तथा
मिन्न और उत्तरी अफ्रीका तक साम्राज्य पत्रा लिया । पाटलिपुत्र का राज्यविस्तार
बदमीर म मैसूर और बग स सिन्धु नद के जागे तक बढ गया । भारत में चक्रवर्ती
राज्यस्थापन करता राजा का मुख्य आदम आर धार्मिक कत्तव्य-सा हा गया ।
चीन के राज्य की सीमाएँ भी उत्तरोत्तर बन्ती चली जाती थी ।

ऐसी ही प्रवृत्ति आर्थिक क्षेत्रों में विशेषतः व्यापार के क्षेत्र में, दिखाई पड़ती है। धार्मिक प्रचार तो हर प्रकार की सीमाओं का ताड़कर आगे बढ़ता रहा है। यूनान में मिस्र तथा पश्चिमी एशिया के एक रोम में ईरान, मिस्र यूनान और फिलिस्तीन के मतों का प्रचार हो गया। बौद्ध धर्म भारत में बाहर फारस मध्य एशिया और चीन में फैल गया। मनुष्य मानव को मानवी एकता के सुनहरे तारों में बांधने के लिए बृद्ध ज़रथुष्ट्र, ईसा आदि प्राणपण से प्रयत्न करते रहे। माराण यह कि सम्य सत्सार विश्वामुख जयवा 'बभ्रुधव कुटुम्बकम' की ओर बढ़ता जाता था। रूप रग गरीब-अमीर उच्च-नीच की विषमता को परिस्थितियों के दबाव और विचारों के परिष्कार से कम करने के आदर्शों के सारे सम्य सत्सार में प्राचीन युग में ही चलने लगे थे।

जिस प्रकार मनुष्य अपने सामूहिक चिराट रूप की रखाएँ देखने लगा उसी प्रकार मनुष्य को अपने व्यक्तित्व का मर्म दर्शन होने लगा। मनुष्य को स्वाध के अलावा परमाथ शरीर में जीव और जीव में विलक्षण शक्तियों का ज्ञान होने लगा। पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड का मूलगत संबंध जीवन की महत्ता के व्यावहारिक ज्ञान के ज्ञान पूर्व से पश्चिम तक प्राचीन युग में ही गीघ्रता के साथ फैल रहा था। उस सामाजिक तथा मानसिक रागों के निदान और उनका दमन शमन करने के उपाय निरालने की क्षमता का अनुभव हो गया। ऐसी दशा में यह कहना कि मनुष्य में अपने तन्त्र समाज के सुधार की शक्ति नहीं विभ्रमात्मक है। मनुष्य अपना भविष्य स्वयं बना रहा है। परिस्थितियों का समझने और उनका स्वानुकूल बनाने की चेष्टा इतिहास में बराबर दिखाई देती है। यह बात और है कि कभी परिस्थितियों ने उसे दबा लेती ह किन्तु अन्ततोगत्वा वह उनको बदलने में सफल हो जाता है।

प्राचीन समार में पांच सहस्र वर्षों में मध्यता तथा सस्कृति का जमा प्रचार हुआ वसा पहलू लाला वर्षों में न हो सका था। शांति करणा दया परमाथ सम्मन के नार चीन भारत ईरान यूनान रोम म्गेष मिस्र सभा दशा में लगने लगे थे। कल्पना और ज्ञान के महत्त्व की आर लाला का ज्ञान उत्तरात्तर विच रहा था। मम्राटा ने भी उमका सम्मन किया किन्तु व्यावहारिक नतिक जीवन में उमका प्रतिष्ठित करना प्राचीन युग में सम्भव न हो सका। साम्राज्यवाद की सामा पर मध्यता ठिठकनी गयी। राजनीति और अर्थनीति का धमनाति में सम्भव न हो सका। उलटे धर्म और नाति पर भी उनका रग चल गया।

जिम प्रकार हज़ारा वर्षों के समयकर मघप के पश्चात मनुष्य अपने सबुचित क्षेत्र को उपयुक्त सीमाओं तक बना सका है उसी प्रकार उन सीमाओं का जहाँ उसका विकास प्य गया है, सघप द्वारा तोड़ने की क्षमता उममें होना ऐतिहासिक दष्टि से सत्य प्रतीत हाता है। मनुष्य का बाहरी प्रकृति से उनी आका न रही जितनी बाहरी परिस्थितिया के फलस्वरूप आंतरिक मनावतिया स। यह कहना कवल अज्ञ सही है कि मनुष्य पंगु है और स्वाय-मरायण है, किन्तु यह भी सत्य है कि उमा गुण, कर्म और स्वभाव में मम्यता और मम्वृति के विकास के साथ एमे पवित्रन हुए और हा रहे ह जा उमके जीवन के स्तर का वस्तु ऊँचा तन ले जाने की क्षमता रगत ह। व्यक्तिगत जीवन और कौटुम्बिक अथवा छोटे पमारे क मामाजिक जीवन में भी उमकी उजस्विता का प्रगान समय-समय पर हाता रहा है किन्तु उमका मम्यता और मम्वृति के रूप में मसागर भर क फलने में यदि हज़ारा नहा ता मम्यता वप लगने की अवश्य सम्भावना मानी जा सकती है।

विकास क्यों रुक गया ?

म सन्दर्भ में यह विचार उठ सकता है कि साम्राज्य की सीमा पर विकास क्या रुक गया। उमका सबसे बड़ा कारण यह हुआ कि तत्कालीन विधान क अत्यंत भ्रमणशील जनसमुदाय जा अध-ध्वज दशा क इधर-उधर मारने-माने पिरले थे गामित न किये गये। पश्चिमी युराप, पश्चिमी और दक्षिणी एशिया तथा चीन का ता मगठन हुआ, किन्तु उनक सीमा मम्वधी प्रश्न हल न हा सक। इमके सिवा उत्तरी और पूर्वी युराप, मध्य एशिया, उत्तरी चीन, अरब तथा अफ्रीका के बबर कदी प्राचीन मसृति तथा मम्यता स वचिन से रहे गये। समार के अय लागा के विषय म तो उम समय मवथा जनान था। ऐमी दशा में विद्वव्यापी विधान की सम्भावना स्वप्न मात्र-मी थी।

दूसरी कमी यह थी कि प्राचीन मम्यता गुलामी और दामता को दूर न कर सकी। समाज का एक बड़ा जग रागग्रन्त रहा जिममें वह कमज़ार रह गया। तीमरा दोष अमीर और गगंव तथा गिभित आर अशिमित वर्गों के बीच में गहरी खाइ थी। चीनी जापति धार्मिक असहिष्णुता के कारण उत्पन्न हुई। इरान और रोम में धार्मिक सहिष्णुता थी, किन्तु वहा क निवासिया म उम शब्दा आर मभीरता की कमी थी जा मनुष्य क जीवन को मघूर परिष्कृत एव उचार बना सकती है। ईसाई धम का गुरू में जा मघा, करला पज उमका प्रभाव उनको

असहिष्णुता की जार खींच ले गया। भारत, चीन तथा ईरान में कुछ सहिष्णुता थी, किंतु कई कारणों से उनकी प्रगति भी रूक गया। राजनीतिक स्तर का घम उनका न उठा सका जितना राजनीति उस नीचे गिराने में समर्थ हुई। बाढ़ घम ने मसार को जसार जार टुलमय कहकर मानवजीवन और मासार्थिक सस्थाओं के प्रति उदामीनता पदा कर दी। इसाई घम का तरह उमका भा गठनघन राजनीति से हो गया, जिसका परिणाम जततागत्वा जच्छा न हुआ। अशाक की घमविजय की कल्पना और उमक द्वारा मनुष्य का सुधारन का प्रयत्न उसी के साथ समाप्त-सा हा गया। चीन में जबश्य मामाजिक जीवन और सस्था के सुधार के लिए कई प्रकार के सिद्धांत निकल किंतु उनका काय रूप में लाने के प्रयत्न उनक कारणों से सफल न हा सके। यनान राम तथा वबरा के साथ सघप हान के कारण ईराना धार्मिक जालन के यथाथ प्रचार में बाधा पडती ही रही। इरानी समाज स्वयं उसमें जधिक लाभ न उठा सका। साराण यह कि जार्थिक मामाजिक राजनीतिक और धार्मिक सस्थाओं का यथेष्ट सम्बन्ध न हो पाया जिससे मानवता का विकास तजी न पकड सका। पाचवी बाधा आदान प्रदान के शीघ्र वाहनरूप साधना की कमी थी। घोषा और रथा ने वाहना में तजी पैदा कर दी जिनका उपयोग महत्वपूर्ण किंतु सीमित था। भाषा लेखन-कला की विभिन्नता के सिवा कागज के अभाव से आदान प्रदान में भारी रुकावट थी। मार्गों का असुविधाएँ तथा और गतरे बडी भारी रुकावटें पैदा करत थे। उनमें नगर तथा छोटे राज्य का ता काम चल जाता था किंतु बडे साम्राज्य का आवश्यकताएँ पूरी न हा पाती थी। प्रगतिपाल समार की जरूरत उनसे पूरा न हा सकती थी।

एक कारण यह भा बताया जाना है कि प्राचीन युग में म्त्रिया का अपने विनाम का बहुत ही कम अवसर मिला। उनका मुख्य कतव्य जनता की हसियत से बग और कुल का गृह रचना गृहस्थी के साधारण काम करना और मनुष्यों के विनाम के हर प्रकार के साधन उपस्थित करना था। उन क्षेत्रों में उहान जच्छा योग प्रदान किया, किंतु पुण्या से उनका स्थान निम्न रहने के कारण के जय क्षेत्रों में भाग न ले सारा। युद्ध के मिला जय सामाजिक धार्मिक तथा राजनीतिक कार्यों में व सम्भवत जच्छा प्रभाव डाल सकती था। जो हा उपयुक्त कारणों के सिवा सम्भव है आर भी कारण न किन्तु निहास में व उतने स्पष्ट नहीं मिलते।

कुछ विचारका का कहना है कि चतुर, स्वार्थी और कुटिल लोग अथवा वर्गों ने अपने लाभ के लिए समाज की रचना जान बूझकर की। उम दृष्टि से उन्होंने इतिहास की व्याख्या भा कर डाली। वह व्याख्या इसलिए सतोपजनक प्रतीत नहीं होती कि सम्यता और सस्वृति का प्रत्येक स्तर पिछले स्तर की कमियाँ को दूर कर नवीन परिस्थितियों के अनुकूल बनता चला जाता है। जब नये स्तर की अपूर्णता का तीव्र अनुभव हान लगता है तब उसे बदलने की प्रेरणाएँ और प्रयत्न हात ह, यहाँ तक कि नवीन विधान प्रस्फुटित हो जाता है।

इतिहास का प्रवाह अखण्ड है

इसी विधि में मानव इतिहास की शृंखला क्रमवद्ध है। समाज के स्तर के बदलने में कभी कम और कभी अधिक समय इसलिए लगता है कि व्यक्ति की तरह समाज भी परिवर्तन से झिझकता है। अतः जब तक एक स्तर के दोषों का पूर्ण परिपाक नहीं हाता और उसकी अनुपयोगिता का तीव्र अनुभव नहीं हो जाता तब तक पूर्णतया काया-पलट नहीं होना। प्रत्येक नवीन विधान पिछले स्तरों में हा विकसित होता चलता है। इसीलिए इतिहास और समाजशास्त्र के अधिकांश विद्वान केवल इतिहास के अखण्ड प्रवाह के सिद्धांत को मानते हैं। इतिहास के निरूपण के सुभीते के लिए ही युग में विभक्त करने का ढग अवैज्ञानिक होन पर भी चलता रहा है। जब गहरा और भारा परिवर्तन दिखाई पाने लगता है तब उसके लिए युग शब्द का प्रयोग कर दिया जाता है। अभी तक सम्यता और सस्वृति का कोई ऐसा स्तर नहीं हुआ जो कमियों और दोषों से नितान्त मुक्त हो। क्योंकि तब तक मानवसमाज का विकास होता रहेगा जब तक वह अपनी पराकाष्ठा पर नहीं पहुँचता। सम्यता के किसी भी स्तर को गुणशाय अथवा गुणपूर्ण कहना भ्रमपूर्ण होगा। प्रत्येक गुण दोषों की जाच करना इतिहासप्रेमी का कर्तव्य है।

इतिहास की गतिविधि के अनुसार जब तक व्यक्ति तथा समष्टि का समन्वय न होगा तब तक संसार में अगान्ति और भयकर टक्करें होने रहना अनिवार्य सा प्रतीत होता है। प्राचीन इतिहास विश्व इतिहास का एक महत्वपूर्ण अंश होने पर भी मनुष्य के विकास की लीला का एक खण्ड-वाच्य ही है। उस युग के अनन्तर क्या हुआ और क्या हो रहा है, यह मध्य तथा आधुनिक युग के इतिहास से सम्बन्ध रखता है। इतिहासों की धारणा है कि इतिहास विगत युगों का समेटता हुआ अखण्ड रूप से प्रवाहित हो रहा है, उसका दूसरा छोर कब और कहाँ है इस सम्बन्ध

मे वे निश्चिन्त रूप से कुछ नहीं कह सकते। केवल दृढ़ता अनुमान करते हैं कि उसका क्षेत्र सक्षीणता से उत्तरोत्तर व्यापकता की ओर बढ़ रहा है। उसकी गति 'वक्र सरिता सरस की जिमि पतित पावन पाथ की सी है। मनुष्य समाज लडता-भिडता गिरना-उठता उत्तरोत्तर उँचे स्तर पर चला व्यापकता की ओर जा रहा है।

एव प्रवर्तित चक्र नानुवतयतीह य ।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघ पाथ स जीवति ॥

प्रथम खंड

अध्याय १, मेसोपटेमिया

यद्यपि विद्वाना में इस विषय पर कि सम्यता का जादिम विकास वहाँ हुआ, वहन मतभेद है तथापि यह सभी मानत हैं कि मस्कृति और सम्यता के लिए आर्थिक तथा सामाजिक जीवन में कृष्ट स्थिरता की अतिवाध आवश्यकता है। जब तक मनुष्य खाना-पान है तब तक यह स्थिरता यथेष्ट रूप में नहीं आती किन्तु जब कृषि का आरम्भ होता है तब लोगो को कहीं न कहीं स्थिर होकर रहना आवश्यक हो जाता है। कृषि के विकास के साथ ही सम्यता के विकास का वातावरण विकसित होता है।

वनानिका की धारणा है कि कृषि का विकास पहले वहाँ ही हुआ होगा जहाँ उसके लिए प्रकृति ने काफी माधन एकत्रित कर लिये होंगे। सम्भवतः ऐसे स्थान चली नदिना की तलहटिया या बछारा में, जहाँ की भूमि उपजाऊ और जहाँ सिंचाई की सुविधा हो रहे होंगे। इसके सिवा मनुष्य के जमकर रहने के लिए उन स्थानों के जलवायु का आवश्यक होना चाहिए। अबका का उपयुक्त धारणा के काफी प्रमाण मिलते हैं। ऐसा तलहटिया अधिकांशतः होने के कारण पृथ्वी के उत्तरी भाग में नहीं हो सकती। किन्तु मध्य तथा दक्षिणी एशिया और अमेरिका तथा उत्तरी पूव अफ्रीका में व मौजूद हैं। जब तक के पुरातत्त्व विज्ञान और अन्वेषण से नील नदी दजला फरात, सिन्धु नदी की तलहटिया में जादिम सम्यता का होना सम्भव प्रतीत होता है। इन तीनों में सबसे पहले कहा सम्यता का आरम्भ हुआ यह निश्चयपूर्वक कहना कठिन है। बुली हाल चाइल्ड आदि विद्वानों का अनुमान है कि सिन्धु नदी का घाटी में ही जादिम सम्यता के होने की अधिक सम्भावना है। माशेल का भी मत है कि मिस्र तथा बेबीलोनिया और सुमेरिया की सम्यता से सिन्धु घाटी की सम्यता पुरानी तथा श्रेष्ठतर थी।

सिन्धु नदी की सम्यता का वणन भारतवर्ष के प्रसंग के साथ जागे चलकर किया जायगा। पश्चिमी इतिहासकार प्रायः नील (मिस्र) या दजला फरात

नष्ट है। उत्तरी तथा उत्तर पूर्वी भाग में मेसोपटेमिया है। उस भूमि भाग पर प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए अनेक राज्यां न समय-समय पर धार प्रयत्न किये और भयंकर युद्ध हानि गठे। उस भू भाग पर एगिया के आग्रा की ही नहीं बरन् मिस्र सीम, राम बाला की भी नजर जमी रही और जहां तक बन पडा उस करने का उन्होंने प्रयत्न किया। उबरा भूमि हाने के मिया एगिया बराप तथा मिस्र के व्यापार के लिए कुछ महत्वपूर्ण यानायान के राजभाग भी उस क्षेत्र में हाकर जाने थे जिन पर अधिकार प्राप्त करने की अभिलाषा सबल राज्या के लिए स्वामाबिध थी।

सुमेरिया

दजला परात की तलहटी का यदि दा भागा में विभक्त किया जाय ता नीच का भाग, जो फारस की खाडी के ऊपर है पूव काल में सुमेरिया के नाम से प्रसिद्ध था। इस प्रदेश के मुख्य नगर लगरा, उरिच, एरिद उरनिप्पर आदि थे। सभी प्रकार ऊपरी तलहटी में भी जग्गुर, सिप्पर किंग, बेबीलान आदि नगर थे। इन नगरों ने प्राचीन इतिहास के निर्माण में न्यनाधिक भाग लिया था।

सुमेरियनों की कोई विशेष जाति न थी। जिस प्रदेश में वे लगे जाकर बस गये थे उसका सुमेर नाम था। उस प्रदेश के निवासी सुमेरियन कहलाये। सुमेर या सुमेरिया के निवासी कौन थे और वे कहां से कब आये निश्चित रूप से अभी नहीं कहा जा सकता। वे तो अपने का फारस की खाडी से आया हुआ मानते थे। हमने अनुमान किया जा सकता है कि सम्भव है वे माहनजादडा के निवासियों की ही कोई शाखा हो। पुरातत्त्वशा में इस विषय पर मतभेद है। कोई कावेगिया से, काट मध्य एशिया से तो कोई मध्य मागर की ओर से उनका जाना मानते हैं। यह तो प्रायः सभी मानते हैं कि वे वेग शब्द सेमेटिक मानव शाखा के न थे। सम्भवतः वे मिश्रित जाति के थे। क्योंकि सुमेरियन भाषा सेमेटिक भाषा से भिन्न थी और अपनी भाषा ही के कारण वे सुमेरियन नाम से प्रख्यात हुए फिर भी सम्भव है कि उनमें कुछ सेमेटिक भी मिल गये ह।

हाइन्तीन हजार वर्ष ईसा के पूव लगरा राज्य का अपने पडासी उम्म राज्य से मध्य हुआ। उसमें लमश के तत्कालीन राजा ईन्नताम का विजय प्राप्त हुई। उत्थानित हाकर उसने इरिच उर किश नाम के नगरों को भी जीत लिया और 'किशराज' की उभाधि धारण कर ली। अपनी विजय का एक प्रस्तर की शिला पर उमन उल्कीण करा दिया। उसके उत्तराधिकारी ने मदा मत्त होकर मदिना

की सम्पत्ति तक हृदयनाशुर् की जिसका परिणाम यह हुआ कि 'उरुकिनि' नामक एक सुधारक ने प्रजा का नेतृत्व लेकर राजा तथा धर्माधिकारियों के अत्याचारों का सफाया विरोध किया। विजयी होकर उगन लगा तथा सुमेरु के राजा की उपाधि धारण कर ली। उसने मदिरा नहरा और जलाशय का ही निर्माण नही कराया बल्कि बानना में भी सुधार किये जिससे गरीबों और विधवाओं की अत्याचारियों से रक्षा की जा सके। महन्ता को उसने गरीब प्रजा से धन जोर पग पर कर लने तथा देवताओं पर चढ़ाई गयी पूजा का जापस में घाट लने की मनाही कर दी। मतवा के दफनान की भी बहुत धन दी। सुधारा के कारण स्वार्थी दल में विद्वेष बढ़ा जिसमें लाम उठाकर उम्म वाला के नेता जगिमी ने लगश का ही नहीं बरना उर जोर एरिच का भी जीत लिया। इस पराजय से लगश की संस्कृति और शासन का क्षय और समेटिक लोगों का जा अरब से जाय था, प्रभुत्व बन्द गया। दक्षिणी इराक (सुमेरिया) से निकलकर शक्ति का केंद्र उत्तर की ओर बढ़ा। उत्तर के अक्कद प्रदेश का जिसके मुख्य नगर बिग वेवीलान आदि थे सुमेरिया का स्थान प्राप्त हुआ। जगिमी ने एरिच में राजधानी स्थापित की और त्रेम की देवी इएना (इनना) के मन्दिर का निर्माण कराया।

जगिमी के राज्य का थोटे ही वर्षों में अन्त हो गया। शरकिन (सरगान) नामक एक जनातबुलशील किंतु प्रतिभाशाली व्यक्ति ने उसको परास्त कर साद इराक और उसके पास के क्षेत्रों पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया (२३५० ई० पू०)। सिप्पर के पास ओद नगर को उसने अपनी राजधानी बनाया। सारिया में उसके साम्राज्य के विकास का दूसरा अध्याय तब आरम्भ हुआ जब शरकिन ने समुद्र तट तक अधिपति होने की घोषणा कर दी। उसके एक लक्ष से यह प्रतीत होता है कि उसका साम्राज्य सीरिया और सायप्रस द्वीप के समीप तक फैल गया था। सम्भव है कि इसमें अत्यन्त ही मत्स्य के उपरांत लागा ने अपने हृदय में उस देवता का स्थान दिया।

अक्कद का दूसरा उल्लेखनीय सम्राट नरम सिन हुआ। उसने साम्राज्य की उत्तरी और पूर्वी सीमाओं का आगे बढ़ाया। पश्चिम में लाल सागर से भूमध्य सागर के तट तक उसका प्रभुत्व स्थापित हो गया। अपने विजय का सीब बणन भी मूसा की गिला पर उसने उल्लेख कराया और अपने पितामह का तरह ही मदिरा का निर्माण कराने में उत्साह दिखाया।

लगभग २३००—२१५० ई० पू० में अक्कद पर जगरास पहाडिया की गुत्ति नामक एक भ्रमणशील जाति का भयकर आक्रमण हुआ। गुत्तिआ का ध्येय राज्य स्थापित करना न था। वे केवल लूटमार में ही सन्तुष्ट रहने थे। उसने एक यहलाम तो अवश्य हुआ कि प्रत्येक नगर अपनी रक्षा के लिए बल बढ़ाने का प्रयत्न करने लगा। फिर भी इसका परिणाम यह हुआ कि एक गताब्दी तक सुमेरिया में अत्याचार और अव्यवस्था का बालमाला रहा। आन्विकार लगाने नगर ने गुत्तिया नामक एक धीरे यादवा के नतत्व में अपनी मान मर्यादा का बहुत कुछ रक्षा कर ली। गुत्तिया की प्रेरणा से उस नगर ने कला, धर्म तथा साहित्य में कुछ उत्थिति कर ली। अपना सबाआ के कारण उसका भी दबत्व की उपाधि प्राप्त हुई। उसके मित्रा एरिच वाला ने भी गुत्तिआ के देग का मुक्त कराने में उल्लेखनीय उत्साह दिखाया। किन्तु नम्म नाम के एक व्यक्ति की (२१२५ ई० पू०) योग्यता और परिश्रम से उर नगर ने सबसे अधिक ख्याति प्राप्त की और सुमेर तथा जवन्द प्रान्तों को भी उसने अपने अधीन कर लिया। लगभग सौ वर्ष तक उर नगर के नतत्व में सुमेरिया शांति और मोक्ष के साथ सांस्कृतिक उत्थिति करता रहा। उस युग के धार्मिक साहित्य मंदिर तथा कला राजमवन पुस्तकालय आदि के अवशेष उसकी कलाप्रियता की आश्चर्यजनक साक्षी दत्त हैं। उरनम्म ने कानन रचना का जो आरम्भ किया उसे उमक वंशज शुली ने इतना उत्तम तथा व्यवस्थित कर दिया कि आगे वाले राजाओं के लिए वह आर्देन का आधार बन गया।

ईसा से करीब दो हजार वर्ष पहले सेमेटिक जाति की मरतू (एमाराइट) नामक शाखा ने पश्चिम का आर स तथा एलाम (पारस) वाला ने पूव की आर से आक्रमण किये। मरतू लोगो ने उत्तरी भाग (अक्कद प्रदेश) और एलाम वाला ने उर नगर पर अधिकार जमा लिया। उन आक्रमणों ने सुमेरिया के साम्राज्य को सदा के लिए नष्ट कर दिया। एक सत्रह वर्ष से अधिक तक सुमेरिया का दीर-दौरा रहा। उसका प्रभाव बेबीलोन पारस पर ही नहीं अपितु मिस्र और मिस्र तक भी जा पहुँचा था। अनुमान किया जाता है कि सबसे पहले सम्भवत वही स नगर राज्या साम्राज्या, कृत्रिम सिंचाई सो चोदी की दरा व्याज तथा कानूनी लिखा-पढी, लिपि शाली पाठशालाओं साहित्य जामूषण के साधनों मंदिरों और महान् शिल्प, मेहरावा, गुम्बदों आदि का सूनपात हुआ था। उसका दूसरा पहलू चिन्ताजनक था क्योंकि बड़े पमाने का गुलामी निरकुण सत्ता, धर्मा

धिकायिका की मत्ता जोर साम्राज्यगत या प्रचलन भा वहा म हुआ । सम्भन्ता व विवाग म उगवा दन बड महत्व की मानी जाती है । उमर प्रन्तिन माग ता कुछ न कुछ अनुकरण ग्रीक राम, ईरान और सम्भन्त भारतवर्ष न भा विया । कुछ लागा की ता यहाँ तन धारणा है रि चान ता उमरा प्रभाव जा पड्चा ।

सामाजिक जीवन और रहन सहन

मुमेरिया व लाग जमा ऊपर लिखा गया है समष्टि जाति व न थ, यद्यपि जाग चलकर दाना का सम्मिश्रण हा गया । उनका रग गहँआ नाक ऊधी, माया छाट बड छाटा और नत्र नीच की जोर शन हुए हात थ । कुछ लाग मिर पर बाड रगत और कुछ मुडवा टागत थे । साधारण लोग कमर स ऊपर का हिस्सा खला और नीच का भाग घुटने तक उनी तहमत स ढका रखत थ । धना लागा की पागाव गल तक हाती थी । जारम्म मे रहन के लिए सरखण्ड की शोपनियाँ उहँे काफी थी किन्तु धारे धारे मिट्टी व और फिर पक्की इटा व मकान बनने लगे । बीम इच लम्बा उननी ही चौडी जोर भाडे तीन इच माटी इट काम म लायी जाती थी । लकडी या पत्थर के मकान उन साधना के अभाव व कारण वहाँ न बनाय जा सक । मुमेर और जक्क की सयुक्त जनसख्या गायद दग लाख रहा होगी । लगस नगर की जनसख्या माठ हजार थी । नगरा में जमार मध्य थणी के तथा गरीब जोर गुलाम रहते थ । गुलामा की सख्या उत्तरगततर बढता जातो थी । राज्य में कवल दा श्रेणिया मानी जाती थी—एक ता स्वतन्त्र लागा की और दुमरी गुलामा की । या ता अन्तिम निणय पुरष का ही होता और किसी किसी ल्गा में बह स्त्रिया का वच सकता जयना उनके द्वारा कज चुका मन्ता था तथापि साधारणतया स्त्रिया व भा कुछ अधिकार होते थ । अपने पिता के घर स प्राप्त वहेज पर उनका पूरा अधिकार होता था जोर उमे व जिमे चाहती दे सकती थी । व स्वतन्त्र रूप स व्यापार कर सकी जोर निजी दास भी रख सकती थी । यदि स्त्री बध्या हाता ता उस तलाक लिया जा सकता था जोर यदि वह सन्तान उत्पत्ति स इनकार करती ता हुदा ली जाती था । यभिचारी पुरष को क्षमा किन्तु व्यभिचारिणी का प्राण दण्ड लिया जाना था । माता पिता का सन्तान पर पूरा अधिकार था । व उहँे घर स ही नहा बरन नगर से भी निकाल सकते थे । पिता व न रहने पर माता का ही अणुासन चलता था । स्त्रिया का जीवन में ही नही बरन मत्यु व बाद भी

भामृपण पह्नाये जात थे । रानी सिंहासन पर बठने की अधिकारिणी मानी जाती थी ।

सुमेरिया की शानन व्यवस्था

कुछ विद्वाना की राय में ऐतिहासिक युग के पहले सुमेरिया में बड़े-बूढ़ा की सभा शासन करती थी किन्तु ऐतिहासिक युग के आरम्भ से ही बड़ा राजसत्ता प्रचलित हो गयी । सुमेरिया के लोगो का विश्वास था कि समार का शासन वस्तुतः देवताओं की सभा करती है । देवताओं की सरया अगणित है किन्तु उनका मुख्य देवता ह 'अनु (आकाश का देवता) जो देवसभा का सभापतित्व करता है । उसी से जय सब देवता अधिकार प्राप्त करते ह । उसी प्रकार देवताओं का शक्ति और बल अनिल देवता (गजन-राजन का प्रमजन) प्रदान करता है । वही देवताओं की इच्छा का कार्याचिन करता है । इनके उपरान्त दवी निनमह (धरती माता) तथा एकी (जलदेवी) का स्थान है । देवता और दविया ही समार का संचालन करती ह । मनष्य का उनकी इच्छा के अनुसार चलने के सिवा कोई चारा नहीं क्याकि वह निबल और नदवर है । वसलिए मनष्य का कल्याण इसी में है कि वह भी अपना विधान देवताओं के विधान के अनुसार बनाकर उनकी इच्छा के अनुसार काय करे । उनका सेवा और जाना का पालन करना ही मनष्य का अधिकार एवं कर्तव्य है । उक्त सिद्धान्त के अनुसार नगर राज्य का मुख्य शासनकर्त्ता बड़ा का देवता था । उसकी सेवा का विधेय भार राजा तथा मुख्य पुजारी पर था । महत्त्वपूर्ण विषया के निणय के लिए नगर के वयस्क जना की सभा आमन्त्रित कर ली जाती थी । दिन प्रतिदिन क साधारण काय क लिए वयावद्धा की एक कायकारिणी सभा थी । विधेय काय के लिए सभा अपने लोगा में से एक का चुन लेती थी । राजकाज शासन आदि में स्त्रिया बालका तथा गुलामा का भाग लेन का अधिकार न था ।

नगर का मुख्याधिष्ठाना तथा देवता का प्रतिनिधि राजा हाना था यद्यपि दवालय के मुख्य धर्माधिकारी का कर्तव्य था कि वह धर्म और शान्ति की रक्षा करे । कवल दुष्ठा और शत्रुओं का दमन करना ही नहीं बरन एकच्छत्र राज्य स्थापन राजा का कर्तव्य था । यदि दविक विधान का अक्षरग पालन किया जाय तो पृथ्वी पर एक ही अधिराज (लुगल) महाराजा हाना चाहिए जमा कि विश्व में अनु है । इस आदग तथा अय नीतिक, आर्थिक और शासनिक आवश्यकताओं

के कारण राजाओं में प्रमुख बनने की प्रेरणा अनिवाय-सी ही गयी। जिस नगर का राजा विजय प्राप्त कर लेता वही का देवता राज्य का देवता माना जाता था। विजित नगर का देवता भी उस नगर का देवता का अधीन समझा जाता था। राजा का प्रजा से जिस के रूप में कर मिलता था।

राज्य विस्तार के साथ गान्धि के स्थापन के लिए मन्त्री तथा सामन्तों की नियुक्ति की गयी। नगर का शासक एनसिस कहा जाता था जिसको नियुक्त करना या हटाना राजा का अधिकार था। सामन्त अपने क्षेत्र की आमदनी से एक सेना सज्जित करता और वहाँ का शासन करता था। आवश्यकता पड़ने पर सामन्त राजा को सैनिक सहायता देता था। उक्त सेवाओं के कारण उससे किसी प्रकार का कर नहीं लिया जाता था।

सुमेरिया के राज्यों का क्षेत्र लगभग सौ वर्ग मील था। कृषि, जल वितरण, व्यापार तथा जनसंख्या बढ़ने के कारण राजाओं में सघन अनिवाय सा ही गया था।

आर्थिक व्यवस्था

उर के तासरे राजवंश के खपडा पर उत्कीर्ण लेख हजारों की संख्या में मिले हैं जिनसे तत्कालीन आर्थिक नतिक और सांस्कृतिक जीवन के सम्बन्धों में अभूतपूर्व सहायता मिलती है। पहले यह समझा जाता था कि सुमेरिया का आर्थिक जीवन दवालया पर आश्रित था किन्तु वह धारणा अब ठीक नहीं मानी जाती। यद्यपि यह ठीक है कि सती करने के लिए मंदिरों के अधिकार में बहुत जमान छोड़ दी गयी थी किन्तु उसका अनपात कृषि-शान्य भूमि का केवल छटा अंश था। सुमेरिया का आर्थिक विधान मुख्यतः कृषि पर अवलम्बित था यद्यपि वहाँ खासा व्यापार भी होता था। खेत बगल में जाते जाते और नदी नहरों तथा नालियों से उनकी सिंचना होती थी। गहूँ जो कि मटर तथा जई बीजा की फलिया भी पदा की जाती थी किन्तु जो का सती अग्रिक हाता थी। जनाओं के मिदा लाग खजूर तथा अनार का पट लगान थे। गाना का पार चरागाह हात जिन पर भेड़ें चरियाँ गाय जाँर मुँजर चरत फिरत थे।

समय के समय का कृषि का कुछ पता चलता है। उदाहरण के लिए एक उल्लेख से यह पता चलता है कि लगान का एक दवाय के पामरम हजार एनड से भी अधिक कृषि-शान्य भूमि थी। मंदिर तथा उमम सम्बद्ध सेवकों के लिए आवश्यकता का अनुमान सत रतिन करन का उपरान बाकी सब जमान लगान पर विमाना को

दे दी जाती थी। सबसे अधिक और प्रामाणिक सामग्री उर नगर के तृतीय राजवंश के युग की प्राप्त हुई है। मिट्टी के खण्ड पर खचित हजारों चित्र मिले हैं जिनसे तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था पर बहुत प्रकाश पड़ा है। यह निश्चित सा है कि कृषि के लिए भूमि नापी जाती थी और खेती के बीजों के वजन और पदावार का विस्तृत लेखा-जोखा रखा जाता था। मवेशियाँ व्यापार उद्योग, यातायात, मजदूर जादि सम्बन्धी कार्यों का ज़ोर लिख लिया जाता था। जमा-खर्च का हिसाब रखने का ढंग, यराप वाला से पत्तीस सहस्र वर्ष पूर्व मेसोपटेमिया वाज़ा ने आविष्कृत किया था। आवश्यक लेखा पर मोहर बना दी जाती थी। यद्यपि अधिकांश लेख देवालय सम्बन्धी हैं तथापि उनसे माघारण सस्कृति तथा आर्थिक व्यवस्था की भी कल्पना दिखाने में सहायता मिलती है। अनुमान किया गया है कि लगभग एक दजन से कुछ अधिक देवालया के अधिकार में लगभग सौ वर्ष मील कृषि-योग्य भूमि थी।

कृषि के सिवा मेसोपटेमिया में ऊन, ऊनी कपड़ा, चमड़े साना चादी और कांस की चीजा का काम होता था। मन्दिरों और राजमहल में कारीगर नौकर रख लिये जाते थे जिनके काम, मजदूरी की दर जादि का हिसाब बाकायदा रखा जाता था। पिसाई का काम प्रायः स्त्रियाँ करती थीं। सुमेरिया में कई तरह की जौ की शराब भी बनायी जाती थी।

नगरों का व्यापार जल तथा स्थल मार्गों से होता था। टीन तांबा, कागा सोना चादी हाथीदात और हड्डी के बरतन तथा जेवर बनाये जाते थे। उन से कपड़े बुने जाते थे। चमड़े का भी काम होता था। व्यापार या तो विनिमय द्वारा होता था अथवा निश्चित वजन के चांदी या सोने के टुकड़ा से। उधार अथवा बज्र पर भी लेन-देन करने थे किन्तु सूद की दर पन्द्रह से तृतीय प्रतिशत तक होती थी।

शिक्षा-दीक्षा

व्यापार, मन्दिरों के हिस्से के वितायण एवं धर्मशास्त्रों के कारण सुमेरिया का लिपि तथा गणित का आविष्कार करना पड़ा। उनका सच्चे ज्ञान का ज्ञान न था। उनकी लिपि का क्यूनीफॉर्म चिह्नलिपि कहते हैं। उपर से नाच गिन्त थे किन्तु वह वायी में दाहिनी ओर पढ़ी जाती थी। प्रत्येक प्रतीक एक मित्रेबिल (T-दखल) का द्यतक होता था। इनकी संख्या चार सौ से कम न थी। सुमेरिया का सबसे पुराना लेख सन् २७०० वर्ष पूर्व का है। इससे २७०० वर्ष पहले उन्होंने एक सभ्यालय में खण्ड पर

सचिit तीस हजार लेख तरतीव स रखे मिल ह । उनमें कविनाएँ प्राथनाएँ और गाथाएँ मिलती हैं । इनके सिवा काननी लन देन या लिखा पढी वाले सबसे पुराने लेख समवत मुमेरिया म ही मिले ह । जकगणित ज्योतिष, नाप जोख का उनको कामचलाऊ नान हो गया था । उनका वप बारह महीने का था किन्तु महीने का चारम्म व चद्रमा से गिनत ये । इसीलिए हर तीसरे वप उनको एक महीना बाना पडता था । चद्रमा की पहली कला, अर्द्धचद्र तथा पूणचद्र का स्वागत व बडे उत्साह से करते थे ।

कला-कौशल

मुमेरिया के कविना की रचनाआ के कुछ जग मिलते ह जिनसे उनकी साहित्यिक रचि का अनुमान किया जा सकता है । देवताआ की स्तुतिया और प्राथनाएँ महाबलवान गिलगमश के अपूव वलप्रदशन की प्रशसा, सष्टि की उत्पत्ति की कल्पना जल स पिता आकाश और माता पथ्वी की उत्पत्ति तथा देवताआ की बनावली उनमे दी गयी है । प्रलय की कथा स्वग का स्वरूप जिसमें जरा मत्यु आत्ि का अभाव था उनक काव्य के विषय ह ।

वास्तु कला तथा तक्षण कला की भी वहा कुछ उन्नति हो चुकी थी । पत्थर के जमाव व कारण उनकी इमारतें ष्टा से बनायी जाती थी जिसस कला का उतनी उन्नति न हो सकी जितनी की जयत्र समव हुई । उह भहराव बनाना आता था यद्यपि बडे पमाने पर उसका विकास वहा न हुआ । एक व ऊपर एक बन्िकाआ वागी कई मजिला की जिगुरत नामक इमारत उनकी विगाल निर्माण क्षमता का अच्छा प्रमाण है । जिगुरत का व लोग स्वग-यात्रा की सीढा मानते थे ।

मुमेरियना की सख्त पत्थर की तक्षण कला अधिक उन्नत न हा सकी । उनकी गड्डी मतिर्या भाडी सा निर्जीव सा ह किन्तु नरम पत्थर और घातुआ की मृतिर्या अच्छा खामो ह । सीप स जडाऊ काम बनाने में उन्ह उल्लखनाय सपरता प्राप्त हो गयी था ।

धर्म

मुमेरिया व निवामिया का धर्म में बडी थ्रदा थी और दक्ताआ में गहरा विश्वास । एगो थ्रदा स उनका जीवन आनप्राप्त था । जसा कि पहले सचन मिया

गया है वे लोग सबत्र तथा प्रत्येक प्राकृतिक चमत्कार में किसी न किसी दैविक शक्ति की सत्ता की कल्पना करते थे। वे व्यक्ति के, स्थान के, जाति के तथा विश्व के देवताओं का अस्तित्व मानते और उनका आदर-सम्मान करते थे। अक्रास का देवता 'अन' उनमें सर्वश्रेष्ठ तथा जगत्पिता माना जाता था। साठ का अब उमरा प्रतीक समझा जाता था। साधारणतया वह देवताओं तथा मनुष्यों से पथक और तटस्थ रहता था। उससे नीचे 'एनलिल' देवता की, मिमका प्रतीनाक पचास का गणना थी। बड़े समार की व्यवस्था का स्थापक और अय मय देवताओं का अधिष्ठाता एवं शासक माना जाता था। उसके बाद चालीस अब क प्रतीक वाले देवता (एनकी?) का स्थान था। वह ज्ञान का श्रोत था जिममें जायवेल, लेपन कला संस्कृति आदि का प्रवाह चलता था। चौथा स्थान तीस अक के प्रतीक वाले तवनर नामक चन्द्रदेव का था जिममें गणित और फलित ज्योतिष का आविर्भाव हुआ माना जाता था। पाचवा 'उतु' नामक सय देवता था जिमका प्रतीक अब बीस था। षाय का काय उमका विशेष क्षेत्र था। उपयक्त देवताओं के पश्चात् इनका देवता का स्थान था जिसका प्रतीक अब पंद्रह था। वह प्रेम की प्रमुख अधिष्ठात्री होने के साथ ही साथ युद्ध की भी देवी थी। इन मयके सिवा बहुत से अन्य देवी-देवताओं में लोग का विश्वास था। कुछ देवता हितचिंतक एवं हितकारक और कुछ हानि कारक माने जाते थे। किसी स्थान पर एक देवता और कहीं दूसरे देवता का प्राजाय था। उदाहरण के लिए एनलिल का निष्पर नगर में एनकी का एरु म नगर का उर म, इनगा का उरु म मय स्थान माना जाता था। मयकर देवता में 'नरगल', जा पाताल लोक में निवास करता तथा कुछ नगरों का अधिष्ठाता था प्रमुख माना जाता था। मुमेरिया के देवता कुमार न थे व शम्पय जीवन में विमुख न थे, सभी की जन्मगिनियाँ थी।

मुमेरिया के निवासी मनिपूजक थे। वे अपने देवताओं की भयादा के अनुकूल मन्दिर बनाकर वहाँ उन्हें प्रतिष्ठित करते बड़ी श्रद्धा एवं मन्त्र के साथ उनकी स्तुति और प्रार्थना करते थे। पत्र, फूल दूध मक्खन में ही नहीं घरन पशु पक्षी के मांस तथा मडली स और कभी-कभी नरखलि से भी देवताओं का पूजन किया जाता था। उनको प्रमत्त रखने तथा उनका मनोरंजन के लिए देवतासिया रखी जाती थी जा उनका ही गली घरन उनसे नर-तनुघात प्रतिनिधियाँ की भी तन मन से सब प्रकार का सेवा करती थी। बाद के युगा आर संस्कृतियाँ की धारणा के अनुसार उपयक्त व्यवस्था अभिचार-स्योपक मानी गयी किन्तु तत्कालीन संस्कृति के अनुसार

वह व्यभिचार की सूचक न होकर निश्चल और जगोप आत्मसमर्पण की प्रमाण समझी जाती थी ।

मंदिर की देख रख और विविध प्रकार के प्रयत्न करने के लिए प्रति वष पुजारी नियुक्त कर दिये जाते थे जिनका प्रधान या तो स्वयं राजा जयवा उसका कोई राजकुमार होता था । मंदिरों के खर्च के लिए सक्ता-हजारा एकड़ जमीन दान कर दी जाती थी । खुदाकाश के लगान और दूकानों के किराये से अच्छी आमदनी होती रहती थी ।

सुमेरिया वालों का विश्वास था कि मृत्यु के पश्चात् प्रकाशमय परलोक मिलता है जहाँ भले-बुरे सभी को जाना अनिवाय है । नरक का जघकार-ग्रस्त लोक उनकी कल्पना में नहीं आया था । मृतकों का दफनाते समय उनके साथ भोज्य पदार्थ, अस्त्र-वस्त्रादि रख देते थे । सुमेरिया वालों ने मृत्यु के उपरान्त की स्थिति का उतना महत्त्व नहीं लिया जितना कि मिस्र वालों ने दिया था ।

बेबीलोनिया

उर नगर के पतन होने से मसापटेमिया के तीन टुकड़े हो गये । उत्तर में बेबीलोन मध्य में इसिन और दक्षिण में लरस । इस दुर्घटना के प्रमुख कारण सुमेरिया पर हुए एलाम वालों के जात्रमण और अन्तिम संश्लेषित जाति के एमोरित वंश द्वारा किया गया भयंकर आक्रमण था । दो युद्धशील शत्रुओं के बीच में पिसकर सुमेरिया के टुकड़े हो गये । लगभग दो सहस्र वर्ष इसा से पूर्व एमारित वंश ने बेबीलोन में अपनी सत्ता का केन्द्र बनाकर धार धीरे उत्तर प्रदेश पर आधिपत्य स्थापित कर लिया । बेबीलोन के आगे उत्तर में असीरिया था । यद्यपि एमारित लोगों की भाषा दूसरी थी तथापि लिपि के लिए उन्होंने सुमेरिया का रखा चिह्न लिपि का आश्रय लिया । शत्रुओं में रहना छोड़कर घरा में रहने और नागरिक जीवन के प्रवाह में बहने लगे । धीरे धीरे एमारिता और सुमेरिया वालों का इतना सम्मिश्रण हुआ कि वे एकरस हो गये ।

बेबीलोन में दो राजवंशों का शासन रहा है । प्रथम एमोरित वंश का छठा राजा हम्मराबी (१८ सती ई० पू०) बड़ा यशस्वी और प्रतापी निकला । उसने एलाम के राजा रिमिन का उरुक और इसिन से निकाल दिया । लरस का जीतने के उपरान्त उसने असीरिया पर जात्रमण कर अपना राज्य की साम्राज्य उत्तर असीरिया तक बढ़ा दी । उसका साम्राज्य उतना बड़ा हो गया जितना कि उर के तृतीय

राजवंश का था। उसके साम्राज्य के कारण सुमेर और अवन्द भी बेबीलोनिया कहे जाने लगे। सुमेरिया की सभ्यता का इस नये साम्राज्य में विशेष संवर्धन आर उत्पन्न हुआ। हम्मुराबी ने विश्व नगर से पारस की खाड़ी तक नहर बनवा कर बहुत सा भूमि को उपजाऊ कर दिया। अपने देवता मारदुक के लिए उसने बहुत बड़े देवालय का निर्माण कराया। अनेक महला, मंदिरों के सिवा उसने फगत नदी पर एक पुल भी बनवाया। हम्मुराबी की ह्यानि का विशेष कारण उसका 'याय विधान या कानून' का संग्रह है जो उसने लेखानुसार उसे सूर्यदेव (शम्स)से प्राप्त हुआ था। उसी के लेखानुसार उस कानून का ध्येय था प्रजला के अत्याचार से निवला की रक्षा करना तथा जनता की भलाई के लिए पृथ्वी पर आलाक फलाना। उसका आदेश था 'याय और सदाचार की स्थापना करना और पिता के तुल्य प्रजा का पापण एव उत्पन्न बढाना। कानून के उपयुक्त संग्रह में २८५ नियम व्यवस्थित रूप से विभक्त हैं। निजी सम्पत्ति, जायदाद, व्यापार, व्यवहार, कुटुम्ब, पांस, मजदूर एव मजदूरी आदि विभागा में कानून संगृहीत है। उन कानून का षड विधान कुछ कठोर है। उदाहरणार्थ उडाड स्त्री, मधुशाला में जाने वाली पुजारिन, व्यभिचारी डाक और चोर आदि के लिए प्राणदण्ड देने की उसमें आज्ञा है। दण्ड विधान प्रतिशोध के सिद्धान्त पर अवलम्बित थे। पहले लागा की धारणा थी कि हम्मुराबी के कानून सत्तार के संगृहीत कानून में सबसे प्रथम है किन्तु आधुनिक खवेपणा ने यह स्थापित कर दिया कि उस परिपाटी का सुमेरिया वाला ने बहून पहले ही स्तपान कर दिया था यद्यपि उनका विधान उतना विस्तृत और व्यवस्थित न हो पाया था।

हम्मुराबी ने चालीस वर्ष तक राज्य किया (१८०० ई० पू०)। बेबीलोनिया का प्रथम राजवंश लगभग डेढ़ सौ वर्ष तक चला। तदनंतर उस पर दक्षिण और उत्तर से आक्रमण होने लग। एशियाई काचक से हिट्टी लोग आक्रमण करते रहे। परन्तु सबसे बिनाशकारी आक्रमण जयरोश पहाना की आर से बस्सी लोग का सिद्ध हुआ। बस्सी हिट्टिया की तरह समवत इण्डो-आयमापाभापी थे। गण दश नामक उनका नेता दलबल सत्ति आकर दजला फरात के पटार में बस गया। यद्यपि उसका राज्य छोटा था तथापि बेबीलोनिया की शक्ति उस राज्य का दमन करने में असमर्थ रही। बेबीलोनिया के पुरान राज्य का पतन ईसा से सालह वष पूर्व हुआ तथापि एमारिन लागा की बची-बचूची सत्ता का नाग समवत सालहवी शती ई० पू० में हा चुका था। यह क्या कम है कि उनकी सभ्यता तथा भाषा का सम्मान सखडा वर्ष

क होता रहा। उसका प्रयोग हिट्टिया, सीरिया और मिस्र में भी हुआ रहा।
नकी सभ्यता का प्रभाव पश्चिमी एशिया पर ही नहीं बरन ग्रीस की सभ्यता पर
भी पाया जाता है।

समाज

सुमरिया की तरह बेबीलोन में भी समाज की तीन श्रेणियाँ थीं किंतु उनका
स्थान और अधिकार अधिक स्पष्ट तथा व्यवस्थित कर लिए गये थे। पहली श्रेणी म
राजा, राज्य के पदाधिकारी, सेना के अफसर, घर्माधिकारी, जमींदार, धनी व्यापारी
आदि थे। दूसरी श्रेणी के अंतर्गत मजदूर तथा साधारण किसान थे जो अपने खेत
की उपज का तृतीय भाग लगान के रूप में देते थे। तीसरी श्रेणी में थे युद्ध में पड़े
एलोग जयवा वे जा कज जदा न करने के कारण गुलाम बना दिए गये थे। पहली
श्रेणी के लोगों को बटला लेने का अधिकार था किंतु उन्हें जर्माना अधिक दना
पड़ता था। दूसरी श्रेणी वालों को क्षति के लिए जर्माना और दर्जाना स्वीकार करना
पड़ता था। तीसरी श्रेणी के लोगों को गुलाम की हैसियत से अपने स्वामियों की
दासता में रहना पड़ता था। फिर भी वे लोग अपना विवाह कर सकते अपनी
सम्पत्ति का अपन उत्तराधिकारियों को दे सकते और दासता से मुक्ति प्राप्त कर
सकते थे। दास स्वतंत्र स्त्री से याह कर सकता था और उसकी सत्तान स्वतंत्र
समझी जाती थी।

समाज की आधारशिला परिवार मानी जाता थी। स्त्रियाँ का भा म्थिति
उस समाज में सराब न थी यद्यपि अच्छे घराने की स्त्रियाँ जनानखाने में रहती थीं।
उनको अपनी खास सम्पत्ति रखने, अदालत में दावा करने, व्यापार करने, लेखिका
बनने तथा तलाक़ देने के अधिकार पुरुषों के समान थे। विवाह के पूर्व स्त्रियाँ का
अधिक स्वतंत्रता रहती थी। माना पिना कुमारियाँ का याह करा दन थे। प्रायः
लाग एक ही स्त्री से याह करत थे। साधारणतः दम्पति के अच्छे आचरण हीत थे
क्याकि यमिचारी को प्राणदंड तक देने का विधान था। अनाथा और विधवाओं
के साथ विगप रूप से याय किया जाता था। बेबालोनिया के कानून में अवस्था का
बार्न विचार नहीं किया जाता था। जत छोटे बड अथवा लटका जीव बयस्का का
समान रूप में याय किया जाता था।

आर्थिक व्यवस्था

बेबीलोनिया का आर्थिक जीवन अधिकतर कृषिमूलक था। वहाँ की भूमि का

बहुत बड़ा अश राजा और पदाधिकारिया तथा धर्माधिकारिया के हाथ में था। फिर भी सेमिटिक त्रिवान के अनुसार नूमि मन्दिरा तथा पदाधिकारिया के अधिकार से घोर घोर निक्लने लगी और नियमानुसार मत्यु के उपरान्त वह मत्त के उत्तराधिकारिया में बँट जाती थी। बँटवारा होत हान ऐसी नौबत आ जानी जिसमें राजा के हाथ में छोटे छोटे भूमि के टुकड़ ही रह जाते जिनसे अपना निवाह असम्भव समझकर व उहें बेच डालते थे। इस प्रकार बड़े-बड़े जमींदारा के अधिकार से निक्ल कर बहुत सी जमीन या ता व्यापारिया या ऐसे व्यक्तिया के हाथ में चली जाती थी जा उमें लगान पर दूसरे व्यक्तिया का खेती करने के लिए दे दते थे। यह परिस्थिति देखकर हम्मराबी ने जमीन बेचने का अधिकार बड़े जमींदारा के लिए सुरक्षित रखा किन्तु छोटे किसानों का न लिया। इसके निवा उसने नयी जमीन पर खेती करने के लिए लोगों को उत्साहित किया। उवर जनसख्या बढ़ने से भी नयी भूमि पर खेती करना जयवा कराना आवश्यक हो गया। राज्य ने अनेक नहरें और नालिया बनवा दी जिनकी देखरेख और ठीक रखने का भार कास्तकारों को दिया गया। यदि कोई उनका विगाड़े अथवा ठीक न रखे तो उसका जुर्माना दना पड़ता था। बनारस तथा तरकारी की खेती के अलावा लोग फला का, विशेषकर खजूर का, बाग लगाते थे। यदि बाढ़ आदि दबी दुष्टता से कृषि का नाश हो जाय तो किसानों का लगान माफ कर दिया जाता था। वहाँ के लग ऊँट, घोड़े बल, भेड़ और गधे तथा चक्रे पालने थे जिनसे दूध और चमड़े के अतिरिक्त माल लाने तथा सवारी का काम निकलता था।

सुमेरिया के मुकाबले में बेबीलोनिया ने व्यापार में अधिक उन्नति की। उगका एक कारण तो कृषि-योग्य जमीन की कमी और दूसरा खरीद फरोल के लिए धातुओं के टुकड़ा का अधिकाधिक उपयोग होना था। बेबीलोनिया की सिक्का का ज्ञान न था इसलिए वे धातुओं के टुकड़ा का वज्र के अनुसार काम में लाते थे। बेबीलोन ने अधिकाधिक मात्रा में ताम्बा, चादी, सोना और रागा मँगाना शुरू किया। आयात में हाथीदाँत जवाहरात, लकड़ी और इमारत बनाने के पत्थरों की भी उत्तमोत्तर वृद्धि होने लगी। व्यापार की वृद्धि के साथ व्यापारिया दलालों और लन-देन करने वाले महाजनों की संख्या बढ़ी जिससे सगठन की आवश्यकता का अनुभव हुआ। व्यापारियों के अलावा मन्दिर के अधिकारियों भी लेन देन करते थे। फलतः उनके साथ जयवा श्रेणियाँ बन गयीं। वे स्वयं अपने नियम बनाते थे। पहले तो राजाओं ने हस्तक्षेप न किया किन्तु आगे चल कर वे क्रमोद्देश नियंत्रण करने लगे। वाय का

व्यवस्था मजदूरी कर के लिए लाये, गुरू १६११ मजदूरी का आदि की
 लिंगागरी, यौग, गामा आदि के बाबू बना लिये गये । बाबू द्वारा मजदूरी का
 दर और वस्तु का मूल्य निर्दिष्ट किया गया । उत्पन्न आय का एक भाग
 लाहौर में लिये और भर गिर कपड़ चीनी मत्त, धान और गीब की बना बरिया
 चीत्रे, लकड़ी का फार्निचर, हाथीगाँव की बना कारीगरी का धात्रे तथा अन्ध
 दूता का बट्टा निर्माता हुआ था । गुरू की दर पभाग प्रति गाँव प्रति मास था ।

शासन

एक सत्तात्मक राज्य व्यवस्था में भा था । राजसत्ता के पीछे जमानत एक
 धनिक व्यापारी तथा धर्माधिकारी थे । स्यादिक शासन में जमानत का प्रभुत्व
 रहता था क्योंकि जमानत के बिना राजा के भा बल का उन मरणा रहता था ।
 फिर भी स्यादिक एक सामर्थ्य शासन में पदावस्था तथा प्रभावशाली व्यक्तियों में
 परामर्श और सहायता ली जाती और जमानत स्यादिक दबाव भी रहता था । राजा
 से लेकर प्रजा तक सब लोग गुरु प्रभुत्व हम्मुराबी काबू का सम्मान करता था ।
 न्यायालय प्रायः मन्दिरों में होता था जिसे पट्टे का धर्माधिकारी ही पट्टे का
 अर्थ लागू भी न्यायाधीन नियन्त्रण किया जाता था । राजा अपना पिछे भा पुत्र का
 राज्याधिकारी बना सक्ता था । इसका परिणाम यह होता था कि प्रथम राजकुमार
 की जागा रहती कि गायक बही राजा हो जाय । पट्टे राजकुमारों में लक्ष्मणियों
 और पडयन चलते रहते जाकभी-कभी मजदूर गृह दण्ड का रूप धारण करता था ।

शिक्षा दीक्षा

बेबीलोन में शिक्षा-दीक्षा के केंद्र यहाँ के देवालय थे । बेबीलोनिया वाले विद्या
 तथा लेखन बला के बड़े प्रेमी थे । उह पौराणिक ढंग की कथाओं गिनगिन की
 वीरगाथाओं, उपदेशात्मक आख्यायिकाओं एवं कहानियों तथा कलाकला के लिखन
 का शौक था । गणित तथा ज्यामिति के क्षेत्रों में उह विद्या स्यादिक प्राप्त की था ।
 युरोपीय विद्वान भी मानते हैं कि ज्यामिति का पाठ उनका बेबीलोन से मिला ।
 उनका सबसे प्रख्यात ज्यामिति नेब रम्मानी बिन चलते ईसा से पूर्व पाँचवाँ शती में
 प्रसिद्ध हो चुका था । गणित के आधार पर उसका यह परिणाम निकाला था कि चन्द्र
 और सूर्य ग्रहण निश्चित प्राकृतिक नियम के अनुसार पडते रहते हैं । उनमें कोई
 जदस्य रहस्य नहीं । उसने चन्द्रमा की गति के अनुसार एक जश्री भी तयार की जा

कई सौ बष तक पश्चिमी एशिया और इरान में चलती रही। उमकी गणना टालेमी तथा ब्रोपनिक्स की गणना से अधिक अच्छी मानी जाती है। फलित ज्योतिष पर भी बेबीलोनिया में काफी विचार और परिश्रम किया गया। गणित में वे सुमेरिया वाला के जोड़, बाकी गुणा, अग सूदमास, चतुर्भुज समकोण घनाकार आदि के चिह्न का प्रयोग करते थे। उन्होंने गुणा, बग, परिमाण के पहाड़े तयार किये क्षेत्रफल, राशि, घनत्व आदि जानने की युक्तिया निकाली और बीजगणित में अनेक ढग के सुधार किये। पाइथागोरस से बारह सौ बष पहले बेबीलोन वाला ने उमके नाम से प्रसिद्ध ध्यारियन का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उनका गणित सम्बन्धी उल्लेखा का जमी अध्ययन हो रहा है जिससे हम विषय पर और अधिक प्रकाश पाने की समावना है।

निर्माण-कला

बेबीलोन समद्विशाली नगर था। यद्यपि वहाँ की मडक सँकरी थी और मकानों के बाहर का दीवारों का पत्तर मढ़ा था तथापि रहने के लिए मकानों में अच्छा सुभीता था। बड़े हाते के चारों ओर लाग दोगजिले मकान बनाने थे। ऊपरी मजिल में सारे व और नीचे रहने तथा पूजा करो और मतक दफ्तारों के बमर थे। मकान इटा के बनाये जाते और छते लकड़ी की घन्तिया पर पाटी जाती थी। राजमहल तथा मंदिर विशाल और मध्य बनाये जाते थे। वहाँ के काँगरा का खमा सच्चे मेहराबा और बतुलाकार छता के बनान का जच्छा खासा ज्ञान था। मंदिरों तथा अमीरा के घरा के बाहर भी रगीन टाडल (फर्शी गपटे) लगाये जाते थे जिनसे रमारता की शाभा बहुत बढ जाती थी। उन लोगो ने जिगुरता के बनाने में सफलता का जच्छा प्रदर्शन किया। वटा जिगुरत समबत सत्तर फुट की ऊँचाई तक का था। सत्र स ऊँचा चतुरा देवपीठ माना जाता था।

धर्म

बेबीलोनिया में देवी देवताओं की गरया साठ हजार से अधिक था। बेबीलोनियनों ने सुमेरिया के देवी-देवताओं के नाम बदल-बदल कर उन्हें भी अपना बना लिया था। उनके पुराने देवताओं में थे अनू (आकाश देव) अथवा ए (ग्रह) गम्म (सूर्य), नन्नर (चंद्र) तथा बेल (धरती) आदि। प्रत्येक नगर, गाँव कुटुम्ब और व्यक्ति का अपना विशेष देवता माना जाता था जिसकी पूजा साथ प्राण बाल

अव्य तेल अभ्यंग, घष दीप, नवेद्य के साथ बड़ी जाघीनतापूर्वक भजन और स्तुतिया के साथ की जाती थी। उनको पगु खामबर छेरा की बलि अर्पित करत थे। बेबीलोनिया का प्रमुख देव मरदक और प्रमुख देवी इष्टर थी। इष्टर तम्मज की पत्नी थी। इष्टर रति की और तम्मज कामदेव का प्रतीक सा जान पड़ता है। तम्मज क दहन की कथा भी वहा कही जाती थी। बेबीलोन निवासी देवी देवताआ से ऐहिक मुख और ममद्वि की याचना करत थे। उनका विश्वास था कि मर्यु के पन्चात मनुष्य एक जघेरी गुफा में दुलमय काल व्यतीत करता है। उसकी यातना ठीक ढंग की अत्येष्टि क्रिया एव यज्ञ स अवश्य कुछ कम हो जाता है। सभवत परराज की उहाने भव्य कल्पना ही न की थी। मत प्रेत पिशाच जाति में उन्हें बहुत विद्वास था। जाइ मत्तर (मत्र) म उनका विश्वास था और अपनी मनो कामना की पूर्ति क लिए उसका काफी प्रयाग भी वे करते थे। देवताआ क महत्त्व क अनुकूल मन्दिर निमाण करक उसम व उन् प्रतिष्ठित करते थे। राजधानी तथा राज्य का सबसे बडा देवता मरदक माना जाता था जिसकी प्रनिष्ठा उहाने एव विशाल मन्दिर में की थी। मन्दिर धन धायपूण रहते और उनमें पुजागी, सेवक देवनासिया जादि नियुक्त कर दिये जाते थे। सबसे विचित्र प्रथा वहा यह थी कि प्रत्येक कुमारी का विवाह के पहले मन्दिर म जाकर किसी अपरिचित व्यक्ति को अपना कौमाय समपण करना पड़ता था। पश्चिमी एशिया म ऐसा प्रथा बहुत जगह प्रचलित था। उसक प्रातपालन त्रिना प्रेम एव सजनन की देवी इष्टर का आशीर्वात प्राप्त होना असम्भव सा था।

बबीलोनिया म मतक दफनाये जात थे किन्तु कुछ लोगो म दाह क्रिया का भी चलन था।

अध्याय २

मिस्र

(३०००—१६०० ई० पू०)

मिस्र देश की नील नदी बहा की विशेष विभक्ति है। वह पथरीली चट्टानों का जिनके पार्श्व में रेगिस्तान है चौगुनी नदी समुद्र में जा मिली है। यद्यपि प्रति वर्ष उममें बाढ़ आती है तथापि हटने पर वह दोना तटा पर मिट्टी की ऐसी तह लगा जाती है जिससे अनायास ही मकान हरियाली छा जाती और जनादि की बहुत अच्छी उपज होता है। उसी की महिमा से मिस्रवासी सहसा वर्ष से फसत फलत रह ह और उनकी सम्यता उन्नत होती रही है। समुद्र के समीप से उस स्थान तक जहां से वह फटकर बही है निचला मिस्र और उनके पीछे प्रथम प्रपात तक के प्रांत ऊपरी मिस्र कह जाते हैं। नदी पर समुद्र तटा से लगभग पाच सौ मील तक नावे जा जा सकती है। मिस्र का जलवायु अच्छा है। वहाँ गेहूँ जी सन तथा कपास सब उत्पन्न होते हैं। उसी की महिमा से वहाँ हिरन जिराफ, मेढक बकरी शेर तेंदुए हाथी आदि भी अपना निवास करते रहते हैं। बाद आश्चर्य नहीं कि वृत्तज्ञता से प्रेरित होकर मिस्र वाल नील का दबना मानते और उसकी स्तुति करते थे।

मिस्र के प्रागैतिहासिक निवासियों वहाँ से आकर कब आये, निश्चित रूप से कां नहीं कह सकता। अनुमान किया जाता है कि लगभग सात हजार वर्ष पहले वे पूर्व देश से अवन होने हुए नील व तटा पर बस गये। यह भी कहा जाता है कि इस देश से सेमेटिक लोग की एक शाखा के और पश्चिमी एशिया से दूसरी स्वतंत्र शाखा के लोग आकर मिल जुल गये। यही मिश्रित लोग बहा की सम्यता के आरम्भ सून धार हुए।

लगभग साठे तीन हजार से ३३२ ई० पू० वर्ष तक मिस्र देश में ३१ बंगाल ने राज्य किया। उनका श्रमबद्ध इतिहास प्राप्त नहीं होता। उनका ऐतिहासिक युग तीन है। पुराना (२७०० से २२८० ई० पू०), मध्य (२००० से १७८५) ई० पू० और नया (१५८० से १०८५ ई० पू०)। पुराना युग तीसरे राजवंश से छठे तक, मध्य नदी से

बारहव राजवंश तब और नया अठारहव स बांसवें राजवंश का माना जाता है। ज्ञात है कि आरम्भ में मिस्र के नर-नट पर यही-वही मित्र मित्र कुम्भ के राज बम गये जिनके रहन सहन विचार, सगटन आदि में बहुत कुछ ममानता रही होगी। इन कुटुम्बा का ग्रीस वाले (यूनानी) नाम रहत था। कुछ विद्वानों नाम के छोटे राज का बाधक मानते हैं। प्रथम नाम का एव गता जाता था उस पर शासन करता था। मिस्रिया का ताँरे चीनी और सोन का जान था। उनका व कई चीजें बना लते थे। वे कृषि करते जोर नगी के उँचे तट पर गन्ध (शुकी) द्वारा पानी उठाकर नहर बाटने और गता की मिचाइ करत थे। व जनाज पीमत नावें चलाने मूती कपडे जोर कालीन बुनते तथा जामपण बनाने थे। व जानवर पालते, मिट्टी के बरतन तयार करत और उन पर चित्र बनाने थे। उनका तीस तीस दिन के बारह मनीना का भी ज्ञान था। मकर शृगाल जोर मिडाल की आदृति के देवता भी थे। मिस्रवासिया का परलाक म गहरा विस्वासा था। व मतक का दफनाते समय उसके साथ जन्न वस्त्र आदि रख देते थे।

आपसी कलह और मघप से व्यथित होकर नामा ने मिल कर दो बड़े राज बनाय। प्रथम और द्वितीय राजवंश ३२०० स २८०० ई० पू० तक मिस्रिया पर राज्य करते रहे। उन दोनों राज्या का एव बनाने का श्रेय मान' नामक यति को लिया जाता है। उसी को कुछ विद्वान राजा नरगेर मानते हैं। वह दोनों राज्या पर शासन करता था। इसीलिए उसके मकुट भी दो रंग के लाल और सफेद, रहत था। थाथ नाम के देवता म प्राप्त कानूना को उसने प्रचलित किया। लोगो को कुरमी मेज एव बमव जोर विलास का उसी ने माग दिखाया। महाराज फेरा फरो की उपाधि से प्रसिद्ध हुआ। फरो का अर्थ है महावश। उसके ममय में लोग छ श्रेणिया में विभक्त थे जिनमें राजघराना रईस सामंत देवल प्रथम तीन थी। शेष तीन श्रेणियो में लेखक कारीगर आर कृषक थे। राजा का तो कहना ही ब्या, अमीर सामन्ता के भी बड़े टाट-बाट थे। बगीचा म उनके मवन डग के बनते थे जिनकी लकड़ी में बढिया कारीगरी तथा भीतरी छता पर कशीद या फूलदार चादनी बनी होती थी और रगीन दावारो तथा शिल्पित मूर्तिया आदि के सिवा सोनहली कारीगरी की भी ज्यव गामा दिखाइ दता थी। उनके मनो विनाद के लिए नाचने और गाने वाले का मजरा हाता था। किन्तु गाँवा के किसान तथा गरीब लोग पापडिया में या कच्चे मकानो में रहते थे।

इतिहास का सबसे परिचित फेरो जोमर था। उसका मन्त्री महामतेप उसने

नो अधिक प्रसिद्ध था। वह वैद्यक में, विज्ञान में एवं कलाओं विशेषकर वास्तुकला में विद्वान् था। मिस्र वाले उसे ज्ञान विज्ञान का देवता मानते और उसकी पूजा करते थे। उसके युग में मिस्र के व्यापार ने अपूर्व उन्नति की। अनुश्रुति कहती है कि उसी ने सक्कर के सीनीदार पिरामिड की रचना करवायी और वहाँ के मन्दिर बनवाये जिनके खचित स्तम्भ और रंगीन मिट्टी की वस्तुएँ बड़ी सुन्दर थीं।

मिस्र के चौथे फेरो वंग ने (२६८० से २५६० ई०पू० तक) इतिहास में अपना म्था अमर बना दिया। यह उस समय राज्य करता था जब सुमेरियो का राज्य फट फट रहा था। उसके समय में शायद व्यापार की उन्नति खनिज पदार्थों की प्राप्ति और युद्ध प्राप्त धन से करने साधन एकत्रित हो गये थे जिनसे वे सत्कार को चकित करने वाले गीजों के पिरामिड बनवाये जा सके। पिरामिड एक प्रकार का रौंशा है जिसमें वहाँ के राजाओं के शव रखे गये थे। वहाँ के मुख्य पिरामिड का बनवाने वाला उस वंश का फेरो कफू नामक था। उनके उत्तराधिकारी काफ्रे ने भी उसकी ममता प्राप्त करने के लिए वही दूसरा पिरामिड बनवाया। काफ्रे ने छपन वर्ष राज्य किया। मिस्रवासियों का विश्वास था कि मरने के बाद यदि स्थूल शरीर की रक्षा की जाय तो उसका मूर्ध्म शरीर जिसे वे 'का' कहते थे, उसी के साथ रहता है और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति चाहता है। इसीलिए वे उसके शव निवास में उसकी आवश्यकताओं की चीजें भी एकत्रित कर दिया करते थे। उस नामग्री ने पुराने मिस्र के इतिहास एवं सभ्यता पर अच्छा प्रकाश डाला है। कफू के पिरामिड में पत्थर की तेदम लाख सिलें लगी हैं जिनमें से एक मी ढाई टन वजन की है। उसकी ऊँचाई चार मी इक्यासी फुट है। गीजों के पिरामिड पर एक पत्थर की मूर्ति १६० फुट लम्बी है जिसका सिर तटीम फुट लम्बा और मुख की चौड़ाई तेरह फुट आठ इंच है। उस पिरामिड के निर्माण में एक लाख आदमी बीम बंध लगे रहे। पिरामिड सत्कार की महा आश्चर्यजनक वृत्तियाँ में माने जाते हैं। इसके मुख्य कारण हैं उनकी बल्पना और उनमें भारी वजन के पत्थरों को सुदूर से लाकर उनकी ऊँचाई पर चढ़ा ले जाना। इनके सिवा गवा को महत्ता बंध तक सुगन्धित रखने की यक्ति भी वे ही जानते थे। उनके पहले और पीछे अद्यावधि किसी को यह कला न आयी।

पुराने शासकों में अन्तिम राजा पेपी न ९४ वर्ष तक (२७३८ से २६४४ ई० पू० तक) राज्य किया। उनके बुढ़ापे से लाभ उठाकर बलगाली व्यक्ति

वतत्र हाने लगे । मरने पर ता उहाने मिस्र म सामन्तगाही जराज्वरता पग गी जसम राजा की कोई न गुनता था । ऐसी परिस्थिति लगभग छ सौ बष तक रही । अततोक्त्वा एक प्रतापी पुरुष ने बारह्व राजवग की स्थापना करके नये युग का प्रस्ताव किया ।

पुरातन युग म मिस्र की सम्यता म आत्मायता आत्मविश्वास और आत्मत्वप का विनिष्ट मात्रा में विश्वास हुआ । उसम मिस्रवागिया का स्वजातीय परिश्रम और पुग्वाथ विनोप रूप म परिलक्षित हुआ । उसका मुख्य कारण सम्वन यह था कि मिस्र पर विजानीय लागा का प्रभाव कम था । किन्तु ज्या-ज्या विजानीया का प्रभाव जोर प्रभाव बढ़ता गया त्या-त्या मिस्र की सम्यता में परिवर्तन होना गया । बाहरी प्रभाव व साध-साध आन्तरिक स्थिति में भी ऐतिहासिक प्रवाह म परिवर्तन होता रहा । उदाहरण के लिए राजा का शक्ति जा पहल क दिन जोर एक मत्तात्मक थी विवेन्द्रित होती गयी और सम्पन्न तथा बलगाली यक्तिया की मर्या बन्ती गयी । उसका परिणाम यह हुआ कि राजा व जाधिक साधन उत्तरात्तर सबुचित हान गये । इसक सिवा बड़े-बड़े मकबरा तथा मदिना के बनवान तथा उनके प्रबध जोर संरक्षण व लिए अनुदान निश्चित करने के कारण राजकीय तथा राजा की भूमि की कमी होती गयी । यह भी समब है कि छटे बग के पुरा का समयकाल बहुत लम्बा तथा कमजोर होने के कारण उत्साह सबधन एव प्रगति पापण में बाधक सिद्ध हवा हो । उसकी मृत्यु के पश्चात मिस्र का प्राचीन मानचित्र शीघ्रता स बदलन लगा और उसका म्गठन टटता चला गया । प्राचीन सम्यता का दष्टिकोण वस्तुत एहिक और लौकिक था । उसका सरपित और सुन्द बनाने क लिए धार्मिक और जलौकिक विश्वासा और मामता का आश्रय आव एक सम्झा जाता था । उस युग का मुख्य ध्येय लौकिक सिद्धि था जिसके साधना म धम यद्यपि गौण तथापि अनिवाय और आवश्यक माना जाता था ।

शिक्षा तथा कला

उच्च तथा मध्य श्रेणी की जाधिक स्थिति ज छी थी । किन्तु किसान प्राय गरीब थे । मित्रिया का जीवन अधिकतर कृषिमूलक था । कृषि का क्षेत्र सीमित होने व कारण यह आव यक था कि उससे अधिक से अधिक लाभ उठाया जाय । इसीलिए नील की तलहटी व उपजाऊ होने पर भी लाभ उसे जातत और खाद देत न । गेहें जो अल्सी सन फलियाँ दाल सजी की ऐनी होती था । लहर के पेठ और

विविध प्रकार के फूलों के पट्ट-पीठे लगाये जाते थे। खेती के अलावा पशुपालन भी आवश्यक था। पशुओं में गाय, बल, भेड़ वक्रे, मुज्र, गधे और पशियों में बत्खें पाली जाती थी। उस युग में मिस्र में ऊँट और घाट न थे इसलिए यात्राएँ प्रायः गधा पर होती थीं।

नगरों में मन्त्र श्रेणियों के लोग, व्यापारी, कारीगर, उद्योग धंधे वाले रहते थे। राजधानी तथा देवस्थानों में उनका विशेष जमघट होता था जो रवामाविक ही था। पत्थर, लकड़ी, ताँबे साने और चाँदी की मुज्र चीजें तथा सूती परद और कपड़े आदि ब्याप्ये जाते थे और बाहर भेजे जाते थे। उनके बदले मिस्र वाले ममाले, आबनम तक़ी हाथीदांत, सोना और लकड़ी को घनिमा तथा तत्त मँगाते थे। साधारण तथा 'पापार' विनिमय द्वारा होता था। बड़े व्यापार में चाँदी और साने के टुकड़ों का प्रयोग किया जाता था। व्यापारी जख सागर से एशियन सागर तक और यूरविया तथा एशियाई कोचक तक आते-जाते थे।

शासन

इस युग में राज्य की राजधानी विनिम से हटाकर मेम्फिस में स्थापित की गयी क्योंकि शासन के लिए वह स्थान अधिक उपयोगी था। नाम शक्त का प्रयोग प्राप्त के अर्थ में भी किया जाता था। प्राचीन शासक की शक्ति पहले तो सीमित थी किन्तु धीरे-धीरे व शक्तिशाली और स्वतंत्र से हो गये (२४२०-२२८० ई० पू०) यहाँ तक कि वे राजा की भी अवहेलना करने का साहस करने लगे। फिर भी राजसत्ता का इतना आतंक था कि राज्य तथा शासन की स्थिरता को कोई भारी धक्का न पहुँच सका। राजा के आतंक का एक विशेष कारण तत्कालीन धार्मिक भावना थी। राजा का स्थान देवपुत्र ही नहीं बरन देवता के समान माना जाता था। वही प्रमुख धर्माध्यक्ष सेनाध्यक्ष तथा 'यायाध्यक्ष' गिना जाता था। उसकी विवाहिता रानी का पुत्र ही उसका उत्तराधिकारी माना जाता था। अतः बशानुगत होने के कारण राजसत्ता कितना नये वंश के लिए दुष्प्राप्य थी।

राजा की जानाओं को कार्यन्वित करने के लिए जयणित राज्य कर्मचारी नियुक्त थे। व्यावहारिक दृष्टि से मिस्र का शासन नीकरशाही करती थी जिसमें समाज की किसी भी श्रेणी का व्यक्ति भरती किया जा सकता था। पहले प्रान्त का शासक राजा द्वारा नियुक्त किया जाता था। उसे प्रायः प्रान्त के लोगों में से चुना जाता था किन्तु आग चलकर वह भी बशानुगत हो गया। प्राचीन शासक ही बहा

का सेनापति तथा गणनाध्यक्ष होता था। वही लगान, कर, गिचार्ई, 'यायाध्यक्ष' आदि का काम करता था। उसका नियम के गिलाफ राजा के मंत्री के पास अपील की जा सकती थी। मुख्यमन्त्री का पद प्रायः राजकुमारों का ही लिया जाता था। एक मंत्री उत्तर के और दूसरा दक्षिण के प्रांतों के लिए नियुक्त था।

शिक्षा तथा कला

पुराने युग के आरम्भ होने के पहले मिस्र में सभ्यता ने उल्लेखनीय उन्नति कर ली थी। मिस्रिया को ध्वस्त करने के बाद पान हुआ गया था कि चांद बरफ का छोटा बरफ उठाने तीन सौ पसठ दिन के सौर बरफ की प्रतिष्ठा का (२८५० ई० पू०)। उसी के अनुसार वे अपने शिवाय किताने तथा एतिहासिक घटना प्रेम का वर्णन कर लगे थे। इमक सिवा पत्थर को काटकर इमारतें तथा मूर्तियाँ भी बनाना उद्योग प्रारम्भ किया जिससे निर्माणकला के विकास के लिए नया रास्ता खुल गया। पत्थर कला का भी स्वरूप बदल दिया गया। पहले के चित्र-लेख जितने करते थे तदनन्तर स्पष्ट चिह्नों का संयोजन कर उठाने विचार संकेतों का प्रयोग किया। प्रत्येक विचार का चित्र निर्धारित कर उस उपयुक्त संकेतों से मिला कर उठाने एक लिपि गली बनायी जो डिमाटिक नाम से प्रसिद्ध है। पिरामिड के निर्माण में गणित, योजना का कौशल नाप-जोख हिमाय किताने सगठन तथा व्यवस्था का प्रदर्शन हुआ। उसका विकास में युगा का प्रयास और चिंतन पाया जाता है। सब बातों पर विचार कर यह निष्कर्ष जनितवाय हुआ जाता है कि एतिहासिक युग अर्थात् ३००० ई० पू० के पहले मिस्र देश ने सभ्यता के विकास में विलक्षण उन्नति कर ली थी जिसकी समता शायद ही कहा जायन पायी जा सके।

मिस्र में तक्षण, मूर्तिकला तथा चित्रकला ने भी उन्नति की। पत्थर लकड़ी तावा पर वे मूर्तियाँ बनाते थे जिनमें सजीवता तथा जशासी अनुपान और मुहूर्त्तन पाया जाता है। दीवार पर पलरन्तर लगाकर ऐसे मिन मिन चित्र वे रचते थे जिनमें यथायता का विविध भावा का और व्यक्तित्व का अच्छा प्रदर्शन हुआ। उनका बनाये चित्रों का अद्यावधि सम्मान हाता है और उनसे तरफालीन जीवन पर अच्छा प्रकाश भी पड़ता है।

पुराने युग में शिक्षा का मुख्य ध्येय मनुष्य को व्यवहार-बुद्धि गिष्टाचार बनाने हुए जीविका चलाने के योग्य बनाना था। शिक्षा का आग लक्ष्य की नौकरा प्राप्त करना था। तत्कालीन रचनाओं में घामिकता का भी पुट मिस्रता है।

गणित, लिखना-पढ़ना तथा उपदेशात्मक सुभाषिता का याद करना शिभा के मुख्य अंग थे। कित्क की कलम से पपाइरस बन्ध की छान पर लेख लिखे जाते थे।

धर्म

मिस्र वाला का परलोक में अटट विश्वास था। उनकी धारणा थी कि प्रत्येक पदार्थ जैसे नदी, पहाड़ तारे वक्ष, सूर्य चन्द्रमा आदि में देवता है। उनकी संख्या अनन्त और उनके व्यवहार विचित्र हैं। महत्त्व के अनुसार उनकी भी साधारण मध्य और श्रेष्ठ श्रेणियाँ हैं। कुछ देवता स्त्री या पुत्र्य की जाति के और कुछ मठलियाँ अथवा मगर वृत्ता, बिल्ली बल दरयाईं घोड़े तथा पक्षियों की जाति के हैं। नेवताआ का चेष्टाएँ उनके स्वभाव और व्यवहार मनुष्या जैसे हैं। विविध रूप रंग होने हुए भी देवता एव मनुष्य में समान तत्त्व हैं। प्रलोक गाम नगर तथा प्रान्त का विशिष्ट देवता होता था। सारे राज्य में प्रथम सम्मानित देवताआ में प्रकाश का देवता 'हीरस' था जिसका घड़ मनुष्य का और मुख बाज पत्नी का था। पाचवें राजवंश में उसका स्थान रजधवाग नामक सूर्य का प्राप्त हुआ। उनके अलावा 'प्रिह' या कागगरा का देवता था नुत नाम्मी व्यो देवी भी जातीय देवताओं में गिने जाते थे।

मिस्र वाले मृत्यु को जीवन का अन्त नहीं मानते थे। उनका विश्वास था कि मनुष्य बन्धुन मरा नहीं बल्कि अनिश्चित काल के लिए साँ रहा है। स्त्रीलिये वह मृतक का शरीर मकबरा में रखित कर लेते थे और उसके साथ उसकी आवश्यकताओं के पदार्थ और पाने-पीने की चीजें रख देते थे। शरीर को अनुप्राणित करने वाला का नामक तत्त्व माना जाता था। उनके जन्मार मरने पर का अमरत्व के देवता 'ओसिरिस' के सामने उपस्थित किया जाता था। यदि का' ऐम व्यक्ति का हा जो हत्यारा दबनि-दर माता पिता के साथ कुव्यवहार करने वाला चार दूसर का माऊ हउपने वाला था तो उसको एक भयकर नृत्य खा जाता था। किन्तु यदि वह उन दोषों से मुक्त रहा होता तो उसका जमरव प्रमाण कर लिया जाता था। यमलोक में अधिपति ओसिरिस की स्त्री उसकी बहिन जोइमिस कहा जाता थी।

मिस्र की राजकता का पोषण वहाँ के धार्मिक विश्वास और विचार करने थे। मिस्र में विज्ञानीयों के अधिकाधिक आगमन तथा धर्माधिकारियों के उत्तरात्तर बढने महत्त्व के कारण राजा की शक्ति में क्षीणता जाती गयी। समाधियाँ और बड़े बड़े देवालया के निर्माण पर अपार धन खर्च होता रहा। फलतः सामन्तता और

धर्मशास्त्रियों की दक्षिण और आर्थिक विमर्श त्रिम भाषाएँ में बड़ी उमा अन्वय
में राजा का आर और वाद पत्रों का । *मर्ग गिरा मित्त व *मर्ग धर्म का अर्थ
गुण और गिरि को साधन गमन । एक त्रिमर्ग पुराणा गमना का अर्थकोण बना
बला गया ।

मध्ययुग (२०७५-१८०० २० १००)

मध्ययुग का आरम्भ वास्तव्य राजवत्त में गिरा जाता है । *मर्ग विना की रात
में *मर्ग वत्त में नीचा गत मित्रित या त्रिमर्गे कारण उमा अर्थित पुराणा का प्र
मिन्ना है । उमा गमनाय जामनमर्ग व *मर्ग स प्रमता हुआ । मर्मर्ग म
मात्र चार भी मर्ग पर ध्वज म उमा अर्ग गमनाय अर्थात् १० । उमा साम
का *मर्ग वत्त उमा नया राग-ध्वज्या का प्रमता रिया त्रिमर्ग भाग वत्त
वर्णन रिया जायगा । *मर्ग वत्त म अर्थ का प्रमती राजा हत्त । *मर्ग म मनुमर्ग
प्रथम म नाट नती म *मर्ग मनुमर्ग वत्त एव *मर्ग वत्त वत्त इति प्राणात्त और
अवात्त व *मर्ग मर्ग की राना वत्त नया अपनी विना मर्ग का म
स्थापना वत्त वत्त । *मर्ग प्रमती राजा मनुमर्ग तृतीय हुआ त्रिमर्गे यत्रिया व
*मर्ग स *मर्ग वत्त आप्रमणा का एव प्रमर्ग म मर्ग गति द्वारा रात रिया ।
पत्त *मर्ग मर्ग और जमात्त का एव अर्ग अपनी आर म *मर्ग त्रिमर्ग रिया और
*मर्ग व्यक्त्या मुधारा । किन्तु उमा का नीति म *मर्ग एव जमात्त में
अमताय का आग मुत्तन लग । यद्यपि उमा जीवन-का में वत्त दव रत्त पर
उसकी मर्ग के बाद रत्त रत्त त्रिमर्ग मर्ग का इतिहास त्रिमर्ग उपद्रवण अर्थात् म
प *मर्ग । उस *मर्ग वत्त साम्राज्य का इतिहास अर्ग जघ्याया का विषय जागा । *म
प्रमर्ग में उपयुक्त पुरातन एव माध्यमिक मर्ग की मर्गता का हा वत्त उपमुत्त
जागा ।

सामाजिक जीवन

आर्थिक कारणों से साधारण मनुष्य एक ही स्त्री से विवाह कर लेता
था किन्तु जा सम्पन्न थे वे बहुविवाह से भी मन्तुष्ट न रह कर धर्याएँ भी रखते थे ।
मिस्त्र के समाज पर मातृ परम्परा का प्रभाव जान पड़ता है । वहाँ स्त्रियाँ क
अधिकार रियाज एव कानन द्वारा रक्षित थ । विवाह के पूर्व लड़कियाँ का
अर्थ स्वतंत्रता रहती थी । विना हो जाने के बाद भी व पुर्या व माय वत्त आम

खाती-पानी और बेघरक बाजार मे घूमनी तथा क्रय विप्रय करती थी । व स्वतन्त्र रूप मे लेन-द्वन और व्यापार या राजगार घघे करती और अपनी निजी जायदाद अपने उत्तराधिकारी का द सबती थी । विवाह के पचात उनका आचरण अच्छा रहता था जिसमे तलाक का जरूरत कम ही पडती थी । उनका बवाहिक जीवन साधारणतया अच्छा था । पति का कमी-कमी अपनी कुत्र पूजी पत्नी का दृज में खिन्न दनी पडनी थी । जायदाद के त्यागन मे बाहर जाने के भयस वहाँ भाई अपनी बहन मे भी विवाह कर लेता था । माता पिता और बडे-बन्धु का सत्तान आदर करती थी और व उम पर स्नेह करत थे । दम्पति व प्राय कई बच्चे उआ करत थे जिनसे घर भरा रहता था । सयानेपर तक लटके नगे और लडकियाँ गुरिया की थालर या थाटा कपडा कमर से नीचे लटवाये घमती रहती थी । अच्छे घर की स्त्रियाँ भी घुटने से नाचे अथवा नमि मे उपर ढाँकना आवश्यक समझनी थी । दस बप की अवस्था में कया विवाह योग्य माना जाती थी यद्यपि उमका विवाह कर दना आवश्यक न था । स्त्रिया का उबटन लेप, अगराग और आमूपणा का शौक था । पुत्र्य भी बाल सवागत और आमपण पहनत थे । बच्चे गेद और लटट खेलत और पुत्र्य पास । व कुश्ती मुष्टिकयुद्ध और बला की लडाई दखने के भी शौकीन थे । ईमन्य के लाग परम्परा के प्रेमी आर परिवनन के विराधी थे ।

आर्थिक

नील की तलहटी बनी उपजाऊ थी । कहा जाता है कि किसी समय केवल जनाज विखेरने मान मे ही जत्र फट पडता था किन्तु वह नमि फेरा की थी । वह जिम चाहता दता । प्रयेक कृषक का अपने खेत की उपज का दशमाश अथवा पच माण राजा को देना पन्ता था । लाग का साधारण भाजन अन्न मछरी और माम था जा नाना प्रकार मे पकाया जाता था । गरीब कृषक की दशा अच्छी न थी । यदि दैविक आपत्तिया या लुटेरा के उपद्रव मे हानि भी हा गयी हा ता भी उमम मारपीट कर वमुल कर लिया जाता था । कृषक का घम मुख्य घमाधि बार्गी या राजा के नाम पर थमदान करना पडता था । मामता ने भी अपने क्षेत्र में उसी भावना स लाभ उठा कर बेगार लेना शुरू कर दिया था । फलन कृषक का बेगार भी करना पडनी थी यद्यपि काम प्राय लोकोपयोगी ही जाना था जस मडक नहर खानि बनाना । जिन जातने बाल भले ही गुलाम हा ता भी उनक समान ही हात थे । जमीरा जयवासामन्ता का जा जमीन दा जाती था उसे व दाना

से जूतवाते थे। उनमें बाज-बाज तो इतने सम्पन्न हुए थे कि वे पन्द्रह सौ तक गाय रख सकते थे।

कला-कौशल

मिस्र में धातुओं का अभाव था। केवल लोहा तावा निकलता था। अन्य धातुएँ जैसे लोहा और साना जय देगा से मगवायी जाती थी। किन्तु वह व्यापार राजा के ही हाथ में था। तबि और टीन का मिला कर काँसा तयार किया जाता जिससे औजार और हथियार बन जाते थे। औजार इतने अच्छे थे कि उनसे बड़े-बड़े बरत गडासिया जारिया आदि का पत्थर तब की भारी भारी शिलाओं का काट या काट सकता थी बनायी जा सकती थी। डाल तलवार और झिल्लम बनाना उनको आता था। लकड़ी के काम करने में वे बड़े निपुण थे और कारीगरी सिखते थे। कुरसी और तख्ता जादि का तो कहना ही क्या। सौ फुट लम्बी और पचास फुट चौड़ी नाव भी वे बनाते थे। चमड़े को कमाना और उसमें अनेक सुन्दर चीजें बनाना उनको आता था। पपाइरस की छाल से कागज बना लेने की विधि भी ज्ञात थी। बुनाई में ता वे इतने मिद्धहस्त थे कि उनका सूती तागा की कारीगरी और बुनाई की कामना का मुकाबला आज तक नहीं हो सका। कारीगर प्रायः स्वतन्त्र प्रजाजन थे यद्यपि कभी गलामा से भी काम लिया जाता था। मजदूरी में विलम्ब होने पर वे लोग हड़ताल और आन्दोलन कर देने थे। मिस्र कच्चा माल बाहर से मगाना और उससे बनिया चीजें तयार करके बाहर भजता था। इसी कारण वह ममलुशाही हो गया था।

मिस्र में वास्तुकला ऐसी उत्तम जवम्था में थी कि उसका प्रतियोगी ससार में मिस्रना कठिन है। वसा एजीनियरा ता ईसा के बाल की जठारद्वी शती तक यूरोप में भी नहीं हुई। बड़े-बड़े महान् बड़े-बड़े बाघ और बड़े-बड़े जलाशय ही वे बनाते थे बरन् उन्हाने एम पिरामिड भी बनाये जा ससार का आज तक चुनौती देने और सबग्रासी बाल पर हसत ह। वे ससार के सबसे बड़े वास्तुकला विचारद मान जाते हैं। इतना सब हाने हुए भी बहा की मडकें बराब थी जिनसे यातायात में कठिनाई पड़ती थी और प्रायः नावा से ही काम चला पड़ता था।

मिस्र में मिस्रना का प्रचलन न था। इसलिए व्यापार विनिमय द्वारा चला था। लोहा का बनन या मजदूरी भी जिनसे क रूप में दी जाती थी और कर भी उगा से लिया जाता था। भाग व्यापार साग पर टुडी-मुजों से तथा कानूना सिग-मनी से चलता था। कला-कौशल बनानुगत हान से जमा कि हमारा रग में मला रहा।

शिक्षा और साहित्य

मिस्र में एक प्रकार की लिपि जिसे हाइरोग्लिफिक कहते हैं प्रचलित थी। हाइरोग्लिफिक का अर्थ है धार्मिक खचन अर्थात् लेख। पदार्थों विचारों और भावों को बताने के लिये चित्रित करते थे क्योंकि उन्हें अपना वाक्य जान न था। मनुष्य के सार के सबसे पुराने लिखित ग्रन्थ मिस्र में ही मिलते हैं। पपाइरस की पत्तियों टहनियों का दमक कर वे एक तरह का कागज बनाते और उस पर लिखते थे। उस समय के लेख पांच सहस्र वर्ष के बीतने पर भी स्पष्टतया पढ़े जा सकते हैं। वे पत्र जोड़ कर जम्पत्रिया की तरह पुस्तक की लपेट करते थे। कभी-कभी उनका लम्बाई चारों तरफ तक होती थी। वे उनकी सजाकर मटकों में रकते थे। मिस्र के साहित्यकार कहानी कविता स्तुतियाँ पत्र, मन्त्रतंत्र, ऐतिहासिक कथानक कानूनी और धार्मिक लेख लिखते थे। ऐतिहासिक घटनाओं को संक्षेप में लिखने की प्रथा पुरातन काल से ही प्रचलित थी। मदिना में शिक्षा प्राप्त करने के उच्च शिक्षा के लिए विद्यार्थी राज्य स्थापित स्कूल में भरती होता था। कहा जाता है कि मिस्र में ही सबसे पहले सरकारी स्कूल की स्थापना हुई थी। वहाँ गणितशास्त्र विशेषकर ज्यामिति, ने काफी उत्थिति की थी जिसकी माधी वहाँ के पिरामिड के रहे हैं। उनका ३६५ दिना और १२ महीना के वर्ष का ज्ञान था। उन्होंने एक प्रकार की जन्म भाषा बना ली थी जो सबसे पुरानी मानी जाती है। चिकित्सा शास्त्र में भी उन्होंने अच्छी उत्थिति कर दिखाई थी। अनेक भयंकर रोगों को वे मफल चिकित्सा कर लेते थे।

कला-कौशल

कहा जाता है कि मिस्रियों ममारों के सबसे श्रेष्ठ वास्तुकला विचारक थे। पत्थरों एवं इतों के मकान मन्दिर एवं समाधिस्थान बनाने में अद्वितीय थे। मध्य राजत्व काल के विद्यालय मदिना विशेषतः उनके कला की रचनादाता का अद्यावधि चर्चित करती हैं। शिल्पकला उन्नत अवस्था में थी यद्यपि मिति शिल्प की वहाँ विलक्षण उन्नति हुई। चित्रकला ने दोना युगों में वहाँ कोई विशेष उन्नति नहीं प्राप्त की यद्यपि पुराने युग में उसका अभाव न था। उसकी उन्नति जागे चलकर हुई। गीतों का भी कोई विशेष उन्नति नहीं की।

धर्म

मिस्रियों की अपने धर्म पर बड़ी श्रद्धा थी। उनके सार व्यापार विचार,

आगरा घामित भावा म र्ग थ । उनरा भावना क अनुमान आराम मूय, चन्द्र, नभ, नदी, पवन, वन दश आदि राभा देवताआ क स्थान रूप थ । पथ्या वा व त्वा मानन थ । विभिन्न दशा क प्रनाआ में भी यनाधिय विभिन्नता था । ग्रन्थ का व दस्य द्वारा चन्द्रमा ता लाग जाना जोर प्रायना द्वारा उगना उग्रह हाना मानन थे । यद्यपि चन्द्रमा उनरा मयम पुराना त्वना था किन्तु मूय हा मयस वरा माना जाता था । मूय क अग्र रूप थ पर मयस महत्वपूर्ण देवाधिप्य 'रा' था । मानव मष्टि उही का मन्ति है । मध्य राजत्व काल में 'रा' का दूसरा रूप 'जामान' नामक हुआ । दोना का मित्रा कर 'रा'आमा का पूजन जनता म बहुत प्रचलित हुआ । 'नक' मिवा व 'गाल' नदी का जगधाराया दशा वनम्पनिया मकर आदि जलचरा, गाय, कुत्ता बिल्ली शृगाल आदि पशुआ वाज हस आदि पशिया और मय में भी त्वताआ की बल्पना करत थ । व मय किमानु निमी देवता के प्रताक या वाहन मान जात थे । मित्र में बल और बकर विनाप रूप से सव्य जोर पूजनाय समझे जात थ । देवता मनुष्य रूप धारण कर सकत जोर मनुष्य देवता हा सकत थे । देविया में मय्य जोर व्यापन प्रभाव वागे जासिम माना थी । उनरा पति उमी का भाई आसिरिस था । अपने जनय प्रम स वह पति का अपन वग में रखती थी । वह पथ्या और उसके जीवा की जननी मानी जाती थी । मूय भी उमी का पुत्र था । उमका मूर्ति बनाया और पूजी जानी थी ।

मिख में देवताआ क मन्तिर थ जिनम पुजारिया का अनुपासन रहता था । मन्तिरा क रच के लिए जगोरें दी जाता थी । पुजारिया या पुराहिता का सबसे बडा नेता स्वय वहाँ का राजा हाता था । विनोप उत्तमा म वही पूजन करता-करता था । देवताआ पर जो कुछ चढता वह पुजारिया में बट जाता था जिसस व बडे चन म जीवन व्यतीत करत थे । उसके बदले व विद्याध्ययन जोर अध्यापन जोर जादश जाचरण का प्रदान कर उसकी मयाग रखते थे ।

मिख वाग का परलोक में बडा विश्वास था । वहाँ पहुचन क लिए जाचरणा का शुद्धता भावा एव विचारा की पवित्रता ता थी ही मदिग क निर्माण करान तथा पूजा गेट चतान स कर्मानुसार स्वग प्राप्त भी हा सकता था । उस दश में मय तत्र भी खत्र चलत थे किन्तु उनमें आध्यात्मिक विषयो या आत्मा सम्बन्धी दाशनिक विचारा का अग्र प्रवृत्ति नही पायी जाता । तथापि उनकी धारणा थी कि शरीर में का क सिवा जीव भा रहता है जा आसिरिस का कृपापान हान स अमर हा सनता है ।

अध्याय ३

हिट्टी और मिट्टनी

त्रिंशत् वर्षों में मिस्र का अन्तर्गत बग़ सायब कर रहा था उस समय पश्चिमी एशिया का वह भू-भाग जो आज सल्तनत एन्टोनिया और एशियाई तुरकी कहलाया कुछ गयी जाति का आक्रमण का धर बन गया। उनमें कम्मा और हिट्टी प्रमुख थे। उक्त आक्रमण ने बेबीलोनिया साम्राज्य का गच्छावण कर दिया। अमासिया का ह्वात्तर कर्मिषा ने बबिलोन पर मिट्टनी लाया। उत्तरी मेसापटमिया पर तथा एशियाई सायब के मध्य भाग पर हिट्टिया ने अपना अधिकार स्थापित कर दिया। उक्त युद्धों से बग़ अर्थ-आय जाति की ही साम्राज्य थी। उनकी माली गच्छा प्रयोग एक व्याकरण में बहुत कुछ समता थी। वे लोग उनमें सुगन्ध और मध्य में धर जितने ही मेसापटमिया अपना मिलावासी। किन्तु एतद् धर अन्त-साम्राज्य और घुड़मवारों के कारण उनकी युद्ध-क्षमता का बहुत बल प्राप्त हो गया था।

ईसा स २१०० वर्ष में भी पहल कर्मिषन सागर के अन्तर्गत में बड़कर हिट्टी एन्टोनिया में घुमे और उक्त पठार का जो ह्वात्तर गयी के माद पर है उन्होंने अपना अड्डा बनाया। वह प्रथम हिट्टी कहलाता था। इसलिये विजता दल का हिट्टी नाम रख लिया गया। पहल ता उनमें विभिन्न दल में लगेई शक्य होने किन्तु बग़ का व मय सगठित हो गया। उनकी भाषा भी अय भाषाओं के प्रभाव से पुष्ट होने लगी। मेसापटमिया के व्यापारियों से आन्त प्रयोग हान के कारण एन्त-सत्ता व्यापार कौशल भी उक्त गच्छा किया। उनमें आन्त इतिहास का ज्ञान अभी अधिक प्राप्त नहीं हो सका। एक अनुश्रुति के अनुसार २२०० ई० पू० जय अक्बद के राजा नरमसिन ने उत्तर के सभ्रह गच्छा के मय पर चर्च की था तब उनमें हिट्टी दल भी था जिसका राजा पम्बा था। /

ईसा स १९०० वर्ष पूर्व व्यापारियों की एक टाली ह्वात्तर, हिट्टी या सत्त में आवर बस गयी थी। वे अपने दैनिक व्यापार से सम्बद्ध विषय मिट्टी की गिलाओ पर बयनीफाम लिपि (रेसा लिपि) में लिखकर बेबीलोनिया को भेजा करते थे। मिट्टी

की पटरिया पर लिखे वैसे अनेक लेख प्राप्त हुए हैं जिनसे कुछ विश्वमनीय वाता का पता चल रहा है। यह पता होता है कि उस समय हिंदिया के कम से कम दस राज्य थे जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण पुण्य-मंड (पुण्यस्तुम) था जिसका अधिपति महाराज कहलाता था। उन राजाओं में एक नाम पिस था जिसका पुत्र अनित्तस था। निता और पुत्र दोना ने निरंतर प्रयत्न करके नेग, जल्पवा, पुरपगड मलतिवारा आर हत्तुसम (हट्टी) आदि नगरों पर अपना अधिपत्य जमा लिया था। सबसे धार यद्ध समवत हत्तुसम में हुआ जिसका परिणाम नगर का विध्वंस हुआ। अंत विजेता ने अपने ही नगर नेग में विजित प्रदेशों की राजधानी स्थापित कर दी।

प्रथम चात राज्य का सम्स्थापक राजा लवरनस हुआ जिसने अपने कुटुम्बियों के सहयोग और पराक्रम के बल से अय मात नगरों पर भी अपना प्रभुत्व जमा लिया। उसके पश्चात् अरजवा प्राप्त पर भी उसका अधिपत्य स्थापित हो गया। उसकी पत्नी राजधानी समवत कस्बे में थी किंतु बाद में हत्तुसस अकारा के समीप वागजकड में स्थापित की गयी। अनुमान किया जाता है कि लवरनस का युद्ध हल्प (अलेप्पो) के राजा यमहद के साथ हुआ जिस पर उसने विजय प्राप्त की। लवरनस के बाद राजा मरसिलम प्रथम ने हल्प को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। वहाँ से बढ़कर उसने बेबीलोन पर भी अपनी विजयपताका फहरा दी (१६०० ई० पू०)। मरसिलम प्रथम की अनपस्थिति से लाम उठाकर उसके बहनोई हन्लिंस ने राज्यधरा रचा आर सम्राट के लौट जाने पर उसका वध कर डाला। उसी समय से हिंदी के प्रथम साम्राज्य का ध्य आरम्भ हुआ। जधून राज्य स्वतंत्र होने लगे। उस पतन का यह भी कारण हो सकता है कि उस समय बड़ा राजानुक्रम का विधान अनिश्चित था। इस दोष के निराकरण के लिए राजा तेलिपिनस (१५२५-१५०० ई० पू०) ने घोषणा द्वारा यह निश्चित कर लिया कि प्रथम महारानी का पुत्र अथवा उसके जमाव में प्रथम पुत्रों के पति को राजसिंहासन पर बैठने का अधिकार होगा। यद्यपि उस नियम का अच्छा पालन किया गया तथापि साम्राज्य क्रमशः क्षीण होता गया। तेलिपिनस ने शांति स्थापित करने के लिए युद्ध के बदले संधि नीति का प्रयोग किया किन्तु राष्ट्र का बल प्राप्त न हो सका। प्रथम हिंदी साम्राज्य का महत्त्व जाधा गती में समाप्त हुआ गया (१४६० ई० पू०)।

हिंदिया के द्वितीय साम्राज्य का आरम्भ १४६० ई० पू० से तुवलियस द्वितीय के समय तक हुआ। उसने सीरिया के प्रमुख नगरों को फिर से जीत लिया और उन दान पूर्व जधूनस्थ राज्यों का, जो स्वतंत्र हो गये थे फिर से दमन करके उन पर

प्रभुत्व स्थापित कर दिया। यह अवसर अपना था क्योंकि यहाँ समय के लक्षणमय मिस्र था। अर्थात् यहाँ पर भारतमय किया गया १६०० के लगभग इरिया अर्थात् मिट्टियाँ पर भी भारतीय स्थापित कर दिया किन्तु मिट्टियाँ का साम्राज्य यहाँ ११११ गता। उदा।। पार विगत जारी था, विगत उगाति शतर अर्थात् अर्थात् राज्य। ११११ आरम्भ कर दिया। यह अर्थात् यहाँ था १११० ई० पू० तक रहा। जब मुनिर्गिन्ग मिलागोराइ अर्थात् तब उम। इतुम मगर का मुनिर्गिन्ग और गान्ग्य अर्थात् किया। का मन्त्र करेन विगोपिदा का अर्थात् आरम्भ किया। मगर का उम। मिट्टियाँ पर कितने मिस्र के मन्त्र म मन्त्रा मिन्ग। थी, पार आरम्भ विग। पन्ग का अर्थात् था रहा किन्तु दूगर का मन्त्रा और सदाग का साथ हुआ। उम। मिन्ग की सत्रपाता कागुवताम म मन्त्र उम। म्ग किया। यहाँ म लीला मगर कानिग पर कर्ण की विगत परगन्त मन्त्रा था। उम। आर मन्ग टक म्ग। मिस्र के मिन्ग का मन्त्रा का मन्त्रा का मन्त्रा किया किन्तु उम। मन्ग परगन्त मिन्ग। उम। मन्ग और अर्थात् राज्य का अर्थात् मन्त्रा का अर्थात् कर दिया। मन्त्र मन्त्रा मन्त्रा का अधिपत मन्त्र पर मिन्ग का सत्ता स्थापित हो गया।

मुनिर्गियुमग का अर्थात् आर पन्ग गया था कि मिस्र के मन्त्रा एगनान का लीमगी पुत्री जगमामा १ उम। पाम प्राधना भजी कि मन्त्र पति का मन्त्र हा गयी और म नि मन्त्रा हान के कारण अत्यन्त चिन्तित और दुःख। मन्त्र विचार विमा मिस्रवामा का पति वरण करन का गयी है। यदि आप म्ग करके अपन विमी पुत्र का यहाँ भज दें तो म उम। विवाह करन निचिन्त हा जाऊ और वह राज्य का सचालन करे। तन्तुमार हिन्दी सम्राट ने अपन एक पुत्र को भज दिया। किन्तु मिस्र के 'आइ नाम के प्रभु पुजारी और प्रतिष्ठित दरबारी ने उम। वध करवाने विषया रानी के साथ ब्याह कर लिया।

यद्यपि दक्षिण और पूव म हिन्दी साम्राज्य म गान्गि रती किन्तु पश्चिम के अरब्बना नामक राज्य न मिस्र के पच्छिमोपण से उपद्रव प्रारम्भ कर दिया। दा वप तब पार युद्ध करके हिन्दी सम्राट मुरमिन्स ने वहाँ के राजा का वध कर दिया और वहाँ अपना एक जुबूल नामक नियन्त्रण कर दिया। उत्तर मीमा के उम। और स्वतंत्र दन्ग के दमन करने के लिए अनेक मन्त्र दल स्थापित कर म्ग म्ग। उम। विस्तृत साम्राज्य पर प्रभुत्व स्थापित रखन के लिए बारम्बार सेनाएँ भेजा जाया करता थी, तथापि स्थायी शांति इसलिए नहीं हो पाती थी कि मिस्र और

अमोरिया के सम्राट विराधानि का मरकान जोर किसी न किसी ढंग से विराधिया की सहायता करत रहत थे। हमका जागे चलकर यह परिणाम हुआ कि मित्र के सम्राट रमम्मम ने सोरिया छान लेने के लिए उस पर चढ़ाई की। १२८६ ई० पू० कलेग म दाना साम्राज्या की टक्कर हुई। मित्र का मना पराजित हाकर लौट गया। यदि नाजुक समय पर अतिरिक्त सना न जा पहुँचती ता बहुत समभव था कि मित्र की मेना ममूल नष्ट कर दी जाती। किन्तु मोरिया में हिट्टिया की शक्ति का वह बाई जाघात न पहुँचा सका। उत्तरपूर्वीय प्रदेश की रक्षा करने के लिए एक नया प्रांत बना दिया गया जिमकी राजधानी हकमिम में राजवग का शासक नियुक्त कर लिया गया।

अमोरिया साम्राज्य की प्रबद्ध शक्ति का रोकने के लिए हिट्टी और मित्र के सम्राटा ने मन्त्री स्थापित करना उचित समझा। जत १२६९ ई० पू० में दाना साम्राज्या न आपन में मन्धि कर गी जिमका ध्येय एगियाई कोचक में शान्ति रखना था। मन्धि का अन्तिक पुष्ट करने के लिए १२५६ म हिट्टी राजा हत्तुगिलिम ततीय ने अपना राजकुमारी का विवाह फेरारामसेम से कर दिया। इम समय हिट्टिया का साम्राज्य करीब करीब सम्पूर्ण उत्तरी एनेटालिया पर स्थापित हो गया था। साम्राज्य अभी सगठित न होने पाया था कि पश्चिमी और पूर्वी प्रान्ता में उपद्रव जा उठे और साम्राज्य अस्त-व्यस्त हो गया। (११९० ई० पू०) एनेटालिया अनेक छोट मोटे राज्या में बँट गया। समबत कई छोट राज्या पर हिट्टी लाग राज्य करत रह। ऐसी परिस्थिति दगर असीरिया के सम्राट गल्मसेर ततीय ने सब का अपने अधीन कर लिया। नवी शती के आरम्भ से असीरिया वाला का बल बढ़ता ही चला गया, महा तक कि आठवी शता के आरम्भ तक असीरिया का आधिपत्य पूण रूप में स्थापित हो गया। हिट्टी जादि का नामोनिशान मिट गया।

सामाजिक व्यवस्था

राजघराने के सिवा सामन्ता के वग थे जिनका ममाज एव राज्य में विधेय महत्व आर अधिकार था। राजवशिया तथा सामन्तवशिया के ही हाथ में शासन के सभी षद जोर अधिकार रहते थे। कृषका और उद्योग धधा में लगे हुए लोगो की स्थिति एक प्रकार के दासा की सी थी। वे अपना स्थान अथवा काम छाडकर नहीं जा सकते थे। हम प्रथा का प्रतिपालन अनावश्यक कडाई से नहीं किया जाता था। नौकरा और दासा पर पूरा अधिकार रखते हुए भी उनके साथ अमानुषिक और

निदयता का व्यवहार नहीं होता था। गारीरिक क्षति के लिए उनके मुआवजे की रकम स्वतंत्र व्यक्तियों में बाँधी मानी जाती थी। नियम यह भी था कि जघन्य काम करने के लिए स्वतंत्र व्यक्तियों का उनसे दुगुना दंड देना पड़ता था। हिट्टी विधान में नौकरों के कर्तव्यों और अधिकारों की व्यवस्था का गया था। उनकी जायदाद पर उनका अपना अधिकार होता था और कुछ धन देकर वे स्वतंत्र समुदाय की लड़की से विवाह भी कर सकते थे। हिट्टिया का वैवाहिक विधान वेवीलोनिया जैसा था। सगाई की प्रथा जबरन थी किन्तु लड़की उमसे वाध्य नहीं थी। यदि वह चाहती तो माता पिता की आज्ञा लेकर अथवा बिना आज्ञा लिये हुए भी जिससे चाहे विवाह कर सकती थी। किन्तु बर्षों स्थिति में उसे सगाई में जो कुछ भेंट मिलती थी वह लौटानी पड़ती थी। लड़की के पिता का दहेज देना पड़ता था। इतना सब हान पर भी यदि पति सगम से इन्कार करता अथवा स्त्री इन्कार करती तो विवाह टूट जाता और दाँपों को हरजाना देना पड़ता था। यदि सम्बन्ध होने के बाद स्त्री व्यभिचार करती तो पति प्राणदंड तक भी दे सकता था। पति के निधन के पश्चात् उसकी विधवा को उसके भाई के साथ और भाई के अभाव में पति के पिता और पिता के अभाव में भतीजे से ब्याह करना पड़ता था। कुछ हर्षों से हिब्रू लोगों में भी ऐसी ही प्रथा प्रचलित थी। हिट्टी कानून में पिता की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र अपनी सौतली माँ के साथ समागम कर सकता था, क्योंकि पिता की सम्पत्ति का जिसमें उसकी स्त्रियाँ भी गिनी जाती थी वह उत्तराधिकारी होता था। हिट्टियाँ में भाई-बहन का विवाह अवध नहीं माना जाता था।

शासनविधान और कानून

प्रारम्भ में राजा के निर्वाचन की प्रथा थी। कभी कभी एक से अधिक व्यक्तियों का नाम चुनाव के लिए प्रस्तावित होता था जिससे उत्पात भङ्गने की आशंका रहती थी। सामन्त लोग राजा चुनने का अधिकार छोड़ने में आनाकानी करते थे। किन्तु जब राजसत्ता बलिष्ठ हो गयी तब राजा अपने उत्तराधिकारी का नाम स्वयं प्रस्तावित करता था जिसका समर्थन चुनाव करनेवाले प्रायः कर देते थे। निर्विघ्न चुनाव का सरल, स्थिर और व्यवस्थित बनाने के लिए अन्त में यह विधान बना कि राज्य का उत्तराधिकारी प्रथम महिषी का पुत्र हो और उसके अभाव में पुत्री का पति हो। एक ही अपवादों का छोड़कर इस नियम का प्रतिपालन होता रहा। राजा की

उपाधियाँ में 'तवरण' तथा 'वीर-देव अथवा देवी प्रिय' आदि होती थी। अशोक का 'देवाना प्रिय' उम्मी की प्रतिध्वनि हो सकती है। अपने जीवन-काल में तो नहीं किन्तु मरणापरान्त राजा देवत्व का प्राप्त हो जाता था। राजसत्ता के पूर्ण विकास होने पर राजा ही राज्य का सर्वोपरि पुरोहित, सेनापति, विधायक और 'यायाधीन' माना जाता था। मन्त्रि, विग्रह आदि का उसे पूरा अधिकार था। पौराहित्य राष्ट्रीय याज्ञिकत्व तथा महत्त्वपूर्ण सभामें सेना-मंचालन का कार्य उसे स्वयं करना पड़ता था। जय कार्यों के लिए वह जिसे चाहे नियुक्त कर सकता था।

हिंदियाँ के विधान में महारानी के कुछ स्वतंत्र अधिकार थे। महारानी की उपाधि एक ही महिषी को जीवन भर के लिए मिलती थी चाहे वह विधवा से सघवा क्या न हुई हो। महारानी का अपनी विशेष मुद्रा होती थी और वह जय दण्ड की रानिया से पन व्यवहार भी कर सकती थी। राज्य की आज्ञाओं और श्रेष्ठा में उमक नाम का कभी कभी उल्लेख रहता और यज्ञ में भी वह भाग लेता थी।

यद्यपि हित्तुसम का राजवंश अधिक महान और शक्तिमान था तथापि हिंदी साम्राज्य वस्तुतः सभ्य-साम्राज्य था जिसमें अनेक राज्य संयुक्त थे। राज्य का शासन विधान जटिल न था। प्रत्येक नगर या वस्ती अपनी परम्परा और परिपाटी के अनुसार बढ़ा की समिति द्वारा शासित होता था। प्रदेशों के शासन-बदल पर राजा राजवशिया या सामन्तों में से किसी व्यक्ति की नियुक्ति कर देता था। प्रदेश का शासक स्थानीय शासन की परम्परा में हस्तक्षेप न करता था। शान्ति और प्रान्त की रक्षा के सिवा महाराज राजमार्गों लोक-मवता का संरक्षण राष्ट्रीय उत्सवों का प्रबन्ध, पुरोहिता की नियुक्ति आदि उमके मुख्य कर्तव्य थे। अधिक महत्त्वपूर्ण और उत्तरदायित्व के प्रदेशों या स्थानों का शासन प्रायः राजकुमारों या राजवशिया के सुपुत्र किया जाता था।

कभी-कभी छोटें या कमजोर राज्य आत्मरक्षा के लिए या तो स्वयं या प्रेरणा द्वारा साम्राज्य के संरक्षण में जा जाते थे। उनसे जाधिपत्य के प्रमाण-स्वरूप कुछ कर लिया जाता था। संरक्षित राज्य के स्वामी को वषादारी की शपथ लेनी पड़ती थी किन्तु आलस नहीं मानी जाती थी। सम्बन्ध दृढ़ करने के लिए प्रायः वैवाहिक बन्धन स्थापित कर लिया जाता था। साम्राज्य में बराबरी के स्तर पर संधियाँ होती और धानुओं या मिट्टी की पट्टियाँ पर उन्हें अंकित कर दिया जाता था।

साम्राज्य का विधान अथवा प्रचलित कानून मिट्टी की पट्टियाँ पर लिखा हुआ वागाजकुई में मिला है। इसमें कृषि, मालगुजारी व्यापार सफाई, अकाल में सहा

यना सम्पत्ति मजदूरी की दर, नौकरी, गुलाम, वतन, विवाह जादि स सम्बन्ध रखनेवाले कानना की सूचना मिलती है। उसी प्रकार यह भी विनिता हाना है कि चारो हत्या, जादू टोना, राजाना की अम्ना पौजगरी अग्निदाड अवध मथुन जाति व सम्बन्ध म भी कानन घने हुए थे।

मूवदमा पहले बढा की समिति व सामन जाता था। याय के लिए जा व्यक्ति राजा के प्रतिनिधि के पास, जो प्राय स्थानीय सेना का अध्यक्ष हाता था जाता था। उसके साथ अच्छी तरह जाच करने के बाद याय किया जाता था। हिट्टिया व दडविधान म प्रतिशाघ की भावना कम थी। बलात्कारपूर्वक मथुन पशुमथुन राजानुशासन का अवना और व्यभिचार के लिए प्राण-दंड दिया जाता था। अय जुमों के लिए जुमाना ही प्राय पर्याप्त समथा जाता था। जग भग की सजा कभी कभी गुलामा को दी जानी थी। स्वतंत्र प्रजा पर वह लागू न थी। यदि किसी स्थान पर हत्या हा जाती और मुजरिम भाग जाता ता तीन मीठ के भीतर जा गाव हाते थे उनका मतक के कुटुम्बिया का मुजावजा देकर सतुष्ट करना पडता था। राजाजा की अवहलना करनेवाले व्यक्ति के कुटुम्बिया का भी दड का पात्र माना जाता था।

आर्थिक परिस्थिति

हिट्टा लोगा का मुख्य व्यवसाय कृषिकम तथा गोरक्षा था। भूमि का बहुत बडा अंश राजा और मदिगाके अधिकारमे था। भूमि सम्बन्धा कानन भी पट्टियो पर लिखे हुए थे। जमीन लगान पर जयवा सेवा के एवज म दी जानी थी। राजा से प्राप्त भूमि पागवाले के बदल जाने या मर जाने के बाद राजा का वापस हा जाता थी। किन्तु कारीगरा और मजदूरा का दी हुई भूमि उनके चले जाने के बाद गाव को वापस हा जाती थी। दी हुई जमान की नाप देने और पानेवाले के अधिकार और कत्तय आदि की लिखा-पट्टी कर ली जाती थी। गेहूँ और जौ की खेती के सिवा गन्ग अगूर, घालाम आदि के बगीचे लगात और बल सुअर बकरे भेड आदि पालते थे। तेल के लिए व जतून के पेट उगात थे। जनाज गराव और तल वहाँ का मुख्य पदावार थी।

पहाडी प्रान्ता में घातु पाये जाता थी। तावा कासा चीनी लोहा और फल निबलता या तयार हाना था। लाहा ता कम माना में किन्तु तावा और कासा अधिक माना में प्रस्तुन हाना था। चादी के टकरा या वालिया स मिक्का का काम लिया जाता था। पशु जनाज चमडे जमीन मास घातु और कपडे—दनकी

कीमत शामन द्वारा निर्धारित कर दी जाती थी। तबिे जीर चादी का अनुपात १ २४० था।

धर्म

हिंदी भासका की धार्मिक नीति उगर थी, यद्यपि कुछ विशेष दवी जीर देव-ताजा की ओर राजाआ की अधिक श्रद्धा हो गयी थी तथापि प्रजा का स्वतन्त्रता थी कि वह चाहे जिसे माने पूजे। हिंदिया का सबसे प्रमुख देवता तेशव मध प्रमजन का स्वामी था। सेरिम और हरिस नामक बग का उमका रथ था। उसने एक हाथ में फरमा और दूसरे में विद्युत्प्रभा का त्रिशूल सा अम्त्र रहता था। छाटी-बडी नाना जाकार एकार की उसकी मूर्तिया पूजी जाती थी। हिंदिया में प्रचलित जाग्यान क अनुमार उसका सबसे घोर गद्दु इलियकस नाम का अप्रमहिष्णु नाग (सप) था जिसने एक बार ता उम तथा जय देवताआ का बुरी तरह में पराजित किया, किन्तु बाद का तेशव ने देवी इनरम की वितय छलना की सह्यता में उस मार डाला। तेशव की पत्नी हिरत उमी के ममान प्रभावगाग्नी गकिनमती समरमयकरी देवी थी। देवी का बाहा सिंह था और उन दाना (तेशन तथा हवत) का पुत्र था गरमा। हवत के सिवा शौशका नाम की सिंहवाहिनी पत्वावागी देवी की भी पूजा होती थी। तेशव और उसकी पत्नी साम्राज्य के विभिन्न प्रांता में अनेक नामा से पूज जात थे। प्रत्येक नगर में देवालय प्रतिष्ठित थे। पूजन के लिए अनेक प्रकार का मूर्तिया बनायी जाती थी। छोटा से छोटी मूर्ति स लकर बड़ी में बडी पत्थर या धातुआ की मूर्तिया बनायी जाती थी।

अरिना नाम के उगर में अरिना नाम की सूया देवी की पूजा प्रचलित थी। हिंदी क राजा अरिना (सूर्या) को त्रलोक्य की स्वामिनी और राज्य की रभिणी तथा नेत्री मानत थे। उसकी समता मय्य और चाय के सरक्षक सूर्यदेव भी नहा कर सकते थे। सूर्य देवता का प्रतीक पखवाला बिच था, जसा कि मिन्न वाले मानत थे। अरिना का पति था वुसेभू (मेघराज) किन्तु देवी के मुकाबले में उसका महत्त्व कम माना जाता था। अग्नि के त्रिघायक देवता तेलिपिा मय्य के देवता जादि अनेक देवा और देविया की पूजा की जाती थी। चंद्रदेव का नाम कगक था पानाल का हेसुद और समुद्रतल के इअ नामक देवता थे। देवी की सवा के लिए अनेक सलिया भी थी।

मदिरो, पवतो खुँ मैदाना में पूजन होने और उत्सव मनाये जाते थे। देवी

देवताओं का सविधि पूजने के लिए पुजारी नियुक्त थे। वे उन्हें नहलाते घुलाते वस्त्र पहनाते, भाज्य और पेय पदार्थों का नाम लगाते और गान वाद्य तथा नृत्य से उनका प्रमत्त करते थे। प्रमाद वाटन की प्रथा हिंदिया में प्रचलित नहीं थी। देवता को पाग मांस आ फल, फल वस्त्रादि चढाये जा सकते थे। पागुवलि म बल छाग भड ही नहीं कुत्ते और मुअर भी प्रयुक्त होते थे। कहते हैं कि कभी-कभी नर मेघ भी हाता था। हिंदिया में ऋतुआ और वर्षारम्भ के मुख्य उत्सव निश्चिन्त थे जिनके कायत्रम में नृत्य गान और एक प्रकार का छोटा माटा नाट्य प्रदर्शन भी हाता था। कभी-कभी वृत्तम युद्ध का आयोजन किया जाता था। देवताओं की रथयात्राएँ कराया जाती थी। रथा के आगे जागे देवतासिया तथा अन्य स्त्रियाँ के दल जलती मणाल लकर चलते थे। देवताओं के विश्राम और सुविधा के लिए भवन, जा तरनवी भवन कहे जाते थे रहते थे।

बुद्ध देवताओं के रहने के विशेष स्थान नियत थे जैसे सूय का सिप्पर में चन्द्रमा का कुजान में मध्वा का कुम्मिया में ईश्वर देवी का निनेवह में, नत्रिया देवा का किमन्न और मरुत्क का बेबीलान इत्यादि में। लोगों का विश्वास था कि देवता पराश्रम में जदश्य रूप में रहते हैं। वे अमर हैं किन्तु उनके व्यापार और व्यवहार मनुष्यों के व्यवहारों के समान हाता हैं। उनका मनुष्य के प्रति धसा ही व्यवहार हाता है जसा कि मालिक का दाम के साथ। जत्र देवता दुचित्त हो जाता है तब असुर उसक भक्ता को मताने लगते हैं। प्राथना करने पर देवता रक्षा करते हैं किन्तु यत्न यातना किसी पाप के दडस्वरूप हाता उनका निराकरण पाप स्वीकार करने और उसके लिए प्रायश्चित्त करने तथा क्षमा मागने पर ही हो सकता है। मून प्रेता रागा और दलाआ से बचन के लिए जादू मन्त्रादि उपचार किये जाते थे।

हिंदिया में मतक जलान की प्रथा थी। मतक-मस्कार तरह दिन तक चलते रहते थे। चिन्ता से अवगिष्ट हृष्टिया का निकालकर उस गराव से बचा देते और हृष्टिया का किन्ना पात्र में रपकर दफना दते थे।

कला कौशल

हिंदी लोग ने नगर निर्माण और गिला-तत्क्षण कला में मराहनीय निपुणता प्राप्त कर ला था। उनकी राजधानी हत्तुसम तत्कालीन एगिया में सबसे विगाल सुन्दर और आकषक नगर था। उनका प्रामाण्य की दा विशपनाए थी। पहला यह कि सबसे पहल वहाँ के स्थपतिया न राजप्रामादा का दा खम्भा पर जाधिन द्वार प्रकाष्ट

द्वारा विमूषित किया, जिसके दोना पाश्वों में समचौकार घरहरे या मीनार बनी थी। जागे चलकर असीरिया और फारस वाला ने उसी नमने का अङ्कुरण और उन्नयन किया। इसके सिवा राजप्रामाद के मुख्य द्वार की शोभा बनाने के लिए उठाने जानुपातिक सिंहा की मूर्तिया बनाने की परिपाटी आरम्भ की। मुख्य द्वारा पर स्विक्स मिस्र मे बनते थे किन्तु हिंदिया के द्वार प्रकाष्ठ के साथ द्वाररक्षक सिंह और बलिष्ठ द्वारपाला के बनाने की परिपाटी अपनी विभेपता रखती थी। मिस्र तथा मेसापटेमिया की वास्तुकला से भी उठाने लाभ उठाने म बाई सवाच नहीं किया था।

बागाजकुई और टाजिनिकुट में, जो बागाजकुइ से दक्षिण पर है पत्थर की चट्टाना पर उकीण नाना प्रकार की मूर्तिया और दश्य बने हुए हैं जो हिंदिया की तक्षण कला के सुन्दर नमने माने जाते हैं। मूर्तिया की जनक मुद्राएँ पायी जाती हैं जिनमे कुछ मूर्तिया नग्न देविया की भी हैं। मिट्टी तथा धातुआ की बनी छोटी-बड़ी चागे सुदाई ५ मिली हैं जिनमे अनुमान किया जाता है कि चित्रण कला आर सुनारी न बहा काफी उन्नति कर ली थी।

हिंदी पुरप और स्त्रिया सिले हुए कपडे और शिरस्त्राण पन्तत थ जिनकी जास्तोन तथा लम्बाई छोटी और बडी दोना प्रकार की हाती थी।

युद्धकला

हिंदिया के रथ मिस्र वाला की तरह छे जालियों के हाने थे किन्तु उन पर तीन व्यक्तिओ के लिए स्थान होता था। शीघ्रगामी होने से उनकी भी गिनती हिंदिया का विजय के कारणों में है। वे लगभग दोघारे परमा और धनुष-बाण का प्रयोग करते थे। घुड़सवारा का रिसाला उनके पास न था और पदाति का म्यान भी सेना में गौण था। सेना-संचालन तथा युद्धकला में वे कुशल थे। दंड किला के निर्माण की कला ने भी बहा अच्छी उन्नति की थी।

भापा और लेख

हिंदी साम्राज्य में अनेक भाषाएँ बोली जाती थी जिनमें पाच मुख्य थी। किन्तु सब भाषाओं में मिट्टनी लोभा की भाषा अच्छी मानी जाती थी। वह भाषा इण्डो युरोपियन भाषा की एक शाखा थी। यद्यपि बाल् म अय भाषाजा के वहत स गद मिल गये जिससे उसका रूप बदल गया। लिखने तथा उच्च राजनातिक व्यवहार में मिट्टनी भाषा का अधिक उपयोग होता था। हिंदिया के पट्ट-लेखा में प्रायः कानन

व्यापारिक बाम की बातें, कुछ प्रचलित लाल कथाएँ पूना की विधियाँ, पौराणिक दग के आस्थान तथा विजया और मुद्दा के बणन मिलन ह जा गद्य में ह। एसा प्रतीत हाता है कि काव्य, तत्व दान और विज्ञान की आर उनका ध्यान आवर्षित न हा सया था।

मिट्टनी

हिट्टिया के इतिहास म जिन जानिया का उल्लेख मिलता है उनमें मिट्टनी लामा का विशेष स्थान है। इसा-पूर्व द्वितीय सहस्राब्दी में एण्डा-जायन लामा की एक शाखा कम्पियन सागर की पूर्वी आर म घूमत हुए काकगिया के पवना का लौघकर मेसापटोमिया क उत्तर तथा जगरास की घाटी म जा अब वृद्धिमान कहलाना है, जा बसी थी। उम समय वहाँ के निवासी हरी लाम थे। हरी न ता आय और न सेमेटिक जाति के थे। ईसा से पूर्व तीसरी सहस्राब्दी म व लाम जारमीनिया म थे। वहाँ से व जसीरिया सीरिया और फिन्स्तोन (पेल्स्टाइन) तक जा बस थे। ईरान के नजी नामक स्थान पर उनकी वस्ती के अवशेष अब भी मिलते हैं। हरी और मिट्टनी घुल मिलकर रहने लगे और गकिनाली हो गये। ई० पू० पंद्रहवीं शताब्दी में हिट्टिया क समान व भी लह का प्रयाग करते थे। उनक पश्चिम में सीरिया राज्य था। वस्मुकनी म उहाने अपनी राजधानी स्थापित कर ली। उनकी बड़ी हुई गकिन से हिट्टी राज्य का विन्ता होने लगी क्यकि कुछ रजवाडे उसक जाधिपत्य स निकलकर मिट्टनी लामा क साथ शामिल हा गये। १४५०-१४०० म मिट्टना के जाधिपत्य म जसीरिया भी चला गया था किन्तु बहुत लडने मगडने क बाद जसीरिया स्वतन्त्र हाकर अपना बल उत्तरोत्तर बढाने लगा। मिट्टनी क राजा तुपरद् ने मिस्र के राज्य से भी मल-जोल बनाना आरम्भ कर लिया। पंद्रहवा शता के मध्य तक उनकी गकिन का पूण विकास हो गया। फेरस थटमास चतुर्थ और एमेनहातेप ततीय ने वहाँ की राजकुमारियो स विवाह कर लिया। आक्विरकार हिट्टिया का उनसे खुम्मखुल्ला सघप हाने लगा। हिट्टी राजा सुप्पी-ल्यमस न उनकी राजधाना पर आक्रमण करके उसे लूट लिया (१३६८ ई० पू०)। समभव है कि मिट्टनी की देखा-देखी हिट्टी राजाजा ने भी 'वीरदेव' जयवा 'देवीप्रिय' का उपाधि ग्रहण कर ली हो। हिट्टी के राजा क लौट जाने के बाद मिट्टना पुन अपना स्थिति पुनर्बन सुन्द कर सके। उन्हाने हिट्टी राजा स सचि स्थापित कर ली। सचि पत्र के महत्व का एक यह भा कारण है कि जिन देवताआ का नाम उसमें उल्लिखित

ह उनमें मिया, वरण, रूद्र और नामत्य के भी नाम ह। उनका सिवा कुछ देवताआ के सयुक्त नाम भी वहाँ प्रचलित थे। उनकी प्रमुख देवी कभी मूय की और कभी पथ्वी की अधिष्ठानी मानी जाती थी। इसस यह प्रतीत हाता है नि उनका कुछ धार्मिक सम्बन्ध भारतवर्ष के जायों से रहा होगा। यह भी अनुमान किया जाता है कि शायद वे उसी शाखा के आय हा जिहने भारत में पदापण किया। उही लागा म नहीं, वरन् करमी लोग म भी, जो आधुनिक लूरिस्तान क प्रदेश मे रहते थे जाय देवताआ के जैसे सुरेश, सूर्य और मरत के नाम प्रचलित थे और अश्व देवत्व का एक प्रतीक माना जाता था। पहले कम्सी का इण्डो-आय जाति का होना सदिग्ध था किन्तु अब यह माना जाता है कि क भी सम्बन्ध इण्डो-आय का के ह।

मिट्टनीया का समाज सामन्तशाही था। सामन्त अपनी अपनी रियासत म शासन करते थे किन्तु राजा को अपना अधिपति मानते थे। उनके समाज म कम से कम तीन वर्ग थे। पहला मयनी जो रथा पर चढ़कर यद्ध करता था दूसरा कारागर, और तीसरा सबे नमे जो ग्रामवासा कृष्का का वर्ग था। इनक विषय में अभी तक अधिक ज्ञान प्राप्त नहीं हा सका है।

अध्याय ४

मिस्त्र साम्राज्य के नये युग का उत्थान और पतन

(१५८०—१०८५ ई० पू०)

यद्यपि 'हिन्साग लोगो न मिय पर आतक जमाने में काई कसर न रगो तथापि मिय निनासा उनका घणा की दष्टि म दरत रह । अन्त में घबाज नगर क अहमास नामक एक राजकुमार ने अमनुष्ट प्रजा को संगठित कर उनका मिस्त्र से निवाल लिया । तृतीय प्रपात स सीरिया तक उमने अपना आधिपत्य भी स्थापित कर लिया । जात्रमणकारिया की तरह उसने भी घोडा क रिमाला जोर अश्वरथा की संता का संगठन किया । घोडा क उपयोग से बड़े साम्राज्य की स्थापना भी समव हा सकी । मिस्त्रवामिया में नयी क्षात्र-वसति का प्रादुर्भाव हा गया और अहमोस स मिय क जठारहवें राजवश का आरम्भ हुआ । इस वग क राज्यकाल म मिय में साम्राज्य एव साम्राज्यवाद की तथा ससृष्टि एव सम्यता की अमत्तपूव उन्नति हुई । इस नये वग क सहायका में केवल सामन्त श्रेणी के ही नही वरन मध्य श्रेणी के लग भी थे ।

अठारहवा राजवश (१५८०—१३५० ई० पू०)

इस वग ने चौथे प्रपात तक दक्षिण में तथा सीरिया की आर परात नदी तक एशिया में अपनी पताका पहरायी । मिस्त्र की सीमाए दढ कर दा गयी जिससे उस पर आक्रमण का भय न रहे । इसी ध्येय से इसने एशिया पर भी आतक और बल बढ़ाने की नीति का अनुमरण किया । इसका प्रथम पराक्रमी राजा यटमोस (१५४०-१५०१) था जिसकी विजया और विजित दशा की लट स मिस्त्र के आत्मविश्वास उत्साह एव आर्थिक दगा की उन्नति हाने लगी । तीम वष राज्य करने के बाद उसने अपनी पुत्री हाशेपसत का सहायिनी राज्यशासिका बना लिया । पिता के मरणो परान्त उत्तराधिकारी की उषेक्षा करके पुत्री ने स्वयं राज्य किया (१५०१-१४७९ ई० पू०) । चूकि मिस्त्र की प्रथा थी कि राजसिंहासन पर पुरष ही बठे इसलिए उमने

पुष्प का बाना बनाया, अपने को पुष्पो के समान सम्भावित करने की आज्ञा दी और अपनी एक ऐसी मूर्ति बनवायी जिसका वक्षस्थल पुष्पा का सा था और दाढ़ी भी थी। अपना पुत्रत्व सूचित करने वाली पौराणिक ढंग की बयाजा का खव प्रचार किया। उसकी सफलता से यह निष्कर्ष निकल सकता है कि अठारहवें वंश के शासक की इतनी धाक और शक्ति थी कि वह यदि चाहे तो स्त्री का भी पुत्रत्व प्रदान कर दे। तीस वष के अपने राज्यकाल में उसने मिस्र की मान मर्यादा की ही रक्षा न की वरन् व्यापार के नये स्थानों और मार्गों को खोलकर उसकी अच्छी उन्नति की। उसके सिवा उसने कानक के नष्ट भ्रष्ट मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया और अपूर्ण मन्दिरों का पूरा करा दिया। अपने लिए भी उसने एक सुन्दर समाधिस्थान बनवाया।

महारानी का उत्तराधिकारी उमका माई एव पति थटमाजय्य हुआ (१४७९-१४४७ ई० पू०), वह बड़ा तजस्वी एव पराक्रमी निकला। उसने सीरिया और उसके महायुक्त राज्या का मेभीटा के भदान में (१४७९) परास्त कर परात नदी के पूर्वी भाग तक अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिया। हिट्टी तथा मेसापटेमिया के राजाओं ने उसकी सेवा में उपहार भेजे। मिट्टनी ने विरोध करने का साहस किया, किन्तु उसको भी पराजित होना पडा। इस प्रकार पन्द्रह युद्ध जीतकर उसने समुद्रसागर पर अपना अप्रतिम आतंक जमा दिया। सम्भवतः वह ससार का पहला ज्ञात राजा था जिम्मे साम्राज्यवाद तथा समुद्री बल के महत्त्व को समझा और अपने जहाजी बेड़े से अपना आधिपत्य स्थिर रखा। उसकी सारा शूब सुसज्जित, अनुशासित और प्रबल थी। उसके काप में ग्यारह सौ मन चादी-सोना था। थेबीज तथा कानक की शोभा समृद्धि और मिस्र के व्यापार की अथेष्ट वृद्धि होती रही। कहा जाता है कि उसकी विभूति का पूरा प्रदर्शन उसके प्रपौत्र ऐमेनहातेप तृतीय के राज्यकाल में हुआ (१४११-१३७५)। मिस्र की महानता ऐमेनहातेप तृतीय के समय (१४११-१३७५ ई० पू०) में अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची। उसी ने 'कलोसस' का निर्माण कराया जो समार की महान आश्चर्यजनक कृतिया में गिना जाता है। उसके महल में मिट्टनी बेबीलोन आदि दश विदेशों की सज्जा रानिया था। उनमें सबसे प्रमुख पुराहित कुल की ताई नाम की महारानी थी। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में उसने अपने पुत्र ऐमेनहातेप चतुर्थ को अपना सहयोगी सम्राट बनाया। वही जाग चलकर इखनातोन के नाम से विख्यात सम्राट हुआ। ऐमेनहातेप के समय में थेबीज नगर इतना श्री शोभा-सम्पन्न हो गया कि उसकी समानता प्राचीन ससार का ही नहीं अद्यावधि शायद ही कोई नगर कर सका हो। उसके स्वर्ण-सूचित विशाल

मन्दिर पूजा मठ से अपात्र सम्पत्ति बचा रहूँ थे। चारा ओर स व्यापारी आनर वहाँ जमा होत और देण-देश की यस्तुआ का यहाँ तुल्यत्र प्रय त्रिप्रय करत थे।

अठारहव यग का राजा एमेनहानेप चतुष था (१३७५ स १३५८ ई० पू०)। यह बवि, सहृदय और दारानिक था। उमना समय दृढ और आचार विचार पवित्र एव सात्विक थे। मन्दिरा के भाग विनास बमव पण्डुलि नरवन्ति भ्रष्टाचार तथा व्यभिचार स उस एसी ग्लानि हुई नि उगने उनका गुन्धमगुल्या विराध बिया। उमकी धारणा थी कि मदिग की पूजा-अर्चा पुजारिया का ढागमय जीवन तथा मत्र तत्र, जादू आदि सब मिथ्या और भ्रमारमक ह ढनासले ह। उसका विश्वास केवल आतान (सरिता) पर था। सूर्य का वह प्रकाश का ही नहीं बरन जीवन का भी आधार मानता और उसकी भक्ति के जावेश में आकर सारगमित तथा ममस्पर्शि स्तुतिभा की रचना करता था। वह एकश्वरवादा था और निराकार ईश्वर की अपार विभूति का जालोहित करनवाल एक मात्र प्रतीक आतान (सरिता) को ही मानता था। उसका वह सबव्यापी सबशक्तिमान दयालु भर्ता और प्रेमस्वरूप समझता था। उस यह आशा थी कि एक ईश्वर का जादश साम्राज्य व समा निवासिया का जाश्रुष्ट कर सकगा और विभिन्न स्थानिक देवताआ के सघष का हटा दगा।

सुधार की प्रबल प्रेरणा ने उसे कुछ जमहिष्णु कर लिया। उसने आज्ञा दी कि आतान के सिवा जामान आदि सभी देवताआ के नाम मिटा लिय जाय और जापत्ति-जनक पूजा अर्चा बन्द कर दी जाय। एमेनहोतेप नाम बदलकर उसने अपना नाम इरानातान रग्न लिया। जामान स उसे चिन् सी हो गयी था। यही नही थेदीज नगर के विलास, स्वाथ और घूततामय जीवन से ऊबकर वह अखेतातान (आधुनिक तेलएल-जमरना) में नयी बस्ती बसाकर रहने लगा। थवाज का पतन और नयी नगरी का उत्कष दिन प्रति दिन बढता गया। उसके उतावलेपन और जमहिष्णुता से पुजारिया घनिका तथा म्निद्रस्त प्रजा म अस ताप उत्पन्न हो गया। उसक शान्ति और सताप-पूण विचारा के कारण सम्राट की सत्ता के पोषको में जमताप फल जिससे लाभ उठाकर हिट्टिया ने उत्तरी सीरिया और हिन्ना १ पलेस्टान पर जात्रमण कर दिया। शस्त्रवल स साम्राज्य की नीति की रक्षा करने तथा प्रातस्थ प्रजा पर प्रभुत्व कायम रखन के लिए मिस्रवासिया का रक्तपात कराना सम्राट न चित्त ही नहीं बरन घणित समझा। इसका एक परिणाम ता यह हुआ कि नाकरशाही प्रजा का लूटने-खसोटने लगी घर्माधिकारा विराध और पडयन करन लगे और दूमरा यह कि

प्रान्ता ने क्षुब्ध होकर मिस्त्र का आश्रय छोड़ दिया और व स्वतंत्र हो गये। साम्राज्य नष्ट भ्रष्ट हो गया। मिस्त्र की घाक विगड़ गयी और उसकी समृद्धि के साधन जाते रहे। वह श्रीहृत होकर अथ-सकट में ग्रस्त हो गया। ऐसे ऊँचे और पवित्र विचारा और आदर्शों तथा अतर्जनीय बंधुत्व की भावना का रतना भयकर परिणाम देख कर इखनातान का कवि हृदय ऐसा आहत हुआ कि वह इतिहास की विषमता की निष्ठुर कहानी छोड़कर मरी जवानी में ही परलोक को चला गया।

इखनातान के सिद्धान्त के अनुसार सत्य एव यथाथ का अवेपण मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है। रूढ़िग्रस्त रहना मानसिक दुबलता का द्योतक है। उसके विचारा का प्रभाव कुछ काल तक कला और शिक्षा पर भी रहा जिसकी साक्षी उसके नये नगर जफेतातान (तेल एल अमरना) की शिल्पकला की स्वार्भाविक्ता एव स्वतंत्रता अद्यावधि दे रही है। उसके विचारा और आदर्शों से सभवत मिस्त्र की सम्यता में एक नवजीवन प्रदायिनी धारा प्रवाहित हो जाती। नान्ति ने उसके प्रयत्ना को सुखा डाला।

इखनातान की मृत्यु के बाद ही देश में प्रतिक्रिया हुई। उसका दामाद तूताखामेन (१३५८-१३५३) सम्राट् हुआ। उसने अपने स्वशुर के सुधारों का हटाकर पुन पुराने सिद्धान्त का उज्जीवित किया। धर्माधिकारिया तथा सम्पन्न श्रेणी वाला ने उसकी नीति का स्वागत कर उनका यथाशक्ति सहयोग प्रदान किया। इखनातान का सबने भयकर विद्राही तथा दोषी घोषित कर दिया। तूताखामेन की समाधि स जा बहुमूल्य वस्तुएँ प्राप्त हुई (१९२० ई०) उससे बड़ी सनसनी फली और मिस्त्र के इतिहास पर अच्छा प्रकाश भी पडा। इससे अनुमान किया जाता है कि मिस्त्र की आर्थिक दशा कुछ समली थी, किन्तु वह भी अठारहव राज्यवश के पतन को न रोक सकी।

उन्नीसवाँ राजवंश (१३५०-१२०५ या १२०५ ई० पू०)

इस वंश का संस्थापक हरमहरव (१३५२-१३१९) नाम का एक पराक्रमी सनानायक था जिसने मिस्त्र राज्य का छिन्न मिन्न होने से बचा लिया। कुछ विद्वाना की राय है कि उन्नीसवें वंश का आरम्भ हरमहरव की मृत्यु के बाद हुआ था। उसका वंश के प्रसिद्ध राजाओं में रामसेज (१२०९-१२३२ ई० पू०) का नाम पहला है। वह जैसा पराक्रमी वंश ही व्यमनी भी था। उसके महंगा में सक्डा रानियाँ था, जिनमें कई तो उसी की पुत्रियाँ थी। उनका उसने अपने वंश के व्यक्तित्व

एव पराक्रम को अभुण्ण रखने के लिए ब्याह लिया था। मृत्यु के समय उसके सी पुत्र और पचास पुत्रिया थी। साम्राज्य की रक्षा सगठन तथा प्रसार के लिए उसने जो सफल उद्योग किया वह थटमोज की वृत्तिया की समता रखता है। उसके राजत्व-काल में मिस्र की सेना पुन परात के तट पर उसके नेतृत्व में विजय का डका बजाने लगी। हिट्टी लागा के दप को चूण करके उनको शान्ति-याचना के लिए उसने बाधित किया। संधि द्वारा यह निश्चित हुआ कि सीरिया पर हिट्टिया का और फेलेस्टावन पर मिस्र का प्रभावभेन माना जाय। हिट्टी बश की एक राजकुमारी स रामेसस ने ब्याह कर लिया। उसी प्रकार बबरा के भी आक्रमण को निष्फल करके उसने उन्हें परास्त किया। बाहर के देशों की लूट तथा उसकी प्रेरणा से हुई यत्रिया की साने की खानों की खुदाई से मिस्र की सम्पत्ति पुन बढ़ गयी। इस धन से उसने एक नयी नहर खुदवायी और कारनक तथा लक्सर में विशाल एवं भव्य इमारत बनवायी। उनमें से सबसे महत्व का रमीसियम का मंदिर तथा उसकी मूर्तिया हैं।

तेरहवीं शती के अन्त में बीसवें राजवंश की स्थापना हुई। उसका सबसे प्रसिद्ध सम्राट रोमेसेज तृतीय हुआ (११९८-११६७) जिमने कोचक की जोर से मिस्र पर समुद्र मार्ग से आक्रमण करने वालों को पीछे भगा दिया। उन आक्रमणकारियों की इतनी शक्ति थी कि उसके सामने हिट्टी और मार्सीन बाल नष्ट हो गये और फानिशिया बाल के नगर भी लूट लिये गये।

उपयुक्त ज्ञान शक्ति और समृद्धि मिस्र के महत्व की अंतिम छटा थी। वस्तुतः फेरो की शक्ति पतनामुख हा रही थी। पुजारिया और देवालयों के पास इतनी सम्पत्ति एकत्रित हा गयी थी और उनका राय तथा जनता पर अतना प्रभाव बढ़ गया था कि फेरो का भी उनका सामने सीस झुकाना और दरना पड़ता था। विरोध आमोन सम्प्रदाय का धार्मिक नेतृत्व एक बगविशेष का पतक अधिकार हो गया था। उसके मामले फेरो का तेज क्षीण जाता चला गया। उसके अधिकार में मिस्र देश का लगभग सप्तमाग था। सवा में एक लाख में अधिक दास और पाच लाख पणु पौने दस सौ करमुक्त नगरों की जाय तथा साना चाणी अजाति के अपार साधन थे। उन्पर फेरो का काप उत्तरात्तर खाली हाता चला जाता था और जनता भी गनीव हाती जाती थी। इस परिस्थिति में मिस्र साम्राज्य के अतगत जा राज्य अथवा एगिप्टाइ प्रान्त थे व एक-एक करके स्वतंत्र हात गये। मिस्र के भातर बग सभ्या में बबर और हन्नी आ बने जिनमें स्वाय ही स्वाय था अराजकता बगना जाती थी। यद्यपि उपरी स्थित और व्यापार एक व्यवसाय चलने रहे किन्तु मिस्र

कतव्य "याया"यभता और राजकीय पुस्तकाध्यक्षता थे। वजीर के बाद अय प्रमुख अधिकारी थे कोषाध्यक्ष और कृषिमन्त्री। नवीन युग तक उनके सुपुत्र शासन, सेना, कृषि राजकीय पत्र व्यवहार भी कर दिये गये। उनका प्रत्येक दिन सम्राट का साम्राज्य का लेखा जाखा तथा व्यवस्था बतानी पडती थी। सम्राट के दो प्रमुख वजीर होते थे—एक तो राजधानी में रहता और सम्राट की अनुपस्थिति में राज्य के शासन का संचालन करना दूसरा हेलापोलिस में रहता जिसका विधेय कनय मिस्र के निचले भाग का शासन था। उनका कार्य-क्षेत्र शासन था। वित्त सम्बन्धी कार्यों की देखभाल के लिए अय पदाधिकारी थे। साम्राज्य के पचपन नामा के शासनाध्यक्ष के कार्यों का निरीक्षण मन्त्री का विशय कतव्य माना जाता था। प्रत्येक नगर तथा नोम में अपना "यायालय" होता जिसने निणया के विरुद्ध अपील येरीज के वजीर की अदालत में होती थी। साम्राज्य में डाक चौकी का प्रबन्ध होने के कारण याय तथा शासन के कार्य में पहले से अधिक सुविधा हो गयी। यह स्मरण रखना चाहिए कि फौजदारी अथवा माल दीवानी का कार्य पुराहिता या धर्माधिकारिया को नहीं दिया जाता था। मिस्र में बानूना का निश्चित सम्पत्त ईसा से पूर्व आठवीं शती तक नहीं हो पाया था, जब कि वह मसापटेमिया में सक्डा बंध पूर्व हो चका था।

प्राता का शासन पहले कुलीन तथा बड़े जमींदारों के हाथ में था। धीरे धीरे उनका पद बशानुगत हो गया जिसमें सामन्तशाही का अधिक बल मिला। मिस्र पर विजातिया के आक्रमण तथा राजभक्ता के पुनः सस्थापन में पुरानी व्यवस्था बदल गयी। सम्राट के नियुक्त सेवकों द्वारा प्राता का शासन होने लगा।

आर्थिक स्थिति

यद्यपि मिस्र के व्यापार में उत्तरात्तर वृद्धि होती रहा तथापि वहाँ का आर्थिक जीवन कृषि पर ही अवलम्बित था। जमान का मालिक सम्राट था जो चाहे जिसको चाहे जितनी भूमि दे देता था। बहुत-सी जमीन तो दवालया का दा गयी थी किन्तु अधिकांश प्रजा का वाट दी जाती थी। नील नदी में प्रति बंध बाण आता थी। पानी उतर जाने पर जमान की नपार्द की जाती और फिर वह फिरि कर दी जाती थी। उपजाऊ भूमि का क्षेत्र सीमित होने के कारण जमीन तथा पशुवार पर साम निग रानी रखी जाती थी जिसमें उसका अधिभोग अधिक उपयाग हो सक। अन्त कारण नहरा-नालिया आदि का भी अच्छा प्रबन्ध किया जाता था। राज्य की विभिन्न

प्रकृति की भूमि, क्षेत्रों उनके पाम रहनेवाले व्यक्तिमा की सख्या का जेगा रहना था, जिसमे यह जाना जा सकता था कि अमुक क्षेत्र में किस चीज की कितनी पत्तावार और उम पर क्या खच होगा। उसी साधन से मश्री बाने क पहल ही गेती की आम तनी का अच्छा अनुमान लगा लेते थे। किमान को राजा के आपानुमार पगल बाना पत्ती थी। कन, क्या कहा और कितनी चीज बायी जाय, राजाना ही निश्चिन करना थी। किमाना द्वारा उमका प्रतिपालन अनिवाय था, क्याकि उनके लिए बार्द अय चारा ही न था। किसाना का खेत की उपज का पाचवाँ भाग दना पडता था। अपना खनी क अलावा मस्राट अथवा मंदिर की भूमि पर भी किमान का श्रमदान करना पडता था जिमको आधुनिक भाषा में बेगार कहा जा सकता है। मिस्र क निवाना धर्ममीर थे और राजा का ईश्वर का अश समझने थे। अत श्रमदान करना उनक लिए स्वाभाविक काव्य-भा था। उम युग का इस प्रेरणा का बमोवेग उतना है महत्व था जिनना कि आधुनिक ममार में दगा-मेवा अथवा जनगवा का है।

साम्राज्य की वद्धि के साथ मिस्र की सम्पत्ति तथा व्यापार में अच्छी वृद्धि हुई। उम युग में मिस्र मध्य-भागर के तटा पर बसे नगरा एव टापुआ म व्यापार करना था। एगियाई प्रान्ता विनोप कर पच्छिमी एशिया से उसका व्यापार शाता था। उमर सामने जल और स्थल दाना क माग खुले हुए थे। पर मरुके अच्छी न थी और निक्का का भी पचलन न था जिमसे व्यापार मे अवश्य अगुवियाँ हायी गी हागी। मके मिया व्यापारिका का प्रत्येक देश में चुगियाँ तथा क न पत्त थे, जिसमे जन्तद्वीपीय व्यापार का सुलकर प्रवाह नहा होन पाता था। अथवा मिस्र की समद्धि का चार चाद लग जाने क्याकि यबिया की खाना म अच्छा मात्रा म गाता मिन्ना था। उसकी समद्धि का प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि कर्क गाधारण श्रणी के लागे मे भी कपडा तथा आमपणा की अधिक माग हाने ल्हा। गन्नाआ, जमा मारा एव मंदिरा की सुमम्पत्तना का कहना ही क्या था। उर का म साम्राज्य क सकुचिन एव विभक्त हाने के कारण जाधिक स्थिति विनाशरत हा गयी थी। यद्यपि स्वस्थाना की विभक्ति और सम्पत्ति बहुत बड गयी थी, तथापि राज्य कोष खाली और जनता गरीब हाती जानी थी। व्यवसाय और व्यापार प्राय घसानुगत हाते थ। मजदूरा के मध का नेता या ठेकदार टर पर मजदूरा का भजता कि तु उनकी मजदूरी उहें अलहदा-अलहदा देना। इस विधान म बहु अच्छा लाभ भी उठाना और मजदूर उनकी मूटटी म रहने थ। क्लत मजदूरा की परिस्थिति कहा अच्छी न थी।

मिग स चीने का गाग अथवा रगीत गामान, कन्ई जीर पास्त्रि की चार्ने, मास मन् मिट्टी क बरता, कपडे, जन्, पत्थर या धानु की काा काज बाहर भजी जाती थी । उनक बन् इ बाहर न वही लन्धी तासा हाथो-नीन मगाड बरतन जीर गुलाग रगे* जात थ । कारीगरा म जा चमत्कार मिग बाग न शिगाया व्ह धाय* मगम में अगारह्ता सता तन नही शिगाई पडा ।

राज-परिवार क अत्यास बह प्नाधिकारी धर्माधिकारी और मफल ध्यापारी गुन सदा बभन का जीरा ध्यतीन बरत थ । उनर घर ध* और गुन्र हान थ जिारो चाभा बागा और तडागा म ओर भी बर जानी थी । मम्पन्न पुगाना का ध्यतगाय था मिपादीमिरी जीर राजमना । उगन अनिरिात उनरा ममय गर तथा हादी आशि प्नाआ क गिरार और माहरा स गतरजी ग क गान बनानर अनक प्रसार क गेल सलन में व्यतीत हाना था । मनागजन क मिना जा ममय बचना व्ह भाग विलाग में गच हाना था ।

साधारण जनता गरीब थी फिर भी हगत हुए समय काटती थी । शिल्पी मजान का उस गौर था । कारीगर जमीरा मशिग अथवा राजकुठ की सवा में रहन और मकदूरी पर काम बरते थ ।

बला कीगल

स्थापत्य मूर्ति तगण तथा चित्रकला म भिन्न की निजी विगपता थी । जायिक मम्पप्रता क कारण उसक लिए यह सम्भव हा सका कि वह अपने धार्मिक भावा तथा विश्वासा के अनुकूल पत्थर के विगाल देवालया समाधिया भवना एव स्मारको का बड पमाने पर निर्माण कराय । उसकी इमारता में विविध प्रकार के पतारा, स्तम्भा और घरना का प्रयोग मिलता है । विशाल स्तम्भा क अतिरिक्त उनके कमरे भू-मुलया जसे जान पडते ह । गोपुर और अनक सितून वाले बडे कमरे मिश्रिया की रचि का विशद प्रदशन करते ह । विशाल स्मारको जीर विजय स्तम्भा के निर्माण का शौक उनके लिए स्वाभाविक था । पिरामिड बनाना पहले ही बन् हा चुका था । उसके स्थान पर पहाडियो को कोल-कर समाधि-स्थान बनन लगे । विजय-स्तम्भा का निर्माण मा बडे पमाने पर हुआ । थाटमस प्रथम का विजय स्तम्भ ६४ फुट ऊँचा महारानी हतशेषसत का १२ फुट और थाटमस ततीय का १०५ फुट ऊँचा बना । उसका विचार १३७ फुट ऊँचा एक स्तम्भ बनवाने का था किन्तु सामग्री एकत्रित होने पर भी किसी कारण वह राक दिया गया । स्तम्भ के

व्यास का इसी से अनुमान किया जा सकता है कि एक की चाटी पर सौ मनुष्य खड़े हो सकते हैं। प्राचीन मिस्र में मिस्र की विद्या निर्माण-कला की समता करनेवाला बार्ड नहीं हुआ।

गिल्गामेश में भी मिस्र वाला ने अपने कौशल का अच्छा प्रदर्शन किया। सड़े अथवा नरम पत्थर, चाँदी-माने अथवा बौम पर व समान दक्षता के साथ अपनी कारीगरी लियान थे। प्रतिरूपा के बनाने में उन्हें अधिक सफलता प्राप्त हुई। उनमें प्रतिभा के व्यक्तित्व एवं तद्रूपता की प्रतिष्ठा पायी जाती है और विकास के लक्षण भी दिखाई देने हैं। अपनी कृतियाँ पर वे रंग चट्टान के शौकीन थे। उल्पीण मर्नि का रँगने रँगन मिस्र में चित्रकला का विकास हुआ। गायक शमी लिए उनके चित्रों में रसायनित का आवश्यकता से अधिक प्रभाव पड़ा। यह कहा जा सकता है कि चित्रकला यहाँ उभरकर अपना विकास कर सकी, जिससे उसमें प्रकाश और छाया के कलात्मक संयोजन तथा पृष्ठभूमि की आनुपातिक कल्पना का अच्छा चित्रण न हो पाया। कलाकारों का विधिवत् शिक्षा देने के लिए कला-मन्दिर स्थापित थे। किन्तु उनमें तत्कालीन रूढ़िवादी विचारों के अनुकूल ही शिक्षण होता था। कला केवल कला के लिए नहीं बरन् जीविका-उपाजन के लिए मिलायी जाती थी। उनका ध्येय केवल व्यावहारिक था। इसमें एक प्रकार का यह लक्ष्य था कि उनके चित्रों का क्षेत्र तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, व्यावसायिक अथवा दैनिक जीवन का प्रदर्शन कराना ही रहा। उनमें वहाँ के रहन-सहन आमाद प्रमाद, घरलू जीवन और काम-बाज का यथेष्ट ज्ञान सरलित हुआ। उनके चित्र सजीव गतिशील और भावपूर्ण हैं। चित्रों में कई रंगों से काम लिया जाता था। मिस्री चित्रों की समता करनेवाले चित्र चीन वाले भी सबका बर्षों के बाद तक न बना पाये। लखन-कला का भी वहाँ विकास हुआ। तीन प्रकार की शलियाँ, जैसे चित्र-सकेत साकेतिक भाव या कल्पना-सकेत, लेखन और स्वर-सकेत और उनके सम्मिश्रण का उपयोग किया गया। सम्भवतः मिस्रियों का जक्षरों का ज्ञान न था। पत्थरों घातवीय पत्रों के जलावा पेपरॉस के गदे से बने कागज पर अंकित उनके बहुत-से लेख प्राप्त हैं। उनसे यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि मिस्र के साहित्य में ऐतिहासिक कहानियाँ स्तुति गिष्ठाचार गतिरता, प्रेमगीत, भोज के गीत वीरगाथा कहलवत, युद्ध भविष्य-वचन चिकित्सा गणित, आय-व्यय का हिसाब जादि अनेक विषयों पर रचनाएँ होती थीं। मिस्र वालों का साहित्य और उनकी कला का उनके धार्मिक विचारों से घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है। उनके साहित्य के अध्ययन से

यह ज्ञात होना है कि उनमें आत्म विश्वास नैशमक्ति, उत्साह स्फूर्ति यथायथा एव नवीनता के गुण थे ।

मिस्रिया ने चिकित्सा शास्त्र में और भी उन्नति का । यद्यपि उनको शव की रक्षा करने के मसाले और क्रिया का ज्ञान था तथापि उनका शरीर रचना का ज्ञान परिमित था । उनमें अस्त्र चिकित्सा भी कुछ बढ़ रही थी । रोग का निदान और इलाज कुछ शास्त्रीय ढंग से व करने लग थे । उनकी सबसे मार्के की गवपणा यह थी कि शरीर के अवयवों का संचालन मस्तिष्क से ही होता है । वनस्पतियां मासा रक्त मद जादि से व औषध तयार करत थे ।

धर्म

मिस्र में सूर्य की पूजा पुरातन काल से विभिन्न नामा से प्रचलित थी । थेबीज म उसका एमान और हलियोपोलिस में रे कबूते थे । कालांतर म दोना नामा का मिलाकर एक सबप्रमुख सूर्य देवता एमान रे की कल्पना की गयी जो मिस्र राज्य के प्रसार के साथ उपयुक्त प्रतीत हुई । एमान रे की पूजा के लिए बड़े-बड़े देवालय स्थापित कर दिये गये । यह स्मरण रखना चाहिए कि उस समय तक प्रत्यक्ष सूर्य ही प्रमुख माना जाता था । किंतु एमान होतप ततीय के समय में एक नयी कल्पना का प्रादुर्भाव हुआ, जिसका अनुमान उपयुक्त नाम व सूर्य मिस्रिया के देवता समन गये आर एक नये विश्वापरि देवाग्निदेव आतान की परिकल्पना की गयी जो सबव्यापी हा गये । मिस्र देश के बाहर दूर-दूर तक साम्राज्य का विस्तार हा जान स उस प्रकार की कल्पना स्वाभाविक-सी प्रतीत होती है । आतान केवल मिस्रिया का हा नहा वरन सारे विश्व का देवता है । मूर्य विश्व उसी का प्रतीक मात्र है । अनमानत जातों की कल्पना एकेश्वरवाद पर जाग्रित थी । आतान व सामन अन्य देवता गौण प्रतीत होते लगे जिसका परिणाम यह हुआ कि आतान का छोटकर जय देव ताजा की अवहलना हाने लगी जिससे पुराने सम्प्रदाय के अनुयायियों को बड़ा क्षाम तथा असंतोष हुआ और आर्थिक एव सामाजिक हानि की जातका उनमें उत्तरात्तर बढने लगी । जय इखनातान ने नये जाग में जाकर साम्राज्य में कबल आतान की पूजा पर जार लिया और राष्ट्रीय देवता एमान रे की पूजा बंद करान की घटना की तब देश में त्रासित फल गयी । उमक निघन व वात एमी प्रतिक्रिया हुई जिसम पुराने विचारा की पुन प्रतिष्ठा बड़ी और साम्राज्य का आघात पहुँचा ।

मिस्र वाला ने जाचार और व्यवहार के सिद्धांता पर विरोध रूप से घ्या

दिया। उम विषय पर उनके उल्लिखित नियम चीन के लिखित नियमों से भी पुराने हैं। सत्य, याय, औदाय एवं सदाचार का वही सम्मान था। उन लोगों की प्रवृत्ति व्यावहारिक ज्ञान की ओर थी इसलिए आध्यात्मिक विषयों का चिन्तन वहाँ कम दिखाई पड़ता है। फिर भी अमरत्व में उनका विश्वास था। इखनातोन ने तो तत्कालीन धार्मिक रूढ़ियों से हटकर विश्वव्युत्पत्ति, मानवजगत् की एकता और एनेस्वरवाद का ही प्रचार किया। उस क्षेत्र में तो वह सबसे प्रथम और प्रमुख कहा जाता है। देवालया की सम्पत्ति और समृद्धि में अपूर्व वृद्धि हुई। प्रजा का पाचवाँ भाग उनकी सेवा में किसी न किसी प्रकार लगा हुआ था और उपजाऊ भूमि का एक तिहाई भाग भी मंदिरों का अपण था।

असीरिया

असीरिया का इतिहास पढ़ने के पूर्व यदि तत्कालीन एशिया माइनर की राजनीतिक परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त कर लिया जाय तो उसके समझन में सुविधा होगी। फारस की राजी से दजला फरात के दाआब के ऊपर की ओर बढ़ने पर पहले सुमेरिया के प्राचीन राज्य के बसावशेष मिलेंगे। उसके आगे बेबीलोनिया का राज्य और उसके भी ऊपर दजला नदी के दोना जार असीरिया का पवतीय राज्य था। असीरिया के उत्तर में जारमीनिया उत्तर-पश्चिम में फरात के दाहिने तट पर मिट्टनी और बाय तट पर हिट्टी के राज्य थे। हिट्टिया के राज्य के दक्षिण पश्चिम भाग में भूमध्यसागर के तट पर फिलिस्तीन और फोनीशिया के राज्य थे। जमीरिया के दक्षिण-पूर्व में एलाम और पूर्व में कस्ती तथा मीडिया के राज्य थे। फरात के पश्चिम में अरब का रगिस्तान है।

पश्चिमी एशिया में सबसे पहले सुमेरिया का राज्य बना जिसका पतन तीन महत्त्वपूर्ण वर्षों में हुआ। उसके उपरान्त बेबीलोनिया का पूर्व साम्राज्य बना जो १७८६ ईसा पूर्व के लगभग विनष्ट हो गया। इसके अनन्तर असीरिया के साम्राज्य का अन्त हुआ। यह वह जमाना था जब मिश्र के मध्यवर्ती राज्य को हिकसोस लोग ने नष्ट कर वहाँ अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। उनका निकालकर मिश्र के अठारहवें राजवंश ने साम्राज्य-युग का आरम्भ किया।

नील नदी के प्रदेश से मिश्र का साम्राज्य बढ़ा और दजला नदी की तलहटी में जमीरिया का साम्राज्य। इन दोनों साम्राज्यों के बीच में अनेक राज्यों के आ जाने से उनका सघन अर्थिक भयंकर रूप धारण न कर सका और वे दोनों अपने

अपने ढग से चलते रहे, किन्तु मध्यवर्ती राज्या की परिस्थिति जवाहनीय और चिन्ता-जनक थी। इन छोटे राज्या ने भी ससार के कमलेत्र में कुछ अभिनय किया यद्यपि साम्राज्य की शक्ति के सामने व अधिक फूल फूट न सके।

जसोरिया राज्य का आरम्भ दजला नदी की तलहटी के चार नगरा—अशुर अरबेल, कलख और निन्वेह से हुआ। अशुर देव के नाम से पहले अशुर नगर का और बाद को राज्य का नामकरण हुआ। अशुर नगर में ३७०० वर्ष ई० पू० की कुछ ऐसी अवशिष्ट वस्तुएँ मिली हैं जिनसे वहाँ मध्य एशिया के लोगो के बसने का अनुमान किया गया है। किन्तु जिन लोगो का जमीरियन कहा गया है वे ममटिक कावेशियन तथा जय जातिया के सम्मिश्रण से बने थे। चूँकि असीरिया की भौगोलिक स्थिति ऐसी थी जिसमें नसर्गिक रक्षा के साधन नगण्य थे अतएव सीमान्त प्रदेशों के निवासी उस पर बहुधा आक्रमण करते रहते थे। १४५० से १४०० ई० पू० तक असीरिया पर मिट्टनी का आधिपत्य रहा किन्तु अपनी दुर्गमनीयता से व स्वतंत्र हो गये। आक्रमणकारियों से रक्षा करने के लिए असीरियनो को मरपुर और निरतर परिश्रम करना, सनक और उद्यत दण्ड रहना आवश्यक था। इसके परिणाम यह हुआ कि वे बड़े युद्ध-कुशल, साहसी, पराक्रमी तथा निष्ठुर ही नहीं बरन क्रूर भी हो गये।

वारहवीं शती ई० पू० तक बेबीलोनिया और मिश्र के साम्राज्य क्षीण हो गये थे। उनसे जय राज्या को सहायता मिलने की कोइ आशा न रही। उस परिस्थिति में लाम उठाकर टिगलाथ पिगीजर प्रथम (१११५ से ११०२ ई० पू० तक) नाम के एक यादवा ने अप्प पराक्रम से बेबीलोन आरमीनिया तथा हिट्टी के लामो का परास्त करके मिश्र तक अपना आतंक फैला दिया। किन्तु बेबीलोन वाला ने उसमें ऐसा बल्ला चुकाया कि पराभव की लज्जा से वह मर गया। इसके पश्चात् दो मास तक असीरिया क्षीण और शून्य का रक्षण रहा।

असीरिया की विजय और जन्मस्थान का आरम्भ जागुर नजिरपाल द्वितीय (८८४-८५९ ई० पू०) के राजत्वकाल से हुआ। पश्चिम की ओर विजय करता हुई उनकी सेना मध्यमागर के पूर्वी तट तक पहुँच गयी। अपनी विजय-यात्रा का सजीव वर्णन उमने सप्त पत्थर की गिलाआ पर खुदवा दिया है। उनसे पत्थर से पता चलता है कि उनकी नीति अपने विराधियों का अकथनीय नित्यना जोर पगुता के साथ मार-काटकर उनमें भय तथा आतंक जमा देने की थी। रक्त बहान जग मग करने तथा अनेक यातनाओं के साथ उनका वध करन से उनका मनोरजन होता

था। यह उसका व्यक्तिगत दाप न था। निदयना असीरिया वाला व स्वभाव मे ही थी। फिर भी जाशुर नजिरपाल ने कुछ निर्माण-कार्य भी किया। उसने शासन विधान का मगदित किया। कहा-कनी असीरिया वाला की नयी बस्तिया बसायी जिमसे ब विजित प्रजा का दमन करत रहे। कन्व म उमन नहर खदवायी जिसक तट पर अच्छे-अच्छे पडा की कतार और बाग लगवाये। वहा एक पशुशाला की स्थापना की, जिममें जल-थल के जानवरा का लाकर रगा, मुडर निशाल राजमवन का वह भी एक जग था।

जाशुर नजिरपाल के पुत्र गालमनेमर द्वितीय ने भी अपो पिता का अनुमरण कर अपनी विजया का वक्तान्त पत्थरा पर खुदवाया। उसकी प्रगति उसके उत्तराधिकारी राजवुमार के विद्रोह व कारण रक गयी। साम्राज्य का पतन रकने मे उसकी पुनबधू सम्मरमत ने विशेष पराक्रम लिखाया किन्तु चहा द्वारा प्रमारित प्लेग का रोकना उसकी शक्ति के बाहर था। साम्राज्य का दगा अव्यवस्थित हो गयी।

सकटापत्र साम्राज्य की रक्षा करने म टिगलथ पिलीजर ततीय (७६५-७२७ ई० पू०) न अच्छी योग्यता का प्रदर्शन किया। बेबीलॉन, दमिस्क, जराइठ, जूटा फिलिस्तीन और गाजा तक उसने अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिया। उसकी नीति राज्या को जीतकर स्वयं अपने नियुक्त राजसेवका द्वारा शासन करवाने की थी किन्तु वह उसका पूरा न कर सका।

जब शरकिन (सारगन) त्तीय (७२२-७०५ ई० पू०) असीरिया के मित्रासन पर जालूड हुआ तब उपपक्त नीति का पुन आरम्भ हुआ। इजराइल की विजय हाने से मिस्र वाला का उमस युद्ध छिडा जिमम उसी की जीत हुई। एलाम बबीलोन तथा सीरिया के विद्रोहिया का दमन कर तथा मिस्र की सेना का परास्त करके सारिया में ६६००० असारिया वाला का बसा दिया गया।

पुरानी राजधानी छाकर दर शरकिन (खुरमावाद) मे उमन नयी राजधानी स्थापित की। उस समय कमेरियन जाति के बबीलॉन ने एनाटालिया म घुमकर भयकर मार काट शुरू कर दी। सम्भव था कि उसे जानकर वे वहा जम जात। किन्तु सारगन ने उनका ऐमा पराजित किया और उनके आने के मार्गा का ऐमा समन्वित किया कि उनका प्रवाह दूमरी ओर चला गया। उत्तरी प्रान्त की रक्षा म ही वह वीरगति का प्राप्त हुआ (७०५ ई० पू०)।

सारगन का पुत्र सेनकेरिब (७०५-६८१ ई० पू०) याग्य सनापति और

गासक था। उमन निरग्रह राजधाना का निर्माण कराया, जिगम सम्राट्य म उमक समय का गचा बना अस्तित्व है। उमग पात रगता कि बजागी व माय अला व्यवहार करा पर भा यही याग न उगव्य जारी रगा। तत्र उमने यही व निवासिया का बहिष्कृत कर दिया और गगर का नष्ट भ्रष्ट कर गला। तन्मन्त्र मिय व पडय व ग जग जीव पासागियना व उपद्रवा का गान कर मिय व उगर आक्रमण करने की धमकी दी। गम्भय कि उमन हमरा भी वर दिया हाता विन्नु रग ग उमकी सना गष्ट भ्रष्ट हा गयी। हागा म य विनाग य पचा कि जेगमम व विनाग करे की घटना व कारण ररन उमकी मना नष्ट कर दी। फिर भा टायर मिडान आदि नगरा का ग्टन म उमका अपार मगति मिली। उमका वह उपभाग न कर सका क्याकि पूजा करने समय उगा व गर पुत्र ने उमन। हत्या कर दी जिगम गह-यद्ध जाग हुआ। गिनधानी पुग म उमक भाई न राय छोन लिया।

एम्मुर्हदा (६८१—६६० ई० पू०) जमा पराक्रमी वमा ही नीनिगुल भी था। बबीगन व ध्वस्त नगर का पुननिर्माण करान एव उमक दवाग्या में मम्मान पूषक रचनाभा का प्रतिष्ठित करा दन व कारण वहाँ के निवासी उसकी वृत्तगता व पाग में बंध गये। तुमिन न पाठित प्रजा का उद्गाति वितरण करके उमन प्रमन्न किया। वह बल का उत्तना ही प्रयाग करता था जितना कि अत्यन्त आवक और अनिवाय हाता। उमकी नीति का ध्यय प्रजा वासन्तुष्ट करव राजमवन बनाना था। पूव में मीडा तथा उत्तर म बेमेरियना व उपद्रवा म रगा करने व मिवा उमने मिय गज्य पर बडे टाठ स चलाई की और नीन व डरटा पर आधिपत्य स्थापित कर दिया (६७१ ई० पू०)। वहाँ उमने असीरियन गासक नियुक्त कर दिया। उसक म्मन के लिए वह फिर लौटा किन्तु भाग में ही उमकी मत्य हा गयी। एम्मुर्हदा जमीरिया का मवम चनुर और प्रजावत्सल सम्राट माना जाता है। उसका साम्राज्य पश्चिमी एशिया म अपने स पहे के समा प्राचीन राज्या से बडा चला था।

जागरु बानीपाल (६६९—६२६ ई० पू०) असीरिया का अन्तिम प्रभावगाली तथा सुविख्यात सम्राट हुआ। मीडिया वाला तथा बेमेरियना से यद्ध में ध्वस्त रहन की सम्भावना साचकर उसने अपने एक भाइ को बेबीलान ने राजमिहासन पर बठा दिया। उस यह आगा थी कि उसके प्रयत्न स बेबीलान म गति एव स नय रङगा और अमीरिया का बल एव सगउन अधिक दृढ हा जायगा। किन्तु बसा न हुआ। उसके भाई ने बेबीलान का नेतत्व ग्रहण कर तथा गलाम का सहयाग

प्राप्त कर विद्रोह कर दिया। दाना भाइया का भयकर मुद्द बहुत काल तक चन्ता रहा। अन्ततागत्वा आशुर बानीपाल ने बेबालान का फिर जीत लिया और छगम की राजधानी मूस को विनष्ट कर लिया (६३९ ई० पू०)। हमी प्रकार रायर नगर के विद्रोहियों का भी उमन अच्छा दण्ट लिया।

आशुर बानीपाल ने मिस्र की समस्या पर विचार कर यह परिणाम निकाला कि असीरिया के उत्तर-पूरव की ओर से भयकर शत्रुता के कारण उसका शासन ब्रिताने सनिक बल से तो सकता है उतना सग्रह कर सकना असीरियनो की जनसंख्या का शक्ति के बाहर है। मिस्र के साथ लीडिया राज्य की भी सहानुभूति थी और गुप्त रूप से वह उमकी महायत्ना भी करता था। इसलिए उसने मिस्र का स्वतंत्र करके उसके साथ मित्रता का व्यवहार करना ही श्रेयस्कर समझा।

आशुर बानीपाल केवल विजेता ही न था वह साहित्य तथा कला का भी पोषक था। सारे साम्राज्य के कारीगरों को एकत्रित कर उसने तिनेवह में बड़े मुन्दर दवालाया एवं प्रामादो का निर्माण कराया। बहुत से लेखकों को नियुक्त करके सुमरिया तथा बेबीलोनिया के प्राचीन साहित्य की प्रतिरूपिया कराकर उसने अपने सग्रहालय में संग्रहित कर दी जो अद्यावधि विद्यमान हैं।

आशुर बानीपाल के अन्तिम वर्ष बड़े चिन्ताजनक एवं दुःखमय रहे। इधर उसका स्वास्थ्य खराब हो गया और उधर उत्तर की ओर सयायावर तथा युद्धशील स्काइथियन का आक्रमण का प्रकोप बढ़ गया। उमी परिस्थिति में उमकी मृत्यु हो गयी। सम्भव है कि उसके अन्तिम दिनों में अथवा उसकी मृत्यु के बाद ही बेबीलोन के गाल्दिया वगैरे राजा, लीडिया स्काइथियन तथा फारिसी ने मिलकर तिनेवह पर विजयकारी आक्रमण किये और उसे लूट-पाटकर नेमनानाजूद कर दिया (६१२ ई० पू०)। असीरियन लोगो का नाम निगान मिट-सा गया।

असीरिया के पतन का कारण

असीरिया का प्रकृति ने रक्षा के कोई विशेष माधन नहीं किये थे। राज्य चारा ओर से खुला था। इस पर भी बहा के शासकों ने इतने बड़े साम्राज्य का निर्माण करना चाहा जिसका प्रबन्ध बबल दमन द्वारा करना दुःसाध्य था। असीरिया के चारा ओर प्रबल शत्रु थे जा उसकी शीवद्धि देखकर लञ्चन रहत थे उदाहरण के लिए सीथियन भीड मिली आदि। निरन्तर यद्धों से उनसे सनिकों का अधिक संख्या में इधर-उधर भेजा जाना और मारा जाना उनकी शक्ति का क्षीण करता रहा।

उत्तरी सन्तान भी कम उपलब्ध होती थी जिगम उम कमी की पूर्ति न जान पाना था । गुलामा तथा विभ्रानिया म मनुष्य ता मिल गय किन्तु उामें बीरता और राजभक्ति न पूरी जा गयी । मानव क प्रति उत्तरी निष्पत्ता स्त्रिया क प्रति उत्तरी सम्मान का अभाव तथा पुग्पा भी श्रमता और दुराचार भी उनन सामाजिक तथा मानसिक ह्रास क कारण थ ।

सामाजिक सम्भ्यता

अमीरिया का प्रजा मिश्रित थी । समाज म दो श्रेणा क लाग थ एग स्वतन्त्र और दूसर गुलाम । गुलामा क बार्ड कानूना अधिार न थ यद्यपि उनन माय का व्यवहार न किया जाता था । स्वतन्त्र गणा की तीन श्रेणियाँ था । बड़े लागा में धर्माधिराग उच्च सारकमचारी जाति थ । मध्यम श्रेणी म उद्भाग घघा जीव-यापार करनवाल थे । तीसरा में गिपाही विगान और मजदूरा कर्मचाल थ । गुलामा म बगार तथा तुच्छ काम लिये जान थ । पहचान क लिए उनन मिर क-आर बान छिन्न रंग जान थ ।

अमीरिया का पारिवारिक संगठन पतृ-विधान पर अवलम्बित था । पिता ही सर्वोत्तम माना जाता था । स्त्रिया की स्थिति वहाँ कमा अच्छी न था जती कि देवांगानिया म । क परदे में रखी जानी था । यदि बाहर जाती ता चहरा ढँकना पडता था । पानिजन का रक्षा क लिए कठ नियम बना लिये गय किन्तु पलीप्त उतना आवश्यक न माना जाता था । नाच-गाना मोना पिगना और बकशक करना स्त्रिया क लिए काफी समझा जाता था । विवाहिता स्त्री चाह पति क साथ जयवा अपा माता पिता क साथ रह सकती थी । बिना पति की जाना के वह बार्ड व्यापार आदि न कर सकती थी । व्यभिचारिणा क लिए प्राणदण्ड तक का विधान था । शतनी कर्जाकार्याँ हान पर भी उच्च घराना की स्त्रियाँ कमी-कमी प्राप्ता की गवनर बना ली जानी था । बहा एक-का रानिया ने राय भा किया था । यद्यपि जनमख्या बढ़ाने क लिए वे बड़े उत्सुक थे तथापि वहाँ के लोग का सन्तान-वृद्धि में सफलता नहा मिली ।

आर्थिक स्थिति

अमीरिया का आर्थिक जीवन कृषिमलक था । सनिक वृत्ति के बाद कृषि-काय का ही के सर्वोत्तम काय मानते थ । व्यापार का क अच्छा न सम्भव थे ।

व्यापार में प्रायः विदेशी या अय जाति के लोग थे। वज्रनाजा और कपास की खेती या मवाद्या, फले, विशेष कर खजर और तरकारिया की बागवानी करते थे। इनके मिठा बहा साना, चाँगी ताँवा, कामा और लोहे तथा मिट्टी की चीजें भी बनायी जाती थी। ढलाई, रँगई और गीशे का अच्छा काम होता था। माने चादी, ताँबे और काम के मिक्का का बहा प्रचलन था। फौजी मडका के बनाने से व्यापार का मां लाम हुआ और शान्ति रक्षा में सुविधा हां गयी।

धार्मिक विचार

असीरिया के धार्मिक विचारों पर सुमेरिया और बिलोनिया का बड़ा प्रभाव था। वहाँ के लोग मिश्र वाला की तरह सूर्य की उपासना करते थे। उनको वे 'अशुर' कहते थे। उनकी कल्पना के अनुसार परलोक हुए सूर्य के विम्ब में तरकम बाधे और घनुष खींचे हुए मूर्त्येव ही पूजनाय थे। वहाँ का राजा अपने का सूर्यवशी कहता था। उसके सिवा उनकी अधिष्ठात्री देवी निना प्रेम की प्रतीक समझी जाती थी। मूता प्रेता पर उनका विश्वास था। उनमें अपनी रक्षा के लिए वे मन्त्र और तन्त्र का प्रयोग करते थे। उनको गजुन जयवा अपनाबुन का बड़ा ध्यान रहता था। उनमें धार्मिक सकीणता और असहिष्णुता विशेष माना जाता था। इसका कारण सम्भवतः उनमें दार्शनिक विचारों का जन्म था। फिर भी उनमें एक देव की जनय मक्ति का भाव ने ही यह प्रेरणा उत्पन्न की जिसके लिए आगे चलकर हिन्दू जाति विशेषतया विख्यात हुई।

शिक्षा, साहित्य

असीरिया वाला ने जक्षग का सरल तथा सुन्दर रूप देने की चेष्टा की। बपुनका का महत्त्व समझते थे अतएव जागुर बानीपाल ने अपने युग के अद्वितीय पुस्तकालय में प्रसिद्ध प्राचीन ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ एकत्रित करवायीं। उनका प्रगल्भिया ने तत्कालीन इतिहास की रचना में बड़ी सहायता दी है। उन्होंने बन्सपति शास्त्र तथा पदाथ विज्ञान में कुछ उन्नति की थी तथा फलित ज्योतिष (सूर्य और चन्द्र ग्रहण) की गति विधि की ओर उनका अधिक ध्यान था। इसके सिवा उन्होंने कई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया।

कला-कौशल

दूसरा की सम्पत्ति लूट-खसाट कर उन लोगों ने अपनी राजधानी तथा नगरों

ती चांगी और गांगी बनायी । मग प्रयत्न म गह निर्माण-कर्म ने वहाँ अच्छा उन्नति की जिम्मा प्रमाण बना ती आगीगान महाराजपर मारल = । सिद्धान्त का मत है कि उनकी गूढ निर्माण-कर्म ने उन्नति का नया माग लियाया जिस पर चलकर राग था । उ बना स्थिति प्राप्त है । मन्त्रालय तथा गिन्यवग म भा वहाँ अच्छी उपति है । व मोक्ष क इतने प्रदी न थ जितने कि विगाग्ना क । ईग क गिवा पर्यग तथा मगमरमर का भी व प्रयाग म लाते थ । उन पर नकशाग आर लगण ता व अच्छा काम बान थ । जानपरा के गिल्पित विश्व बनाने म व सिद्धहस्त थे । शारा की सनह का चिकनी कर ग्मीन एतिहासिक विद्या तथा उत्काण या सादी मनिया क बनान का उर्ह शीर था । लवणी पर हाथा-जान और ताग की जाई का भी व अग्रा काम करत थ ।

शासन

अशोरिया एक प्रकार का सैनिक राज्य था जिसकी सत्ता उसकी सैनिक शक्ति पर थी । अनाथ राजा क अधिवार निमीम थ । फिर भी सम्राट भविष्य यन्नाआ और उनक सारथक पुराहिता क बचन पर काफी ध्यान देता था । वह मगुर (मय) का पुत्र और दक्षता-तुल्य ममता जाता था । उसकी आना का पालन प्राता का राष्ट्रीय ही रही वरन् धार्मिक कतव्य भी था । सम्राट के मुख्य पदाधि कारिया म प्रधान मन्त्रा मुख्य सेनाध्यक्ष नगराधिपति तथा प्रान्ता क गवर्नर थे । उनक गिवा गिष्टाचाराध्यक्ष भाण्डागाराध्यक्ष राजभवनाध्यक्ष जाति जनक पदाधिकारी रहते थे । साम्राज्य कई प्राता म विभक्त था । बडे प्राता में सम्राट प्रधान गामर नियुक्त करता था । प्रान्त के महत्त्व क अनुसार गवर्नर का दजा माना जाता था । उसका उत्तरदायित्व सीधे सम्राट क प्रति था । प्रात का सेनापति प्रात का मरम बटा शासक अथवा अध्यक्ष (गकनू उरसू बन्पलना) कहलाता था । उस पद पर या ता कोई राजवग का या सम्राट के वग का अथवा कोई प्रभाव गानी व्यक्ति नियुक्त किया जाता था । अपन प्रान्त में वह स्वयं सक्तिगाली पदा धिकारी था । तत्कालीन समस्याओं के कारण उसका सिपाही नियुक्त करन प्रान्त की आय बनाने याय करन दण्ड देने का अधिकार दना आवश्यक-ता था । उसका दरवार भी सम्राट के दरवार के समान किन्तु छोट पभाी पर संगठित हाता था । अपने क्षेत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ता वह माघन एकत्रित करता ही था, उसी के साथ साम्राज्य के लिए धन धाय एकत्रित करके सम्राट के पास

भेजता था। प्रत्येक प्रान्त को सम्राट के लिए क्या देना चाहिए यह केन्द्रीय शासन प्रांत की क्षमता के अनुसार निर्धारित करता था। इसके सिवा उमको प्रान्त की गति विधि तथा महत्त्वपूर्ण घटनाओं की रिपोर्ट भेजनी पड़ती थी। प्रत्येक प्रान्त में सम्राट की सेनाएँ भी रखी जाती थी, जिनका निरीक्षण सम्राट ने नियुक्त किये हुए निरीक्षक करते थे। प्राचाध्यक्ष का उस सेना पर विशेष अधिकार न था, क्योंकि उमका उत्तरदायित्व सीधे सम्राट के प्रति होता था।

किमी घम विनाश रीति रिवाज, भापा जादि का किमी प्रांत या समुदाय पर आरापित करने की चेष्टा नहीं की जाती थी, ताकि लोग के साधारण जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप का भावना उत्पन्न न हो। यदि कहीं निरन्तर उपद्रव अथवा विद्रोह होना तो वहाँ की उपद्रवी प्रजा को अथवा भेजकर दूसरे लोग का बसा दिया जाता था।

प्रांत में कई पत्थरी (जिल) हात थे जिनके शासक गनु या 'अमल' कह जाते थे। उनकी महायता के लिए कई छोटे-बड़े अधिकारी रखे जाते थे। शासना के कर्तव्य कर वसूल करना शांति रखना, इमारतों के लिए मजदूर और सेना के लिए सिपाही एकत्रित करना था। राज्य का प्रबंध मुमगटिन और व्यवस्थित था। कहा जाता है कि राजधानी से दूर स्थित प्रान्तों का शासन भी उतना ही अच्छा था जितना कि राजदौक के प्रांतों का। एमी व्यवस्था सम्भवतः किमी साम्राज्य में उम समय तक न हो सकी थी। राजद्रोह का दमन बड़ी निर्यता में किया जाता था। वहाँ का दण्ड विधान भी बड़ा था। अग बिच्छेले और दश निर्वाचन एवं प्राणदण्ड केना साधारण बात थी।

अमीरिया में सनिका का प्राबल्य होने के कारण वहाँ सिपाहियों के नागैरिक बल तथा उनकी सनिक दीक्षा का उचित प्रबन्ध रहता था। रथा और घोषा का प्रयोग होता था और उनके अस्त्र गन्ना लोहे के थे। ७०० ई० पू० वहाँ लोह के शस्त्र प्रयुक्त होने लगे थे। कहा जाता है कि उन्होंने किलों को तोड़ने के अस्त्रों का भी आविष्कार कर लिया था। सना दस-दस और पचास-पचास के जत्था में श्रेणीबद्ध थे। अनमान किया जाता है कि वहाँ प्रत्येक व्यक्ति का अनिवाय सनिक शिक्षा दी जाती थी। सम्भवतः उमका कारण यह था कि सनिक शक्ति ही साम्राज्य का मुल्याधार था। निरन्तर युद्धों के कारण सनिका का अधिक महत्त्व में निघन होता था जिसकी पूर्ति, वहाँ के लोगों में कम पढ़ाई होने के कारण कठिनाई से हा पाती थी।

सभ्यता को देन

असीरिया वाला ने विद्या और विज्ञान में कोई विगम उन्नति नहीं दिखायी, किन्तु वह साम्राज्य की रचना और उसके शासन का माग उठा। जबस्य सिंघाने का प्रयत्न किया। उनकी राजनीतिक कल्पना अनेक सीमाओं का उत्खनन कर उत्तरोत्तर व्यापक शान्ति की चेष्टा करती रही। इसके साथ ही उनकी दक्षताओं की कल्पना भी विस्तृत होती गयी जिसका पूरा विकास हिन्दू लोगों के अखण्ड एकेचरवात्त में हुआ। किन्तु सैनिक आदेश के कारण उनमें धार्मिक असहिष्णता और सकीणता का अधिक मिश्रण हुआ गया जो चिन्त्य था। कलाओं में नगर और गृह निर्माण कला का असीरिया में अच्छा विकास माना जाता है। दीवार पर चिकनी सतह बनाकर रंगान चित्र चित्रित करने की कला में भी उठाने अच्छी उन्नति की थी।

सीरिया—पेलेस्टाइन

भूमध्यसागर के पूर्वी तट पर टारस की पर्वतमाला से नील नदी के दहान तक चार सौ मील लम्बा और सौ मील चौड़ा जो भू भाग है वह सीरिया-पेलेस्टाइन कहलाता है। पेलेस्टाइन (फिलिस्तीन) का हिस्सा सीरिया (शाम) से अधिक चौड़ा है परन्तु सीरिया उससे क्षत्रफल में बड़ा है। सीरिया और पेलेस्टाइन का धरातल पहाड़ी तथा ऊबड़-खाबड़ है। पहाड़ियाँ में ऊपर उधर घाटियाँ हैं। उनमें उत्तर पूर्व में फरान नदी पूर्व में जर्ब का रेगिस्तान पश्चिम में भूमध्यसागर नाल नदी का दहाना तथा एक अग रेगिस्तान का है जो उसका मिश्रण जल्य करता है। इस प्रदेश में केवल छोटी छोटी रियासतों के ही बनने का सम्भावना ही मवती है बड़े राज्य की नहीं। कुछ भाग जो समुद्र के तट पर समाप्त हो बहुत उपजाऊ है परन्तु प्रदेश का अधिक भाग बहुत कम उपजाऊ है। पर्वत वहाँ बहुत बड़ा जनसंख्या का हाना सम्भव न था। छाती टाटी रियासतों में आपसी स्पर्धा और अनमन्य रहना था और वे एक दूसरे का हान लेने का सपना उद्यत रहता था जिसका दुष्परिणाम यह हुआ कि वे आपस में कभी अच्छी तरह सगाईत न हो सके। क्योंकि प्रबल साम्राज्यों को उन पर आक्रमण करने में अधिक कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता था। वेदीयान, मिट्टनी मिश्र असीरिया और कर्त्तिया उन पर आक्रमण करने लगे। उन परिस्थिति का उनकी सभ्यता तथा विज्ञान पर बहुत प्रभाव पड़ा। समुद्र के तट पर बस हुए नगरों के लिए यह आवश्यक हो गया कि वे समुद्र मार्ग से आग

द्वार अपनी वस्तिया या उरनिवेग अयन स्थापित कर और व्यापार म जीविका बलाय ।

व्मा स पूव को पचम सहस्राब्दि में उम भ माग पर किमाना के छाटे ङाटे गाव म थ । चतुर्थ सहस्राब्दि मे मसापटमिया का उन पर प्रभाव पडा । ततीय सहस्राब्दि म व समुद्र माग स पश्चिम की आर बढने और व्यापार करने लगे । वहाँ की जनता रक्षि मिश्रिन थी तथापि उसमें सबसे बडा जग अरब की सेमेटिक जानिया का था । उन्ही लागा के एक बडे दल ने वेवीलानिया साम्राज्य की स्थापना की थी । द्वितीय सहस्राब्दि में अरब के कनजानी भाषा भाषी सेमेटिक बहून बडी मग्या म आन रहे । उनके बाद ही जारमाणन जादि कबीला के सेमेटिक कबीले आजाकर वम गय । उनका परिणाम यह हुआ कि वन्ती में जाक बडे-बडे नगरा, बंदरगाहा, किला आदि की स्थापना हा गयी । व्यापार तथा पारस्परिक सम्मिलन से उनक सांस्कृतिक विकास की गति बढती गयी । पलेस्टाइन पर मिन्न, तथा सारिया पर मसापटमिया का अधिक प्रभाव पडा जिमसे उत्तरी कनजानी समाज ने अपनी महत्वपूर्ण सभृति का निमाण किया । समुद्र-तट के सेमेटिक निवासिया का गीम व लाग पानीगियन कहते थे ।

मीरिया और पलेस्टाइन म सेमेटिक प्रजाति के कनजानी भाषा बालन वाले तथा हिब्रू लाग बसत थे । सोलिए वह प्रदंग कनजान के नाम स प्रसिद्ध था । तरस्वा गती (ई० पू०) में अरब स हिब्रू भाषा भाषी यहा जाकर बसन लगे । बार्हवी गती म पलेसेत (फिलिस्तानी) लाग जिनका मिन्न क फरो रामेसस नतीय ने मिन्न से खदेड भगाया थ आ वसे । यह निश्चित रूप मे जान नही कि फिलिस्तीनी कान थे और कहा स आये । पहल यह धारणा प्रचलित थी कि वे गग भी सेमेटिक प्रजाति के हूगे किन्तु अनुसंधान म यह पता चग कि वे सेमेटिक न थ । वरन वे एनाटालिया (टर्की) क निगामी थे जिनपर माइसीन की सभ्यता का काफी अमर पड चुका था । उनके पान लोह के जस्तन थे और उनका मनिक सगठन भी अच्छा था । वसत्रिए उनका कनाजानिया और हिब्रूला पर विजय प्राप्त हु । उन्हा क नाम पर फिलिस्तान या पलेस्टाइन का नामकरण हुआ । उसक पाच प्रमुन ननाआ ने जगदाण गाजा गाय अम्कलान और एकरान पर अपना प्रमुव जमा लिया । उनमें गाजा नगर का विशिष्ट स्थान था ।

फिलिस्तीनी लाग हिब्रू तथा कनजानिया को नीची नृष्टि से देखने थे । अत उनमें बमनस्य बढकर विद्रोह हा गया । विजित कबीला ने धीरे धीरे अपना सगठन

उद्युक्त मजबूत बनाकर साल के नेतृत्व में विजेतावा मे वरावरा का लाहा लिया (१०२० ई० पू०)। जब डविड विद्रोहिया का प्रमुख नेता हुआ तो उनको अच्छा मफलता प्राप्त हुई। धीरे और साहसी होने के साथ ही वेविट (नाऊद) उत्तरवेता पमत्रवदन और संगीत कला का प्रेमी भी था। इजराइल और जूदा पर अपना अधिकार स्थापित कर उसने अपनी राजधानी जेरुसलम में बनाया और वहा के किले का और भी सुन्दर कर दिया।

दाऊद का पुत्र सुलेमान (सात्तमन ७९०—९३७ ई० पू०) भी अपने पिता के समान योग्य नीतिन और चतुर था। व्यापारी बडे को बढ़ाकर उसने ममुद्री माग स भी बसा ही सफल व्यापार किया जसा कि स्थल माग से। साने तथा जवाहरात की गाने भी उसने खदवायी। तावा वहा अच्छा बनता था जिमके वल्ले उस सोना मिलता था। घाटा का व्यापार उसन बडे पमान पर किया। व्यापार से उसे अपार धन प्राप्त हुआ। अपना सामाजिक तथा राजनीतिक महत्त्व प्राने के लिए उसन सैकडा शान्तिया की। कहा जाता है कि उसकी सान सौ याग रानिया था और तीन सौ जनढा म्त्रिया थी। उसका समकालीन टायर नगर का राजा हिराम था जिससे उसकी मित्रता थी। उसके सहयाग में उसने जेरुसलम के यहवह के विद्यालय का निर्माण कराया। उसके निमाण करान के लिए उसने प्रजा पर कष्टप्रद कर लगाये और बेगार करवायी जिससे प्रजा में असताप बना। परिणाम यह हुआ कि सुलेमान के पुत्र के समय में विद्रोह हुआ और पेटेस्टान दो भागों में विभक्त हो गया। उत्तरी भाग में दृजराइल का आधिपत्य रहा और दक्षिणी भाग जूदा कहलाया। इजराइल की मुमरिया और जूदा या जडिया की जम्मन्म राजधाना रहे। जेरुसलम में सुलेमानका पुत्र और मुमरिया में विद्रोहिया का नया जगदाश्रम राज्य करता था। दोनों राज्या में यहवह की पूजा हाता थी। इजराइल की आर्थिक स्थिति अच्छी थी वहा व्यापारी और धनी लोग भी थे किन्तु जून्धिया की प्रजा गरीब थी।

फिलीनिया का विरोधात्मक आर्थिक परिस्थिति हान के कारण उनमें धार मधय का हास स्वाभाविक था। उस युग में पश्चिमी एशिया में अपने-अपने जन-यायिया का पत्र लेकर खदना भी खदन थ और उनमें जय-पराक्रम में सुन्दर-रूप भोगत थे। पन्त इजराइल का मुख्य खदना बार्थ था। और जन्धिया बार्थ का यदु प्रिय खदना यहवह था जो ठ गता के बार्थ जिहावा नाम में प्रसिद्ध हुआ। बमनम्य बनता गया। यहा तक कि इजराइल के राजा जह्म के समय में उसके नाम और

यह वह युद्ध का अथवा किसी मनुष्य या जाति का दरता नहीं बल्कि माण्य मात्र का इश्वर है निम्न पिता व पुत्र तथा माया एवं कृपा व गण है। उम रक्तपात और हरयाकाण्ड अप्रिय है। मनुष्य जीवन और सामारिक सम्पत्ति विहीन मनुष्य का प्रति उमकी विनाश कृपा रानी है। उन धर्मव मर्यादाग्रह वाहरी लिखा जात गीवत जाति उगना प्रिय नहीं। जमीनी जीवन मनष्य का पतन की आर ल जाता है। जन उमम बचकर रहना ही श्रेयस्कर है। माण्य का दास्य की जजीर में जीवना युग है।

जिस समय विचारा का यह मध्य चल रहा था उन्ही समय अमीरिया की संनाए साम्राज्य स्थापन के लिए जात्रमग कर रही थी। सीरिया का प्रसिद्ध नगर दमिस्क जीनने व वात सम्राट की संता ने जर्मलम का घर लिया। उस समय राजाया नामक धार्मिक नेता न हिंसा लागू का आश्वामन लिया कि यदि व माहमपूवक डटे रहेंगे ता यहवह उनकी रक्षा अवश्य करेगा और अमीरिया के देवता अस्मुर की पुछ न चलेगी। उसका आश्वासन और जेरमलम का जनता की जागाए निष्फल न हु। मयाग स असारिया की संता म ऐसा बवा फणी जिसन बहुत-म सनिक मरन लगे। घबराकर संनापति जेरमलम छाकर लोट गया। इस घटना से पन्टेस्टाइन बाला का दम विश्वास ही गया कि यहवह सर्वोपरि ईश्वर है और वह निबला का बल है।

मातवा गती के आरम्भ में अमीरिया का साम्राज्य नष्ट हो गया (६१२ ई० पू०)। किंतु उसने स्थान पर कलिया व साम्राज्य की स्थापना हुई। कलिया के सम्राट नेबकदनजर ने पलमस्टाइन को पतन करके जेरसलम का नष्ट भ्रष्ट कर लिया और वहा क हिन्दू लोगो को नष्ट कर बेबीलोनिया ल गया। (५८६ ई० पू०)। जा लाग वच के मिस्र भाग गये। इतनी आपत्तिया पर भी सिन्न गंगा का विश्वास येहवेह पर अटल रहा और वे निराग न हुए। उनके धार्मिक नेता जरीमिया न उनका उत्साह कायम रखा और उन्हू यह गिराया कि येहवह का मंदिर किसी म्यान विशेष में नहीं बरन प्रत्येक भक्त के हृदय में है। उसी में प्रत्येक व्यक्ति का उस प्रतिष्ठित करना चाहिए। हम नव्य सिद्धान्त न यहवह को एक णेग या जाति म उठाकर सदस्यापी आर प्रत्येक भक्त का साथी बना लिया। वह एकराट हो गया और उमके अनुयायी एकेवरवानी हा गये। इन नय विचारों का वसाया नाम के सहूल्य प्रवचन प्रदीप नेता ने अपन आजपूण उपाया स अनुयायियों के मन म जमा लिया। हिन्दू अपने कष्टों को गार्तिपूवक सहन करते और यातनाओं का

एक प्रकार की तपस्या समयते जिमने उन्हें इष्टदेव की कृपा व अधिकारी हो सकने का ज्ञान था।

मयागवग फारम की नवोत्थित शक्ति के नेता राजा काइरम ने बेल्जियना का परास्त करने उनकी राजधानी बेरीलॉन में अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिया (५२८ ई० पू०)। उदार नीति का आश्रय लेकर उमने हिट लागा का मुक्त करके उन्हें अपने देश परम्परा वापस जाने की स्वतंत्रता द दी। कुछ को छोड़कर अशिकाग गग प्रमत्ततापूर्वक परम्परा लौट गये। यद्यपि व फारम के सम्राट के अधीन रह किन्तु उमने उनका विकास में बाई हस्तक्षेप नहीं किया। फारम के साम्राज्य के पतन के बाद वे अश्वक्रेण्टर के मनापनिये के शासन में लगभग दो शताब्दी तक रह। ग्रीक लोग के सम्पर्क में आ जाने से परम्परा वाला के आचार विचारा में नया लहर उठने लगी और हर-धरे जाने लगे। बहा उदार नवीनता और प्राचीनता का संघर्ष शुरू हो गया।

यह स्मरण रखना चाहिए कि हिंस्र घम प्रचारका ने कुछ ज्ञानमय मिथान स्थापित कर लिये थे। पहला यह कि ईश्वर एक ही है जो मार विश्व का नियन्ता है। दूसरा यह कि ईश्वर ने मनुष्य की मर्ति अपने ही नमूने की बनायी जिमके कारण उममें क्षमता शिष्टता तथा आत्मशक्ति आत्म-सम्मान शक्ति गुण पाये जाते ह। तीसरा यह कि मनुष्य में शुभ एवं अशुभ भावनाओं का द्वन्द्व होता रहता है। उमने अशुभ गुणा का दमन करने और शुभ गुणा का सप्रह करने की स्वतंत्रता ह। अपनी विद्वक शक्ति का यदि वह उपयोग कर ता वह अधम से बचकर धमात्मा बन सकता है। घम के तीन विशिष्ट लक्षण ह—न्याय दया और दीनतापूर्वक श्रम का अनुपमन। उनकी मिद्धि से मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

बेल्जिआ

अमीरिया के पतन-काल में उमकी आर से नियुक्त बेरीलॉन के प्रशासक नवापोरसर ने स्वतंत्र राजा बनकर विद्रोह का आरम्भ किया। बेरीलॉन में अपना शक्ति समर्थित कर उमने अमीरिया पर आक्रमण कर लिया (६१० ई० पू०)। अस्मुर नगर के जीतने में वह अमफल रहा किन्तु मीरिया वाग ने अस्मुर को हट लिया (६१६ ई० पू०)। तदनन्तर मीरिया वाग ने बेरीलॉन के राजा से मिलकर अमीरिया की राजधानी पर मयमन आक्रमण किया। अजला में मयकर बाढ आने के कारण तिनवह की चहारदीवारी भी बनजाह हो गयी थी। शक्तिशाली निम्बेह

का पान हा गया और वहा का राजा सितेशर दक्षक लडना हुआ मारा गया (६१२ ई० पू०) । असीरियन लोग टायर-उधर भाग गये अथवा खैड दिये गये । मिस्र की सहायता भी उनकी रक्षा न कर सकी । मम्मब या कि राजकुमार नबुकनेजर मिस्र पर भी आक्रमण कर देना किंतु पिता का मृत्यु का समाचार सुनकर वह लोट पडा (६०५ ई० पू०) ।

नेबुकनेजर (६०५-५६२ ई० पू०)

प्रारम्भ के कुछ वर्षों तक उसका मिस्र में संध्य चलता रहा क्योंकि वहाँ का फरा जूडिया, पेल्लेटाइन और फनीशिया वाला क साथ पटथन्न किया करता था । उधर नेबुकनेजर भी उन पर दान गडाय बठा था । सन ५८६ ई० पू० नबुकनेजर ने जोमलम जीतकर वहा के यहूदिया का केंद्र कर लिया और वहा पर दूसरे ल्याग को लाकर बसा दिया । टायर नगर का भी उमने अवरोध किया किंतु उमको ले न सका । फिर भी उसका साम्राज्य फारस की खाडी से मध्य सागर के तट तक विस्तृत था और उनका जातक मिस्र पर जमा रहा । पूव और पश्चिम के व्यापार के स्थल भाग पर अधिकार स्थापित होने के कारण उसका खजाना भरपूर हो गया और नव बविलान एक समृद्धिशाली बभवपूर्ण नगर बन गया । ससारका मम्मबन वह भवसे बडा, सुंदर तथा घनघायवान नगर हा गया । उस नगर की जनसख्या कम से कम अस्सी हजार हागी । लगभग दो सौ बगमील भूमि पर वह नगर बसा था । उसका सौ फुट ऊँची सात गज भागी मुण्ड बाहरी महारणीवारी ने उसे अजेय दुग सा बना लिया था । उसका जगत्प्रसिद्ध सात मजिला का जिगुरत ६५० फुट उचा (पिग मिड में भी ऊँचा) था जिसकी चमकदार रंगीन इत दूर में ही चकाचौप करता थे । भरतक देवता तथा अन्य देवताओं के विगाल मदिदा राजमहल तथा मम्मा की मट भी उमी प्रकार की थी । उमने जिगुरत के चबतरा पर योग ऋवाये जा समार के सप्त जाश्चर्यों में गिने गय तथा राजधाना की गामा बटाने रहे । परात नदी पर उसने एक पुन बनवाया जा सम्भवत ममार में सवभ पत्त पुल था । इनने मिवा उसने व्यापार के साम्य बन्तरगाहा की रचना करायी । बेबगिन का यह अमृतपूव उत्थान और बभव नबुकनेजर असरम्य का प्रनाप था । उसरी मृत्यु ५६२ ई० पू० के लगभग हुई ।

नेबुकनेजर की मृत्यु के बाद वहा के तीन राजाओं के विषय में किग उल्लेख नीय घटना का पता नहा चलता । अनुमानत वे किग का पतेन हा रहा हागा । हाँ,

नबोनिदस के राजत्वकाल में (५५६—५२९ ई० पू०) कुछ जानकारा मिलती है। वह बेबीलोन के राजवंश का नहीं बल्कि हरीन के एक पुजारी का पुत्र था। इसी कारण वह लोकप्रिय न हो सका। दुभाग्यवश मीड लोग से भी उसका सम्बन्ध अच्छा न रहा। यह भी कहा जाता है कि वह मीडिया के गिलाफ फारस के विद्रोहियों की सहायता भी गुप्त रूप में करता था (५५० ई० पू०)। मीडियन के पतन के उपरांत आगे चलकर फारस वाला से भी उसका सम्बन्ध ठन गया, जिसका परिणाम यह हुआ कि फारस वाला ने पूर्वी व्यापार के स्थल माग को बन्द कर दिया जिससे बेबीलोन की आर्थिक दशा निम्न होने लगी। चिन्तित होकर नबोनिदस ने अरब से लाल सागर तक कारवान के लायक माग खोलने का प्रयत्न किया। उसकी गैरहाजिरी में फारस वाला ने बेबीलोन के कुछ धर्माधिकारियों से पड़यत्न रचकर राजधानी पर आक्रमण कर दिया और विजय प्राप्त की, तिमम के राजा के साम्राज्य का अन्त हो गया (५३९ ई० पू०)।

लीडिया

हिट्टिया के उपरान्त एशिया माइनर की सम्यन्ता में लीडियन ने विचारणीय स्थान प्राप्त किया। वे लोग मिथिन जाति के थे जो पश्चिम की ओर से आकर एशिया में बस गये थे। उनमें तीन राजवंश हुए जिनके विषय में कुछ निश्चित ज्ञान नहीं। सातवाँ शती (६७५—६५० ई० पू०) के आरम्भ में गार्गेज या गूर नामक एक राजा हुआ जिसमें पराक्रम तथा दूरदर्शिता के लक्षण थे। उसकी राजधानी सारडिस में थी। उसने राज्य की नींव रखी का अच्छा संगठन किया। उसने अमीन्या का भी यथाशक्ति विरोध किया। उसके वंशज ने शनुआ का कर्ण करके स्मरना पर अधिकार कर लिया तथा राज्य का समुद्र तट में हार्गिस नदी के तट तक बढ़ा दिया। व्यापारी नगरों पर अधिकार प्राप्त करने से राज्य समृद्धिगाली तथा राजा बड़ा धनी हो गया। सारडिस ने भी अच्छी उन्नति की और यूनानिया के व्यापार का वह केन्द्र हो गया। गार्गेज कभी असारिया और कभी मिस्र में मिल जाता था किन्तु उसकी सबसे बड़ी समस्या थी कार्दमीरियन जाति के आक्रमणों का रक्षण। उनसे कई युद्ध हुए। आखिर उनसे लड़ते हुए उसका निधन हो गया।

गार्गेज के वंशज ने समुद्र के तट पर स्थित कई नगरों पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। एगियाई कोचक में बढ़ते-बढ़ते वे हालिम नदी तक पहुँचे जहाँ मीडा ने उनका संप्रतत्तापूर्वक सामना किया (५८५ ई० पू०)। लीडिया के राजा

जलयुक्तग ने अपनी एक पुत्री का विवाह मीडिया के राजकुमार जम्यगस ने कर लिया। उसी व्याह में प्रयात श्रीमस का जन्म हुआ। सन ५६० ई. जासपाम श्रीमस लीडिया के राजमहामन पर बठा। उनके राज्य काल में लाणिया का अच्छा उत्कष हुआ। श्रीमस की अपार सम्पत्ति और ममद्वि की कहानी सुनना बच तक पश्चिमी एशिया और अगन में प्रचलित रही तथा वहा के साहित्य में जकिन हा गयी। उनके सहायका में मित्र स्पटा एव मीडिया के राज्य थे। पारमिया ने जब माड राजा जस्त्यगन का पराम्त कर लिया तब उन पर श्रीमस ने जात्रमण कर दिया। पारम वाला न उसका हराया जिससे श्री हत और जमफल हाकर वह सारडिस लौट गया। पारमी राजा काडरस ने सारडिस को जला लिया और श्रीमस का पकड लिया (५४६ ई० पू०)।

ग्रीनिया के निवामिया का व्यापार में अनुराग था जतएव वे सम्पन्न थे। वहा चमडे की सादी तथा रगीन वस्तुआ कालीना और कम्बरा तथा साता चाना की स्वणकारी आपधिया मुगधित पदार्थों तथा अग राग की सामग्री का अच्छा काम और व्यापार होता था। यूरोप तथा एशिया के अनेक जानिया के व्यापारी वहा आकर व्रथ विव्रय करते थे। यद्यपि यह तो अब नहा माना जाता कि सिक्का का उहाने ही आनिष्कार किया तथापि यह कहा जा सकता है कि उहाने मवस पट्टे सुदर कन्दार और व्रमवद्ध मिक्के बनाकर चलाये जिनका मवने आर किया। उन वातावरण में वहाँ मम्यता की उत्पत्ति तथा भागापभोग के उत्तजक साधना की वद्धि हा रही थी। वाद्य-नृत्य माज्य पेय पदार्थों श्रित्तिभोजन स्नान तथा आमात्र प्रमात्र की धम धाम के साथ ही शारारिक सजावट, व्यायाम और खेल कूट का भी उनका बडा शौक था। वहा की व्यापारमूलक मम्यता पर यूनानी तथा यगपीय मस्त्रति का गहरी छाप थी। उनको यदि हम एशिया की जार वन वागे यगपीय मम्यता की लनडार कहें ता अनुचित न होगा। यद्यपि उनमें धनवाना के व्यसन तथा व्यभिचार चित्तजनक थे तथापि उल्माह जात्मविश्राम एव उद्धमशालता का उनमें कमी न था। युद्धकला तथा सनिक सगठन में उनाने अच्छी स्थिति प्राप्त कर ली थी। फिर भी ईरान की प्रबुद्ध गक्ति के सामने वह कुट न कर सकी।

लीटिया वाला के धार्मिक विचार भी जनक जातिया से प्रभावित थे जतएव उनकी मम्यता की तरह मिथित थे। उनकी देवी जार्नेमिस में तत्कालीन तथा तद्गिया की मा आनि लविया के लक्षण थे। उनका पूज्य देवता मन्लान (मृग) था। उनके पुजारी वशानुगत हान थे। वे मूर्तों का दपन करके समाधि के ऊपर स्तूप

सा बनाने अथवा ऊँचे स्थान में गाड़कर ऊपर-से निर्वाह की तरह चिह्न प्रतिष्ठित कर देते थे। छोटे-छोटे शिवलिंग में प्रतीक जनिष्ट निवारण के लिए वे इधर उधर प्रतिष्ठित करते रहते थे।

यट्रेस्वन

मध्य सागर में यूरोप के तीन प्रायद्वीप हैं—ग्रीस (ईजियन), इटली और स्पेन। उसका पूर्वी तट एशियाई काकस और पश्चिमी तट स्पेन है। उसके मध्य में सिसली नामक द्वीप है जो इटली और उत्तरी अफ्रीका का संयुक्त अथवा पथक-सा करता है। सिसली के पश्चिमी भाग का ऐतिहासिक एवं आर्थिक जीवन उसके पूर्वी भाग से ग्रीस के अभ्युदय काल में एक प्रकार से भिन्न रहा। ग्रीस वाणि ने सिसली तक अपना प्रभुत्व स्थापित कर फोनीशियन लोगों से व्यापार तथा प्रभाव छीन लिया था। किंतु सिसली के पश्चिमी भाग पर कार्थेज के फोनीशियन राज्य का प्रभाव अशुभ माना गया। जब राम राज्य की शक्ति बढ़ने लगी तब कार्थेज राज्य के लिए एक भोषण समस्या उत्पन्न हो गयी जिसकी पूर्ति कार्थेज के विनाश से ही हो सकती।

इटली की भौगोलिक स्थिति भी मध्य सागर के बीच में है। उसकी लम्बाई लगभग ६५० और चौड़ाई २०० मील की है। उसके पूर्वी पार्श्व में बल्कन और पश्चिमी में स्पेन है। एड्रियाटिक समुद्र उसको बल्कन से और पश्चिमी मध्य सागर स्पेन से पथक करता है। यद्यपि आल्प्स पर्वत इटली को यूरॉप से विभक्त करता है तथापि वह भी पहाड़ी प्रदेश है। उसकी पर्वतमाला एपिनाइन उत्तर से दक्षिण की ओर मेन्द्रण्ड के समान पड़ी है। उसका प्रभाव पश्चिमी तट के जलवायु पर बहुत अच्छा रहा। उसका ढलाव उसके पश्चिमी तट की ओर है। अतएव पश्चिमी तट पर ही अधिक बस्तियाँ बसा जिससे वहाँ की समस्याएँ पश्चिमी-मुखी अधिकतर रही। यद्यपि इधर-उधर कुछ दूर ही जिनसे हाकर जात्रमण किये जा सकते हैं तथापि वह पर्वत ग्रीस के पर्वतों की तरह बहुत विच्छिन्न नहीं हैं। इसलिए वहाँ के निवासियों का ऐतिहासिक विकास ग्रीस से भिन्न रहा। वहाँ बड़े राज्यों की स्थापना में विशेष प्राकृतिक अड़चना की सम्भावना नहीं थी। इसके सिवा खेती करने का भी वहाँ अधिक सुभीता था जिससे अधिक संख्या में लोग वहाँ बस सके। वहाँ का फसल हाता और पशु दो बार व्याप्त। पुरप और मिन्या सुजाँ और सुन्दर हैं। वहाँ की पा नदी की उपत्यका जतिमय उबरा है। समुद्रों पश्चिमी तट पर अच्छे बंदरगाह कम होने के कारण व्यापार निश्चित स्थानों पर ही केंद्रित हो गया

जिमरा राजनामिक एक अधिक सम्पत्ती उनी जन्म और विविध त थी जमा वि प्राग म उत्पन्न हा गयी थी । इटली का दीणा भाग उत्तरात्तर कम उजाऊ है । इटली का जलवायु आर्यण है । यहाँ त अधिक गर्मी पडता है न अधिक गर्मी जोर वर्षा भी अरनी हाता है ।

अनुमान किया जाता है कि ईसा क पूर्व बारहवा शता म एनेत्रि शता का भगानर यद्वारा लाय इटली क पत्तिका तट पर टाइबर नदी क उत्तरी भाग म बस गय । यूट्रुस्कन सम्भवा पश्चिमी एगिया स जाय थ । क यगानिया हिट्टी राय अथवा ईजियन नागर के टापुआ म आय हाग कयानि वहाँ की सम्भनाशा का कुछ त-मुष्ट प्रभाव यद्वेम्पग मरुति म पाया जाता है । वे लोग एक साथ नही बरन् समय-समय पर कर् दला म जाय हाग । उनक बारह थग थ जा जपना-अपनी मयाग की रणा करत हुए भी एक प्रकार क समान विधान में रहन थे जा नियिल दग का था । प्रत्येक थग जोर नगर अपनी स्वतंत्रता तथा उत्पथ क लिए प्रयत्नगाल था, किन्तु आपस म मिलकर काम करन की बला अथवा याग्या उनमें कम थी । यही उनका बडा कमजारी थी जा उनकी पराजय का मुख्य कारण सिद्ध हुई । यूटे स्वना क पास घाडा की समठिन मना तथा समुद्रा बसा भी था जिमक द्वारा क व्यापार करत थ ।

यूट्रुस्कन सम्भता अच्छा रासी था । उन्नत दलदल तथा जगली पेड-मल्लवा का साप बरवाकर सटवें बनवाया तथा पानी लान और निकालन क लिए मेहराबदार गाल नालियाँ खुदायी । क नाँय तथा लाह की चीजें, हथियार आदि बनात और बचत थ । पाँचवी शती (ई० पू०) में व्यापार के लिए वे सित्तका का उपयोग करत और आभूषण पहनत थे । प्रतियागिता के खेला शस्त्रास्त्र-संचालन भाज, दूत नाच गान घुस्नी रथ-दोड साडा के युद्ध मल्लयुद्ध मुष्टि-युद्ध जादि का उह गीव था । खेल मरून-खच्चर हाने स उनका न ता भय था जोर न म्लानि हाती था । उनका समाज मातक था । स्त्रियाँ जोर पुरष स्वतंत्रतापूर्वक मिलने-जुलने थे । स्त्रियाँ को शिक्षा भा दा जाती थी । देहेज की प्रथा हाने स जो स्त्रियाँ गरीब हाता वे बध्यावति स पर्याप्त घनापाजन करके अपना ब्याह कर लती थी । उस विधान म उन्हें बाई जुगुप्ता की या आपत्तिजनक बात न दिख्वाई पडती थी ।

जल एव स्थल द्वारा पानीशियना, ग्रीका आदि से व्यापार करन से यूट्रेस्कनो का अच्छा लाभ हुआ । व्यापार तथा सम्पत्ति की रक्षा करने के लिए उन्होंने अपन नगरो के चारो ओर पत्थर की प्राचीरें बना ली थी । नागरिक तथा ग्रामीण जीवन

मिस्र साम्राज्य के नये युग का उत्थान और पतन

की समस्याओं से उनका परिचय था। धनी व्यापारियों व कुटुम्ब वाले अपने व उच्च अथवा विविष्ट श्रेणी का समर्थन और इटली व पुराने निवामिया का नीची नजर से देखते थे। उस भावना के कारण बुलोन (पेट्रीगिअन) और जकुलीन (प्लीगिअन) की समस्या चल पड़ी जिसका कमोबेश प्रभाव राम के इतिहास पर शतिया तक पड़ता रहा।

बादला की गरज तथा त्रिजली की चमक और तटप वाले तीनिया नामक देवता को यटेस्कन प्रमुख एवं प्रधान मानने थे। उमने ज नानुवर्ती बारह देवता थे त्रिनम पानाल का देवता 'मनू बहुत ही भयंकर' और दुराराध्य ममज्ञा जाता था। देवताओं में तीन-तीन की द्वाकार्या थी। प्रत्येक इबाई का एक प्रमुख होता था। यही नहीं प्रत्येक नगर तथा व्यापार का अपना विविष्ट देवता होता था। देवताओं का प्रसन्न करने के लिए वे पशुमलि और कभी-कभी नर-बलि भी चढ़ाते थे। वे गगन नरक में विश्वास रखते थे। देवताओं व मिवा भूत पिशाचा में भी विश्वास रखते थे। उनकी धारणा व अनुमार मरणोपरांत प्रत्येक व्यक्ति का वर्ग जाना और अपने-अपने कर्मों के अनुसार फल मागता अनिवाय था। पापियों का जा अत्यंत पीडाजनक यातनाएँ मागनी पड़ती व उन सबमें बचने का एकमात्र उपाय देवताओं की स्तुतिया और बलिदानों द्वारा तुष्ट करना समझा जाता था। मुर्दा का यदि सम्भव हो तो गफाओं में रखने थे अथवा जला दन थे।

यूटेस्कना को अफरा का व्यावहारिक जान था यद्यपि निष्ठा में उनकी अधिक रचि न थी। फिर भी व्यापार और कलाप्रियता में उन्होंने अपनी सम्यता की छाप सिस्र, कासिका और सारडीनिया पर लगा दी। स्थापत्यकला चित्रण गम्भिर बनान मिट्टी के बाले मुंदर घरतन और रंगीन विचित्र तयार करके, मुंदर दपण तथा कपड़े बनाने में उन्होंने अपनी योग्यता का अच्छा प्रदर्शन किया। राम बाला ने उनके सनिक मगहन और शस्त्रीकरण से लाभ उठाया। ईसा के पूर्व छठी शती में यटेस्कन सम्यता अपनी पराकाष्ठा तक पहुँच गयी थी। व्यापारदि क्षेत्रों में उनके प्रतिभागी ग्रीक और कार्थेज के लाग थे। कार्थेज से मिलकर उन्होंने ग्राका का उनके उपनिवेश कासिका से भगा दिया। पाचवाँ शती में उनका ह्याम हाने लगा, यहाँ तक कि वे इटलिया प्रांत में सीमित रह गये।

अध्याय ५

रोम

इटली की प्रसिद्ध नदी टाइबर के दक्षिण में समुद्र के किनारे लन्डिन नाम का प्रान्त है जिनसे लेटिन वंग के निवासी आगे चलकर राम राज्य के ही नहीं बरन् रामन साम्राज्य के संस्थापक बन । रोम के ऐतिहासिक उत्थान में जिन लोगों ने प्रमुख भूमिका ली वे यही एक जाति या वंग के न थे । प्राक् यदुर्वक्त्र सवाण जाति के सम्मिश्रण से वह जन-समुदाय प्रकट हुआ जिनमें समार के इतिहास में अपना प्रिण्ट स्थान प्राप्त किया । लन्डिन लोग आरम्भ में कृषि तथा पशुपालन करते थे ।

जाठवी गती (ई० पू०) में यूट्रस्कना ने टाइबर के दक्षिण पार में अपना शासन स्थापित कर लिया था । उस युग में राजा टारक्वैनिअस वंग से ही जावन भर के लिए चुने लिया जाता था । आवश्यकता पडने पर वह वृद्ध की संभा बलाकर उनका मन ले लेता था तथापि उसका अधिकार अबाधित और पूर्ण था । टाइबर नदी के दक्षिण पार यूट्रस्कन गंगा के नगर और उनकी समृद्धि का देखकर वे आश्चर्य करते थे । जाठवी गती के मध्य में यदुर्वक्त्र ने उन पर आधिपत्य जमा लिया और राम नगर पर उनका एक राजा राज्य करने लगा । किन्तु लेटिन लोगों ने अपना व्यक्तित्व और ऐक्य बचाए रखा । यूट्रस्कना के नगर से नदी की बाढ़ का पाना निकालने का मेहराबदार पटा नांग बनाकर राम के स्वास्थ्य और आर्थिक जीवन का सुधार किया ।

जनता की एक समा थी जिसे कमीनिआ क्यूरिआ कहते थे । कमासिया क्यूरिआटा अमम्बली में प्रमुख तीन कबीला के दस-दस व्यक्ति प्रतिनिधि थे । जो प्रश्न उनके सामने आते थे उन पर अपना निणय वह दल के वाट से निश्चित करते थे । प्रत्येक दल के पाम एक वाट होता था ।

यूट्रस्कन राज्य के प्रति लेटिन लोगों ने अथदा और भी वृद्धि की जब उन्होंने कैपिटालिन के मंदिर के निर्माण कराने के लिए गरीब लोगों से दगार ला । यह

स्मरण रखा माय्य बात है कि उस समय रोम में दास प्रथा नाम मात्र के लिए ही थी। केवल वे ही व्यक्ति निर्धारित अवधि के लिए दास बनाये जाते थे जो कज जना करने में असमर्थ होते थे। साधारण किसान आर कारीगर यद्यपि गरीब था किंतु था स्वतंत्र। लोका के रोप का यह भी कारण था कि एक गाहजादे ने एक भू-सादान की स्त्री लुक्वेनिया पर बलात्कार किया था। जाता की यटस्वन विगोधिनी प्रवृत्ति से लाम उठाकर पेट्रीगियन अथात् कुलीन या जमीर लामा ने जिनमें यूट्रस्वम लटिन आदि भी थे राजवर्गिया का राम से बहिष्कृत कर दिया। तीन बार प्रयत्न करने पर भी वे राम में न धैर्य सक (ई० पू० ५०९)।

राज शासन बल कर जनता ने वहा जनमत्ता की स्थापना की। शास्त्रधारी जाता ने एक ते बदले दो प्रीटर कामल (मजिस्टेट) चुनना आरम्भ कर लिया जा एक वर्ष तक शासन के पूण अधिकार का प्रयोग करते थे। लामा को समान तथा पूण अधिकार प्राप्त थे। यद्यपि जनसभा उनका चुनती थी तथापि वे पेट्रीगियन श्रेणी के यन्त्रि होते थे। अतः पेट्रीगियन श्रेणी का महत्त्व अधिक बढ़ गया और जनता के साथ उनका व्यवहार उच्छेद रहने लगा।

तदनुसार पेट्रीगियना और प्लीबियना में मध्य प्रारम्भ हो गया जो दो सौ वर्ष तक चला रहा। शास्त्रधारी प्लीबियना का साधारण लामा का बल था। चूकि शास्त्रधारी जनता ही सना का मुख्य अंग थी अतः प्लीबियन जादालना में बल था। पल जादालन में जब उन्होंने युद्ध में जाने से इनकार किया तब उन्हें ही अधिकार मिले। पहला यह कि प्रति वर्ष अपनी श्रेणी में ही दो टाइब्यन चुनल जा कासल या पेट्रीगियना के अनाचारा से जनता की रक्षा कर। कुछ समय के बाद ट्राइब्यना की संख्या दो से बढ़कर दस तक पहुंच गया (४४९ ई० पू०)। दूसरा यह कि किसी का तब तक प्राण-दण्ड न दिया जाय जब तक कि सर्पटोरियन समाजमका अनुमोदन न कर। टाइब्यन प्लीबियना के स्वाभाविक नेता नार पथ प्रदर्शक हो गये। वे ही उनकी समा आर्थाजित करत और उनका हित वाले प्रस्ताव स्वीकृत कराते थे। सग-ठा कुछ पृष्ठ होने पर प्लीबियना ने भूमि सम्बन्धी कानूना में सुधार के लिए आगा लो किया। दस वर्ष के बाद पेट्रीगियना ने दस संख्या की कमेटी कानना को स्पष्ट करने और सुधार के लिए बनायी। उन्ही कमेटी ने कानना का विविध कर दिया। वे ही १२ पट्ट-लखा के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। यद्यपि अत्रिक सुधार का कानना में न हुए किंतु एक यह बात स्पष्ट हो गयी कि प्लीबियना की समा वाशम के विधान में ध्यान मिल गया। दूसरा सुधार यह हुआ कि कासल पद के चुनाव में प्लीबियन

मात्रिय जात लगे। वासन्त की अधिक गमय तत्र अतपस्थिति म जादिक रामा
ते त्रिण तन्त्र लगान करा की व्यवस्था क त्रिण मगर, और वाय क त्रिण
प्रीटर नियत त्रिय गय। अति विषम भाट पटन पर निर्वाचित गमय क त्रिण
त्रिणत्र निम्नत करन का विधान माना गया। त्रिणत्र का सम्पूर्ण यही तत्र
कि प्राण-शून्य दन का भी, अतिरार मान त्रिया गया। अय विधान प्राय बग हा
रु जग त्रि दृष्टमन गजाआ क गमय में थ।

पन्त्रगा। म गपय का अन्त न हुआ क्याकि जनता यह चाहती थी त्रि उमरी
जपनी एक स्वतंत्र सभा हा जिगता वानून बनान का अधिकार हा। उमरा यह
गिरायन थी त्रि कमागिया या म-चरियाता म बवल तन्त्रगगे मत्रिक प्राग लन
ह। जा तन्त्रघारी नहा उनकी कहा पूछ नहा हाती। शम्प्रात्रि व नी ल मनन ह
जिनके पाम जादिक साधन हा। जा पुरानी गभा पत्र वाग की ही है साधारण
जनता की नहा। जातलन का यह पत्र हुआ त्रि एक ऐसी मभा का निमाण हुआ
जिमम जमीर-गरीब मभी क निवाचित गदम्य मिलनर काम कर। उसका नाम
गया गया कभोगिया ट्रांन्सूटा पाप्यलाई। यही नही उम सभा का राज्य क पन्त्र-
धिकारी समर, कन्स्टर प्रीटर जिम वह चाहे उसे चुनन का अधिकार मिल
गया। साधारण व्यक्तिया के लिए भी रास्ता साफ हा गया किन्तु व्यवहार में लाग
पट्टीगिया जयवा पूव पन्त्रधिकारिया में स नी चुनाव करत थ, क्याकि मभाज म
उन लाग का अधिक मान था।

सेनेट में भी कुछ परिवर्तन हुआ। पहल उमन सन्स्य केवल पटीशियन ही
हात थे। किन्तु नयी व्यवस्था क अनुसार उसक सन्स्य क चुनाव म उन लाग का
जा मजिस्ट्रेट रह के हा अधिक महत्व दिया जान लगा। पन्त्र प्लोविन्न लाग
जा कभी मजिस्ट्रेट रह चुक थे भोट क सन्स्य हात लगे। दूसरा लाभ उससे यह
भी हुआ कि सेनेट म अनुमती पासवा की सख्या उत्तरात्तर बढा लगी। सेनेट के
सदस्या की सख्या तीन सौ थी। सन्स्यता जावन भर क लिए हाता थी। उसका
समापति कासल होता था जिसका चुनाव प्रति वष किया जाता था। सेनेट का
कामल पर ही नही बरन नागरिका पर भा बडा रोक्ताव जोर आतक था। इसके
सिवा नये कालना का प्रस्तावित करने का अधिकार सेनेट को ही प्राप्त था। २८७
इ० पू० नव हारटेसिया विधान स्वीकृत हो गया जिसके अनुसार साधारण जन-
सभा द्वारा निर्मित कानून का स्वतंत्र बध होना मान लिया गया। तत्र स उसको किसी
अय सभ्या या व्यक्तिक की स्वीकृति की आवश्यकता न रही। एम कानन के बनन

के साथ उस सघप का अन्त-भा हा गया जा दा मौ वप स चला आता था। जन-मना का एकमात्र कतव्य उस स्वीकार या अस्वीकार कर लेना ही था। कानन का कार्या-चिन हाने से राक देने का अधिकार ट्रा-व्यना का था अतः सनेट उनसे पहले ही परा-मग कर लेती थी। हम ढग से सनेट ही प्रवलनम सम्था हा गयी। जनता उसे बटे सम्मान की दार्ष्ट से देखती थी। इसी कारण बिना अधिक रक्नपा के रामवामिथा ने अपनी सस्थाओ में सुधार कर लिये। नीचे दी हुई वपनमानुसार तालिका से प्लोब्रियना की अधिकार प्राप्त का इतिहास भरलता से जाना जा सकेगा—

४४५ ई० पू०	प्लोब्रियन और पेजीनियन का विवाह गैरकाननी ममथा जायेगा।
३७६ ई० पू०	किसी नागरिक का निश्चित सीमा से ज्यादा जमीन पर मिलियत का अधिकार न रहेगा।
३६७ ई० पू०	दो कासग में एक प्लोब्रियन होगा।
२५६ ई० पू०	टिकटेटर चुना गया।
२५० ई० पू०	मेमर बन सकते हैं।
३३७ ई० पू०	प्रीटर बन सकते हैं।
२१३ ई० पू०	कज न अदा करने पर भी गुलाम न बनाये जायेंगे।
३०० ई० पू०	धमसघ में सदस्य हाने का अधिकार मिला।
२८७ ई० पू०	साधारण ममा द्वारा बना हुआ कानन बिना किसी अय सम्था या पदाधिकारी की स्वीकृति क प्रयुक्त होगा।

गणतन्त्र शासनकाल

जिस युग में रोम की साधारण जनता अपने अधिकारों के लिए सघप कर रही थी उसी में रोम इटली में अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिए प्रयत्नगाल था। अधिकार के सघप ने रोम के नागरिकों की अपना जाति के प्रति, नगर और मस्थाओं के प्रति सम्मान और भक्ति की भावना में अथवा उनके प्रति कतव्य की साधना में किसी प्रकार की कमी न जाने दी। रोम के हित के लिए वे हर तरह के कष्ट और जापत्ति झेलने के लिए मदव तयार रहते थे। उसके लिए भूल-प्यास अग मग यहा तक कि प्राणदान के लिए भी वे कोई आनाकानी न करने थे। कतव्य जीर अङ्गामन के प्रति उनकी विलक्षण निष्ठा न ही उनका राजनीतिक क्षेत्र में जो सफलताएँ प्रदान की, वे इतिहास में विनोप स्थान और महत्त्व रखती हैं। रोमन लोग किसी

राज्य का स्थापित कर दिया, जैसा कि भू-राज्य युद्धों द्वारा प्राप्त है। मगध का साम्राज्य
 नहीं बढ़ा था। उसकी मजिद राम तथा राम के विरासिदा के लिए थी। काष्ठात्मक
 गंगा ही उसकी प्रकृति थी। उसके उत्तर में मगध और विरासिदा विरासिदा
 गंगा के लिए मात्र एक एक प्रकृति का रूप है। रामराज्य के काष्ठात्मक की स्थिति
 किसी साम्राज्य के साम्राज्य विरासिदा अथवा विरासिदा के अन्तर्गत नहीं की
 गयी थी। साम्राज्यिक राज्य में तो साम्राज्य का स्थापित कर दिया गया। उत्तर
 साम्राज्य के लिए वे काष्ठात्मक बनाये गये। स्थापित उत्तर काष्ठात्मक अन्तर्गत
 माना जाता है। इसी प्रकार राम के साम्राज्यिक उत्तराधिकारी विरासिदा का
 भाग है।

राज्य के एक राज्य का स्थापित है मगध विन्ध्य क्षेत्र विरासिदा का स्थापित करी
 रामराज्य का ही साम्राज्य था। मगध के प्रांतों के विरासिदा मगध के अन्तर्गत
 गंगा के अन्तर्गत या अन्तर्गत का मगध का रामराज्य में आता है। मगध
 विरासिदा है। उत्तर के अन्तर्गत साम्राज्य प्रकृति में स्थापित करी उत्तर का
 स्थापित साम्राज्य के लिए कर दिया था। विन्ध्य क्षेत्र का मगध विरासिदा
 मगध के अन्तर्गत विरासिदा विरासिदा मगध का अन्तर्गत रामराज्य में
 प्रायः मगध मगध स्थापित पर रामराज्य का अन्तर्गत स्थापित कर दिया गया था।
 विरासिदा उत्तर के साम्राज्यिक साम्राज्यिक और आदिम जीवन पर रामराज्य का
 उत्तराधिकार था। उत्तराधिकार के लिए रामराज्य में विवाहात्मक सम्बंध करने में
 कोई राक्षस-राज्य नहीं रहा मगध ही। मगध मगध उत्तराधिकार के लिए, विरासिदा
 व्यापार की सुविधा के निमित्त मगध बनवाया और स्थान-स्थान पर सैनिकों के दल
 स्थापित कर दिए।

राम के मगधराज्य (विरासिदा) की स्थापना में लक्ष्मण कायल वाला के मगध
 हुए प्रथम युद्ध के आरम्भ तक के कयीय राजा मगधों तक रामराज्य को तीन विरासिदा
 परिधिनिर्देश का साम्राज्य करना पड़ा। पहला युद्ध (५००—३३४ ई० पू०) वह था
 जब राम का अपनी मत्ता कायल लक्ष्मण के लिए अपने साम्राज्य के रामराज्य से संधि
 करता गया। उमा युद्ध में गाल जानि के आश्रमकारिया ने राम का गंगा और आसा
 रण्य का गाना लक्ष्मण के लक्ष्मण गये (३०० ई० पू०)। फिर भी लक्ष्मण ने लक्ष्मण
 रामराज्य का अपने ध्येय में विन्ध्य में हुए। परिणाम यह हुआ कि राम का मगध
 पश्चिमी और मध्य उत्तर में स्थापित हुआ गया। दूसरा युद्ध (४६—२०० ई० पू०)
 राम का उत्तर में अपना अधिकार प्राप्त करने में बीता। फिर मगध का प्रांत

पर अधिकार करना बाकी रह गया। तीसरे युग में (२९०—२६५ ई० पू०) रोम का प्रभुत्व उत्तर में दक्षिण तक सारे देश में फैल गया। यद्यपि उपयुक्त युग की घटनाएँ अपना महत्त्व रखती हैं तथापि उनका विनाश वणन यहाँ अनुपयुक्त होगा। फिर भी तीसरे युग की एक घटना की जोर इशारा करना आवश्यक प्रतीत होता है। एशिया मिनोर का ट्राण्टिकस नामक नगर ग्रीकों का अड्डा और व्यापारिक केंद्र था। पहले तो उन्होंने रोमना को दक्षिण की ओर बढ़ने में काफी सहायता किया किन्तु जब उनका यह जान पड़ा कि रोम सारे दक्षिण भाग पर अपना आधिपत्य जमाने पर तुला हुआ है तब उन्होंने युद्ध करना अनिवाध्य समझा और एपिरस के राजा पिरस का जो अपने युग का महान् सेनापति माना जाता है, सहायता के लिए आमंत्रित किया। पिरस ने रोमना को दो बार (२८० ई० पू०) परास्त किया। सहाय से कार्थेजवाला से रोम करने के लिए सिराक्यज के ग्रीकों ने उसे आमंत्रित किया। रोम से लीन वर्ष के बाद जब वह लौटा तब रोमना ने उसको ऐसा परास्त किया (२७१ ई० पू०) कि उसे वापस चला जाना पड़ा। इटली में रोमना का कोई प्रतिद्वन्द्वी न रहा (२६५ ई० पू०)।

ग्रीक सत्ता का क्षय हो जाने में रोमनवालों को कार्थेजवालों का सामना करना पड़ा।

कार्थेज

ग्रीक प्रतिद्वन्द्वियों के मरने के पश्चात् पश्चिमी भूमध्यसागर पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए रोमना को कार्थेजवालों से संघर्ष शुरू हुआ। यद्यपि उनकी उत्पत्ति का विषय अभी तक अन्तिम निश्चय तक नहीं पहुँचा तथापि विद्वानों का बहुमत उनके अरब से पेलोस्टाइन में आकर बस गए समुद्रिक जाति के 'कानथानी' वंश का होना के पक्ष में है। उन्होंने भूमध्यसागर का अपना क्रायोन बनाया और जलमार्ग से व्यापार करने लगे। ग्रीक लोग उन्हें व्यापार तथा गलामी के लिए मदों और औरता का पकड़ ले जाने वाले डाकू कहते थे। मिस्र वाले उन्हें जहाज बनाने वाले समझते थे। वे फोनाशियन और सिडानी कहलाते थे।

ईसा की नवीं शती में जब कि इजरायल और जूडिया आपस में लड़ रहे थे, फोनीशिया ने भूमध्यसागर में अपना व्यापार और उपनिवेश बना लिये। पहला उपनिवेश माइसस में स्थापित हुआ। उसके पश्चात् भूमध्यसागर और स्पेन में जहाज-तहा उन्होंने बस्तियाँ कायम कर लीं। उत्तरी अफ्रीका में यंत्रिका और कार्टासदस्त में

(कार्थेज जाधुनिक दर एस्साफी जा वान अन्तरोप क एक पादव म है नया नगर) नवी या जाटवा शनी म उरानवग वायम त्रिये । अनुश्रुति क अगुमार नगर म यसान वाली राजकुमारी एलिम्मा थी । यद्यपि उनरी सस्टुनि मल्ल समन्विक प्रजाति की बाजानी थी तथापि उम पर भेसोपगामिया और मिय तथा ईजिअन का भा प्रभाव था । मिय तथा ग्रीम का प्रतिपागिता म कारण पूवा भमध्य सागर में मघपजनित बटिनादया स बचने के लिए सानवी गती स उन्हाम परिचमी आर अपना प्रयत्न वेद्रिन किया । मिसली टापू पर अधिकांश प्राप्त वरख के लिए कार्थेज वाला का सराज्यज क ग्रीक राज्य से सघप करना पडा । जय रामना जीर ग्रीका का टक्कर गुरू हुई तज कार्थेज न रामना का सहायक बनकर प्राक्ता की शक्ति का क्षय करवा लिया ।

उत्तरी अमीका के समुद्र तट पर कार्थेज नगर की स्थिति सब प्रकार स अनुकूल थी । जहाज बहुत नजरीक तक जा सकते जिसस व्यापार तथा रक्षा मे सुमाता था । पीछे विस्तृत मरभूमि हाने के कारण सन्ना उस जार स आक्रमण की भी सम्भावना बहुत कम थी । ग्रीका और मिस्रिया स भी भय की आंका नगण्य-सी थी । उसक आसपास ऐसे स्थान न थ जिनसे निरन्तर खटपट हाने की चिन्ता हा । टयनीसिआ म इतना पाना बरसता था जिमसे अनाज और फटा की रोता हा सब । दो सौ फट की ऊँचाई पर नगर का रक्षा के लिए एक मुठ किला बना लिया गया । नगर क चारा जार ऊँची चट्टारणीवारा जा २५ मील लम्बी जीर कटा-कटी ६० फुट उँचा और तीम फुट तक माटी था बनवायी गयी । साठ सत्तर फट क फामला पर बजिया बनी हुई थी । नगर क बाहर साठ फुट चौडी साइ खुदी हुई थी । कार्थेज वाल स्पन स चाणी टिन लकडा, कपडा रग आदि अनेक पदार्थों का व्यापार करते थे । व्यापार स उनको इतना लाभ हुआ कि उनका नगर जा राम स पँचगुना बडा था प्रभूत धन धायवान् हा गया । पाचवी गती (ई० पू०) म वहा की जनसंख्या दा लाख थी । उसक बाद बडे शहरा म टयनीसिआ का रथा माना जाता था । तीमरी गती (ई० पू०) म वहा की जनसंख्या बाकर सम्भवत पाच या छ लाख तक हा गयी । कार्थेज भयकर मरसली और कृषि करनेवाली प्रजा क अभाव के कारण अच्छी स्थल-सना न बना सका किन्तु उसकी नौ शक्ति काफा प्रबल थी । उसका मना में अनेक दगा और जातिया के लोग भरना थ जिसस उसपर पूरा बिश्वास नही किया जा सकता था । इमके विपरीत राम की सेना जाताय और मुसगटित थी । कार्थेज नगर में गुलामा की मग्या बहुत ज्यादा थी । कारण यह था कि सागराग राग

उद्योग घड़े तथा विविध प्रकार की सेवाएँ उही से करवाते थे । वास्तु-कर्म में वहाँ क कारीगर बड़े निपुण थे ।

नगर में एक खुला मदान था जहाँ से तीन मड़के थानिट के दवाग्य समाधि-मथल और ममा भवन का जाती थी । नगर में एक किला भी था । माधारणत गलिया सँकरी तथा घम घुमात्र वाली थी । मकान पत्थर के बन थे जिनमें बाज बाज ठ मजिल उँचे थे । दीवारा पर सफेदी की जाती थी । मकाना की छत अच्छी गराने लकड़ी की घनिया पर रखी जाती थी । छों कुछ गालाइ न्ये हुए बनायी जाती थी । नगर में तानित देवी, बअल हम्मोन आदि अनेक देवताया के बाटे थे । वहाँ का सबसे बडा और घन मम्पत्र देवालय एगमाजन का था जिस तक पहुँचने के लिए साठ मीढिया चढ़नी पडती थी । उमक मिवा जय देवालय भी थे जैसे 'दिमितर' और 'कारी क जिनमें चादी तथा माना चनाया जाता था । उनका पूजन बबल ग्रीका क ही लिए सीमित था ।

ममेटिन जातिया के ममान कार्थेज निवासी भी घम के बडे पक्क थे । कुछ देवताआ का केवल स्थानिक और मूयदेव जम कुछ का मवव्यापक महत्व था । लोक-मम्मनित देवताआ में बअल हम्मोन सम्भवत एल दनता का प्रतिरूप था और चट्टमा की प्रिया तानित देवी अगरन देवी की प्रतिरूपिणी थी । देवता नगर का रणक और देवी जीवन तथा मुख-भीख्य प्रणायिनी मानी जाती थी । लाग दक्षी की अपार शक्ति क कायग्य थे । उनका एक देवता मीगक भी था जिस किमी जमाने में बच्चा की बलि दी जाती थी किन्तु आगे चलकर पगु-बलि का विधान हो गया । एम घान का कोई स्पष्ट प्रमाण नहा कि वहाँ क किमी देवस्थान में मयुन की प्रथा का प्रचलन था । मेलकान या मीलाक देवता क पुजारी ब्रह्मचारी रहत गिर तथा गढी मुडवाते और खास तग के कपडे पहनत थे । उसक देवालय में मित्रया तथा मुजर न जाने पाने थ और उसके क्षेत्र में मयुन मवया वर्जित था । यही नही दगाक लागी को भी यह आदत लिया गया था कि वहाँ जाने के तीन दिन पहल ब्रह्मचय पात्रन करना आवश्यक है । कार्थेज के लागी में पूजा के पगु विगपत मल की बनि चणाना आवश्यक माना जाता था । उमके मिवा चाँनी-माना बम्त्र तथा माय पनाथ भी चढाये जाते थे ।

कार्थेज वाले मरणापरात जीवन के विषय में विरक्त थे इसीलिए गवा की सुरणा की उह चिन्ता न था ।

अपने घम और विद्वानो पर अपार श्रद्धा रखन के कारण उनमें आपसी बघुत्व

और एकता का भाव अधिपत रखायी और दुःख था। उमम स्तना ही शायद गया था कि गयात प्रियात और मगटना म लाम उगा की प्रस्था जानी रणी।

श्रीम क लोप कायेंज क शासन की प्रामा र्गमिशा करन थ रि उमम राजगता मुला मता और जामता तीता का अन्त मम्मिथण हु ता। यह धारणा यन्ि अगला रही ता अत मय्य है। उर विधान क अनमार दा व्यस्ति जा अल्ल दग क और घनादूय हा। पूरी जनता द्वारा मया पना क रिचन जा थ। उनता च्चाप पन्त ल म तीन मय क रिग हाता था रिन्नु था का जीयन मर क रिग हा गया। मना पर ता उनता अधिपार ग था रिन्नु थ ही कायकारिणा ममा तदा जन ममा का आमत्रिन और उमता मभापनित्त करन तथा अन्निम यायाधान हात थ। वाम्तिश गामत वा मचापन ताम मफठ व्यापारिया की म्यादा कायकारिणी ममा करनी था जा गरमिआ करनी थी। वही मधि रिषट सना नियोजन तथा उपनियता का म्यापन और मम्मवन निरागण भी करनी था। तामरी मम्या भा धी व्यापारिया की थी जिमर सन्त आजायन सन्म्य हात थ। यन्ि उममें गार् म्या माली हा जाता ता पांच सन्म्या का एव ममिनि उमवा पुनि कर दना था। कायेंज वा मवम बडी ममा जनममा था। यन्ि सपन और गरमिआ म मतमन् हाता अथवा काई मयकर समस्या उठ गडा हाती ता सपत अथवा गरमिआ ममिति उम आमत्रिन करता और उसकी राय ले लनी था। म काजून बनान क भा कुछ अधिपार थ। उपयुक्त पनाधिकारिया क अलावा मनापति जाचाराध्यम कापा ध्यम आन्ि क पन् भा थ।

कायेंज क निवासा मुख्यत व्यापारी थ अत उनका शांति रमन् म अधिक रिचमपी थी न कि राय विन्तार थ। मजबरा ना दगा में व युद्ध ठानत थ। सेनापतिया पर उनको बडी नजर रहती थी क्याकि उनको धारणा थी कि सेनापतिया में निजी स्वाध के लिए जपती सनिक गक्ति का दुरपयाग करन का प्रबल प्ररणा पायी जाती है। इसी के साथ यदि सेनापति वा सना पर यथेष्ट अधिकार न लिया जाय ता वह अपने कनध्या का पूरा निर्वाह न कर सकेगा। अत सेनापति क लिए जितन आवश्यक अधिकार थ व सब उसे दे दिये जान थ। किन्तु उसका अन्व एक वप जयवा निश्चिन जवधि क लिए किया जाता था। यदि युद्ध म वह असफल हाता ता उसकी कडी आच हाती आर आवश्यकतानुसार दण्ड भी लिया जाता था।

कुछ विद्वाना की यह धारणा है कि जात्म रक्षा कृपि के विकास तथा बढ़ती हुई रामन जनता क निवाह के लिए प्रयत्न करत करते रामना का इटली पर जाधि

सत्य स्थापित करना पड़ा किन्तु कार्थेजवाला म व्यापार के विकास के कारण ही उ ह सघप करना पड़ा। यद्यपि कुछ अग तक यह सत्य है तथापि यह नहा कहा जा सकता कि उनमें विजयपणा एक प्रभुत्व-स्थापना की लालना की बमी थी।

रामना की टली विजया ने उनके हीमले का बजा दिया। उन्ह यह भय रहता था कि जिम प्रकार कार्थेजवाला ने अफीका जीर मध्य सागर के टापुआ पर जडडे जमा दिये ह उमी तरह इटली म भी जमाने का व प्रयत्न करगे। इसीलिए उन्हाने जितने समर्पत उनम किये लगभग उन समी मे यह शान रखी कि टली में व कही स्थापित हो जान का प्रयत्न न करगे। इसके सिवा इटली के भमुद्री तट की रक्षा के लिए उन्हाने फीजा क म्ते रख लिये थ जीर उमक किनारे किनारे उनके छाटे जहाज पहरा देने रहत थे। इधर कार्थेजवाला का भा भय था कि टली पर प्रभव स्थापित करने क उपरान्त रामन लाग मिसली में घुस आने का प्रयत्न करगे। राजा की मानमिक दलित का परिणाम भयकर हो सकता था।

आखिरकार झगडे का सूनपात हा गया। सिमली में मसना नाम का एक नगर दक्षिणा टली के बहुत समीप बसा हुआ था। उसम इटली क दक्षिणी प्रदेश से भगे हुए अथवा वहा म बरगनास्त किये हुए भनिवा ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया था। सराक्यूाक ग्रीक राजा ने उन पर जात्रमण किया। उसस टर कर ममना क एक दल ने कार्थेज स सहायता मांगी जा उमने यथाशीघ्र भेज दी। दूसरे दल ने रामना की मदद चाहो जा उन्हें भेज दी गयी। रामवाल यह नही चाहते थे कि कार्थेजवाल इटली के समीप कहा जम पायें। युद्ध मे कार्थेज जीर सेरा कयज बाग की पराजय हुई (२६४ ई० पू०)। सराक्यज के राजा ने रामना के साथ मल कर लिया। इस युद्ध स रामना को विश्वाम हो गया कि कार्थेजीनियना स उनका तुरत सघप अवश्यभावा है तथा इस उद्गय मे उनके लिए प्रबल जहाजी बेधा बनाना अनिवाय है। द्वातीन वर्षों में उन्हान करीब उतना ही बडा बेटा तयान कर लिया जितना कि कार्थेजवाग का था।

राम आर कार्थेज म पहला युद्ध २६४—२८१ ई० पू० में दूसरा २०९ से २०१ ई० पू० में और अन्तिम तीसरा युद्ध १५३ स १८६ ई० पू० तक हुआ पहले युद्ध का परिणाम हुआ कि जल और स्थल पर कुछ लडाइया में हारने पर भी रोमना क जहाजी बेडे ने कार्थेज के बेडे का नष्टप्राय कर लिया जिमस उन्हे सधि करने पर मजबूर हाना पडा (२८१ ई० पू०)। कार्थेज का हर्जने की बनी रकम देनी पडा जीर सिमली तथा उसके समीपस्थ टापुआ से हाथ घाना पडा। रामना में

आत्मनिर्वास एवं अपनी नौ शक्ति का अभिमान बंद गया किन्तु दाना राया का यह नात हा गया कि युद्ध तब तक चरता रहगा जब तक एक का दूमर पर आधिपत्य स्थिर रूप से स्थापित न हो। सम्भव था कि द्वितीय युद्ध पहले ही आरम्भ हो जाता यदि उत्तरी इटली की गाल जाति के साथ रोम का भयंकर युद्ध न टिटा जाता जोर कार्रवाजी की यह विश्वास न हो जाता कि मध्य सागर के टापुआ—सिमली, कारसिका और सार्डीनिया-पर अधिकार चल जाये से जा क्षति हुई उमरी पूर्ति आवश्यक है। रामना ने कार्रवाजी के विरोध करने पर भी सार्डीनिया और कारसिका ले लिया था। उम क्षति की पूर्ति करने के लिए उद्धान स्था पर जात्रमण करना आवश्यक समझा। व सोचत थे कि स्पन की चादी और तांबे की खाना स उनकी आर्थिक पूर्ति होगी और वहा के साहसी लडाका को अपनी मना में भरती करके स्थल-सेना का बमी दर की जा मरेगी। कार्रवाजी के सेनानायक हर्मिलकर की चारणा था कि जब तक इटली में घुस कर रोमना का म्यल-युद्ध में हराया न जायगा तब तक अथ की सिद्धि न हो सकगी। स्पन में हर्मिलकर का प्रेष्ट मफलता मिला। उमने स्पेन के कुछ मरदारा स मत्री-सी स्थापित कर ली। हर्मिलकर की मत्य के बाद सेनापतित्व का भार उसके पचास बप व पुत्र हनीवाल को सौंपा गया जिसका नाम जाये चलकर समार के सुप्रसिद्ध सेनानायक म हा गया।

जब कार्रवाजी ने सेग्रेष्टम नगर पर जिमकी रक्षा का गमना ने वचा लिया था जात्रमण किया तब दूमरा प्यूनिक युद्ध आरम्भ हो गया (२१९ ई० पू०)। रामना ने एक सना कार्रवाजी और दुमरी स्पन की आर मोज दी। किन्तु हनीवाल उसकी चिन्ता न करके अपूव चतुरता साहस और सावधानता से एक विशाल सेना के साथ पेरीनीज पर्वतमाला रोज नगी और दुमरा उफ से लज जात्रमण पवन का लाघता हुआ एकाएक इटली में घुस गया। उम अपूव उद्योग और साम्म के बर्ण कारण थे। मुख्य कारण था जहाजी बेटे की अशमता, उतनी बडी मेना को घोषा सहित ले जान की अक्षमता। इसके सिवा उस जाशा थी कि गाल जाति जातिया जिनका गेम दहर रहा था माग में उसका साथ देंगी और रमद जाति का प्रवर्ण भी हो सकेगा। तूफाना में रोमना ने उमरो रोकने के अनेक प्रयत्न किये किन्तु एक न काम जाया। इटली में उसक साथ सिर्फ ३४ सहस्र सेना रह गयी थी। रोमना की दा बहुत बडी सनाया का मो हनीवाल ने बिनष्ट कर दिया। हनीवाल चाहता था रोम को भा विध्वंस कर देना किन्तु उसकी नीति थी कि इटली में बिद्रोह की आग भडका कर उसी में रामना का स्वाहा कर दे। दा करारी पणजया से रोम का आन

नष्ट हो गया आर इटली की जानिया ने ही नहीं, सराक्वज ने भी सिमली में विद्राह कर दिया। हनीबाल का दबदबा तना बढ़ गया कि मक्दूनिया का राजा पचम फिलिप भी उसका साथ देने के लिए जा गया। विपत्तिया के भयकर घटाटाप से भी रामना का धय और साहम न छटा। कपुजा की रक्षा के लिए हनीबाल ने राम के मामने अपनी सेना ला खडी की। उनके पाम न ता इतनी बडी सेना थी कि वह उसका अवराध कर सकता और न प्राचीरा का ताडने क यत्र थे। फाटक बढ़ करके रोम वाले चुप बैठे रह। कुछ दिना तक बेकार पटे रहकर वर फिर दक्षिण का लौट गया।

धीरे धीरे उन्हाने इटली की जानिया का दमन कर लिया। सिमली पर फिर अधिकार स्थापित कर दिया। मक्दूनिया के विरुद्ध राम बाला ने ग्रीस में विद्राह का आग सुल्मा दी जिममें प्रस्त हाकर फिलिप पहले ही लौट गया था। रामना का गम्भीरता अविचलता, धय साहम और वीरता से प्रभावित हाकर मध्य इटली के निवासिया ने भी विद्राह का प्रसंग न छेडा।

स्पेन में पहले ता रोम बाला की पराजय रही किन्तु बाद को मना वर जाने से उनको विजय प्राप्त हुई और कार्थेज का प्रभाव वहाँ निरस्त हो गया (२०६ ई० पू०)। स्पेन को रोमना ने दो सूबा में विभक्त कर अपना जाधिपत्य स्थापित कर लिया (१९७ ई० पू०) जिम कायम रखन के लिए उन्हें ऐसी वेईमानिया और युद्ध करने पडे जिनमें भयकर रक्तपात हुआ।

सौभाग्य से राम का मेवा में भी सीपिया नामक एक सुयाग्य सनानायक था। उसने पहले ही सफल नेतृत्व कर रामना को विजयी किया। फिर लौटकर वर अपनी का गया (२०५ ई० पू०) और अपना नीतिकृगलता तथा सनिक पराक्रम से कार्थेज वाला पर ऐमा जातक फला दिया कि हनीबाल की सहायता करना तो तर रहा उसको उन्हे कार्थेज की रक्षा के लिए बुलाना पना। जामा के मणा म दाना प्रतिभाशाली सनापतियो का सग्राम हुआ। सीपिया की पदल सेना तथा घाटा का रिसाला सह्या ही में बडा न था वरन युद्ध-कला में भी सुसिधित था। कार्थेज की सेना नष्ट हा गया जिमसे व्याकुल हाकर हनीबाल ने सधि करने के लिए वहा के शासका से जाग्रह किया (२०२ ई० पू०)। राम बाला ने बहुत बडी रकम हरजाने की ली और उनका यह माननेके लिए बाधित किया कि व दस जहाजा से अधिक समुद्री बडा न रखें और बिना रोम की स्वीकृति के किसी से युद्ध न टान (२०१ ई० पू०)। दूसरे प्यूनिक युद्ध के महत्व और परिणामा के विचार से इस प्राचीन युग का एक महा-युद्ध माना जाता है। क्रूरता की दृष्टि से रामन ही दोष के भागी है। यद्यपि विवशता

ने कारण अन्ततः हनायात की पराजय हुई किन्तु उमरी याग्या जीर मना-
पतित्य की मना अलेक्जण्डर जतिअम मीजर नपात्रियन स कुछ अधिक हा मानी
जाती है । कार्थेज में प्राण गतात हनीवाल ततीय एण्डिआस क पाग चला गया
किन्तु प्रीर मगाट अपनी अहम याग क कारण उमका उचित उपयाग न कर मगा ।
निआस क हारन पर राम याग ग हनीवाल का मीमा किन्तु यह भागनर पुमिअम
के पाग बधानिया चला गया । राम न जय पुमिअम पर जात डाला तत हनीवाल
ने विग गानर प्राणाग कर लिया (१८३ ई० पू०) ।

तीसरा प्यूनिय युद्ध और कार्थेज का विध्वंस (१५६-१४६ ई० पू०)

रोम का मितारा बुलद था । ई० पू० २०० और १९० वष क याच में प्रीर
एण्डिआई वारर तथा मध्य सागर क पूर्वी भाग पर रामना ग अपना आधिपत्य जमा
लिया और मिश्र का अपनी छत्रछाया म ल गिया । इमर चात्र कार्थेज का अन्तिम
वाल आ पहुँचा । कार्थेज का पदासी राय यूमाडिया जिमन गमन लोग स मल
कर लिया था कुछ-न-कुछ मगडा उटाता रला और रामना का कार्थेज के विरुद्ध
उमारा करता था । उमना यह जलन और रोम का यह चिन्ना रहती थी कि कार्थेज
की व्यापारिक निपुणता फिर उमे सपन्न बना रही है । व दाना देग दमी घात म
रहत थे कि कोई अच्छा बहाना मिल जाय तो कार्थेज का मग के लिए अन्त कर
गिया जाय । इधर हनीवाल की ईमानदारी और गामन प्रवीणता के कारण उमके
गनुआ ने उसक विरुद्ध पत्यत्र करके राम के अधिकारिया का उसक विरुद्ध उमाडा ।
परिणाम यह हुआ कि उमका देग से निष्वासन हो गया । कार्थेज के स्वार्थी व्यापा-
रिया ने अपने स्वाध की सिद्धि में पूववत सलग्न हो काय किया । किन्तु वे भी यू-
मीडिया के अतिक्रमणा से तथा रोमना द्वारा उनके अनकूल पथ ग्रहण करन स
स्तने पग्गान हो गये थ कि उहान यूमीडिया पर चाई कर दी । वम एस ही अवसर
की रोम प्रतीक्षा कर रहा था । यद्यपि न्यूमीडिया की विजय हा चुकी थी और
कार्थेजवाले पराजित हा गये थे तथापि राम ने कार्थेज पर आक्रमण कर दिया ।
कार्थेज वाला ने बडी अननय विनय की अनेक प्रकार से अपनी बफादारी के प्रमाण
निये किन्तु रोम ने कुछ ध्यान न गिया क्पाकि वह उसको ममल नष्ट करने पर तुला
हुआ था । लचार हाकर कार्थेजवात्र भी लडकर भरन का तयार हो गय । कार्थेज
का अवरोध चार वष तक चलता रहा । मूख प्याम तथा जयाय कला का सहन
करते हुए भी कार्थेजवाला न शहर के भीतर और उमक साथिया न गहर सगारिलग

करने में विस्तृत अभिप्रेत था। उसका सिद्धांत राम राम उम सिद्धांत में विस्तृत
 सामर्थ्य प्रकट करने था। मन्तु राम का धाम व मासांग व आन्तिका मामला
 में हस्तगत करने का कार्य सम्पन्न हुआ। अन्तिका व धा विस्तृत राम का मासांग
 सिद्धांत का तीर्थ न उतावा हटाए राम आर प्रविष्ट किया। धाम पर जब राम न
 आक्रमण किया था तब व राज्य मन्तु जौर अभिप्रेत र (१०० ई० पू०)।
 विस्तृत की मासांग वार मन्तु हर्ष विमल हस्तगत हस्तगत उम मन्तु की मासांग
 को। मन्तु राम का व हर्ष विमल हस्तगत धाम व राज्य म हस्तगत न कर
 और राम की आत्मा प्राप्त किया गया उम मन्तु र। उम राधा म आत्मा
 गताएँ और आत्मा प्रतिप्रविष्ट हस्तगत आत्मा मन्तु व हस्तगत राम व गुप्त कर दे। मासांग
 पर वि शीत का एतत् विमल मन्तुनिया व विस्तृत प्रथम और अन्तर्गत न
 स्थापित किया था मन्तु र। राधा का स्वात्त कर मन की घोषणा
 में उत्तरी मन्तुनिया की मन्तु गन्तु मन्तु की (१९६ ई० पू०)। तान
 पर स्थित हो न पाय वि राम का गताएँ फिर धाम में आ पन्त। हस्तगत कारण
 पर धा वि मन्तुनिया मन्तु र राम की आत्मानि व शीत का रत्ना व लिए मन्तुनिया
 व मन्तुनिया तन्तु एन्टिआक्रम का निमन्त्रित किया। एन्टिआक्रम ने विस्तृत न म
 मन्तुनिया सागर मन्तु धार आधिपत्य का रत्ना करने तथा पाधिआ के अधिनिमित्त
 गन्तुनिया व आक्रमण का गन्तु म मन्तु उल्हाट कमठता जौर मन्तुनिया का
 अन्तु प्रदान किया। इसी म धाम उम अपना उल्हाटकर्ता मन्तुनिया लगे थे।
 उमने मन्तुनिया के पन्तु विस्तृत म मन्तु व टालमिया व विस्तृत समन्तुता भा
 वन्तु किया था जिन्तु प्रतिवार व लिए राम न टालमो राधा का सहायता मने का
 आद्वामन्तु किया था। एन्टिआक्रम ने अपना आधिपत्य मन्तुनिया और फिलिस्तीन
 पर स्थापित करके पन्तु टालमो स बवाहिक मन्तुनिया मन्तुनिया कर लिया।

एन्टालियन लग र निमन्त्रण को स्वीकार कर एन्टिआक्रम ने दस मन्तुनिया सना
 के साथ इस में पन्तुनिया किया। अपनी परिपाटी व अनुमान शीत के राधा ने
 उमकी सहायता करना ता दूर रहा उसका प्रति धा ता उन्तुसीनता था विस्तृत न
 प्रदान किया। मन्तुनिया का मन्तुनिया पर आधिपत्य जमान का स्वप्न अभी तक भग
 न हुआ था। धाम के अन्य राज्य इम भ्रम म थ वि राम की छगछाया में वे स्वतन्त्रता
 का मन्तुनिया उपभोग करते रहेंगे। पन्तु एन्टिआक्रम का उनमें कुछ सहायता न मिली।
 उमके विस्तृत राम ने वीस मन्तुनिया सेना भजी। धमापली व युद्ध में एन्टिआक्रम की
 सेना विनष्ट हो गयी (१९२—९१ ई० पू०) और वीस को उसके भाग्य पर छोड़

कर वह वापस चला गया। इटालियन लीग विच्छिन्न कर दी गयी। रोम के राज्या की वात्पनिक स्वतन्त्रता के विरुद्ध होने की दूमरी मजिल जा गयी।

रोम ने अपनी विजय से यथासम्भव लाभ उठाना उचित समझा। जो रोम के प्रबल बेटे ने पूर्वी टापुजा के जहाजा के मन्थोग से एण्टिआक्स के जहाजा बेटे का विध्वंस कर दिया (१९० ई० पू०)। उसने माघ ही रोम की सेना एण्टियाई काचक से उतर पड़ी। यह रोम का एशिया में प्रथम पदापण हुआ। यद्यपि एण्टिआक्स की सेना रोमन सेना से दुगुनी से अधिक थी तथापि मेगनासिया के मदान में रोमना के नवीन युद्ध-शौशल के कारण उमका निपात हुआ गया। एण्टिआक्स सन्धि करने पर मजबूर हो गया। उमका अपना सारा समुद्री बड़ा गरम (तूर) पहाड़ का पश्चिमी भाग तथा बहुत बड़ी रकम हरजागे में दनी पड़ी। इसमें बचन ल लिया गया कि वह हल्लिस नदी का कभी पार न करेगा। एशियाई काचक मेल्युक्स के बगजा से छिन गया। चौबीस वष के बाद पाथियना न, जो सीथियन जाति की एक प्रबल शाखा थी, चतुर्थ एण्टिआक्स से मेसापटेमिया और वेबीलानिया हीन गिया। मल्युक्स वग के साम्राज्य का अन्त हुआ गया यद्यपि उमके बराज सीरिया में येनेनेन प्रकारेण राज्य करने रहे। ग्रीक लोग के रजबाडे रोम के आधिपत्य में चले गये। एण्टिआक्स चतुर्थ के आक्रमण से घबराकर मिस्र का टालेमी जिमस रोम की मित्रता का रोम का छत्रछाया में आ गया। गह-कलह से (१६८ ई० पू०) टालेमी बराज मिस्र राज्य जजरित होकर रोम का अधिकाधिक आश्रित हुआ गया। रोम के ग्रीक प्रतिद्वन्द्वी निरस्त हो गये और दूसरे प्रतिद्वन्द्वी कार्थेज मल्यु गिया तक पहुँच गया, उसका केवल गव-मस्कार रहे गया। रोम ने आरक्ष्यजनक क्रम से अपना आधिपत्य तो स्पेन से सीरिया और ग्रीस तक बढ़ा लिया किन्तु उसी के साथ साथ उसकी समस्याओं की भी अपार वृद्धि हाता गयी। आधिपत्य के अन्तर्गत अनेक विधान विविध प्रकार की सधिया और समझौते आत थे। राज्या के अनेक प्रकार के आपसी बगने तथा जागमी दलबन्धिया के सधप मुन्तान का मार उसका उपर आ पटा। कभी-कभी यवस्था करने में यवस्था मुलजागे में उल्लेख और उपकार से अपकार उत्पन्न हो जाता था। रोमना को बने साम्राज्या के शासन का न तो कोई अनुभव ही था न परम्परागत ज्ञान ही। यह स्पष्ट सा प्रतीत हाता था कि ग्रीस वाला को तरफ रोम वाला भी नगर राज्य के शासन के ही अभ्यस्त थे किन्तु विनाल राज्य अथवा साम्राज्य के शासन की कला में अनभिज्ञ थे। इसीलिए निर-

न्त अपनी अयोग्यता के प्रमाण देते रहे। वे ईरान की नकल करने का प्रयत्न तो समय समय पर करते थे किन्तु प्रायः असफल ही होते रहे।

राम साम्राज्य का मानचित्र ता ईसा के पूर्व द्वितीय शताब्दी में ही तयार हो चुका था अतः कार्थेज विशेष चमत्कारपूर्ण विस्तारवाद का न हुआ। फिर भी विजित प्रांतों की सीमाओं की रक्षा और उनके अतिप्रमण करनेवालों के दमन करने तथा शान्ति कायम रखने के लिए उन्हें समय समय पर युद्ध करने और साम्राज्य की सीमाओं का विस्तृत एवं दृढ़ करने के लिए अपने आधिपत्य का क्षेत्र बढ़ाना आवश्यक सा हो गया। उन घटनाओं में से कुछ का संक्षिप्त वर्णन अनुचित न होगा।

कार्थेज विनष्ट होने के बाद उसके पड़ोसी राज्य यमीडिया ने जो उत्तरी अफ्रीका में था अच्छी उन्नति की विशेषतः अनाज के व्यापार से। ११८ ई० पू० में राज्य के उत्तराधिकार के प्रश्न पर बहा गृहयुद्ध छिड़ गया। रोम की सेनेट से बगड़ा निपटाने की प्रार्थना की गयी। राम ने उस राज्य के दो टुकड़े कर लिये। औरस पुत्र को अधिक समृद्ध और पत्तक पुत्र जुगार्था का साधारण अंग मिला। दोनों में युद्ध छिड़ गया। जुगार्था का सफलता तो मिली किन्तु उमर में उसका प्रतिपक्षी इन्गोलियना का कत्लेआम हुआ। राम ने जुगार्था से युद्ध छोड़ लिया। बड़े माहम और वीरता से जुगार्था लड़ा किन्तु अन्त में छल से पकड़ कर मार डाला गया (१०५ ई० पू०)। कार्थेज की शत्रुता का दुष्परिणाम न्यूमीडिया को भोगना पड़ा।

काले समुद्र के दक्षिण में पाण्टस राज्य था। उसके युवक राजा मिथ्रनीज छत्र (१२०—१६३) जिसमें फारस तथा ग्रीस का रक्त प्रवाहित था त्रीमिया के नगरों की प्रार्थना पर साथियन आदि से उनकी रक्षा करने लगा। उनकी ऐसी महत्ता मिली जिसमें उसकी शक्ति और साधना में खर बढ़ि हुई। राम ने क्षुब्ध होकर उससे राज्य का वह भाग छीन लिया जो उसके पिता का दिया गया था। अंगड की अडपड गयी। ग्रीक नगरों में मिथ्रनीज का साथ दिया। राम का काफी परेशानी उठानी पड़ी। राम का पाण्टस में युद्ध पुस्तक-पुस्तक चलता रहा।

रोम (२)

टाइबर नदी के दक्षिणी तट के लैटिन कृषक सन्निव। न राम में सम्भावित नगर राज्य का विनाश और प्रबल साम्राज्य का गामन-बद्ध बना लिया था। उनका उत्साह उद्योग विजयपणा साहस और वीरता का वह एक देशप्यमान और गौरवपूर्ण प्रमाण है। किन्तु उस साम्राज्य विस्तार का राम पर जो प्रभाव पड़ा

वह मन्तारजक गानवधक और उपदेशप्रद है। उसने हानि-लाम का विधरण और मन्तुलन इतिहास क प्रेमिया के लिए अत्याकषक रहा है। साम्राज्य के विकास क साथ-साथ गणतन्त्र राज्य द्वारा अपने स्वरूप का मल जाने की जागरूक अपने ध्यस्वित्व एव वशिष्ट्य की रक्षा के लिए मघप और छटपटाहट, और अन म चाला बल्ल दना नथादित ममस्याआ के लिए नये नये उपाय निबलना उनकी सपन्ता और विफलता साम्राज्य के अनुभव विभव और परामव की कथा यह सब घटनाक्रम एक कुतूहलवधक महाकाय-सा है।

जब तक राम ने भूमिपम्य प्रदंग में जात्मरक्षा के लिए रोमना का युद्ध हाता रहा तब तक उनक वृष्टिमलक सामाजिक और आर्थिक जीवन में अधिक श्रान्ति का समाधना कम थी किन्तु ज्या ज्या राज्य बन्ता गया और वृषका का खेती-बागी छाककर अधिकारिक समय तक बाहर रहने की आवश्यकता बन्ती गयी त्या-त्या उनका प्राचीन मगठन और जीवन अस्त-व्यस्त हाता गया। वृषक और ग्रामीण जीवन की मरलता एकरसता और उसक तन्त्र से उह उन्नरात्तर अरुचि होने लगी। नागरिक जीवन के प्रलाभन गावा से किसाना को खीचते चले गये। गात्रम्य जीवन पिता भ्राता पुनादि के मन्वघ शिथिल हात गये। म्त्रिया ने यथासाध्य वृषि गारण का काम चलाया किन्तु व बढ़ती हुई अव्यवस्था का सीमित अंश तक ही प्रतिकार कर सकी। वृषि-काय के लिए गुलाम मुलम दिखाई पडे। उनकी सख्या राम प्रदंग के देश में श्रमण बढ़ती चगी गया। फिर भी वहा का पदा मिया हुआ अनाज उत्तरी मन्नी दर पर न बिक सकता था जितनी पर साम्राज्य क प्रान्ता से प्राप्त हुआ जन। वृषि की लामहीनता स जनता में बेकारी गरीबी और जमतोप बढने लगा। उसमें किसाना के साथ गलाम भी शामिल हो गये। किसान कज और मूद क बाइ से घबराकर अपनी भूमि बचन लगे जिस खरीदकर उस पर अमीर आलीशान मकान बनवाते और बाग-बगीचे गवात या चरागाह बना लत थे।

राम म चारा और से लट-भाट का माल तथा कग महमूला और खाना से प्राप्त धन द्रव्य आने लगा जा उत्तरात्तर बन्ता गया। नये प्रान्ता का व्यापार ऐजेन्सरी और महाजनी राम के व्यापारिया, जफमरा और सेनानायका के हाथ म आती गयी जिमम पूजीपतिया का समुदाय बढि और समृद्धि प्राप्त करता गया। धन के बल पर वे राजनीति के क्षेत्र म अधिकारिक प्रभाव डालने लगे और उनमें अनेक प्लीबिजन लाम्पीपति पेट्रीणियना में सम्मिलित कर लिये गये। ये नवजात पट्रीणियन पुरानो से भी अधिक जहम्मानी अभिमानी होकर प्लीबिजना को नीची

निगाह से दृश्यतथ जिससे प्लाविजना का क्षाम आर राप हाता था । अमीर लोग गुलामा का सवा करने के लिए अधिकारिण मन्थ्या मे गीकर रखने लगे जिसस राम में उनका समुदाय बहुत बढ गया । अमीर बडे ऐग आराम का जीवन व्यतीत करत थे । उनकी स्त्रिया भी बडे सज घज से रहती और विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करती थी । उनके रोगमा बस्त्र शृगार, भाती और रक्षा क जामूपणा का देखकर प्राचीन सरलता के प्रेमी दृष्टी लजित और क्षुध प्राप्त थे ।

गरीबा के वाट प्राप्त करने के लिए अमीर लोग त्रिविध उपाया का अवलंबन करते थे । व उनका रिश्वत देते सस्ता और कमी बिना मृत्य भी अन्न वितरण करत और उनके मन-बहलाव तथा बिनोद के लिए खल-तमाशा और उत्सवा का आयोजन करत थे । उन खेला में सबसे प्रसिद्ध ग्यागण (एम्फी थियटर) के खेल थे जिनमे गन्धारी जापस म अथवा मयकर हिसक पश्या के साथ आमरण द्वन्द्व युद्ध करत थे । उन रक्ताक्त पागविक प्रशाना के लिए विजित जातिया के हृष्ट पुष्ट बन्दी और गुलाम बडे उपयुक्त सिद्ध हात थे । उन प्रदाना से ग्या में रक्तप्रियता का नाप ता बढ ही मकता था किन्तु उन क्षणिक उपाया से उनका बन्धा और गरीबा का समस्या का पूर्ति असम्भव थी । स्वतंत्र जनता की पिवायत प्रवृत्त थी किन्तु गुलामा का ता परिस्थिति मध्या दयनाय और उनका जावन मतत माननामय था । जनमत्ता का ढकासला चलना चला जा रहा था किन्तु जनता दोन जाँर ग्राण हाती जाती थी । उस दुःखद परिस्थिति में बवल कृपण और गुलाम ही नहा बरन कारागार और श्रम जीवी भी प्रवृत्त थे । राम प्रशान म ही नहा बरन् सार श्रम तथा रामन उपनिवेश म मा इम कारण दैमा ही दगा हा गया थी । राम का माग्राय उगवा घात और भव बरला था किन्तु श्रमि का जाता का हाग और पान जागे था । त्रिविध विष्मना था ।

विजित प्रशाना का परिस्थिति और भी शाचनाय थी । जिनकाण्ड म्या काण्ट कर आर गुगामी म जा जात्रिन रण जात उनका रणन गमायन के लिए राम के जषमर व्यापारी जमन अथवा लमान के टनगर थ आर गुगार उगवा रान चमन थ । युद्ध का रण का माण मननायक और सनिज बान् लान और गाँ य स्थापना हाते पर उपयुक्त समुदाय मा जात का तन्त्र जनता म विरक्त जात थ । राम रात्रय का उनना लाभ न हाता था किन्तु उमन नौरा और पिगगग्रा का हाता । विजित प्रजा का फारम योग तथा शीना का उमाना माण जाता था बर नि

उनका जीवन अनुपातन अधिः शान्त और वृत्त सुखी ता नही किन्तु सहनीयता था ही ।

तत्कालीन परिस्थिति पदाधिकारिया आर पूजीपतिया के अनुकूल था । वामनव म शासन यत्र भी उही के हाथ में था । उसीलिए उसका बदलने की उनको न ता कोई चिन्ता थी और यदि कभी किसी का हाती भी थी तो उनका साम्राज्य की ममस्या का अच्छी तरह समझने आर उम हल करन का कोई उपाय सुझाई न पडता था । स्वाध और ज्ञान-श्रयता तथा अनुभवहीनता ने मिलकर राम व शासन का स्तंभ कर रखा था । राम की स्थिति के सुधार में यदि कोई मर्यादा-स्थापक या निषेधात्मक कानून कभी बनाये जाने थे तो उनकी कोई परवाह न करता और काय रूप में के परिणत न जाने पाने थ । माराग यह कि रोम साम्राज्य व प्रदेश और प्रान्त भी दरिद्रता और दीनता के गतावध म समते चल जान थे ।

मवम विलक्षण बात तो यह थी कि विधान व अनुसार राजनीतिक अधिकार जनसभा और जनता के हाथ में थे किन्तु व्यवहार में व असमथ थे । पेट्रीगियनारुड सेनेट ही उसका पूण प्रयाग और उपयोग करती थी । किन्तु मजिस्ट्रेट (कामल) उसका मल का अधिकार थे कि यदि वे चाहें तो सेनेट के परामग के बिना जनसभा में जो प्रस्ताव चाहें भेज द । युद्धा के मचालन मे जो सफलताएँ सेनेट ने प्राप्त की थी तथा उमक सन्म्य पूव पदाधिकारी अनुभवी एव सामाजिक परम्परा द्वारा प्रतिष्ठित होने व कारण, उसका बहुत राब और दबदबा था । फिर भी विधान के अनुसार उसकी शक्ति जनसभा स कम मानी जाती थी ।

जनता की बढ़ती हुई गरीबी और असन्तोष ने उसम एक शक्तिशालि वाना वरण उत्पन्न कर दिया । उमको ऐसे साहसी नेता की आवश्यकता थी जा उमका पथ प्रशान्त कर सके । उमे वमा नेता प्रनिमागाली टाव्वीरअम ग्रेवम जा सुप्रसिद्ध नेतापति और विजता सीपिया का माला था मिल गया । १३३ ई० पू० में जब व ट्राव्विन के पद पर नियुक्त हुआ तत्र उसने विमाना का दुग्गा दूर करने व लिए जनसभा म सरकारी मभि के पुनवितरण और विमाना के सरक्षण के लिए कुछ प्रस्ताव उपस्थित किये और स्वीकृत भी करा लिये । यद्यपि प्रस्ताव सीमित और साधारण थे तथापि सेनेट में राय इतना बढा कि सेनेट वाग ने उमका वत्र कर लिया (१३० ई० पू०) । सात वष के पश्चात उसका छोटा भाई ट्राव्विन नियुक्त हुआ । उसन ऐम पूजीपतिया का जा सेनेट व सदस्य न हा सके थे एगिया म लगान वमूल करने व ठेके दिलवाकर तथा लौटे हुए स्वा के उच्च पदाधिकारिया के विरुद्ध

भ्रष्टाचार की जाँच कराने और अपराधी का दण्डित करने का अधिकार तिलाकर अपनी ओर मिला लिया। 'मन' या 'मनट' व 'गुण' के नियुक्त करने तथा लगान वसूली व नियंत्रण व अधिकार सामिल कर लिये गये। राम की गरीब जनता का मासिक अनुदान देकर तथा सस्त दाम पर अन्न देने व नियम बनाकर उनमें मिला लिया। 'स्ट्री' व निवामिया या राम की नागरिकता व अधिकार दिलाने का वाग्य करके उनकी भी सहानुभूति प्राप्त करने का जो उमन 'गयल' किया तब उपद्रव होने लगे जिनमें उसका भा वध हुआ गया (१२३ ई० पू०)। यद्यपि ममि-मम्बची सुधार कुछ अपने दोषों व तथा विरोध व कारण असफल रहे तथापि जनता में जाग्रति और अपने अधिकारों की चेतना उत्पन्न हुई गयी। उसने सिवा रामन विधाना व दापा की ओर भी लागू का ध्यान आवृष्टि हुआ गया।

जगार्था (यमीडिया) व युद्ध में पहली रामन सेना के सेनापति का 'सल' व धम खा लने के कारण सेना व विनष्ट हो जाने उत्तरी इटली में ट्यूटन और गाल जात्रिया के सफल जात्रमणा और रामन सेना की पराजया के कारण रोम की जनता में बड़ी मनसगी फटी और हगामा मचा। उस पर जनसभा ने सनट द्वारा नियुक्त सेनापति की अवहलना करके स्वयं मेरिअस नामा एक किसान नागरिक का सेनापति बनाया। मेरिअस ने यमीडिया और इटली के आत्रमणकारिया का पराम्त कर शात कर दिया। उससे वह ऐसा लावप्रिय हुआ गया कि छ बार निरंतर वह ही का 'सल' निर्वाचित हुआ। जनसभा का सेना पर अधिकार म्यापिन हुआ गया और सेना के सुगठन तथा प्रवर्ध में ऊँच-नीच का भेद मिटा लिया गया। मेरिअस यद्यपि योग्य सेनापति था किन्तु वह राजनीति-बुगल न था और वह अपने सहयोगी नेताओं तथा अनुयायियों व औदत्य का नियंत्रण न कर सका। राम म श्राति कारिया व उपद्रव तथा जनाचार से लागू 'याकुल' हुआ उठे। परिणाम यह हुआ कि उपद्रवियों का दमन करने के लिए मेरिअस का 'गल' उठाने पड़े और मनट ने उन कानना का जा जातक तथा वलप्रयाग द्वारा पास हुए थे रद्द कर लिया।

उपयुक्त मधप स चार बात स्पष्ट जान पडने लगी। पहली यह कि का 'सल' के चुनाव में सेनापतित्व की योग्यता हाना विनाप लक्षण-मा हुआ गया। दूसरी यह कि राम के नागरिक इटली वाला को नागरिकता व अधिकार देने व विरुद्ध थे। तीसरी यह कि राजनीतिक सुधार अथवा परिवर्तन के लिए उपद्रव तथा नगमता का प्रयाग होने लगा। चौथा यह कि सर्वोपरि नागरिक शक्ति की प्राप्ति के लिए सेनेट और जनसभा में, विद्वेषात्मक, भयकर और जमयातित विग्रह की जनि

ने भी होता था जिसके लिए उहाने अच्छी खासी सड़क बना ली थी। लार्हे के काम में वे स्पेन वाग्रा से कम न थे। वृषिक्रम में ता वे राम वाला से भी बड़े-बड़े थे। गाल देश का प्रवृत्ति ने इटली से अधिक सपन और उपजाऊ बनाया था। उनकी सेना विशेषत घुड़सवारों के रिसाले, राम वाग्रा से भी अच्छे थे साज-सामान भी अच्छा था। किन्तु अनुगामन और रणकौशल में वे इतने अच्छे न थे।

जिस समय जूलियस सीजर सूबेदार (बासल) होकर बहा गया (५८ ई० पू०) उस समय रोमना व मित्र एडुई कबीले पर अरबनों और सीबानी के कबीले संयुक्त आक्रमण कर रहे थे। आपसी कलह के सिवा दूसरा सबट था मुण्डे जानि के खानाबखाना का। जमनी की आर से गाल पर घावा का वग उत्तरोत्तर बढ़ रहा था। एडुई कबीले ने राम से सहायता की प्राप्ति की जिसको जूलियस सीजर ने जा महत्वाकांक्षी था, प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करके अपनी सेनाएँ संचालित कर दी। शीघ्रता से बढ़कर पहले ता उसने एडुई प्रदेश में धमने वाले हटवेटाई खाना खदानों को हराकर पीछे हटा दिया। उसके बाद उसने सुएबी दल के नेता एरिओ-विस्म को वनों के समीप गेसा परास्त किया कि वे भाग सके ही नहीं हुए वरन् उनका दल ही छिन-बितर हो गया। जिससे बाघकाल के लिए रामन सीमात में आक्रमण की आशंका जाती रही। उसके उपरान्त धीरे धीरे उसने वल्लिज, गालिज तथा राइन नदी के आसपास के बचे-बचे गानाबदोगा का दमन किया। गाल में ही नहीं उसने ब्रिटेन के दक्षिणी पूर्वी तट पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। उसका सबसे भयंकर और निष्पायक दुष्ट अरबनों कबीले के योग्य राजा, कुशल सनातायक बरसिजटोरी ने हुआ जिसकी अध्यक्षता में गाल के रोमनों से उस युद्ध करीबाने विद्रोह ठाना। पहले ता सीजर का गगोंबिआ में हार उजानी पनी किन्तु अन्त में एलेसिजा मेदुरी तरह से धिरेकर बरसिजटोरी का हथियार रख देने पड़े। इस विजय से गाल पर रामना का जवाहित जाधिपत्य स्थापित हो गया और जूलियस के स्नापनित्य तथा शांति की धाक चारा और जम गयी (५१ ई० पू०)। सीजर ने गाल का दमन उसी नगसता करता, हत्या और आन्तपायिता के साथ किया जिसके लिए रामन मार साम्राज्य में बदनाम थे। सीजर को अपार धन सामग्री और सैनिक साधन प्राप्त हुए जिनकी आवश्यकता उसकी महत्वाकांक्षा का पूर्ति के लिए अनिवार्य थी। उसका यह भी विश्वास हो गया कि रोम का गणराज्य जारित और निगमन हो चुका है अतः साम्राज्य के शासन के लिए नये संगठन और विधान की आवश्यकता है तथा उसके लिए वह स्वयं मरसे शांति और

उपयोगी गामक सेनापति है। उमका सहायी श्रीसप्त पाथियना के युद्ध में मर चुका था। जत पाम्पे ही स उमे अपनी च वठाना शेष रह गया था।

सीजर की विद्वान्त शक्ति सनिव साधना और महत्वानाक्षा स घवराकर रोम की सेनेट ने पाम्पे का अपनी रक्षा करन के लिए एकमात्र कामल जयान टिकटेटर निवाचित कर दिया। उस नीति के लिए अच्छा दहाना भी त्सलिए मिल गया कि रोम में साजर के समथक क्लाडिअस तथा पाम्पे के समथक एनिअस मिला के गुण्डा ने गटर मचा रखा था और ऐसी अगाति फला दी थी कि रोमा की नाका में दम जा गया था। उमी मार पीट म क्लाडिअस मारा गया। त्ससे क्रुद्ध होकर उसके गुण्डा ने सेनेट तथा जय इमारता में आग लगा दी। पाम्पे और सीजर म मनोमालिय पला करने के विविध प्रयत्न किये जाे लगे। सीजर ने सेनेट से समझौता करने के लिए यह प्रस्ताव किया कि उसकी जीर पाम्पे की मेनाए भग्न जीर वितरित कर दी जाये किन्तु सेनेट म तत्नकल प्रस्ताव पास हो जाने पर भी विराधी दल। पाम्पे को उसके माने स च्कार करवा दिया। तदुपरांत सीजर का आदेश दिया गया कि वह गाल से रोम वापस आ जाय। त्स पर साजर ममय लौटा। जीर रदिकन नयी पार कर टटली म घसा। माग म उमन पाच छ प्रस्ताव समझौते क लिए किये जो असफल रहे। मगयामा पाम्पे सीजर क विरोधिया की असहिष्णुता क कारण तथा राजनीतिक अन्ता के कारण जनायास गृहपद्ध क जावत में फसता चला गया।

पाम्पे का गाल क सिवा सार साम्राज्य क साधन प्राप्त थे किन्तु उमक पाम तयार सेना नगण्य थी वह स्पन तथा साम्राज्य म इधर उधर फरी था। साजर क साथ लगभग पचास हजार तयार जीर अभ्यन्त सता थी तथापि वह ययाममन मुक्त वचाना चाहता था। त्समें उमका त्तनी मफन्ता अन्त्य हुई कि बवल सना-मचालन द्वारा मारी टटगी उमक जानक अयना सहातुभूति म उमने प। में हा गयी। त्मने बाद वह राम पट्टच गया। पाम्पे भी सीजर म बचकर उमन पल थी त्रिणि जिअम और टटला स वातर मना एकत्रित करन क लिए चला गया (४० ई० पू०)। साजर का राम को जनममा ने टिकटेटर निदका कर दिया (८८ ई० पू०)।

जहाजा की कमी स साजर पाम्पे का पीछा ट कर मचा। फिर भां यथाप्राप्त साधना म एकृजाति ममुद्र पारकर उमने पाम्पे का फरमन्त क भग्न में परगन्त कर (४८ ई० पू०) उमकी सता नितर त्रितर कर दा। पाम्पे नागा किन्तु साजर उमका अनवरत पीछा करता हुआ मिस्र पट्टचा। मिस्र में टात्मा क मत्रिया न

सीजर के मय से पाम्पे का वध करवा दिया। अनुमात सीजर यदि पाम्पे को पकड़ भी लेता तो उसका साथ पैसा व्यवहार न करना। मिस्र में सीजर कर वसूल करने तथा वहाँ के राजा बारह्व टोलेमी जीर उसका सुविद्यात वही मिलापट्टा क झगडा का निपटों के लिए अल्ब्रिगिया म ठहर गया। वहा क महत् म उम टोलेमी के सनिका तथा नगर के विद्राहिया ने कई महीना तक धर रखा। कुछ मनिका की सहायता जा जा पर सीजर अपने से अपने महायका से जा मिला जीर युद्ध करके बारह्व टोलेमी का उमो मार डाला। यद्यपि उमका छोटा भाई महयागी ग्रासक नियुक्त हुआ किंतु वास्तविक ग्रासन मित्रापट्टा के हा सुपुद हुआ।

जेर के युद्ध में मिथ्रेडस महान के पुत्र फारनेसम का हराकर (४७ ई० पू०) थेप्सस में केन्टार को परास्त करके अफ्रीका में (४६ ई० पू०) आर पाम्पे के ज्येष्ठ पुत्र का मत्ता में हराकर स्पत में (४५ ई० पू०), तीन चार वर्षों के भीतर ही भीतर ने साम्राज्य के सारे विद्राहिया का समा कर गति स्थापित कर दी। यद्यपि उसकी शक्ति अप्रतिहत थी किंतु वह रोमन सम्याआ जीर परम्पराआ का विनाश न चाहता था। यद्यपि वह जीवन भर के लिए डिक्टेटर बना दिया गया था तथापि उसने सम्राट होने की प्रत्यभ कामना कभी न की थी। अपन विगधिया के प्रति उसने उदारता और क्षमा का ऐसा व्यवहार किया कि लोग उसमें चर्चित ही नहीं हुए वरन उन्हाने उसकी क्षमा क उपलक्ष में एक मन्दिर की प्रतिष्ठा भी की।

गति-स्थापन के पश्चात् सीजर ने सुधार और संगठन का कार्य हाथ में लिया। उमके सामने मुख्य चार प्रश्न थे। पहला, रोम के विनाश साम्राज्य की व्यवस्था का संगठन आर सुधार तथा सीमाआ का सुत्त बनान की योजना। दूसरा राम नगर की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई जनसंख्या का नियंत्रण और नगर के स्वास्थ्य तथा जनता के रहने का प्रबंध। तीसरा गिना लगान वटाण क्षीण राय-काप की पूर्ति। चौथा सना को तुष्ट करके आवश्यकतानुसार वितरण।

अपने प्रथम उद्देश्य की सिद्धि के लिए साम्राज्य के प्राता का प्रबंध उमा एक प्रकार से अपने हाथ में ले लिया। मूवा क प्रमग गामका की सेवा की अवधि कम कर दी ताकि वे प्रबल न हो सके और ग्रासन म अधिक हस्तक्षेप न कर सकें। यद्यपि उस प्रबंध से कुछ हानि होने की समावना से इन्कार नहीं किया जा सकता तथापि सुवेदार क अधिकारा का कुछ नियंत्रण कर ही लिया गया। मूवा क लगान और टक्स कम कर दिये गये आर ठेकेदारा द्वारा वसूली करान की प्रथा हटाकर

घट वाम सम्म्या के सुपुत्र कर दिया गया। वष का गणना के लिए उमन चांद्र वष की गणना को हटाकर मिस्र की मूय गणना का प्रचलन किया जिसका लाभ उपका या हुआ। यह विधि थाडे परिचिनन स आजतक यराप और एशिया के जनक दशा म प्रचलित है। किसाना के लगान की मात्रा भी निश्चित कर दी गया जा पहल स कम थी। कई सूबा का उसने राम प्रा त क-स अधिकार लिगकर उम नवीन नीति का स्रपात किया जिमसे रोम इटली तथा जय प्रदेशा के सूबा म असमानता का भाव जाता रहा आर राजनीतिन तथा सासृत्विक सम्बन्ध द्वारा ऐनय की भावना उत्पन्न हुई। इटली के जा तिवासी सूबा में जाकर बस गये थे उह अपने पूव अधिकारा में प्रतिष्ठित कर दिया गया। इटली तथा रोम वाला का मुविघाएँ देकर सूबा में बसने के लिए उत्साहित किया गया जिससे वहाँ रामना की ससृति और सम्यता तथा स्थानीय ससृति और सम्यता में आदान प्रदान द्वारा सामजस्य स्थापित हा मके और सूबा में शान्ति तथा गकिन का अधिक सचार हा। सूबा में स्वल खाल गय जिनमें शिक्षा देने के लिए रामन भेजे जाते थे। सूबा की सीमाजा की रक्षा के लिए ममस्थाना को सुट्ट बनाने की योजनाएँ मीजर ने स्वय बनानी आरम्म की।

रोम नगर की जनमल्या करीब पाच लाख के हो गयी थी जिससे वहा का जन स्वास्थ्य जो पहले से ही अच्छा न था और अधिक खराब हो गया। रहने के लिए ही नही सरकारी कामा तक के लिए स्थान और भवना का अभाव हो गण। नगर में शान्ति बनाये रखने में कठिनार्द का अनुभव होने लगा था। सीजर की याजना थी कि टाइवर नदी की घारा बदल दी जाय जिससे नगर के बढने की गुजाइश निकल सक। नगर के मय भाग को साफ करवा के वहा पर अच्छी और बडी इमारत बनवाने की योजना भी उसने तयार करायी। समुद्र पार भूमि देकर शहर के अम्सी हजार आदमी वहा बसा लिये गये। शान्ति रखने के लिए उसने अपने मता नीत अफसर नियुक्त किये और धार्मिक तथा यापारिक सभा को छाडकर जितन प्राइवेट क्लब और सस्थाएँ थी अवष करार देकर बंद कर दी गय। यायालया में जनता के निवाचित यायाधीशा की नियुक्ति न करके उनकी जगह निष्पथ व्यक्तिया को स्थापित कर दिया गया। क्यार्कि जनता उसे अपना मता मानता थी वसलिए सीजर जनता को प्रसन्न रखना चाहता था, अत शार्मिक आवश्यकता पणे पर उपयुक्त प्रवन्ध से वह विमुल न होता था। पिछल आन्दोलना तथा अनाज की महँगी के कारण लगभग सवा तीन लाख जादमिया का मुफ्त अनाज बाटा जाता था। उसने डेढ लाख जादमिया को इस सुविधा स वचित करके मुफ्तखोरा का

मन्व्या कम कर दी और बाकी लोगों का उपनिवेश म भेज दिया । नगर म अनाज के अधिकधिक आयात के लिए एक नया बंदरगाह बनवाने की योजना कार्यान्वित की जाने लगी । इसके सिवा साधारण लोग का वन हलवा करने के लिए वज की रकम की एकत्र मारी न कर महाजना से सद की दर कम करा दी और अदा करने की सुविधा भी दिलवा दी ।

राजकाय तथा अपने काय की पूति तथा इटली के उद्योग धंधा की उन्नति के लिए उनमें विदशी माल पर टकम फिर से लगा दिया । इसके सिवा उनमें अमीरा तथा रोम राय के आश्रित राजाआ और नगरा से उनक अफिकाग के एवज में उपहार के तौर पर धन वसू कर लिया । इस विधि से साढे सत्रह कराट दीनार राज्यकोष म और ढाई कराड अपने काय म जमा कर दिये ।

सेना की तुष्टि का सबसे पहला कारण ता स्वयं उसका विजयपूर्ण और सफल नेतृत्व तथा व्यक्तित्व था । सनिका को वह इनाम इकराम मुक्त हस्त से प्रदान करता और जमीनें और पंगनें भी दिलवाना था । इसके सिवा उसने सनिका का वार्षिक वेतन एक सौ बीस म २२५ दीनार जो लगभग ११२ रुपये क बराबर था करा दिया ।

यह स्मरण रखना चाहिए कि सीज़र का जाधिपत्य केवल पांच वष तक रहा जिनमें चार वष तो विभिन्न स्थाना पर लड़ने भिन्ने और विरोधिया का दमन करने में ही व्यतीत हो गये । इस स्वल्पकाल म उसने जा सुधार किये क उसकी आश्चयजनक कमठ, प्रेरक तथा प्रवच शक्ति के ददीप्यमान प्रमाण हैं । वह केवल दाढ़ा और चतुर साहसी धयवान तथा निर्भीक मैनापति ही न था, वरन् बहुशुत तथा विचारशील लेखक तथा वक्ता भी था । उसमें उत्साह उद्यम शीघ्र तेज और प्रतिभा का अच्छा विकास पाया जाता है । उसके विचार और उसकी योजनाएँ बहुमुगी एव ऊर्जित थी । यदि वह अधिक काल तक जीवित रहना ता बहुत कुछ कर जाता और विशेष यग का अजन करता ।

सीज़र ने सेनेट के मदस्या की सस्या ७ सौ स नौ सौ करदी थी जिनम अधिकाश उमी के जादमी थे । सेनेट पर उसका इतना प्रभुत्व हा गया था कि उनक आज्ञानुमार ही सेनेट प्राय काय करती थी । उच्च और महत्व के पद या ता रिक्त रहत थे या उनको दिये जात थे जिनकी वह नियुक्ति चाहता था । उसकी गक्ति और प्रभाव की सेना, जनता तथा सेनेट आर शासन म अन्विवद्धि देखकर उसके विरोधी तथा गणतन्त्र में विश्वास करने वाले बुद्धते-जलते थे । यद्यपि उनकी

तन्ना बहुत कम था और यदि सीजर चाहता तो उन्हें सरलता से निरस्त कर सकता था तथापि एकाग्रियता तथा आत्म विश्वास के कारण उगने अग्रगण्य अथवा सुप्तचरा को भी रचना अनावश्यक समाना । पन्थत्र की सूचना मिलने तथा हित-पिया के आग्रह करने पर भी उसने अग्रगण्य रण। या सामन्त रहने सन्वार कर लिया । सम्भवतः वह यह भावना हागा कि लोका की उम पर अपार श्रद्धा है और राज्य तथा साम्राज्य के श्रेय के लिए उमकी अनिवाय आवश्यकता का जन्म लोका का निशेपन जब कि यह राम के प्रबल विगधा पार्थिवता से लड़ने के लिए जाने जाया था । जठारह मास का रोम में जाने की निधि निश्चित हो चुकी थी किन्तु पट्टह तारीख का पड्यत्रकारिया ने जिनके नेता पाम्प के अनुयायी बसियस और थ्रुग, जिनका सीजर ने धामा करके अपना विश्वासपात्र समझ लिया था, तथा ट्रिवोनियस के पचास गाठ सनट के सदस्या के साथ निरस्त सीजर पर जो मीटिंग के लिए एक मल्लम बमरे में प्रतीगा कर रहा था एकाएक आक्रमण करके उसकी हत्या कर डाली (१५ मार्च ४४ ई० पू०) । कहा जाता है कि पड्यत्रकारिया का मुख्य उद्देश्य गणराज्य की एक-साम्राट राज्य से रक्षा करना था । पड्यत्रकारी यह न समझ सके कि एक व्यक्ति के निघन से घटनाओं का वह प्रवाह एक न सकेगा जिसने भरिअस और सेला के समय से दूमरा पथ ग्रहण कर लिया था और जिसकी तरंग माला ने सीजर का उपर उठाया था ।

सीजर के मरणोपरांत मग्न वष तक रोम साम्राज्य में अज्ञान्ति जोर उथल पुथल मची रही । सनेट का जयवा गणतंत्र राज्य के पुनरुद्धार का प्रश्न जिनके लिए पड्यत्रकारी प्रयत्नशाल थे ओथल हा गया । सेनापतिया और सूबेदारों में सीजर के उत्तराधिकारी बनने के लिए तुमुल मघप होता रहा जिसमें सनिवा का ता भयकर निघन हुआ ही सनट के सकडा सन्स्या और हंगारा नागरिका के रक्त में राम तथा जय नगरा की जमीन रग दी गया । सीजर के रिक्नस्थान के लिये या तो कई सेनापति लालायित थे किन्तु उनमें तीन एण्टनी सेक्स्टस पाम्पे और जास्टेविअस सबसे प्रबल जोर प्रभावशाली थे । एण्टनी प्रगल्भ वक्ता कुशल सेनापति जोर बलधीयवान तथा साहसी व्यक्ति था । वह सीजर के प्रमुख अनुयायिया में था जोर उसकी हत्या का बन्ला लेने पर तुला हुआ था । एण्टनी ने क्लिआपटा से प्रमूत जलिअस सीजर के तीन बष के पुत्र का उत्तराधिकारी घोषित कर उसके नाम से कोषालि पर अधिकार कर लिया जोर उसका प्रतिनिधि बनकर शासन करना आरम्भ कर दिया ।

मेवमृग पाम्प बड़े पाम्पे का दीधवाय बलवान पुत्र मध्य सागर व जहाजी बेटे की नो-मीता का अघ्ण था और तीगर अठार वष का सीजर का दत्त पुत्र आठेविअम था । नवपुत्र होने पर भी महत्वाकांक्षा म यत् वम न था जीर चतुरता, नीतिगता तथा बटनीति में अपने प्रतिद्विधा से बहुत बड़ा चला था ।

आठेविअम ने एण्टना जीर लपिटस से समझौता करके आपस में अधिनार क्षेत्र बाँट लिया । उनका सवम पहला काम गीजर व बिराषी पड्य-प्रकारिया और उनका समझका का वष करना था । राम ने उहान का भी नदी बहा दी । त्रिम स्थान पर गीजर का अग्निदाह हुआ था उस पर एक मन्दिर बनवाने उगमें गीजर के देवता की प्रतिष्ठा की गयी । म्रूटम जार वेगिअम ने भर्गाडोनिया भागकर मोता एवमित का विन्दु उनको पिलिपी व युद्ध में सफलता न हुई । म्रूटम का वष हुआ और वेगिअम ने डरकर जात्महत्या कर ली (४२ ई० पू०) । बेचारा सिमरो ने अपनी योग्यता तथा वाग्मिता के कारण गणतंत्र राज्य का प्रबल पापक माना जाना था तलवार के घाट पहले ही उतार दिया गया । आठेविअम व सुपुत्र हुआ गेम्सग पाम्प का तमन तथा राम ने खर इटली और पदिचमी प्रान्ता की व्यवस्था । एण्टना ने पूर्वी प्रेशा, ग्रीस एसियाई वाचक तथा मिस्र में व्यवस्था स्थापना का काम जयन हाथ में लिया । आठेविअम को मोभाग्य ग अग्रिया जीर मसिनग नामक दो सुयाग्य और विश्वमनीय मन्त्री मिल गये । उसने गन गन अपना जहाजी बटा तथा म्यल मेना समिटिन कर ली और उसकी शासन-नीति मा लोकप्रिय एक गान्धि विधायक सिद्ध हुई । विन्दु एण्टनी पूर्वी प्राता में अपनी विजया तथा लूट-जमाटा से प्राप्त सम्पत्ति के बमब में मन्त हाकर अपनी प्रियतमा मिस्र की सुदरी रानी किलआपेट्रा के साथ ऐंगोआराम में समय और शक्ति का नाग करता जीर उपहामाम्पद बनना रहा । उसका आठेविअस से मल्लिए और भी भयकर सघप हुआ कि उसके बल पर ही किलआपेट्रा ने यह दावा किया कि सीजर से उसकी वास में जो पुत्र हुआ है उसी का सीजर का उत्तराधिकारी होना चाहिए । यदि उसका वह अमिलापा पूरा हो जाती तो उसका जाधिपत्य सार राम साम्राज्य पर स्थापित हो जाता । इगमें सदेह नहीं कि किलआपेट्रा में अनेक गुणा का समाहार हुआ था । प्रतिभा, वाक् चातुय, नीति, वायकीगल, बुगाप्र बुद्धि सतकता, प्रबुद्धता, युद्ध-नेतृत्व, अनेक-कला विलास आत्मविश्वास, उरसाह, साहम, धीरता आदि गुणा से विभूषित होने पर भी सौंदर्य, माधुय बामलता, लालित्य तथा रसगना की उसमें विशेष मात्रा थी । उसकी समानता की गिनी चुनी कुछ ही स्त्रियाँ इतिहास में मिल सकेंगी ।

अपरिमित मात्रा में मद्यपान करने पर भी उससे यह कभी अभिभूत नहीं हुई। उसी गुणा के कारण उसने सीजर और एण्टनी का अपनी मुठ्ठा में कर लिया था। उनके सिवा उसका अनुराग या समग अथ पुरपास न था। किलआपेट्रा का दाया और एण्टनी जैसे अनुगामनवर्ती सहायक की सहायता जावटविअस के लिए धार चिन्ता के विषय हो गये। अततागत्वा एग्रिपा के पूण सहयाग और एण्टनी की लापरवाही से जावटविअस को जहाजों युद्ध में पूण विजय हुई। अपनी मनाक शत्रुस मिल जाने के कारण तथा अपनी नौ शक्ति की क्षीणता देखकर और यह झूठी अपवाह मुनकर कि किलआपेट्रा की मृत्यु हो गयी, एण्टनी ने आत्महत्या कर ली (३१ ई० पू०)। उसकी मृत्यु की खबर पाकर किलआपेट्रा ने भी आत्मघात कर लिया। वह समझ गयी कि जावटविअस उससे सह न सवगा।

रोम (३)

गणतन्त्रविह्वलना सम्राट् शासन

जावटविअस (२९ ई० पू० १४ ई०) का स्वभाव और उसकी नीति अपने धर्म पिता जूलिअस सीजर से अनेकानक अगा में विभिन थी। जूलिअस सामन्ता के से राजसिक छोट वाट शान शीकत व्यग्रता चपलता और अनावत आधिपत्य के प्रदर्शित करने में स्वभावत नि शक था। किन्तु जावटविअस सरल साधारण गभीर सावधान, मृदमदर्शी गूढनीतिन मितव्ययी, सयमी जयग्र शिष्टाचार प्रिय और परम्परागत विचारा तथा भावनाओं का आदर करने वाला शक्ति था। उसकी रूपरेखा और विचारशैली साधारण रोमन नागरिक की-सी थी। पुरानी परम्पराओं और विश्वासा का समायन करने हुए वह उनका ऐसा सपोजित जयवा व्यवस्थित करना चाहता था।

तथा पदा का परिभाषा करने क्षमता का स्थ, साम्राज्य तदनुकूल उसका	समस्याओं, उनमें घटा उन्हें नये, अ	सक। पुरानी मर्यादा चत एव प्रचलित योग्य अनुप्राणित एव सामनिक उसकी मर्यादा नागरिकों में जाग्रत करने करना।
---	-----------------------------------	---

आक्टोविअस ने शासन के आरम्भ में हा पुराने देवताओं का मन्त्रिणा का जीर्णोद्धार करवा दिया और परम्परागत पूजाविधि का प्रचलन कर दिया। नवीन देवताओं और आचार्यों का बहिष्कार करवा दिया गया। कुछ वर्षों के बाद उमने उन वानूनों को, जो अवध प्रतांत हुए रह कर दिया। इसके पश्चात् उसने सम्कार-पूर्वक अपने उन अधिकारों को, जो आपत्तिकाल की तीव्रता के अनुसार अवध ढग से ग्रहण कर लिये गये थे, सेनेट और जनता का वापस कर दिया और उनके सदुपयोग के लिए उनका प्रेरणा दी। उसकी विजया, शांति स्थापन की क्षमता क्षमानीति और अभयदान से सबसाधारण जनता पहल ही में प्रभावित थी। अवध अधिकारों के उमके समपण से जनता में विश्वास उत्पन्न हो गया कि वह नि स्वाथ निर्लौभ, कृत-य-परायण और निश्छल जन-सेवक है। उसकी उदारता, दाम्भिय और त्याग तथा सरल जीवन का जनता तथा सेनेट पर ऐसा जादू चला कि वे उसके निर्दिष्ट पथ पर चलना ही श्रेयस्कर समझन लगे। बिना मागे ही उसको आगस्टम (महा महिम) प्रिसेप (प्रमुखाधीश), इम्पेरेटर (महाधिपति) आदि उपाधिया से जनता ने विभूषित कर दिया। उसको दम वष के लिए सर्वाधिपत्य, अखिल सय का संना-पतित्व, सधि विग्रह के पूण अधिकार, सूबा का प्रमुख निरीक्षण एव नियन्त्रण और मोरिया, मिन्ध, स्पेन, गाल सूबा की एकमात्र सूबेदारी प्रदान कर दी गयी। इटली तथा राम के अत और जल का सम्भार, पुलिस का शासन तथा जन-धन का नियन्त्रण भी उमी के सुपुद कर दिया गया। राम राज्य तथा साम्राज्य के सब बडे अथवा गण्यमाय पदाधिकारी भी उसकी छत्रछाया में रख दिये गये। साराश यह कि उसका नाम को छोडकर व्यवहार में व सब अधिकार जो सम्राटा के होते थे सबध मिल गये। केवल इतना भेद अवश्य रह गया कि उसका जाधिपत्य वशानुगत न बनाया गया जिससे उसने पद का चुनाव सेनेट के अधिकार में रहा। प्रत्येक व्यक्ति को निवाचन का अपेक्षी रहना पडता था। आक्टोविअस को उपयुक्त अधिकार एक साथ न मिलकर धीरे धीरे बिना सनसनी पदा किये हुए प्राप्त हाते गये।

उस पर श्रद्धा बिद्वाम होने के कारण उमके निर्देन के अनुसार सेनेट के सदस्यो को सख्या कम कर दी गयी। अवाचित मदस्य निकाश दिये गये। सनट की सदस्यता के चुनाव में उसका हाथ रहता और जिमे वह चाहता निकलवा देता था। यद्यपि वह उच्च कुल जाति के व्यक्तिया को ही प्राय सदस्य चुनता तथापि किसी का भी चुनन की पूण स्वतंत्रता उसे थी। यही नही, वह जिन विषया को उठाना या राकना चाहता था, सेनेट तदनुसार ही करती थी। यद्यपि सेनेट उसकी इच्छाओं और

अपरिमित मात्रा में मद्यपान करने पर भी उससे वह कभी अभिभूत नहा हुई। उही गुणा के कारण उसने सीजर और एण्टनी का अपनी मुट्ठी में कर लिया था। उनके सिवा उसका अनुराग या समग अय पुरपा से न था। क्लिआपटा का दावा और एण्टनी जस अनुशासनवर्ती सहायक की सहायता आक्टोविअस के लिए घोर चिन्ता के विषय हो गये। अततोगत्वा एग्रिपा के पूण सहयोग और एण्टनी की लापरवाही से आक्टोविअस का जहाजी युद्ध में पूण विजय हुई। अपनी सना के शत्रु से मिल जाने के कारण तथा अपनी नौ शक्ति की क्षीणता देखकर और यह झूठी अफवाह सुनकर कि क्लिआपटा की मृत्यु हो गयी, एण्टनी ने आत्महत्या कर ली (३१ ई० पू०)। उसकी मृत्यु की खबर पाकर क्लिआपेट्रा न भी आत्मघात कर लिया। वह समझ गयी कि आक्टोविअस उसको सह न सकेगा।

रोम (३)

गणतंत्रविट्म्वना सम्राट् शासन

आक्टोविअस (२९ ई० पू० १४ ई०) का स्वभाव और उसकी नीति अपने घम पिता जूलिअस सीजर से अनेकानेक अंश में विभिन्न थी। जूलिअस सामन्ता के स राजमिक टाट बाट गान शोक्त व्यग्रता चपलता और जनावत आधिपत्य के प्रवर्णित करने में स्वभावत नि शक था। किन्तु आक्टोविअस सरल साधारण गभीर भावधान सृष्टमदर्शी, तूटनीतिग मितव्ययी, सयमी अव्यग्र शिष्टाचार प्रिय और परम्परागत विचारा तथा भावनाआ का आदर करने वाला यकित था। उसकी स्परन्वा और विचारगली माधारण रामन नागरिक की-सी था। पुरानी परम्पराजा और विश्वासा का समादर करत हुए वह उनका ऐमा सयोजित जयवा व्यवस्थित करना चाहता था जिससे तत्कालिन समस्याआ की पूर्ति हो सन। पुरानी मस्थाजा तथा पदा का परिव्वार करके जयवा उनम घटा-बन्ती करके सुपरिचित एव प्रचलित परिभाषाआ का प्रयाग करत हुए वह उहे नये अर्थों तथा उपयागा में अनुप्राणित करके श्ष्ट मिद्ध करने में निपुण था। उसके सामन मुख्य प्रश्न थे गान्ति एव गान्तिक क्षमता का मस्थापन भयापहरण गणतंत्र शासन का उद्धार करक उसकी मयाग का स्थापन साम्राय के गानन का सुधार और सगटन। राम के नागरिका में साम्राय के गौरव की चेतना तथा उनक प्रति श्रद्धा और कत यनिष्ठा जाग्रत करत तन्नुकूल विधान रचना की आवश्यकता मिद्ध करत हुए उनका पय प्रदान करना उसका मुख्य ध्यय था।

आक्टोविअस ने शासन के आरम्भ में ही पुराने देवताओं के मन्दिरों का जीर्णोद्धार करवा दिया और परम्परागत पूजाविधि का प्रचलन कर दिया। नवीन देवताओं और आचार्यों का बहिष्कार बन्द किया गया। कुछ वर्षों के बाद उसने उन कानूनों को, जो अवध प्रतीत हुए रद्द कर दिया। इसके पश्चात् उसने सम्बार-पूर्वक अपने उन अधिकारों को, जो आपत्तिकाल की तीव्रता के अनुसार अवध ढंग से ग्रहण कर लिये गये थे सनेट और जनता को वापस कर दिया और उनके सन्तुषाण के लिए उनका प्रेरणा दी। उसकी विजया, शांति स्थापन की क्षमता, क्षमानीति और अमयदान से सबसाधारण जनता पहले ही से प्रभावित थी। जबकि अधिकारों के उसके समर्थन से जनता में विश्वास उत्पन्न हुआ गया कि वह निस्वार्थ, निरलोभ, कर्तव्य परायण और निश्चल जन-सेवक है। उसकी उदारता, दक्षिण्य और त्याग तथा सरल जीवन का जनता तथा सनेट पर ऐसा जादू चला कि वे उसके निर्दिष्ट पथ पर चलना ही श्रेयस्कर समझने लगे। बिना मागे ही उसका जागस्टस (महामहिम) प्रिसेप (प्रमुखाधीश) इम्पेरेटर (महाधिपति) आदि उपाधियाँ से जनता ने विभूषित कर दिया। उसका दस वर्षों के लिए सर्वाधिपत्य अखिल सैन्य का सेनापतित्व, मन्त्रि विग्रह के पूर्ण अधिकार, सूबा का प्रमुख निरीक्षण एवं नियंत्रण और सीरिया, मिस्र, स्पेन, गाल सूबा की एकमात्र सूबेदारी प्रदान कर दी गयी। इटली तथा रोम के अन्त और जल का सम्भार पुलिस का शासन तथा जन-पथा का नियंत्रण भी उसी के सुपुत्र कर दिया गया। रोम राज्य तथा साम्राज्य के सब बड़े अथवा गण्यमान्य पदाधिकारी भी उसकी छत्रछाया में रख दिये गये। माराश यह कि उसको नाम को छात्रक व्यवहार में वे सब अधिकारों का सम्राट के होते थे मर्बध मिल गये। केवल इतना भेद अवश्य रह गया कि उसका आधिपत्य वगानुगत न बनाया गया जिमसे उसके पद का चुनाव सनेट के अधिकार में रहा। प्रत्येक व्यक्ति को निर्वाचन का अपक्षी रहना पड़ता था। आक्टोविअस को उपयुक्त अधिकार एक-साथ न मिलकर धीरे धीरे बिना मनसनी पदा किये हुए प्राप्त होते गये।

उस पर श्रद्धा विश्वास होने के कारण उसके निर्देश के अनुसार सनेट के सदस्यों की संख्या कम कर दी गयी। जवाहित सदस्य निकाल दिये गये। सनेट की सदस्यता के चुनाव में उसका हाथ रहता और जिसे वह चाहता निकलवा देता था। यद्यपि वह उच्च कुल जाति के व्यक्तियों का ही प्रायः सदस्य चुनता तथापि किसी का भी चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता उसे थी। यही नहीं, वह जिन विद्वानों को उठाना या रोकना चाहता था, सनेट तन्नुसार ही करती थी। यद्यपि सनेट उसकी इच्छाओं और

आज्जा वा आन्डर और पालन करनी थी जिगम यह कहा जा सकता है कि सनेट ने अपने अधिकार स्वतः का स्थि तयापि जात-विभ्रम द्वारा उमका सम्मान तया मन्म्या क सामाजिक और आर्थिक लागा और मान मर्पांग वा रणा र्णा राने क कारण याहाम्बर पूर्ववत् ही वापस रहा । अपनी सामाजिक नीति क अनुा जात-विभ्रम न सनेट क मन्म्या वा ममाज में सबसे ऊंचा म्याग वापस रगा ।

जब समा (जगम्वली) का परिष्कार भी उमन उमी प्रकार कर दिया । राजनीतिक दला का उन सत्याथा का जा उपद्रव रणा किया करनी था उमने परत ही बन् कर दिया था । समा म जा भ्रष्टाचार और जव्वम्या फणी हुई था उमका दमन किया गया । यद्यपि विधान की परम्परा क जुगार अमन्म्या का ही जनिम जाधिपय माना जाता था तयापि व्यवहार म वह जात-विभ्रम की च्छानु यनिना थी । उमी क नामजद व्यस्तिया का वह मजिस्ट्रेट चुननी और उमर मज हुए प्रस्तावा का पास कर देती थी । उमका नीति न जसम्बली का मट्ट व एन प्रकार म मन् क लिए गष्ट कर दिया ।

जात-विभ्रम न ऐसी नीति और परिष्कार का जवलम्बन किया जिमसे प्रजा श्रेणी बढ ही गया । वह रामन जाति की गुद्धता और रवन रक्षा का बडा हामी था । यथासाध्य वह बणसकरता का विराधी और परम्परा का प्रमा था । पुरानी धार्मिक सत्याथा बपमूपा तया रहन-महन के पुन सम्थापन क लिए वह प्रयत्नगील रहा । पुरानी सामाजिक व्यवस्था का उजीवित करव स्वायित्व देने का प्रयत्न करता रहा । राम तया छट्ठी की गुड रसन की जनता का वह राजवणी मानता और उमको अय लागा जथान प्रान्तीय या विन्गीय लागा मुक्क दामा अथवा अय दासा मे पयन एव थ्येष्ट स्थान देता था । उसक मामने सरल और उद्यमशील हान का आन्श रक्कर वह उसम स्फूर्ति साहस आत्माभिमान एव कलव्यपरायणता के मचार के लिए प्रयत्न करता रहता था । बयवितव एव सामाजिक जीदन में घर और बाहर, उत्सवा और बाजारा में गिष्टाचार के पालन का वह जनता से सक्रिय आग्रह करता और कानूना द्वारा उसका प्रवर्तन कराता था । उपयुक्त सुधारा तया नियमा का यह प्रभाव पडा कि राम वाला में एकता तया जातीयता के भाव बढ हो गये । परम्परागत जीवन विधान म यह क्षमता ला रहती ही है चाहे और कुछ भी दोष क्या न हा ।

महत्व के नम से प्रजा में सनेटर भट, रोम के साधारण जन और मुक्त या अमुक्त दास थे । भटा की श्रेणी आक्टेविअस ने इसलिए प्रतिष्ठित की कि उससे उत्कृष्ट

सैनिका आर नागरिका का उन्मव स्तुष्टि एक सम्मान हा सके । उम श्रेणी मे म्यान प्रदान करने अथवा उमसे वहिष्कृत करने का अधिकार उमने अपने ही हाथ में रखा । उमकी सदरसता वयनिक जीवन काल के लिए थी न कि वशागत । उमसे मूत्रेदार सम्राट के उच्च पदाधिकारी तक नियुक्त हा मकते थे । भट श्रेणी सम्राट की मुद्रापक्षिणी और उमकी जनवतिनी रहता थी । प्लीवियन श्रेणी म व थ जो न तो सेनेटरा म ग भटा में ही गिन जा सकते थे । राम की जनता प्राय उममें थी । दासा के लिए अथवा मुक्त दासा के लिए उमम म्यान न था । आवटेविजस ने ऐम कानून बनाये जिनमे लाग अपनी-अपनी श्रेणी में विवाहादि सम्बन्ध करें उसी की मान-मयादा में रहे और उसे जतिनमण करन का प्रयत्न न करें । दामा क लिए मुख्य क्षेत्र मका और मजदूरी का ही समया गया ।

आवटेविजस साम्राज्य क अधिकाधिक विस्तार करने क पक्ष म न था । उसकी धारणा थी कि साम्राज्य पराकाष्ठा तक पहुँच चुका है और उसमें जागे बन्दना अनावश्यक नया अहितकर हागा । जत उसने साम्राज्य की अत्यन्त आवश्यकताएँ सोचकर कम-से-कम प्रदेश साम्राज्य के अन्तर्गत किये । सीमा के समीपस्थ राज्या अथवा जातिया से यथामुम्भव गान्ति विधायक समझौते उसने कर लिये, जिनसे दाना आर से छेड़-छाड़ र्क गयी । राइन और डेन्यूव नदी का ही यूरोप म उमने साम्राज्य की सीमा निश्चिन किया ।

मनिका की सत्या उसने जाघी स भी कम कर दी किन्तु शेष सेना का भरता, सेवाफल, वतन तथा अनुशासन क नियमा का परिष्कृत और निश्चिन कर लिया । उमके शासन म सेना सम्राट् भक्त रही । साम्राज्य के बहन हुए खच के कारण सूबो पर टक्स बढा दिय और अधीनस्थ रजवाडा से अत्रिक भट ली गयी । वहाँ के निवासिया का कुछ अधिक कर देना स्वीकार था क्याकि वे अव्यवस्था, रिम्पत, मनमानी करा तथा गागा से ध्वर्षित हा गये थे ।

बृद्धावस्था आने पर उमने ग्राइवेरिअम का अपना उत्तराधिकारी बनाना निश्चिन कर उसकी दीक्षा और मयादा का उन्नत करने के यथासम्भव प्रयत्न किये और अपने जीवन काल में ही उसका वम योग्य बना दिया कि वह साम्राज्य का भार बहन कर सके । स्वतालीम वय तक मफल शासन करके वह परलावगामी हुआ (२७ ई० पू०, १४ ई०) ।

गान्ति, मुख्यवस्था, राजकोष की सम्पन्नता, प्राता के बढने हुए सम्पक तथा ग्रीस, पदिचमा एशिया और मिल्की सम्भता तथासकृति के मसग से राम म क

साहित्य, तभी गामनाभा और उगार विचारों की अच्छी उभार हुई। उगार गामना-
बाल राम के इतिहास का 'स्वर्ण युग' माना जाता है।

टाइबेरिअस गुप्त गामनाभा था। उगार गाम इन्हीं तथा प्रान्तों के गामना
और गामनाभा का ध्यायहारित अनुभव भी था। किन्तु उगार कुछ विषय दाग
भी थे जिन्हें कारण वह सफ़ाता प्राप्त करने में अगम्य रहा। वह गमरणीय
गुणा, अवगमन गामनाभुलित और गामनाभा था। अपन गुप्त, प्रमूनि गामनाभा
और पराक्रम के कारण उगारमें अभिमान का मात्रा इतनी बढ़ गयी थी कि वह गामना
रण जना का उगार और अनार के दृष्टि ग दगता था जिसे कारण वह ला
प्रिय न हो सका। वस्तुतः उगारमें लाग घमरात डरत और अगनुष्ट रत थे।
मितव्ययी होने के कारण जनता का प्रमन्न तथा अनुरक्त रण बाल कामा थाडाया
उगारवा दान-दा गामना जनागमायी इमारता आदि के प्रति वह गवया उगमान
रहता था। गहजनित पड्यत्राने उगार चित्तमें उच्चान्त उत्पन्न कर लिया जिसे
रोम छाडकर वह प्रेपी में रहने लगा। फिर भी उगार समय में गामन म काई
विचारणीय गमित्य न होने पाया, यद्यपि पनन के बिह कुछ-कुछ दिग्दाइ पनन
लगे थे। उसकी मृत्यु ३७ ई० में हुई।

उसके पदचोत्त प्रमन्न बलीगुला, क्लाडिअस आर नारा सम्राट हुए किन्तु
तीना निक्ममे निष्टुर निष्टयी जसयमी सिद्ध हुए। उनके गमय में गुलामा, पड-
यत्रकारिया लुटरा हत्यारा और आततायिया की घूम रही। उनके समय राम
के इतिहास का लज्जाजनक काल कहा जाता है। उनके समय में व्यवसायहीन
लफगा, मुफ्तखोरा गुण्टा और अधम लोमा का बालबाल रहा।

बलीगुला न जा वेजा कर लगाने शुरू कर लिये। उगारके लिए उगार
नजराने, गुलामा के प्रत्य वित्रय तथा वस्तुआ की वित्री और वग्याआ की विमिन
बेलि तथा सहवास क्लाआ पर टकम लगाये। वह अपन का दवता मानता था
और अपना पुराहित उगार एउ घोट का नियुक्त किया। दुव्यसनी और व्यभिचारी
हाने के कारण उन्तीस वष की आयु में ही वह जीणशीण हो गया। क्रुद्ध हाकर
अगरक्षका के एक नेता ने उसका वध कर डाला।

क्लाडिअस भी नितान्त निकम्मा निकला। अपन पुत्र नीरो के उत्तराधिकार के
छिन जाने के डर में उगारकी रानी अग्रिपिना ने उस जहर देकर मार डाला।

नीरो की शिक्षा ग्रीक साहित्य तथा आचार शास्त्र में हुई। अग्रिपिना ने उस
दशन इसलिए नहीं पढवाया कि उससे वह गामन के योग्य न रह जाता। उसका

नष्ट पर अच्छा अधिकार था। बालने जोर लिखने में उस अच्छी क्षमता थी। कुछ कविता भी कर लेता था। गाना भी गा लेता था। अथ कलाएँ भी कुछ-कुछ सीख ला थी। व्यायाम, व्यभिचार तथा भेष बदलकर गुण्डइ करने का उसे श्यसन था। उमून टैक्स कम कर दिये। प्राणदण्ड वह लाचारी से ही दता था आर क्षमा का पक्षपाती था। नववयस्क होने के कारण शासन की दागडोर उसने अपनी माता अग्रिपिता के सुपुत्र कर दी। फिर लागा के कहने पर उसने जब शासन अपने हाथ में लेना चाहा तब माता ने उसका नवली पुत्र का अभियाग लगाकर पदच्युत करने की धमकी दी। नीरा ने माता का जन्ततागत्वा मरवा डाला। उसने एक इमीन गुलाम को जास्ता करवाकर उससे विवाह भी कर लिया। ऐयागी फैंलमूफी टमारता इनामा में उसने खजाना खाली कर दिया अमीरा जोर मदिदा का धन चूटा तथा साने चानी का मूर्तिया का गलवा डाला। एसा के समय में वह भयकर भूचाल आया जिससे पाग्पिआई नगर धरती में समा गया। आखिरकार उत्तरा गाठ में राजद्राह की आग सुलगी और स्पन के सेनापति गेल्वा न विद्राह का झण्डा उठाया जिसने ऐसी परिस्थिति पदा कर दी कि नीरा का उसके नौकर चाकरा के सिवा कोई सहायक न मिला। सनेट ने सुअवसर समयकर नीरो का पदच्युत कर दिया और टण्डा से मार डालने का फमला द दिया। उस घोपणा स अस्त हाकर उमा ग्वय आत्महत्या कर ला (६८ इ०)। नीरा की मत्यु से सुविग्यात जूलिआ क्लाडियन बश का पतन हा गया।

रोम (४)

सन ६९ ई० म सम्राट के जासन के लिए स्पेन, रान्त, डेयव पनामिया तथा नीरिया के सेनापतिया में धार युद्ध हाते रह जोर मारी रक्तपात हुआ। अततोगत्वा मीरिया के सेनापति प्लविअस केम्पमिया का सम्राट होने का श्रेय प्राप्त हुआ। उमी के उत्तराधिकारी फ्लेविअन बशी सम्राट कहे जाते ह। उपयुक्त सघष म यह स्पष्ट हा गया कि सम्राट का चुनाव मनेट के हाथ म नहीं बरत सफल सेनापति के हाथ में चग गया। इसके सिवा यह भी सिद्ध हा गया कि सम्राट का उच्चकुलीन रामन हांना आवश्यक नहीं है और यह कि उसका वास्तविक निर्वाचन रोम के बाहर से भी हो सकता है। वेस्पेमिअन न ता इटली में ही उत्पन हुआ था और न किसी उच्च कुल से ही उसका सम्बन्ध था। वह साधारण राजसेवका में भरती किया गया था। सघष का महत्वपूर्ण दूसरा पक्ष यह था कि प्रत्येक सेनापति ने अपन स्वल्पकालिक

शासन में अपने-अपने प्रांतों के निवासियों का राम की नागरिकता प्रदान करा दी थी जिसका अपहरण किसी भी सम्राट के लिए भयावह मान के कारण अनुचित और अपावहारिक हो गया।

वेस्पेसिअन के समय में उपयुक्त परिवर्तनों के अतिरिक्त यह भी प्रयत्न हुआ कि सम्राट का चुनाव पुत्रवन्दी बना दिया जाय। सम्राट लोग अपने-अपने जयवा दत्त पुत्र का अपना उत्तराधिकारी घोषित कर उस सीजर की उपाधि में मणित करके लाके में उसका महत्त्व प्रतिष्ठित करने लगे थे। विधान शास्त्रियों ने उस एमाप्ट दिया जिससे वह पद पुत्रवन्दी ताहा जाय किन्तु परम्परागत चुनाव का आठम्वर भी कायम रहे। इस दुष्कर प्रयत्न में उन्हें 'यूनाधिक संपत्ति' भी प्राप्त हा गयी। वेस्पेसिअन ने सादगी और मित-ययिता को पुनः स्थापित करने का प्रयत्न किया। उसने शिक्षा के प्रसार और उपयोगी भवनों के निर्माण कराने में तथा मूकम्प द्वारा नष्ट नगरों का सहायता प्रदान करने में उत्तरता लिखायी। गरीबों की महायता के लिए उमने विशाल दवालयों तथा कालीमिअम (स्टेडियम) आदि का निर्माण कराया। उनके निर्माण में उसने यन्त्रों का प्रयोग इसलिए मना कर दिया कि जिससे अधिकाधिक आदमियों का श्रम द्वारा जीविकोपाजन का अवसर मिल सके। आर्थिक स्थिति ज्या-ज्या सुधरती गयी, त्या-त्या उमने टक्स कम कर दिये। इस नीति का पालन उसने उत्तराधिकारी न कर सके। शासन का खर्च फिर बढ़ने लगा जिसके लिए डोमीशियन सबसे ज्यादा जिम्मेदार था क्योंकि सेना को मन्तुष्ट रखने के लिए उसने वेतन खर्च तीन सौ से चार सौ दीनार वार्षिक बढ़ा दिया था।

फ्लेवियन वंश के राज्य काल में पेल्ल्टाइन के यहूतियों से घोर युद्ध हुआ और बड़ी कठोरता से उनका दमन किया गया। उनका विविष्ट देवस्थान जेरुसलम का मन्दिर सहित विध्वंस कर दिया गया घम-प्रघार अवध घोषित कर दिया गया और वहाँ के बचे-बचे लोग गुलाम बना लिये गये। विद्रोह की आग राइन तथा उत्तरी गाल में मड़की किन्तु वेस्पेसिअन ने उसको भी शांत कर दिया। ब्रिटन में वेल्स और स्कॉटलैण्ड की तराई तक रामने आधिपत्य स्थापित हा गया। डोमीशियन ने राइन तथा टैचूव की सीमाओं का सुदृढ बनाकर वहाँ रामने सेनाएँ नियुक्त कर दीं। फ्रांस घाटी तथा एशियाइ कोचक को भी समर्थित करने का थाडा-बहुत प्रयत्न किया गया। उन सब प्रयत्नों के कारण सूबा और प्रदेशों में शान्ति स्थापित हुई जिससे वहाँ की प्रजा की आर्थिक दशा भी समलन लगी। रोम साम्राज्य में स्थिरता, शान्ति तथा आत्मविश्वास स्थापित करने के कारण वेस्पेसिअन वरीव-वरीव

उतना ही लोकप्रिय हो गया जितना जाकटेविअम था। मरणापरांत उसका देवत्व की प्रतिष्ठा प्रदान की गयी, किन्तु डामीशियन वं विरुद्ध बयवित्त स्वतन्त्रता चाहने-वाले गणतन्त्रवादी पक्ष करतने लगे। उनको कठिन दण्ड भी दिया गया तथापि साक्षिणों चलनी रही। अन्ततः उमकी रानी टोमीशिया की प्रेरणा से छुरा मारकर वह मार डाला गया। सनट के प्रस्ताव से डामाशियन का नामानिधान सत्र स्मारक से हटा दिया गया।

सेनेट ने नर्वा नामक एक प्रसिद्ध कानूनदा का सम्राट नियुक्त किया। वह सेनेट का आदर करता था। दृष्टी की जनसंख्या तथा खेती का उत्थति के लिए उसने विशेष ध्यान दिया। यद्यपि वह शान्त विधान और कला में निपुण था तथापि ब्यावहिक होने तथा युद्धकला में अनभिज्ञ होने के कारण उसका कठिनाइया का अनुभव होने लगा। अतः उसने उत्तरी जर्मनी के सेनापति ट्रेजन को अपना उत्तराधिकारी एवं महयागी नियुक्त कर दिया। संयोग से नवा तथा उसके पश्चात् के दो सम्राटों का कार्य सत्ता में थी जा अधिकार के लिए लड़ती मिलती अतः उन सम्राटों का अपना उत्तराधिकारी चुनने में स्वतन्त्रता रही, जिसका उद्देश्य अच्छा उपयोग किया और चुनाव की अच्छी परिपाटी का प्रचलन कर दिया। नर्वा तो दो ही वर्ष तक राज्य कर सका किन्तु उमकी मृत्यु के बाद प्रमग ट्रेजन, हेडियन एण्टानियम, ग्रारि लियम सम्राट हुए। वे सभी योग्य और प्रभावशाली व्यक्ति सिद्ध हुए जिनके शासन-काल पञ्च शुभगुणी शासकों का युग नाम से रोम के इतिहास में प्रसिद्ध है।

ट्रेजन

उपयुक्त युग में मनुष्य उत्कृष्ट तथा साम्राज्य-व्यवस्था के कारण ट्रेजन का स्थान ऊँचा है। वह अपनी सहनशीलता शिष्टाचार और शौर्य, शिभा तथा विद्वान के संरक्षण और संवर्द्धन, लोकोपयोगी रचनात्मक कार्यों—जैसे मठों का इमारता घाटा, पुलों का विजय स्तम्भ आदि के निर्माण के कारण लोकप्रिय हो गया। साम्राज्य को दृढ़ और व्यवस्थित बनाने के लिए उसने रामना में रण प्रियता और विजय कामना को उत्तेजित करने का प्रयत्न किया। 'सदा उद्यत दण्ड' वाली नीति का अवलम्बन कर उसे साम्राज्य को सुदृढ़ बनाने का श्रेष्ठतम उपाय उसने मान लिया। तदनुसार साम्राज्य के सीमा प्रांतों के आस पास के राज्या अथवा कबीला पर आक्रमण कर उनका दमन करने में वह लग गया। डैन्यूब नदी के निचले प्रांतों में डेनिया नाम का एक प्रांत था। वहाँ के तथा आसपास के रहने वाले ने संघ बनाकर डेसि-

प्रेतग रामन एव मुगल यादो का अपान नात नियुक्त किया था । उक्त सतर म राम राज्य व निरटम्य भूया पर व आप्रमण करन लगे । यद्यपि कई बार रामन ना न उनका दरान व प्रयत्न निय किन्तु यद्यपि सफलता प्राप्त न हुई । आगिर लानार हाकर सम्राट डार्मिगियन न उनको शान्त रगन व लिए निश्चित धार्मिक रम दना स्थाकार कर लिया । सम्राट हान पर ट्रेजन न रम दना बन् कर दिया और उन पर चडाई कर ली । डमिथलम का परास्त करव उमव गद विध्वंस कर दिया । मागी मगान जीर अस्त्र छीन लिये और डगिया म अपने गद बनवाकर उनमें रोमन सनिक नियुक्त कर दिया । इस निष्पूर नीति स डेगिया व कबीला म अमनाप की आग मुग्गी रही । अतस्तागत्वा ट्रेजन का उन कबीला व प्रान्त का जीतकर साम्राज्य व अनगत कर गना पडा (१०६ ई०) । ट्रेजन ने ईसाई धर्मा धलमिया व प्रति उदार और सहिष्णु नीति का पालन किया । यह स्मरण रसना चाटिए कि ईसाइया व सिद्धान्त उन सिद्धान्त व अनुकूल न थ जिनपर राम का सामाजिक सामृति एव नतिक जीवन जलधित था ।

ट्रेजन ने दमिस्क और गाल गागर व बीच रहन वाले कबीला का परास्त कर उन व प्रदशा का भी साम्राज्य म मिला दिया जिससे मसापनमिया जीर लाल सागर व बीच व व्यापार मार्ग राम के अधिचार में आ गये । उसी प्रकार पार्थिया व जाधिपत्य स जारमीनिया छीनकर रोम का प्रान्त बना लिया गया । ट्रेजन की नीति पश्चिमा एगिया में असफल हुई क्याकि वहाँ का जातिया और कबीले अवसर मिलत ही विद्राट करत रह । वह उनमे लडते-लडत थक गया । अपने प्रमुख सना पति हर्डियन का वहा की समस्या मुपुद कर वह गेट पाग किन्तु मार्ग म ही उसकी मत्सु हा गयी (११७ ई०) ।

रेट्रियन

यह भी स्पन का निवासो था । ग्रीक और लटिन साहित्य का उसने अच्छा अध्ययन किया था किन्तु गणित दशन विज्ञान राजनीति शासन और कानून म उसकी विशेष अभिरुचि था । वह अच्छा कवि प्रौढ गद्य लेखक कुशल चित्रकार तथा संगीत विद्या एव कला में निपुण था । उसकी मधा शक्ति विलक्षण थी । उसकी यास्यता और युद्ध तथा शासन की विलक्षणता का लाहा सभी मानते थे तथापि उसके व्यवहार स बहुत लोग उसके प्रतिकूल जथवा शत्रु हा गये । वीर एव रणकुशल होत हुए भी वह शान्तिप्रिय था । उत्तम किन्तु यावहारिक नीति तथा सुव्यवस्थित

शासन द्वारा वह शान्ति स्थापित करना चाहता था। साम्राज्य की सीमाओं की रक्षा करना नितान्त आवश्यक था। अतएव उसने ट्रेजन द्वारा जीते हुए प्रांतों का उतना ही भाग साम्राज्य के अंतर्गत रखा जितना कि रक्षा के लिए तथा अन्य राज्यास युद्ध निवारण के लिए आवश्यक समझा। साम्राज्य को दूसरे राज्य में पथक करने के लिए उसने लक्डी की सरहद खिचवा दी। मेसापटेमिया और जारमीनिया से उसने पौजे हटा ली। प्रादेशिक शान्ति रखने के लिए उसने वहाँ उपनिवेश और वही सैनिक दल स्थापित कर दिये। उसकी नीति का फल यह हुआ कि अधिक काल तक साम्राज्य में शान्ति रही। साम्राज्य के शासन का भार राम नगर जयवा दृष्टी के ऊपर न छोड़ उसने साम्राज्य के केंद्रीय शासन के ही ऊपर रखा। सैनिक शासन और नीकरिया को उसने साधारण शासन से पथक कर दिया। वानूना का विधिवन सफल करके शासनयंत्र का व्यवस्थित कर दिया। न्यायालयों के लिए मावघानतापूर्वक न्यायाधीशों का चुनाव किया। प्रदेशों में भी शासन तथा न्याय के विधानों का स्थिर करके प्रांतीय शासन तथा केंद्रीय शासन के परस्पर सम्बन्धों का निर्धारित कर दिया। अपने विधानों को सुव्यवहृत करने, साम्राज्य की समस्याओं को समझने तथा सम्राट का प्रभाव स्थापित करने एवं परस्पर का सम्बन्ध घनिष्ठ करने के लिए उसने साम्राज्य में दौरे किये। सेना की उचित शिक्षा और अभ्यास के लिये भी उसने कुछ सुधार किये। विद्रोहों के दमन करने में उसने कठोरता का प्रदर्शन किया। उसके सुधारों तथा निर्माण-कार्यों से प्रेरित होकर उसकी रानी सेवाइना ने भी स्त्रियों की एक संस्था स्थापित की जो स्त्रियों में शिष्टाचार, सामाजिक पद तथा वेपमूपा का नियंत्रण करती थी। साम्राज्य का उत्तराधिकारी उसने एक प्रमुख सेनेटर जारिलिअस एण्टानिअस को बना दिया। एण्टानिअस वृद्ध और शान्तिप्रिय था। हेडिअन ने अपने ही जीवनकाल में एण्टानिअस के जाग्रह से उसके भतीजे मार्कम आरिलियस को उत्तराधिकारी नियुक्त करवा दिया। एण्टानिअस ने यथाशक्ति हेडिअन की नीति का पालन किया और वह सेनेट के आदर का पालन बना रहा।

मार्कम आरिलिअस (१६१-१८० ई०)

मार्कम आरिलिअस मुशिपिन विद्वान विद्वक्कील, विचारक, दार्शनिक सयमी सदाचारी और सकल जीवन का प्रेमी पुण्य था। वह विचार-स्वातंत्र्य तथा नागरिकों के समान अधिकारों के पक्ष में था। प्रजा ने उसका सान्द्र स्वागत किया।

गरीबा का महायत्न देने, दान देने, करा को माफ करने में उसे अधिक मकाच न होता था चाहे उससे राज्य काय का नुकसान ही क्या न हो। अत्याचार, अप-यय तथा भ्रष्टाचार को रोकने के लिये उसने कई सुधार किये।

माक्स के सहयोगी गासक (रिजेण्ट) लूमिअम ने उसकी नाति और निणया का सदा ममथन किया। आठवष के बाद लूमिअस की मत्युहा गयी जिमसे साम्राज्य का कुल बाझ माक्स पर जा गिरा। उसकी शांतिप्रिय नीति को निराला का खानक मानकर साम्राज्य क द्रोहिया ने विशेषत सीमांत के युद्धप्रिय कबीला और राज्या ने आक्रमण करना शुरु कर लिया। यद्यपि रोमना न पार्थियना के आक्रमणा का निरस्त कर उन्हें पीछे हटा दिया किंतु वहा से वे प्लेग (महामारी) का भयकर रोग ले जाये जिमसे सीरिया स गाल तक अजरय प्रजा की मत्यु और विनाश हुआ। उसके सिवा डन्यूव नदी के उम पार के भ्रमणशील, जमस्कृत किंतु लडाकू कबीला ने आक्रमण शुरु किये। सम्भव है कि इन कबीला पर उनसे भी पीछे रहने वात कबीला ने इतना दबाव डाला है कि वे जागे बतने पर मजबूर हुए है। जा कुछहा उनके आक्रमणा से साम्राज्य के लिए भयकर सकट उठ खडा हुआ। लखार हाकर माक्स का साम्राज्य की भयांग ही नहा वरन स्टली की रथा के लिए यद्ध छडना पडा। युद्ध तैरहु वष तक चलता रहा। उसी के बीच कमिअम न विद्राह की आग भटकायी जिससे और भी जलजन पदा हा गयी। यद्यपि केमिअस के विद्रोह का दमन कर लिया गया किंतु उसके कारण उपयुक्त कबीला का पूण रूप से परास्त करने म अटचन पटा हो गयी। कठिनाइया को तीव्रतर बनाने के लिए अतिवर्षिट ने जकाल फग दिया। अनेक आपत्तिया के जा जाने से साम्राज्य का आर्थिक व्यवस्था उगमगाने लगी। ऐसी दशा म नय कर लगाना अनुचित एक असम्भव समझकर नम्राट का राज्य का समारतें जवाहरान कलात्मक मूर्तिया मजाबट के नामान यहा तक कि कपडे भी बेचकर मुद्ध क लिए धन एकत्रित करना पडा। यही नही लखार हाकर उसका आक्रमणकारिया से सधि करनी पडी जिमसे कुछ नमय क लिए सीमाआ पर गानि रही। किन्तु बबरा का अनुभव हो गया कि रामन सना जजेय नहा जिमसे उसका जानक क्षीण हान लगा।

माक्स का गृहस्थ जीवन भी चिंताजनक रहा। सयम दिन में एक बार स्वल्प नाजन तथा मानसिक चिंताआ के कारण वह अपनी स्पवना किन्तु चंचल स्वभाव की बिनादप्रिय स्त्री को यथेष्ट समय और ध्यान न द पाता था। लग चरु-नरु की सूठी-सच्ची बान कहुने और व्यग्यात्मक तथा उपहासजनक ग्य और

रचनाएँ लिखने तथा मुनने-मुनाने लगे । यद्यपि राम के अनेक मुप्रसिद्ध और प्रतिष्ठित सेनानिया तथा सम्राटों के सम्भवतः म ऐसी ही बात प्रचलित हुई और हाती रही किन्तु जबकि कमलचित्त होने के कारण वह व्यथित हो जाता था ।

माक्स ने एक भयंकर भूल की जब उसने अपने पुत्र कमांडिअस का अपना उत्तराधिकारी बनाया । हट्टा-कट्टा, लापरवाह नवयुवक कमांडिअस खेलकूद, कुस्ती गिन्नार, शराब जुआ और स्वाभाविक एवं अस्वाभाविक भाग विलास में मस्त रहता था । उसे स्त्री रूप बनाकर तन्नुकल व्यवहार प्रयोग का भी शौक था । निद्रयता के दृश्या से उमका मनाविनाद होता था । साराग यह कि वह विलक्षण नर-रंगु था ।

एष्टानाइन वग का जन्तिम सुयाग्य कमठ और प्रतापी सम्राट माक्स था । उसकी मृत्यु के पश्चात् उस वंश का ह्रास होता चला गया ।

कमोडिअस (१८०-१९२ ई०)

साम्राज्य की आर्थिक अयवस्था, राग तथा दुर्मिथ सेना के जातक तथा बरसा के निरन्तर युद्धों से प्रजा के बल के ह्रास एवं स्वयं अपने नतिक दुबलता के कारण कमोडिअस ने अनुशा से सविधा करके उन्हें शांत रखना श्रेयस्कर समझा । इसके सिवा सीमा प्रांता के शासन को भी सगठित करने का उमन कुछ प्रयत्न किया । किन्तु अपने भ्रूण स्वभाव नित्यता, भ्रष्टाचार एवं ध्वमिचार के कारण उसका लोकप्रिय होना असम्भव-सा हो गया । वह पदा और अधिकारी का बेचता था जिससे योग्य तथा मर्यादागील व्यक्तियों की अवहलना होनी थी । स्वयं वह अपने रनिवास में, जहा सन्डा मुन्दरियाँ उसने एकत्रित कर रखी थी, भाग विलास में फँसा रहता था । परिणाम यह हुआ कि पडय नकारिया ने जिसमें उसकी बहिन और एक प्रेयसी भी शामिल थी उसका वध कर डाला । उसके वध ने सेनाशाही का आरम्भ माना जाता है । सनट द्वारा निर्वाचित आर अमिपिक्त सम्राट हेल्किअस का भी प्रिटोरियन गण्डसदल के मिपाहिया ने वध कर डाला और जूलिएनस नामक एक घनाढ्य व्यक्ति से प्रति सिपाही छ हजार ड्राइम घूस लेकर उसे सम्राट बना लिया । यह समाचार फैलते ही साम्राज्य के चार प्रमुख सेनापतियों ने यह नारा उठाया कि सम्राट के पद का अय विभय सवथा असह्य और दण्डनाय है । प्रिटैन, पनोनिया, सीरिया आदि के सेनापतियों ने हथियार उठा लिये । भयंकर जग उड़

गया । अपने प्रतिद्वन्द्वियों का अपनी आर मिला कर या उन्हें हराकर सप्टिमस सखरस सम्राट हो गया ।

सेप्टिमस सेवेरस (१९३-२११ ई०)

अफ्रीका में फोनीशियन तथा इसाइया के बीच उसका पालन पापण हुआ । एथेस में उसने माहिर्य तथा दर्शन का अध्ययन किया था । उसे कविता और दासनिवा की अपनी गच्छिया में रखन का शौक था किन्तु उनके समय में उसका साहस शीघ्र और क्षात्र धर्म में विकार या दुबलता आ पायी । डील डील में पुष्ट तथा चोर एवं चतुर मनानी हाते हुए भी वह सरल जीवन और रहन सहन की सादगी का प्रमी था । उसने सम्राट के गाड (अगरक्षक) दल को छिन्न भिन्न कर दिया । प्रिटारिअन गाड का चुनाव इटैलियन में सही हुआ करना था किन्तु नये सम्राट न वह परिपाटी तोडकर विभिन्न प्रान्ता के सिपाहियों का उत्तरात्तर भरती करना शुरू कर दिया । उद्दण्ड व्यक्ति था तथा सेनेट के भी । उपद्रवी सदस्या का भी वह उसने करवा डाला । इसका सिवा बहुत बड़ी सम्पत्ति वाले कुलीन भी जायदादें मा उसने जलत कर ली । उसकी शक्ति का रहस्य उसकी आत्मानुवृत्ति की भेना थी जिनका उसने वेतन पना-बढाकर और अच्छे-अच्छे पदा पर नियुक्त करके सन्तुष्ट कर रखा था । जिन सनिका की नियुक्ति प्रान्ता में हाती उनको वहा विवाह करने को उत्साहित किया जाता । परिणाम यह हुआ कि उनकी सतति राम साम्राज्य की सस्त्रति व्यापार और हित साधन में स्वामाविक दिलचस्पी लेती और सीमाओं की रक्षा में दत्तचित्त रहती थी । सबसे विलक्षण सुधार सनिक शिक्षा का अनिवाय बनाकर भी इटैलियन को उससे बचित रखना था । इस नीति का यह परिणाम हुआ कि भविष्य में प्रातीय सेना ही सम्राट के चुनाव के लिए समर्थ हो सकी । रोम में उसने प्रांतीय सेना के कई लीजन्स कावर जमा दिये जिससे रामना पर आतक छाया रहे ।

राम साम्राज्य में टक्स की इतनी वृद्धि हुई थी कि लोग टक्स लेने वाला की सूरत देखकर भागते और मुह चुराते थे । इसका सिवा रोम के द्वारा नियुक्त नौकरा अथवा ठेकेदारा को स्थानिक प्रजा के साथ सहानुभूति नहीं हो सकती थी जिसका दुष्परिणाम यह भी हुआ था कि लोग रोमनों को घणा की नृष्टि से देखन लगे । इन सब कठिनाइया को समझकर सम्राट ने टक्स कमूल करने का जिम्मेदारी म्युनिसिपल सभाओं को दे दी और उनको यह आदेश दिया कि समाज के नानवाई, तेली आदि अत्यावश्यक सेवा पर टक्स न लगाव ।

सेप्टिमस ने 'इ
पदवी थी उससे एदि
युग की सूचना भी व
साम्राज्य का सर्वो

सेप्टिमस की म
रूप और लावण्य के
पर वह एक समस्या क
तया कलाकार एका
उत्साह का उमुक्त
विचारा और व्यवहा
यह उपदेश दिया कि
करना अनावश्यक है

की पारी) से बलात विवाह कर लिया
हृदय निबाला जिससे साम्राज्य
जिसका प्रभाव विस्मयजनक
के से नागरिक अधिकार प्र
से ही इस विचारधारा
साथ पूरा करने का
ता यह हुआ कि मताप और
प्रातीय नी गज्य क
म

करकेला (२११ २१७ इ०)

सेप्टिमस का पुत्र मारकस एमिलियस, जो करकेला के नाम से विख्यात है सम्राट
हुआ। साथीदार हाने के भय से उसने अपने छोटे भाई का वध करा लिया और
उसके सहायक को भी हजारों की सख्या में तलवार के घाट उतार दिया। करकेला
भी एक विलक्षण जीव था। साधारण शासन का भार ता उसने अपनी माँ के हाथ
में छोड़ दिया और स्वयं सैनिकों द्वारा युद्ध करने वाला जीर गगवा के साथ मिलता
जुलता रहता था। उसे शिकार और गोर से अकेले लड़ने का ध्यमन था। उसके
भाजन के समय मज के पास सिंह बैठा रहता। एक सिंह उसके पलग पर भी बठा
रहता था। युद्ध करना उस प्रिय था किन्तु बल के बन्ने छल से काम चलता हा ता
वह उसका निम्सकाच प्रयोग कर डालता था। धाँवा देकर उसने आरमीनिया के
राजा और राजकुमारों का वध कर लिया। उसका सबसे निदयतापूर्ण जीर धणित
काम था अलकज़ण्डिया के युवका का सेना में भरती करने के वहाने बुलाकर सबका
वध करवा देना। सरकस के खेला का उसे इतना व्यसन था कि उन पर वह अपार
धन व्यय करता रहा और सैनिकों का वेतन भी उपाय कर दिया। रोम का सबसे
बड़ा स्नानागार बनवाने में भी उसने खूब धन लगाया। उसकी बड़ी उत्कट आकांक्षा
महान अलकज़ण्डर के समान विजयी होने की थी। मनमूबा तथा व्यसना म धन
का अपव्यय करने से राज्य-नाप खाली हा गया। उसकी मूर्ति के लिए उसने एसा

गया। अपने प्रतिद्विद्या को अपनी श्रेष्ठि म बड़े मार्के का परिवर्तन हा गया और सभ्राट हो गया।

॥ उसने साम्राज्य को मय म्वनत्र प्रजा का रामना का कर लिये (२१२ ई०)। यद्यपि क्लाडिअस के समय सेप्टिमस सेवेरस (का कुछ कुछ विवास हो रहा था किन्तु उमका निमयता क

अपनी का मे फे श्रय करवला का ही प्राप्त हुआ। उसका नीति का एक परिणाम एथस म उमका साम्राज्य म रामना का विगिष्ट महत्व न रहा। दूसरा यह कि दानिक प्रजा का राजनीतिक स्तर रामना के समान हा जान के कारण साम्राज्य मात्तनको समान अधिकार प्राप्त हुए जिससे उनमें आत्मभिमान का बढि हुई। किन्तु सभ्राट का तात्कालिक लाभ यह हुआ कि प्रातीय प्रजा पर व विगिष्ट कर लग गय जिनसे अभी तक वह मुक्त थी। इसीलिए यह शका की जाती है कि केरवंग इस काय में किसी उच्च आदेश से प्रेरित नहीं था बल्कि अपने रिक्त बाप की आमदनी बढाने के लिए ही उमन एक साधन प्रचलित किया था। उस आर्थिक ध्येय को सामने रखकर उसने प्रचलित सिक्का का मूल्य तो पूववत रखा किन्तु उनके चाँदी-सोने म अय सस्ती धातुएँ मिलाकर उह भ्रष्ट कर दिया। उसके व्यवहार से क्षुध होकर एक प्रिटोरियन गाड ने उसका वध कर डाला (२१७ ई०)। और चौदह महीने तक सिंहासन सेवरस वश के हाथ स निकला रहा। केखेला की सुदरी महारानी जूलिया डाम्ना न निर्वासित दशा म निराहार रहकर प्राण त्याग लिये।

जूलिया डाम्ना की बहन जलिया मइसा बडी योग्य और चतुर स्त्री थी। उमके प्रयत्न से फिर सेवेरस का एलागेबेल्स नामक चौदह वष का राजकुमार सिंहासन पर बिठाया गया। सेवरिअस एविटस बेसिएकम सीरिया के मयदेवता के मंदिर मे पुजारी था। शायद इसीलिए वह एलागेबेल्स के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह स्वयं रूपवान भी था और अपना स्थान देवता जुपिटर स भी ऊचा समझता था। उसी धारणा के साथ साथ वह हिराकल्स की पत्नी होने की कल्पना करता और तदनुकूल व्यवहार भी करता था। उसके अदम्य व्यभिचार और दुव्यमना के कारण हिंसाप्रिय तथा भोग विलास प्रिय रोमन भी हैरान थे। कहा जाता है कि सम्भवत रोम का कोई भी सभ्राट या सेनानायक व्यभिचार और दुव्यसन म उसकी समता नहीं कर सका। सनक म आकर अपने विवाह के अवसर पर उसने बेहिमाव सौगातें बाँटा और एम्फी थियेटर के खला में अगणित पशुओं का जिनमें ५१ याघ्र तथा एक हाथी भी था, विमत्सता से साध वध करवाया। वह अकारण अनेक मनुष्यों को मरवा डालता था। उसके दो कामा से रामना को विशेष क्षोभ और आघ उत्पन्न

हुआ। पहला यह कि उसने वस्टल वजिन (देव कुमारी) से बलात विवाह कर लिया जो दूसरा यह कि जुपिटर के मंदिर में भी विशाल मंदिर बनवाकर बड़े ममाराह के साथ एलागेबेलम' (सूय देवता) का उमम प्रतिष्ठित किया। फिर अपने एलागबेलम का बड़े घूमघाम से बार्थोज की स्त्री यरेनिया से व्याह करवाया। मन्दिर आर व्याह से सीरिया और अफ्रीका के सनिका आर लागा का चाह जितना सत्ताप और जानद प्राप्त हुआ हा किन्तु रोमना का बड़ी बलना हुई। चार वष भी राज्य क पूर न हो पाय थे कि प्रिटारियन गाड ने उसका बघ कर डाला।

एलागेबेलस ता निकम्मा था किन्तु उसका नानी जूलिया मद्रमा अदमृत पतिभाशालिनी, याग्य तथा कायकुशल थी। कहा जाना है कि उमका स्थान रानी एप्रिपिना से भी ऊँच था। सम्भवत यह प्रथम स्त्री था जिसने सनेट की बहसा म भाग लिया और जिसकी सम्मति ध्यानपूर्वक सुनी जाती थी। नये सम्राट अलेक्जण्डर की अवस्था सिंहासनरूढ होने पर केवल चौदह वष की थी अतएव माम्राज्य का शासन और नियंत्रण का भार राजमातामही प्रतिनिधि की हमियत से बहन करती थी। उमकी नीति सेवेरम और केरकेला से भिन्न थी। केवल सेना का बल पर अवलम्बित रहना उमे श्रेयस्कर प्रतीत न हुआ। अतएव उसने सनेट के सम्मान का पुन स्थापन तथा शासन का सेना के हाथ से नागरिका के हाथ में सौंप देने का कुशल प्रयास किया। उसकी अध्यक्षता में बारह वष तक ऐसी शान्ति और ऐमा सुन्दर शासन रहा कि उसके युग का परवर्ती लेखक 'स्वणयुग' कहने लगे। उसकी नीति कुशलता, शान्ति तथा याग्य प्रियता धार्मिक उदारता प्रजा के प्रति सहानुभूति के कारण मीमात्रा के दोना आर शान्ति रही जिससे व्यापार तथा आर्थिक सगठन में उन्नति हुई। कला-वाशक तथा शिक्षा प्रचार की ओर विशेष ध्यान लिया गया और प्रजा के भरण-पोषण में सुरक्षित तथा सहानुभूति का काम हुआ। शिक्षा और विद्वानों का आदर-सम्मान बढ़ गया। जमींदारों के कर भी घटा दिये गये जिससे उनको दगा भी सुधरने लगी। उपयुक्त नीति से शासन का सख बढ़ गया तथापि राजकाप उसे झेल ल गया। राजदरवार के सख में जहा तक क्फायत हा मकी बह बी गयी, जिमसे साम्राज्य का बोप खाली न होने पाया। राजमाता ने अलेक्जण्डर का बुरा सगति से दूर रखकर उसके आचार विचारा का गिष्ट और पुष्ट बना दिया। उमको शिक्षा और दीक्षा बड़े सुन्दर ढंग से की गयी। उसके आचरण शुद्ध और गरम थ। उमका परामश देने के लिए राजमाता ने सालह सुशिक्षित और आदरणीय सज्जना की एक समिति बना दी।

साम्राज्य के बरह वष तक गति रही किंतु मेना की बेकारी और यवस्थित शासन प्रजा को कम रचिकर प्रतीत होने लगा। यद्यपि साम्राज्य की धाक बंध गयी थी और नीति मफल हान लगी थी तथापि मन्त्रिगण तथा रणप्रिय नेता मन ही मन सघष चाहते थे। सयाग स बसा जबसर भी आ गया। फारस का सामाना राजवश दिनान्ति सगन्ति और बलशाली होता जा रहा था। अनुश्रुति के अनुसार सामानी वश का जन्मुदय जनाहिता के मन्दिर के विशिष्ट अधिकारिया स आरम्भ हुआ। उन वश के पपक नामक व्यक्ति ने किसी प्रांतीय सरदार की पुत्री स विवाह करके जाखिरकार अधिकार भी छीन लिया (२०३ ई०)। उसके पार्थियन अग्रिपति ने अधिकार परिवर्तन का अस्वीकृत कर लिया। इस पर राजा और सरदार पपक का सघष आरम्भ हुआ। उम सघष का परिणाम यह हुआ कि ईरान विरोध फारस म विप्लव-सा उठ सटा हुआ। पपक का मृत्यु क उपरान्त उमक दाना पुथा गापुर और जन्शीर म युद्ध छिडा। दवयाग म गापुर की मृत्यु हा गया और जन्गार की सत्ता स्थापित हो गयी। उमन सघषणा कर दी कि वह फारस का स्वतन्त्र राजा है और तदनुसार उमन वहा क ममिपतिया और सरदार पर अपना अधिकार्य सफलतापूर्वक स्थापित कर दिया। पार्थिया के सम्राट न उसक दमन क लिए जा मेना मेजी वह पराजित हुई जिससे जन्शीर का जातक बहुत बन् गया। उत्साहित होकर उमने स्वय पार्थियन राज्य पर आक्रमण क्रिय और अततोगत्वा पार्थियन राजा का वध कर डाला (२२६ ई०)। यद्यपि पार्थिया को राम बाला और कुगाण राजा ने काफी सहायता दी किंतु अन्गीर ने उनका भी परास्त कर लिया। दम वष क भीतर ही उसका साम्राज्य फारस नगी स मव और हरान तक विस्तृत हा गया। अन्गीर की प्रबुद्ध सक्ति स राम के सम्राट जन्वजेण्डर का धार चिन्ता हुई। उसे ऐमा प्रतीत होने लगा कि इरान का पुराना साम्राज्य पुन जाग उठा है और जा काय मवदूनिया क अल्बजण्डर का करना पडा था वह जन् उमका हा करना पडगा। इस कल्पना के अनुसार उसने राम की मना का मगठन मरदूनिया क ममान कर लिया। उसका विचार फारस पर तान जा स आक्रमण बरज का था। सामानी भी जागृक थे। दाना जा स बन् ममान पर तयारिया हा लगी। अन्गार न राम की दो मनाया का नष्ट कर लिया किन्तु तामरी स मयजर युद्ध हुआ जिसम दाना की बनी हानि हुई। ताना का जपन अपने दक्षिण म सफल रहा। किन्तु सीमा का प्रश्न ज्या-का-रहा रहा। राम का यह धारणा रही कि वह अमफर हाकर युद्ध म पराट्टमुण हा गया है। उम धारणा का परिणाम उमर विरुद्ध प-

घन हुआ। उसी जमाने में जाल्मनिया ने भी जा जमनी की एक जाति थी, साम्राज्य की सीमा पर आक्रमण किया। उनका शांत रखने के लिए रिडवन दन का प्रस्ताव किया गया। राम की सैनिक शक्ति की धाक थी घनता में विगलती देखकर तथा अनुगामन की बढारता तथा कायरता में श्रुद्ध हाकर पड्यत्रकारिया ने जल्कजेण्डर का बध कर डाला। उसी के साथ उमकी नानी का भी निघन हुआ (२३५ ई०)।

अलेक्जेंडर का निघन हात ही रोम की सेनाओं में बडी अराजकता फल गयी जा लगभग पचाम बष तत्र चलती र्नी। सम्राट बनने की लालमा से जनक सना नायक स्वतंत्र हाकर तदथ प्रयन्नशील हो गये। राम साम्राज्य का यह युग अधकार-ग्रन्त है। इतिहास भी अभी तक उम पर पूरा प्रकाश डालने में समथ नहा हो सका। जागामी अधशती में सनह सम्राट हुए जिनमें एक-दा का छाडकर सबका बध हुआ।

सना के निरकुश होने का सबसे बुरा फल यह हुआ कि डेयूब की सीमा बमजार हो गयी जिनमे गाय आदि बबर जातिया बल्कान में घुस पडी। राम का सम्राट जा उनका हटाने गया युद्ध में मारा गया। आधिपत्य प्राप्त करने के लिए खाम इटली में प्रतिद्वन्दी युद्ध करने लगे। डेयूब और राइन नदी की निचली आर मध्य की सीमाएँ टट गयी जिसस प्राक लाग बन्त बडी मख्या में घुस पडे (२५० ई०)। आर गाल तथा स्पन तक जा पहुँचे। उसी प्रकार आलमनी जाति के लोग राइन नदी पारकर इटली में प्रविष्ट हो गये।

अदशीर का पुत्र शापुर जो इम समय फारस के राजसिंहासन पर आसीन था अपने पिता के समान पराक्रमी निकला। उसने सीरिया पर आक्रमण किया और एषिया तक जा पहुँचा। रोमन सम्राट वेलेरियन का छल-बल से उसने बध कर लिया। वेलेरियन की मृत्यु बध ही में बडी बेहुरमती से हुई (२५० ई०)। अपनी विजय में उत्साहित होकर शापुर आगे बढा और एनातोलिया के पश्चिमी समुद्री तट तक पहुँच गया। उमका आधिपत्य जमने के पहल ही पाल्माद्रा की रामन सेना ने मेमोपेटमिया पर चढाई कर दी। फन्त शापुर को लौटना पडा जाँर मेमोपेटमिया का खाली कर दना पडा। इससे प्रसन्न होकर राम के सम्राट ने पाल्माद्रा के मनानायक जोडेनेथम का राजा का पदवी से विभूषित कर लिया। कुछ ही वर्षों में पाल्माद्रा के राजा ने ऐसी शक्ति संचित कर आ आर ऐमा व्यवहार किया जिनसे राम के सम्राट का अनिष्ट की आगवा हा गयी। पाल्माद्रा का गामन विधवा रानी जिन्नाविया सप्टेमिया के हाथ में जाया (२६७ ई०)। उमे ग्रीक सीरियन, मिस्री तथा लाटिन भाषाओं का ज्ञान था। विद्या प्रेम के साथ ही साथ उसे मिस्र का

साम्राज्य बरह वष तत्र शांति रही किन्तु मेना की बकारी जीर व्यवस्थित शासन प्रजा का कम रचिकर प्रतीत होने लगा। यद्यपि साम्राज्य की धाक बंध गयी थी और नीति सफल होने लगी थी तथापि सैनिकगण तथा रणप्रिय नना मन ही मन सधप चाहते थे। सयाग स वसा जवसर भी जा गया। फारस का सामाना राजवर्ग दिनादिन सगठित और बलशाली होता जा रहा था। अनुश्रुति के अनुसार सामानी वश का अम्युदय अनाहिता के मंदिर के विगिष्ट अधिकारिया से आरम्भ हुआ। उक्त वश के पपक नामक व्यक्ति ने किसी प्रांतीय सरदार की पुत्री से विवाह करके आधिकार अधिकार भी छीन लिया (२०३ ई०)। उसके पार्थियन अधिपति ने अधिकार परिवर्तन को अस्वीकृत कर दिया। इस पर राजा और सरदार पपक का सधप आरम्भ हुआ। उस सधप का परिणाम यह हुआ कि ईरान, विगिष्ट फारस में विप्लव मा उठ खडा हुआ। पपक की मृत्यु के उपरान्त उसके लाना पुत्रा गापुर जीर अदशीर में युद्ध छिडा। दक्षिण से गापुर की मृत्यु हो गया जीर अदशीर की सत्ता स्थापित हो गयी। उसने घोषणा कर दी कि वह फारस का स्वतंत्र राजा है जीर तदनुसार उसने वहा के भूमिपतिया जीर सरदारा पर अपना आधिपत्य सफलतापूर्वक स्थापित कर दिया। पार्थिया के सम्राट ने उसके दमन के लिए जा सेना भेजी वह पराजित हुई जिससे अदशीर का आतंक बहुत बढ गया। उत्साहित होकर उसने स्वयं पार्थियन राज्य पर आक्रमण किये और अंततोगत्वा पार्थियन राजा का वध कर डाला (२०४ ई०)। यद्यपि पार्थिया का रोम वाला जीर कुशाण राजा ने काफी सहायता दी किन्तु अदशीर ने उनका भी परास्त कर लिया। दस वर्ष के भीतर ही उसका साम्राज्य फरात नदी से मय जीर हेरात तक विस्तृत हो गया। अदशीर की प्रबुद्ध शक्ति से रोम के सम्राट जलेकजण्डर को घोर चिंता हुई। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि ईरान का पुराना साम्राज्य पुन जाग उठा है और जो कार्य मकदूनिया के जलेकजण्डर को करना पडा था वह अब उसको ही करना पड़ेगा। इस कल्पना के अनुसार उसने रोम की सेना का संगठन मकदूनिया के समाप्त कर दिया। उसका विचार फारस पर तीन आर से आक्रमण करने का था। सामानी भी जागरूक थे। दाना आर से बढ पमाने पर तयारिया होने लगी। अदशीर ने रोम की दो सेनाओं का नष्ट कर दिया किन्तु तीसरी स भयकर युद्ध हुआ जिसमें दोनों की बड़ी हानि हुई। दाना को अपन अपन दृष्टिकोण में सफलता रहा। किन्तु सोमा का प्रशंसा ज्या-जा-त्या रहा। रोम की यह धारणा रही कि वह अमफर होकर युद्ध से पराङ्मुख हो गया है। इस धारणा का परिणाम उसका विरुद्ध पड-

पत्र हुआ। उभी जमाने में आल्मनिया ने भी, जो जमनी की एक जाति थी साम्राज्य की सीमा पर आक्रमण किया। उनका गान्त रखने के लिए रिश्वत देने का प्रस्ताव किया गया। रोम की सैनिक शक्ति की धारणशीलता से त्रिगुणनी दायकर तथा अनुगामन की कठोरता तथा कायरता से भुद्ध होकर पडयंत्रकारिया ने अल्फ्रेडर का वध कर डाला। उभी के साथ उसकी नाना का भी निघन हुआ (२३५ ई०)।

अल्फ्रेडर का निघन होत ही राम का सनाआ में बडी जगजकता फैल गयी, जो लगभग पचास वर्ष तक चलती रही। सम्राट बनने की लालसा से अनेक सना नायक स्वतंत्र होकर तदथ प्रयत्नशील हो गये। राम साम्राज्य का यह युग अधकार ग्रस्त है। इतिहास भी अन्त तक उस पर पूरा प्रकाश डालने में समर्थ नहीं हो सका। जागामी अधशासक सत्रह सम्राट हुए जिनमें एक-दो का छाडकर भवका वध हुआ।

सेना के निरकुशल होने का सबसे बुरा फल यह हुआ कि डेयूब का सीमा कमजोर हो गयी जिसमें गाय आदि बकर जातिया बल्कान में घुम पडी। राम का सम्राट जो उनको हटान गया युद्ध में मारा गया। आधिपत्य प्राप्त करने के लिए खाम इटली में प्रतिद्वंद्वी युद्ध करने लगे। डेयूब और राइन नदी की निचली और मध्य की सीमाएँ टूट गयी जिससे प्राक लोग बहुत बडी सख्या में घुम पडे (२५० ई०)। आर गाल तथा स्पेन तक जा पहुँचे। उसी प्रकार आल्मनी जाति के लोग राइन नदी पारकर इटली में प्रविष्ट हो गये।

अदानीर का पुत्र गापुर जो इस समय फारस के राजमिहासन पर आसीन था अपने पिता के समान पराक्रमी निकला। उसने सीरिया पर आक्रमण किया और एण्टिआक तक आ पहुँचा। रामन सम्राट वेलेरियन का उल्लंघन से उसने कद कर लिया। वेलेरियन की मृत्यु कद ही में बडी बेहुरमता से हुई (२५० ई०)। अपनी विजय से उत्साहित होकर गापुर आगे बढ़ा जा एनानोलिया के पश्चिमी समुद्र तट तक पहुँच गया। उसका आधिपत्य जमन के पहले ही पालमादरा की रोमन सेना ने मसोपेटमिया पर बढ़ाई कर दी। फलतः गापुर का लौटना पडा और मेसापेटमिया का खाली कर देना पडा। अन्त में प्रसन्न होकर राम के सम्राट ने पालमादरा के सना नायक आडेनेथस का राजा की पदवी से विभूषित कर दिया। कुछ ही वर्षों में पालमादरा के राजा ने ऐसी शक्ति मचित कर ली और ऐसा व्यवहार किया जिससे रोम के सम्राट को अनिष्ट का आशंका हो गयी। पालमादरा का शासन विघना रानी जिनाबिया मपेटमिया के हाथ में आया (२६७ ई०)। उसे ग्रीक सीरियन मित्री तथा लाटिन भाषा का नाम था। विद्या प्रेम के साथ ही साथ उस मिस्र की

मुक्तिप्राप्त करी जिन्नापट्टा के समान दरबय आर महत्त्व का प्रचल जायाग्य का था।
 १२ अ। १। मिस्र के टाउन्मा राजपुत्र की पुत्री बनी थी। पुष्पाचिन व्यायाम जा
 गितार का उम गात्र था। तथापि उगता आग्रण गिष्ण एव गुं था। उनमें
 अपना आधिपत्य मिस्र देन पर भी जमा किया और पूत्र की राता का उपाधि
 धारण पर ये टाउन्माट म गामन करत लगी। अपन पराक्रम और चतुर्गता म उम।
 मिस्र म र्णियाई वाचन तथा चाम्फारम तत्र अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया
 जिसम राम का मन्त्रवर्णियाई वाचन म अन्तर्प्राय हान लगा। विजया से उत्साहित
 हाजर उमन २७२ ई० म राम के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। यह रोम का सम्राट
 जमन जात्रमणा का राजन म न पंग गया जाना तो सम्भवत विद्रोह करने का
 साहस राती न करता।

विद्रोह का अथवात युवन में जिनात्रिया ने भूत की। उसन यह न माचा वि
 गाथ गगा के टोटी दल का २७० ई० म परास्त करने से रोम के सम्राट का चिन्ता
 का एक भयकर कारण दूर हो गया। इसका मिस्र नये सम्राट जारलिअन ने भा गाया
 के उस दल का जाहटली म धुम गया था धार मुद्ध करके भगा लिया (२७१ ई०)।
 उपर से निश्चिन्त हाजर आरलिअन न जिनात्रिया का जो पालमाइरा के जलक्षान
 के सुगन से हतांग हाजर पारम भागी जाती थी पकड़ लिया और राम म बन्नी बना
 कर रखा। कार्थेज की तरह पालमानरा भी भस्मसात कर लिया गया (२७२ ई०)।
 यद्यपि जारलिअन योग्य सनानायन और कुशल शासक था जिससे साम्राज्य का
 लाभ हान का आगा थी किन्तु वह स्वयं पाँच वर्ष ही राज्य कर पाया। इसी छोटे
 समय में उसने राम की आर्थिक स्थिति समालने तथा अनुसागन दृढ करन और
 लावापयागी इमारता नदी के तटा तथा नगर की प्राचीर को सुदृढ करने का स्तुत्य
 प्रयत्न किया। उसने मिक्वा के सुधार का भी प्रयत्न किया। गरीबा का अनाज
 के दाने वह पकी पकायी रोटिया मेल नमक और सुअर का गादन मुफ्त बंटवाता
 था। यद्यपि स्वयं वह सरल कम खर्च और सादगी-पमद था तथापि राबदाव तथा
 जनता का आर्पित करन के लिये अनेक प्रभावोत्पात्क विधि विधान उसने प्रचलित
 किये। सम्राट को ईश्वर अथवा सयदेव का प्रतिरूप कहकर उसने प्रति भक्ति
 श्रद्धा तथा अचा का आदेश लिया। अपनी नीति और जाजाआ म सौद को वह हस्त
 क्षेप न करने देता था। मूय की पूजा को उसने राष्ट्र धर्म घोषित कर दिया। उसके
 दृढ शासन तथा प्रचल नियन्त्रण मे शासन वध म याबुलता फनी। फन्सूफ जमीरा
 तथा शीकीन लोगो को सीधे सारे रहन सहन के प्रति उमका आग्रह अम तापनिक

आगस्टीय क्षत्रा के अगुन एउ मू भाग का गगन साजरा ता द किया गय और उनर गगन-कादर निरिचन कर किया गय । यही तरी, आगस्टगा न अपने-अपने नीजरा का अपनी-अपनी पुत्रा के साथ विवाह भी कर किया ।

याजना की दूगरा विगपना यह थी कि प्रत्येक कानून जयवा जाणाए भाग पनाधिकारिया के नाम म प्रकाशित हानी जिगम यह प्रनात न हा कि साम्राज्य चार टुकडा म बांट किया गया । नासरो विगपना यह थी कि दाना जागस्त्रमा न यह निर्धारित किया कि बीम वष के गगन के उपरान्त के अपना स्थान महयागा नीजरा का दरर हट जायग । उनरा धारणा थी कि उन्मुक्त प्रया म आगस्त्रम पद के लिए सघष कम और साम्राज्य की चारा शिक्षा का प्रत्येक मुक्त और गतापजाव हा सरगा । इमर मिवा आगस्त्रम के पद पर पहुँचने के पहलु नीजरा ता गगन सम्बन्धा नीति और उमका व्यावहारिक धान एव अनुभव भी अच्छा हागा और साम्राज्य की नीति म आमूल उलट-पुलट की सम्भावना मा कम हागा । गिद्धान्त के हिमाव स उपयुक्त नीति अच्छी कही जा सकती थी कि तु उसस चारा म सघष की आसका तो दूर न हाता थी ।

गगन म उत्तरदायित्व गम्भीरता एव गिष्टता के स्थापन के लिए डायोकली गियन ने कुलीना की मर्यादा और अधिकारा का पुनरज्जीवित करने का प्रयत्न किया । ऐरे गरे पचकल्याणी लागा के हाथ में गगन के चल जान से राम राज्य तथा साम्राज्य का कटु अनुभव हाते रह थे जिसम मुधार की आवश्यकता प्रनात होता थी । कुलीन श्रेणा का पुनर्निमाण करन के लिए सम्राट ने पना का वगानुगत कर किया जिससे नीकरगारी स्थिर गम्भीर तथा अधिक अनुभवी हो सक । सम्राट की यह धारणा थी कि गगति एव सरभित परिस्थिति में ही जनसत्ता का जान द उठाया जा सकता है अथवा डिक्टेटरगिप उससे कहा अधिक उपयोगी तथा बल दायक हाता है । साम्राज्य की स्थिति के अनुमार उसी की आवश्यकता है ।

डायोकलीशियन न आर्थिक दशा मुधारने के लिए काफी उत्साह लियाया । सिक्का की भ्रष्टता का, जा चाँदी की कमी के कारण हुई थी यथासाध्य कम करके उसन नये जोर अच्छे सिक्के प्रचलित किये । प्राइवेट व्यापार का उत्तजना दी । शासन के हाथ म कुछ गिने चुने व्यापार आवश्यक समझकर रख दिये । लाहा साना जनाज शराव नमक दलाली तथा कामती वस्त्र जादि का कण्टाल शासन के हाथ में रखा । देकारी दूर करने के लिए लाकापयायी जनेक निर्माण-बाय चालू किये । खाने पीने की आवश्यक चाजा की दर निर्धारित कर दी गयी और नीची

श्रेणी के बारीगरो तथा मजदूरों का वेतन भी निरिचन किया गया (३०१ ई०) । गरीबों की स्थिति के अनुसार खाने की चीजें या तो जाघदाम पर या मुफ्त न जाने लगी । सरकारी कामों में सत्रमे अधिक नौकर तथा मजदूर भरती किये गये ।

सैनिक विभाग का सागरण विभाग से पथक कर देना डायोक्लीशियन के महत्त्वपूर्ण सुधारों में गिना जाता है । नौकरियाँ की संख्या भी मन्त्र बढ़ायी गयी जिसमें पैराडगारी कम हो सकी । गमन का दूत तथा नौकरियाँ की दक्षिण करने के लिए उसने म्वा तथा प्राता की सख्या बढ़ा दी । प्रिटारियन गादों की शक्ति तोड़ने के लिए उसने उन्हें सवारा और पलातिया के जघ्यक्षा के मुपुद कर दिया । प्रिटारियन नेताओं का जिसी कर बमूठ करने तथा पाय वितरण का काम दिया गया ।

डायोक्लीशियन के समय में मम्मवत गेरियम के जागह में ईसाई धर्म का धार दमन किया गया । इसका मुख्य कारण यह प्रतीत होता है कि धार्मिक मामलों में गमना की उदार नीति थी उमका पालन न करके ईसाई अपने मत का छोटकर जय सभी मतों का सण्टन और विराध करत थे । विभिन्न मतों या धर्मों के हान हुए भी रोमनों ने एक राष्ट्र धर्म की आवश्यकता का अनुभव किया और उमका सक्रिय प्रचार किया । ईसाई उसका भी विराध करत थे क्योंकि वह उनके विश्वासों के अनुसार कपोल-रूपित और मिथ्या था । इसके अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि ईसाई डायोक्लीशियन के विनाश के लिए पडयंत्र करत थे । यह सच है कि वे सम्राट को ईश्वर का प्रतीक मानकर उसकी पूजा करने के लिए कदापि तयार न हुए । दमन की नीति से ईसाई धर्म का सम्मान और प्रचार बढ़ने लगा । जाखिरकार दमन का बद कर देना ही ठीक समझा गया ।

बीस वष तक सम्राट् रहने के पश्चात् डायोक्लीशियन ने अपना पद त्याग कर (१ मई ३०५ ई०) तटस्थ रूप से अपने जीवन के अन्तिम दस वष व्यतीत किये (३१६ ई०) । मक्मिमिनिसम ने भी अपना पद त्याग लिया ।

डायोक्लीशियन की याजना के अनुसार दाना नियुक्त सीजरा को जागस्टस का स्थान मिलना चाहिए था । किंतु वह आशा पूर्ण न हुई । प्रत्युत बहुत-से दावदार उठ खट हुए । मन् ३१० ई० में ही पाच जागस्टस बन बटे । सघष हाने के पश्चात् कास्टेण्टाइन माम्राज्य का एकमात्र सम्राट् हो गया (३२४ ई०) ।

कास्टेण्टाइन (३२४-३३७ ई०)

कास्टेण्टाइन मदावारी मयमी हूण्ट-पुण्ट और तजस्वी, उदार विचार तथा

विषय-गील और कायबुगल था। उमर तान और विमान के सबद्धन तथा बलाआ का प्रोत्साहन दो का प्रयत्न किया। अपन साम्राज्य का दबलवा स्थापित करने के लिये जोर शान शक्ति म पारस के सम्राट से भी जागे बढ़ने की स्थावा के कारण अपनी राजधानी राजमहल दरबार जादि पर रतता जिक धन त्रय किया कि उसका काय न पूरा करन की चिन्ता रही। जिसका परिणाम यह हुआ कि वह लोभ ग्रस्त हो गया। जो कुछ भी हो उसकी नयी राजधानी कास्ट्रेण्टिअम (कास्ट्रेण्टिनोपल) तकनी की सम्पन्न हो गयी कि राम की शान भी उसके सामने पीरा जात पडने लगी। राजनीतिक और सामनिक केन्द्र हो जाने स उसका महत्त्व उसी अनुपाल स बना जिसमे राम का कम हुआ। नयी राजधानी स पारस तथा उत्तरी तीर पूर्वदि बररा की गनिविधि पर कटी नजर रखी जा सकती थी और उनके दमन के लिए सीधतापूर्वक प्रतिकार किया जा सकता था। उमर मिवा बहा खाने-पान की चाज सररता से पर्याप्त मात्रा में मिल सकती थी।

मद्यपि कास्ट्रेण्टाइन न इमाई मत का विजयी करने का शपथ उठाया था तथापि उमने अय धर्मावलम्बियों के नेवालया क निमाण के बाई अटकन न डाली और न इमाई धम का राष्ट्र धम धापित किया। राम की परम्परागत रूठिया से मुक्त हो जाने के कारण नयी राजधानी म ईमाइ धम को उन्नति करने का अग्रतपूर्व अवसर मिला और इमाईमा को विशेष सम्मान प्राप्त हो गया। कास्ट्रेण्टान की आधिक समता सम्राट अगान से इमलिया की जाती है कि दाना न नवीन धर्मों का पोषण और प्रचार किया जिससे पहले उनकी उन्नति हुई और जाग चलकर उन्नति हो गयी। उमके मिवा जगोक के अय मुग उसम नयी पाय जाने। कास्ट्रेण्टाइन न इसाइया क दा मुख्य सम्प्रदाया का मिलाकर धार्मिक एकता स्थापित करन का प्रयत्न किया किंतु यद्येष्ट सफलता प्राप्त न हो सकी। इमाइ धम का उमने सुलभमगन्ता स्वीकृत नहीं किया। हाँ, मरों के बगीच ईमाइया का जारियन मत स्वीकार कर लिया।

छनिया क बगीच राजधानी जाने स छनियाड राया क टाट-वाट और दरबारो निष्ठाचार का प्रभाव कास्ट्रेण्टान क समस्त आर मुधारा पर पला। सम्राट का दान माधारण जनता क लिए कुल्ल हो गया। ईश्वर का प्रतिनिधि हात की अभियन से सम्राट क ऐश्वर्य की शक्ति हुई जिससे उमक दान का मौभाग्य राय क बडे पत्रात्रिकागिया और दरबारिया का ही प्राप्त होता था। सम्राट क परामर्श दाताओं में राजभवन का मुख्य प्रवचक नरनी करा और मटा जाति का सावहित

नथा सम्राट का व्याघ्रध्वज तथा अध्याय आदि उल्लेखनीय है। सम्राट के वादक रिमती (महातेजस्वी) तथा 'प्रिफ्रिटिसनी' (महानिपुण) के स्थान गिने जाते हैं। सम्राट के निश्चिन्त में दोस प्रमुख पदाधिकारी थे जो शासन तथा सना के अन्तर्गत हाने थे। केवल सम्राट ही घष छाह का विशिष्ट वस्त्र पहनने सिर पर रत्न जन्तित मुबुट धारण करने और गम्डमुरी राजदण्ड रखने का अधिकारी था।

सारे राज्य के पदाधिकारियों का एक मुख्याध्यक्ष था जो जामूसा द्वारा उनकी गतिविधि का निरन्तर ज्ञान प्राप्त करता रहता था। प्रत्येक प्रान्त तथा नगर के शासन के लिए वहा का शासक और उसका परामश देनेवाली समार्ये नियुक्त थी।

साम्राज्य में सना पर बहुत व्यय हाता था। सनिका के साठ दण थे। उनके सिवा महायक सनाएँ अश्वाराहियों के रिमाले तथा नौ-सना थी। सीमाओं की सुरक्षा के लिए उचित स्थाना पर सनाएँ नियुक्त थी जिनका भू भाग दे दिये गये थे। उन पर साधारण शासन का नियन्त्रण न था। उस भू भाग पर सनिक खेती चारी करत और आवश्यकता पडने पर लडने चल जाते थे। उनके सिवा दो लाख मुमज्जित और युद्धकला में दक्ष सना थी जिसके दण आवश्यकता पडने पर निश्चित स्थान पर शीघ्रतापूर्वक भेज दिये जाने थे। साठ तीन हजार खुने हुए सनिक सम्राट के खास सशस्त्र दण म तनात रहत थे। पत्नियों और अश्वाराहियों के अलग अलग सनाध्यक्ष थे।

यह स्मरण रखना चाहिए कि तत्कालीन समाज को ऐस समठन का आवश्यकता थी जो मानव शक्ति तथा शासन एक अजय माधना की पूर्ति करने में समर्थ हो। इस उद्देश्य का सामने रखकर यह नीति निश्चित की गयी कि समाज के प्रत्येक क्षेत्र तथा विभाग में काम करनेवाले का बगानुगत व्यवसाय में प्रतिष्ठित कर दिया जाय। शासक व्यापारी उद्योग धंधे वाले कृषक सनिक आदि वडा का अपने-अपने क्षेत्र में पुस्तक पुस्तक काम करना आवश्यक जतएव जनिदाय कर दिया गया। इस विधान में अनेकानेक उपजातियाँ-सी समठित हो गयी। यद्यपि इन प्रवच से आवश्यक साधना में स्थिरता और दृढता अवश्य जा गयी तथापि मनुष्य का अपना व्यवसाय चुनने की स्वतन्त्रता खा दनी पजे।

साम्राज्य के बढते हुए खच के लिए अमारो और जमानारा पर अतिरिक्त कर लगाये गये। युद्ध तथा महामारी के कारण साम्राज्य की जनसंख्या घटनी जाती थी जन सेना में बढकर जातियों के लाला को भरना आवश्यक हो गया। सनिक चर बढाने बिना उतने बडे साम्राज्य में शांति तथा सीमाओं की रक्षा असम्भव थी।

एगी ग्थिया में गाधारण मध्य श्रेणी के लोग का जाग हा गया टुक भी कठिनाई से अपन घुट्टम का पाग कर पात थे । माराग यह कि गाध्राज्य का आधिक ग्था लिता लिन सिगडनी सगे जाती थी ।

चोपी गती का उत्तराद्ध राम गाध्राज्य के लिए प्रलयकार मिद्ध हुआ । गाध्राज्य के लिए ता युद्ध चरत रह किन्तु मध्य एशिया के हूणा के पश्चिम की जा प्रयाण तथा पारम के मासानिया के जाधाना से राम साध्राज्य का पूर्वी सीमाएँ टूटा लगा । हूण ग्थ चान की कई जातिया के जिनम मगा, तुन और तगम मुख्य था मम्मिथ्रण से बना था । वे गग रातागगा घुमदार थे यद्यपि उनका गाय बल ऊँ और भू भा रहती था । उनका भाजन माम था और उनका वस्त्र पग्रा की साल से बनाये जात थे । बचपन से ही उनका यद्ध करने का अभ्यास हाता था । बद्ध गतिया तन के चीन में उदल-मुयल करत रहे । यद्यपि हानवातीय चीनी मगाग ने उन्हें कुछ समय के लिए गान्त रगा किन्तु वे जन्म थे और जबमर पात हा उद्भव करत लगत थे । चीनी मगाटा के अथक परिश्रम से हूणा का प्रवाह पश्चिम की ओर मुट गया । माग का बसी जातिया का ठेगन-डबलन हुए वे पूर्वी गाय (आस्ट्रा गाय) के दगा पर टूट पड और उनका जन्म-व्यस्त बक् रामन साध्राज्य की पक्-मरापाय मामाभा पर बसने वाल पश्चिमी गाय (विजी गाय) लागा पर जा उम समय धार्मिक भू के कारण आपस में लड मिट रहे थे छा गये ।

पारम के मासानिया पर चढाई करने की कान्टेष्टादत की उत्कट अभिलाषा थी किन्तु ३३७ ई० में उमकी मृत्यु हो जाने के कारण वह पूण न हा सकी थी ।

कान्टेष्टान्त की मृत्यु के बाद उमके उत्तराधिकारिया में भयकर युद्ध होने लगा जिनमें मरसा का युद्ध (३५१ ई०) अत्यन्त विनाशकारी मिद्ध हुआ । कहा जाता है कि उम युद्ध में रामत मना के जिनने बडे-बडे गूरवीर थे सभी काम जाय । यह अव्यवस्थित दगा मन ३६३ ई० तक चलती रही ।

सेना ने उमके पुत्रा के सिवा किमी जाय का सम्राट बनाना स्वीकार न किया । कुछ समय तक उसके दाना पुन संयुक्त हाकर राज्य करते रहे । कास्टम की मृत्यु के पश्चात उमका भाइ कान्टेष्टिअस बचा ।

कान्टेष्टिअस (३३७-३६० ई०) के कोई सन्तति न थी, इसलिए उसने अपने भतीज जूलियन का मीजर नियुक्त कर लिया । पारम के शापुर द्वितीय ने आरमीनिया और मसापेटेमिया पर आक्रमण किया जिसका निरस्त करने के लिए कास्टेष्टिअस को बहुत समय तक युद्ध करना पडा ।

इसी समय कास्टेगइन वग का यह उल्लेखनीय व्यक्ति अपने प्रतिद्वन्द्वियों के मुकाबले में विशेष प्रकाश में आया। इसको कास्टेगइन ने अपने जीवनकाल में पश्चिमी यूरोप की रक्षा के लिए नियुक्त किया था। उसने अपनी योग्यता और कमण्यता का अच्छा प्रमाण दिया। अपना सेना से कई गुना बड़ी, चुनी हुई जमान सेना को कास्टेगइन के युद्ध में नष्ट कर उसका दमन कर लिया। फ्रेंको लोग उस युद्ध के युद्ध में उसने तावा बुलबा ली। राइन के उस पार भी उसने जमानों पर आतंक जमाने के लिए तीन सफल आक्रमण किए और मरिच का अपनी शक्तों को मानने के लिए उनका बाध्य किया। तभी सफलता उस क्षेत्र में किसी रोम वल का पहले कभी नहीं मिली थी। सेना पर उसका इनका गम्भीर तथा उल्माहवक प्रभाव था कि बिना वेतन के भूले प्यामे रोमन महत्प उसका अनुगमन करते थे। जलियन मुनिभित विचार का तथा विवेकशील शासक था। उसकी प्रशंसा और महत्त्व की वृद्धि से कान्स्टेण्टिनस के हृदय में ईर्ष्या और द्वेष की भावना जगी। उसने जूलियन का गाल से हटाकर फारस की सीमा पर जाने का आदेश दिया। उसका उलटा प्रभाव पड़ा। जलियन के सेनानियों ने उसको जाने में रोककर सम्राट घोषित कर लिया। कान्स्टेण्टिनस ने उसको दण्ड देने का तयारी कर ली। पर युद्ध छिपने के कुछ पूर्व कान्स्टेण्टिनस की मृत्यु हो गयी। उसी के साथ जलिया साम्राज्य का एकत्र शासक बन गया।

जलियन का चाय कृतव्य और शिष्टता में प्रम था। उसकी रुचि स्वाभाविक-तया इसाई धर्म के अनुकूल न थी। रोम के प्राचीन प्रतिष्ठित देवताओं के प्रति उसने श्रद्धा का प्रदर्शन किया जिससे उनमें फिर एक बार कुछ जान आ गयी। निश्चित होकर जलियन ने फारस पर चढ़ाई की। किल और नगर विध्वंस करना हुआ वह फारस की राजधानी के करीब पहुँच गया। किन्तु आरमीनिया की शिथिलता के कारण उत्तरी ओर से आने वाली सेना समय पर न पहुँच सकी। फिर भी युद्ध में भयकर रूप धारण किया। उसी युद्ध में किन्ही अनात मन्त्रि द्वारा जान्त होकर जूलियन ने प्राण विसर्जन किया (३६३ ई०)। उसने निघन के साथ ही कान्स्टेण्टिन वग का जन हो गया। फारस के सम्राट द्वितीय शापुर न पुन मेसापटेमिया और आरमीनिया पर अपना आधिपत्य जमा लिया।

३६४ ई० में साम्राज्य के इटली तथा पश्चिमी प्रान्तों पर क्लेण्टिनियन ने और पूर्वी भाग पर उसके भाई वलन्स ने आपसी समझौते के अनुसार अपना-अपना अधिकार

थियोडोसिअस सारे रोम साम्राज्य का अन्तिम सम्राट था। अपने जीवनकाठ मे ही उमने साम्राज्य को दो भाग मे विभक्त कर अपने दातो ऋडका म वाट दिया। उम समय सं वे पश्चिम-पश्चिम चले। यह पाथक्य केवळ भूमि और शामन तर ही सीमित न रहा। मस्कृति, जाचार विचार सभी क्षेत्रा मे वह व्याप्त हो गया। उम पाथक्य के दो स्पष्ट कारण थे। एक तो यह कि पूर तथा पश्चिम का समझाएँ कम उलझने पाती था और प्रत्येक भाग अपनी पूरे शक्ति तथा ध्यान जयत्र लगा सकता था। दूसरा यह कि पूर की मस्कृति तथा सामाजिक संगठन पश्चिम बाग से भिन्न थे। अतएव उनकी समझाया के समाधान के लिए विभिन्न नीति एवं विधि विधान आवश्यक थे।

सन ३९५ से साम्राज्य पर पुन भयकर जानमण आरम्भ हुए। थियोडोसिअस की मृत्यु के कुछ समय बाद ही विजी गाथा के बर कबीला का नेता अलारिक ग्रीम में घुमकर लूट मार करने लगा। साम्राज्य के पूर्वी भाग के सम्राट जारवेडिअस न उस घस दकर मिला लिया और एपिरस की सेना का सेनापति बना दिया। अगुवन अवसर देखकर उसने अपने सनिका को अच्छ अस्त्र गस्त्रा से मुसज्जित कर लिया। यह स्थिति केवल विजी गाथा की ही नहा थी वाण्टाल बर तथा अय जमन उपजातिया के सनिक और सेनापति एवं मंत्री भी साम्राज्य की नौकरी म थे। वाण्टाला के स्टिलिको नामक एक मरुतार ने ता थियोडामिअम की मतीजी म विवाह भी कर लिया था। जब एलारिक ने साम्राज्य के पश्चिमी भाग पर आक्रमण किया तब स्टिलिक ने दो युद्ध में उसे परास्त कर लौट जाने पर मजबूर कर दिया। पश्चिमी भाग का सम्राट होनोरिअस निकम्मा था। उमका मुख्य व्यसन मुर्गी पालना था। होनोरिअस क कान लगा ने स्टिलिको के विरुद्ध इतने मरे कि उसने सेनापति का बंध करवा दिया। उसके मरन मे उत्साहित होकर एलारिक पुन लौटा और रोम तक जा पहुँचा। बीमारी फैलने तथा भाज्य पदार्थों की कमी के कारण रोम वाले ने उसे भारी घम देकर शान्त किया। दूसर बय वह फिर लौटा और उमने सम्राट से कुछ प्रान्ता का मागा जिममें वह अपने कबीला के लोग का बसा दे। उमने हानारिअस का मिहामनच्युन करके अपने निर्वाचित व्यक्ति का सम्राट बना दिया। फिर भी झगडा तय न हुआ। आतिरकार सन ४१० ई० म विजी गाथा ने रोम पतह कर नगर का लूट लिया। ऐसी घटना राम के इतिहास में पहल कभी न हुई था। राम की जा कुछ बची-बुची धाक था वह सत्र भी मिट्टी में मिल गयी। लागा को यह प्रतीत हो चला कि रोम का निरामाव समार के इतिहास के एक बन्त बडे

अध्याय की अथवा या समझिए कि प्राचीन सभार व एक महान् युग की समाप्ति में हा रहा है।

रामनो की देन

पाश्चात्य दशा म स ग्रास तथा राम का इतिहास इसलिए विशेष महत्त्व का है कि उनकी सम्यता की गहरी छाप ही यूरोप का सञ्चति और सम्यता पर नहीं पडी वरन् समग्र यूरोपाय सम्यता का ही वह मूल स्रोत है। राम ने भूमध्यसागर की किनोपत ग्रीस का सञ्चति का पश्चिमी यूरोप म फलाया। अव्यवस्थित देशा म राम साम्राज्य ने दो सौ वष तक गान्ति स्थापित रणे और उसक बाद दो सौ वष तक उनका रणा की। रोम का शासन विधान, उसका कानून किनोपत उसका सावजनिक पक्ष जयावधि मनोरजक और गिशाप्रद है। रोम ने राजमत्ता, कुलान-सत्ता जनमत्ता तथा उाके मिथ्रण के विविध प्रयाग किये और रामन अपने अनुभव का णिहास सम्य समार के लिए छाड गये। साम्राज्य काल में उहाने करीब पाच सौ म्निमिपैलिया की स्थापना का और देश-काल के अनुसार उनके सगठन में हर फेर करते रहे जा गिक्षाप्रद है। यातायात यात्रा तथा सनिक जावश्यता की पूति के लिए उहान बहुत-सी सडक और लगभग एक सङ्ख पुल बनवाये। कला के क्षेत्र में स्थापत्य और मत्तकला की उहाने बडी उन्नति की जिसके प्रमाण आज तक मौजूद ह। मवना को एक केन्द्र से गम रखने का ढग सम्भवत उन्ही ने सिखाया। व्यापार के लिए बका, घन विनियोग जादि का बाकायदा उपयोग रोम साम्राज्य म हुआ। शिक्षा के सवघन तथा पाठयक्रम की व्यवस्था का उन्हाने प्रबन्ध किया। वनस्पति तथा जतु-जगत और कानून तथा चिकित्सा सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावली की रचना की। भापालकार प्रभावपूर्ण गद्य तथा इतिहास जादि की लेखन-कला म उहाने जञ्जी उन्नति की। शासनव्यवस्था ऐसे ढग की बनायी जिसका अनुकरण राजनीति क्षेत्र में ही नहीं वरन ईसाइया के धार्मिक सगठन में भा पूण रूप से किया गया। उनक उत्सव रीति रिवाज खेल-कूद तथा अयाय मनोरजन अमी तक पाश्चात्य देशो मे चले आते हैं। साराश यह कि रामना की सम्यता से ग्वापीय सम्यता आज तक उपकृत हा रहा है।

रोम साम्राज्य के तिरोहित होने की समस्या पर शतिया से विचार हाता चला आता है। सबडा विद्वाना ने विभिन्न दृष्टिकोणा स उस पर विचार किया है और अपनी-अपनी र्वि तथा भावनाआ के अनुसार उनके कारण निर्धारित किये हैं।

कोई भी बड़ी सम्पत्ता और सस्त्रुति जब नवीन स्थिति में विलीन अथवा परिवर्तित होकर नया रूप धारण करती है तब उसका निदान प्रायः पेचीदा और बटिन हाना है। ईसाई धर्म से प्रेरित लेखकों ने रोम के क्षय के कारण उसके मिथ्या धार्मिक विश्वास, भोग विलास प्रियता, नैतिकता की जवहेलना और स्वाथपूर्ण भ्रूता बताये हैं। सोगलिस्ट और कम्यनिस्ट प्रवृत्ति के लेखकों के अनुसार पजी पतिया और गरीबा तथा मजदूरों का सघप अथवा कुलीन सत्ता एवं राजसत्ता का जनसत्ता से द्वन्द्व रोम साम्राज्य के विनाश का कारण है। आधुनिक तकनीकी दृष्टि काण के लोगो ने औद्योगिक साधना की कमी को ही रोम के क्षय का मुख्य कारण निर्धारित किया है। हाल की गवेषणाओं से यह स्पष्ट हो गया है कि नैतिकता की अवनतना मिथ्या धार्मिक विश्वास सत्तति निराश्र, अन्तजातीय, विशेषण विभिन्न वण या रंगों के लोगो में पारम्परिक विवाह या यौन सम्बन्ध और स्नायविक शैथिल्य आदि का रोमना के विनाश का कारण बनाना नितान्त भ्रमात्मक, अज्ञानमूलक और असत्य है। यह हो सकता है कि उपयुक्त कारणों में सत्यता का कुछ लेना हो किन्तु जिम रूप में और जिम दृष्टता के साथ उनका महत्त्व देने की चष्टा की गयी है वह उपहामजनक है।

रोमना के, पाचवी शता ईसवी तक के इतिहास का विहंगावलोकन करने से कुछ साफ और कुछ घमिन् रेखाएँ दिखाई पडती हैं जिनसे उनकी उन्नति और अवनति की गतिविधि की कल्पना की जा सकती है। आरम्भ में रोम लोग माघारण कमठ किसान थे। वे स्वतन्त्रता सगल जीवन और स्वावलम्बन के प्रेमी थे। उनका समाज पारिवारिक और प्रजानात्रिक विधानों पर आधारित था। जब उन पर बाहरी अनुशासन आरोपित करने का प्रयत्न हुआ तब अपनी सत्ता और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए बल डाले गये। उनकी विजय ने उनको आगे बढ़ने के लिए उत्साहित किया जिसमें वे अपना राज्य बढ़ाने के प्रयत्न में पैसे गये। उनकी व्यापारिक तथा सैनिक आवश्यकता उनके कदमों को आगे बढ़ाती चली गयी। इटली पर आधिपत्य जमाकर वे भूमध्यसागर पर आधिपत्य जमाने का प्रेरित हुए, जिसका परिणाम यह हुआ कि उनका कायदेश्र स्पेन से पश्चिमी एशिया तक, भूमध्यसागर के दाना तटा पर स्थित प्रदेशों तथा ब्रिटो से डेयूब नदी तक फैल गया। विस्तार के साथ साथ नयी परिस्थितियाँ और समस्याएँ पैदा हाती गयी जिनसे रोमनों की उलझों बढ़ती चली गयी। डेयूब नदी के पूर्वी भाग में और काले समुद्र के तटा तथा फरात-दजला नदियों के पार ऐसी युद्धजीवी जातियाँ, राज्यों से उनकी

मठमठ जारम्भ ही गया जो कई शतिया तक चलन पर भी शांत न हा गयी ।

उपयुक्त ऐतिहासिक प्रवाह के कारण रोमना या वृषिमलक सरल स्यानामिक जीवन और समाज आमूल बदल गया । दस मित्त की विजया म लूटा हुई सम्पत्ति तथा गलामा के दला और वहा रा प्राप्त करा की जामदनी क कारण रामना वा वृषि छाडकर व्यापार सरल जीवन का छाश्वर अमीग की चर्या और जनमत्तात्मक मगठन क वल्ल राजसत्तात्मक विधाना का जाश्रय लेना पडा । ऐतिहासिक परिस्थितिया के अनुसार रोमना क जीवन में जा परिवतन हुआ वह जस्वामाविक नहा रहा जा सकता । मानव-समाज के विकास में इस प्रकार के परिवान हाते जाये एव हा रहे ह और सम्भवत हाते ही रह्य ।

मासृत्विक पथ पर विचार करो स भा कमावेश यही ननीजा निकलता है । रामना का ग्रीक मिथी तथा एशियाई सम्यताआ स घनिष्ट सम्बध स्थापित हाने पर उनके प्रभाव से जल्लता रहना असम्भव सा था । रोमन विचारा रहन-सहन व्यवहारा और विधाना में विविध प्रकार क विदेशी प्रभावा का स्पष्ट प्रमाण मिलता है । राम साम्राज्य जल और म्यल दोना ही मार्गो से दूर दूर तक सम्बद्ध था । एनलिए सबुचित अथवा सीमित रहने की नाति उसके लिए अव्यावहारिक आर शायद अनुचित ही सिद्ध होती । इतिहास म ऐम उगाहरणा का मिलना-कठिन है जहा एक प्रगतिशील सत्ता सफलता के साथ जाग कलम बटाकर आप-मे जाप हा प्रिना किसी अनिवाय कठिनाई क पीछे हटी हो । रामना ने जब अपनी गति को वाहरी परिस्थिति तथा जलम्य विरोध का जनमव हाने पर पीछे हटाना चाहा तत्र तक उनकी दगा बहुत कमजार हो चकी था । यहा क्या कम है कि व लगभग एक सहस्र वष तक ग्रीस म और सौ वष तक पश्चिम म अपने पर जमाय रह सके ।

सेनापतिया क आन्तरिक युद्धा, उत्तरी एव पूर्वो-सीमाजा क दबग जथवा सम्य गक्तिया के जाक्रमणा प्लेग मन्टेरिया की बीमारिया और सन्तति गिराध के प्रचलन क कारण साम्राज्य की जनसख्या तनी कम हा गयी कि सेना में शान्तीय लागा को ही नहा बरल वगर जाक्रमणकारियो का भी भरता करना साम्राज्य क लिए अनिवाय हा गया । एन नये भरती किये गये भाडे क सनिको से न ता रोम साम्राज्य क प्रति उननी श्रद्धा की और न किसी प्रकार का आनीय भावना की जागा का जा सकती थी । कठिन परिस्थिति आन पर क उमका सामना करने का उरमाह निराने के वल्ल पलायन हा किया बरत थे ।

यह आशा थी कि मारे साम्राज्य की प्रजा को रोमनो के समान अधिकार देने से उसमें अपनत्व की भावना जाग्रत होगी। किन्तु उमका स्थायी प्रभाव यह हुआ कि रोमना की मान मर्यादा भंग हो गयी और प्रान्तीय नेता राम के राजनीतिक जीवन में धुम पड़े। वे राम के उत्कृष्ट की चिन्ता न करके स्वायत्त-साधना में ही मलग्न रहते थे। रोमना की दृष्टि में उहा स्वतंत्रता का सदुपयोग करने के बदले उमका दुरुपयोग ही किया। सम्भव है कि किसी सीमा तक उहाने साम्राज्य का पशुजल बढ़ाया हो किन्तु प्राण-बल का क्षीण करने में काफी भाग लिया।

आर्थिक क्षेत्र में भी रोमना की नीति उपयोगी सिद्ध न हुई। ऊपर सक्त किया जा चका है कि राम का कृषक जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था। यहा तक नीवत पहुँची कि रोमना का अधिका के तटस्थ प्रदेशों से जन मँगाना आवश्यक हुआ। वहा में जनाज आगे में कोई बाधा जान ही चाहि चाहि का जानाद मूजने लगता था। जा बाद जनाज लाकर देता, रोम की जनता उसी का जय-जयकार करो लगता थी। रोमना का व्यापार आरम्भ में अच्छा-बुरा चलता था किन्तु साम्राज्य में बढ़ने और यातायात के यथेष्ट साधना की कमी के कारण व्यापारी लाग प्रान्ता में जाकर उद्योग घट जमाने लगे। प्रांता से कारीगरों की मांग बढ़ी जिससे रोम की कारीगर अधिक लाभ की आशा से वहा जा बसे। जब प्रान्ता में उद्योग घट चमक उठे तब रोम की बनी चीजों की मांग घट गयी और उमके व्यापार को ऐसा क्षय गग लग गया जिसमें वह उबर न सका। रोमना के अमीरी रहन-सहन के कारण उनकी शौकानी की चीजों की आवश्यकताएँ बढ़ी। उनके पास न ता गाने-माने और न किसी व्यापार की ऐसी सामग्री थी जिसे वे बाहर से आयी चीजों के बदल दे सकते। जब तक उनकी खानों सोना चाँदी देती रहीं तबतक तो कोई खास कठिनाई न हुई किन्तु जब चाँदी की कमी पडी तब उहाने मुद्रा का काल्पनिक मूल्य निर्धारित करना अथवा या कहिए कि उसको ध्रुष्ट करना शुरू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि बाहरी व्यापारियों ने स्वणमुद्रा में चीजों की कीमत लेने का जाग्रह किया। अतः माना चाँदी की उत्तरोत्तर कमी हाती गयी जिससे विविध क्षेत्रों पर अनिष्ट प्रभाव पडा। उमी प्रकार लकड़ी की मांग बढ़ने से अनेक निर्माण कार्यों तथा सतिका की आवश्यकताओं के लिए पडा के जंगल काट दाले गये। फलतः अच्छी लकड़ी की भी कमी पड गयी। इन सब कठिनायियों के साथ साथ साम्राज्य की विशेषतः इटली और रोम आदि नगरों की प्रजा में बेकारी और गरीबी उत्तरोत्तर बढ़नी चली गयी। जीवन निर्वाह के लिए उनको रोटी, नमक, तेल देना आवश्यक हो गया। उमके

सिवा उनके मनाविनोद के लिए कोलीसियम स्टेडियम आदि के खेल-तमाशा का करवाना भी आवश्यक समझा गया, जिसमें बहुत धन खर्च होता था और जिसके जमाव में उपद्रवों और अनेक प्रकार के जुर्मों के बन्दे की सम्भावना थी। फलतः गरीबों और बेकारों तथा लुगाडा को अनुदान देने बेकारी राकने तथा झठे-मठे निर्माणकार्यों का चंगने में भी बहुत खर्च करनी पड़ती थी। उन कठिनाइयों से भी बढ़कर शासन तथा सेना की अनिवाय वृद्धि के कारण खर्च में अपार वृद्धि होती चली जाती थी। ऐसी चिन्त्य दशा में करा-गाना, टक्का-जानि की उत्तरात्तर वृद्धि के कारण किसानों की तो दशा शोचनीय थी ही, व्यापारियों को भी अधिकधिक बाधाओं का सामना करना पड़ा। सारांश यह कि कृषि व्यापार मुद्रा साख उद्योग धंधे जादि आर्थिक जीवन के समी क्षेत्रों में अव्यवस्था, असंतोष एवं क्षय के लक्षण भीषण होने लगे थे।

कुछ विद्वानों की यह धारणा है कि जिन जिन क्षेत्रों में रोमनों ने कर्म उठाया उनमें वे पराकाष्ठा तक पहुँच गये जिससे जग बढ़ना तभी सम्भव हो सकता था जब कोई नवीन दृष्टिकोण अथवा नयी चेतना जगती। तत्कालीन परिस्थिति में उसकी कोई सम्भावना दिखाई न पड़ी। स्थापत्य मूर्तिकला और कुञ्ज इजीनियरी का विकास अवश्य हुआ, परन्तु विज्ञान अथवा कला के क्षेत्र में उन्होंने किसी विशिष्ट अथवा प्रगतिशील सिद्धान्त की कल्पना नहीं की। गणित का ज्ञान उनका ग्रीस वालों से मिला किन्तु वह इतना परिपक्व था कि राम वाले उससे आगे बढ़ने में नितान्त असमर्थ रहे। वस्तुतः रोमनों की प्रतिभा व्यावहारिक विषयों से सम्बद्ध रही तत्त्वानुसंधान की सामर्थ्य का उन्होंने कोई प्रमाण नहीं दिया। साहित्य के क्षेत्र में भी उन्होंने ग्रीकों का ही अनुसरण किया। काव्य, जल्कार व्याख्यान कला और इतिहास तक ही उनको साहित्य में दिलचस्पी रही। सारांश यह कि उनका प्रतिभा न तो बहुमुखी थी और न पारदर्शी ही। फलतः सांस्कृतिक क्षेत्र में वह एक सीमा तक पहुँचकर रुक गयी जिससे यह अनुमान किया जा सकता है कि उसका काव्य समाप्त हो गया अर्थात् उस युग का अन्त हो गया। जागे के विकास के लिए नये विधान और दृष्टिकोण की आवश्यकता हो गयी। नगर तथा नागरिक जीवन की शिथिलता के कारण बहुमुखी सम्यता तथा सस्कृति का जीवनज्ञान सूख सा गया। यह माना जाता है कि ईसाई मत तथा उत्तरी यूरोप के विद्वानों से नये युग का सन्तान प्राप्त हुआ, जिससे पश्चिम सम्यता के दूसरे युग का आरम्भ हो गया।

रोम का सामाजिक जीवन

ऐतिहासिक रोम के प्रथम सहस्र वर्षों में रोम का सामाजिक जीवन प्रगति अथवा परिवर्तनशील रहा, अतएव सुविधा के लिए उसका क्रमबद्ध वर्णन अनिवाय है। प्रथम तीन शताब्दियाँ (६००—३०० ई० पू०) में सामाजिक जीवन कृषि तथा कुटुम्बमूलक था। पैतृक व्यवस्था के अनुसार पिता का कुटुम्ब पर एक प्रकार से अर्पारमित प्रभुत्व रहता था। वह यदि चाहता तो अपनी पुत्री, पुत्र तथा स्त्री का वध तक कर सकता था। सारी सम्पत्ति पर उसका अधिकार था वही सर्वेसर्वा था और सब लें-देन करता था। इसका एक परिणाम यह हुआ कि कुटुम्ब के प्राणियों को सगटित अनुशासन में रहने का अभ्यास हो गया और बौद्धिक जीवन दल तथा जात्मीय भावना से अनुप्राणित हो गया। आचार विचार तथा व्यवहार में नियन्त्रण स्थापित हो गया। साधारणतः पिता अपने अधिकार का दुरुपयोग नहीं करता था क्योंकि उसका मनुष्यत्व, रीति रिवाज जनमन, वगैरे पचा की ममा तथा प्रटर का अनुशासन उसके व्यवहार पर एक प्रकार का सन्तुलन और प्रतिबन्ध बनाये रखते थे। पुष्प का अविवाहित रहना अनिष्टकारी माना जाता था, क्योंकि उससे कुटुम्ब की शक्ति का ह्रास, अनिवाय विवाह के अनिष्टक जतिभ्रमण तथा आर्थिक हानि सहने के सिवा मरणोपरान्त आत्मा को अनेक यातनाओं का कष्ट भागना पड़ता था। विवाह का विशिष्ट ध्येय पुत्र उत्पन्न करना माना जाता था। पदा होने के आठ दिन के बाद बच्चों को सम्कार द्वारा कुटुम्ब में शामिल किया जाता था। रोमन माताएँ बच्चा को दाइया या दासिया के भरोसे नहीं पालती थीं। वे उन्हें स्वयं स्तनपान कराती और उनका पोषण करती थीं। माता का सन्तान के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ता था। यद्यपि पत्नी के अधिकार कानून द्वारा रक्षित न थे और स्त्री होने के कारण उसका पिता, भ्राता अथवा पुत्र की रक्षा में रहना आवश्यक था, तथापि व्यवहार में उसका स्थान तथा प्रभाव अच्छा-बुरा था। अपनी सम्पत्ति का वह स्वयं प्रबन्ध करती और लें-देन भी करती थी। कुटुम्ब में उसका उत्तम सम्मान था। वह परदे के भीतर बंद नहीं रखी जाती थी। धार्मिक क्षेत्र में वह पुरोहितिका का पद ग्रहण कर सकती थी। गृहिणी अथवा पुरोहिणी की दृष्टि में वह नौकरा चाकरा तथा खूब का नियन्त्रण करती थी। बुनना, कानना, उसके साधारण काम थे। उसको ओछे कामों के करने की आवश्यकता इसलिए नहीं पड़ती थी कि प्रायः उन कामों के लिए गुलाम रखे जाते थे।

विवाह के लिए पुरुषों की आयु चौदह से बीस वर्ष और कन्याओं की कम से—

ब्रह्मचर्य वप से १९ वष तक की अच्छी समझी जाती थी। ब्रह्मचर्य सम्प्रदाय ब्रह्मचर्य के माता पिता निश्चित करते थे। विवाह में रामानी प्रेम के लिए कोई स्थान न था। प्रेम का प्रसंग विवाह के उपरान्त आरम्भ होता था। यद्यपि पुरुषों के लिए ब्रह्मचर्य की वद न थी और उनका स्वैरिता की काफी गुंजायमान थी किंतु विवाह के लिए कन्या का अज्ञान होना आवश्यक समझा जाता था जिससे सतति का शुद्धता सुरक्षित रहे। लड़कें वाले को स्त्री धन (दहेज) देना पड़ता था। ब्रह्मचर्य की चीथा उँगली में लोहे की अँगठी पहनाता और तण तोड़कर अपने कतव्य पालन की प्रतिज्ञा करता था। विवाह पांच या छः प्रकार के होते थे। उच्च कुल में विवाह धार्मिक सस्कारों के साथ किया जाता था और वह सबसे अच्छा माना जाता था। कन्या हरण अथवा कन्या त्रय बुरा समझा जाता था। विवाह के अवसर पर नाच-गाना भाज और धूम धाम होती थी। यद्यपि विवाह विच्छेद अवध न था तथापि उसका प्रचलन नगण्य-सा था। तलाक के नियम भा कठोर थे। ब्रह्मचर्य और प्रत्यक्ष व्यभिचार ही उसके मुख्य कारण हो सकते थे। केवल पुरुषों को तलाक देना का अधिकार था। साधारणतः पति-पत्नी प्रेम के साथ गृहस्थ जीवन व्यतीत करते थे। पुश्तलिया का व्यापार प्राचीन रोम में ठण्डा न था यद्यपि ग्रीस के समान रोमनों में वस्यागमन कोई जघन्य कृत्य नहीं मना जाता था।

कौटुम्बिक वातावरण के फलस्वरूप रोमनों में कतव्यपरायणता महिष्णुता समय उद्यमशीलता रहन-सहन की सरलता परम्परा का आदर अनागतन का सम्मान व्यवहार-शुश्रूषा आदि गुण प्रस्फुटित हो गये। यद्यपि रोम वाला का पत्नी प्यारा था और दान-दक्षिणा देने से वह यथामाध्यम बचत थे तथापि चारा बर्झमानी आर भ्रष्टाचार में दूर रहते थे। मित्रा तथा परिचित लोग में बिना मूल के लन दन होता था। सज धज वनाव शृंगार घटक मटक ठाट-बाट टीम-टाम को वह अच्छे गुण नहीं मानते थे। उनकी पोशाक ग्रीस के लोगों की सी थी। पुष्प अथवा स्त्री चादर आजत थे जिमके किनारे रंगीन होने थे। समाज में उनका स्थान पान रहता था। घरों में पुरुष सादी कमीज और स्त्रियाँ लम्बे पहनती थी। तामरा गता ई० पू० तक रोम वाला का भाजन राटी गहने पनार जतून का तल तरकारियाँ फल और पीने के लिए हलका मस्त्रा थी। श्री-सम्पन्न लोग की माम और मछली खाते थे। उनका के अवसर पर दावतें देते और खान का लोका का गौरव था।

उपयुक्त गुणों के कारण रोमन लोग अपने प्रतियोगिता पर विजय पान रहे। किन्तु ज्याँथा उनका राज्य तथा ग्रीक सभ्यता और आचार विचार का प्रभाव

बन्तता गया था-त्या उनके रक्त स्वभाव और रहन महन में परिवर्तन हुआ गया । यद्वा क कारण उनमें निदयता तथा हिंसा क भाव भी बन्त गया । लूट-भसोट स प्राप्त सम्पत्ति और गुलामा की वृद्धि स उनके जीवन मे कृत्रिमता शान शक्ति, भ्रष्टाचार तथा एश-आराम और विलासिता बढ़ना गयी । सनिक आवश्यकताओं के कारण अधिक समय तक घर-घर से दूर रहने स उनका कौटुम्बिक जीवन शिथिल आर क्षीण हुना चला गया । वे क्रूर, लालची स्वच्छाचारी, स्वार्थी तथा विलासी ज्ञाते चले गये । कौटुम्बिक जीवन अस्त-व्यस्त हुने से उनम उच्छ्वसलता तथा अनु-गामन की अवहलना बढ़ती गयी । उनके रहन सहन और आचार विचार मे अमीरा की चकाचीध घर बरती गयी । उपयुक्त लक्षण ईसा के पूर्व तीसरी शती मे उत्तरोत्तर बन्त गये यहा तक कि राम धागा क जावन और समाज की काया ही फलट गयी । पुण्या के ही नहीं बरन म्त्रिया के भी समय जोर जावरणा मे दिना दिन परिवर्तन ताता गया । कौटुम्बिक जीवन की मयागएँ टूटती चनी गयी और स्वाध, म्दरिता तथा विलामिता का समा बधना चना गया । बडे नगर के पुण्या तथा म्त्रिया मे व्यभिचार का प्रचलन हा गया । बेस्यागह जोर भटियारगाने बन्त चले गये । बेस्याआ और बेस्यालया का रजिटर रखा जाने लगा । बेस्यागह शहर के बाहर हुने आर कवल रानि म सुलते थ । बेस्याआ में एक ऐमा वग भी था जा मुशमित जोर काष्प मधीत तथा नाटय कला एव वातचीन तथा गिष्ट व्यवहार में बडा निपुण था । पुण्या का भी एक वग था जा वणिक बस्ति करता था । लोग आर्थिक आयवा राजनीतिक लाभ क लिए विवाह करने लगे । यदि उन्हें जागा के अनुकूल लाभ न हुआ तो विवाह विच्छिन्न करने म उन्हें सवाच न हाता । एक पुष्प मे म'तुगट ही जाने वागी म्त्रिया की मर्या उता'नर बन हाती चली गयी । म्त्रिया बनी टना रहने स्वतन्त्रतापूर्वक धमने फिरन जोर विलाम करने लगी । पुण्या की दगा उनमे भा बरा था, पुन जनने के कष्ट और गृहस्थी क धमेला म लाग लुगाई बचने लगे । बवाहिक ब'घन म न फमन वाला की सख्या म चित्तोजनक वृद्धि हा गया । यह स्थिति निमित्त तथा उच्च श्रेणी के राम धाला की था किन्तु अयाय प्रेम्णा से लाये हुए गुलामा तथा राजाविका की तराग में जाये हुए लागा की मत्तति बन्नी चली जाती था जिमसे रामन समाज जोर सम्बृति दबता जाती जोर आर्थिक ममस्या जटिल हाती जाता थी । कानून द्वारा रक्त मम्मिथण रकने, अविवाहिता पर टकम लगाने जोर व्यभिचार रानने क प्रयत्न किये गये किन्तु वे निष्फर रहे । विमधिया ने अविवाहित रहने का कारण यह धताया कि स्त्रिया स्वरिणी जोर

अविश्वमनीय तथा गर्जाली हो गयी है। राज्यसभा न बन्ता हुई पञ्चमी को रोम के लिए कानून बनाय किन्तु जब उमरो मर्य्य है उनका उल्लंघन करते थे ता अथ लग उनका क्या परवाह करते। धन, व्यापार, महक, वाडियां त्रिगसबुज हमाम, बाग-बगीच जाति आमाद प्रमाद व साधन तथा वामुनता व प्रमाधन पुष्पा म ही नहीं बरन नारिया में भी बन् चल गय। उपयुक्त प्रवृत्तिया की पूति में गुणमा की अभिवद्धि न यत्र महायता की। गहरा में मिपारिया, बन्मागा जोर लुगाडा की त्रिट मुपा में जत्र मिगता या, सन्मा बन्ती चला गयी। यह स्मरण र्वन्ता चाहिए कि उपयुक्त दाप प्राय नगरा में पाय जाने थे। ग्रामा जोर छाटी बस्तिया म उहाने विनराल रूप धारण नहीं किया। वहाँ रामना व पूववर्णित गुणाम उनना शान्तिवागी परिवान नहा हुआ।

यद्यपि पुरानी मर्यागा व उल्लंघन स मित्रया की नतिह हानि हुई तथापि उनमें त्रिरे दाप ही नही प्रकट हुए। उन्हें तलाक देने का अधिकार हा गया किन्तु व उनका उपयोग यदाकदा ही करती थी। व्यमन जोर विलासिता व भाय-ही-साध उनम ललित कलाभा और विद्या का अनुराग उत्पन्न हो चला। व ग्रीक साहित्य दशनशास्त्र डाक्टरों, कानन आदि पन्ने-पाने और विविध विषया पर भाषण दन गयी। काव्य, नृत्य गान तो उनके लिए उपयुक्त थे ही व व्यापार जोर लेन-दन भी अच्छ-यासे पमाने पर करों लगी। पुस्या की तरह खुलकर सामाजिक आमाद-प्रमाद म भाग लेने याग्य हा गया। पुरपा वान्नी स्वतंत्रता और अधिकार की माग स्त्रिया व भी हाने लगी। इस आन्दोलन का प्रमुख प्रतिपादक मुसानिया का रूपम था (६५ ई०)।

रोमना म जात्यभिमान जोर बुलाभिमान अधिक था। जारम्म म राम व निवासिया में तीन वग थे। एक तो पेट्रीशियन उच्च वग, दूसरा प्लीवियन निम्न वग। इन दोनों के बीच में 'एन्ट्रिटस थे जिनका पना व्यापार था। पेट्रीशियना व हाथ म राज्य-सभा जोर सैय-संचालन था। व लाग व्यापार करना तुच्छ काम समझते थे। प्लीविया प्राय कारीगर छाटे किमान अथवा स्वतंत्र विय हुए विजित लाग थे। सबसे अधम श्रेणी गुलामा की थी। एमा प्रनीत हाता है कि रोम म क्षत्रिय वश्य, गूद्र तथा गुलाम चार वग थे। चूकि विद्या के प्रति न ता उस समय प्रम ही था जोर न उनका प्रचार ही। अतएव वहा श्राह्मणा की-मा कोई श्रेणी न था। उसना प्रादुर्भाव २० पू० ततीय शनो म हुआ जोर ग्रीक साहित्य स स्फुति पाकर विद्यानुराग उत्तरात्तर बढ़ता गया।

आर्थिक व्यवस्था

आरम्भ में रोम तथा इटली के निवासी कृषक थे। पुष्प रित्रियाँ, लडके-रड किया जाता था काम करते और अपनी साधारण आवश्यकताओं की मितव्ययिता में पूर्ति करते थे। लांग के पास दा चार एकर अपनी जमीन होती थी जिसमें वे अपना काम चलाते थे। युद्ध करते जोती हुई जमीन राज्य अथवा जनता की मानी जाती थी। जनता के अलावा वे तरकारियाँ और फल फल भी बना करते थे। लोग प्रायः भड़ और मुअर पालने और मुर्गियाँ रखने में। सघन तथा राज्य की वृद्धि के कारण किसानों का मन में शामिल होना पड़ता था। सैनिकों काय की जमिंदारी तथा युद्धों में बंद मर जाने से कृषक समाज अव्यवस्थित होना गया। खेती-बारी स्वतंत्र कृषकों के बदल गुलामों के द्वारा करायी जाने लगी। खेती की देखभाल और उनका रक्षण में लापरवाही होने के कारण किसानों को या तो बेचने लगे या अन्न के बच्चे फल आदि अधिक लाभप्रद पदार्थों की खेती करने लगे। बड़े जमींदारों का मुकाबला करने के साधनों के अभाव में छोटे कृषक जमीन बेचकर शहरों में रोजगार और घरे ढहने लगे। आज की उपज उत्तरात्तर कम होती गयी किन्तु उन कमी का पूर्ति के लिए कृषि विधान पर ध्यान नहीं दिया गया। बहुत-सी खेती योग्य जमीन भेदा के लिए करने को छोड़ दी गयी अथवा जमीन ने उस पर बाग या बगीचे लगावा लिये। भेरा, गाय, घोड़े और मुअर पैदा करने के लिए तथा अगूर, मेवा अजीर तथा जतून की फसल से अधिक फायदा होना देखकर धनिया ने बड़े-बड़े चरगाहों का बाग बना लिया। खेती स्वतंत्र किसानों के हाथ में गुलामों के हाथ में चली गयी और जमींदारों के हाथ में न रहकर शहरों में बसने चल गये।

इटली में यद्यपि कुछ लोहा, तांबा, टीन और जस्ता पाया जाता था। किन्तु खनिज मात्रा में नहीं कि जिससे बड़े पैमाने पर व्यापार चलाया जा सकता। सोने का जत्यन्त अभाव था और चाँदी नगण्य मी मिलती थी। खानों में गुलामों का काम करते थे। धातु की चीजों में सबसे अधिक लाभप्रद औजार तथा अन्न गहन थे। इनके अलावा मिट्टी के बरतन पाइप टाइल कुछ ऊतों और कुछ सूती कपड़ा भी बनता था। पैसा के अनुसार कारीगरों की संगठित श्रेणियाँ थीं। रोम के उद्योगों का ह्रास होने के कई कारण हुए। एक तो यह था कि इटली से दूररे प्रदेशों का माल मजदूरी में इतना खर्च लग जाता था कि वहाँ की मजदूरी से खरीदारों को कम मिलता था। उस कठिनाई का दूर करने के लिए बड़े व्यापारियों ने प्रदेशों में कारखानों का लोहा जिन्में इटली के कारीगरों का काम करते और सिखाते थे। उस नीति का परिणाम यह

हुआ कि इटली के बो मारु का बाजार बरौज-बगैज जाता रहा। व्यापार घटा सों इटली के कारीगर दूसरे प्रदेशों में बाजार बगन लग और इटली में उनका काम पड गयी। दूसरी कठिनाई रंगम र रईगा का गीम था। व लाग र्शिया में बर्शिया सामान अरु र्शिया से मंगवान थ, इटली र माल में उनका सन्तोष न हाता थ।

पहले मार्गों की व्यवस्था ठीक न हात सों व्यापार में बड़ी जखन पडनी था। भूमध्यसागर पर अधिभार प्राण हाते तथा मडक और पुठ उन जान स आग चखर गुनिधानें ता प्राण हूँ किन्तु तत्र तत्र साम्राज्य तथा व्यापार का ऐमा नकना बखर गया कि आयात का अपार बद्धि तथा निर्यात का ग्राचीय कमी पड गयी। जत्र तक राम का अपने अधीनस्थ प्रदेशों में हूँ जयवा कर द्वारा धन मिलता गया तत्र तत्र ता गुलठरें उडत रह किन्तु जत्र उम प्रकार की आय सों साम्राज्य का खच चलाना ही कठिन हो गया तब राम की जायिक समस्या उत्तरोत्तर चिन्ताजनक हाती चगी गया। उसके अलावा प्रदंगा में धनिका और कागीगग के चले जान स वहा ता उद्योग बन्त किन्तु उसका परिणाम यह हुआ कि इटली की बनी चीजा की माग घटनी चली गया और उमकी जायिक दंगा दिना दिन बिगडती गयी। बेकाग और गरीबा की समस्या में भयकर बद्धि हाती रही।

ईसा के पूर चौथी शती तक राम वाला में मिकक का प्रचलन न था। आदान प्रदान विनिमय द्वारा होता था। प्रत्यक वस्तु का मन्थाकन पगआ की उपयोगिता से किया जाता था। इ० पू० ३२८ से तावे के २६९ से चाणी आर २१७ ई० पू० से सोने के मिकका का प्रचलन हुआ जिममें महाजनी और बर्किंग की उत्तरोत्तर उन्नति होगे लगी। जारम्भ में बक मदिरो में स्थापित किये गय ब्याकि पब्लिक देवालय में चोरी या लट की आसका कम थी। सूद की दर साधारणत बाह्य प्रतिशत थी किन्तु लाग उससे अधिक देने का प्रयत्न करत रहते थ। भूखोरी का रोग जागे चलकर बतना बन्त कि बहुत मे बक और काठिया मन्थि से निकलकर नगर में स्थापित हा गया।

गासन का कमी-बमी व्यापार के नियन्त्रण की आवश्यकता पड जाती थी और बहू नियर्तन तथा जापान की मात्रा को घटा या बन्त देना था। साधारणतया उमका नीति उदार थी। नगर में जानेवाली बन्तु पर चगी तई प्रतिगत र्शायी जाती थी। साम्राज्य की आवश्यकता के अनुसार टकम घटते बन्त रहत थ। किन्तु साम्राज्य के उत्तर काल में टकमा की इतनी बद्धि हाती चगी गयी और टकम उगाहन वाले टेकेदारा की क्रूरता इतनी बडी कि प्रजा में त्राहि त्राहि मच गयी।

आमोद प्रमोद

आरम्भ में ही गमना का गाने, नाचने, अभिनय तथा खेल-बज का गीक था। उमवा त्योहार, सम्वाग और छट्टिया में घरा और मार्गों पर जहाँ अवसर मित्र रोमन चाह अरुते या मित्र मण्णी बनानर गान-ब्रजात और खेल-तमाने मे मना विनाद करते थे। यामुगी तथा वीणा उनके मुख्य वाजे थे किन्तु अनेक प्रकार के तबल वाद्य, पिपिटंग आदि का भी व प्रयाग करते थे। पाँच प्रकार के गने के ये प्रचलित थे जिनमें एक या उममे अधिक व्यक्ति भाग लेते थे। घाडे पर चन्द्रर मो एक प्रकार से गद खेला जाता था। सम्भवत बह सत्र पाला के ढग का रूहा हागा। अखाडा में दौड बूद पाँच व सिवा अनेक प्रयाग के दूध मुद्ध हात थे। कर्मी और गुलामा की वे ऐसी जाड उडवात थे जिनमें कभी-कभी व कट-भर जान थ। तीमगी गी ई० पू० में बड पमाने पर प्रतियागिता तथा दूधमुद्ध आदि के प्रश्न के लिए मकम पहल प्रागण (मकम) का निर्माण हुआ जिसमें विना टिकट के मुफ्त में खल दिवाये जान थ। धीरे धीरे नित्य तथा हत्यापूण खेला का लाग म इतना शीक पदा हुआ कि मनापनिया, प्रगामका आदि के लोकप्रिय हाने के लिए मकम के खग का जायाजन करना अनिवाय मा हो गया। जनता के अनुरजन द्वारा उसका बल प्राप्त करने के लिए नताआ में लाग डाट बढ़ती चगी गया। कर्क सकमा का निमाण हुआ (८० ई०) जिनमें सबसे विशाल बानिसिप्रम नामक था, जिनमें पचास हजार दगाक बठ सकत थे। उसमें अस्मी प्रवगादर थे। उसके ध्वसावगेप जथावधि विद्यमान थ। वह रामन स्थापत्यकला की विगालता का दातक है। मकसा में रथा, घाडा की दौड नटो के खेल जादू के खेल, नकाला और भांडा के प्रदगन, नाका-मुद्ध, स्यत-मुद्ध, पगुआ और मनुप्या का यद्ध तलवार, बछे-नेजा की प्रति यागिताएँ मुट्टिका-याद्धाआ के मच्चे और आभरण मुद्ध आदि होने लगे। बटा सन-खरावा और लामहयक धीमरम दश्य उन खेला में हाता था। उन हत्यापूण और रक्त रजित प्रदगना में बरिया गुलामा तथा कभी-कभी पगवग का उपयोग किया जाता था। कभी-कभी ये प्रदशन १२० लिना तक चलन थे। टाइटम के प्रदगन में पाच सत्रस पगुआ का वध एक ही दिन में हो जाता था। उन खेला न रामना का हृदय कठोर नित्य और ज्ञानिम बना दिया था।

रोमना का अभिनय का मो गीक था। अभिनय के लिए रईमा ने विना छन के विशाल भवन बाबाये थे। छत के बले जावश्यकतानुसार चाँदनी फला दी जाती थी। एक भवन ता इतना बडा था कि उममे तीस सत्रस दगाक बठ सकत थ।

दशका का किसी प्रकार की फीम नहीं दनी पड़ती थी। यद्यपि कभी-कभी रोमन व्यक्ति भी अभिनय करते किन्तु साधारणतः वे अभिनय करना अच्छा न समझते थे। अभिनयता प्रायः ग्रीक लोग होते थे। इन अभिनयों में यद्यपि चेहरे लगाकर प्राचीन नाटकों के जशों का पाठ अथवा कथोपकथन हाता था तथापि मूक प्रदर्शनता मजाता की अभिरुचि अधिक थी। कठपुतलिया के खेल, ताच, जादू के खेल, कदुक उछालने, कला-लाषव, अगोपागो का उदघाटन तथा भाडा की नकला का जो कभी-कभी स्पष्ट अदलीलता की सीमा तक पहुँच जाती थी, प्रदर्शन होता था। रोमना की रुचि का स्तर ग्रीक लोगों से कहीं अपरिष्कृत तथा नीचा था।

वर्ष में सौ दिन त्यौहार के लिए निश्चित थे। महीने का पहला पाचवा तथा नवा या पन्द्रहवा दिन त्यौहार के विशेष दिन माने जाते थे। प्रत्येक त्यौहार मनाने का निश्चित विधान और उसका अपना महत्त्व था। उनका त्यौहारा का अधिकतर सम्बन्ध कृषि या कृषक जीवन के साथ था। पेरेण्टालिया तथा फरलिया के उत्सव परवरी मास में धमधाम से मनाये जाते थे। उस अवसर पर दावत होती मद्यपान से लगभग मत्त हाकर मदनात्सव मनाते थे वे विधवाआ, विवाहिताआ कुमारिकाआ तथा स्वतंत्र बालका पर हस्तभेष न करने थे। जप्रल में फलो का उत्सव मनाया जाता। दिसम्बर का मुख्य उत्सव सेटर्नालिया सत्रह से नैईस तारीख तक मनाया जाता था। उस अवसर पर पटीशियन और प्लीशियन स्वामी और दाम का भेद भल सब सम्मिलित होते और उत्सव मनाते थे। उस समय पर अदलीलता के बचन और मदाचार के नियम शिथिल कर लिये जाते थे। इस उत्सव की ममता भारत के हालिकोत्सव से की जा सकता है।

कलाएँ

जार्मन में रोमना के मकान पक्की इन्टो के बनते थे जिनमें केवल एक ही कमरा होता था। उसी में उठना-बठना चल्हा चौका खाना-पीना होता था। छत में एक गवाक्ष बना होता था जिससे धुआँ बाहर निकलना रहे किन्तु वर्षा में उसमें झोकर जल भीतर घुस आता था। आर्थिन उन्नति के साथ-साथ वास्तुकला की उन्नति होने लगी। यूट्रुस्कन लोग एशिया से महंगे गुम्बज तथा परवरी नालिका बनाने की कला सीख चुके थे। राम बाला का ग्रास के गहस्तम्भा तथा छता की पटाई का ज्ञान भी था। अतः वास्तुकला की उन्नति शीघ्रतापूर्वक होने लगी। सम्पन्न लोगोंने विशाल भवना का निर्माण कराया जिनमें सुन्दर खम्भा वाले दालान

कमरे, स्नानागार हौज, पत्रारे, हम्माम, पच्चीवारी के पद, जल आने-जाने तथा कमरा को गम रखने की नाटिकाएँ बनायी जाती थी। मराना की सजावट के लिए पत्थर एवं ताँबे की विभिन्न आकार तथा विविध प्रकार की मूर्तियाँ और बालीन, परद, पर्नोंचर आदि एकत्रित कर लिये जाते थे।

लागो व मकान जोर महल समृद्धि व उतने द्योतक न थे जितने कि विशेषण गम तथा अच बड नगरा के दरालय, जानीय स्मारक, महाराजदार फाटक, लोकोपयोगी स्नानागार, राजभवन, सनस जोर थियेटर आदि थे। यद्यपि मह सत्य है कि रामना की बलात्मक प्रतिमा ग्रीसा व ममान न थी तथापि ग्रीस की कला न जोर कुछ अंग में मिलि की कला ने उहें अनुराग और स्फुटि ऐसी प्रदान की जिमसे पूण लाम उठाकर जोर उम पर अपनी छाप लगाकर उहाने अपनी वास्तुकला की श्रीवृद्धि की। उनकी इमारता में ठोसपन, दृढता, विगदना, विगालता तथा महानता के गुण प्रचुर मात्रा में मिलने हैं जिनका अनुकरण गनिया तक यूरोप में होना रहा। उनकी कला के लिए 'रोमनेस्क' शब्द का प्रयोग किया जाता है। रामना ने पत्थर के अलावा पक्की इटा तथा कच्चीट का जैसा उपयोग किया वैसा सम्भवत उनसे पहले कहीं भी न हुआ था। पत्थर से हलकी हाने के कारण कच्चीट से बड़ी और चौड़ी मेहराबा, बड़े-बड़े गुम्बजा और धनुषाकार मेहराबदार छाना की रचना कर मकाना सम्भव हो गया। विगाल इमारता का सुसज्जित करने में भी उनका बहुत कुछ सफलता प्राप्त हुई। गनिया के मेहराबदार सुन्दर पुल जसे रामना ने बनाये बसे पहले कहीं भी न बने थे। रिमिनी का पुल (२२ ई०) उनकी कला का प्रत्यक्ष प्रमाण था तब विद्यमान है। फ्लेवियन काल के बनाये बालिसियम (८० ई०) के ध्वस्त-वशेष अद्यावधि दगावा को चकित कर रहे हैं। कारकेला का स्नानागार(हम्माम) लोकोपयोगी स्थापत्य-कला के रत्ना में गिना जाता है। लोकोपयोगी विशाल भवन जसे रोमना ने बनाये बसे पहले कमा किसी न भी न बनाये थे। हट्टिअन द्वारा निर्मित 'वीनस' का देवालय कारस्टेप्टायन का बाजिल्का' गिरजाघर धार्मिक इमारता में विगिष्ट स्थान रखते हैं। उर मधि व सिद्धान्त पर मेहराबा के पारम्परिक संयोजन से विगाल प्रसालाआ जोर भीतरी छता की शाभा में चमत्कार उत्पन्न किया जाता था। गुम्बज बनाने की कला में रोमना न जमूतपूत्र सफलता ही नहीं प्राप्त की बरन उसको पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया। हट्टिअन के पार्थाश्रा नामक सबदेव मंदिर का गुम्बज आज तक अपने ढंग का सत्तार में सबसे बड़ा गुम्बज माना जाता है। मकाना वष तक उस कला में कोई बसी उत्पत्ति न कर सका। इमारता

के बाहरी भाग का सुगमित करन की कला का उद्धान ऐसा विक्रम किया कि जिसमें व उसमें ससार के शिष्य कला के अधिकारी हो गये । रामना की बनवायी सकल भील लम्बी पक्की मडके गढ़ तथा घाटिया पाना बहा ल जाने वाल पक्के नल, पक्के पुल आदि उनके साम्राज्य की महता तथा कौशल की साक्षी दे र्ट ह । टाइम की निमाण करायी इमारतों में म्मारक प्रकाशर का कला अपने पूण जीवन पर लिखाई पत्ती है ।

स्थापत्य के साथ ही साथ गिल्प तथा मतिकला की भी श्रौद्धि हाती रही । उनकी कृतियाँ यूरोप की अधप निधि माना जाता ह । टार्टस के उपयक्त प्रकाशर द्वारा तथा टेजन का विजय-स्तंभ गिल्पकला के नवयुग का सदा देव वात माने जाते ह । उसकी छाप उन्नीसवी और बीसवी शती में भी स्पष्ट लिखाई देती है । मतिकला का प्रसार राम म इसलिए अधिक हुआ कि वहाँ के नताभा का अपनी प्रतिमूर्तिया निर्माण कराने तथा उहे प्रतिष्ठित कराने का बडा शक था । समाट का स्थान दबताआ के बराबर माना जाता था । फलत उनकी कला म आदर तथा कल्पना का उतना प्रयास एव प्रकाश नही दिखाई पडता जितना कि चीम की कला में मिलता है । किन्तु उसमें वास्तविकता और अनुहप की यथायता की विग देता ह । कलापूण जावागेली मर्तिया का प्रचलन रामना न विगप रूप से किना जिसका अनुकरण अद्यावधि हाता है । आवश प्रतिमा बनाने में उह विगप सफलता प्राप्त हई ।

चित्रकला म रामना न हलनिम्बिक एव जलेकजडिया की कलाओं स स्फर्ति प्राप्त की । ऐसा प्रतीत हाता ह कि उनकी चित्रकला गिल्प तथा मतिकला म विग पत प्रभावित हुई । उसने अपनी किमा स्वल्प परिपाटी का जवलम्बन अथवा विक्रम नही किया ।

गिष्ठा-दीष्ठा २

साधारण गमन का साक्षा पिता से जा कुछ थाने ग्गुन गिष्ठा गिष्ठा या बह पर्याप्त मानी जाती थी । अध्यापना द्वारा विधिपूर्वक अथवा पाठशाळा में गिष्ठा प्राप्त करने का पहले रिवाज न था । गिष्ठा का एकमात्र ध्येय व्यक्तित्व का उद्योग विनीत माहसी मयन तत्पर क्तव्यपरायण निर्भौक और व्यवहारगुण बनाना था । ज्ञानमवधन बौद्धिक शकलता गम्भीर एव सूक्ष्म चिन्तन, माहृष्य विज्ञान सज्जन आदि काय साधारणतया मनुष्यता अथवा पौष्प के गिष्ठा अनिवाप या आवरणक

नही समझे जाते थे। यहाँ नहीं, लाग उनको क्षाणता धृतरता एव छलना का प्रवक्तक समयकर उनसे विद्यमान थे।

शिक्षा का सविधि प्रचलन विदेशी गुलामा अथवा मुक्त दासा द्वारा आरम्भ हुआ। आरम्भ में केवल भाषा कुछ साहित्य तथा गणित की ही शिक्षा दी जाती थी। ज्या-या रोम राज्य का सम्बन्ध अथ दसा से बनता गया त्या-यो रोमनो के शिक्षा सम्बन्धी विचारों में परिवर्तन हुआ गया और उन्हें उसकी आवश्यकता तथा उपयोगिता का अनुभव होने लगा। इसी के पूर्व तीसरी शताब्दी के उत्तर काल से शिक्षा एवं साहित्य का उत्तरात्तर प्रोत्साहन मिला। योंकी का साहित्यिक तथा सांस्कृतिक प्रभाव दिना दिन गहरा हुआ गया। होमर के महाकाव्य का रचन में अनुवाद हुआ और लोक प्रदान के लिए सुवान्त एव दुपान्त नाटकों की रचना हुई। उपयुक्त कथा का रचयिता लिविअस एण्डाण्टोनिकस एक ग्रीक था। विद्या की अधिष्ठात्री दक्षी मिनर्वा के मन्दिर में कविया और नाटककारों की गण्टिया हुआ लगा। साहित्य तथा संगीत का प्रोत्साहन देने के लिए सम्राट टोमिटियन ने (८६ ई०) कपिटो लाइन के खेल के साथ उनको भी प्रतियोगिता के लिए शामिल कर दिया।

रोमना न साहित्य एवं शिक्षा में ग्रीकों का यथामाध्य आकरण किया यद्यपि उनमें ग्रीकों की सी प्रतिभा और कलात्मकता न थी। परन्तु इतिहास जीवन-वृत्त वृत्तत्वकला राजनीति नीतिशास्त्र समाजशास्त्र का गद्य क क्षेत्र में और महाकाव्य नीतिकाम्य नाटक, लाकवाव्य का पद्य मय मय मनन एवं सज्जन हुआ। उनके अनिरीकत रोमना की भी अपनी कुछ दन ह। कानन तथा विधान विज्ञान एवं कला सम्बन्धी साहित्य उनकी अपा विशिष्टता है। उनके धार्मिक दृष्टिकोण की विशेषता भी उनके साहित्य पर अंकित है। उनके प्रहमना आर व्यग्या में भी वगिष्टय का अभाव नहीं। मयम बडा दन ता उनकी मयमद भाषा ह जिमकी गभीरता, मुग्ता एव स्तुलित अभिव्यक्तिशीलता का लोहा पश्चिमी समार आज तक मान रहा है। लटिन भाषा का व्यापक प्रभाव आदि दिन भा कानन दान चिन्तना स्थापत्य अथि वनस्पति विज्ञान में सम्बन्धित साहित्य में विद्यमान है। रोम के लटिन इतिहास-रचयिता म ग्रीक पोलीत्रायस (२०४-१०२ ई० पू०) सल्लस्ट (८६-३४ ई० पू०) जन्त्रिम सीजर (१००-४४ ई० पू०) सिन्धी (५०-१७ ई० पू०), टसिटस (५०-१२० ई०) के नाम विशेषत उल्लेखनीय ह। जीवनचरिता के प्रमुय लेखकों में यरा (११६-२६ ई० पू०), ग्रीन एटाक (४६-१०६ ई०), ग्रीक फिलाम्पेटस (०, ० ई०) सुप्रसिद्ध ह। रोम के इतिहासना तथा जीवन

वृत्त-शैली का मुख्य ध्यय कुनीति के दुष्परिणामों का दिग्दान करना, महान् व्यक्तित्वों के जीवन से शिक्षा ग्रहण करना तथा उल्हास-संघर्ष मानना था। उनका वर्णनशैली जावपक तथा उत्तेजक है। केवल पाणिनीय ने इतिहास का तुलनात्मक आलोचना करने का प्रयास किया है।

काव्य

लैटिन भाषा का सबसे पहला उल्लेखनीय कवि प्रिप्लस क्विअस (२३० ई० पू०) हुआ जिसने विविध प्रकार के काव्यों तथा नाटकों का रचना की। उसके दुर्गन्त नाटक तथा ग्रीक प्लेटस (१५४-१८४ ई० पू०) के सुखान्त नाटक रोम वाला का मनोविनोद करते थे। टैरेस (१९५-१५९ ई० पू०) का नाटक प्लेटस के नाटकों से भी अधिक परिष्कृत माने जाते हैं। उनका नाटकों में ग्रीक नाटकों का अनुकरण है। वस्तुतः नाटक रचना तथा नाट्य कला में रोमनों ने कोई विशेष स्मरणीय कार्य नहीं किया। ल्यत्रेटिस (९९-५५ ई० पू०) की दार्शनिक अनुभूति से रोमन काव्य के विषय में कहा जाता है कि वह होमर और शैक्सपियर से कुछ ही मध्यम किन्तु गैली वीटस तथा वडसवथ के सुकोमल स्पन्दना से युक्त है। प्रकृति के सौंदर्य का उसका हृदय तीव्रतापूर्वक अनुभव करता था। उसने लैटिन पद्य की श्रीवृद्धि उसी प्रकार से की जसी कि गद्य की सिमरो ने। यदि उसे रोमन साहित्य के स्वर्ण-युग (३० ई० पू०, १८ ई०) का मानना कहा जाय तो अनुचित न होगा। उससे प्रभावित होकर रोम के महाकवि वर्जिल ने 'ईनईड' नामक महाकाव्य की रचना की जो अपनी अपार शक्ति विद्याल हृत्प, मानवता की कल्पना और काव्य पदावली से पाठकों का मुग्ध करता है। यद्यपि उसके काव्य में वह बल तेज तथा गुरुता नहीं जो होमर में मिलती है तथापि रोम के सुप्रसिद्ध कवि हारस की दृष्टि में वह हारस की समकल्पना का अधिकारी है। रोम का उभे अपना राष्ट्रकवि मानते चले आते हैं। इनईड केवल रोम की ही नगरी बना मानव जगत की भी काव्यात्मक वाणी बनी जाती है। उसका समकालीन हारस (६५-८ ई० पू०) एक सुकन दास का पुत्र था। जीवन के उत्तर चढ़ाव में विरगे साहित्य रोमन समाज के भीतरी तथा बाहरी व्यापार, स्वयं अपने जीवन की समता विषमता आचार-अनाचार की उसने सहृदय मधुकर की भाँति अजन और विज्ञान द्वारा भावुक वृद्धि की। सारांश यह है कि उसने व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन का सम्यक् दर्शन-परम और व्यापारिक आलोचना भी किया। उसके गीत काव्य ने

रोम

अपने युग में एक तहलका मचा दिया था। प्रगसा तथा निंदा की बौछार उस पर हाँ गयी थी। उसकी काव्य परचिया ने रचना-कला तथा शिल्प पर महत्व पूरा प्रकाश डाला। उसके विभाग में म्वातत्र्य, गभीरता तथा सहृदयता का मधुर मिश्रण है। जीवन का विलानमय तथा माधुमय अनुभव करने वाले कवियों में ओविड का उल्लेख अप्रामाणिक न होगा। उसका कविता वासना वासित है। अपनी प्रवृत्ति के अनुकूल उसने काम-कला पर ग्रन्थ लिखे (२ ई० पू०), जिनमें कुछ वात्स्यायनिकता के लक्षण मिलते हैं। उसकी असद्यत तथा भक्ति उच्छ्वलता के कारण सम्राट आगस्टस ने उसका रंग से बहिष्कृत कर दिया था। प्रवास के विषाद तथा पूर्व स्मृतियों के श्रद्धा-स प्रसूत उमरी कविताओं में अकृत्रिम वेदना प्रतिध्वनित है। उमरुग्न कवि आगस्टस युग (स्वर्णयुग) के प्रमुख कवि थे। आगस्टस युग के साथ ही रोम के साहित्य पर भी पटापेक्ष हाँ जाता है।

साहित्य का दूसरा युग (१४-११७ ई०) रजत युग कहलाता है। यह युग रामानी था। इसका आरम्भ तो होरेस ने ही कर लिया था किन्तु उपन्यास लेखन का आरम्भ पेटोनियस के शब्दावली से घोषित हुआ। यद्यपि भाषा की प्रौढ़ता तथा शैली का सौन्दर्य बाद तक विकसित होता रहा तथापि काव्या और नाटका के प्रसाद तथा साहित्यिक गौरव का ध्येय भाँतव तक हो गया। साहित्यकार छंद-अन्वय-व्याकरण-साहित्यिक चमत्कार-शक्ति-शक्ति, लय आदि में उत्कृष्टता रखे। साहित्य क्षेत्र में राजनीतिक तथा सद्धान्तिक दल-द्वन्द्विता हाँती रही। शुद्ध अकृत्रिम साहित्य कायाग्रस्त होता चला गया। कवियों में पापनिअस स्टाटियस ने 'थेरेइड' महाकाव्य रचा। मार्टिआलिस जो निवर्त्तना का प्रमुख कवि श्रुतात है तथा उसका समसामयिक जुवनाल सामाजिक व्यंग्य के लिए विशिष्ट उल्लेखनायक हैं परन्तु उनकी दृष्टि एकांगी थी। इसका कारण सम्भवतः यह था कि रोमना का साहित्य उनकी अपना प्रतिभा और व्यक्तित्व का प्रस्पृष्टन नहीं करने की प्रतीच्छाया था। रोमन प्रतिभा व्यावहारिक थी न कि कल्पनात्मक अथवा कलात्मक।

रोमन गद्य की अपनी विशेषता है। लैटिन गद्य की विशेषता एव महत्ता का सबेन उपर हो चुका है। उसके प्रमुख लेखकों में सबसे पहला उल्लेखनीय नाम वेटा (२३-१४ ई० पू०) का है। उसके लिखित भाषण निबन्ध तथा 'ओरिजिनस (उद्गम) नामक इतिहास ग्रन्थ प्रौढ़ गद्य के पुष्ट प्रमाण हैं। रोमन गद्य का सबसे श्रेष्ठ लेखक सिमरा (१०६-४३ ई० पू०) माना जाता है। उसकी शब्द-वृत्ति, भाषा की अप्रतिम प्रौढ़ता विदग्धता एव वाग्मिता की प्रगसा साहित्य-समार में

अद्यावधि होती है। कुछ विद्वानों की यह धारणा है कि उसका स्थान एयम के प्रयुक्त डाम्पनीज में भी ऊँचा है। दार्शनिक तथा इतिहास एव जीवा-वृत्त के लेखकों ने भी कुछ साहित्य की उन्नति में योगदान किया। ग्रीकियों द्वारा व्यावहारिक भाषा का पुष्टि हुई और उसका साहित्यिकता का स्थान प्राप्त हो गया। उस युग के स्थान में मनका व्यंग्य-वाच्य रचयिता परिमल तथा फामिलिया नामक वीरवाच्य का रचयिता दूसरे उल्लेखनीय है।

ग्रीक भाषा में भी कुछ लोग ने योग्य लिखे। मद्राट मार्कम जारियस ने मेडीटेसन, जारियस ने महान अल्बजडर प्लेगव न प्रसिद्ध 'ग्रीक' और 'राम' के चरित्र और लमियन के व्यंग्यात्मक कथाप्रयत्न की जो महत्वपूर्ण माने जाते हैं रचना की।

साहित्य और इतिहास के अलावा विशेष विषय पर भी कुछ उल्लेखनीय रचनाएँ हुईं। गेलन (जागीस) ने आयुर्वेद से सम्बन्धित कई ग्रंथ रच जिनका पठन-पाठन कई शतिका तक योग्य और पश्चिमी एशिया में होता रहा और जिनका प्रभाव भारत के हकीमा तक पहुँचा। क्लाडिअस प्लेनी (१५० ई०) ने मगाल जार ज्यानिप पर ग्रंथ लिखा जिनका पठन-पाठन भी शतिका तक होता रहा।

कानन

इसके पूर्व पाँचवाँ शती के मध्य तक रोमना के कानून अलिखित थे और केवल पेटीशियन कृतीना को ही उनका ज्ञान तथा अनुमान था। वे अपने हित और प्लानि अना (निम्नश्रेणी) के दमन के लिए उनका प्रयोग करते थे। प्लेबिअना ने आन्दोलन करना शुरू किया जिसका फल यह हुआ कि मिनेट न एक कमेटी नियुक्त की जाए उसे दक्षिणी इटली के शाका के कानूनों का अध्ययन करने के लिए भेजा गया। उसका लॉटो पर दस जादमी कानून का ज्ञान के लिए चुना लिए गये। सन ४४९ (ई० पू०) में कानून का सग्र लकडी की बारह पट्टियों पर लिखकर चौक में लटका दिया गया। तबसे वे बारह पट्टियों के कानून के नाम से प्रसिद्ध हैं। वे कानून सीधे आर सरल थे और उस समय की सामाजिक परिस्थिति से सम्बन्धित थे। उनमें पट्टी नियम और प्लेबिअना के आपसी सहाय का संरक्षण को घोषित किया गया पिता का पुत्र के मार डालने तक का अधिकार माना गया। और मृतक के शोक में स्त्रियों का अपना मुख के खरोचने की मनाही कर दी गयी। आन्दोलन जारी के साथ चला रहा। चार वर्ष के बाद उपयुक्त विवाह का कानून रद्द कर लिया गया। उस बीच में कथाला

का ममा के निगया का भी कानून का महत्त्व दे दिया गया। धीरे धीरे प्लीबिअना के अधिकार बढ़ते गये और उनकी कटिनाय्या दूर हानी गयी। उनकी श्रेणी से कासल मजिस्ट्रेट देवाय्या के सरक्षक भी चुने जाने लगे। यही नहीं क्वीला की ममा का कानून बनाने के स्वतंत्र अधिकार भी मिल गये (२८७ ई० पू०)। उक्त सो वष के मतत प्रयत्ना म प्लीबिअना ने राम के शासन म अपना स्थान बना लिया और उसे जनसना का स्वरूप द दिया। यद्यपि सेनेट की प्रधानता फिर भी कायम रही किन्तु उसका कारण उमरु मद्रम्या की योग्यता थी, न कि कांश्चिद्विशिष्ट कानूनी व्यवस्था। वस्तुतः वे सविज्ञान मन्वही कानून का छाटक कर अथ कानूना के निर्माण म उदासीन हो गये। जलिसस सीजर का प्रबल अभिलाषा था कि वह काय तथा जाचित्य के सिद्धांता के अनुकूल रोम के कानूनों को संग्रह तयार करगये किन्तु उमका प्रति उमने जीवन-काल में न हो सकी। राम के राजनीतिक अनुभव साम्राज्य का नवीन समस्याएँ पुराने कानूना की पारम्परिक असंगति और गणना के मानसिक विकास ने उम काय की आर जनता का ध्यान आकर्षित किया और उसकी आवश्यकता प्रकृत की। आगस्टस ने कानून की शिक्षा और गवपणा के लिए जब सस्था स्थापित की तब उमका विधिपूर्वक अध्ययन होने लगा। ग्रीस के कानूना का भी तुलनात्मक विमर्श किया जाना लगा। कानूना पर मद्धातिक तथा तार्किक टीकाएँ और निबंध लिखे जाने लगे और तब कितक ज्ञान लगे। रामन कानून का मत्रम महत्त्वपूर्ण निर्माण-काय १०० ई० पू० से ३०० ई० तक हुआ। कानून का अध्ययन आकषक हो गया और प्रत्येक शिक्षित गमन को उमका कुटन कुटन जान करगया जाता था। कानून के शास्त्रा पहले उमका व्यवसाय नहीं करत थे अपितु विना किसी प्रकार की फीम आदि लिये प्रश्न जयवा परामश करने वाला को राय द दिया करत थे।

रामन कानून मुख्यतः प्राचीन रामन समाज के प्रचलित व्यवहारा पर अवलम्बित था। उनका समाज तीन वर्गों म विभक्त था—स्वतंत्र जन, मुक्त दास और दाम। प्रत्येक कुटुम्ब एक संगठित ऋकाइ था जिसम व्यवितया के निश्चित स्थान और अधिकार थे। रोम प्रांश व्यक्तिगत तथा कौटुम्बिक विधि और विधाना का उन कानूना से पथक मानत थे जो सावजनिक (पब्लिक) श्रेणी के अन्तगत आत थे। अतएव दोनों के अपने अपने क्षेत्र थे जिनका तदनुकूल निर्वाह किया जाता था। दूसरा जानो योग्य आश्चर्यक बात यह है कि रामन लाग कानून के लिखित आर अलिखित दो विभिन्न अंग मानत थे। अलिखित कानून प्रचलित व्यवहारा पर आश्रित न थे। किन्तु ज्या ज्या उनका कायक्षेत्र विस्तृत होना गया और जय समाजा से उनका सम्पर्क

बढ़ता गया तथा नयी गमम्याएँ उपस्थित होती गया, त्या-त्या व्यवहारा के मदान्वित्पण पर बल निया जाने लगा और अय गमाजा के व्यवहारा का भा महत्त्व प्राप्त हाता गया । याय सरक्षण एव रामन दागन क प्रति विवाम दड करन क लिए तथा प्रगतिशील एव व्यापक सामाजिक गमस्याआ क समाधा क निमित्त न्गिन कानून का क्षत्र महत्त्व जोर प्रयाग बढ़ता गया । जलित कानूना की जपणा कानून में अधिक लचालापन एव स्पष्टता हाना स्वामानि था । इस प्रवृत्ति का परिणाम यह हुआ कि आगस्टम क समय तक कानून के प्रवर्तन का श्रम दासता सम्बन्ध विधान विवाह तथा उत्तराधिकार क कानून जोर सविधान अधिक व्यवस्थित एव निश्चित हा गये ।

कानून का प्रकार क थ । जो कानून रामना पर लागू हात क थ जुम मिबिन्म जोर जो त्रिनेगिया तथा रामना पर समान रूप स लागू हात क थ जुम ज्जिष्ठम वृत्तात थ । किन्तु सम्भव ज्या-त्या बढ़ता गया त्या-त्या दाना एव-दूमर क सन्निकट जाने गय और उनका मिश्रता घटती गयी । जहाँ व्यापार, अनुबन्ध करारनामा आदि के नियम विनियम करके गमान स हा गय वहाँ कौटुम्बिक विषया के कानून पृथक् रर गये । मुक्त्मा की घटनाआ और वस्तुस्थिति की जाच-पडताक प्रेरक करत थ और याय यायाधीन (जज) करत था । यकि कानून क सम्बन्ध में कोई सणय उत्पन्न हो जाता ता धर्माधिकारी की व्यवस्था (मत) माय होती थी । स्थानिक जजा क अलावा ऐसे जज भी नियुक्त किय जाते थे जो दौरा करते जोर याय द्वारा दूरस्थ जनता का लाभाचिन करते थ । उमी प्रकार दौरा करने वाल प्रेटर भी नियुक्त कर लिये गये थे । धीरे धीरे प्रेटर को मुक्दमा करने क सिवा निणय देने का भी अधिकार दे निया गया जिमस लोगा का मुविधा हो गयी । फमला का प्रवर्तन करन के लिए जफसर नियुक्त थे । प्रेटर अपनी नीति की घोषणा करन थे जिसका यथासम्भव सम्मान उनक परवर्ती भी करते थे । इसका परिणाम यह हुआ कि उनक द्वारा घोषित कानूना का भी एक विंगाल संग्रह हो गया । उपयुक्त घोषणाएँ प्राय यायसम्मत होती था आर उनको कानून-का-मा महत्त्व मिला हुआ था । उनका घटान-बटान अथवा उनम परिवर्तन करने का अधिकार सम्राट् तथा मिनेट को ही प्राप्त था ।

उपयुक्त कानूना के अलावा ग्राका क दानिक विचारा क जाणिक प्रभाव तथा उनके अनुभव के कारण रोमन लाग प्राकृतिक नियमा का भी अस्तित्व मानने लगे थे और उनका विश्व-यापक समायन थ । फिर भी उनको वह महत्त्व न दिया

ने आरम्भ में ईसा के समय तक पहला युग माना जाता है। उसमें मनु, मासागर तथा श्रीम आर पश्चिमी एशिया का अधिप प्रभाव और महत्व रहा। इस युग में इसाई धर्म का उत्पत्तिक प्रभाव रहा, जिसमें राम व सातृदिक जावन का रूपरेखा बदरनी बगी गया यहाँ तक कि ईसाई धर्म ही साम्राज्य का एकमात्र धर्म हुआ गया। इसाई धर्म का योग्य म एशिया से ही गया था इसलिए यह कथ अनुचित न होगा कि धार्मिक मामलों में राम ही नहीं बरन यूरोप ने एशिया में शिक्षा लीला प्राप्त की। मनु जतना है कि पूर्व युग में अधिकतर जाय प्रजाति का तथा मिस्र का जोर उत्तर युग में समष्टिक प्रजाति का प्रभाव पडा।

यूटस्वन गग वारह मन्व जेना माना थ। सप्त प्रथम और गौरवपूर्ण स्थान तिनिया नामक देवता का था जिसका मन्व मघ जोर तेज मघ गजन और बर के रूप में प्रकट त्रिय जात थ। उमी की इच्छाआ आर जनगासना का अपन-अपन क्षेत्र में जाय देवता प्रतिपालन करत थ। मनुस आर उमकी म्त्रा 'मिनिया अपन पला बाल दावावा द्वारा पाताल से गामन करत थे। सप्त, जमि लगना राणाते हथौला तथा बौग से विभषित भाग्य की देवी रस अथवा 'मियान जटल नियति निश्चित कर दी थी। प्रमय देवताओं के ज्ञान प्राप्त तथा कु-देवता का स्थान था जिाको छाटा छाटी परतियाँ घरा म प्रतिष्ठित की जाती थी। देवी-देवताओं का प्रसन्न कराने के लिए पणजा जोर कमी-कमी मनुष्या की भी बलि दा जाती था। यज्ञिक के लिए अतिबन्ध गृह में पस्ते हुए कदा उपयक्त मसज जात थ। गग का स्वर्ग जोर नरक म विश्राम था। अपने-अपने कर्मों के अनुसार मरणापरान्त जीवा का पाताल का अधिपति नट अथवा पुरस्कार देता था। नरक म पापियों का त्रिविध प्रकार की यातनाएँ भागनी पती थी। पुण्यात्मा जन देवलाक भेज त्रि जाते थे जहा व देवताओं के साथ जान-दमय एक समष्टिपूर्ण जावन का उपभाग करत थ। मत्तक प्राय कर म जावश्यक जोर उपयागी वस्तुना के साथ दपन त्रिये जात थे। रफनाने न जलावा म्त्रका का जला दी का भी चलत था। जगने के पदघात मत्तक हे कुछ मम्मोभूत अवगोदा का एकत्रित करके पत्रिका में रख त्त थ। उमक ममाधि मन्व में उमकी अत्यन्तताआ की चीजें भव दा जाता थी जिसमें उम बष्ट न हा।

रोमना का विश्राम था कि एक विश्वव्यापी गरिा है जिसमें देवता हा नपा बरत विगिष्ट मनुष्य भी अधिप अथवा रथ मात्रा म अनुप्राणित हात ह। व म्त्रा लिगरन्ति गरिा है। जमि जा म उमका प्रजाण लीन प्रमुत् जेनाआ में हुआ-

नहीं किया जाता था। चुनने वाले साधारण नागरिकों में स जिम्मा चाहत चुन सकते थे। प्रांतीय जयवा क्षेत्रीय धर्माधिकारियों का भी उमी प्रकार चुनाव होता था, किन्तु वे सब 'पाण्डित्यम भस्मिगमन' की अध्यक्षता में रये जाते थे। पुजारी प्रायः पुरुष होते थे। सांख्यिक धार्मिक कृत्य धार्मिक समन्वयों द्वारा जितना बालेज रहते थे सम्पन्न किये जाते थे। उन कालों में विशेषतया उल्लेख करने योग्य वस्तु वर्जित अर्थात् अन्तरिक्षीय कुमारियों की समिति थी। छ में दस वर्ष तक बालिकाएँ उम सवा के लिए चुनी जाती थी। उनका तीस वर्ष तक गर्भे धरुन धारण करने पड़ने थे तथा ब्रह्मचर्य पालन व सरल्य का निर्वाह करना आवश्यक था। यदि वे व्रतच्युत होती तो उन्हें शारीरिक दण्ड देकर जिंदा गाड़ दिया जाता था। वस्तु वर्जित का लाभ विशेष श्रद्धा एव सम्मान का पात्र मानते थे। सबसे प्रभावशाली भविष्यवक्ताओं की नौ व्यक्तियों की समिति मानी जाती थी क्योंकि बिना उनकी सलाह के कोई महत्त्वपूर्ण कार्य करना सवथा अनुचित और भयावह माना जाता था।

पूर्वीय देशों तथा अफ्रीका में राजाओं तथा सम्राटों का देवता के समान सम्मान जाता था। राम में भी वह विचारधारा प्रचलित की गयी। सीजर तथा जागस्टस ने और उनसे भी बहुत बड़ चढ़कर डोमिटियन ने देवत्व प्राप्त करने के लिए अपने पिता का स्वयं अपने को, अपनी बहिना और स्त्री का भी देवता घोषित किया तथा सबकी मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कर उनके लिए पूजनविधि निश्चित की और पुजारी भी नियुक्त कर दिये थे।



दशन

रोमनों का दृष्टिकोण मूलतः व्यावहारिक था। ऐहिक जीवन को सुखी सम्मान युक्त तथा गौरवपूर्ण बनाना व अपना आदर्श समझते थे। जीवन व व्यापारों में मन्त्रिय कुशल तथा सफल होना उनका ध्येय था। किसी काल्पनिक मिद्धान्त अथवा सुदूर भविष्य की चिंता उनका सताती न थी। जीवन-यापन में जब कोई समस्या उनके सामने उपस्थित हो जाती तो वे उसका व्यावहारिक समाधान निकालकर मत्तुष्ट हो जाते थे। वे स्वतन्त्रता के प्रेमी और शक्ति के पुजारी थे। जीवन से उन्हें इतना अनुरक्ति थी कि विक्रित को भावना में उनका कोई दिलचस्पी न हुई। अपनी मानसिक शक्ति के कारण उनकी प्रतिभा राजनीतिक धार्मिक राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय विधान और धर्म के क्षेत्र में सलग्न रहा। उसके

सिवा जिन स्फूर्त बलाओं को उन्होंने अपनाया उनको विशदतः प्रदान की।

स्टोइक मत

ईसा से १५५ वर्ष पूर्व एथेस से तीन दार्शनिक मत—स्टोइक परिवर्तनक तत्त्वावयव—राम पहुँचे। सीपिया वश के लागे ने स्टोइक विचारधारा का विशेष स्वागत किया और उसके अध्ययन के लिए एक गोष्ठी स्थापित की। उस विचारधारा का आरम्भ करने वाला पनीटिग्रस था। किन्तु उसकी व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने का श्रेय सीरिया के पोमिडोनिअस नामक ग्रीक को मिला। इस दिलचस्पी का कारण गायद यह होगा कि उस विचारधारा का रामना के विचारों से अच्छा मेल बैठना था। स्टोइक का ध्येय मनुष्य का आत्मनिर्भर स्वावलम्बी मरल स्वामाविक तथा प्रकृति के अनुकूल जीवन निमाण करने वाला बनाना था। पुरातन सस्कृति की, जिनमें ये गुण थे फिर से स्थापना करना उनका उद्देश्य था। उनकी धारणा के अनुसार मनुष्य मात्र का एक बहन कुटुम्ब है जिसके हित के लिए व्यक्ति का सत्ता प्रयत्न करना रहना चाहिए। व्यक्ति का वे विश्वव्यापी ज्वलन्त आत्मा का एक स्फुलिंग और दाना में वे अज्ञानी का गड सम्बन्ध होता मानते थे। उनके अनुसार उस सम्बन्ध का जीवन में निवारण करना मनुष्य का श्रेयस्कर धर्म था। मनुष्य-जावन के उत्पन्न के लिए केवल सदाचार को व पर्याप्त समझते थे। उनके मतानुसार मानव-समाज के हित के लिए व्यक्ति का सदाचार नान करने से भी हिचकना न चाहिए, क्योंकि जीवन कोई खेल-तमाशा अथवा गीतिवाच्य नहीं, वह कठोर सत्य है। उसका मलाधार इतिहास है न कि कपालकल्पना अथवा सुगीला राग। सदाचार द्वारा प्राप्त सतोष और कतव्यपरायणता से ही जीवन की मफलता होती है। अपने कतव्या के पालन में यदि कष्ट पीडा अथवा दुख हा तो भी उस विपादरहित होकर चलना उनका अनुसार मनुष्यता का प्रमाण था। कतव्य पालन ही परम धर्म है जब उसके सामने दया, कृपा प्रेम आदि कामल, तरल भावनाएँ उनके लिए तुच्छ थीं। कतव्य में व्युत्त होना या पशयन करना वे सवथा जशामन और निदीय समझते थे।

उनका मत था कि सत्ताचार की दो कसौटिया में स एक पुवजा की स्थापित की हुई मयादाएँ ह और दूसरी अन्तरात्मा। मिमरा अन्तरात्मा का ईश्वर में अनुप्राणित मानता था। उसके लिए वही विवेकात्मिका बुद्धि थी। उसके मतानुसार अन्त -

करण की दा प्रवृत्तियाँ ह—एक ऊर्ध्वसर्पिणी और दूसरी अध सर्पिणी । पत्नी स स्वाभाविक शक्ति एवं सुख प्राप्त हाता है, जत उसकी साधना में मातिक हाया या कष्ट का प्रश्न ही नहीं उठना चाहिए । कतय-पालन ही परमादेश ह उसक लिए समय तथा उत्सर्ग की आवश्यकता ह । जीवन जविनाशा है जत मृत्यु का भय व्यथ है । कुठ स्टाइका का मत था कि जिनने दवा-दबता ह व परमात्मा की किसी न विभी विमर्त व प्रतीक ह, जिनमे परमेश्वर का ध्यान करने में सुविधा हाता है । प्रत्येक नागरिक का कतय ह कि वह उनका सम्मान तथा अचन करे ।

दूसरी विचारधारा एपिक्यूरिअन मनावम्बिआ का थी । उसका सबसे बडा पापक ल्यूनेटिअस (१९-५५ इ० पू०) माना जाता ह । एपिक्यूरिअन मत व जनसार मनुष्य का देवी देवताजा म विश्वास भय के कारा हाता है । विधि जयवा रिघाता का वस्तुन कोई अस्तित्व नहीं । सष्टि अस जणु-परमाणुआ व जाक्स्मिअ सयाग से हा गयो, वस ही सयागवा प्राण का मा स्पदन हा उठना है । उनके मत म ग्गान का मुख्य आशय भ्रम तथा मिथ्या विश्वासा का निवारण ह । मरणोपरात जीवन में विश्वास करना नितात भूता ह । मृत्यु व पश्चात नवनामी की कामना विचारा की टुवलता का प्रमाण है । मनुष्य मात्र का अन्तिम ध्यय सुग की साधना है । उसका जितनी चष्टाएँ जयवा प्रयत्न ह सब सुग प्राप्ति व लिए ह । अतएव गारारिक तथा मानमिक कष्टा का निवारण तथा गार्ति-साधना हा श्रयस्कर है । ल्यत्रटिअम ग्रथ प्रवृत्ति का स्वभाव समार व प्रमुख कात्या म गिना जाना ह । उनक अनुसार धम जीवन व लिए बहुत बुरा जमिगाप था ।

यह स्मरण रखना चाहिए कि तन्वग्न की जार रामना की जविक मनावत्ति न थी । व कमठ थे और यावहारिक जीवन व विपदा में विगप जमिरचि रखन थे । इसी कारण उनक दार्शनिक ग्रथा म न ता उतनी गू मना और न विगिष्ट मार्शलता पाया जाती है । उनक विचार शारा तथा पूव-गिया म प्रमून अथवा प्रभावित ह ।

इसा का मत

महात्मा इसा का जम १-२ वष इ० पू० जम्मम म पाच माल पर बयन्हम म हुआ । उनकी माता का नाम मरियम था । ग्मात्या का विश्वास ह कि उनका कुमारी माता क गम में ईश्वर स्वय जवनरिल हुआ । किनु अनुश्रुति व अनुमार उनक पिता का नाम यमुष (जोअफ) था । उनका माता पिता यन्ती थ । बान्यकाल

ने ही उन्हें प्राकृतिक सौंदर्य से अपूर्व आनंद का अनुभव होता था। उन पर अपनी भौमी के पुत्र जान के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। तपस्वी जान जाडम्बर, अनाचार, पासण्ड जादि का विराधी था। उनके विचार बौद्ध के विचारों से कुछ भेद खाते थे। उनके उपदेशों का माराण यह था कि 'याय की अन्तिम बला (प्रलय) नजदीक जा पहुँची है अतएव पापियों का सजग होना चाहिए और ईश्वर के राज्य के स्वागत की तयारी करनी चाहिए। ईसा ने उपयुक्त सिद्धांतों का जनता में प्रचार करना अपना परम कर्तव्य निश्चित किया। यद्यपि उनकी शिक्षा के विषय में कुछ भी पता नहीं चलता तथापि जो कुछ सामग्री मिलती है उससे यह प्रतीत होता है कि वे उदारचरित मूढमदष्टि, मयमी दबदबत, प्रतिभाशाली, दीनवत्सल और त्यागी पुरुष थे। उनके व्यक्तित्व तथा प्रवचनों में सरलता, स्पष्टता और आकर्षण था जिससे अपन लाग भी लाभ उठा सकते थे। ईसा परम पिता परमेश्वर में अटल श्रद्धा रखते थे।

उनके सिद्धान्तों में एक विशेषता यह थी कि उनमें ईश्वर राज्य के स्थापित होने तथा दुष्ट राज्य और व्यक्तियों के शासन विनाश का साधन था। अनाचारियों तथा पापियों को भयकर दुष्परिणामों और नरक यातनाओं में बचने का सुगम एवं भीषण मार्ग यह था कि मनुष्य अपने पापों को स्वीकार करके अपना आचार सुधारें और ईश्वर से गुद्द हृदय हाकर क्षमा और दया की प्रार्थना करत रहे। कमी-बभी उहाने मन् मा कहा कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे ही अन्त करण में है उसको प्राप्त करने के लिए शीघ्रातिशीघ्र प्रयत्न करो, जिससे परम पिता की दया तुम्हारी ओर प्रवाहित हो जाय। ईश्वर की दृष्टि और कृपा अबाध है। जातीय, श्रेणीय धनी विन्शो धनी, निधन, काल-भोरे दास और स्वामी सभी उनके पुत्र के समान और दया के पात्र हैं। दीन-दुखी तथा दलित, निबल और बालक पर उनकी विशेष कृपा है। मन्दिरा और मृतियों में कोई महत्त्व नहीं। ईश्वर का निवास जात्मा और सत्य में है। 'याय, सहानुभूति, दया और सरल जीवन तथा मदाचार सत्य श्रेयस्कर है। काम, भ्रम, द्वेष, असत्य, लाभ आदि दापा से बचना आवश्यक है।

बन्तु त्ना तक लाग उन्हें यहाँ समझते रहे किन्तु जब उन्होंने यह धारणा की कि वह ईश्वर के प्रेरित पगम्बर ही नहीं बरन स्वयं पुन तथा मनुष्यों के उद्धारक हैं तब यहलिया ने उनका साथ छोड़ दिया और उनको बेगाना समझने लगे। किन्तु उनके अनुयायी उन्हें अपना राजा आर द्जाइल का राजा कहने लगे। यह स्थिति

देगवर उन पर यह आरोप लगाया गया कि वे राम साम्राज्य के गनुह और गरीब जनता का उत्तेजित करके भयकर भ्रान्ति की याजना में लगे हुए हैं। उन पर राष्ट्र-धर्म तथा रोमन साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोही होने का ऋजाम लगाकर राम के गवनर ने उन्हें मूर्खी पर चढ़ा लिया। यहूतिया का भी यह हत्या अनुचित प्रतीत न हुई। यह स्मरण रखना चाहिए कि ईसाई धर्म का विरोध गसन द्वारा उतना न हुआ जितना जनता द्वारा हुआ, क्योंकि उसके सिद्धांत का प्रचार जनता के विश्वासा पर गहरा आघात करता था।

विदेशी व्यापारिया, गुलामा, सनिका तथा जाजीविका के लिए आय हुए लाग के द्वारा रोम में अनेक प्रकार के धर्म प्रचलित हो गये थे। रामना ने माधारणत किसी धर्म अथवा धार्मिक उत्सव पर राक-टाक नहीं लगायी। नवीनता से उनका बुतूहल और बभावेश अनुराग ही जाता था। धार्मिक विषय में उनकी नीति बहुत उदार तथा सहानुमति-नामित थी। नवीन मत-मनानग का प्रभाव कुठ-न-कुछ रामना के धार्मिक विश्वासा पर पड़ता गया। उनमें यह भावना उत्पन्न हुई कि चाह जिस रूप में अथवा स्थान में पूजा की जाय, वह सब एक ईश्वर के प्रति हो जाती है। उसी एक सत्ता की अपने-अपने अनुकूल विविध देवताओं में लाग ने कल्पनाएँ की हैं। उन सब में एक प्रकार का गड साम्य है। यह भावना बहुत कुठ जोपनिपदिन तथा भगवद्गीता के विचारासे मिलती है। किन्तु ईसाई मति पूजा, सम्राट-पूजा जाति के कट्टर विरोधी थे अतः यह सहृदयता तथा उदारता का वातावरण इसाई धर्म के आने से टट गया। ईसाई मत विविध देवा देवताओं के अस्तित्व को मानना ता दूर रहा उन पर विश्वास अथवा उनका पूजन मूर्ता और अधार्मिकता का निदनीय लक्षण मानता और उनका प्रतिवाद करना अपना विगिष्ट कतय समझता था। इसाया के गण्डनात्मक और विरोधात्मक जादोलन ने राम में ऐसा खलवनी मचा दी जिससे वहा सामाजिक बमनस्य तथा राजनीतिक समस्या जटिल रूप में उत्पन्न हा गयी। इसाया के सिद्धांत के अुमार मनष्य का पूजन, चाहे वह कितना ही बडा क्या न हा, अधम और आपत्तिजनक है। सम्राट जाति का देवा का पद देना अत्यंत निदनीय है। अतएव उसका विरोध करना तथा मच्च जद्वितीय इश्वर का पूजा प्रतिष्ठित करना इसाया का परम कतय हा गया। उनका जादालक राष्ट्रधर्म, राष्ट्रनीति तथा लोकणिय व्यसना के विरुद्ध सिद्ध हुए अतएव उसके मन करने की आवश्यकता हो गयी। किन्तु दमन की नीति मूगच्छेनी तथा बपनाह न होने के कारण सफल होने के बजाय विफल सिद्ध हुई। जा लोग धर्म के लिए अपनी

सम्पत्ति अथवा प्राण रा दते वे शहीदा में गिने जाते थे। उससे ग्रेगा का उल्हास-
 'प्रघन और उनसे मत से सहानुभूति हुई तथा अनुयायियों की संख्या भी बढ़ती गयी।
 पूर्वी प्रांतों में ईसाई मत का इतना प्रबलपण हुआ गया कि सम्राट कांस्टेण्टिन ने
 दार्शनिकता से उभरा राष्ट्रधर्म बनाने की घोषणा कर दी। जब ईसाईयों का अवसर
 मिला तब उन्होंने जय मत्ता का इतना धोर और द्रुततापूर्वक धमन किया कि उनके
 धर्म के सिवा किसी अन्य धर्म अथवा मत का चलाना असम्भव सा हो गया। काला-
 न्तर में ईसाई धर्म के अनुयायियों में क्षेत्रीय, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं
 के कारण कई सम्प्रदाय उत्पन्न हुए जो एक-दूसरे के विनाश में लग्न हो गये। यह
 धार्मिक भ्रमण कई शतिका तक विकराल रूप में चलता रहा। अन्ततोगत्वा छठी
 शती (६०) में रोमन साम्राज्य में दो सम्प्रदाय मुख्य माने गये। पूर्वी ईसाई मत
 पर यूनानियों तथा पूर्वी प्रदेशों की संस्कृति का अधिक प्रभाव पड़ा। उनका केन्द्र
 कांस्टेण्टिनोपल में रहा। किंतु पश्चिमी प्रांतों में ईसाई मत पर उत्तरी अफ्रीका
 और पश्चिमी यूरोप का अधिक प्रभाव पड़ा। इस मत का केन्द्र रोम में रहा।
 धार्मिक अमहिष्णुता तथा विचारों की स्वतंत्रता के दमन का प्रदर्शन जैसा ईसाई मत
 ने किया वसा गायद पहले कहा नहीं हुआ। सार युरोप में एक मान ईसाई धर्म
 के प्रचलित होने का एक मुख्य कारण इनकी अदम्य दमन-नीति है। प्रसिद्ध इति-
 हासकार गिबन की सम्मति में ईसाई मत ही रोम साम्राज्य तथा रोमन संस्कृति
 के नष्ट हो जाने का सबसे बड़ा कारण सिद्ध हुआ। वस्तुतः रोम के पतन के
 अनेक कारण हैं जिनमें से यह भी एक ही सकता है।

ग्रीस की विजय का रोमना पर गहरा प्रभाव पड़ा। ग्रीकों से इनके धार्मिक, नैतिक
 विश्वास तथा विचार, साहित्य, नाट्यकला तथा दर्शन रोम का प्राप्त हुए। राज्य
 तथा सम्पत्ति के बहुत बढ़ने से रोम की अपनी संस्कृति विद्वानों और विचारों में
 भ्रमण परिलक्षित होने लगी। इन प्रकार ग्रीकों ने अपनी पराजय का बदला
 चुकाया।

रोम का सामंजस्य और सामाजिक जीवन दो भागों में विभक्त किया जा सकता
 है। पूर्वी भाग जारम्भ से इसी पूर्व द्वितीय शती तक है और उत्तर भाग का जारम्भ
 उसके उपरांत होता है जिसमें प्राच्य ग्रीस तथा मिस्र और पश्चिमी एशिया का वत-
 मान प्रभाव स्पष्टतया दिखाई देता है।

ईसा का प्रथम शती के विचारकों में थुमल गुलाम का पुत्र एपिनेटस हुआ।
 जेमिनिअस ने उसे देना से निकाल लिया था किन्तु हेट्टिअन का वह कृपापात्र बना।

उमवा सिद्धांत था कि मनुष्य को सरल जीवन और स्वावलम्बन का आश्रय लेना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो उसका बाहरी चीज़ों का भरोसा न करना चाहिए। गुणगुण में एक समान भाव रखना, समतल की धृति में स्थिर रहना श्रेयस्कर है। मनुष्य का जीवन सपथ से भागना, समाज और सामाजिक कर्तव्य तथा उत्तरदायित्व में विमुक्त होना सधया अनुचित है। शरीर चाहे जमीरा से क्या न जवधा हो किन्तु आत्मा स्वतंत्र है। मृत्यु एक साधारण घटना है उससे डरना भ्रम तथा कायरता है। प्रकृति और परमेश्वर का आत्मसमर्पण कर लेना हितकर है। वस्तुतः मनुष्य की चेतना तथा बुद्धि एक सवध्यायी चेतना और बुद्धि का ही अज्ञ है। विश्व की रचना का आधार नतिवता सुखवस्था, सौन्दर्य, ऊर्जत्व और मनोरम रहस्य है। एपिनेटस ने दासना तथा प्राणदण्ड की निन्दा की और मुजरिम का मानसिक रागी समझकर तन्नुकल उमरा उपचार करने का आग्रह किया। उसकी धारणा थी कि शरीर मरुद्वन्द्व है उसकी नाज़ररगारी करना व्यथ है। उसकी सम्मति में मनुष्य का सतोप रखना चाहिए। निवृत्त अथवा दूर भविष्य की विता के चक्कर में उसे न पटना चाहिए।

स्कीप्टिस मत

ईसा की प्रथम शती में एनेसिडेमस नामक एक न्यायिक ने पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना असम्भव निर्धारित किया। उस विचारधारा का विस्तारपूर्वक निरूपण दूसरी शती में मेससटस एम्पिरिकस ने किया। उसके अनुसार दशनशास्त्री प्रमाणी और बववादी ह। दलीला में बूछ तब नही क्याकि प्रत्येक धारणा का प्रतिवात करनेवाली दलीलें उपस्थित की जा सकती है। जिन्हें लोग प्रमाण कहते ह उनमें कोई भी अकाट्य नही और सबही सदिग्ध ह। कारण का कारण अधकार में द्रोपदी के चीर से भी अधिक बढ़ता जाता है। एमी लिए जिसे हम गान कहते ह वह अंतिम सत्य नही बल्कि सामयिक धारणा मात्र है, जा बन्ती रहती है। उसी प्रकार आचार-सम्बन्धी विचार अनिश्चिन और परिवतनशील हैं क्याकि उनका आधार भा सामयिक है। अन्डे बुरे की अंतिम या शास्वत परिभाषा भ्रम मात्र है। मनुष्या के विश्वास और उनकी धारणाएँ उम परम्परा व्यवहार विधान तथा धर्म पर जनिन ह जिनमें उनका जन्म होता है। जतएव उम प्राकृतिक प्रवृत्ति का चुपचाप अनुसरण करना अनिवाय-सा है। पात का निराकार कर अनात को अधकार में टटोलन फिरना भयकर मूल है। जयने समय तथा समाज की प्रवृत्ति के अनुकूल चन्ना ही सुयम और उचित भी है। झमेले सडे करने उनमें फैमना सवधा प्रमाद है।

उपयुक्त विचारधारा का निरूपण सर्वम चमत्कारपूर्ण जोर बमनीय भाषा में एथेन में आचार्य मिन्तु सारिया के निवामी लगियन ने किया (१६५ ई०)। उसने टिहत्तर लघु पुस्तिकाओं द्वारा मवाद गली में अपने विचार प्रकट किये। उन पुस्तिकाओं का नाम उसने 'मनसा के सवाद', वारागनाआ के सवाद जोदि रखे, जिसमें लोगो का ध्यान शीघ्र ही आकर्षित हुआ, यद्यपि उनका विषय दूरगामी ही था। उनमें उनमें ग्रीस के देवताओं का म्ण्डन और उपहास किया। ग्रीस के प्रचलित धर्म के सिवा उनमें दाशनिता तथा जलकार विमर्षित भाषा के लेखन तथा वक्तव्यो की घर्षित उदायो। इस हृद तक उसने कह डाला कि दागनिक पागल मृत्ता के समान भूवनवाले हैं उनसे बचकर चलना चाहिए। मानवजगत जस्त यस्तता, पारम्परिक सधय, जागा निरागा, स्वाधपरता, ठगी, प्ररता मठ, रगट झगट, राग द्वेष एवं नियति के चक्कर में फँसा हुआ है। यह उत्थान-मत्तन, उलट फेर उतार चढाव उनहास्य तथा ग्लानिविधक है। अतएव मनुष्य के लिए यही उचित है कि वह राग-द्वेष का छोड़कर अपने सामने जा काम जाये उन मुस्करान हुए यथायाग्य करता रहे और विनष्टवाद तथा तत्त्वान्वयण की मग्मगीचिका से बचता रहे। दशन का एक मात्र लाभ उपयुक्त सासारिक प्रवृत्तियो का प्रदर्शन मात्र है न कि ममस्याओं का समाधान। ससारचक्र के सामने झुकने के सिवा अय कोई उपाय नहीं है।

ग्रीक दागनिको ने विविध दृष्टिकोणों से सासारिक समस्याओं का जल्मीलन किया तथापि उनका अन्तिम समाधान न हो सका। अतएव साधारण लोग अपने परम्परागत ईश्वर तथा दबी देवताओं के विश्वास पर चलते रहे। नयी बात इतनी अवश्य हुई कि पुनर्जन्म के प्रति उनकी जास्या पहले से बहुत बढ़ गयी क्योंकि उगी द्यम में किसी अचित्य मन्त्रियम मसार चक्र से मुक्त हाने की आशा सम्भव प्रतीत हुई।

प्लेटोनिक मत

ईसा की तीसरी शती (२०३—२७० ई०) में प्लेटिनस नामक एक रहस्यवादी दागनिक मत मिश्रिया के बग में उत्पन्न हुआ। उसका मत को प्लेटानिज्म कहते हैं। उनके मत की विशेषता यह है कि उसमें प्लेटो के दाशनिक विचारों से रहस्यवादियों की धारणाओं का सम्बन्ध है। उसका गहरा प्रभाव ईसाई धर्म पर ही नहीं बरन् पश्चिमी, मध्य तथा दक्षिणी एशिया पर भी पडा। प्लेटिनस ने सिपाही

का हसियत स फारम तक की यात्रा की, वहाँ के धार्मिक तथा जाचार-मन्वची विचारा का अनुशीलन किया और अन्त में राम में जाबसा । मन्त्रालय गलिफनस पर उसका काफी प्रभाव पडा । उसका जीवन सरल, नम्र और सासारिक विषया तथा शारीरिक सुखा के प्रति विरक्त था । शरीर का बह लौह पित्त सा समझता जिसमें जाव बेदी हाकर पडफण्या करता है । माम मदिरा मयुन को वह सबया त्याग्य मानता था परन्तु उनका विरोध न करता था । वह उल्टा जादगवादी था । उसका विचार था कि परम-आत्मा के मानस में जात्मशक्ति से प्रेरित होकर प्रकृति-तत्त्व और जीव-तत्त्वा का प्रादुभाव हुआ । वस्तुन उनम वही स्वय विभिन्न रूपा और नामा स विद्यमान हैं । सत्ता के समी व्यत्पार और स्थिनिया पर आत्मा के मानस की प्रतिप्रियाएँ हानी ह । मानमिक प्रियायाका विवकसहित नियन्त्रण करन वाला बुद्धि तब न जो मन जीव तथा शरीर का जायग है । दखने म जात्र अनक जान पाने ह, किन्तु व सब एउ विदेवात्मा स ही प्रमून ह, जसा कि परमात्मा स विश्वात्मा तथा प्रकृति का प्रादुभाव हुआ है । जीव का परम लय पाथिन वचन स मुक्त होकर विश्वात्मा म और वहाँ स परम-आत्मा म मिल जागा है । यह वराग्य तथा अध्यात्म चित्तन से हा मवता है । मुक्त जीव को परम-आत्मा का आवग और माभात्कार हा जाता है जा आनन्द की चरम सामा है बयाकि वह सबमोत्य सवज्ञान् और सवगन्निमान है । वह अनुभवगम्य है । जा बुद्धि की अवहलना करते हैं व जम मरण तथा पुनजम के चक्कर म गोता रयाा करते ह । यहाँ तक कि मनुष्य-यानि साकर पग-ग्या आनि के शरीरा में पैम जात हैं । व उवगामी न हाकर कमानुमार जयागामी हा जात ह । परमात्मा स मिलने क मुख्य साधन बुद्धि का सदुपयोग सत्ताचार प्रेमाल्या मरिज और श्चमाधना हैं । उसर विचारा म ग्रीग फारम भारत और मिश्र क धर्मों तथा विचारा का यनाधिन प्रभाव प्रतिबिम्बित है ।

मिश्र धर्म

ईसा की दूसरी और तीसरी शता म ईरानिया का मिश्र धर्म वराप म उत्तरी शरण तक फर गया । अन्त में उगवा एक मन्दिर मा निरग ह । मिश्र ज्यानियय आर मज्जा का पुत्र ही नहा वरन् जवतार क समान था । जा मन्तव प्रमाण पावि शता एव सत्य का बह माभात स्वल्प माना गया क्रिमता उन्म जघार क प्रसा श्च अह्मिन का विनाग कर मनुष्य का उमम स निराउतुण्ण यानि पुन करता था । उमम सिद्धान्त क अनुमार जीव का सपप एव प्रपत्त द्वारा पवित्रता तथा पुजा

प्राप्त करनी चाहिए, न कि पलायन द्वारा। उसे आत्मवान् हाना चाहिए न कि आत्म-त्यागी। मिथ्र की अर्चा के लिए ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणिया नियुक्त थी। उमनी मूर्ति के आगे दिन रात अग्नि पिग्ना जलती रहती थी। अनुयायिया व लिए जाचार विचार व नियम जटिल थे। विद्वान् यह था कि मरणापरान्त कमानुसार मिथ्र जीवा का स्वयं जयवा नरक भेजता है। मिथ्र धर्म रहम्यात्मक था और उत्तम रक्त तथा प्रीति भाज द्वारा जीव व प्रायश्चित्त अथवा पाप का प्रक्षालन करने का विधान प्रचलित था।

अध्याय ६

भारतवर्ष

भौगोलिक स्थिति

भारतवर्ष की भौगोलिक स्थिति की कुछ विचारणीय विशेषताएँ हैं। एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग के मध्य में उसका स्थान होने के कारण पश्चिमी दूरान, मसोपटमिया तथा मित्र जमे सम्य दंगा म उमका जल और स्थल भाग स सम्पक जामानी से हा सका। पूर्वी दशा जस बर्मा इण्डोनेशिया चण्डाकीन तथा जावा जाति टापुआ के समूह म भी जापान प्रदान सम्भव हो गया। पूव की ओर चीन मे भी कुछ सिलसिला चलता रहा। साराग यह कि समृद्धि तथा व्यापार ज्ञाना की दृष्टि स भारत का स्थिति सम्य सत्तार के मध्य म मानी जा सकती है।

भारत ममि का जम्बार्द अठारह सौ मील और चौगर्द भी उनना ही है। उत्तर म हिमालय तथा पश्चिम और पूव में पवनमात्राएँ उमरी रणा उसा प्रकार करती हैं जिम प्रकार बंगाल का खाड़ी हिन्द महासागर और अरब सागर दक्षिणी भाग का करत ह। भारत का क्षयफल पन्द्रह लाख वर्गमील है जिममें जनसंख्या है। उमका जलवायु गरमी-भरती तथा उपज विभिन्न प्रकार का ह। भी कारण यही विभिन्न प्रकार के जल फल पत्र बस लताएँ जाति उत्पन्न हान ह जिनका प्रभाव स र्ण में जनसंख्या की वषमया, रहन-सहन गान-मान रानि रिवाज और वाजियाँ प्रचलित ह। ऐसा प्रभाव हाना ह कि भारत ममण्य का लघुफल जयका मार जाय है।

ऐतिहासिक बात के आरम्भ म भारत का बस स्वरुपा बन चुकी था जा आज जिनार्द पन्ना है। मरु स्तना अवयव हुआ कि मित्र का पार करना हुआ रमिगता गजपुनान में पत्रर उत्तर प्रण का पश्चिमा नामा तर बढ़ जाया है। कुछ नदियाँ या ता गुल हा गया अथवा जवन पुगान रागन स मधर-उधर म गया। प्राचान युग में भारत में अनेक जिगाण बन थे जिनु जनमन्साभी उतगततर बदि हाय तथा जय

अनेक आवश्यकताओं के कारण वन साफ कर दिये गये और घन्टियाँ वहाँ स्थापित होती रहीं तथा अब तक ही रहीं हैं ।

भारत में प्रकृति ने नदियाँ बनाएँगी जाँ पठाया है जिसमें कृषि और वृष्य-पशु-पक्षी का लाभ पहुँचा है । सिन्धु तथा पंजाब की पाँच नदियाँ गंगा, यमुना, घाघर, रामती और उनकी सहायक नदियाँ, बिहार में गंगा, गण्डक और गोण, बंगाल में ब्रह्मपुत्र, उड़ीसा की महानदी, दक्षिण में उत्तरी छोर पर नर्मदा और ताप्ती, दक्षिण की गान्धारी, कृष्णा कावेरी, तुंगभद्रा, आदि प्रमुख नदियाँ के सिवा अनेक छोटी नदियाँ हैं जो भारत भूमि का कृषि प्रधान देश बनाने में मन्थन रहो हैं । अब छोटे ही परिश्रम में सिंचनी हो सकेगी और देश की बढ़ती हुई जनसंख्या का काम चलता रहा । सिन्धु कीनवा सन्धी से जनसंख्या इतने वेग में बढ़ने लगी जिनमें पुराने विधान में परिवर्तन करने की आवश्यकता उत्पन्न हो गयी । जल का नियन्त्रण और वितरण तथा उपज बढ़ाने की समस्या इस प्राचीन देश के लिए नवीन-नी है । प्राचीन काठ में बदरगाहों की बटिनाइँ उननी न थी जमी कि आधुनिक युग में है । उम समय जहाज छोटे थे-मल्लिह समुन्दर के पान बहुत गहराई की आवश्यकता न थी, जैसी कि बड़े-बड़े जहाजों के लिए अब हा गयी है । मीथवाल के पहले मरकच्छ (मडौँच), पूर्णारव (गोपारा) आदि बदरगाह (पाताश्रय) पश्चिम भारत में थे । बग देश में ताम्र लिप्ति आदि बदरगाह उत्तर के प्रशासकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने थे । दक्षिण में भी विन्नेपन पश्चिमी तट पर छोटे-बड़े अनेक बदरगाह थे । पूर्वी तट पर उनका काम न थी । प्राचीन युग की आर्थिक व्यवस्था का देखा हुए भारत का समुद्रमार्ग से पूर्वोप तथा पश्चिमी देशों में व्यापार करने में बाईँ विन्नेप रजिनाईँ न थी ।

• उत्तरी भाग की पर्वतमालाओं में देश के जलवायु का ता लाभ हुआ ही, उधर में आनेवाले आश्रमणवारियाँ का भी अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता था । दलों की नशीलता के कारण आश्रमणवारियों अपार सरथा में एवाणव घुग न सक्त थे । जब तक उन मार्गों पर भारतीयों का आधिपत्य रहा तब तक आश्रमण के दरवाजे बन्द-से रहे । जब वह उनका अधिकार से बाहर निकल गये तब स आश्रमण हान रहे । जय समुद्रमार्ग में आश्रमण हाने लगे तब देश का अन्ततपुत्र जापतिया का सामना करना पडा । नये प्रदेश और नयी समस्याएँ उपस्थित हो गयी जिनका भारत का साम्युक्ति और आर्थिक जीवन पर गहरा प्रभाव पडा । फिर भी पवना और सागरा के कारण ऐसी परिस्थिति न होने पाया जिसमें देश का साम्युक्ति जीवन आमन्न

नष्ट भष्ट और उतना व्यक्तित्व सबका विरुद्ध हो जाता। सम्मत्ता परता, न्याय तथा माया से उपरुद्ध होने के कारण यहाँ के निवासी दबी-श्रवताआ की तरह उनका सम्मत्ता करते आते हैं। उन सब के मिश्रण देग का एक भोगाग्नि देवाई थी। स्पष्ट व्यक्तित्व प्रदान किया है जिसका प्रमाण हमारा सांस्कृतिक और जायिक जीवन है। विविधता और एवता का इतना स्पष्ट प्रमाण सत्तार व गायक ही जिसे अय नेग में हुआ है। विनाल देग होने के कारण यहाँ जा जाया उमर गि स्थान मिल गया। फलतः यहाँ जाय भाषा, द्रविड, गणर तथा किरात आदि भाषाओं के बालनेवाली देवत, वृष्ण तथा पीन वण का जानियाँ या उपजानिया पायी जाती हैं जिनमें व्यक्तित्व विभिन्नता रहन हुए भी सांस्कृतिक एवता के अनेक लक्षण स्पष्टतया पाये जाते हैं। एवीकरण का प्रवाह पहाड, वन और नदी-नगा की जतिप्रमण करता हुआ पुरातन काल से चलता आ रहा है। बहुत पुराने अवशेषों से यह जान पड़ता है कि भारत में भी मानव-सम्भ्यता का विकास प्रायः उसी क्रम से हुआ जमा कि सत्तार के अय भू भागों में। पहले यह माना जाता था कि दक्षिण भारत में ताम्र-युग नहीं हुआ, प्रस्तर युग के बाद ही वहाँ लौह-युग आरम्भ हो गया। किन्तु नवीन खोजा विशेषकर रायचर में प्राप्त पुरातन युग के अवशेषों से उपयुक्त मत अब सिधिल और भमात्मक-सा माना जाता है।

आदिम संगठित सम्भ्यता (सिन्धु सम्भ्यता युग २७५० ईसा पूर्व)

अनुमान किया जाना है कि ईसा के तीन हजार वर्ष पहले ईराक और ईरान के पठार की जोर से कुछ जनसमूह ने आकर बिलोचिस्तान में बच्ची इटा जोर पत्थरों के घर बनाकर गाँव बना लिये और वे शान्तिपूर्वक रहने लगे। वे लोग सेती और पशुपालन करते थे। सिंचाई के लिए नलिया के पानी को बाध बनाकर राक लेते थे, किन्तु घातुओं में उन्हें ताबे का ही ज्ञान था। उनकी सम्भ्यता ने विकसित और पुष्ट होकर वह स्थिति और रूप धारण किया जिसके प्रमाण मोहन-जोदड़ो एव हरप्पा आदि म आज भी दिखाई पड़ते हैं। हरप्पा अथवा सिन्धु घाटी की सम्भ्यता का प्रसार सतलज नदी, यमुना ताप्ती और नमदा की तराई तक हो पाया ही जाता है सम्भव है कि उससे भी अधिक हुआ है।

नगर-निर्माण

मोहनजोदड़ो और हरप्पा की सम्भ्यता ग्रामीणता से बहुत ऊँची उठ चुकी थी।

उसे यदि हमारे देश की नागरिक सभ्यता का आदिम रूप कहा जाय तो अनुचित न होगा। किसी किसी अंग म, जग नि सडपा व निमाध व जल के निवात व लिए नाशिया और गुदर स्नानागारा के निर्माण म उहा अनुत्तीय उन्नति कर ली थी। उस उन्नति तथा सम्प्रता का कारण केवल वृषि नहीं बल्कि मुख्यत अनाज, लवणी और व्यापार थे। मोहनजादडा के मरा दा बाटगिया से लर उस बडे मन् तक ये जिनरी चौडाद-लम्बाई पचामी फुट और सत्तानव फुट थी। मवान पनरी दटा के प्राय दा-मिािे हान थे। हूँे माडे पाँच स बीम इच तक लम्बी हानी थी। ाटा की मजबूत जुदाद चूने से की जाती और दीवारा पर कच्चा या पत्था पलस्तर लगाया जाता था। मवाना के आंगन म वुएँ बनाने का रियाज था। तत्र भी जनता व सुमीन व लिए नगर म जगन वा अनेन पनरी वुएँ वी थे जिनम म वार्द-बोई आन तत्र पानी दे रह है। उसी तरह मवाना में यद्यपि नहाणे व पनर कमर हाने थे तिनमें पानी बाहर निजालने की ाशिया बनी थी तथापि जनता के लिए एक स्नानागार ६० गज लम्बा आर ३६ गज चौडा ८ फुट ऊँची दीवार म घिरा हुआ बनवाया गया था। उम हा म १३ गज लम्बा माडे सात गज चाज और जाट फुट गहग स्नाा का तालाव था जिसके चारा जोर बरामद जोर कमर बने हुए थे। पानी मग्ने के लिए तागत्र के पाम वुएँ बनाय गये थे जोर पानी निजालने व लिए बडी नाली निजागी गयी थी। कुण्ड के समीप ही मम्मरा एर हम्माम भी था जिनम गरम हवा म तापमान स्थिर रना जाना हागा। धार्मिक जयवा सामाजिक अवमरा पर एकत्रिन हाने व लिए तीग गज की लम्बाई और उतना ही चौडाई की विगाल पट्टों भी नगर में बनी थी। नगर की रक्षा के लिए ऊँचे स्थान पर सुदृढ़ गनी थी और अनाज जमा करने के लिए वी खत्ती भी थी। कमरा म लवडी के पलग, जिने हुए मूडे तथा सुरसिया रखी जाती था। रागनी के लिए तांि, सीप और मिट्टी व चिराग या मोमवत्ती के गमालान हान थ। नगरा में पानी निजाला वाली नालिया तथा सडवा की व्यवस्था सुदर और सतापप्रद थी। एक गज चाजे गलिमा स ग्यारह गज तत्र चौा सडव बडे मुलर डग से चौपट की तरह बिछायी-गयी था। तत्वागीन अपूव नगर निर्माण-कला का प्रभाव पश्चिमी राजपूताना व नगरा में आज भी पाया जाता है। शहर का पानी निजालने के लिए दा इच से डेड फुट गहरी पनरी, पलस्तर की हुई नालिया थी। बूडा-बचरा डाली के लिए द्यर-उधर गहरे गण्डे बना दिये गये थे जिनम स निवाग्वर बडा शहर म बाहर फव दिया जाना था। प्राचीन काल म सडवा और नालिया का ऐसा

गुल्फ़ प्रवाह बही था। गम और एचेस ता बड गद और वीचड वाल नगर थे।

भोजन, छादन, न्यसन

सिन्धु घाटी के निवासी दूध पीत, गेहूँ जो निल सम्भवत चावल फलियाँ नाक माजी, तरबज और खजर आदि फल भेड, बकरी गाय-बल सुअर, मुर्गा मुर्गी मछरी, कछुआ और घडियाल का मास खाने थे। शराब पीने का कोई प्रमाण नहीं मिलता। मिट्टी के बरतना का अधिक रिवाज था, किन्तु ताँबे और कास के भी बरतन थे। वे सूती और ऊनी चादरा और घातिया स गरीर ढाक लते थे जसा कि उस युग के अन्य देशा में प्रचार था। स्त्रिया और पुगपा का बाला के सवारने और जूजा बाधने का शौक था। पुगपा दाणी रखते किन्तु ऊपरा आठ की मूछा का या तो कतर कर या मूडकर रखते थे, जसा कि पश्चिमी एशिया म आज तक हाता है। आमूषणा का स्त्रिया का बहूत शौक था। ताबीज, माला कण्ठा, हँसली, बडे बाजूबद कर धनी, पाजेब बालिया और अँगूठिया पहनी जाती थी। अमीर लोग साने चानी हाथीदात, पीतल और ताँब के, और गरीब लोग मिट्टी घाघे आदि के आमूषण पहनते और बच्चा का भी पहनाते थे। आश्चर्य है कि अँगूठिया साने की न लेकर प्राय ताबे की हानी थी। उनके सिगारदान म चिमटी कान खोदने की सलाई मोटी सूजी, सुगन्धित द्रव्य सुरमा या काजल जोठ रँगने क साधन तथा सौन्द्य चषक लेप आदि रहते थे। केशा के काढने और सँवारने के अनेक पगन थे। बलिया पालिशदार ताबे का दपण आईने का काम देता था। कधिया हाथी-दात या सींग की और विभिन्न ढग के अस्तुरे ताबे के बनाये जाते थे। मनाविनोद का सम्भवत सबसे अधिक लोकप्रिय साधन पासे फकना या चौपड के माहरे चलाना था। जुए का और नाच-गाने का उनका अवश्य शौक रहा हागा। गहरे जुआरी करीब साडे छ से सवा बारह रुपये मूद पर कज लेकर जुआ खेलते थे।

उद्योगधंधे

उन लागा का आर्थिक जीवन कृषि, पशुपालन तथा व्यापार पर आश्रित था। कपास, गेहूँ जो सन की खेती बडे पमाने पर हाती थी। जानबरा म बूबड वाले बल गाय भस, भेड, बकरी, कुत्ता सुअर अँट, और हाथी पाले जाते थे। शेर से भी वे परिचित थे। घोडा के हाने का कोई प्रमाण नहीं मिलता। कारागरामें कुम्हार

बर्तमान सानार, लाहार सगतराश, सूती और ऊनी कपडा बुननेवाले, बिलौने और माहूरें बनानवाले, हाथीदांत का काम करनेवाले गिने जा सकते हैं। उनका व्यापार भेसापटेमिया से पंजाब और उत्तर प्रदेश तक और पश्चिम में राजपूताना, गुजरात, खानदेश तक फैला हुआ था। सम्भव है कि पश्चिमी राज्यों की राजनीतिक परिस्थितियां के कारण मित्र और श्रिट में उनका सम्बन्ध नाम मात्र के लिए ही रहा हो। आवागमन के लिए नावा, बलगाडिया और पंगुओ आदि से काम लिया जाता था। उनके पास घाडा तथा जहाजा के होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता। व्यापार विनिमय द्वारा होता होगा क्योंकि वहां भिक्का का प्रचलन न था। तौलने के घाट ठीक-ठीक नप-तु थे। छाटी नाप द्विगुण तथा जाभागे नाप दशमलव सिद्धान्त पर थी। अधिकतर छोटे और बड़े में १ और १६ का अनुपात रहता था। बाहर से घान तथा कीमती पत्थर भंगवाय जाते थे।

धम



सिन्धु घाटी के निवासी जो लिपि लिखते थे वह अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी। इसी लिए उनके धम और विश्वासा का ठीक-ठीक पता नहीं चल पाया। कुछ मुद्राओं पर बने चित्रा मिट्टी की मूर्तियां, वेदियों और स्तम्भों के आधार पर पुरातत्त्ववेत्ताओं ने अनुमान लगाये हैं। कुछ विद्वानों का ख्याल है कि वे लोग छोटे-छोटे मंदिर बनाते थे जिनमें मूर्तियां प्रतिष्ठित करत थे। यह सम्भव है क्योंकि उस युग में पश्चिमी एशिया और मित्र आदि देशों में मूर्तिपूजा बड़े पैमाने पर होती थी। कुछ विद्वान यह मानते हैं कि वहां की सबसे प्रमुख आराध्य देवी धरती माता अथवा शक्ति होगी। किंतु इस मत के विरुद्ध गम्भीर प्रमाणा द्वारा यह भी कहा जा सकता है कि उनका प्रमुख देवता पुरुषरूपी था जो पीपल के वृक्ष में रहता था और उसके हाथ कानखजरे जैसे थे। उसकी सेवा सात गौण देवता करते थे जिनके पक्ष थे और पर चिड़िया जैसे थे। उसकी सेवा में एक श्रद्धालु वाला गेंडा भी उसका प्रतीक रहता था। दूसरा देवता वह था जिसे लोग त्रिमूर्ति शिव मानते थे। अब वह एक कार्त्तिक भक्त के मुखवाला, भयकर जीवा, जैसे माप विच्छ, कानखजूरा आदि का मिथित रूप बड़ा जाना है। वह न तो किसी चौकी पर बसा है और न ऊर्ध्वगति है जो दिखाई देता है वह सप की पूंठ का निचला भाग है। यह कल्पना शिव की नहीं। सम्भव है कि उसका रूप शिव अथवा महिषासुर से मेल खाना हो। यद्यपि वह शिव के समान पंगुपति था तथापि उसका यागामन-मुद्रा एवं उसका बाधम्बर तथा हाथी की खाल

के वस्त्र गिव की स्मृति दिलाते ह । श्मशान नहीं नि ब लाग लिग और यान्नि का भी पूजा करते थे । उनमें स्वस्तिक व चिह्न का भी महत्त्व था । उनका मित्रा थे जलचरा में मगर, पशुआ में बल भम पशिया म मार जीर गण्ड तथा जाधे पशु जीर जाधे मनुष्य की मिश्रित आकृति वाले जीवा जीर वशा जग जदत्त्व (पापल) नीम, बरगल जादि की पूजा करत थ । उाना गणा जीर तावीजा म भी निस्वास था । वे अपने मृतक का जलाने या पशु-पशिया के सान के लिए छाट दत थे किन्तु कूल्हा की हडिडिया जीर कमी पूरे पजर का व हांती में भरकर रख तत थ ।

सगठन

नगर की रचना, सफाई, मडका की बनावट आदि का देगकर यह जान पटना है कि उस समय श्म प्रवच के लिए सुउन्न विधान जीर बाण्यताआ के सगठन का अनिवाप आवश्यकता होती होगी । पर शासन तथा प्रवच विधान पर प्रकाश डालनेवाले कोई साधन अभी प्राप्त नहीं हुए ह । सम्भव है कि जब तत्कालीन लिपि पत्नी जा सके तब उस सभृति का अधिक ज्ञान प्राप्त हा । कुछ विद्वाना का अनुमान है कि यहा का शासन घमाधिकारी तथा सामन्ता द्वारा होता था ।

पतन के कारण

सिन्धु घाटी के लोग व्यापार-बुगल किन्तु शान्तिप्रिय थे । सम्भवत इसी कारण उन्होंने युद्धकला अथवा रणकौशल का उन्नत रूपने का कोई विशेष प्रयत्न नहीं किया । रक्षा के लिए नगर के भीतर गायद उहाने छाटी गनी या कोटी बना ली थी किन्तु वह दुर्बल न थी । उनके पास न तो घाटे थे और न लोहा । इसी लिए उनके अस्त्र शस्त्र कम उपयोगी और सय-भचालन शिथिल रहा हागा । यह भी सम्भव है कि सिन्धु घाटी के नगर किमी बाहरी शक्ति द्वारा शासित हा जिसके नष्ट हा जाने से उनका भी विश्वास हा गया हो । इसके सिवा सम्भव है टिटडिया के आक्रमण तथा सिन्धु नद जयवा जय नदिया के पूर से नगर जीर बस्तिया नष्ट हा गयी हा । माहनजादडा बार-बार बमा और त्रिगडा । उसके ऊपर बस्तिया के नी स्तर निकले हैं, जिनसे अनुमान किया जाता है कि सबसे नीचे वाली इमारत जाज में कोई साठे पाच हजार बप पहले और सबसे ऊपर वाली पौने-पाच हजार बप पुरानी होगी । कुछ लोगा की धारणा है कि हरप्पा की सम्यता व पन्ले सिन्धु की घाटी में अमरी और उसके बाद चकर जीर झगर की सम्यता पनी थी, किन्तु उनके सम्बन्ध में बहुत

वचन, तलवार तथा घाण का उपयोग न जानने के कारण वं जसपत्र रहे । आर्यों ने उनके पुरा तथा किला को भी तोड़-नाट कर उनका परास्त कर लिया । पञ्जाब में आर्यों का शासन जम गया । सम्भव है कि सिन्धु घाटी वाला की शक्ति के विनाश का एक कारण आर्यों का आक्रमण भी रहा है ।

अन्तर्गत को परास्त कर आर्यों के प्रमुख वंश वं दृष्ट आधिपत्य के लिए परम्पर युद्ध करने लगे । पम्पणी (रावी) नदी के तट पर दम बना की सयुक्त बना न भरत वंश के राजा मुदास का धार युद्ध हुआ । सुताम वं राज्य पर पूव की आर स भी आक्रमण हुआ । यमुना नदी के तट पर पुन सुताम की विजय हुई । पराजित लोग या तो इधर-उधर अस्त-व्यस्त हा गये अथवा शात हाकर नीचे की श्रेणी की प्रजा म परिणत हा गय ।

उपर्युक्त एतिहासिक दृष्ट वं मिवा पूव-वर्तिक आर्यों के राजनतिक इतिहास का कुछ पता नहीं चलता । किन्तु यह अनुमान किया जाना है कि आयवगा के आपस म सघष होते रहे । अनुश्रुति के अनुसार प्राचीन आर्यों के प्रमुख वंश मानव (सूय-वंश), एल (चन्द्र-वंश) गिने जाते थे । कालान्तर म वे अनेक शाखाओं में फल गय । वंश के नेता अपनी शक्ति तथा राज्य के सवधन के लिए प्रयत्न करते रहे । कुशक्षेत्र से बढत-बढते वे मगध और जग (बिहार) तक पूव में तथा विन्ध (बंरार) तक दक्षिण में फल गये । हिमालय तथा विन्ध्याचल के मध्य का प्रदेश आर्यावत कहा जाने लगा । पुरु वंश तथा भरत वं मिलकर कौरव नाम स प्ररयान हुए । उसी प्रकार पाच वंश मिलकर पंचाल के नाम से प्रसिद्ध हुए । कुछ वंश दुप्त से हा गये और इधर-उधर बिखर गये । कुर तथा पंचाल सयुक्त रूप से सत्रसे अतिक प्रबल तथा प्रमुख माने गये । कौरवा की राजधानी पहले हस्तिनापुर म थी किन्तु बाद म कौशाम्बी हो गयी । पंचाल की राजधानी काम्पित्य थी ।

कौरवा के आपसी द्वेष तथा ईर्ष्या के कारण कहा जाता है कि महाभारत का भयकर युद्ध हुआ । फलत र्शनकी शक्ति क्षीण हो गयी । पूव म कामल, वागी तथा मिथिला के आय वं उत्पत्ति करते रहे । इसी प्रकार तक्षशिला स मिथिला तक अनेक राज्य स्थापित हो गये ।

ईसा-पूर्व छठी शती या सातवी शती तक हिमालय से गोलावरी तक दम स सोलह बडे राज्य स्थापित हो गये थे । पश्चिम से पूव की आर गंधार, कम्बोज उत्तरी कदमीर कुर, गरसेन पंचाल चेदि के वंश या वत्स, वागी, मल्ल, वाजी, मगध और अग देश थे । मत्स्य, अवन्ति, उत्तर राजपूताना प्रदेश तथा आसका,

गोदावरी या मालवा भी प्रमुख थे। उस समय यद्यपि अधिकांश राज्य राजसत्तात्मक थे तथापि उनमें अतिरिक्त शायद आठ-दस गणसत्तात्मक राज्य भी थे, जिनमें शाक्य (कपिलवस्तु), मल्ल (पावा तथा कुशीनारा), विन्धु (मिथिला), लिच्छवि (बंसाली) आदि के गणतन्त्र समुदाय थे। सम्भवतः राजा गण उनका तब तक किसी कारण विजय न कर सके थे।

इतने राज्य भंग कब तक गान्धि के साथ रह सकते थे। राज्या में साम्राज्य स्थापित करने की भावना अनेक आर्थिक एवं राजनीतिक कारणों से उत्पन्न हो ही जाती है। इस समय से चार प्रबल साम्राज्यों का उदय हुआ जिनके नाम थे अवन्ति (मालवा), वत्स (कौशाम्बी—प्रयाग) कोसल तथा मगध। उन चारों में पहले काशी तथा कौशाम्बी का और फिर कामल का ह्रास हो गया। पहले तो ऐसा प्रतीत हुआ कि अवन्ति राज्य उम समस्त भूमि भाग को जो जाजकल गंगा-यमुना-गोमती की धाटियाँ तथा बिहार में है नीनकर विशाल साम्राज्य स्थापित कर लेगा, किन्तु परिस्थित कुछ ऐसी बनी कि मगध राज्य को ही वह सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मगध साम्राज्य

छठी शती ई० पू० के अन्तिम भाग में गिरिज (राजगढ़) में हयकिकुल (नाग वंश) का राजा बिम्बसार राज्य करता था। उसने अथ राजाआ तथा वंश में वैवाहिक सम्बंध जोड़कर अपना महत्त्व तथा बल बढ़ाना आरंभ किया। पर्याप्त शक्ति बढे पर उसने जगत् राज्य का हृदय लिया। उसके उत्तराधिकारी पुत्र अजातशत्रु ने उसे बंद में डालकर राज्य छीन लिया। इसी कारण लिच्छवियाँ तथा कामल के राज्या से उसका युद्ध हुआ, किन्तु छत्र बल से उसने उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। उसके उत्तराधिकारी पुत्र उदयी ने पाटलिपुत्र में साम्राज्य की राजधानी बनायी। राजाआ की अदोयता के कारण सम्भवतः उसी वंश के पिण्डुनाग नामक एक मंत्री ने साम्राज्य पर अधिकार कर लिया। उन, अजातशत्रु के राजा का भी परास्त करके मगध साम्राज्य का मातृका तब बड़ा दिया। उसके वंश बहुत दिन राज्य करते रहे।

चौथी शती (ई० पू०) में पतञ्जलि पिण्डुनाग वंश को हटाकर निम्न त्रेणी का महापद्मनन्द साम्राज्य के सिंहासन पर बैठा। उसी ने नदवत्स के साम्राज्य की स्थापना की। महापद्मनन्द ऐसा पराक्रमी निकला कि उसका प्रभुत्व पूर्वी पंजाब से गोदावरी तक बढ़ा और उसने ऐतिहासिक काल का प्रथम मुविशाल साम्राज्य

स्थापित किया। उमी या एक धाज घननद सम्राट था, जो मकदूनिया व सिक्न्दर ने ईरान विजय कर पजाब पर आक्रमण किया (३२६ ई० पू०)। पश्चिमी पजाब में और सिन्ध में चौरीस-पचीम छोटे-माटे राज्य थे। इसी कारण ईरान व सम्राट को उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का जयमर मिल गया। सिक्न्दर महान ईरान के सम्राट द्वारा का परास्त कर तथासिला तक आ पहुँचा। वहाँ से उसने गेलम और चिनाव के बीच के प्रदेश में पौरव राजा को अपनी अधीनता स्वीकार करने का सदा भेजा। पौरव राजा के इन्कार करने पर उसने पौरव राज्य पर चढ़ाई कर दी। जगान प्रमाद जयवा अद्वरदगिता व कारण घननद ने पजाब के पौरव राजा की सहायता न की। यदि उसने सहायता न भी माँगी होती जयवा अपने राज्य में मगध की सना बुलाना अनुचित समझा जाता तो भी घननद का चाहिए था कि वह सिक्न्दर का पजाब पर आक्रमण करने से येनकेन प्रकारण रोकता। किन्तु ऐसा न होने से पौरव राजा असफल रहा और पजाब में यूनानियों की धाक बँध गयी। सम्भव है इसी कारण चद्रगुप्त मौर्य को जा पहले नद साम्राज्य में एक सेनापति था और जिसे किसी कारण असंतुष्ट होकर सम्राट ने निर्वासित कर दिया था पजाबवासियों ने सम्राट के विरुद्ध सहायता की हो। घननद के आधिक शापण तथा श्रास और क्षत्रिय द्राही होने के कारण प्रजा भी उससे क्रुद्ध हो गयी। परिणाम यह हुआ कि चद्रगुप्त मौर्य ने घननद को सिंहासन च्युत करके साम्राज्य छीन लिया (३२१ से ३१३ ई० पू०)। फिर उसने यूनानियों को पजाब से बाहर निकाल दिया।

ईरान का आय राज्य नष्ट होने के पश्चात् इसमें सन्देह नहीं कि मध्य तथा दक्षिण एशिया का सबसे विशाल एवं प्रबल साम्राज्य मौर्यों का था। चद्रगुप्त मौर्य के विरुद्ध सिक्न्दर के एक सुप्रसिद्ध सेनापति सेल्यूकस ने पजाब पर चढ़ाई की (३०५ ई० पू०)। चद्रगुप्त के प्रबल बल को देख तथा पश्चिमी एशिया में अपने यूनानी प्रतिद्वन्दी सेनापति एण्टीगोनस से सशक्ति होने के कारण उसका साहस छूट गया। चद्रगुप्त के आतंक में आकर उसने उसका हेरात, बाबुल, कांधार तथा बलूचिस्तान के प्रान्त देकर उससे मित्रता कर ली। मैत्री को पुष्ट करने के लिए चद्रगुप्त ने एक यूनानी राजकुमारी से विवाह कर लिया और अपने दरबार में मेगेस्थनीज नामक एक यूनानी दूत रखना स्वीकार कर लिया। मगध सम्राट ने सत्यकस को ५०० युद्धशील हाथी देकर उसकी सैनिक सहायता की (३०५ ई० पू०)। इस प्रकार मौर्य साम्राज्य हिन्दुस्तान तक पहुँच गया। पश्चिम में काठियावाड और सम्भव है

वि दक्षिण म मैसूर तक चन्द्रगुप्त का प्रभुत्व जम गया । प्राचीन भारतवय का वह सबसे बड़ा साम्राज्य था । चन्द्रगुप्त के पश्चात उनके पौत्र सम्राट अशोक ने कलिंग विजय (२७३ ई० पू०) कर बंगाल की राती तक साम्राज्य का चौगम कर लिया । मौर्य साम्राज्य का-सा सुविस्तृत एवं सुसंगठित साम्राज्य फिर भारतवय में मुगल के समय तक न बन सका । प्रायः समस्त भारतवय को राजनीतिक एकाता के सूत्र में बाँटने का यह प्रथम तथा महत्त्वपूर्ण एवं सफल प्रयास था । इसका श्रेय मौर्य वंश को है ।

विशाल साम्राज्य के निर्माता होने तथा यूनानियों को भारतवय से हटा देने की हेतिसयत में चन्द्रगुप्त मौर्य का स्थान बहुत ऊँचा है । चन्द्रगुप्त का पुत्र बिन्दुसार भी पराक्रमी सम्राट था । कहा जाता है कि उसने बंगाल की ग्याडी और अरब सागर के बीच का भाग विजय कर मौर्य साम्राज्य की सीमा मैसूर तक पहुँचा दी । पश्चिम में उसकी धाक पूर्ववत कायम रही । बिन्दुसार को मृत्यु के बाद उसके पुत्रास युद्ध हुआ जिसमें अशोक की विजय हुई (२७२ ई० पू०) । अशोक न जा श्यानि प्राप्त की वह सम्भवतः सत्सार के किसी भी सम्राट का ऐतिहासिक काल में न मिल सकती । इसका कारण यह था कि कलिंग विजय के दृष्टावाण से उसको ऐसी ग्यानि हुई कि उस युद्ध करके राज्य बालन में घणा हा गयी । यह शांति एक अहिंसा का उपासक हो गया । बौद्ध धम व सत्य एवं अहिंसात्मक सिद्धान्ता का आरम्भ करने के बाद उसने अपना आचरण तथा व्यवहार बदल लिया । तदनन्तर उसने गुणा में शिक्षा पर तथा स्तम्मा पर अपने धम-सूत्र सुझा दिए जा उत्तर तथा शान्ति प्राप्त की आज तक मिले हैं । उनमें उसने किमी विशेष दानिक जयवा धार्मिक सिद्धान्त का प्रचार न करके जीवन तथा आचरण में दया, मत्य, विनय, कृता-रता, माना पिता की सेवा, सौजन्य आदि भवसम्मत गुणा के पालन पर दृष्टा दिया है । उनके प्रचार के लिए उसने चारों ओर दूर में ही नहा बन कारिग, मित्र तथा ग्यान तक उपदेश भेजे । राज्य में महामात्रा का नियुक्त करके बताया गया कि व उन आदेशों तथा आचरणों के अनुसार प्रजासु व्यवस्था करायें । पश्चिमी सत्सार तथा मध्य एशिया में ऐसे प्रचार की बड़ा प्रारम्भ हुआ । सम्राट के इतिहास में किमी भी देश के शासक या शासन द्वारा न तो बल-पूर्वक आदेशों का प्रसार हो हुआ था न उनके लिए ऐसे बलानिक प्रस्ताव का प्रारम्भ । भरि धाय (हत्यात्मक युद्ध) के म्यान पर उसने धम धाय का मूढ किया ।

अशोक की मृत्यु (२३२ ई० पू०) के पश्चात साम्राज्य विखर जाने लगा ।

उसके उत्तराधिकारियों की ज्याम्यता प्राप्ता के शासका की स्वच्छ दता तथा अनाचार, वैदिक धर्मविलम्बिता की उदासीनता जयवा उनके द्राह तथा सण्टिआकस ततीय व भारत की सीमा पर आक्रमण करने के कारण मौर्य वश से लोग का विश्वास उठ गया । १८४ ई० पू० में रोनापति पुष्यमित्र ने मगध का सिंहासन बहद्रथ से छीनकर अपने गुगघश का प्रभुत्व स्थापित किया । किन्तु उसके साम्राज्य से पश्चिमी पंजाब तथा महानदी न गंगावरी तक का कलिंग प्रान्त और दक्षिण भारत निकल गये । बकिटआ व यूनानिया ने भारत में हो रहे विप्लव से लाभ उठाकर अपनी सेना अयाध्या और पाटलिपुत्र तक बढ़ा दी किन्तु पुष्यमित्र तथा उसके पुत्र अग्निमित्र और पौत्र नाममित्र ने उनका पीछे भगा दिया । उस विजय व उपलक्ष्य में पुष्यमित्र ने अश्वमेध यज्ञ किया । उसके वश ने लगभग सौ वर्ष तक राज्य किया । उसका सामने सबसे कठिन समस्या पश्चिमोत्तर प्रांता की आर से यवना द्वारा आक्रमण की थी । पहले दा सम्राट ता उनको पश्चिमा पंजाब से आगे बढने से रोक रहे किन्तु बाद को वे भी असफल रहे । शुगवश का बचा-खुचा प्रभाव ७३ ई०पू० में नष्ट हो गया और वसुदेव ने कण्व वश का आधिपत्य स्थापित किया किन्तु वह पतालीस वर्ष भी न चल सका । मगध का दबकरा विगड जाने से पूर्वी पंजाब मध्य भारत राजस्थान, मालवा, गुजरात और सिंध में अनेक स्वतंत्र गणराज्य उत्पन्न हो गये ।

प्रथम गती ई० पू० में दो नये बडे राज्या की स्थापना हुई । महाराष्ट्र में शातवाहन (आध्र) वश का उत्थान हुआ और कलिंग म चन्द्रवश का जिमम खार वेल् नामक राजा ने अच्छी ग्याति प्राप्त की । कलिंग राज्य ता शीघ्र ही अस्त हो गया, किन्तु आध्रा ने पहले ता मालवा, फिर गुजरात तथा सौराष्ट्र में भी अपना प्रभुत्व स्थापित किया । सुदूर दक्षिण में द्रविडा व कई राज्य थे । उत्तरी भारत में भी कई राज्या का होना सम्भव है । मध्यदश तथा मगध में राज्य जाण गीण दगा में चलता रहा ।

यूनानिया ने द्वितीय गती ई० पू० में पंजाब में अपना मित्रता जमाना शुरू कर लिया । इलम नदी के पूव में एक राज्य बना और पश्चिम में अफगानिस्तान तक दूसरा । सौ वर्ष तक यूनानिया का प्रभुत्व रहा । किन्तु प्रथम गती व प्रथम चरण में गंगा और पहूवा (पार्थियन) ने सीमाना और कंधार का आर से आक्रमण करके यूनानिया व राज्य का नष्ट कर लिया और उनका प्रसिद्ध राजा गाडापरनाज (शातापर) ने पश्चिमा पंजाब पर अधिकार प्राप्त किया । तदनंतर उहान अपना प्रभुत्व मयुरा तक स्थापित कर लिया । दक्षिण का आर व काठियावाड तक पहुँच

गये । जब मालवा पर उनका आक्रमण हुआ तब जाधो ने उनके वग को रखा ।

चीन की जार से हूणा द्वारा भगाये हुए तुव यचिया के कुशान नामक नेता ने अफगानिस्तान पर आक्रमण करके यूनानों राज्य पर अधिकार प्राप्त कर लिया । उसा के पुत्र विम ने शका की शक्ति का उत्तरी भारत में नष्ट कर दिया । कश्मीर, पंजाब सिन्धु और उत्तर प्रदेश की पश्चिमी साम्राज्य उसने अधिकार स्थापित कर लिया । कुशान वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा कनिष्क था (७८—१०१ ई०) । उसका राज्य मध्य एशिया, अफगानिस्तान कश्मीर, पंजाब, समुक्त प्रान्त सिन्धु गुजरात काठियावाड़ और मालवा तक फैला गया । उसकी राजधानी पेशावर में थी । अशोक के बाद बौद्ध धर्म का प्रमुख प्रचारक सम्राट कनिष्क हुआ किन्तु उन दाना के स्वभाव आचरण तथा अहिंसा सिद्धांत के निबन्ध में बड़ा मद है । उसके पृष्ठपोषण से बौद्ध धर्म चीन आदि में फैला और बौद्ध धर्म का गीत सस्कार हुआ जो महायान के नाम से प्रसिद्ध हुआ । गांधार शैली की तक्षण शिल्पकला का पूर्ण विकास भी इसी के समय में हुआ । कुशान शक्ति का नाग तृतीय शती में हुआ । पश्चिम में पार्स के सासानी वंश के शाहुर प्रथम के और पूव में नाग तथा अन्य वंश के राजाओं के आघातों में वह नष्ट भ्रष्ट हो गया ।

कालिंग

प्रथम शती ई० पू० में कालिंग (उड़ीसा) के चक्रवर्ती शारवक ने जो अनंत मत का पोषक था राज्य का विस्तार किया । उत्तर में राजगृह तक और पश्चिम में बंगाल तक दक्षिण में मगुलीपट्टन तक का प्रदेश उसने विजय कर लिया । तदनन्तर उसने मगध पर चढ़ाई की और अग तथा मगध का हूट लिया । दक्षिण के पाण्ड्य राज का भी उसने परास्त किया । पराक्रमों होने के साथ ही वह गानविद्या में पारंगत और नृत्यकला का पोषक था । उसने प्रजा के विमोक्ष के लिए उत्सवों का आयोजन किया । स्थापत्य तथा मूर्ति कला की भी उसके संरक्षण में अच्छी उन्नति हुई जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण खडगिरि की गुफा में द्रष्टव्य है । उसने नगर तथा महाप्रासादा का निर्माण और उद्यानों का आरापण करवाया और एक प्राचीन नहर का उद्धार किया । बहने सम्भव है कि उसने मगध पार की स्वर्ण भूमि (पूर्वीय द्वीप) के साथ यापार और सम्भृति के आदान प्रदान को उत्तेजना प्रदान की हो । यह नहीं पता चलता कि ऐसे होनेहार साम्राज्य का उसके मरणोपरांत कैसे इतना शीघ्र पतन हुआ ।

खारवल के समनामयिक दक्षिणापथ के जाध्र शातवाहना ने मा अपना गाध्राज्य स्थापित किया। अनुमान किया जाता है कि त्रिच्यावल का पहाडिया न ह्त्तर के पैठन (प्रतिष्ठानपुर) की ओर गये और दक्षिण के पश्चिमात्तर भाग में गए। अनुश्रुति के अनुसार उही के सिमुक जयवा सिमुक नामक राजा के वध का उच्छिन्न कर मालवा पर आधिपत्य स्थापित किया। उसी वध के शातवर्णि नामक राजा के समय में आध्र साम्राज्य काठियावाड वाहन मालवा से वृष्णा नदी के वहाने तक फैल गया। गका के जाध्रमणा से जाध्रा का काठियावाड और मालवा से पीछे हटना पडा किन्तु गौतमीपुत्र श्री शातवर्णि ने उन सब का दमन किया। उसका साम्राज्य काठियावाड मालवा से वरार के अस्मन तथा त्रिलिंग प्रांत तक फैल गया। साम्राज्य की राजधानी प्रतिष्ठानपुर (पठन) था। गुग, कण्व वधा के समान शातवाहन भी शाहण वध के थे। गौतमीपुत्र की धापणा के अनुसार उमका आधिपत्य अरावली पहाड में पूर्वी और पश्चिमी घाट और त्रिम्बाकुर (टाकवार) तक स्थापित था। तृतीय शती में यह साम्राज्य छिन्न भिन्न होकर वद स्तर्ग राज्या में विभक्त हो गया।

तृतीय शती तक जाध्रा का राज्य भी नष्ट हो गया। इन सब परिवर्तना के कारण भारतवर्ष में अनेक राज्य बन गये। उस युग के इतिहास पर अभी तक मातोपजनक प्रकाश नहीं पड पाया है। केवल एतना कहा जा सकता है कि उत्तरा भारत में नागा तथा वाकाटक और दक्षिणी भारत में पल्लव वशा में बड़े राज्य स्थापित कर लिये थे। नागा ने कुशाना को हटाने के लिए कितना अंग तक सफल प्रयत्न भी किया था। चतुर्थ शती में गुप्त साम्राज्य के उत्थ के साथ इतिहास पर अविश्व जालाव पडने लगा।

बिहार प्रांत के एक साधारण छोटे राज्य में गुप्त वस के महाराज श्रीगुप्त राज्य करते थे। उसी वध के चन्द्रगुप्त नामक राजकुमार ने लिच्छवि वध में विवाह करके उम वध की सहायता से अपनी शक्ति बढ़ायी राज्य भी प्रयाग तक फैलाया और महाराजाधिराज की पदवी ग्रहण कर ला (३२० ई०)। उसके पुत्र समुद्रगुप्त ने दिग्विजय करके पूव में ब्रह्मपुत्र नदी तक दक्षिण में नमदा तथा वृष्णा नदी या उमसे भी आगे तक प्रभुत्व स्थापित कर लिया। उसके पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय ने (३७५—८१४) गका से मालवा गुजरात और काठियावाड जीते। सम्भव है कि उसने वचे-मुचे कुशाना को भी पजाव से भगा दिया हो। इस प्रकार पाचवी शती के आरम्भ में गुप्ता ने आर्यावत में एक महान साम्राज्य स्थापित किया। गुप्त साम्राज्यकाल

में भारतीय साहित्य, दर्शन स्थापत्य, मित्ति चित्रण, मूर्तिकला आदि की इतनी उत्तमि हुई कि इतिहास में उसका समय स्वर्ण-युग के नाम से प्रख्यात हो गया। गुप्ता के समान दक्षिण में मालवा से नीचे की ओर वाकाटका ने एक बड़े राज्यकी स्थापना की जो पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक और दक्षिण में कृष्णा नदी तक विस्तृत था। उस राज्य से नीचे मुद्गर दक्षिण के पुराने पाण्ड्य, चेर आदि राज्य थे। साधारणतः स्थूल रूप से कहा जा सकता है कि भारतवर्ष में पाचवी शती में एक विशाल साम्राज्य उत्तर में और दक्षिण में था।

इरानिया ने जब से पश्चिमी पंजाब में पदापण किया तब से भारत को आक्रमण-कारियों से छुट्टी न मिल सकी। मौर्य वंश ने अवश्य सीमा रक्षित की किन्तु उनके बाद वह रची रह गयी। पाचवी शती के मध्य में गुप्त साम्राज्य का मयूर ह्रास आरम्भ हुआ। नमदा-तटस्थ पुष्यमित्रा का विद्रोह तथा राज्य के लिए गृहयुद्ध हुआ। उधर पश्चिम की ओर से हूणों का आक्रमण हुआ। ये चीनी लोग के ही वे जिन्होंने कुशाना का मध्य एशिया से पंजाब की ओर भगाया था। वे पंजाब की ओर बढ़कर फलने का प्रयत्न करते रहे। उनके प्रसिद्ध नेता तारमाण ने गुप्ता से मध्य भारत तथा मालवा के प्रान्त छीन लिये। उधर सौराष्ट्र प्रान्त भी उनके आतंक में आ गया। फिर भी भारतीय युद्ध करते रहे। तोरमाण के पुत्र मिहिरकुल का उत्तर प्रदेश ने नृसिंहगुप्त बालादित्य ने निकाल दिया और ५३० ई० में मद्रास के राजा यन्नाधर्मा ने उसे ऐसा परास्त किया कि कश्मीर में उसे शरण लेनी पड़ी। यद्यपि हूणों का दमन किया गया तथापि उनके आक्रमणों से गुप्त साम्राज्य जर्जरित होकर छिन्न भिन्न हो गया (५५० ई०)। इसके सिवा राजपूताने के पुराने राजवंश जयवा राज्य भी हत भ्रम हो गये।

आर्यों का सामाजिक जीवन

भारत के प्राचीन आर्यों के विषय में वैदिक साहित्य से पता चलता है कि उनके सामाजिक जीवन का मूल आधार पतक विधान का परिवार था। उनका स्व प्रायः गोरों का और वे धन तथा मन की स्वच्छता का बड़ा ध्यान रखते थे। आचरण की शुद्धता तथा गिष्टता, विचारा की गम्भीरता, उत्तरता आतिथ्य-मत्कार सच्चरित्रता तथा आत्मसम्मान का वे यथासाध्य पालन करते थे। खाने-पीने तथा विनाद का उनको शौक था। रोटी, दाल, चावल, गन्ना, फल, दूध, दही, माखन तथा मांस का भी वे सवन करते थे। गन्ने के रस के बड़े प्रेमी थे। जी की सुरा तथा मोमरस का पान

करते थे। उनको सगीत, नृत्य तथा गान से प्रेम और शिकार, रथा की दौड़ तथा मुष्टियुद्ध का भी शौक था। यदा-कदा जुआ भी खेला करते। व ग्रामों में रहते थे और उनके मकान लकड़ी या बासा के बने होते थे। ग्रामीण जीवन से वे सन्तुष्ट रहते थे। कपड़ा का उन्हें अधिक शौक न था। घोती और चादर उनके लिए काफी थी। यद्यपि पुरुषों के अधिकार प्रधान थे तथापि स्त्रियों की मान-मर्यादा का वे आदर करते थे। स्त्रियों में पराग न था। वे जाभयणा से मजी घजी रहती और विद्याध्ययन तथा धार्मिक यज्ञादि करता रहती थी। लड़कियों का विवाह युवती होने पर किया जाता था। उनके जाचरण पवित्र थे। विधवा विवाह बुरा न माना जाता था और न उम्र समय सती की प्रथा ही थी। गृहस्थ जीवन सुखमय था।

यद्यपि जार्यों में व्यवसायानुसार चार वर्णों ब्राह्मण, राजस्य, वश्य तथा शूद्र की कल्पना थी तथापि वे सब आपस में मिलते-जुलते खाते-पीते और विवाह भी करते थे। राटी-बगी का कोई सास विचार न था। हाँ अनार्यों से जितना वर्ण श्याम था वे बचत और उन्हें नीची दृष्टि से देखते थे और बठार व्यवहार भी करते थे।

वदिक काल के उत्तर भाग में सामाजिक परिवर्तन होने लगा क्योंकि सामाजिक जीवन का व्यवस्थित करने की आवश्यकता लोग अनुभव करने लग गये। निरन्तर युद्धों में फँसे रहने के कारण उन्हें जीवन के अर्थ आवश्यक अंग की उपधा का डर हुआ। यद्यपि रक्षा के लिए सशस्त्र आवश्यक रूप से युद्ध करने का निधान था तथापि आपत्तिकाल के दूर हो जाने के बाद ज्ञान विज्ञान कृषि वाणिज्य तथा मजदूरी आदि के मवधान में नियंत्रण की आवश्यकता महसूस होती थी। जब निरन्तर पारस्परिक सहायता के साथ अपने-अपने वर्ग के कर्तव्य करते रहने के कारण सामाजिक सहायता उनका आश्रय बन गया। अनार्यों के साथ उत्तरान्तर बन्ते सम्पर्क को नियंत्रित करना भी उनमें लिए अनिवार्य-मा इमलिए हो गया कि जाय जाति अधिक दूषित जयवा जनाय-भार में विरुद्ध न हो जाय। इन दोनों ममम्याओं का उद्धाने वर्ण और बन्ध-व्यवस्था द्वारा मुक्तान का प्रयत्न किया। ब्राह्मणों के मुख्य कर्तव्य निष्ठा ध्ययन दान-गण्य यजन-याजन क्षत्रियों के विद्याध्ययन संरक्षण युद्धादि दैव्या के कृषि गार्भा तथा वाणिज्य और शूद्रों के मवा और मजदूरी निश्चित कर दिये गये। उम्र समय समाज रथा का बहा एकमात्र उपाय ममजा गया। उम्र निधान में एक लाभ बहू मात्रा कि गारा ममाज युद्ध जयवा राजनीति अथवा व्यापार में सलन हानि में बच गया। जीवन के किमी व्यापार का अनुचित प्रानाय जयवा अग्रहणा न हूँ। गाम्त्र गम्त्र तथा अर्थ का मर्यादाएँ स्थापित हो जाने में राष्ट्र का विकास एक-

मुस्ली और आल्श सक्तीण न हा पाया । दूसरा लाभ यह हुआ कि बशानुगत शिक्षा-दीक्षा होने से प्रत्येक क्षेत्र में काय-कुशलता, उत्तरदायित्व तथा लाभ की वृद्धि हुई । तीसरा लाभ यह हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति का राजगार मिल सका । रोजगार के लिए सघप अथवा बेरोजगारी की वह यातना जो प्रायः अनियन्त्रित विधाना में पायी जाती है बहुत समय तक रकी रही । यद्यपि जनसंख्या की वृद्धि हो जाने से उक्त विधान कमजोर उठा और वष घम का प्रतिपालन दुःसाध्य होता गया, तथापि प्राचीन जादश का सवथा लाभ इस दश में होने न पाया । राजनीतिक सनिक अथवा धन-बल के ऐश्वर्य की वह उपासना, जो जयत्र देखी जाती है भारतीय समाज में विकराक रूप धारण न कर सकी । गरीबी और अभीरी का वषम्य उसमें वह उग्र रूप धारण न कर सका जिमके कारण मनुष्य जातम सम्मान एव आत्मोन्नति का रणा करने में सवथा असमथ हो जाता । एक ऐसा समय अवश्य आया जब समाज में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए ब्रह्म-बल और क्षात्र-बल में सघप हुआ । कुछ उन्ट-पलट हानि के पश्चात् यही निश्चित हुआ कि ब्रह्मबल क्षात्र-बल से अधिक महत्त्वपूर्ण एव श्रेयस्कर है । वश्य इस झगडे में न फँसे यद्यपि उनका झुकाव ब्रह्म-बल की ओर प्रतीत होता था । यह स्मरण रखना चाहिए कि पूर्वी प्रन्शा के क्षत्रिया ने जब समाज में प्रमुख स्थान प्राप्त करना चाहा तब उन्होंने शरन अथवा राजनीति का आशय न लेकर दाशनिक अथवा आध्यात्मिक पान का आशय लिया जिसका सब-व्यापक निर्वाह उनके साधारण वातावरण में दुःसाध्य सा था । उसके विपरीत ब्राह्मणा के सरल और जातिगत कतब्या के वातावरण में वह उतना कठिन न था । फल यह हुआ कि अन्ततोगत्वा क्षत्रिया ने सघप छाड दिया और बदिक् आदम की स्वीकृत-मा कर लिया । इस प्रमग में यह भी स्मरण रखना अच्छा होगा कि समाज-सरक्षण का विषय व्यावहारिक है तथा ऐतिक एव लौकिक जीवन से सम्बद्ध है । हमके विपरीत दशन और आध्यात्मिकता का क्षेत्र सम्बद्ध वयविक अलौकिक एव पारलौकिक है । दाना का अपना अपना स्थान है । उन दोनों का सघप काल्पनिक भल ही न हा किन्तु था तथ्यता से गाय । भारतीय आर्यों के सामाजिक और आध्यात्मिक विचारों की अपनी विशेषता थी । उस व्यवस्था में गृणा के साथ कुछ दोष भी थे । समाज का गद्द और विरोध कर अत्यजा के साथ व्यवहार असन्तोषजनक था । गद्द फा घन आपत्तिकाल में स्वामी ले सकता था । उसका सारा जीवन स्वामी की सेवा में व्यतीत होता था । गद्द के जीवन का मूल्य पगुआ से अधिक न समझा जाता था । उनको न ता बन्धिका शिक्षा दी जाती थी और न अन्यायन का काय ही लिया जाता था ।

उच्च वर्णों का अपमान करने पर गृध्र का कटार गारारित दण्ड दिया जाता था । यदि ब्राह्मण गृध्र का अपमान करता तो उस गृध्र जरमाना मात्र न्ना पन्ना था । द्वितीय गनी ई० पू० से गद्रा के प्रति उन्नरता का चयनर हान लगा । उतरा पालन गिल्यकाय वाणिज्य हा नहा वरन गामन-भाप का भा अधरार मिल गया । उनका भी सस्वार करान की आगा मिल गया । शास्त्रा में उल्लिखित मुनियामा स भी अधिक उन्नरता उनक प्रति लिपाया जान लगी । उपदुका परिपन्नन क भम्माविा कारण म भारत पर विभिन्न विन्सी जातिया का आग्रमन करन यहाँ वन जाना तथा बौद्ध जन आदि धर्मों के सर्वोन्पात्तक उन्नर विचारा का प्रचार और वर्णाश्रम धम की जटिलता में गिधिलता हा जाना आदि थ ।

आर्यों के समाज में ज्या-ज्या अध्वयन-अध्यापन की जीवागिक व्यावसायिक राजनीतिक अथवा शासनिक बद्धि हाती गयी त्या-त्या विषय निगप काय विगप तथा उद्योग और व्यापार विज्ञाप की छाटी-बछी सस्याग वनती गया जिनमें कगा नुगत पद्धति हान के कारण बौगल का बद्धि क साथ रहन-सहन आचार विचार की विगिष्टता वनी । कालान्तर म प्रत्यक वण क अतगत जनक श्रणियाँ उत्पन्न हा गया जिनमें नय प्रकार की वधत्व भावना जाग्रत हुई । अपनी श्रणी क भीतर हा क बवाहिक और सानपान का सम्बध करने लगे और स्वानुकूल नियम तथा उपनियम बनान लग । अनुलोम और प्रतिहाम विवाह क कारण नयी-नयी जातियाँ वनता चला गयी । इन प्रवृत्तिया क मिवा दग प्रदेा एव प्रातीयता का भा उनने आचार विचार पर प्रभाव पन्ता रहा । श्रेणिक तथा मौगालिक कारणा म एक ही वण क अतगत अन्क विभन्न हो गये जिसस जात-पात का भाव वन्ता चला गया यहाँ तन कि उसने समाज में नयी समस्याए उत्पन्न कर दी ।

छटी गनी ई० पू० तक वण-व्यवस्था कापा अव्यवन्धिन-सी हा गयी । ब्राह्मणा का आर्थिक दगा स्रारव हा जाने क कारण तथा यना क प्रति उदासानता बढ जान म ब्राह्मणा का मिगा का आश्रय लना पडा । जा उसका पन दन करत थे उनका विभिन्न प्रकार क व्यवसाया चिक्लिमा ज्यातिप राज्य की नौकरी रद-सचालन हरकारी सिपहगिरी पगुपालन कृपि व्यापार गाना-वजाना आदि का आग्रय लेना पडा । एनी दगा म लगा की नजर म उनका महत्व घट गया । कवल जमजात स्वामिमान की भावना का भरोसा वाकी रहा । उसके विपरीत राज्या के विस्तार के कारण क्षत्रिया की आर्थिक दगा उन्नत हा गयी जिसस उनमें अहम्म यता का अभि वृद्धि टुड । विद्वान और स्व-वणानुमार सत्पाचारी ब्राह्मणा का आन्तर-सम्मान निया

जाता था। कतव्यव्युत्पन्न किन्तु जन्मजात अभिमान वा सुल्लभस्वत्ला उपहास और तिरस्कार किया जाने लगा। जन्मना जाति माननेवाले रसत की शुद्धता और वशानुगत आचार विचार व संरक्षण का महत्त्व दत्ते रह। बौद्ध तथा जन जाति धर्मों के प्रचारक। ने जन्मना जाति व महत्त्व का विगंध किया। उस समय तक वंश और जाति-व्यवस्था की जड़ तनी दढ ही गयी थी कि उसका समाज से उभरने दु साध्य सा था। उनका विगंध सद्धाति दृष्टि से ठीक हा सक्ता था कि तु वह 'यावहारिक' रूप में अधिक सफलता प्राप्त न कर सका। गुण धर्म और स्वभाव की वसूटी मन्ची होने हुए भी विशाल एव निस्तत समाज में सावर्गिक जयवा सावभामिक व्यवहार के लिए अधिक उपयोगी न हा मन्चा। जाति की जन्मना व्यवस्था सरल और अनुपातत व्यावहारिक प्रतीत हुइ। बौद्धा ने स्वयं सवण विवाह के औचित्य का समर्थन किया। मम्मवत जन भी सम जाति विवाह के पक्षपाती थे। भगवद्गीता म घातुव्य की उत्पत्ति दविक मानी गयी ह। जान पटता ह कि वंश व्यवस्था का समाज के ऊपर जारापण नही किया गया, अपितु प्रस्तुत सामाजिक परिस्थितिया औ जावश्यकताओ से उसका स्वामाविक विकास हुआ और शास्त्रकारा ने उसका व्यवस्थित रूप देने का प्रयत्न किया तथा उसकी मनावनानिक तथा समाज-वैज्ञानिक व्याख्या करने की चेष्टाएँ की।

प्राचीन जायों के जाश्रम सिद्धान्त भी विचारणीय है। मनष्य की आयु का सौ वष की मानकर उहान उसे चार बराबर भागा म विभक्त कर दिया था। प्रथम भाग विद्याध्ययन शरीर संगठन तथा विनय एव आचार के अभ्यास के लिए निर्धारित किया गया। द्वितीय में गृहस्थ धर्म का पालन तथा अथ सचय रखा गया, तृतीय म गृहस्थी व दण्टा से हटकर प्रमचितन तथा सयम का सवधन शामिल हुआ। वतुथ म सय प्रकार की षणणाआ का परित्याग करके सब प्रकार के वधना से मुक्त हाकर ब्रह्मज्ञान का साधन और ब्रह्मनुमति का प्रयत्न करत हुए ऐहिक लीला की ममाप्ति रली गयी। आदश की दृष्टि ने जाश्रम धर्म म अनेक गुण ह किन्तु यावहारिक जगत म उमका कहा तक प्रतिपालन हा सवा हागा यह कहना कठिन है। फिर भी उस आत्मा को सामने रखकर यथासाध्य तदनुसार जाचरण करना भी कृच्छ्रन मुद्ध मगलप्रद रहा हागा। वदिक युग के बीतने पर सयास का विधान केवल ब्रह्मणा के लिए रह गया। जागे चलकर वह भी टूट गया। ऐसा प्रतीत हाता है कि तीमर जाश्रम का प्रतिपालन भी यदेष्ट रूप से न हा सका।

छठी शता ई०पू० में जाश्रम के सम्बन्ध में बड़ी जाणेचना और प्रत्यालोचना

हुई। उपनिषद-काल में जाश्रम धर्म का पर्याप्त विकास हुआ किन्तु मूल काल में और भी दृढ़ हो गया। ब्रह्मचर्य तथा वानप्रस्थ जयवा सयाम जाश्रमा के विषय में अधिक भेद न था किन्तु गृहस्थाश्रम के सम्बन्ध में गहरा मतभेद हुआ। वल्कि मतानुयायी गृहस्थ धर्म को समाज का भ्रष्टाण्ड अथवा आधारशिला मानते थे। वे लोक-संग्रह-रतिक जीवन तथा अथ धर्म एवं काम के स्वामाविक साधन की उमें सबग्राह्य, सरल और मुगम संस्था समचत थे। उनकी गृह धारणा थी कि गृहस्थ धर्म का उल्लंघन होने से साधारण जना की जतप्त वामनाए समाज के लिए अहितकर हागी, इसके विपरीत बौद्ध धारणा के अनुसार गृहस्थ जीवन जाध्यात्मिक साधना का बाधक ही नहा वरन घातक समझा गया। वल्कि मत के लोग गृहस्थ जीवन क योगभेम का साधक न कि बाधक मानते थे। उसा के द्वारा वे पित ऋण अथवा समाज के प्रति अपने वगानुगत कृत्य की पूर्ति मानते थे। उन कनव्या को छाडकर मनुष्या अथवा म्रिया का समाज से लाभ उठाने की चेष्टा जनचित ही नही वरन नितनीय समझी जाती थी। जाध्यात्मिक जीवन की बौद्ध अथवा जन कल्पना तथा व्यारया का वे यन्ि भ्रमात्मक नही ता एकागी अवश्य कहत थ। स्वामाविक और लावापदागी होने के कारण यद्यपि गृहस्थ जीवन का कोई विशप हानि न होने पायी तथापि समाज में यतिया मुनिया मिश्रुका मिश्रुणिया क सध वनते चल गये जिससे बढिक सामाजिक यवस्था के आधिक एक नतिक पक्ष को थोडी-बहुत हानि होनी रही जिमन जाग चलकर जवाछनीय रूप धारण कर लिया।

यद्यपि वल्कि काल में भी पुत्री का स्थान पुन की अपक्षा निम्न था तथापि वह सवया जवाउनाय नही समथी जाती थी। वल्कि युग में पुत्र और पुत्री के धार्मिक एवं सामाजिक अन्िकाग में बाड मारी भन् न था। शिक्षा तथा धार्मिक कृत्या में दाना के समान अधिकार थे। वह स्वयवर मा कर सकती थी। पुत्र के जमाव में पुत्री का साध्याधिकार भी प्राप्त हो सकता था। उस दा हजार चाप्ती के पणा तक अपना धन रखन का अधिकार था। उमें वह अपना पुत्री को द सकती थी पुन का नहा। बात् त्रिवाह का उमें यग में गायन् हा कहा कोई उगाहरण मिल सक क्याकि मागण्णा यौवन आन पर ही विवाह हाता था। बौद्ध और जन सिद्धात में बवाहिक जीवन विगपकर म्त्री जाध्यात्मिकता क लिए भयकर बाधा है। उनक न् त्रिवाग में म्रिया क भन्त्व का जाधान पट्टवा हागा यद्यपि उनका साधारण म्रियति तथा अधिकारा का बाड विगप हानि नहा हुई। म्रिया की गिणा-दीक्षा वमादन चन्ती रहा। वल्कि वाद्रमय का छाकर व जय विपया का जययन कर

तराव १ थी जितना रि वाट वा हा गयी। विधवा वा विवाह अच्छा रहा सम्राट
 ताना था फिर भा उस इस बात की स्वतंत्रता था रि यदि वं चां ता पुनर्विवाह
 कर ल जयवा सता व जमाव म ताम-वताम वष की नियमा गजना वा अनुमति
 कर सजातीय उच्चश्रेणी व उपयुक्त पुरुष स नियाग द्वारा गमान उत्पन्न कर ल।
 यह प्रया धार धीर (६००-७०० पू० वं वा) बंद हा गया। मन भा उमक निराधी
 ५। इसक विपरात पुनर्विवाह वा पण प्रबल हा गया। कौटिल्य न पनि-पत्नी व
 भावा तथा विचारा व वषम्य म यायविभाग स अनुमति लकर अय नियाह कर लन
 वा मत प्रकट निया ह। मनु न विसा निगा दसा म पति व जातिन रहा पर भी
 पसरा विवाह कर लन की अनुमति दी ह। उन स्थितिवा म स्त्रा वा छांकर चला
 जाना नपमनत्व तथा पतित हा जाना विनापन विचारणाय ह। उपविचार वा दाप
 स्थापित हाने पर भा पुनर्विवाह की जाणा वा उल्लस मिलता है। उपयुक्त मत वा
 विराष भी जारम्भ ही स हाना रहा। उसका वष मानत हुए भा उमक निरुद्ध मत
 वन्ता गया यहा तक रि इसा वा द्वितीय गवा तक पुनर्विवाह वा निषेध हो गया।
 एक पत्नी तथा एक-यतिग्रतत्व हा सबवा उचित और श्रमकर मान निया गया।
 ब्रह्मि काल म भी रामानी गुप्त प्रम तथा उमक अवाञ्छित परिणामा वा उल्लस
 मिलता है। जाचार भ्रष्टता व उन्नाहरण पाय जात ह फिर भा उसका प्रावय
 ननी प्रतीत हाता। किन्तु नगरो व्यवमाया तथा सम्पत्ति के वधन के साथ एक-
 पत्नीधन की व्यवस्था व कारण विवाहतर सम्बन्ध की बढि हान लगी। यह दाप
 प्राय नगर व सम्पन्न समाज अथवा कलाबारा व समदाय म ही अधिकतर सामित
 रहा। साधारण जयवा मध्य श्रेणी के लागे में उसका विशप प्रभाव न पडा।
 परदा

बल्कि तथा सूनकाल तक स्त्रिया व लिए परदा वा प्रचलन न था विनय
 मयाण तथा शील की रक्षा करत हुए व पुरपा क समाज म विना मुह ढँके केवल
 जा-जा ही नहा वरन गम्भीर विषया पर विचार विनिमय तथा शास्त्राथ करता और
 न्यायालया म अपन अधिकारा के लिए लडती भी थी। बौद्ध जन तथा महाकाव्य-काल
 म उच्च श्रेणी व लागे म कही-कही कुछ परदे वा जारम्भ हुआ तथापि विवाह यन
 स्वयवर जयवा सक्तापन स्थिति म स्त्रियाँ जिना मुखावरण के आती जाती थी।
 ब्रह्मि और सून युग की तरह स्त्रिया वा पुरुषा स मिलन जुलने की स्वतंत्रता
 अनिजात बुरा म कम हाती जाती थी। सबसाधारण समाज में रोकटोक नगण्य-सी

रही। फिर भी स्त्रियाँ के सम्पन्न या आध्यात्मिक और धार्मिक विकास में मयबर बाधा पन्नने का विचार निवृत्तिमार्गीय सम्प्रदाया में दृढ़ता बढा कि उहाने लागा की उनसे बचने जीर पथक रहने का जादालन-ना खडा कर दिया। सम्भव ह कि वह धारणा नागरिक वातावरण की प्रतिक्रिया हा। जा कुठ भी हो, जमिजात वर्ग की इस नयी प्रवृत्ति तथा उपयुक्त विचारा के फलने का प्रभाव पुष्पा और स्त्रियाँ के समाज को धीरे धीरे पथक करने लागा। विदेगिया के आनमणा से उम प्रवृत्ति का अधिक बग प्राप्त हुआ हागा, जो आगे चलकर परदा प्रथा के रूप में गढ हो गयी।

वैदिक युग के उत्तरकाल में सस्कारा की भली भांति व्यवस्था कर दी गयी। आर्या के रिवाजा तथा आदर्शों के अनुकूल षोडश सस्कारा का विधान निश्चित कर दिया गया। बच्च के गम में आत ही पहला सस्कार जारम्भ हा जाता जीर मरने पर अल्पेष्टि सस्कार होता था। १६ मुख्य सस्कारा में से विचारम्भ या यज्ञोपवीत तथा विवाह-सस्कार बडे महत्त्व के माने जाते थे। बहु विवाह का भी प्रचलन गुरु हो गया था। विवाह की आयु कम भी होनी गयी यहा तक कि आठ बप की अवस्था में भी विवाह कर देना अनुचित न रहा। विधवा विवाह बुरा माना जाने लागा, यहा तक कि गुप्ता के यग में उच्च वर्ण के लोगा से उसका चलन उठ ही गया। स्त्री के अधिकारा तथा शिक्षा की उन्नति के बदले अवनति होती चली गयी। बडे लाग तो लडकियाँ का कुछ पना लिखा जीर मगीत का ज्ञान करा देते थे किन्तु साधारण लोगा में बाल विवाह की शक्ति के साथ लडकियाँ की शिक्षा का हास होता चला गया। स्वयं वृद्ध भगवान स्त्रियाँ का मध में शामिल होना अनुचित समझते थे। भोग काल में कुछ जातियाँ में सती प्रथा अधिक प्रचलित थी। किन्तु गुप्त काल में मती हो जाना बडे महत्त्व, पुण्य और यश का काम माना जाने लागा।

वेप-भूषा

आर्यों का ग्रीका तथा गमना की तरह बहुत बपडे पहनने का शौक न था। साधारणतः वे धोती पहनते और शरीर के ऊपरी भाग को चादर से आवश्यकता पडने पर ढक लेते थे। कमी किणोप जबमर पर काम की हुइ सदरी पहन लेत थे और मिर पर पगडी साध लेत थे। स्त्रियाँ की भी वसी ही पाशाक थी। सदगी के म्याँ पर वे चोली पहनती थी। उनके बपडे ऊनी, रेशमी और मूती हात थे। बान-काई चमडे का विशेषकर मग जधवा व्याघ्र चम का भी प्रयोग करत थे। कुछ नाग

अंगुर से बाउ नरगाय कुछ गढ़ा और लम्ब बाउ रगा थ । बाउ वा साराई और गजावट वा दोर पुण्या और सिंगवा गिन्या वा था । आम्रपत्र मांजिया लर रगा थ, दावा वा ही गिन थ । थ वा ॥ म कृष्ण वा बाजी मर म नर गा हार, हापा में जाग वा बाजुमर कर्ण पर मर गा कगा व लम्ब पर गात वा मांजिया व हार तथा उगिन्या म अरगा गगा थ । गगा वगमगा पाइन हर पर व माय गुण युग तक वगगा रग । यद्यपि कृष्ण काल में रीरना रग व पाउरगापा गगा आदि वा राजाओ में प्रचलत हात रगा ।

जामाद प्रमा

पूर्ववर्ति मग म आसों वा घुडोट रपण सगात गृय गात-वजान जीर जगा रलन वा दोर था । ज्या-ज्या उनका गति तथा मग्गति वा बुद्धि हाता गया त्या-त्या उनका आमा प्रमा व गाथा भी बढ़ । अरु-अरु व अभिनव नर तथा बहुभुषिता द्वारा गिन्या जान रग । बीरा की कृतिवा वा मनाजनक वगा जनक प्रकार वा बालिया की नाउ, भाट एव चारणा द्वारा स्वामी व मगापान मगरिया वे रग हाथिया और गाता व युद्ध मल्लयुद्ध मुष्टियुद्ध गणपद्ध जमियद्ध भार फेंवना, धनुषरा की प्रतिद्विद्धिता आदि वा प्रचलन हाता था । गिरार वा गीर तीव्रतर हा गया । छन श्रीटा वा व्यगन रतना बडा रि उमर लिए छोट वर छनगह गहा म बनाय गय, जिनका नियत्रण गसतन वा अपने हाथ में रगा पडा । उमर राज्य वा आमना भा हाती थी । वन विहार यात्राएँ, उलगव, मउ अनर प्रकार और बड पमान व हात रग । तल फुल्ल सुगंधित पत्रासों तथा माने-पीन की चीजा वा मा गीर वर गया । नागरिका को हिरन गाह सुअर मार, कदतर जोर मुग जाति तथा मछली वा मास खाने जीर गराव पीने वा चमना रग गया जिमम जीरा की कौन कहु म्निषु द्वाह्यण जीर श्रमण तक गामिन् हा गये । भाज नालया तथा दूकाना की जहा हर प्रकार का कच्चा-भक्ता तयार राना मिठायाँ आदि बिकती थी भरमार हाती चगी जाता था । कई प्रकार की गरान बिकती था जीर भट्टिया सुली था जिनका नियत्रण करना गसतन ने आवश्यक समगा । गणिकाआ जीर वस्याआ की सरया जीर उनका व्यापार भी रतना वग कि गसतन वा उन पर निगरानी रखन जीर उनसे सरकारी कर रन व लिए एक अध्याय नियुक्त करना पगा । गणिकाआ का स्तर काफी उचा था । व प्राय शिात मगीत, चिन आदि विविध कलाआ में प्रवाण हाती थी । उनकी गोष्ठी म कलाकार और

विद्वान् भी जात और साहित्यिक, दार्शनिक तथा कला-सम्बन्धी विचार का बड़ा विनिमय करने थे। बाज-बाज ऐसी गणिकाएँ होती थीं जो एक पुष्पजता रहती थीं। गणिकाएँ जार बंध्याएँ जाम्मी करने, सदिग्ध व्यक्तियों का बहकाकर पयभष्ट जयवा विनष्ट करते तथा राजा रईमा और बड़े पदाधिकारियों की सत्ता-मुश्रूपादि करने के लिए नौकर रख ली जाती थीं। अपनी स्थिति जार साधना के अनुसार कम जयवा अधिक सख्या में गण उन्हें निष्पन्न कर रत थे। उनका यहाँ तक आवश्यकता समझी जाती थी कि वे पनाव सात और युद्ध तक में उपस्थित रहती थीं। बाज-बाज गणि वाए अपने व्यापार में इनकी सफल हुई कि उनकी गिनती घनाया में का जाती थी। उनकी सवा म पाँच सौ दासिया तक का उल्लेख मिलता है। उनकी कला प्रियता मन्मात्र थी। उन्हीं की प्रेरणा से कामगामन का गम्भीर एवं उच्चतम अध्ययन आर निरूपण हुआ जिमना समता राम वाल भी न कर सके।

नगरा के त्रिलाममय जावन का शास्त्रकारा तथा स्मृतिया के रचयिताओं ने काफी विगध किया हुआ बंध्या कम और बंध्या गमन का ता घार विगध किया है। ग्रामवासा भी नागरिक जीवन का कुत्सित और घणित समझते थे। यह स्मरण रखना चाहिए कि मध्ययुग के जारम्भ के पूर्व अर्थात् प्राचीन काल में मदिना में विगपत देवाय्या म, देव-दानिया का प्रवेश नहीं हुआ था।

शिक्षा दीक्षा

ज्यों में बल्कि काल से ही विद्या तथा विनय की जार विशेष अनुराग था। विद्वान् सदाचारी तथा गुणा का वे बड़ा सम्मान करते थे। शिक्षित ममुनाय या वग का विगप जादर हाता था। विद्या का ही बड़े अमत्त्व का साधन मानते थे। प्रथम स्नान वर्णों का अपने-अपने वर्णानुसार शिक्षा दीक्षा प्राप्त करने का अनुगामन था और उसने लिए आवश्यक साधन भी प्रस्तुत थे। विगपन जाचाय अपने अपने आधमा तथा आरामा में शिक्षा दते थे। गुग्बुला म यम नियम तथा मरल जीवन-चर्या के साथ बारह म जठारह वर्षा तक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे। शिक्षा समाप्त होने पर लाग अपने वर्णाचिन कार्यों में लग जात थे। काशी प्रतिष्ठान पाटलिपुन तथा तमगिला जादि में उच्चतम शिक्षा मिल सकती थी। म्गिया का भी शिक्षा प्राप्त करने में काइ अनुविधा न थी। वे भी विश्वमरा जपाला जार घापा के समान घुरघर विट्पी हा भक्ती थी। भारतीय जन बड़ा का जपोम्पय और ममन्त ज्ञान विगान का भडार मानते थे। बटा के सिवा बदागा का भी शिक्षण हाता था।

उक्त अन्तर्गत धारणा कि ॥ (उपरोक्त) काव्य (कवितान्) विभिन्न विभिन्न
 छन्दो ज्योतिष धर्मशास्त्र धर्मशास्त्र आदि म । साधारणतः इन सभी विभागों का उद्देश्य
 समस्त ता जापानियों में जहाँ उन्नति हुई वहीं जाया ही नहीं हुई जाया । उक्त
 विषया के विषय विभिन्न-विभिन्न तथा अन्य कवितान् का भी कि ॥ १७ जाया था । उक्त
 धर्मशास्त्र म दत्ता तथा आप्तात्म विद्या का प्रसार था । एतत् साग सामान्य
 यथा साय कवितान् आदि कवितान् का विषय यो ॥ १८ आदि के भी आदि कवितान्
 रत मय । इमम् विद्या मोक्षशास्त्र म विद्या ज्योतिषशास्त्र विभिन्नशास्त्र तथा सामान्य
 पर शास्त्राध्य विचार शास्त्रशास्त्र । शास्त्रिक म शास्त्र म भा मोक्ष-शुद्धि का म ज्ञा उन्नति
 आरम्भ हुई यह मन्त्र काल तक उक्त विद्यार पर पहुँचा नहीं । काव्य कथा
 साहित्य नाटक पुराण भी अमृतपुर उन्नति हुई । रामायण महाभारत पुराण
 अपन दशक म मगार के साहित्य म अपना जगत् बना रखा । मोक्षशास्त्र के शास्त्र आदि
 राजाशा ॥ मन्त्र और शास्त्र का संवर्धन किया । शास्त्र नामक शास्त्र न शास्त्र के
 साया साप्तमी नामक शास्त्र म मन्त्र म शास्त्र मुनिगण काय का रचना का । उक्त
 समा के साय-वर्षित गुणाद्य न बहुरथा नामक ग्रन्थ म मन्त्र शास्त्र दशक कथा
 लिखी जिनका अनुकरण बहुत किया तथा किया गया । पानिय पर बनारिया का
 काया प्रभाव पडा । हाडा चन्द्र रामन गिद्वान और पौण्ड्र गिद्वाना का उक्त
 उक्त म हुआ । बनिष्क के समरागीन अवस्थाप का शास्त्र प्रचरण जो अथा का
 नाटक संवत्सपत्त्या मन्त्र नाटक माना जाता है । अवस्थाप का प्रभाव वाणिज्य
 पर भी पया । भाग न जनक नाटक रच । भाग का मगान्त्र वाणिज्य म भा किया ।
 मन्त्रनाटक म मन्त्र भाषा और साहित्य न बहुत उन्नति की । उक्त समय वाणिज्य
 न अद्वितीय प्रतिभा तथा का का प्रमाण अपन मुनिगण नाटक जमिपान पातुन्ना
 तथा मेघदूत कुमारमव रघुका नामक काव्य ग्रन्थों में किया । एतत् प्रसिद्ध
 नाटककार शक हूण जिनका मन्त्रवटिक नामक नाटक प्रख्यात है । मुनिगण
 की वासवत्ता प्रसिद्ध ग्रन्थ है । विद्याशास्त्र का मुद्राराक्षस अपन युग का एक
 मौलिक एवं अद्वितीय राजनैतिक नाटक है साय दगानास्य पर ईश्वर वृष्ण का
 सायवार्त्तिका युग प्रवक्तक ग्रन्थ माना जाता है । उक्त विद्या विद्यानाम वात्स्यायन
 प्रगस्तपाद शबर जादि जनक दशना के भाष्यकार अपना विविष्ट स्थान रखन
 ह । बौद्धों में जसम वसुधु और जना म चन्द्रमणि तथा सिद्धसन आदि प्रतिभा
 गाली विद्वान ग्रन्थ लेखक हुए । कथा साहित्य म भारतवर्ष का यदि जगान्त्र भी
 कहा जाय ता अनुचित न होगा । साय एवं टीकाकार भी उसका समान तत्कालीन

इतिहास में मिलना कठिन है। संस्कृत भाषा तथा साहित्य की जैसी उन्नति हमारे देश में हुई वसी यूनान को छोड़कर शायद कहीं नहीं हुई। इतिहास की ओर हमारे पूंज उदासीन रह। उनकी प्रवृत्ति पुराणा की ओर झुकी रही। उसके निवा जन-साधारण की भाषा, जमे पाली में भा बौद्धों एव जना ने विशाल साहित्य का रचना की। जातकमाला साहित्य का एक अन्तीय रत्न है। राजनीति में चाणक्य का अथनाम्न बचक में चरक एव सुश्रुत जति महत्वपूर्ण ग्रंथ ह। सुश्रुत में एक सौ बक्कीम जीजाग का उल्लेख ह जिनका प्रयोग शल्य चिकित्सा में हाता था। फली, हनिया, गम में भर हुए गिगुआ का निकालने के लिए जापरेगन हाता था।

कला-बौशल

स्थापत्य तथा शिल्पकला की उन्नति भी मीयकालीन भारत में अच्छी थी। कुछ लोगा का कहना है कि ईरानिया तथा यूनानिया का उसके विकास पर विशप प्रभाव पडा। साची तथा भरहुन की शिल्प रचना गुफाआ व म्दिर और चत्प उीसा से पश्चिमी भारत तक इधर-उधर बिसरे अब तक दक्षका का आश्चर्याबिन एव कुतूहली बनाते ह। अजन्ता की गुफाआ व भित्ति चित्रा की प्रशसा आज भी हो रही है। एलारा और वाघ की गुफाआ की रचनाएँ, देवगढ व म्दिर, वाघ गया का महाबोधि म्दिर तत्कालीन स्थापत्य कला के सुदर प्रमाण हैं। अगाक के स्तम्मा की सफाई, पालिग तथा उनके शीप पर बनी पगुआ की मूर्तिया फारस तथा पश्चिमी एगिया की कला का भी लज्जित करनेवाली है। मूर्तिकला में यूनानी शली, जमे साधार शैली भी कहने ह, के अनुसार बनायी गयी मयमूर्तिया के निवा अमरावती तथा मथुरा की भारतीय शली की मूर्तिया एशिया के अय देशा की कलाआ से उत्तम गिना जाती है। भाव प्रदर्शन तथा अगमगिमा में वे यूनान एव रोम की कला में भी निमी किसी जग में आगे बढा हुई है। अलौकिक कल्पनाओं का उत्कीण करने की जिम योग्यता का प्रदर्शन भारत में हुआ वसा शायद ही कहा हुआ ह। तावे तथा गह का भी स्तुत्य काम यहा हाता था। दिल्ली का लोट का स्तम्भ उसके बाद भी कई शतिया तक ससार में कहा भी न बन सका। एक प्रमुख विद्वान का कथन है कि कला के क्षेत्रा में त्रिस वचिभ्य तथा प्रतिभा का प्रदर्शन भारत में हुआ वसा उन युगा में मू मडल पर अग्र्य कही भी नहीं हुआ। भारत की कलाआ तथा धर्म एव दर्शननाम्न का प्रभाव फारस से लेकर चीन, जापान तथा सीलोन प्रायद्वीप और बादाज तक शतिया

ततः कृता कृता गता । वागोर्गुरु तथा अगतागतात् कृतिरिति तासां कृतिरिति मात्तोः
 गता क ही प्रगात् ।

धम

भारतीय आद्य ऋषि आरम्भ म हा सम्राज्य थ । व पाचत्त मतातुमार
 मयत नृनिधा क सप्त है । य नृनिधी प्राय यज्ञ तथा अत तम अगतात् व
 पद्मी या गाया जाती था । अत यज्ञ का सप्त धर्म आद्य ऋषि त गा
 मन्त्र यज्ञ थ जीर न गयवा नृनिधुजा हा वरुन थ । य अन्वय - वा गति
 अथवा प्राणित गतिना वा अनप्राणित ममता थ ओर उनका त्त वगा क गित
 यत् एव नृनिधी वरुन थ । उनका त्रिभाग था कि अथात्रा अथवा अथिया का
 प्रगात् वरुन स महिा तथा पाण्णित वामताभा ता पूरि हा जाता है । उन
 अमन्तुष्ट हान म जाव वाधाए पडता है ओर सपत्ता अथाव्य हा जाता है । उन
 प्रमुन स्वता अत्र अग्नि मन्त्रा प्रजापति अत्र तथा त्रिण आग्नि थ स्वियां था
 पथ्वी अग्नि उपा मरुत्वती अग्नि । गाव हा उनको व भा धारणा था कि समग
 गतिना का अनुप्राणित तथा सचाग्नि वरुन वाता । एव मगन्तु गति है जा अन्तर्
 जनन तथा जवष्य है । प्रयव वायुमिद्धि क गित यत् वी आवयताता है वाट व
 छाटा हा अधरा बडा । साधारण गहम्य वा पांच मनायन वरुन का जाग्ग था । व
 थे ब्रह्मयन दवयन मितृयन् मृतयन तथा अनिदियज्ञ । ए यत् वमी-वभा मनाता त
 चत्त रहते थ जिनम अपार सामथा अ्य था मय और अपाजन वा आवयता
 परती थी । श्रोत यत् म राजा ओर मामल मम गान वरुन थ । मनारथ त्रिण
 क लिए तस दीघाय पुत्र-वामता वर्षा जयना जाधिगत्य आग्नि क गित भा यत् त्रिय
 जात थ । जात्रियत् जीर स्वराय क लिए वात्रयय राजगूय और अयमय यज्ञ का
 विधान था । उरप्रक्त मन्त्रिस्त विवरण स यत् स्पष्ट है त्रि-आद्य तगा क यत् वव
 व्यक्ति क लिए ही नगी वरुन पितरा मनय्या त्रिवे राय साम्राज्य क त्रिया क
 निमित्त भा त्रिय जात थ । कुछ यत्ता म पगुवध भी वाट म गान लया था । वन्त्रि
 काल क वाद यज्ञा वी जार स कुछ लोगा का जी उन्नत लया । यत्ता डारा निद्धि
 मुख शान्ति तथा जमरत्व वा प्राप्त वरुना उनका भ्रममूलक जान पधन लया । कुछ
 ने यत्ता का प्रतावात्मन मान कर उसवे गट तात्पर्य का मममान वी नष्ठा वी ।
 कुछ न उनका नि मकाच हाकर यत् धापित कर लिया । यज्ञा क वन्त्र उहा
 मन बुद्धि तथा बाया वी बुद्धि का ही दुःख निवर्तित और मुक्ति का मानन निश्चिन्

किया । उनके द्वारा सबभूतात्मा का साक्षात्कार नहा ता अनुभव प्राप्त करना ही अन्तिम ध्येय आर जमरत्नप्रद बनाया गया । उनके अनुसार जीव आत्मा ब्रह्म, इत्यादि का ज्ञान हाने ही माग हा जाता है । इही विषया पर उपनिषदा में गभीर विचार पाया जाता है ।

१ जनधम के मुप्रमिद्ध जिन' बधमान का जम जात्रिक कुल क प्रयान सिद्धाथ की लिच्छवी कुत्र की त्रिगालीदवी क गम स हुआ (५४० ई० पू०) । विवाह हा जाने और एव पुत्र का जम देने पर उनका चित्त सामागिक बभव विलाग म न लगा । अन्ततागत्वा उहाने तीम वष की आयु म बराग्य रकर निद्रथ मन प्रहण कर िया और जन धम के मिद्धान्ता का प्रचार करना आरम्भ कर िया । बराग्य ऐन क तेरह वष अनतर व अहन्त एव जिन की मिद्दावस्था का प्राप्त हुए । अनुमानत पावा नगर में उनका दहावमान (४६८ ई० पू०) हुआ ।

२ हिमालय की तराई म गात्र्या का एव ठाटा मा गण राज्यथा जिसकी राज घानी कपिलवन्तु थी । वहाँ के गणमुग्य राजा गुद्धाथन की महारानी महामाया ने लुम्बिनी में एव बालक का जम िया, जिसका नामकरण मिद्धाथ हुआ (८८६ ई० पू०) और जिसका पालन मौसी गौतमी द्वारा हाने के कारण गौतम उपनाम निर्धा रित हुआ । बाल्यकाल म ही उनकी प्रवर्ति अतमशी थी । यद्यपि उनका विवाह राजकुमारी यगाधरा म हुआ था और उसस एव पुत्र भी उत्पन्न हुआ, तथापि उनका चित्त निवर्त्तिमाग स न हटा । अन्तनागत्वा उहाने गृह त्याग (महाभिनिष्क्रमण) कर विरक्त रूप से सत्य की ग्राज की । पनीम वष की आयु म बोधिवृष के नीचे उनचास िना के अनवरत ध्यान तथा सगान ने उनका मत्य सिद्धात प्राप्त हुआ । तदनतर व अपने मिद्धाना का प्रचार करत रह । उनका विगिष्ट कायभेन पूर्वी उत्तरप्रदेग, तथा मगध रहा । जम्मी वष की आयु म पावा म उनका परिनिवाण हा गया । उनक बाद उनकी म्यापित मिक्षु सस्था, सघ, उनका काय करती रही ।

३ श्री मन्गरीर स्वामी क गामाल मन्का-भुन नामक एक सद्योगी ने मत विभिन्नता क कारण उनका साथ छोड कर जाजीविक नामक अपना सप्रदाय अलग स्थापित किया । उनका ज्वावमान ४८४ ई० पू० म हुआ । गौतमबुद्ध तथा महाग्रीरजिन राजवशी थे । किन्तु गामाल का जम साधारण वग म हुआ था ।

यह विचारणीय है कि उपयुक्त तीना मता क प्रचारका का जम्भुदय एव काय-

धन पूर्वो उत्तरप्रान्त मगध और समवन आगे भी रहा हा । समय है कि उन क्षत्र
 म एस जायतेर लाग़ा का प्राचाय हा जिन पर बन्विक घम का उस समय तक
 अत्रिक प्रभाव न रहा हा ।

बौद्ध घम

बौद्ध घम का सिद्धान्त अध्यात्ममूलक न होकर मनावचानिकता पर आश्रित
 था । माणुपिन जीवन का वह मूलत दुःसमय मान कर चलता है । असतोप वदना
 दुःग और तज्जनित यातनाएँ मवव्यापक और जीवन स सम्बद्ध ह । उन सज का
 मरु कारण लप्णा ह जो जहन्ता अथवा भ्रमात्मक आत्मा या जीव की सत्ता म
 विवाग करन म उत्पन्न हानती है । आत्मा का असत्यता समय उन स लुप्णा का स्रोत
 वरु हा जाना है और लप्णा क अभाव में दुःग छिन्न मिन्न हाकर सत्ताहीन हा
 जाना है । वस्तुन आत्मा की वाइ सत्ता नही बह बचल कपाल-कल्पना है । इती
 कारण बौद्ध मन का जनात्मना बहा गया है । उपयवन ज्ञान तमी प्राप्त हाता है जब
 कारण दक्षि मय्यन मवत्व सम्यक वाक मय्यक कम सम्यन जीविका सम्यक
 मय्यन दक्षि मय्यन मवत्व सम्यक वाक मय्यक कम सम्यन जीविका सम्यक
 प्रयन मय्यक ममनि और मय्यन चिन्तन अथवा गमाधि का अवलम्बन बिया जाय ।
 जपान अथवा मत्य गान क अभाव म कल्पना निजत्व नाम रुप छ एद्रिक तत्व
 गमा भावना लप्णा बचन व्यनित्व पुनजम और दुःस जाल प्रमग प्रकट
 हान रहन ह । मसार दुःसमय और अनित्य एव धाणिक है । न जीवात्मा और न
 त्रिनात्मा अथवा परमात्मा की वाई सत्ता है ससति क प्रनाह स निनृत हा जाना
 हा निनाज अथवा माण है त्रिमयी प्राप्ति जीवन काल में भी हा सकती है ।
 मय्य क उतरालन बह परिनिवाण हा जाना है ।

जैन घम

जैन सिद्धान्त क अनुसार जगत् अनादि और अनन्त है । उसका स्रष्टा वाई
 नग । मसार चर निर चरता रहता है यदपि उगमें उन्नति (उत्थपण) तथा अवनति
 (अवगण) हाता रहता है । मसार का व्यापार जाव और अत्राव में आकाश काल
 र्णित (धम) जगति (अपम) जार मून्य्य (पुण्य) प्रत्येक पनाथ म विद्यमान
 रहता है । सिन्धु मोर्षि आररणा म रर जान क कारण उस पर मगीतता आ
 जता है । यर द्वा कर्मों क पत्र क अनुसार हाती है । इमा कारण जाव कर्मानुसार
 पुनरम जगत् आररणमन क पारर में पगा रहता है । उगम छत्रकार तय मि

सकता है। जत्र जन्म तथा कर्मों का क्षय कर दिया जाय। फिर जीव उसके बन्धन म नही पडता। समय, तप द्वारा कर्मों के जावरणा स मुक्त हाने पर जीव अपने शुद्ध स्वरूप को प्राप्त हाकर सनार स ऊपर उठकर उच्चतम स्वर्ग का भी अतिनमण कर अक्षय आनन्द में प्रतिष्ठित हो जाता है। उसी स्थिति को निर्वाण कहते हैं। वहा ईश्वरत्व और सवगता प्राप्त हानी है।

आजीवको के मत

उनके सिद्धान्त के अनुसार नियति के विधान से ही सत्तार चत्र चल रहा है। उमकी गति अनिवाय और अटल है। नियति अमर किन्तु अनादि एव सवग्राही तत्व है जिसके व्यापार का रोकना दुसाध्य ही नही वरन नितात असभव है। मनुष्य ही नही सारा विश्व ही उसका विलीना है। जप, तप, आचार, विचार, यम, नियम आदि नियति की गति म कोई फेर फार नही कर सवन। मनुष्य जो कुछ अच्छा या बुरा करता है वह भव नियति की प्रेरणा से ही। यह प्रेरणा ही सब का कठ पुनली की तरह नचाती है। अत पुष्पाथ अथवा शुभागुम का कोई प्रस्न ही नही उठता और नियति क प्रवाह को सतोषपूर्वक सहन करने क शिवा कोई अन्य उपाय नही।

कुछ विचारक तो यहा तक कहने लगे कि वेद ही नही वरन स्वर्ग, जीव, आत्मा ब्रह्म ईश्वर कम आचार शाम्त्र, मोक्ष, निवाण आदि की कल्पनाएँ यथ भ्रमात्मक और सवथा अगत्य हैं। सत्य तो यह है कि जब तक जीवन रह तब तक विधि निषध का चक्कर छोड कर जिस प्रकार वन पडे सुग और मौज तथा आनन्द उठाने में तूकना न चाहिए। ऐंद्रिक, मानसिक सब प्रकार के सुग सत्य ह और जीवन की सफलता उनक अधिकाधिक उपभाग मे ही समझना चाहिए। ऐसा प्रतीत हाता है कि इस मत की भारतवासिया ने जवहलना की और उस उपहासपूर्वक उडा लिया।

उपयुक्त मता पर विचार करन से यह प्रतीत हाता है कि छठी और पाचवी शती (ई० पू०)में प्राचीन धारणाआ और रुद्धिया के प्रति असतोष ही नही, वरन् अविश्वास-सा हो चला था। समग्र है कि नत्कालीन सामाजिक राजनीतिक एव आर्थिक परिस्थितिया का वातावरण लागा में ऐहिक और लौकिक जीवन क प्रति उदासीनता एव अमताप का मवधन कर रहा *। सरल और स्वामाविक ग्रामीण जीवन छोटे-छोटे राज्या की स्वतंत्रता नगरी की स्वायपरायणता अनाचार और विलासिता ग्राह्यणा और क्षत्रिया के पतन, अनार्यों और शद्रा के अह्मुदय, वरा की वृद्धि आदि ने लोगा

का जीवन का प्रति उगाया कर दिया है। समस्त है उगा वारणा स बद्ध गदावीर तथा अधिकांश अन्य चिन्तन नगरा म सिपायनया उगा दा और मध्याए स्थापित करत किरत थ। एक मिधा नदान आगालना का सिपाय पाय 17 पूर्वी उत्तर-प्राय मगव जाति म हा साधारणत समित गा रहा। नवीन जालागना का क्षमता तथा तीव्रता का माच कर गगनाग मीय तथा नर वर 17 प्रायमान साधनाय स्थापना न बौद्ध जीव जन मता का अपन लालन-पादन तथा मरण म गता उचित समया है। उस नीति म उनका एक लाभ ना य हासका नि उनका एक ममताय का महायता प्राप्त जा वलिक यग व राजाजा वा ब्राह्मणा म सिपाय करना था। दूसरा लाभ यह हुआ कि नय मता का प्रचार करने वा नय साधनाय जयवा राया व विरुद्ध जागलन न उगत थ अपितु उनका आगीवा दत रहत थ। तामरा लाभ यह हुआ कि आर्यों की ह्मनाय जातिवादिता व निराकरण व साथ हा साथ उनम प्रचलित यान्त्रि पर जा राज्य का धन व्यय हाता था उनम छुकारा मिल गया। समस्त है कि चतुर नाति यह भा जानत हा नि नय धर्मो व सिद्धान्त एस ह जा सवसाधारण में शब्दा नरु ही उत्पन्न कर निनु मानवीन दुबलताभा व कारण यदहार म सक्रिय रूप म त जा सकय। लाभ का ध्यान एहिव समस्याभा स हटाकर पारशीक विज्ञान की जार जुका देन की क्षमता उन शान्तिवागी मता म पायी गयी जिसका लाभ राजनीतिक और व्यापारिक समुदाय का जनायास मिल मन्ता था।

जीपनिपत्तिक जन तथा बाद्ध मता म अनक समानताए ह। उगाहरणाथ ताना त्याग वमफल मुक्ति मन वचन जीर वम की सत्यता आचार विचार की गद्धता यम नियम तथा यनाधिक अहिंसा म विस्वास रगत ह। किन्तु उनकी परिमापात्रा तथा विषया व महत्व वितरण म थाडा बहुत भू है। उगाहरण व लिए जन त्याग तप चान तथा अहिंसा पर अत्यधिक जार दत ह। बौद्ध धम मय माग का अवलम्बन करता है। जनक समानताभा के साथ साथ उनम कुछ वाता म बात वषा मतभू है। जीपनिपत्तिक सिद्धात जीवात्मा का मानता है। जन भी जीव का मानत ह निनु बौद्ध उसको नहीं मानत। उपनिषद् ब्रह्म जयना ईश्वर की सच्चिदानात्मक मत्ता जीवा स पथक मानत ह। जन सष्टि का बाई कर्ता घटा जीर सहातो नही मानत किनु जीव की पूण उन्नति हा जान पर उती म सच्चिदानात्मक इन्द्रत्व की स्थिति होना व मानत ह। किनु प्राचीन बौद्ध धम न ता जात्मा का न जीव का पुनजम न ईश्वर का ईश्वरत्व मानता ह। बौद्ध

के अनुसार तप्या के निरोध होने पर तथा कर्मों के क्षय हा जाने पर व्यक्तित्व की चेतना जाती रहती है । व उसी का दु ख से परम निवृत्ति जयवा निर्वाण कहने ह । ब्रह्मिक मतानुक्ल दशनशास्त्रा की रचना हुई । सारय, बदात्त और मीमासा याग याय और बशेषिक पडदशन के नाम से प्रसिद्ध ह । इसी प्रकार आगे चल कर बौद्धा तथा जना ने अपने अपने दशन शारत्रा की रचनाएँ की ।

उपयुक्त मक्षिप्त विवचन से एक ता यह बात स्पष्ट है कि उस युग म ही विचारा तथा मता की स्वतन्त्रता हमारे देश में थी । दूमरी बात यह कि आचार विचार की शुद्धता, याग, जहिमा, अक्षय गति का जितना समादर हमारे देश में हुआ वसा गायद ही कही हुआ हो । उन्ही के कारण हिंसात्मक यज्ञा का विधान बदा तथा और निरामिप माजन का प्रचार बढ गया । भारतवासिया की उनमें श्रद्धा तथा विश्वास तब से निरंतर जद तक चला जाता है और वे आदश हमें साम्प्रतिक व्यक्ति देते चल जा रह ह ।

समय है कि उपयुक्त धारणाएँ सब एक साथ ही उपत्त न हुई हा और विभिन्न व्यक्तिया का उनका आशिक रूप हा मुझाई पटा हा । शत्रुताग, नद और मीयबश म अशाक का छोकर बाई ऐमा मझाट नही दिखाई पटता जिसकी नीति और जीवन वक्त से यह अनुमान किया जा सके कि वह भगवान बुद्ध और भगवान महावीर द्वारा निर्दिष्ट जाचारा और विचारा पर चलने के लिए लालायित जयवा सन्नद्ध हो । उनका समयकाल म राजनीति अयनीति और दणनीति बसी ही वक्र गति से चन्नी रही जमी कि अयन्न दिखाई पटती है । जा बुढ भी हा साधारण श्रद्धालु जना म प्रचलित तत्कालीन धार्मिक विचारा द्वारा धम का सम्मान जयम के प्रति ग्लानि, आगार और विचार की शुद्धता, कतव्य के प्रति ध्यान आदि की भावनाया का सरक्षण होता रहा । भारतवासिया की धमप्रियता की पुष्टि हुई तथा विचारा की स्वतन्त्रता की रक्षा हाती रही ।

यद्यपि मूर्तिपूजा और सम्भवत दवालया की प्रतिष्ठा मिधु घाटी की मम्यता म भी पायी जाती ह तथापि यह कहा जा सकता है कि ईरानिया कीतरह ब्रह्मिक आर्थों ने उनका म्बोद्धत नही किया । बौद्धा तथा जना ने पवित्र स्थाना तथा महात्माया के पार्थिव अवशेषा का श्रद्धापूर्वक समादर करने की परिपाटी का आरम्भ किया जो उत्तरात्तर बढती गयी । वही आग चल कर मूर्तिपूजा, तीथयात्रा दवालया की प्रतिष्ठा के रूप में विकसित हाकर सार देश में फल गयी । इन बातों में कालान्तर म हमारा देश सबसे आगे बढ गया । उन प्रवृत्तिया म यदि कुछ दाप थे तो कुछ गुण भी

थे। उन्हा के कारण स्थापत्य कला शिल्प कला तथा किमी असा तक चित्र कला में भी अपूर्व उत्पत्ति हुई। तीर्थ-स्थान, तथा मन्दिर बहुत काल तक इस देश में विद्या तथा समयित जीवन के केन्द्र स रहे। इन स्थानों का यात्रा अनुभव तथा शिक्षा प्राप्त करने का जाकपक माधन बनी। वे विचार विनिमय के ही नहीं बरन व्यापार एव कला कौशल के आदान प्रदान क भी माध्यम हुए। एक ही साम्प्रतिक एकता और त्प-बद्धत्व की भावना को जाग्रत एव स्थिर रखने के लिए तीर्थयात्रा अच्छा व्यावहारिक उपाय सिद्ध हुआ। इन सन्ध्याओं द्वारा भारत की सांस्कृतिक देनो तथा आदर्शों का बहुत कुछ सरक्षण एव पोषण हाता रहा। इसी के साथ यह भी कहना अनुचित न हागा कि धार्मिक उत्साह श्रद्धा तथा भावा की क्षीणता होने पर ये सस्थाए निर्जीव हाकर आदर्शों आचार विचारों से पतित होकर दोषात्मक हा गयी। उनमें व हा अवगुण जा गये जो पश्चिमी एशिया तथा मिस्र की वैसे सन्ध्याओं म प्रचलित हो गये थे।

जन तथा बुद्ध धर्मों का मौर्यों कृपाणा तथा जय रात्र्या स बडी सहायता मिली थी। किन्तु शग शातवाहन, वाकाटक तथा गुप्तकालियों ने बडोपनिषद मन्त्रादि शास्त्रा पटदशना का पापण और संवधन किया। हीनयान को छाटक बौद्ध मत की विचारधारा महायान की ओर चुकी। बुद्ध को उमने ब्रह्म और ईश्वर से जा मिलाया और भक्ति बरुणा दया और कृपा का महत्त्व स्थापित किया। उधर वेद धमानुयायिया न भी हिंसात्मक तथा लम्बे चौडे यज्ञों से विमुक्त होकर उही भावा एव विचारों का घटा-बटा कर प्रचलित करना शुरू किया। बुद्ध का भी उन्हाने राम-वृष्ण की तरह का एक अवतार मान लिया और महायान की तरह ही मूर्तिपूजा एव तत समान अचा तथा उत्सव उन्हाने भी प्रचलित कर लिये। परिणाम यह हुआ कि दाना का भेद दिनान्दि मिटता चला गया और अत में दोना ने नवीन पौराणिक धम का तथा शंकराचार्य जी क ब्रह्म मायावाद का दार्शनिक रूप धारण कर लिया। बौद्ध धम का व्यक्तित्व नये हिन्दू धम म विलान हो गया। जन धम का अस्तित्व भारत म ता कायम रहा किन्तु भारत स बाहर उसका प्रचार न हा सवा।

पौराणिक हिन्दू धम

पौराणिक धम का पहली विशेषताता यह है कि वह अनकम्ता का सयाजन तथा समवय करण एव एमा सिद्धान्त स्थापित करने का चष्टा करता है जो अधिका-

धिक लोगो को सुगम तथा लोकप्रिय हो। उसमें नीचे स्तर के धोये मत्ता से लेकर अत्यन्त सूक्ष्म तथा सुसंस्कृत सिद्धान्ता तक को स्थान दिया गया है जिससे अशिक्षित समुदाय से लेकर प्रतिभा-सम्पन्न दार्शनिक तक लाभ उठा सकें। उनमें समन्वय स्थापित करने का भी यथासम्भव प्रयत्न किया गया। धर्म, व्रत, जीव, काम, जय, मोक्ष ईश्वर, भक्ति, अहिंसा, सत्य, ज्ञान, तीर्थ, अर्चा आदि सभी विषयों का समावर्तन तथा समन्वय किया गया है। उसमें अवतारवाद, मूर्ति पूजा, व्रत उपवास भक्ति, तीर्थ-माहात्म्य आदि को विशेष महत्त्व दिया गया है। वर्णाश्रम धर्म की महिमा मानत हुए भी उसको भक्ति, दया, औदार्यदि के सहारे मृदुल बनाने का प्रयत्न वेदापनिषद् मतावलम्बियों ने किया है। वैदिक श्रद्धा के साथ ईश्वर विश्वास ऐहिक तथा स्वर्गिक सुख की कामना के सम्मिश्रण से भक्ति मार्ग का उन्मूलन हुआ। धर्म की प्रतिष्ठा और अधर्म का नाश करने के लिए ईश्वर आवश्यकतानुसार समय-समय पर उपयुक्त रूप धारण कर लेता है। वह स्वामाधिक्य करणा, दया, वत्सलता के कारण ही यह अवतार लेता है। हिन्दू दस अवतार मुख्य मानते हैं। जिनमें श्रीराम और श्रीकृष्ण विनिष्ठ ह। कुछ ऐसी ही प्रवृत्ति अम्पष्ट रूप में बौद्धा और जनिया म प्रतिभासित है। तीर्थव्रग तथा बोधिसत्वों में भी अवतारों के-म तत्व कमात्रेण पाये जाते ह। उनमें भी हिन्दुओं की-सी भक्ति भावना जाग्रत हा गयी। यह भक्ति आन्दोलन गुप्तकाल तक पूण रूप से प्रतिष्ठित हा गया। पुराणा में जठारह पुराण मुख्य मान जाने ह। गुप्तकाल तक उनका वह रूप बन गया जिसमें वे आजकल मिलते ह। जैना के भी पुराण ह। गुप्तकाल के बाद भी समय समय पर बहुत स अग पुराणा म जोड़ दिये गये। कुछ पुराण शक, कुछ वण्यक कुछ भक्ति जयवा जय अनेक दृष्टिकोणा स रचे गये ह। अतएव उनमें साम्प्रदायिकता दिव्यायी पटती है। किन्तु उनमें यूनाधिक रूप से उपयुक्त विषया तथा भूगाल इतिहास, अनुश्रुतिवा, गाथाआ, लोक प्रथाआ एव सरथाआ आदि का वर्णन मिलता है। उनका प्रभाव जनता पर उत्तरोत्तर बढ़ता गया। यहा तक कि सारे हिन्दू समाज का धर्म उद्दी पर अवलम्बित हो गया।

राजनीतिक विधान

वैदिक समाज तथा राजनीति-संगठन का मूलाधार गृह था। गृह का संगठन मुख्यवस्थित रूप से किया गया था। गृहपति तथा गृहिणी का पूण सम्मान और उनके अनुशासना का पालन होता था। समान कुल-शील वाले गृहा के समूह के

लिए ग्राम गन्त प्रयुक्त होता था। कुछ ग्रामों का मित्राकर एक दिन बनता था और कुछ दिन एक जन म मर्गाटन कर लिये जान थे। उपयुक्त मित्रा गन्त पन्ते सामाजिक संगठन व अथ म प्रयुक्त हान थे किन्तु वाग्लर म उनका प्रयोग दूमर अर्था म ता लगा। नम म प्रत्येक जम का एक प्रमुख र्जाधकारी होता था, जम गन्तपति ग्रामणी विगापति, गणाधिपति तथा जनाधिपति। जनाधिपति ही राजा कहलाता था। वह राजकुल का हाना जार पतन उतराधिनार क जनमार राजत्व प्राप्त करता था। विभी किसी दगा म विगापति मित्र कर राजपुत्रा में स मयम उपयुक्त व्यक्ति का राजा चुन गते थे। यद्ध याय विवरण तथा जातीय मन्नादि म प्राय राजा हा नता नता था। धर्मानुसार गामन करना तथा प्रजा का फालन पोषण करना उसका कतव्य था। राजा की महायता करनवाल अधिकारिया में से पुरोहित, मनानी तथा गमणा प्रमुख समने जात थे। उनका परामग दने के लिए एक समा होती थी। जिसके सदस्य प्राय याग्य ब्राह्मण तथा श्रेष्ठ लग हात थे जो जामनित लिये जाने पर राजा का सम्मति दत थ। उनकी सम्मति का राजा बडा सम्मान करता था। राजा के चुनाव के लिए अत्यत महत्त्वपूर्ण परिस्थिति जाने पर सावजनिक समिति का अधिवेशन किया जाता था। समिति के निणय वो अनुगामन मान कर राजा शिरोघाय करता था। उपयुक्त बचना के सिवा राजा पर धम का भी प्रतिबन्ध रहता था। धम का उल्लघन करना उसके लिए सबथा अनिष्टकारी समझा जाता था। राजा का मुख्य कतय प्रजा का सरक्षण और गत्रुजा का दमन था।

उत्तरवर्तिक काल में राजा के बभव उसकी शक्ति तथा राज्य विस्तार से उसके कतव्या की सीमा म भी बद्धि हुई। वह पुरा के विशाल भवन में अधिक ठाठ वाट के साथ रहने लगा। उसके रहन सहन मे नागरिकता का गहरा प्रभाव लिपिआई पन्न लगा। उसके कतव्या में विद्वाना विद्यार्थिया और नि गक्त गेगा की सहायता करना आवश्यक समझा जान लगा। प्रजा की रक्षा क लिए यह विधान बना कि यदि डाका अथवा चोरी से किसी की हानि हुई हा ता स्थानिक कमचारिया का कतय हागा कि वह उसकी पूति कर। राजा तथा शासन क बन्ने हुए सच क लिए कृपका का दगामास सं पष्टमाण तक कर देना पजता था। व्यापार, घातुआ पगुआ फल फला वनस्पतिया मास घास और लकडी तक पर कुछन कुछ कर लग गये थे। महीने म कम से-कम एक दिन बगार भी ला जाने लगी। राजा की सम्पत्ति बभव, बल तथा साधना के बढने से उसम स्वच्छ दता की अग्नि

स्वापा वन्तो लभा । सभा शायद माधारण मुजद्म करती थी और मन्त्रिनि विधि विधान पर विचार करने लगी । पुराने टग की सभा एव सन्मिनि का महत्व कम होने लगा । राजा ने अपनी मन्त्रिया की सख्या कम कर उनकी राय लेकर अपनी नीति स्वयं निधारित करना शुरू कर दिया । राजा में देवत्व की कल्पना होने लगी जा उत्तगोत्तर पुष्ट हाती गयी । चन्द्रगुप्त की सभा में बारह मन्त्री थे । शासन का क्षेत्र एव काय बढ़ जाने से मन्त्रिया की सख्या का बढ़ना आवश्यक ही था । राजा की सभा में मृत (पौराणिक) कापाध्यभ राजकर मन्त्री तथा जुआ, शिकार-विभाग के अध्यक्ष भा शामिल किये गये । रानिया का भी शायद मन्त्रिसभा में स्थान दिया गया । राज्य की व्यवस्था का सुचारु रूप से चलान के लिए शासन का भी अधिक मगटन करना पडा । ग्रामा में तो ग्रामणी पहल था ही, उत्तर वैदिक काल के अन्तिम भाग तक दग ग्राम, विगति ग्राम गत ग्राम तथा महस्र ग्रामा के अधिकारी नियुक्त किय जाने लग । पत्येक क्षेत्र के अधिकारी का अपनी अपनी परिधि में कर उगाहने, अपराधी का दण्ड देने शक्ति रखने तथा शाय-रक्षा का अधिकार द दिया गया । ग्रामा की स्वतन्त्रता में अधिक हस्तक्षेप न किया जाता था तथापि शासन में नौकरशाही (ब्यूरोक्रेसी) की भी शलक दिग्गई पडने लगी ।

या ता आरम्भ से ही आर्यों के दल आपस में लड़ते मिडते थे किन्तु सम्पत्ति कम-बल की वृद्धि के साथ राज्य बढ़ाने की लालसा भी स्वभावतः बढ़ती गया । छोट-छोटे राज्या का युग बदल कर बड़े राज्या का जमाना आ गया । राज सत्तात्मक राज्या के सिवा गण (वश) राज्या का भी उल्लेख मिलता है । मम्मवत एक वश के सजातीय लोग के इतस्ततः राज्य थे जिनका शासन गणा अथवा अल्पतः द्वारा होता रहा होगा । स्पष्ट प्रमाण के अभाव में यह प्रतीत होता है कि कुशा के मुग्य नेताओं की सभा शासन का नियन्त्रण करती होगी । कभी-कभी कई वशा के लोग मिल कर समुक्त शासन करने थे । छठी शती ई० पू० के आरम्भ तक उत्तरी भारत में कई बड़े-बड़े राज्य स्थापित हो गये । उनमें आठ दस गण राज्य भी थे । उनमें आपस में प्रभुत्व के लिए भयंकर संघर्ष होत थे । राजतन्त्र के सुमगठित बल तथा तत्परता के जाने प्रजातन्त्र राज्य छिन भिन होने लगे । बुद्ध मगवान के समय तक यह नौबत जायी कि मालवा से मगध तक केवल चार बल गाली राज्य रह गये । उनमें भी संघर्ष होता रहा । अन्ततःगत्वा मगध के राज्य ने सबको शरस्त कर एक साम्राज्य स्थापित किया जा मालवा से पूर्वी विहार तक

लिए ग्राम' गण प्रमुक्त होना था। कुछ ग्रामों का मिश्रण एक विंग बनता था और कुछ विंग एक जन म समरहित कर लिये जाते थे। उपयुक्त विंग गण पहले सामाजिक संगठन के जन्म म प्रमुख होते थे विंग का गठन म उनका प्रयोग हमारे ज्यों म होना लगा। जनम म प्रत्येक जग का एक प्रमुख अधिकारी होना था जैसे गृहपति, ग्रामणी विगापति गणाधिपति तथा जनाधिपति। जनाधिपति ही राजा कहलाता था। वह राजकुल का होना और पतन उत्तराधिकार के जनगार राजत्व प्राप्त करता था। विंगी किसी दगा म विगापति मित्र कर राजपुत्रा म से सबसे उपयुक्त व्यक्ति का राजा चुन लेते थे। यह याय नियंत्रण तथा जातीय यज्ञादि म प्राय राजा ही नेता होता था। धमानुसार शासन करना तथा प्रजा का पालन पोषण करना उसका कर्तव्य था। राजा की सहायता करनेवाले अधिकारियों म से पुरोहित मनाना तथा ग्रामणी प्रमुख समझा जाते थे। उसका परामर्श देने के लिए एक समा होती थी। जिसके सदस्य प्राय गार्थ ब्राह्मण तथा श्रेष्ठ लोग होते थे जो आमंत्रित किये जाने पर राजा का सम्मति देते थे। उनकी सम्मति का राजा बड़ा सम्मान करता था। राजा के चुनाव के लिए जल्पत महत्वपूर्ण परिस्थिति आने पर सावजनिक समिति का अधिवेशन किया जाता था। समिति के निर्णय को अनुशासन मान कर राजा शिरादाय करता था। उपयुक्त बंधना के सिवा राजा पर धम का भी प्रतिबंध रहता था। धम का उत्पन्न करना उसके लिए सबथा अनिष्टकारी समझा जाता था। राजा का मुख्य कर्तव्य प्रजा का संरक्षण और शत्रुओं का दमन था।

उत्तरवर्द्धि काल में राजा के बंधन उसकी शक्ति तथा राज्य विस्तार से उमके कर्तव्य की सीमा में भी बद्धि हुई। वह पुरा के विशाल भवन में अधिक ठाठ बाट के साथ रहने लगा। उसके रहने सहन म नागरिकता का गहरा प्रभाव दिखाई देने लगा। उसके कर्तव्य म विद्वानों विद्याधिया और निगक योगी की सहायता करना आवश्यक समझा जाने लगा। प्रजा की रक्षा के लिए यह विधान बना कि यदि डाका अथवा चोरी से किसी की हानि हुई हो तो स्थानिक कमचारियों का कर्तव्य होगा कि वह उसकी पूर्ति करे। राजा तथा शासन के बदन हुए खच के लिए कृपका का दशमास से पष्टमास तक कर देना पता था। यापार घातुआ पंगुआ फल फला वनस्पतियों मास घास जाद लकड़ी तक पर कुछ-न कुछ कर लग गये। महीने म कम से-कम एक दिन बेगार मा ली जान लगी। राजा की सम्पति, बंधन, बल तथा बाधना के बढ़ने से उसमें स्वच्छता की अमि

रानी को लगी। समा शायद माधारण मुकदमे करती थी और ममिति विवि विधान पर विचार करने लगी। पुराने टय की समा एव ममिति का महत्व कम होने लगा। राजा ने अपन मन्त्रिया की सख्या बढा कर, उनकी राय लकर अपनी नानि स्वय निधारित करना शुरू कर दिया। राजा म देवत्व की कल्पना हाने ग्या जा उत्तगोत्त पुष्ट हाती गयी। चद्रगुप्त की समा मे बारह मन्त्री थे। सामन का क्षेत्र एव बाय यह जान स मन्त्रिया की सख्या का बढना आवश्यक ही था। राजा की समा म सूत (पीराणिक), बापात्र्यम्, राजकर मन्त्री तथा जुआ, शिकार विभाग के अध्यक्ष भी शामिल किये गये। रानिया का भी शायद मन्त्रिसमा म स्थान दिया गया। राज्य की व्यवस्था का मुचार रूप से चलाने के लिए सामन का भी अधिक मगठन करना पडा। ग्रामा म तो ग्रामणी पहल था ही, उत्तर बढिक काल के अन्तिम भाग तक दण ग्राम, विगति ग्राम, गत ग्राम तथा महस ग्रामा के अधिकारी नियुक्त किये जान लगे। पत्येक भत्र के अधिकारी का अपनी अपनी परिधि में कर उगाहने, अपराधी का दण्ड देने शक्ति रखने तथा याय-रमा का अधिकार द दिया गया। ग्रामा की स्वतन्त्रता म अधिक हस्तक्षप न किया जाता था तथापि शासन में नौकरशाही (व्यूरोक्रेसी) कोन्नी क्षलक दिगाई पडने लगी।

या तो आरम्भ से ही आयों के दल आपस में ललत मिडते थे, किन्तु सम्पत्ति, वैभव, बल की बढि के साथ राज्य बढाने की लालसा भी स्वभावत बढती गयी। छोटे छोटे राज्या का भुग बदल कर बडे राज्या का जमाना जा गया। राज-सत्तात्मक राज्या क सिवा गण (गण) राज्या का भी उल्लेख मिलता ह। सम्भवत एक बस के मजातीय लोग के श्तम्तन राज्य थे, जिनका सामन गणा जेववा अल्पतन द्वारा होता रहा हांगा। स्पष्ट प्रमाण के जभाव म यह प्रतीत हाता है कि कुला के मुख्य नेताओ की समा सामन का नियन्त्रण करती होगी। कमा-कमी क बशा क लाग मित्र कर सयुक्त शासन करते थे। छठी गती ई० पू० के आरम्भ तक उत्तरी भारत में कई बने-बडे राज्य स्थापित हा गये। उनमें आठ म गण राय भी थे। उनमे आपस मे प्रभुत्व के लिए भयकर मघप शैत थे। राजतन के सुमगठित बल तथा तत्परता के आगे प्रजातन राज्य छिन मित्र होने लगे। बुद्ध भगवान क समय तक यह नीबन जाया कि मालवा से मगघ तक केवल चार बल शाला राज्य रह गये। उनमे भी सघप हाता रहा। अन्तसोग का मगघ क राज्य ने मबवो परास्त कर एक साम्राज्य स्थापित किया जो मात्रा स पूर्वी बिहार तक

विस्तृत था। सम्भवतः साम्राज्य विस्तार से उत्पन्न शत्रु-बाहुल्य के कारण ही सम्राट् को अपनी अग रक्षा के लिए महला के भीतर भी सशस्त्र स्त्री रखवा की आवश्यकता पड़ने लगी थी बाहर का तो कहना ही क्या। मगध के सम्राट् धन-नद के समय में सिक्ख-दर के आक्रमण के बाद चन्द्रगुप्त मौर्य ने पञ्जाब भी मगध साम्राज्य में शामिल कर लिया। मौर्यों के समय में मसूर तक दक्षिण में तथा हिन्दु-कुश तक पश्चिम में और उड़ीसा तक पूर्व में मौर्य साम्राज्य बढ गया। साम्राज्य-स्थापन के बाद भी पश्चिमी प्रांता में साम्राज्य के अतन्त्र गणतन्त्र चलते रहें हागे।

इतने बढे साम्राज्य का शासन करने के लिए कुछ नवीन विधानों की आवश्यकता पड गयी। पहली आवश्यकता तो थी विजित राज्या तथा प्रांता के निरीक्षण करने की और दूसरी थी बडे नगरों में व्यवस्थित शासन स्थापित करने की। साम्राज्य के विषेष्ट प्रबन्ध के लिए ईरानी परिपाटी के अनुसार उसे प्रांता में विभक्त कर दिया गया। कुछ राज्या को आधिपत्य स्वीकार कर लेने पर यथापूर्व चलते रहने की स्वतन्त्रता दे दी गयी। प्रांता की अध्यक्षता राजवत्स के कुमारा को प्रायः दी जाती थी। चार प्रांता तक्षशिला तापाली उज्जैन तथा सुवर्णगिरि का उल्लेख मिलता है।

साम्राज्य के बढते हुए कार्यों को सुचारु रूप से चलाने के लिए राजमन्त्रियों की सख्या सम्भवतः जठारह तक बढा दी गयी थी। इनके लिए तीर्थ शब्द का भी प्रयोग हाता था। ये मन्त्री थे पुरोहित एवं प्रधानमन्त्री, समाहर्ता (राजस्वमन्त्री) सुनिधाता (कापाध्यक्ष), युवराज, प्रदेश-यायाध्यक्ष व्यावहारिक नायक मेनाध्यक्ष, कर्मातिक (उद्योगमन्त्री), मन्त्रि परिषद अध्यक्ष, दण्डपाल जतपाठ, दुर्गपाल पौरनगराध्यक्ष प्रशास्ता दौवारिक, (द्वारपाल), जाटविक (वनविभाग का अध्यक्ष)। यद्यपि मन्त्रि परिषद में योग्य और अनुभवी व्यक्ति रहते थे तथापि सम्राट् को उनके निणय या सम्मति को मानन या न मानने का अधिकार था। समा केवल परामर्श देने के लिए थी। प्रांता के विषय में जानकारी रखने के लिए ईरानी विधान के अनुसार जासूस तथा सम्वाददाता नियुक्त किये जाते थे। इस कार्य में सयासिया तथा स्त्रियो से भी काम लिया जाता था। गीघ्रातिशीघ्र समाचार ले जाने के लिए सिल्लाये हुए कदूतरा का उपयोग किया जाता था। अशोक को घम प्रचार का शौक था। अतः उसने प्रांता में घम महामाना की नियुक्ति की थी जिनका काम सम्राट् के अनुमोदित घम का प्रचार, सहायता तथा उसकी

मयाग का रक्षण करना था । वृत्त-में अग्रा में प्राता का शासन राजधानी के शासन के अनुसार होता था । याग क लिए भी महामात्रा की नियुक्ति हानी थी ।

इनने बड़े साम्राज्य की रक्षा क लिए ऐसी भारी सेना की जा जल तथा स्थल पर काम कर सके आवश्यकता हुई । मौर्य सेना में छ लाख पदल, तीस हजार सवार भी हजार हाथी, तथा आठ हजार रथ थे । चार अग्रा की सत्या में समय समय पर रत्नबदल हाता रहता था । उसका ममुचिन प्रयत्न करने के लिए छ विभाग थे । चार ता उपयुक्त चतुरगिणी सना के प्रत्येक अग क लिए, पाँचवा जल सेना तथा छठा रमद आदि के लिए था । सम्भवत प्रत्येक विभाग में पाँच मुख्य प्रबन्धक होल थे । सत्ता-परिवर्ण तथा व्यापार क लिए लम्बी सटके बनवा दी गयी । बड़े नगरा का शासन बमोवेग राजधानी पाटलिपुत्र के शासना के अनुमार रहा होगा । पाटलिपुत्र के शासन के लिए भी तीस सदस्या का का था । वे छ विभागा में बँट हुए थे । एक विभाग कलाकौशल का, दूसरा विदेशीय का, तीसरा जम मत्यु का चौथा व्यापारादि का, पाचवा माल बनाने और बचने का तथा छटा वित्री के माल पर कर वमूल करने का प्रबन्ध एक निरीक्षण करता था । ऐना प्रतीत हाता है कि उस समय नगर क शासन का युनाधिक प्रबन्ध उन्ही सिद्धान्ता पर रिया जाता था जिन पर आप्तिव म्यनिसिपैलिया का हाता है ।

साम्राज्य का ण्ड विधान भी कठोर कर रिया गया था । माधारणतया ता जुर्माना रिया जाता था किन्तु बहुत-से जुर्मों के लिए कारागार, अग विच्छेद शारीरिक पीडन निर्वासन अथवा प्राणदण्ड दिया जाता था । उदाहरण के लिए द्वित्री पर कर न देने अथवा चारी के लिए भी प्राणदण्ड का विधान था ।

राज-वमव भारी सना एव विशाल शासन यत्र के रख रखाव के लिए पन की अधिक आवश्यकता था । राज्य की आय क मुख्य साधन थे किला तथा नगरा से प्राप्त आय, भूमिकर खाना सं कर, पशुआ पर कर, फर, शाक तथा औषधि का कर, जगला पर कर चरागाहो पर कर, व्यापार के यातायात पर कर शस्त्रा के निर्माण पर कर मुद्रा नशीली चीजा, जुआ वेद्याआ पर लगे कर आदि । सिचाई, घागे, राजगारा, घरा पगडण्डिया और चक्किया पर भी कर लगा हुआ था । भूमि की उपज पर चतुथाश कर लिया जाता था । चुगी की दर भी उत्तरोत्तर बढ़ाने की तरकीबे निकाला गयी थी । राज्य के लक्ष के मुख्य विभाग थे राजपरिवार,

आर्थिक जीवन

जनार्थों से निरंतर युद्ध हाने के काल से ही जायों के युग का भारत जगल में मरा हुआ था। वम जगल का काट-काट कर अपना रास्ता निकालने जा र वस्तिया वमाने की कठिन समस्या उावे सामने थी। माहम और धय म वे उस सुलधान गये। वृषि पगुपालन और धाडे-बन्त व्यापार पर उनका आर्थिक जीवन निर्भर था। वृषका की सभ्या जय जानिया में अधिक थी, इसीलिए गावा या छाटी वस्तिया में वे रहत थे। उनका रहन-सहन सीमा-मादा था। उनकी सम्पत्ति विशेषतः भूमि और पशु ही थ। पगुपालन व वृषि से भी अच्छा काम मानत थे। हल चलाने क लिए कभी छ स दारु बेल तक जातते थे। यव (जी) की खेती, बड़े पमाने पर हाती था। उसके अनिखित सम्भवत गेहूँ, चना, तिल, ईग कपास तथा कुठ जय प्रकार के अनाज भी बात थे। मिचाइ अधिकतर वर्षा के जल से, बुआ के जल से, अथवा पीला तालावा जीर नहरा क पानी से हाती थी। व शायद कुआ पर रहत चला कर चरमे या बरवा से भी पानी लेते थे। घाटा में खेती न कराने उहे व चरने जीर रथ गीचने के काम में लगत थ। वडिया घाड जीर बला की बडी कदर की जाती थी। पशुआ की सख्या स जालमी का ह्मियत जाकी जाती थी। पाणिनि के समय तक तीन श्रणी के वृषक थ। प्रथम जिनक पास हल न था। दूसरे के जिनके पास अच्छा हल हाता था जीर तीमरे खराब हल वाल। ऋग्वेद क युग से ही रेत वासा स नाप जाने थ। नापन वागे की ऋभ सना थी। खेत जयान क्षेत्र का मालिक क्षेत्रपति हाता था। क्षेत्रपति अपनी इच्छा के अनुसार अपनी भूमि को बेच अथवा दान भी कर सकता था। किंतु यह निश्चित नही कि गोचारण भूमि पर सामूहिक अथवा बयवितक अधिकार था या नही। सम्भवत उम पर पशु चराने की बोड राक-टाक र थी।

तत्कालीन सादे जावन क अनुमार उनक उद्योग धंधे भी थे। बडई, लाहार, कुम्हार सोनार चमकार, रथकार कपडा बुनने वाले रगमाज, धावा, चगाइ विनने जीर छप्पर बनान वागे धनुष-बाण बनान वागे, बद्य तथा सुग बनान वाल कारीगर आर्यों की साधारण दैनिक आवश्यकताआ की पूर्ति कर दते थे। वैदिक युग के आरम्भ में आय सोने से परिचित थे किन्तु उत्तरवर्तिक काल में सीमा टीन चाँदी और तावा मिलने लगा जिससे वे हथियारा के मिवा बरतन आदि भी बनाने लगे। पशु नये उद्योग धंधे जीर रोजगार सडे हाने लगे। आरम्भ में आय कामचलाऊ कम्प की तरह के छप्पर के भवान, जिनसी दीवारें चटाई की

रहनी बना लेते थे। अत्यवस्थित राजनीतिक परिस्थिति के कारण बड़े और पक्के मकान शायद ही काड़े बनवाता था। गावा में निवास तथा बृच्छ जीवनचया उनका स्वभाव का जग बन गयी थी।

प्रारम्भ में चीजा का मूल्य बछटा और बला से निश्चित होता था पर उस युग में व्यापार विनिमय के द्वारा मान लगा। सम्भवत सिक्के का गान ही उन्ट न था इसलिए उससे उत्पन्न मोह का वाइ प्रश्न न था। आगे चल कर सान चादी के टकड़ा का प्रयाग हानै लगा जिनका मूल्य उनके वजन पर निर्धारित होता था। निष्क तथा मस का वजन निश्चित सा माना जाता था। कौटिल्य के समय तक साने के निष्क राज्य द्वारा संचालित किए जाते थे। व्यापार स्थल और जल मार्ग नानो से होता था। बेल गाडी या घोटा गाडी डाडी या पतवार से चलायी जाने वाली नावें और पात उनके यातायात के साधन थे। सम्भवत फारस और मेमो पाटामिया आदि पश्चिम देशों से उनका व्यापार होता होगा। बाज चीजों का दाम बहुत अधिक था। इद्र की एक प्रतिवृत्ति का मूल्य दस गाय था। व्यापार न जायों को भी लालची और सूदखोर बना दिया। व्यापारी बणिक् (पणि) श्रणी का अव्ययता के लिए प्रयत्न करता था। लिखा पनी से लेन दन करना था। सवा छ से करीब सत्तह प्रतिशत तक वह सूद खाता था। पता नहीं कि सब पणी आय ही थे अथवा आर्येतर लोग भी उनमें शामिल थे। यदि वाइ अभागा वज अदान कर सकता तो उसका लिए शारारिक दण्ड और गुलामी के सिवा कोई चारा न था।

श्रमजीवी लोग अपनी सवाअा के लिए यदि स्वतन्त्र होते तो बतन पाते और यदि दास (गुलाम) होते तो वे स्वामी का कृपा के भरासे रहते थे। कृपक भूमि पर खेती करने के लिए राजा द्वारा नियुक्त 'ग्राम-भोजक' का भूमि-कर देते थे। उपज का एक बटे बारह से लेकर एक बटे छ, और आवश्यकता पटने पर एक बटे चार तक भाग भूमि-कर के लिए निर्धारित था। सम्भव है कि उनका विभिन्न दरें स्थानिक विशेषताओं अथवा विविध प्रकार की भूमिया की उपज के आधार पर रही हो। द्राणभापक द्रोण की तील से फसल जोलता था। यदि राजा चाहता तो किसी भूमि को कर से मुक्त कर देता था। ऐसा प्रतीत होता है कि कौटिल्य के समय तक बहान-भी भूमि पर राजा का अधिकार था गया था। यह या तो अपने सेवकों द्वारा खेती, बागवानी आदि करवाता था अथवा उसे लगान (बलि) पर उठा देता था। यदि राजा स्वनिर्मित साधना द्वारा कृपका को जल प्रदान करता तो उनसे उपज

का एक बटा छ से एक बटा चार तक कर लेता था। राजकीय कार्यों क सम्पादन के लिए पाँच या दस ग्रामो पर 'गोपा' की, जनपद के चतुर्थ भाग पर स्थानिका' की और सम्पूर्ण जनपद के लिए 'समाप्ता' की नियुक्ति कर दी गयी थी। मौय काल तक भूमि-कर बटा दिया गया था किन्तु साधारणतया उपज का एक बटा चार कर में लिया जाता था। जो भूमि दान म अथवा वेतन के बदले ब्राह्मणा स्त्रिया, बच्चा तथा धार्मिक सम्प्रादा अथवा मनिको का दी जाती वह प्राय करमुक्त होती थी।

शिल्पजीवी अपने-अपने परम्परागत व्यवसाया में लगे रहते थे। उनका वापक्षेत्र ग्रामा से अधिक नगरो में था। शिल्पविशेषा के लाग पूग अथवा 'श्रेणी' में प्राय संगठित हा गये थे। ऐसे पूगा की सख्या अठारह से अधिक ही रही होगी। शिल्पी ही नहीं वरन तत्कालीन विधान क अनुमार शम्भजीवी भी सघा म संगठित थे। धार्मिक सम्प्रादा ने भी अपने-अपने मघ अथवा पूग बना लिए थे। ब्राह्मणा ने भी अपने गणा का निमाण कर लिया था। प्रत्येक वग के लोग जहा तक सम्भव हो सकता ग्रामो विशेषत नगर मे अपने-अपने मुहल्ला में रहना पसंद करते थ। एक जगह जमा हाने तथा समान व्यवसाय करने के कारण उनमें सामाजिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध बढ़ता गया जिसका परिणाम गायद यह हुआ कि उत्तमतर नयी स्थानिक उपजानिया-सी बनती चली गया ता अपनी-अपनी विगिष्टता के संरक्षण में सतक रहने लगी। प्रत्येक उद्याग ममह का एक नेता होता था। विभिन्न पारिभाषिक शब्दा स वह अभिहित हाना था—जैस, ज्येष्ठक प्रधान सेठिठ आदि। यह प्रथा इतनी प्रचलित हा गयी थी कि चारा के समूह के भी ज्येष्ठक हाते थे।

वदिक युग में लोग ग्रामा में रहते थे। व्यापार अथवा नीतिक आवश्यकताआ से नगरा का निमाण हुआ और वहा नागरिक जीवन का उदय हुआ। आय लोग उस प्रवृत्ति को अवनतिकारिणी कहते थे। किन्तु धीरे धीरे नगरा का आकषण बढ़ता गया। दास-दासिया की माग बढने लगी। ब्राह्मण, क्षत्रिय भी व्यापार करने लगे। साने, चाँदी ताबे क सिक्का का प्रयोग बढ गया और उनकी बहुमुग्नी बढि होती गयी यहा तक कि नगरवासी ग्रामीण लोगा को अपने से कम सम्य और असस्कृत-सा समचने लगे। नागरिक जीवन ने इतनी बढि कर ली कि शासन को उसके प्रवध और नियन्त्रण का भार अपने हाथ म लेना आवश्यक हो गया। बिना राजाणा के कोई व्यक्ति न तो व्यापार प्रचलित कर सकता था न व्यापारी

काम ही कर सकता था। वस्तुओं का प्रमाणन मूल्य निर्धारण श्रेय विक्रय का निरीक्षण अथवा नियंत्रण शुल्क चुगी तोल नाप और व्यापारियों के बगड़े निपटाने जति कामों के लिए पण्डाध्यक्ष शुल्काध्यक्ष, जनपाल पाताध्यक्ष आदि नियुक्त किए जाते थे। खाने-पान की चीजों की शुद्धता पर विशेष ध्यान रखा जाता था। नगरों की उन्नति का साथ पक्षीपनियों की वृद्धि होने लगी बड़े-बड़े व्यापारी कारखाने खोलने लगे जल और स्थल मार्गों का प्रबंध होने लगा। यद्यपि बक न थे तथापि घन जमा करने के लिए नगर के निकाय अथवा विश्वस्त साहूकार काफी समर्थ जाते थे। माराग यह कि प्राचीन बर्दिक युग का सरल तथा साधारण संगठन दिन-दिन पचीला होता चला गया। बेईमानी सूदखारी भागोपभोग का नये नये साधन एकत्रित हो गये। नयी सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याएँ उत्पन्न होती रहीं। यूनानियों के प्रभाव से भारत में मुद्रा मुद्रा का प्रचलन हुआ। मौर्य युग में व्यापार का मार्गों में प्रथम बलकत्ता के समीप ताम्रलिप्ति से प्रारम्भ होकर पाटलिपुत्र वाराणसी कौशांबी मथुरा, सिन्धुकोट होकर तमशिला तक दूसरा मथुरा से राजपूताना होता हुआ पठन तक तीसरा कौशांबी से उज्जैन होकर मड़ौच तक और चौथा पठन से कांची और मदुराई तक जाता था। इन बड़े मार्गों में मरचिन अन्तर छोट मार्ग थे। मार्गों के किनारे किनारे छायादार वृक्ष जगह जगह पर विश्रामगृह और जल के स्थान कुएँ बने थे। व्यापार में कुछ बाधाएँ भी पड़ती थी। लुट्टा का भय सदा बना रहता था। उनसे रक्षा करने के लिए गस्त्र शक्ति का रखना पड़ता था। दूररे यातायात के साधन ऐसे थे जिनसे व्यापार की गति मन्द रहती थी। उदाहरण के लिए पहले मिस्र तक जाने के लिए एक बरस लगना था किन्तु बाद में ईसा के प्रथम शती तक भी तीन महीने लग जाते थे। चीन का दक्षिण जाने तक जान में भी एक बरस लगना था। समुद्र में शायद अनेक प्रकार का बरस पड़ता था। समक विवा जत्र तक कारखाना पूरा न हो तत्र तक यात्रा प्रारम्भ न की जा सकती थी। कारखाना में पाँच मी शक्ति का बणन मिलता था। समुद्र मार्ग में छोट जहाज द्वारा यात्राएँ होती थी। कभी-कभी जहाज डूबना भी पड़ता था।

अन्त में पट तथा बाधाओं का रचना ही मात्रावय का व्यापार बहुत उन्नत था। पूर्व में चीन तथा बर्मा के शक्ति का स्थान मध्य जति तत्र पश्चिम में मध्यपटमिया पारस मिस्र एवं रोम तत्र पश्चिमात्तर एवं उत्तर में सानान, तुफान कागार मरुत तत्र भारत में नाना प्रकार के मूनी रणना के रूप में रत्न मानी, जामबण,

ममाले सुगन्धित द्रव्य, चीनी चावल घी, मारुत हायादान रग लाहा दोर बाण भम, हाथी, बदर, पक्षी आदि भेजे जान थे, जिममे कराटा का माना चादी देश में जाता रहता था । यहा के माल का इतना सम्मान होता था कि कभी-कभी ता मौगुनी कीमत पर बह विक्रि जाता था । सम्भवत उत्तर भारत का जपथा दक्षिण भारत का व्यापार करने तथा लाभ उठाने ना जवसर अत्रिक प्राप्त था । अय दगा स भारत भी सोना चादा धातु या धातु स बनी चीजे गाने का सामान कपूर रगमी व ऊना कपडे घाडे ऊँट हथियार आदि भेगवाता था । किन्तु आयात स निर्यात की माना बहूत बनी चनी था जिममे भारत उत्तरात्तर ममद्वि गाली जाता चला जाता था । इसीलिए लभभूमि के साथ साथ भारत स्वणभमि भी बन रहा था ।

बृहत्तर भारत

भारतवासिया का जय दशा स केवल सम्पक ही नहीं वरन सांस्कृतिक जोर व्यापारिक सम्बन्ध भी प्राचीन काल स चला जाता है । सिन्ध घाटी व लागा का व्यापार और सम्भवत सांस्कृतिक आदान प्रदान पश्चिमी एशिया स था । बर्दिक जायों का ईरानिया व साथ सांस्कृतिक सम्बन्ध के अलावा राजनीतिक सम्बन्ध भी था । भारत की पश्चिमी सीमा पर भारत तथा ईरानिया का सगम हुआ । यह स्मरण रखने योग्य है कि भारत का सबसे प्रमुख और उच्चतम शिक्षा केन्द्र तक्षशिला में था । जहा से भारतीयों और ईरानिया तथा मध्य एशिया के अय लोग का सांस्कृतिक ज्ञान विज्ञान विनिमय चलता रहा । अलेक्जेंडर के आक्रमण स ग्रीका तथा यूनानिया का भी भारत के साथ विभिन्न स्तरा पर आदान प्रदान होता रहा । मौयवालीन भारत में पश्चिमी एशिया और मध्य एशिया स जाना जाना, व्यापार तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध और भी बढ गया । गुजरात सिन्ध तथा दक्षिणी भारत के निवासियों का मेसोपटेमिया मिस्र तथा दक्षिणी एशिया और हिन्दुनागर के टापोआ जोर प्रदेशा से उत्तरात्तर सम्बन्ध बन्ता गया । कुषाणकाल स चीनिया का व्यापारिक जोर सांस्कृतिक सम्बन्ध भारत स बढता गया । तब स गुप्तकाल तब उत्तरी भारत ने भी लाग व्यापार जोर धन प्रचार व लिए स्वणभमि मलय, इण्डोनेशिया, कम्बाडिया आदि देशा मे जान लगे । युनान (इण्डोचीन) तथा कम्बाडिया मे हिन्दुजा ने प्रथम शता म अपने उपनिबन्ध स्थापित कर लिय थे । बहा स वे चीन के साथ व्यापार करते रहे । राजा जयवर्मा ने चीन का अपने दूत पाचवीं

गती म भेज । चौथी और पाचवी शती ई० म मलय में हिन्दुआ ने अपना राज्य भी स्थापित कर लिया । बड़ा व्यापार के साथ साथ बौद्ध शव तथा वण्णव धर्मों का ग्व प्रचार हाता रहा और दवाल्या की बडे पमाने पर स्थापना होनी रही । चम्पा म ततीय गती ई० का एक मस्कृत का लेख मिलता है । साराश यह कि भारतीया का गगिया के प्राय सभी सम्य देशा से आगान प्रदान हाता रहा जिससं भारतीय सम्कृति का क्षेत्र उत्तरोत्तर बढता रहा ।

-

द्वितीय खंड

अध्याय ७

श्रीट टापू

मध्य सागर के पूर्वीय भाग का एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व है उमक उत्तरी तट पर ग्रीस, दक्षिणी तट पर मिस्र और एगियाई तट पर एनाटोलिया (एगियाई कोचक) पेलस्टाइन आदि प्रदेश हैं जिनमें अपनी-अपनी संस्कृति के जलावा बेबीलोनियन मिट्टनी तथा अरबी संस्कृतियों का प्रभाव देखा जाता है। उनके समुद्री तटों में श्रीट, साइप्रस तथा ईजिप्टन ज्वल के अनेक छोटे-छोटे टापू हैं जिनका अपना-अपना इतिहास है। यह निश्चित है कि ग्रीस की प्रसिद्ध सभ्यता और संस्कृति के उदय होने के पहले एगियाई तट तथा श्रीट आदि टापुओं में उल्लेखनीय सांस्कृतिक उन्नति हुई थी जिसका प्रभाव ग्रीस की सभ्यता पर पड़ा।

टापुआ में मम्मथन सबसे महत्त्व का स्थान श्रीट का प्राप्त हुआ था। पुरातत्वशास्त्रियों ने वहाँ के ताम्रयुग की सभ्यता के सुन्दर अवशेष ढूँढ निकाले हैं, जिनसे पता चलता है कि ईसा से ढाई हजार वर्ष पहले से लगभग ग्यारह सौ वर्ष तक वहाँ के निवासी उन्नति कर रहे और उन्होंने एसी सभ्यता की स्थापना की जिसमें मिस्र तथा एशिया की संस्कृतियों के साथ-साथ उनका अपना भी योग है। यद्यपि कुछ विद्वान् श्रीट वाणिज्य का समर्थक लागे में सम्बन्ध होने का सम्भव नहीं समझते तथापि अधिकांश विद्वानों की धारणा है कि वे लागे न तो अरबक सेमेटिक और न अफ्रीका के समर्थक थे। अनुमानतः वे एनाटोलिया की ओर से जाये होंगे। वे लम्बे, सुडौल उरहरे, पतली कमर और सुन्दर आन्ध-नाक वाले लोग थे। मूल तो कमर में घुंने तक कपड़ा लपेटे रहते किन्तु स्त्रियाँ पूर्ण आस्तीन का झालदार साया पहनी जाती रहीं। तब को ढाके रखता था, जसा पहनावा तीन चालीस वर्ष पहले यहाँ में प्रचलित था।

दो सौ तीन हजार वर्ष पूर्व उनका ताम्र और टिन को मिलाकर एक नया योग बनाने की क्रिया का रहस्य ज्ञात हो गया था जिससे उन्हें अच्छा लाभ हुआ। श्रीट टापू में करीब सौ नगरों के ध्वसावशेष मिलते हैं जिनमें नासस के अवशेष सबसे

अन्ती गताम है। गंगा का रत्नामाला नाम गंगा है जिसका समस्त प्रमाण
 व्यापार म जो गीता पर गीतागुरु का प १। उमा। गंगा पर न गोपा
 कि उमा गंगा पर आक्रमण भा कभा हा मंगल। गंगा गंगा का गंगा न गिग
 मनी गिगा प्रवार का प्रलय गहा गिगा गंगा भा। उनका उग गंगगा का कगा कगा
 धा का अभी ता शा गती। गंगा है कि उग ममय गगा और गो गरी का है,
 रक्षा न गिग कायी मगा गगा हा। मा ता उका काई प्री गंगा ग गा का गगा गगा
 गगा ने उगा मनी गगा व्यापार का गगा मगा गगा गती मगा ग गा नान
 का मगा गगा कर लिया है। जा मुछ भा है। गंगा की गती एक लाम गगा गगा
 धी रक्षा का प्रलय न करना उतरी मगी जिग न गिग उग गगा गगा गगा
 हागा।

नामक मगा गगा का क राजा का मयन गगा का गगा माग पर छ एक
 जमीन पर बना है। १०० फुट लम्ब और ८१ फुट चौड गा गगे के खाग भा इमारत
 बनी हुई है जिनमे यह प्रतीत हाता है कि वे एक गाप गिगा गाग गगा क अनुगा
 नरी बनायी गया। मुछ भाग ता काप म बन है गग ममय-ममय पर आग-पगा
 गुगा बढ़ा लिय गग हाग। मूकम ग इमारता का भारी गानि गगी गिगु १६००
 ई० पू० में उनका जीर्णोद्धार करा कर नयी इमारतें बना दी गया। मग राजमना
 एक गाप क ममान हो गया। इमारतें इग की है जिनकी छतें लका का धरिया पर
 पटा ह। बोर्ड-बाई इमारत बर मजिग की है। गगा क कभर क पगिगमी माग क
 पाम देवी का गग्य बना है, दरवार क पीछ मागार है जिगमें बर-बर मटवा म
 जेतून का ल, गराव और अनाज मरा हुआ है। पूर्वी माग म राजा और उमर
 परिवार क रहन के कभर रनिवास, स्नानागार गीचागार लगत बरतना का काठा
 पहंटेगारा की गठगिया, शम्भागार, दा बर-बर हाउ बरामद आदि मग इमारत
 एक दूसरे से मटी हुई है। बर बरामद की दोवाडा क पगतर पर बर मुग्द गुरचि-
 पृष चित्र बने हैं जिनमे उन गगा की प्रगुनि-सौन्दर्यामिरचि का अलग अनुमान
 लगाया जा सकता है। का पगु-पशी सफेद गिगे एक गुगाव के पत्र बडा गजीवना
 और यथायता तथा गनि-गिलता से बने ह। उन कलात्मक चित्रा के सौन्दर्य का दग
 कर दशक चकित और मुग्ध हो जाता है। मनप्य जोर उत्तम ममूहा के चित्रण म
 मी उद्धान लाषव और निपुणता का प्रमाण गिया है। मनुष्या का बाले और लाल
 रगा म जीग स्त्रिया को सफेद रग म चिचिन करने की परिपाटी थी। दोना की
 शरीर रचना और जाहृति का कलात्मक प्रगशन हुआ है।

वहाँ मिट्टी के मुदर रगीन धरतन बड़ी कारीगरी से बनाये जाते थे क्योंकि उनकी जय दगा में अच्छी कद्र होती थी। वे उन पर तरह-तरह के चित्र विचित्र फल-मत्तिया और जन्तुआ की मुदर डिजाइनों बनाते थे। मिट्टी के धरतना के जलावा वे जैतू का तेल, गराब तथा घातु की चीज भी बाहर भेजते थे।

नगरा का शासन सम्भवतः सन्तोपजनक रहा होगा क्योंकि वहाँ की सड़क पक्की हैं और पक्के पुठ और कुल्याएँ बनी हैं। ईसा से १६०० वर्ष पहले वे घाडा बला और रथो से काम लेते थे। उन्हें लिपि-पढ़ने और गणित का व्यावहारिक ज्ञान था। उनका जीवन निश्चिन्त और विनाशपूर्ण प्रतीत होता है। सबसे अच्छी बात तो यह थी कि उनके समाज में श्रेणीगत असमानता न थी। आर्थिक व्यवस्था इस ढंग की थी कि समाज का कोई अंग दलित या दूहृत गरीब न था। किसान, कारीगर और व्यापारी का स्थान मध्य श्रेणी का-सा था। मिस्र तथा मेसापटेमिया की तरह भयंकर असमानता न थी। फलतः लोग सुखी थे। खेल-बूद गाय गाना, व्यायाम मल्ल-युद्ध, अग्नि-युद्ध, मुष्टि-युद्ध, साँड फँसाने साँडा और कुत्ता की लडाई जादि के व शौकीन थे। वहाँ बड़े मंदिर न थे। लोग अपने घरों में पूजा गृह अथवा पहाडिया पर या गुफाओं में देवालय बनाते थे। वे लोग भगवती महामाता देवी की जिसका प्रतीक दोधारा फरसा था आराधना करते थे। उसके सिवा नागिन का पूजा होता था। कहा जाता है कि सर्पिनिया भी मयम और सजनन की सौभाग्यदायिनी दबिया मानी जाती थी। कहा जाता है कि सर्पिणी जीव की प्रतीक समझा जाती थी जिसका मरणोपरान्त स्थान पाताल लोक है।

उस सुख शान्ति और मम्पन्न जीवन का ईसा से चौदह शती पहले जाक्रमण कारिया न नाश कर दिया जिससे उनकी सम्यता उत्तरोत्तर क्षीण होती गयी। उनके ह्रास के साथ मास्सीन (यूरोप के उस भू भाग की सम्यता जा आगे चलकर ग्रीका की कमभूमि बनी) की सम्यता का उदय हुआ। श्रीट के कटु अनुभवों से शिक्षा ग्रहण कर माइसेनी तथा ट्राय के नगरा ने मजबूत किलाबंदी करना आरम्भ कर दिया। श्रीट की सम्यता का प्रभाव माइसेनी तथा ग्रीस की सम्यता और संस्कृति पर पाया जाता है।

नृत्य गला का गीत था। उ गारा पीत और माग तथा राटा टटार गाते थे। यत्रिय स्त्रिया और गुरया के रायभत्र और अधिरार गमा न थे तयारि मित्रया, बढा और जनिधिया व प्रति उनरा व्यरहार गिष्ट था।

उनके समाज में पुष्पा की दा ही श्रेणियाँ थी। एक ता राजया की जितन वचा पर रक्षा का भार था और दूसरी कृपि-धाणिय करने वाला की। राजा स्वन्त्र और बगाली गगा की राम स राजराज, सधि विग्रह आदि करता था। वह सना तथा जातीय धार्मिक कृत्या में अग्रणी का काम करता था। उन लामा का विश्वास था कि दैविक विधान म कुछ गिन चुन था। व ही गग लया तथा गगन का वाय करने की क्षमता रखत हैं। अत व काम उही व सुपु रहन चाहिए।

ग्रीस व लग शान्तिप्रिय न थे। उनका स्वभाव अल्पसंख्यत, चक्र और उदृष्ट था। लउने गगडने मुद्ध करन का व्यमन राजाआ में ही नहा, साधा रण जनता म भी था। व्यापार और अथ-सग्रह म उनही बडी रचि थी, परन्तु व र्मानदागी का कोई महन्व न देत थे। पारम का सझाट कहा करना था कि यदि किसी का यह देखने का गीक हा कि एक व्यक्ति दूसरे के प्रति जितना विश्वासघात कर सकता है और शपथ लेने पर भी म्वाय के लिए निरसकाच एक-दूसरे का गला काट सकता है, तो वह ग्रास व बाजारा में जाकर दंग ले। वे लग न ता चन मे रहत और न रहने देत थे। कोई आश्चय नहा कि उनके इतिहास में विराघात्मक प्रव लिया का विलक्षण प्रदान पाया जाता है। दगमकित देगद्रोह वीरता वापरता, वपादारो दगावाजी उदारता निरयता, बद्धिमता और भूवता एग साथ ही समरम स पूरती पाती दिवामी पडती ह।

उस युग म एगिमाई कोचर के उत्तरी पश्चिम वान पर ट्राय नाम का एक समद्विगाली नगर था। वहा प्रीजियन आरमोनियन आदि मिश्रित बबीला के लग बसे थ जिनका ग्रास वाले ट्राजन कहत थे। वहा की सभृति भी एगिमा और ग्रीक सभृतिया व मिश्रण से बनी थी। एगिमा और ग्रीस के व्यापार से उनकी बडा लाभ हुआ जिससे उनकी शक्ति तथा साधन खब बढ-बढ गय थ।

उस युग का त्रिगद वणन हामर के कायम मिलता है। अनुश्रुति के अनुसार ट्राय का एक राजकुमार स्याटा आया और वहा के राजा की भावज, हलन का पुमला कर निवाल ले गया। अपमान स श्रुद्ध होकर एविअन वग के सब राजाआ ने ट्राय पर आक्रमण करके नगर का विध्वंस कर गला। वह सप्राम दम वप तक होता रहा

किंतु वे हेल्न का बापम ल ही आये। द्राय में अंतिम विध्वम ११८७ ई० पू० हुआ। अब वहा एक धुसमानीला है जिसको 'हिसारलिक' कहते हैं।

स्वतंत्र ग्रीका के सिवा ग्रीस में दासता की बहुत बड़ी संख्या थी। ग्रीक लोगो ने पराजित लोगो को दासता की शृंखला में मदा के लिए जकट दिया था। गायद ही कोई ऐसा ग्रीक हा जिसके यहा कम-से-कम एक दजन गुलाम न रहते हा। एथस में ता खेती करवा गुठामी का काम समझा जाता था। भलेमानुम केवल जमादारा करते थे। ग्रीस के बड़े-से बड़े विद्वान दार्शनिक तथा राजनीतिन की सम्मति में ग्रीका के सिवा अय सब लोग असभ्य और निकम्म थे। वे पंगुओ के समान माने जाते और उनसे हर प्रकार की सेवाएँ ली जाती थी। वस्तुतः दासता का नीब पर ही ग्रीक सभ्यता का प्रामाद निर्मित किया गया था। यह उसकी बड़ी नैतिक कमजोरी थी।

नगर

घाटिया के पहाडिया से घिर रहने के कारण पथक्-पथक् अनेक वस्तिया बन गयी थी। ये ही नगर के रूप में विकसित हो गयी। सातवी या आठवा शती ई० पू० तक ग्रीस में ही नहीं, बरन मध्य सागर के तटा पर एव टापुआ में अनेकानेक नगरा की स्थापना हो गयी थी। ग्रीक सभ्यता में 'नगर' का विशेष स्थान है। प्रत्येक नगर स्वतंत्र था और शासन तथा सभ्यता का केन्द्र भी। वस्तुतः नगर हा राज्य या राष्ट्र था। किसी किसी नगर का आधिपत्य आसपास के कुछ गावा पर भा था, किंतु उनसे उसके संगठन पर विशेष प्रभाव न पडता था। प्रत्येक नगर में प्राय एक जाति या वर्ग के ही कुटुम्बो रहते थे जिससे उनमें बंधुत्व तथा आत्मीयता का भाव जाग्रत रहता था। नगर अपने निवासिया का प्राण विकास का साधन एव प्रतीक था और उनकी आशाआ आदर्शों सफलताआ तथा विफलताआ का प्रति-विम्बित करता था। उसके लिए जीना यामरना उनका परम धर्म और अन्तिम ध्येय था। इसी से प्रत्येक नगर राज्य के निवासिया पर आत्म-गौरव स्वाभिमान और राज्य भक्ति का नगा-सा छाया रहता था।

कई नगर किसी दूसरे नगर की अधीनता स्वीकार करने के लिए तयार न था। ऐसा करना अपमान और लज्जा का कारण समझा जाता था। इस भाव के रहते हुए वहाँ बड़े राज्यो का निर्माण हो ही नहीं सकता था, मात्राय कातो कहना ही क्या। तथापि भाषा-साध्य धार्मिक विश्वास एव विचारा और सहजानीयता क

सम्भरण व अनिखिल ग्रीस में कुछ ऐसी सम्प्राप्ति थी जिनके द्वारा उनमें ऐसा आपसी सम्पर्क रहता था जिससे सभी ग्रीक लोग का आत्म-दान, अपने महत्त्व तथा सामूहिक व्यक्तित्व का अनुभव करने का अवसर मिल जाता था। उनमें अधिक महत्त्व के कुछ देवस्थान थे जिनमें ओम्फालिया, जहाँ देवताओं एवं देवियों की मूर्तियाँ जुड़ती थीं। वहाँ विभिन्न नगरों से यात्रा आते और उत्सव मनाते थे विचारों का आदान प्रदान, नये विचार, लोग डाट के साथ साहित्यिक कृतियाँ तथा कला-कौशल वृद्धि के लिए व्यायाम आदि का अच्छा प्रयोग भी होता हुआ था। उन अवसरों पर रक्षात्मक प्राप्त करना व्यक्तियों और नगरों का विषय ध्येय समझा जाता था। ओम्फालिया का ममागह हर चौथे वर्ष होता था। उससे मिया देवी-देवताओं के उपलक्ष में नये त्योहार व मादों उन्नी दश वर्षों में आये म्याना में आये मनाये जाते थे। उन उत्सवों का ग्रीस की सम्पूर्ण समाज आचार विचार एवं संस्कृति पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

राजाओं का शासन-काल समा के पूर्व मानवा गती तक चला रहा किन्तु उनमें अत्याचारों से पीड़ित होकर सरदारों ने जनता की सहायता से या तो राज-शासन का जन्म कर लिया या विविध विधानों में उन्नी गति का नियन्त्रित कर लिया।

जाठरा से हटती गती (७५०-५५० ई० पूर्व) तक ग्रीस का नये वृद्ध से उपनिवेश स्थापित कर लिये। यात्रा के पटल डल्फी के अपोलो नामक देवता से आना माँगा जाती थी। उस अवसर पर आमपास के मित्र-नगरों के लोग का भी आमन्त्रित किया जाता था। प्रवासियों के नेता का प्रमाण जयवा अधिकार पत्र दिया जाता था जिसमें नेता का नाम उन्नीवस स्थान राज्य में सम्बन्ध की गति जाति आवश्यक बात लिखी जाती थी। उपनिवेश स्थापित सागर काला सागर, उत्तरा अक्षांश मिमरी इत्यादि दक्षिणी प्रायः स्थानों में बसाये गये थे। उपनिवेश स्थापित करने के मुख्य कारण थे व्यापार की वृद्धि एवं राज्यों का बढ़ती हुई जनसंख्या का स्थानान्तरण करना। मनुष्य रूप पर भी अनेक उपनिवेशों में स्वतंत्र हो जाने की शक्ति जयवा आवश्यकता बढती गयी। उपनिवेशों में मिमरी तथा मरारथ जैसी काश्चित् नगरों का स्थित लग बस गये थे मरम महत्त्वपूर्ण थे। (७३४ ई० पूर्व)। मिमरी पर शारा व बढती हुई गति का कार्यकाल नगर राज्य से सघन अनिश्चय गी गयी। कार्यकाल का व्यापार बढता नगर मूमध्यसागर के पश्चिमी भाग पर दूसरे का जाता जाता जान लिए धानक समझता था। फिर भी दक्षिणा प्राय

मे मस्सिलिन (मारसेड) मे ग्रीका ने उपनिवेश बना ही लिया। जिवराल्टर के जाने ग्रीक लश्कर कार्थेज के विराधक कारण न बढ सके। काले समुद्र के किनार उपनिवेश जमीन सस्या म स्थापित किये गये।

ग्रीस के प्रत्येक नगर का अपनी सम्म्यता और अपना इतिहास था। यद्यपि ग्रीस का इतिहास वस्तुतः नगर राज्या का ही इतिहास है तथापि पाच स्थान विशेष रूप मे महत्त्व रखते थे। वे थे—स्पार्टा वारिथ एथन्स, थेबीज और मेसीडोनिया (मकडूनिया)। उनके दिग्दर्शन से ग्रीस के इतिहास और सम्म्यता का इसलिए ज्ञान हा जाता है कि अन्य नगरों की प्रगति न्यूनाधिक उन जैसी ही हुई थी।

स्पार्टा

ग्रीस का दक्षिणी भू भाग पलापानसम कहलाता था। एक प्रकार से वह टापू का माना जा सकता है क्योंकि समुद्र की भुजाओं ने उसे जय प्राप्ता से करीब-करीब पथक कर दिया था। उमम कर्द राय थे जिनमें स्पार्टा का सत्रम अधिक महत्त्व था। स्पार्टा की उबरा भूमि चारा और मद्गम पहाडिया से घिरी हुई थी। वह डारिजन ग्रीकों के अधिकार मे थी। राजपूता या जापानी मिमूरिआ की तरह स्पार्टा वाल स्वतंत्रता वारता और युद्धकला के जनय सेवक थे। गारीरिक सगठन, मल्लयुद्ध व्यायाम तथा अस्त्र शस्त्र मचालन के सिवा वहाँ के प्रत्येक व्यक्ति स्त्री और पुरुष तथा समाज का अय कोई ध्येय न था। कला-कौशल, विद्या-व्यापार टाट-बाट, ऐंग-आराम जादि से उनका कोई वास्ता न था। पढना लिखना मानसिक उधेठबुन शौकाना लजाज खान-पान साहित्य-पठता विशेषकर वाक चसुरता और व्याख्यान कला का व अनावश्यक ही नहीं वरन निन्दनीय भी मानते थे। यदि उनमें किसी प्रकार का कविता का मान था तो वह था जुझावट के कर्त्ता या वीरों के गुणगान का। उनकी विचारधारा उनका दैनिक जीवन इसलिए सम्भव हा सका कि उन्होंने विजित लोग का बडी सस्या म गुलाम बना रखा था। गुलामों (ह्लटा) की सख्या स्वतंत्र लोग से दस गुनी थी। वही खेती बाडी उद्योग घघे मेवा शुश्रुषा तथा डारियन विजेताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति करत थे। व सना में भी मर्ती किये जाते थे। युद्ध मे जो अमाधारण वीरता दिखते थे उन्हें स्वतंत्र कर दिया जाता था। युद्ध स्पार्टनो और ह्लटा के बीच एक समुदाय मिश्रित जाति के लोगो का था। वे लाग स्वतंत्र थे किन्तु नगर के आसपास की वस्तिया म बसा दिये गये थे। व्यापार उही लोगो के हाथ में था।

स्पार्टा के ग्रीक अपना रतन विगुद्ध रगना आवश्यक समझन थे । उनना यह प्रयत्न रहता था कि उनकी मन्तान निज और शाण न हा । हमरिग ३ बुमारिया के स्वास्थ्य जोर उल की रभा जोर मवद्धन प्राय उगा प्रकार करत थ जमा कि अपन वालना के स्वास्थ्य की । बुमारिया का भा टोहन पूहन, मन्त युद्ध वगन यर्ठी चलाने जाति का प्रेरणा दा जाती थी जोर उनक शरीर का भी हृष्ट-मुष्ट जोर मुमगठित बनान के प्रयत्न किय जात थे । निर्माकता जोर स्वावगम्बन क साथ गमिन चतना के प्रति आनुपातिक उदासीनता उनका सिग्नायी जाता थी । निज्ञान दूर करन क लिए बुमारा की तरह बुमारियाँ भा विनोप अवमरा पर नग्न हारर जलूमा जोर व्यायाम गालाआ म आती-जानी था । वम अवमरा पर यदि उह कुदृष्टि स काई दखता या अगिष्ट गद कहता था ना उसकी दुलगा का जाती था । गुद्ध भाव जोर जाचरण वाला का गुणगान और यमिचारिया की धार निग्न की जानी थी । नग्न शरार प्रदशन एव पुरुषा स मिलन-जलन न स्पार्टा का दुराचारी नहा बनाया । वहा की स्त्रिया म शाल जोर सदाचार की कमी न थी । तुच्छापन डिठारपन स्त्रणना दुयसन और बारविलामिता क लिए उनके समाज म स्थान न था । स्त्री पुरुष सभा सीधे सादे थ । उनम विपयी व्यस्तिया की भावनाए नही पायी जाती थी । ऐसा प्रतीत हाता है कि यहा के लागा की दुनिया ही दूमरी तथा जद्वितीय थी । स्पार्टा क पुरुष जोर स्त्रिया अपनी जातायना राष्ट्र प्रेम जोर मर्याता-पालन के लिए विख्यात था ।

स्पार्टा में विवाह प्रेम का परिणाम न था । प्रेम के लिए विवाह करना मूखता समझा जाता थी । स्पार्टा वाला क विचार के अनुसार सच्चा प्रेम प्राय पुरुषा म परस्पर हा सकता ह । जय गुणा के साथ उनम कामुकता क दाप की सम्भावना थी किन्तु अविवाहित युवका म वह क्षम्य सा माना जाता था । विवाह क लिए पुरुष की उम्र कम-स-कम तीस जोर बधू की बीस हाता आवश्यक था । उल्लेख जोर खेला क अवसर पर कया पुरुष का जोर पुरुष कया का विवाह क लिए स्वयं चुन लत थे । विवाह हा जाने पर स्त्रिया क केग कटवा लिये जाने थ । पति जोर पत्ना बडे समय मे रहत थ । पति-पत्नी मतान होने पर भी प्रकाग म एक-दूसरे स मिलने न पात थ । टुक छिपकर रात्रि म किसी अघर स्थान में थाने समय के लिए मिलने पाते थे । सबम विचित्र प्रथा ता यह थी कि विवाहित्ता स्त्रा भी अपने पति क परामश जोर सम्मति स प्रतिभागाला ग्त्वान जोर पराक्रमी पुरुष स गर्भाधान कर लती जिमम उसके भी उमी प्रकार मतान उत्पन्न हा । उसी प्रकार स्त्री की अनुमति

लेकर वाई उत्तम पुण्य भी मुन्तरा जीर शुभगुण-यम विभूषिता स्त्री में उत्कृष्ट मत्तान प्राप्त करन की कामना से गमावान कर सकता था। इस व्यवस्था में वाई जमान नहीं वरन सम्मान सम्पा जाता था क्योंकि व्यक्तिगत और ममाज का ध्यय हृष्ट-पुष्ट, गूरवीर, तजम्बी मन्तान प्राप्त करना था। जविवाहित पुण्य का लाग नीची नहर से प्यत थे। अविवाहित रहना जुम सम्पा जाता था। एस व्यक्ति का नाग रिक् के अधिकार नहा दिये जान थे। श्रीम के राज्या म पिता का अधिकार था कि व चाहे ता अपने गिणु का पालन-पोषण करे अथवा मार डाले। स्पार्टा का व्यय हार प्यम मित्र था। मन्तान की उत्पत्ति होने पर गिणु को पानी के बाल गराव से भाग लिया जाता था जिससे उसकी सहन शक्ति बढ़े। रूच का व किमी पहाड़ी पर छाड आन थे। यत्ती तीन दिन बातने पर वह जीता-जागता रहा ता उसका वापस लाकर बडा मनवता के साथ उसका पालन-पोषण जीर राष्ट्र के आर्य के अनुकूल उसका गार्गीरिक् एव मानसिक सबद्धन किया जाता था। मात वप की अवस्था जान पर वह माता पिता से ले लिया जाता था। उम पर माता पिता का नही वरन ममाज और राष्ट्र का अधिकार हा जाता था आर उसका पालन और सबद्धन कतय।

स्पार्टा में स्त्रिया का स्थान श्रीम के दूसरे राया म अच्छा था। उनम स्वामि मान, स्वावलम्बन, विचार-स्वान्त्य की भावनाएँ रहती थी जीर बेघटक अपने विचारा का बहू देने का उहे जम्माय था। व अपने का पुण्या से कम न समझती और पति म गौरव व्यवहार करती थी। पुण्य ता माठ वप की उम्र तक सामाजिक भाजनालय में जा कुठ मितता उसी से प्राय मन्तुष्ट रहत, किंतु उनकी विषयत से खच करने वाली पत्नियों मनानुकूल अच्छा भाजन करती जीर अच्छ वस्त्र पहनती थी। व अपना सम्पत्ति जमा कर सकता जीर स्वय उसका उत्तराधिकारी नियुक्त कर सकती था। ऐयागी करने के लिए न ता पुण्य का न स्त्री का ही वाई प्रेरणा या अवसर मिलता था। गराखारी और मस्ता से उग्रम मचाने का यमन उन लोगा में कमी प्रचलित न हा सका। इसालिए बहा माटे भेड़े और जालसी नर-नारिया का अभाव-सा था। स्थूल गरीरवाला का उपहाम ही नही हाता था, वरन उनका डाट टपट सुननी पटती थी।

स्पार्टा में अमीर और समद्विगाली के लिए कोई स्थान न था। स्पार्टन अपने राज्य में साना चादी न आने दते थ। उनके नगर म लाठे के सिक्के चलत थे। जनएव सम्पत्ति के अभाव म जायदाद के झगडे न हात थे। वहाँ के ग्रीक लोग गरीबी से भी परिचित न थे। सरल जीर साधारण जीवन के निर्वाह के लिए सबका प्राय

एव सं साधन प्राप्त थे । वे उनमें से ही सत्पुष्ट थे । अथ लामा व पुतिमन प्रभाव में दूषित होने की सम्भावना व मय से व अपने नागरिका व विदेशी म जान अथवा विदेशिया से सम्भव बढाने व विराधी थे ।

उपयुक्त वान में यह स्पष्ट परिणाम निकला ह कि यद्यपि स्याटा म बटार स्त्री वीर, निर्भीक जान पर मर मिटन बाते तथा यंग्बी योद्धावा वा निर्माण होता था और एक प्रकार वा सममित एव आदग प्रेरित ममाज था परंतु वहाँ विद्वान, विचारशील, तत्त्वदर्शी साहित्यिक सौन्दर्यापासक दयावान् तथा बग-बुगाल व्यक्ति के लिए कोई स्थान न था । वहाँ के निवासियों वा जावन स्तना निर्यात्रन तथा सनु-चिन था कि उमम स्वतन्त्रतापूर्वक आत्मविकाम की गजाइश न था । पत्न स्याटा की सत्पुति चर्खी की तरह अपना सकीण परिधि में घूमता रह गयी । समाज की सम्यता बौद्धिक मानसिक अथवा जाध्यात्मिक उन्नति में उमने कोई स्थायी काम न किया । वहाँ की सम्यता प्रगतिशील न होने के कारण जड़ रह गयी । उसका संगठन और आधिक जीवा हलट गगा (गसा) की गुलामी पर अवलम्बित था । उही के परान और परिथम स स्याटा का निर्वाह हाता था । उनको दबाये रहने में ही स्याटा व समाज वा बर्याण था और उमी म उनका विनाश निहित था ।

स्याटा के नतिक विधान की रचना लाङ्कगस (६०० ई० पू०) ने की थी । उमके अनुसार वहाँ राजवग स चुने वा राजा होते थे जिनका परामग देने के लिए अट्टारम सत्स्या की जो साठ वष की शानु से बम के न हाते एक सिनट (जग्जिआ) थी । सधि विग्रह जाति व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्न माधारण अमेम्बली म, जिसन सन्म्य तीग वष स वम उम्र क यवित न हात थ निश्चित सिधे जात थ । अमेम्बली म वे ही लोग अपन विचार प्रकट करने पाते थे जिनस प्राधता की चानी था । साधारणतया अमेम्बली म नट क भेजे प्रम्नावा का स्वाकार अथवा अम्बीबार कर मरता थी, पर उन पर विनाश न उठा सकती थी । वेचल युद्ध और सधि व प्रम्ना पर पूठ-ताछ वा विचार प्रकट करन का सत्स्या को अवसर दिया जाता था ।

स्याटा न पहर अपनी शक्ति वा प्रयाग टेशारा नगर के दसन व लिए किया (छठी शताब्दी ई० पू०) । सत्परात उमने पठापोनशियन लीग का संगठन किया । स्याटा के शानु अरगालिम को छाडकर उसमें वेगपानसम व सभी राज्य शामिल हा गये । उमका मतत्व स्याटा न अपन ही हाया म रवा । लीग की एक असम्बली थी जा स्याटा वा वाग्मिय में शामिलन की जाती था । ईगनी साम्राज्य स मधय हाण्ड के पहले लीग संगठित हा चुकी थी ।

स्पार्टा के राजनीतिक आत्म सीमित और सकीण थे। लचीले और प्रगतिशील विचार न होने के कारण यह नवीन समस्याओं के समर्थन और समयानुकूल व्यवस्था करने में असमर्थ रहा। उसका नेतृत्व में एथेन्स की सी स्वायत्तपरायणता और महत्वाकांक्षा का लक्षण देखकर उसके साथी नगरों की श्रद्धा घटने और उत्तमोत्तमता बढ़ने लगी। एथेन्स यद्यपि क्षम विक्षत हो गया था तथापि वह अपनी परिस्थिति संभालने का प्रयत्न करता रहा। सत्याग्रह स्पार्टा ने एशियाई कोचक की ग्रीक रियासतों को फारस के आधिपत्य से छुड़ाने के लिए उम पर चढ़ाई कर दी। स्पार्टा के राजा और उमकी चुना हुई सना के एशिया में उल्लव जाने से ग्रीस ने थेबीज, कोरिन्थ आदि नगरों को उमके आधिपत्य से मुक्त हो जाने का अवसर प्रस्तुत कर दिया। एथेन्स और आरगस भी उन नगरों के साथ हो गये। स्पार्टा ने यद्यपि कई युद्ध जीते तथापि परिस्थिति प्रतिबल ही रही। अततागत्वा फारस के सम्राट में संधि करके स्पार्टा ने उसमें सहायता मांगा। स्पार्टा ने एशिया में अपना सना हटा ली और वहां के ग्रीकों का उनका भाग्य पर छोड़ दिया। उधर से छट्टी पाकर स्पार्टा ने फिर ग्रीस के राज्या का विद्रोह दमन किया। अपनी शक्ति को और भी सुदृढ़ करने के लिए उसने सिसली और इटली के ग्रीकों में भी सैन्य का समर्थन जाड़ लिया। इन सब प्रयत्नों का परिणाम यह हुआ कि स्पार्टा के नेतृत्व में ग्रीस का ऐसा सत्याग्रह जारी रखी करण हुआ जमा कि पहले कभी नहीं हुआ था (३९५ से ३७० ई० पू०)। स्पार्टा में ग्रीस तथा इटली, सिसली में ग्रीकों के सब राज्या के प्रतिनिधि एकत्रित हुए। फारस के सम्राट का दूत भी उममें दूतों के रूप में आमंत्रित किया गया। सम्भवत यह विचार सम्मेलन ससार के इतिहास का सबसे पहला अन्तराष्ट्रीय आयोजन था जिसका ध्येय सावदशिक शांति की स्थापना था। उममें यह निश्चय हुआ कि जितने ग्रीस के राज्य हू वे सत्र स्वयं निरन्तर हू। ध्येय तो सबथा प्रशंसनीय था, किंतु वह सफल न हो सका। कारण यह हुआ कि थेबीज के राज्या की जार में संधि पर हस्ताक्षर करना चाहता था। स्पार्टा वाले उस किसी अर्थ का प्रतिनिधि मानने का तैयार न हुए। फलतः दोनों में युद्ध हुआ और युद्ध छिन्न गया। थेबीज का नेता एपामिनाण्डस मुशील गजभवत चतुर नीतिज्ञ मुशिभित विचारक प्रतिभाशाली और योग्य सनायायक था। भक्ति संगठन और सेना परिचालन में उसने नवीन विधान प्रचलित किया। त्यूक्तों के मनान में उसने स्पार्टा की सेना को पराम्भ कर दिया (३७१ ई० पू०)। इस घटना से स्पार्टा की शानति विरक्तिरी हो गयी। नेतृत्व उसके हाथ से निकलकर थेबीज राज्य को मिल गया। स्पार्टा ने एथेन्स के साथ

मिलकर बेबीज पर फिर आक्रमण किया। सयुक्त मेना का एपादिनाण्टम ने मेण्टी निआ के मैदान में करीब-करीब हरा लिया था, किंतु दक्षिण में उमका निधन हो गया (३६२ ई० पू०)। यद्यपि विजय किमी दूर का न मिली, तथापि थोड़ा की शक्ति का ह्रास ही गया। उमा के साथ स्पार्टा का महत्त्व भी नष्ट हो गया।

एथेन्स का परास्त करने स्पार्टा ने ग्रीस का ऐतत्त्व (८०४ म ३७१ ई० पू०) किया। उसका एक मात्र ध्येय एथेन्स के प्रभुत्व से ग्राम के नगर राज्या का मुक्त कराना था। पर उमम भी वही लाजसा जाग उठी जो एथेन्स म थी। उमने भा जय राज्या पर पना कमना शुरू कर लिया। स्पार्टा एव थबीज का युद्ध करना तो जाता था किन्तु उसके सिवा उमम कोई ध्येयना या एसी विनोपता न थी जिमके जाचार पर व अपना महत्त्व तिहाम म बनाय ररन। यही नही, व अपन लाम व त्रिण ग्राम के गनु फारस से मित्रकर एक दूमर क विनाश म सख्त हा जाते थ।

कोरिन्थ

एथेन्स के उत्थान के पहले कोरिन्थन कबीले के कोरिन्थ नगर का अधिक धन धमक और सस्कृति के प्रभुत्व ही ख्याति प्राप्त हो गयी थी। वह नगर उसी नाम के डमरमध्य की पहाड़ी पर स्थापित होने के कारण अपना विशेष महत्त्व रखता था। उमे मणि पिण्डनेसस का मयाजक जयवा विभाजक स्थान कहा जाय तो युद्धिनसगत हागा। वहा स ग्रीस के भीतर जयवा समुद्र द्वारा व्यापार करने का बड़ा मुमाता था। उसन प्रबल जहाजी बड़ा निर्माण कर (८वीं शती ई० पू०) यहाँ-वहा अपने उपनिवेश स्थापित कर दिये जिनसे अच्छा व्यापार चलने लगा। मिमला का गुप्रमिद्ध मुद्रा और समद्वगाली मरात्रयज नगर कोरिन्थ बाग न समाया था।

कोरिन्थ न निवासा गक्ति के उपायक थ। जूना नाम की देवा श्रिया के अहि वान दाम्पत्य जीवन और मन्वान की श्रिया मानी जाती था। वानस राम की दूमरा दबी शैविक प्रम एव सा दय की प्रतीक और मरश्रिया गिनी जाना थी। व्यापार द्वारा कोरिन्थ नगर समद्व और धनवान हाता गया। जतएव वहाँ मात्र प्रमा और नाग विंगम के साधन प्रचुर मात्रा म उपस्थित हो गये। मगश्रामुक्तिया तथा श्रिया कात्रा श्रियापकर मन्त्रा की सविवाश्र और त्व-श्रामिया का वहाँ जमघट था। सम्राज म उनका अच्छा सम्मान भा था। यूराप और श्रिया के शनी व्यापारी वहाँ माग विंगम के श्रिए आन और पयाप्त धन गता जाते थ। जत्र कोई नयकर विपत्ति आ जाता थी, तब मगश्रामुक्तिया और श्रियाकात्रा द्वारा बीनम दबी प्रमद की

लिए प्रतिष्ठित हो गया। उसका मासृतिक प्रभाव जाज़तन 'यूनायिड' मात्रा में चल रहा है। वहाँ के कलाकारों राजनीतिशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र के विचारकों का आज भी सार-ससार में स्वागत हो रहा है। एक महत्त्व फुट लम्बा और पाच सा फुट चौड़ी चट्टान पर बसा हुआ एथेस नगर सबटा नहीं। वर्गन सहस्रा वर्षों तक मध्य समार के मध्यान का पात्र ही गया। इसका रहस्य वहाँ के निवासियों की स्वातन्त्र्य प्रियता और प्रगतिशीलता में है जिसका वहाँ के प्राकृतिक सुन्दर वातावरण शीरविचित्र समस्तके के जावपणान फुट और समद्व निया। वहाँ के निवासी न ता सपाटा वाला के समान कछुएकी तरह अपन जावरण के सवृचिन म्द्र न कारिय वाला की तरह निश्चितता के साथ अपनो शक्ति का क्षय करते रहें। एथेस नगर ग्रीस के एटिका नामक प्रांत में था जिसका क्षेत्रफल एक महत्त्व वग मील से गायद ही कुछ अधिक था। उस प्रांत के निवासी अपन का एथीनियन कहना पसंद करते थे न कि एटिकन।

एथेस के शोक आयानिदन ग्राउ के थे। उनका विश्वास था कि वे कहीं बाहर से नहीं जाये थे, वही के मूल निवासी थे। डारियन जात्रमण के माग में वे पटने के कारण वे उसके भयकर परिणामों में बच गये और उनका विनाश अपने स्वयं माग पर चलता रहा। एथेस के निवासियों के तीन वग थे। सब से घना और सम्पन्न लोग मदाना भूमि के जमीनदार थे। मध्य श्रेणी के विदापत व्यापारी जात्र उद्योगों में गगन समुद्र तट पर बस गये थे। गरीब लोग पहाड़ी पर बसे हुए थे। उन ताना वर्गों में पारम्परिक स्पर्धा और द्वेष रहता था।

जय नगर राया के समान वहाँ भी पहलू प्रमाण राजतंत्र फिर कुशलता और बाल में जनतंत्र स्थापित हुए। राजतंत्र युग के सम्बन्ध में हमारा ज्ञान नगण्य मात्र है किन्तु इनका ज्ञान है कि राजा के स्वच्छाचार के नियंत्रण के जिले वहाँ की प्रभावशाली सक्तिता की एक समिति ईमा के पूर्व सातवीं शताब्दी में स्थापित हो गयी थी। मन्थ्या का चुनाव प्रति वर्ष होना था। समिति का एरिजापिण्डाम नाम लिया गया था। उसमें मुख्य यादाधान सनाध्यय आदि थे। जो अरवाना के सिद्ध भनपूर्व अरवाना की सभा की जिसका उत्तम्य बानुना या प्रतिपादन कराना और बानुन भग करने वाला का दण्ड देना था। मन्थर पिवा आयानियन गंगा के चार मुख्य बवाल थे जिनकी तीन चार सौ गण्ठाण था जिनका सामाजिक मण्डल, रहन-सहन धार्मिक विचार एवं जीवन के जात्र प्राय समान था। वहाँ लाग मतिक समाने जान और उदा का अरवाना के चुनने का भी अधिकार था। साधारण जनता के

अधिकार अग्निचित एवं नगण्य-सं थे। वाम्बविक अधिकार कुलीना के हाथ में था जा प्रायः जमानार अथवा मफर व्यापारी होने थे। कृषक वगैरे में डडा जाना था। ऋण न चुका सकने के कारण स्वतंत्र मूनानी या ता अपनी बहना बटियाया बच्चा वा बच्चेकर गुलामी भ मुक्त होने थे अथवा लग छोड़कर विदेश भाग जान थे।

एथेस में कुलीना का समुदाय पहले मेही प्रबल था। व्यापार में घनिता का उदय हुआ। उनका नी दल बन गया। कुलीना का महत्त्व कम हो जान के दो कारण थे। पहला कारण था नये दग की पदल सेना (हाफ्लान्ट) का मगठन जिनमें घोडमवाग की महिमा कम हा गयी। दूसरा कारण मिक्का का प्रचलन हुआ जिससे उद्यमी जकुगेन भी अमीर और प्रभावशाली होने लगे। जमादारा और व्यापारिया व अनाचार और साधारण जनता की आर्थिक अवर्धन के कारण अम ताप बढता गया जिनमे विद्रोह का नयनर आग भडक उठने का आगावा हा गयी। उम गान्त करन के लिए पहला प्रयत्न देना (६२१ ई० पू०)न यह किया कि एथेस के कानून लिपिबद्ध कर लिये किंतु उमम उनकी कठोरता और जरता में कोई कमी न हुई। साधारण जनता ऋण और गरीबी व बाध में दबती ही रही और आर्थिक भमस्या ज्या की त्या बनी रही।

अनाचारी बलात्कारी गामना का युग ६०० ई० पू० मे १०० ई० पू० तक रहा। अनाचारी के कह जान थे जो अबध दग में गसन पर आधिपत्य जमाये रखन थे। अमन्नाप के कारण जनता में उत्पन्न श्रान्तिकारी भावा में अनाचारिया का दल प्राप्त होता था। व उससे लाभ उठान थे। अनाचारिया के सुझारा में जनमत्ता का सबधन होता था। अनाचारी गसन का आरम्भ लीडिया में हुआ। जय नगर में भी वह पटना गया। छठा गताद्री ३० पू० के आरम्भ में (५९४ ई० पू०) एथेस वामिया ने कानूनो में सुधार करने के लिए सोलन (६०० ई० पू०) नामक एक उदार-चेता राष्ट्र भवन तथा विद्वान का चुनाव किया। सोलन की शिक्षा मित्र में भी हुई थी। ग्रीस की गतिविधि से वह पूरी तरह परिचित था। उसने प्रजा का सब प्रकार का बज ही नहीं माफ कर दिया वरन् उमके कारण उनकी जा सम्पत्ति अथवा स्वतंत्रता छिन गयी थी वह भी उनको वापस करा के ऐसा कानून बनाया कि जिनम बज के लिए उन्हें फिर उम खोना न पड़े। भाय पदार्थों का भाव कम करने के लिए उमने फरा और अनाज का बाहर ले जाना राक लिया। व्यापार एवं कला-वीणल की उन्नति के लिए बाटर व कारीगरा का बुलाकर उमने नगर में बसा लिया। व्यापार की उन्नति के लिए उमने मिक्का, नाप-सोल तथा यात्रायान में सुधार किये,

किंतु सत्र से महत्त्व का वाय जा उसने किया वह सावजनिक सभा में सब नागरिका का भाग लेने का तथा व्यापारी को चुनने का अधिकार प्रदान करना था। यही नहीं, उसने एक जूरी सभा का जिसमें तीस नप स अधिक उम्र के लोग थे, यह अधिकार दिया कि मजिस्ट्रेटों की वापिक अधिकार के समाप्त होना पर यदि वह चाह तो जनाचार के लिए उन पर अभियोग वायम कर दे। यद्यपि सालन के मुद्धारों ने एंग्लो-मो प्रगति के माग पर आग बनाया तथापि अधिकार प्रदान में उसने धनिका का उनकी हैसियत से नहीं अधिक महत्त्व दिया।

सोलन के सुधारों से रष्ट होकर कुलान अधिकारी वग न उपद्रव करना आरम्भ कर दिया। कुछ उद्दण्ड, अत्याचारी लोग ने शासन को प्रभुत्व अपने कठोर में करना शुरू कर दिया। किंतु जनता के विरोध तथा अधिकारी वग का पारस्परिक द्वेषों के कारण उद्दण्डता के दोष एक एक करके या तो मार गये या दंग से मगा गये। सत्र अधिकारी वग के असंतुष्ट अथवा उदारचेता व्यक्ति जनता के नेता बनने लगे। शासन की नीति से जमींदार असंतुष्ट रहे। उनके सिवा पहाड़ों पर रहने वाले पशुचारियों का कोई विशेष लाभ न हो स उनमें भी असंतुष्ट रहा। उस परिस्थिति से लाभ उठाकर पिसिस्ट्रेटस नगर का नेता हो गया (५६०-५२७ ई० पू०)। उसने गरीबों की कृषि के माध्य जमीन जोड़ और जोड़ने के लिए पंग आदि दिलवाय। वाय वितरण के लिए जंगल के घस घूम कर गावा में अनालत वगन का परिपाटी चलायी। जनता का प्रसन्न वगन के लिए सड़का सुंदर दवालयो तथा धार्मिक उत्सवों की स्थापना की तथा कविग्रा और कलाकारों का संरक्षण और प्रोत्साहन किया। व्यापार विपत्त निर्यात व्यापार बगान के उसने प्रयत्न किया। उसके नामनका में एंग्लो-मो न काफी उत्तरी की। बगानगत महत्त्व प्राप्त कुलीना की शक्ति घटान के लिए कंगीर्यनीज (५०७ ई० पू०) ने गंगस को दस मागा में विभक्त कर दिया। कम नीति से कुलीना की सामूहिक शक्ति निबन्ध हा गयी और प्रभुत्व प्राप्त वगन प्पर उभर बट गया। विभक्त हो जाने में वे विभिन्न क्षत्रा में अल्पमत्त्वक हा गया। सेना में विभिन्न कुला के साथ ही अथ थ्रेणिया के लोग भी भरती क्रिय जान गग यहाँ तक कि सेना में कुलीना का महत्त्व क्षीण हो गया। पत्यक नागरिक का व्यापारिक अनुभव तथा शासन का पान उपाजत करने और कुलीना तथा जंगल स्थित विचारों का संकन करने के लिए उसने अधिकारिण सरया में निर्दिष्ट जंगल के लिए जंगल के चुनाव की परिपाटी स्थापित की। प्रत्यक वकील में पचाम पचित प्रति वप चुन जान जा उलास किया तक नामन वगन थे।

प्रति दिन उही म म एक व्यक्ति समापति चुन लिया जाता था। इस सुधार का यह परिणाम हुआ कि राज्य मन्त्र (बूरी) में पाच मी मन्स्य हा गये जिनकी मददस्यता का परिवर्तन चत्र व मन्त्रा हाता रहता था। राज्य समा सधि निग्रह तथा उन विषया पर जिन्हें वह मन्त्रा में भेजना चाहती विचार विमर्ग करती थी। एथेस का प्रत्येक नागरिक साधारण जनमन्त्रा का (एक्कीसिआ) सदस्य हाता था। जनमन्त्रा हर दसक दिन बठता और राजमन्त्रा के प्रस्तावा व अनुकूल कानन बना देती थी। उपर्युक्त सुधारा स प्रजातंत्र शासन पूण रूप म स्थापित हा गया। किन्तु उमका यथेष्ट मफलता दुसलिए प्राप्त न हा सकी कि लोगा म शासन का राव, दत्रदया और महत्व क्षीण हा गया। नये शासका म वगानुगत श्वाभिमान एवं कत्तव्यपरायणता का भी ह्रास हो गया। ईरानिया मे मिलजुठ कर चलने की बरीस्थनीज की नीति जिमका स्पार्टा ने प्रबल विराध किया जागे चलकर उमके तथा एथेस व लिए अहितकर सिद्ध हुई। क्लीस्थनीज ने गरीत्र जनता के भी अधिकार प्रदा दिये और देश निष्कामन का कानून ऐमा बना दिया जिमम प्रति वष म दह मान पर जनता जिमे चाह दश स दम वष के लिए बहिष्कृत कर द सकती थी। यद्यपि उम कानून का दुस्पयाग हुआ तथापि जनता की शक्ति की ऐसी धाक बध गयी कि ग्रीस व अय गग म सनमनी मच गयी। एथेस म साधारण जनता की बढ़ती शक्ति मे घबरा कर स्पार्टा ने खुल्लमखुल्ला उमका विराध किया।

पाँचवा शता ई० पू० में ईरान तथा ग्रीस का भयकर सघष हुआ जिसके प्रभाव से ग्रीस में अपूर्व स्फूर्ति आर उन्नति हुई। पिछले अध्याय म यह वणन किया गया है कि ईरानी सम्राट कुरुश के समय मे ईरान का साम्राज्य उत्तरात्तर वन्ता रहा। सेलिटस नगर का छाडकर एशियाई तट पर स्थित यूनानिया व सब नगरा का लीडिया वाला ने अपने राज्या मे भिग लिया। मध्यसागर के पश्चिमा तट पर स्थित यूनानी नगरा का एक-एक करके लीडिया वाला ने हडप लिया जिमसे व बडे बली, वमवगाली हो गये। लीडिया वाग का राज्य नष्ट करके माइरस नाम क फारस के सम्राट ने उनकी राजधानी सारदेस को तथा उनके राय का अपने साम्राज्य म मिला लिया। फत्र एशियाई तट के नगरा पर फारस का प्रभुत्व स्थापित हा गया, किन्तु यूनानी नगर पुन स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए जादोलन और प्रयत्न करत रहे। ग्रीम वागे डाकी सहायता करत थे। यूनानिया की विन्ता उनक राय एवं विराध के साथ बन्ती गयी। ग्रीम वाला और विरोध एथेस ने कुछ महायता भी दी, किन्तु बठ ईरानी शक्ति की बढ़ि को न रोक् सकी और उमका परिणाम यह हुआ कि

ईरान का ग्रीस यूनान से वमनस्य इतना बढ गया कि दारा ने उस पर चन्पाई कर दी ।

डारिअस प्रथम (दारा) का पहला आक्रमण (४९२ ई० पू०) जल और स्थल दाना मार्गों सहजा, कि तुझेस की बबर जातियां क विराध तथातूपान की भयकरता स वह विफल हुआ । दा वप बाद दारा ने लगभग बीस सहस्र सेना से दूसरा आक्रमण किया । एथेस क पास मराथान क मदान मे एथेस की दस सहस्र सेना ने ऐसा धार युद्ध किया जिसमे इरानी सेना को पीछे लौटना पडा (४९० ई० पू०) । एथेस ने अपनाही नही बरन ग्रीस की भी रक्षा की और उसके आत्म विश्वास तथा महत्ता को अभूतपूर्व उत्तेजना प्रदान की । दारा के पुत्र जेरेक्सीस (क्षयाप) ने सम्राट होने क चार-पात्र वप के बाद ही ४८० ई० पू० म बडी मेना लेकर ग्रीस पर भयकर आक्रमण कर लिया । उमक साय लगभग छ लाख सनिक ये । थर्मोपली क दर्रे पर स्पार्टा के राजा लिआनिडम ने तीन सौ चुने सनिका क साथ ईराना दल का रोकने की चेष्टा की । दर्रा बहुत सक्कीण था इसलिए यह साहसिक प्रयत्न सम्भव हो सकता था किन्तु ग्राक जाति क द्रोहिया द्वारा दिवाये हुए दूसर भाग स इराना सनिको न स्पार्टा के मनिका का घर लिया और वे लटक कर कट मर । यह घटना ग्रीस के इतिहास में राजपूताने का हल्दाघाटी घापी घटना स भी बहुत अधिक महत्त्व रखती है । इसने मार ग्रीस म नया जीवन एव उल्माह पूक दिया जिसका बहुत गहरा प्रभाव जनता पर पडा ।

ईराना सेना ने एथेस का घेर लिया । वहा क निवासी हतास स होकर नावा पर चक्कर भाग निकल । एथेस तथा अन्यकुछ नगरनष्ट भ्रष्ट कर लिये गये जयवा जग लिय गये । किन्तु जब भुगव म जाकर ईरानी जल-सना न ग्रीस क जहाजी बेट पर सेलमिम में आक्रमण किया तब वह परास्त हा गयी (४८० ई० पू०) । उमना कारण यह था कि स्थान की सक्कीणता क कारण अपने भारा जहाजी बडे का अच्छा तरह सञ्चालन फारस वाल न कर सक । इसके सिवा स्थल सना का जाव न्यत्र रस्त पहुचाना भी बढ हा गया । फिर भी फारस की स्थल सना लगभग एक वप तक ग्राम में जमा रही । विघ्न हाकर क्षयाप सना का नन्तर्प मर्नोनियस का बबर लौट गया । दूसर वप प्लाटी के मन्तन म मर्नोनियस क निघन स ग्रन्त हाकर ईरानी सना क पर उल्लड गये । विजयप्राप्त ग्राम वाग्य क पन्म म चग गया । उना क साय अपार धन जन्त्र गस्त्र साज-समान ग्रीका क हाय लगा । ग्राम का आनक और महत्त्व बढन कट गया ।

ईरानी आक्रमणों से अपनी रक्षा करने के लिए ग्रीस का संयुक्त शक्ति की आवश्यकता पड़ी तथा उससे स्पष्टतया लाभान्वित करने के लिए किसी न किसी प्रकार का संधि स्थापित करने की प्रेरणा भी उन्हें हुई। संधि की इसलिए भी आवश्यकता थी कि बिना उसके न तो ईरानी शक्ति का अवरोध हो सकता था, न ईरानियों द्वारा जीत हुए मध्यसागर के तट के ग्रीक नगर अपना स्वतंत्रता की रक्षा करने की आशा कर सकते थे। एथेन्स के नतत्य में एक संधि का निमाण हुआ जिसका नाम डीलियन संधि इसलिए रखा गया कि उसका वे डिलीस में था। संधि की वापिक बंधन होना तथा उसका वाप डिलीस में रखना निश्चित हुआ। संधि की मरम्मे बड़ी कमजोरी यह थी कि उसमें 'पेल्लोपनेस' के राज्य जिनका नेतृत्व स्पार्टा करता था सम्मिलित न किये जा सके। पेल्लोपनेसस बाला ने अपनी लीग बना ली जो पेल्लोपनेसिस लीग कहलायी। इस प्रकार ग्रीस के राज्य एकता स्थापित न करके दो बड़े संधि में विभक्त हो गये जिनकी नीति और ध्येय विभिन्न होने के कारण भविष्य में पारस्परिक संधि के बीज पनपते रहे। स्पार्टा की नीति राज्याधिकार का विनिष्ट वग में सीमित रखने की थी। एथेन्स जनता का प्रभुत्व देना चाहता था। स्पार्टा का ध्येय, तथापुत्र संरक्षणार्थक था, किन्तु डीलियन लीग का आक्रामक। स्पार्टा की नीति स्थल पर ही प्रभुत्व सीमित रखने की थी, किन्तु डीलियन लीग समुद्र पर आधिपत्य स्थापित करना चाहती थी।

प्रारम्भ में तो यह निश्चित किया गया था कि डीलियन संधि के बड़े राज्य नौकाएँ तथा निश्चित परिमाण में आर्थिक सहायता भेजा करे, किन्तु बाद का अधिकांश राज्या ने केवल धन से सहायता करना ही सुविधाजनक समझा। इसका परिणाम यह हुआ कि एथेन्स ने लीग के धन से नौकाएँ बनवा कर अपनी नौशक्ति का प्रबल कर लिया। एथेन्स की बढ़ती शक्ति से घबराकर तथा ईरान का आर से चिन्ता मुक्त होने के कारण जिन नगरों ने अपना भाग देने में उदासीनता या हिचकिचाहट दिखायी उनका एथेन्स ने बलपूर्वक दमन किया और उनका दंड दिया। पारस के विनाश साम्राज्य की प्रबल शक्ति से ग्रीस की रक्षा करने के लिए शायद यह आवश्यक था कि ग्रीस का साधिक संगठन सुरक्षित रहे। यदि कोई राज्य संधि की अवहलना करता दिखाने पड़ता तो एथेन्स उसका दवाने का प्रयत्न करता था। घोर धार तीन चार राज्यों के सिवा कोई भी राज्य स्वतंत्र न रहे गया। यही नहीं एथेन्स न संधि के कोप को डिलीस से हटा कर अपने यहाँ रख लिया। इसके सिवा राज्या के वगडा का मुलज्ञान के लिए एथेन्स में एक अदालत भी स्थापित कर दी। इस प्रकार

हो गया और शामन विधान में तदनुकूल सन्धान कर दिया गया। सिमान के पतन व पश्चात् पेरिकलीज का नेतृत्व प्राप्त हुआ।

पेरिकलीज का युग (४९० से ८०९ ई० पू०)

पेरिकलीज एक सुप्रसिद्ध नीमना नायक तथा एक प्रतिष्ठित कबी वंश की कुलम्बी का पुत्र था। उसकी माता कबीस्थनीज की भनीजी थी। सुगमिन्त लागास मिलने-जुलने तथा जनकमार्गारम नाम के प्रसिद्ध दार्शनिक के समकालीन उमकी अच्छी शिक्षा-शिक्षा हुई जिससे उमकी यह विश्वास हुआ गया कि मनस्त्व ही पुरुष की महानिधि है और अतनागवा वही सर्वश्रेष्ठ शक्ति है। वह गभीर और आत्मस्थित था। उसे न तो माघारण लागास मिलने-जुलने का शौक था और न शकप्रिय होने की कामना। किंतु उसके विचार प्रातिकारी थे। प्रगतिशील दल से उसकी सन्तुष्टि थी। उस दल का ध्येय स्पार्टा के प्रभाव से मुक्त रह कर ऐसी नीति का प्रतिष्ठित करना था जिससे जनसत्ता का बालबाला रक्षित हो सके। प्रभावशाली तथा सफल नौ सनापति 'सिमान की नीति उम नीति के विपरीत थी। प्रगतिशील दल का प्रभुत्व बड़ा जिसकी तरंगमाला से प्रेरित होकर पेरिकलीज का प्रभुत्वधारी नेता बनने का मौभाग्य प्राप्त हुआ। उमन सिमान की नीति का माघह विरोध किया। एथेस और स्पार्टा की विरोधात्मक नीति के कारण विनाशकारी युद्ध छल गया। इस युद्ध से एथेस का पहलूता राज्य-वैद्धि हुई। समुद्री क्षेत्र में उमका साम्राज्य-स्थापित हुआ गया और ईरान साम्राज्य से उसका मान सहित संधि भी चलनी गयी।

पेरिकलीज ने ४५० से ४४३ ई० पू० तक अपनी प्रजातान्त्रिक नीति का कार्य निरूढ कर दिया। सिमान के दाभाद ध्यूमीडाण्टा के प्रत्यक्ष विरोध करने पर भी पेरिकलीज ने प्रस्ताव का समझौता से स्वीकृत करवा लिया। पेरिकलीज की नीति थी कि एथेस का जखड़ और पूरा प्रासाय गीम में ही जिसमें स्पार्टा या किसी अन्य राज्य का भासा न होना पाये। प्रजातन्त्र का पूरा विकास होना के लिए यह आवश्यक माना गया कि राज्यसत्ता करने वाला का आवश्यकतासमर आर्थिक सहायता दी जाय। एथेस की राष्ट्रनीति का विगुद्ध रखने के लिए उहा को नागरिक अधिकार दिया जाय जिनका पतक एक मातक परिवार एथेस के आयानियता का हो। राज राज में लगे लोग का सेवा के अनुसार बनन दिया जाय। जिन लागा के पाम जमान नया उनका जय राया से ली हुई भूमि पर समाया जाय जिसमें उनमें भूमिरक्षा का उत्साह बढ़े और उनका भरण-पोषण भी हो। उपर्युक्त मुधारा का एक आवश्यकता

मुगार अन्तर्गण्ड्रीय काय से पूरा किया जाय। उमा कोष म एथम का धामा बनाये का भी राय गिराला जाय। ईरात म यद्ध धातु हा जान क बाट काय क धर का व्यय पत्ता न रगतर उमता गदुपदाग हाता चागिण। तन्मुगार पारयाता का विश्वप्रगिद्ध मन्दिर तथा म्यापत्य बना की मय्याता ग। छोटा राट्टरता एथना की हाधीनत जोर स्वण मे बनी विशाल प्रतिमा नत्यगाग्य ध्यायामगाग्य गताता गार आदि का निमाण हुआ। उगयता गीनि म एथम का श्रीधदि क गाथ बरार लोया तथा कारीगरा का काम मिग गया। गुगु गायता ग उग धन के उगयता उपयाग का विरोध किया, गिन्नु बल ग बर गता। एथम मनुडिगाग्य गता गया परन्तु लीग क अय राय्या म उगने प्रति श्रद्धा धरन और जमन्नाप बन उगा।

पेरिक्लीड का युग सबसम्मति म ग्रीम का मरण धन माना जाता ३। उगत युग में एथम ने बग्यनीगल माहित्य गान गिगात में एगी अम्भुड उगति एर चमरट्टनि गिवायी कि उमता नाम ममार क श्रदिहाग में अमर तथा यूगाय क श्रदि हाम में सर्वोपरि हा गया यद्यपि तत्कालीन यस्ति उम युग का व्यय बमय और पतनामुग प्रवृत्तिया का युग समजते थे। यही नही उग युग में गीग का या कल्पि एथेस की नौगक्ति का मध्यगागर म जरापिन प्राधाय स्यागित हो गया था। एथेस नगर राज्य न रहतर उस बाल म एक समुद्रा साम्राज्य बन गया। प्राग क नगरा का नता बन कर वह उनका गास्ता मा बन बडा। दुग है कि ग्रीम क इनिहाग और सस्वृति की परपराआ का उत्पधन कर वह माभायाय एवय क प्रलाभना में पस गया। जिस ईरानी साम्राज्य की नीति का विराय करना ग्रीम अपना बनत्य समझता था वही अय उसका जाग्य बन गयी। ईरानी साम्राज्य का दमन करन करते एथस स्वय साम्राज्य म परिवर्तित हा गया।

पेलोपनेसियन युद्ध (४३१ से ४०४ ई० पूव तक)

पेलोपनेसियन सघ स्पार्टा के नेतत्व मे पुरानी नीति पर आरुढ था। एथम की नीति और उसके उत्कथ को स्पार्टा बहुत समय तक सहन न कर सका। स्पार्टा की नीति ग्रीस के भीतर हा रहकर स्थग गक्ति सगठित करन की थी विन्तु एथेस की नीति ग्रीस म हा नही बरन् ग्रीम स बाहर निकलकर साम्राज्य स्यापित करने की थी। एथेस ने अपने प्रमुत्व के द्वारा समुद्री यापार भी अपने हाथ म ले लिया। इससे दूसरे यापारिक नगरा की हानि होने लगी। फन्त बैमनस्य और भी बड गया। जब कोरिथ नगर ने एथेस के अनाचार तथा अनियन्त्रित आधिपत्य से रक्षा

करने के लिए स्पार्टा से प्रायना की तब उसने प्रसन्नतापूर्वक निमंत्रण स्वीकार कर लिया। युद्ध छिड़ गया। युद्ध में आसपास की बस्तियाँ उजाड़ डाली गयीं। एथेस का अवरोध हुआ। यद्यपि प्राचीरा के पीछे एथेसवासियों ने छिपकर आत्मरक्षा तो कर ली, किन्तु नगर में अग्नि देवता का नाडव नृत्य होता रहा। यदि एथेस के मौभाग्य से जात्रमणकारिका को रमद की कमी हो जाने से वापस न जाना पड़ता तो शायद एथेस नेम्ननाबूद हो जाता।

दूसरे वर्ष फिर एथेस पर आक्रमण हुआ। वहाँ प्लेग का प्रकोप भा हुआ जिसमें श्रीस्थनीज की मृत्यु हो गयी (४२९ ई०पू०)। नगर के तिहाई निवासी मर गये। एथेस में त्राहि त्राहि मच गयी। एथेस का आर्थिक विनाश हो गया। अत्याचारी और उद्दण्ड लोग नेता बन बठे। ऐसा विषम परिस्थिति हाथ हुए भी यूनानिक तीव्रता के साथ पलापनेमियन युद्ध मत्ताइस वर्ष तक चलता रहा।

इस समय एथेस के सम्पाहक एवं भडकीठे, किन्तु अदूरदर्शी नेता 'एग्मात्राय-डीज' का वहाँ की जनता पर ऐसा जादू चल रहा था कि वह उमका उगलिया और इगारो पर नाचती थी। उनकी प्रेरणा से सिमला के प्रसिद्ध टाग्यिन उपनिवा मेरास्पूज पर एथेस के जहाजी बडे ने जात्रमण किया (४१८ ई०पू०)। किन्तु यह निष्फल ही रहा वरन् विनाशक सिद्ध हुआ। एथेस का नौगिकि का आतम टूट हो गया और इस नौगिकि के परास्त होने से स्पार्टा का उम पर आक्रमण करने की पुन उत्तेजना हुई (४१३ ई०पू०)। उमका जहाजावटा भी स्पान की महायता से स्पार्टा के जलसेना नायक साइमेण्टर ने पराजित किया (४०५ ई०पू०)। एथेस जल और स्थलदानी ओर से घेर लिया गया। अन्ततः एथेस का पान हो गया (४०४ ई०पू०)। उसकी प्राचीरें तोड़ दी गयीं, जहाज छान लिये गये और स्पार्टा का अनुचर बने रहने का उसे वचन देना पड़ा। स्पार्टा में गिरा हो गया। एथेस का उत्थान और पतन सत्तर वर्ष के भीतर ही हो गया। एथेस के पतन के माय युद्ध के कारण क्षत विक्षत आत तथा आदम च्यन शम गिरना ही चंगा गया। कुछ विद्वानों का विचार है कि उच्छृंखल एवं अमर्याद जनमत्ता की क्षुद्रता अयोग्यता और स्वाधाघता के कारण ही एथेस का विनाश हुआ।

एथेस की जमूतपूर्व सांस्कृतिक जनति उमक पतन का क्या न राव सकी इसके मुख्य कारण तो वहा की जनता की अमर्याद एवं नरकर चरित्रदियाँ था। बुनीना के युग में साधारण जनता के साथ जो अनाचार हुआ था उमक जनता में प्रतिहिमा के भाव ने उग्र रूप धारण कर लिया। बलात्कृत म उमने कोई वार-कसर न उठा रखी।

धर्मों वगैरें बुलाना और जकुलीना, धनिया और गरीबा के आपसी सघप तीव्रतर हान्त गये । बहुत-से लाग देश निष्कामित हाने पर एथेस के गनुआ के माय मिल कर पड्यत्र करने लगे । शासन की बागडार हाथ म आ जाने से घन का जनापशनाप अपयय करना उहाने गुरु कर लिया । बढत हुए खच के लिए विविध प्रकार के टक्स लगा दिये गय । जान-बूझकर ही नही कभी-कभी बूठे दल्जाम लगाकर जुर्मान की रकम जमा का गयी और येनकेन प्रकारण लाग पर मुकदमे चलाकर पमे वाला का शापण किया गया । जुर्माना और टकम वमूल न होने पर लोग की बची-खुचा सम्पत्ति नीलाम कर दी जाने लगी । बहुत सा कर देने वाला की सत्या उत्तरात्तर घटती गयी जिससे राजस्व क्षीण होता चला गया । लगान तथा टकम वमूल करने के लिए टका और रजारा विकने और बटने लगा । लाचार हाकर दवमदिरा में सचित घन स कज लेना शुरु हुआ पर उमके अदा करने का कोई प्रवचन वन पडा । युद्धा के कारण सेना बढती गयी और उसी क साथ खच भी वन्ता चला गया । अपसरा, विविध ममाजा क सन्स्यो जजा और जरिया की सत्या और वतन म दिनोदिन वद्धि हाती गयी । काप की क्षीणता क कारण सेना में असतोप बढता रहा जिमसे विजय की भभावना कम होती चली गयी । साराश यह कि एथेस का जाथिक टियाला निकल गया । वृपका की दुदशा के कारण उहे अपनी जमीन बेच डालनी पडी । खेती की जमीन छोटे छोट टुकडा म बाट दी गयी । फलत खेती अधिकाधिक गगमा द्वारा कराया जान लगी । बहुत स स्वतन ग्रीक देग छाडकर विदेगा मे मिपहगिरी कागगरा आदि का पेगा करन चउ गये । पशेवरा के चल जान तथा अथ दगा म और स्थाना म ग्रीस के मे उद्योग घघे म्थापित हा जाने से एथेस जादि का व्यापार गिरता चला गया और उसकी जाथिक दगा उत्तरात्तर त्रिगडती ही चली गयी । सबसे चित्य गसका की मनोवृत्ति हा गयी । राज्य मेवा में विशेष लाभ और अथमिद्धि न हान देख तथा उमकी अस्थिरता एव भयकरता स ऊवकर लाग उसस विमुख हात और निजी यापार तथा उद्योग घघा म दत्तचित्त हाने गये । लाग में समाजसवा और राष्ट्रसेवा के भाव घटते और स्वाथपरायणता क भाव बढत गये । अज्यवस्थित चित्त चचउ भावुकताप्रधान किन्तु विवेकशूय जनता, चलत पुरजा वाने बनानेवाला तथा मजवाग लिखान वागा क वाकजाल म फनकर अपनी नवान गक्ति का अस्पशग करती चगी गयी । एथेस के जनत त्र युग में स्वाथ रिदवत वत्त हिमा प्रतिहिमा का ताण्डव नत्य नाता रहा, यहाँ तक कि मदाघ जनता जागिर अपन साथ राष्ट्र का भा र डधी । इस प्रकार एथेस का इतिहास जनसत्ता

की जागिक सफलता और पूण विफलता का ददीप्यमान प्रमाण बन कर रह गया।

किन्तु दुर्दिन जान पर भी एथन की मास्वृत्तिक और मानसिक प्रगति सबथा नष्ट न हुई। इसका प्रमाण वहा के प्रभिद्ध दार्शनिक साक्रिटीज (मुकरान) तथा प्लेटो (अपलातून) हैं। यूनान के राज्यों म पारस्परिक युद्ध हाने के कारण सभी राज्य निबल हो गये। उनका पुन सयुक्त करनेवाला कोई न रह गया। राजा का शासन बवल स्पार्टा मकदूनिया और एपिरम में रह गया। अय राज्या की दगा बहुत अव्यवस्थित हा गयी। कही अत्याचारिया का कही जनता का आर कही आभिजात्या का आधिपत्य स्थापित हा गया। एसा राज्य काई न रहा जिमम लाग मयकर दलबन्दिया स आपस मे लडन झगडते न हा। दमनस्य की इतनी प्रचण्ड अग्नि भटकी कि मित्र पुत्र, पिता भ्राता किसी का क्रिमी का विश्वान न रहा। ऐमे अव्यवस्थित राज्या का अधिक काल तक कायम रहना अमम्भव था। फारम के साम्राज्या ने ग्रास के राज्या की आपम की लडाई का उत्तजना देकर उन पर अपना ऐसा प्रभाव जमाना शुरू कर लिया कि ग्रीम म शान्ति और अशान्ति स्थापित करने की कुजी उसके हाथ म चली गयी।

मेसीडोनिया का उत्थान

उपयुक्त परिस्थिति ने मेसीडोनिया (मकदूनिया) के राजा फिलिप का ग्रीस पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का अच्छा अवसर लिया। मकदूनिया के निवासी यद्यपि उसी वश के थे जिसने कि यूनानी किन्तु उनम सामाजिक जयवा सास्वृत्तिक उत्तति अधिक नहा हुई जिसके कारण ग्रास वाल उनका अपने से पथक् समझत थे। वे लाग युद्ध प्रिय और उदृष्ट स्वभाव के घुडमवार मिपाही थे। कृषि उनका मुख्य व्यवसाय था। वहा के राजाआ पर ग्रीस के स कथानिक नियंत्रण न थे और न जनसत्ता के प्रति लाग का विशय अनुराग था। यह स्मरण रखना चाहिए कि मेसीडोनिया बाल अपने का एक राज्य और एक बिरादरी का मानत थे न कि किसी नगर विधेय के नागरिक जमा कि ग्रीम म था। कहा जाता है कि यूरोप के इतिहास म सबसे पन्ले राष्ट्रायता का चतना सम्भवत मेसीडोनिया म ही मिलती है। सम्भव है कि व्यवसाय और व्यापार के जभाव के कारण राजमत्ता का नियंत्रित करने की चेनना का विकास वहाँ न हुआ हा। राजा के प्रति प्रजा की अनुरक्ति थी। यद्यपि राज-दरवार म कबिया और कलाकारा का बुलाया और

यह विश्वास फल गया था कि ग्रीस की व्यवस्था बिना राजसत्ता की स्थापना के सम्भव नहीं सकेगी। दूसरी धारणा यह भी फैल गयी थी कि ग्रीस वाला तब तक आपम म लडने चगडने रहेंगे जब तक उनकी सामूहिक शक्ति किसी प्रबल शत्रु राज्य या साम्राज्य से टक्कर में न आ जाय। केवल स्पार्टा ही एक ऐसा राज्य बचा जिम पर फिलिप का अधिकार न हुआ। यदि फिलिप का ध्यान स्पार्टा के अधीन हुए एशियाई काचक व नगरों का स्वतंत्र करने में न लग जाता तो सम्भवतः स्पार्टा भी उसके हाथ आ जाता। फिलिप का ध्येय था कि वह अपने नेतृत्व में ग्रीस की समुक्त शक्ति का संगठन करके फारस पर आक्रमण करे। फिलिप ने अपनी रानी आर्लिम्पिया का तलाक दे दिया। वह अपने पुत्र अलेक्जेंडर का लेकन अलाहना रहने लगी। फिलिप का अपनी पुत्री के विवाहात्मक में एक सरदार ने मार डाला। अलेक्जेंडर ने अपनी माता का पक्ष लिया।

फिलिप के निधन के बाद उसका पुत्र अलेक्जेंडर (मित्रदर) जिसके रिशाले ने बेरोनिया में ग्रीस वाला की शक्ति तोड़ दी थी सिंहासनासूढ हुआ। उम समय उसका उम्र वारस वष की थी। अपने शारीरिक सौंदर्य आरूपक व्यक्तित्व उत्कट शौर्य अप्रतिम पराक्रम के कारण वह सैनिकों का आराध्य-भा हो गया था। इन योग स उसका कई सुदार्य और पराक्रमी सेनानायकों की सेवाएँ भी प्राप्त हा गयीं।

पिता की नीति का अनुमरण करते हुए अलेक्जेंडर ने फारस के साम्राज्य पर आक्रमण करना शुरू किया। उसका पहला बड मार्के का युद्ध फारस की सेना से जिसमें यूनाना भा जचडी सन्धा म थे हुआ। गानिकस नदी के किनारे अलेक्जेंडर ने बडी चतुरता और शीघ्रता से उसका अस्त व्यस्त कर दिया (३४ ई० पू०)।

फरात (यूफ्रेटोज) नदा मँझाकर अलेक्जेंडर फारस की सनासे युद्ध करने के लिए आगे बगा। बहुत बनी सन्ध्या में फारस की सना का एकत्रित करके सम्राट् गारा ततीय इसस का खाडी के तट पर उसे रोकने के लिए जमा हुआ था। अपने घुन्सवारों के रिशाले स अलेक्जेंडर ने इनने वेग जोर आवेश स आक्रमण किया कि फारसी सना का एक पाश्व टूट गया। वहा स घूमकर वह मध्यस्थित सेना पर दूर पडा। यद्यपि फारस के दाहिने पाश्व की सेना वारता स लड रही थी तथापि दारा घबराकर रणभेत्र स भाग गया जिससे फारसी सेना के पर उखड गये। लगभग ९० लाख रुपया के सिक्के दारा की एक रानी, दो लडकिया और एक

नहा मा लड्का विजेता आ के हाथ लग । दारा न गणिय का प्रस्ताव भेजा जोर फरात नदी तरफ का प्रदेश देन का राजी हा गया । यद्यपि जनुमवा जोर कुल मना नायका ने संधि कर लन क लाभ समझाने का प्रयत्न किया तथापि अलेक्जण्डर ने उनकी सम्मति स्थापित न की । वह अपने का एरिलाइड का उत्तराधिकारा समझता था जोर उस यह विश्वास था कि टाजन युद्ध क घ्यय तथा जनुप्टान का पूति करने के थ्येय का वह भागी है । विश्वविजया हान की जन्म्य जानाया उमक मन में जाग उठी थी जोर जवानी का जोश उमना उत्तरात्तर उत्तजिन कर रहा था (२३३ ई० पू०) । उमने संधि करन स नकार कर लिया ।

अलेक्जण्डर ने फारम की जार न बरकर मध्य भागर क तट पर स्थित नगरा का जपने जघीन करना आवश्यक समथा । कारण यह था कि उनना ल लन स मध्य सागर मे फारम क जहाजी बड की शक्ति क्षीण हा जाता जोर ग्राम पर उमक आक्रमण स अलेक्जण्डर के एशिया विजय क मन्मूवा म विघ्न उपस्थित हाने का आशका न रहता । तदनुमार उसन लीजिया के ममद्वशाली और सुरभिण नगर टायर का बलपूर्वक जीत लिया । उसी प्रकार गाजा नगर भी उसन छीन लिया । उन विजया स प्रभावित और उत्साहित हाकर मिस्र वाला ने जो फारम की साम्राज्य नीति स जमन्तुष्ट जोर पीणित थ अलेक्जण्डर का जपना सम्राट बनाने का निश्चय कर प्राचीन सम्कार विधि मे उस फरा की उच्चतम उपाधि स विमूषित कर दिया । उसे देवत्व (मूय पुत्रकी पदवी) प्राप्त हा गयी । ज्यास का पुदता वह अपन का पहल स ही समथता था । मिथिया के निश्चय क परिणामस्वरूप उसे लाग ज्यास एमान का पुत्र बहने लगे । अलेक्जण्डर ने प्रत्येक नगर को यह आजा भेजी की वह उसको देवता मान कर तत्बत जमिन दन भी किया करें । कहा जाना है कि उसी न यूरोप म राजाआ क दवा अधिकार का सूत्रपात किया । किन्तु मसीडोनिया वाले उसकी नीति स जमन्तुष्ट हा गये । उत्तरा अफीका क तट क कुछ प्रसिद्ध नगरा पर प्रभुत्व स्थापित कर उन पर अलेक्जण्डर का साम्राज्य कार्येज राज्य की सीमा स जा मिला । नील नद्य और मध्य सागर के सगम के पाम उसने अलेक्जण्ड्रिया नाम का एक नया नगर स्थापित किया ताकि फानिया का व्यापार उघर बिचकर चग आय ।

पश्चिमी एशिया और मिय म निश्चित हाकर तथा फारम के जहाजी बड का अन्त ध्यस्त करके अलेक्जण्डर फिर फारम की जार बना । मसापटमिया का दजला नदी का मैदान पर वह जखला का जार चला जहाँ मसय दारा उसकी

प्रताशा में खड़ा था। फारस की मना में बार घोर मनिवा की कभी न थी। यही नहीं फारस की सेना में हजारों ग्रीक मनिव भाँ थे, मितु उनका युद्ध कौशल पुराने ढंग का था। अलेक्जेंडर की सेना नये विधान से मगडित थी और उसका संचालन भी नवीन ढंग से होता था। फलतः फारस की सेना की पराजय हाँ गयी जिससे नस्त होकर दारा का भागना पना (३३१ ई० पू०)। अलेक्जेंडर का युद्ध सत्कार के इतिहास में बड़ा महत्त्व इसलिए रखता है कि उसने अनन्तर फारस का महान साम्राज्य नष्ट हाँ गया और ग्रीस वाला के लिए तथा उनकी सम्यता सम्भृति एवं व्यापार के लिए भी मध्य एशिया और भारतवर्ष तक का एक नया रास्ता निकल जाया। ग्रीसका यूरोप और एशिया दाना पर अतुलनीय प्रभाव पना।

कहा जाता है कि विजय प्राप्त कर अलेक्जेंडर ने फारस की राजधानी पर्सिपोलिस के राजभवन का एक माधारण वैश्या की सनक से प्रभावित होकर नशे की शक्त में नष्ट भ्रष्ट कर भस्मसात करवा डाला। वैश्या का नाम थेइस था। नशे की मस्ती में उसने वारणी प्रमत्त सिक्कर को फारस वाला द्वारा टुट्टे यूनान के नगरों के विध्वंस का बदला चुवाने के लिए पर्सिपोलिस जला देने के लिए उत्तेजित किया। कुछ गंगा का विचार है कि यह कल्पना मात्र है। जागता सयोग-वर्ण लगी थी जो यथाशीघ्र बुझा दी गयी। काई यह कहते हैं कि फारस साम्राज्य पुराने युग का प्रमुख प्रतीक था। उसका भस्मसात करने से उस युग की अन्तिम आहुति के नवीन युग प्रवर्ण की जाज्वल्यमान घाषणा की गयी अथवा फारस साम्राज्य के नाश का रामाचकारी अग्रिम आहुति के प्रतीक रूप बनाया गया। पर्सिपोलिस जैसे मनद्विषाणी बभव गोमा, कला से युक्त तथा कौशलपूर्ण नगर का जिस वधरता से अलेक्जेंडर ने ध्वंस किया उसक लिए हाँ जाने पर उसे स्वयं लज्जित और खिन्न हाँना पना। छ सान महीने वहाँ रहकर वह एकत्रताना की जोर जहा दारा ततीय जाकर रक गया था, बडा। यह समाचार पाकर दारा बडा से भी भागा। दारा की वापुष्पता तथा उद्यमहीनता से उसका आन्तर-सम्मान मिट्टी में मिश्र गया और सीस्तान, बल्ख, तथा अफगानिस्तान के तत्कालीन राज्यपाला ने पडयत्र कर उस कत् कर लिया और गट्टे के पित्ररे में बनी करक साथ ल चर। अलेक्जेंडर के घावे का समाचार सुनकर उससे उहाने घाँ पर बठकर भाग चलन का आग्रह किया। उसने जब अनकार किया तब उहान उस बछे से घायल कर मरन के लिए छोड दिया (३३० ई० पू०)। अलेक्जेंडर ने उसका

राजसी घूमघाम में परमिस क राजरौजे में दफन करवा दिया । आगे चलकर दारा के हत्यारे बेगम का अच्छी तरह बोडा में पिटा कर कत्ताने में झाक ।

फारम के साम्राज्य पर अधिकार प्राप्त करने में अलेक्जेंडर का अपार धन सम्पत्ति प्राप्त हुई । उसका मन म कई वर्षों से यह जाबाजा जाग्रत हुई थी मनी गणना देवताओं में का जाय । वह धीरे धीरे पुष्ट होती गयी । जब मिथ ने उमका फरो का उगाधि प्रदान की तब उमको अपने स्वप्न के प्रत्यक्ष होने का म्पत्त कियाई करने लगा । किन्तु फारम के साम्राज्यामन पर बट्टे अपन दाव का मिद्ध हुआ समयकर योगा से देवाचित सम्मान की कामना मनुका करने लगा । फारम के लागा न उमका मान रखा और खुशामतिया उका देनावा दिया । किन्तु उमके मकदूनिया और ग्रीम के सहयोगी सनानायक का इम जिन् का विराध किया । अलेक्जेंडर उनका विराध से एसा श्राधावा गया कि उमने अपन मन्त्रुष्ट सनानायक का स्वयं मार डाला और उमके पिता जमन युद्धराज तथा शानि के समय राज्य की बडी सराणों की था, बध करवा । उम जब शोध जाता तब वह पागल-मा हा जाता था । शोध शानि हानि की-कमा के बदन पछताया करता किन्तु उमका क्या फायदा हा सनानायक बध मरुष्ट शहर कुछ गंगा न अलेक्जेंडर की हत्या कर डालने का शोध किया किन्तु मन्त्रु जान से जनक ध्यस्तिया का प्राण-शोध दिया गया । गंगा से प्रसिद्ध शानिक अरस्तू का मनीजा मा था । एसा प्रकार मन्त्रिम वशामिया के जिहान जरेकरीज का अपाग के मन्दिर का निधि दे दी थी, शोध और वश तज का उमने कत्तआम करवा डाला ।

अलेक्जेंडर मध्य एशिया में मरुष्ट और शानि तज गया । काश्कि के मन्त्रु मन्त्रुकर बग और मरुष्ट में विभ्राम कर और अपनी मना का मन्त्रु तथा मरुष्टि कर कर अरुगाशिया का आर बडा । बग से उमन वही शानिक मन्त्रु के इगना मरुष्ट का कुमार काया शानि से विराह कर (३०३ ई० पू०) । मन्त्रु उमन फारम के अविजित शानि शोध (मिथ के मन्त्रु १) का शोध दिया । वही शानिक के राजा आम्मान उमका अपन शानि शानिक मन्त्रु (फारम) पर बडा करवा का शोधना की । अलेक्जेंडर के मन्त्रु बग शानि ९९९ और फारम शानि मन्त्रु मन्त्रु मन्त्रु शोध करवा (३०६ ई० पू०) में १२ बग शोध शोध शोध । यद्यपि मन्त्रु शानि पर उमकी

विजय हुई तथापि उसकी प्रतीत ही गया कि भारतीय सैनिक वीर और यादवा हैं । उनका जीतने में उम अनेकानेक युद्ध और कठिनाइया का निरन्तर सामना करना पड़ेगा । भारत बहुत बड़ा देश है और उममें एक प्रबल साम्राज्य के अलावा अनेक राज्य भी हैं । उमके मिपाहिया को अपना देश छोड़े कई वर्ष बीत गये थे, पर अलेक्जण्डर की महत्वाकांक्षा असीम सी थी । उसकी व कहां तक पूर्ति करने । अतएव उन्होंने उसके उत्तेजनात्मक भाषणा का उपेक्षा कर जागे बदन से मांस दूध चुर कर लिया । फलत उम लौटना पड़ा । सिंध नद के माग से हाता हुआ वह जहाज पर फारस के तट के किनारे किनारे बेदीलान की ओर लौटा । उमकी सेना अनेक प्रकार के कष्ट झेलता हुई स्थल मार्ग में वापस गयी । एसा नगर में अलेक्जण्डर ने दारा की पुत्री बेपिति और (स्ततीरा) से अजाजरक्षस ततीय का पुत्री पयमतीम से विवाह किया । इस प्रकार दो राज्यवशा से उमने अपना धार्मिक मन्व्य स्थानित कर लिया । उमकी देसादयी बहूत-म मन्विकान भी एशिया वाला से व्याह किये । एसा लागी का राज्य कज भी जदा करता और उनका अच्छा दहज भा दता था । इसमें उमने बगदा रुपये खच करने पड़े । इसमें सिवा तास हजार एणियाई युवका का उसने ग्रीस भाषा और युद्ध-कला सिखायी । अलेक्जण्डर का फारस तथा अज एणियाई सरदारा की ओर अधिक युक्ताव और एणियाई राजसी ठाट-चाट में प्रति वृत्ता हुआ अनुराग देखकर ग्रीस के मिपाहिया और सरदारा में असंतोष वृत्ता गया और स्वामिभक्ति का भाव क्षीण-सा हो गया । देवताओं में अपना स्थान विशिष्ट समझने के कारण उसमें लोगो में आग्रहपूर्वक अपने का पुजवान का लालसा बढ़ी । सम्भव है कि उमकी इस लालसा का कारण ग्रीक अनुयायियों की श्रद्धा में उत्तरात्तर बढ़ता कमी ही है । उसने एक वडे यज्ञ का अनुष्ठान किया । यद्यपि वह व्यभिचारी न था किन्तु बड़ा गरवी था । उस अवसर पर उसने बेहद मदिरा पी । कुछ समय से उमका स्वास्थ्य भी बिगड रहा था । उमका ज्वर जाया जा राज-बराज बढ़ता गया । तत्पश्चात् वर्ष की अवस्था में ११ जून (३२३ ई० पू०) का मन्निपात ज्वर से उमका मृत्यु हो गयी ।

अलेक्जण्डर के धार्मिक विचार मूलत ग्रीस वाला के-स थे । देवताओं की विया, अविष्यवकताओं में उस विश्वास था । ग्रीस वाला की मान्यता के अनुकूल वह भी मनुष्य का चरम जादग देवत्व प्राप्त करना मानता था । विजया तथा विजयकर मित्र के धर्माधिकारियों की आग्रहपूर्वक व्यवस्था से उसका विश्वास ही गया था कि उसे देवत्व प्राप्त हो गया है । उस घोरणा पर जब कोई सन्नेह या विराघ करता

तब वह दुःखी ही नहीं बरन प्राधाध हाकर मरन मारन पर उतारना जाना था। अपन का स्वता समझन पर भी घाग क तेवनाआ क प्रति उमर थदा विनाम म वाइ कमी न हुई। उमका ध्यय सम्भजन स्वताआ की प्रिरात्री म पहुचना न रि उनका अवहेना करना था। जय स्वी नेताआ की अपथा घाम क हगपलीज मिल के जामान तथा हकता दबी पर उसरी त्राप थदा थी। हकती पानाल लाक की भयकरी तेवी थी जा दगन म सुत्री थी पर उमकी दलि विघ्नमरारिणी थी। उमको पिलग की उलि चगयी जाती थी। देवी का प्रमत्र करने क लिए वह भय तथा पगु बलि चनाया करता था। कठिन समस्या पडने पर वह बड मारी पैमाने पर यन करता था। जहम्मानी जीर जनाघ रूप से मफ्ट हाते हग भी वह कभी-कभी उदाम हाकर अपना सफलताआ का विडम्बनामय ममझने लगता था। सम्भव है कि किारावस्था की अपना बटु अनुभूतिया क तथा त्याग एव बराग्य-मयी एगियाई विचारधारा के कारण उसम विह्वलता जीर जमन्तोप की लहक कमा-कमी उठा करती हा।

मसार क विजेताआ म अलकजेण्डर का म्यान बहुत ऊँचा ता माना ही जाना है किंतु मसार क सांस्कृतिक विकास के इतिहास म भी उसका बडा महस्व है। जिस प्रकार उमने अपना प्रभुत्व एगिया में स्थापित किया उमा भाति वह यूरोप और उत्तरा अफीका मर म भी अपना साम्राज्य प्रतिष्ठित करना चाहता था ऐसा साम्राज्य जिसका मृत्याधिपति एक मुयोग्य यक्ति हा आर जिसक कमचारी जाति धम रग के अनुसार नहा बरन अपनी याम्यता क कारण चुने जाया करे। सम्भवत उमका विचार एक विश्व-यापी नीतिक और सांस्कृतिक विधान रचने का था। उसके कायकलाप से अनुमान हाता है कि उसका ध्यय यूरोप और एगिया का साम्कृतिक सयाजन था। उम विधान से वह एक एस विशाल साम्राज्य का निर्माण करना चाहता था जिमम एगिया यूरोप जीर अफीका का नतिक ही नहीं बरन साम्कृतिक सगम हाकर एक नयी धारा का प्रवाह हो मक। उस आदश की प्राप्ति क लिए उमने विभिन्न ममाज क लाग म राटा-बेटी क सम्बन्ध का सूत्रपात कर जय गगा का प्रात्माहित किया। कपनूपा में भी तदनुकूल परिवतन प्रारम्भ किया। उमने मत्तर नय नगरा का इतमत्त निमाण कराया जिनम ग्रीक तथा अन्य लाग मिल जुलकर रहत थे। उन नगरा म सबसे प्रमुग्य प्रतिष्ठित और प्रभावगाली नगर मिय में स्थापित अत्रेक्जेण्डिया था। बहुत सम्भव है कि उसके विचारा का ईरान क राजनीतिक सिद्धता जीर सामनिक नीति स भी

सहायता मिलेगी है। साम्राज्य की रचना जोर उसका शासन जिम पमाने पर फारस के सम्राटों ने किया वसा पश्चिमी एशिया ही नहीं वरन् कहीं आर भी उम युग तक नहीं हुआ था। मकदूनिया जयवा ग्रीस वाला का भी उन समन्वया का जा एसे विनाल साम्राज्य में जिमम विभिन्न सस्कृतियाँ लग रहत है उठा करती है, अनुभव नहीं था। कुशाग्र बुद्धि अलेक्जेंडर ने यह ममथ लिया होगा कि अपने साम्राज्य के शासन में उसे ग्रीस की राजनीति में यथेष्ट सहायता न मिलेगी उसी के साथ उमरा यह भी अनुभव हुआ गया कि ग्रीस वाले ईरान के साम्राज्य विधान और विरोधन सवतत्र स्वतत्र सम्राट की कल्पना का स्वीकार न करगे। अतएव उमें एक ऐसा मध्य माग निकालना आवश्यक हुआ गया जिमकी व्यावहारिक मफलता सम्भव है। ग्रीस की तथा नवीन साम्राज्य की नीति का उमने एक साथ तालना दुम्तर ममथ कर यह निश्चय किया कि ग्रीस में ता वह मेसिडोनिया का राजा जोर कारिथियन लीग का प्रधान मेनाध्यक्ष रहेगा किन्तु नवीन साम्राज्य में वह सम्राट की हमियत में शासन करेगा।

हलेनिक युग

अलेक्जेंडर की मृत्यु से लेकर राम द्वारा मिला के टालमी राज्य का अंत तक जाने तक का समय हेलेनिक युग कहा जाता है। उस युग की कुछ अपनी विशेषताएँ थीं। पहली यह कि ग्रीस तथा एशिया की सम्स्कृतियाँ का अधिकाधिक मिश्रण और जानान प्रदान हुआ। दूसरी यह कि नगर राज्या तथा लीग का छुड़कर ग्रीकों ने ऐसे राज्या की जिन पर राजा शासन करत थे तथा राजसत्ता का प्राधाय था स्थापना की। नये राज्या की राजधानियाँ तथा अद्द स्वतत्र बड़े-बड़े व्यापारिक नगरों में विभिन्न लीगों और सम्स्कृतियों के सम्पर्क से एक-ता यह स्पष्ट हुआ गया कि ग्रीकों का नागरिक विधान सबुचित हान के कारण सवत्र उपयुक्त नहीं है। दूसरा अनुभव यह हुआ कि ग्रीकों का यह विचार कि उनके सिवा अय लग बबर और जधम ह विरुद्ध भ्रममलक है। उमके स्थान पर मनुष्य मात्र की मूर्तगत एकता एक समता के सिद्धान्त का जन्मदय हाने लगा। नम नवीन विचारधारा का प्रभाव इतिहास और सम्स्कृति पर उत्तरात्तर बढ़ता चला जा रहा है। व्यक्ति के जीवन पर समाज के सम्पूर्ण अधिकार का सिद्धांत गिथिल हाने लगा। व्यक्ति की अपनी निजी मत्ता तथा जन्मजात अधिकार की ओर विचारका का ध्यान अधिकाधिक खिचने लगा। उपयुक्त विचारा का

प्रभाव तत्कालीन धर्म, साहित्य और कानून पर विगैय रूप से दिखाई पड़ता है । अलक्जेंडर के पश्चात् ग्रीक दर्शन, राजनीति, साहित्य और कला का भारी प्रभाव जिस प्रकार एशिया अफ्रीका पर पड़ा वसा ही एगियाई सभ्यता और संस्कृति का यूरोप पर भी पड़ता रहा ।

मेसीडोनिया में एण्टीगोनस द्वितीय ने राज्य-व्यवस्था स्थापित कर शांति और संस्कृति का संरक्षण किया । ग्रीस में नगर राज्या ने मिल कर दो राष्ट्र—एटालियन और एक्विन—स्थापित की जा अपने-अपने क्षेत्र की बाहरी नीति, रक्षा व्यापार तथा सामरिक विषयों का प्रबंध करती रही किंतु दाना लीगा न जापस में बढ़ करना आरम्भ कर दिया जिससे ग्रीस में फिर अव्यवस्था आगति और शक्ति का शय होता रहा ।

ग्रीस के नगरों में जापस में लड़ाई चगडे बढ़ते गये । नगरों का शासन अव्यवस्थित होने के कारण अराजकता की बढि हाती गयी । उद्दण्ड सरदार बडे-बड दल बल दकटा कर महान नेता बनने के लिए जापस में लड़ते और लट मार करत थे । स्वतन्त्र जनता क्षीण हाती चला गयी और गुलामा की उत्तरात्तर बढि हाता गयी । धनी और निधन वर्गों की विषमता के साथ उनका संघर्ष भी बढने लगा । स्पार्टा का क्लियोमेनीज मजदूरा और निधनों का प्रसिद्ध नेता बन कर सशस्त्र विद्रोह में इतना सफल हुआ कि उससे सब आगकित हो गये । उसका दमन कठिनाई से ही सका । समाजवाद का निरूपण जीना ने अपने रिपब्लिक नामक ग्रन्थ में किया जिससे विद्रोहियों का बौद्धिक प्रेरणा भी मिली । तत्कालीन परिस्थिति के कारण लोगों की दबी-देवताओं और धार्मिक विचारों में थड़ा घट गयी । नास्तिकता की और लोगों का अधिक आकर्षण होने के कारण जा कुछ नतिक्रम बयागएँ उम समय तक थी किनो दिन टटती चली गयी । राज्य भक्ति तथा राज्य धर्म में विश्वास गिधिल हो जान से ग्रीस की सभ्यता का आधार शिलाएँ टूट गयी । पुरपा और स्त्रिया में उच्छ्वलता और अनाचार की प्रगति तीव्र हा गयी, ऐयागी और बदचलना का बाजार बहुत गम हो गया । स्त्रियाँ जननी बनने से घबराती थी और बचती था । लड़किया पदा करना दुर्भाग्य का चिह्न समझकर बहुधा गगवावस्था में ही मार डाली जाती था । यह सब हाते हुए भी स्त्रिया ने तत्कालीन कलाओं और साहित्य की रचना में स्तुत्य काय किया । उनमें से अरिस्टोनामा का नाम विशेष उल्लेखनाय है ।

अलक्जेंडर का मौतला भाई जो मकदूनिया में रहता था स्वास्थ्य खराब

होने के कारण बेवार-सा हो गया। अलेक्जेंडर की रानी रोचसेनिया का पुनः गम ही में था जब उसकी मृत्यु हो गयी। एमी दगा में सेनापतियों में मघप हाना अनिवाय था। उनमें सबसे योग्य एण्टीगोनस था जो मार साम्राज्य का अपने अधिकार में रखना चाहता था। अतएव उसका घोर विरोध हुआ। रूम में मघवर युद्ध हुआ जिसमें वह मारा गया (३०१ ई० पू०)। साम्राज्य पाँच मना पतिया में बँट गया। एण्टापटर ने मक्दूनिया और ग्रीस पर, राइसिमखस ने थ्रेस पर एण्टीगोनस ने एगियाइ काचन पर मल्यूकस ने बेबीलोनिया पर और टालमा ने मिस्र पर अपना जाधिपत्य जमा लिया। ग्राम व नगरों में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए विद्रोह होता रहा। अव्यवस्थित दगा में गाम उठाकर वेल्डगाल नामक बंधर बचीले ग्रीस तथा एगियाई काचन में घुमकर लूट मार करते रहे। अव्यवस्था और जराजकता मघत्र मच गयी और छोट-बड़े नगर अथवा राज्य सगठित अथवा स्वतंत्र रूप में जापस में लटन मिन्न रहे।

ग्रीस तथा मक्दूनिया के बाहर तीन साम्राज्या की स्थापना हुई। मल्यूकस के बग वाले ईजियन नगरों में भारत की माला तत्र राख करते रहे। उत्तरे बड़े भू भाग पर शासन करना कठिन बाय था, तथापि जम-तमे व शासन चगाते रहे। फरात नदी के पश्चिमी प्रांतों को सगठित करने का उन्होंने विशेष उद्योग किया। ग्रीस के नगरों के बीच पर उन्होंने बहुत-से नगरों की स्थापना का जिनके द्वारा अलेक्जेंडर की नीति का समाज प्रचार हाना रखा। उन्हें आंतरिक शासन की यथामम्मन स्वतंत्रता दी गयी। सम्राट का जाधिपत्य उन पर बायम रहा। ग्रीस और एगिया की सस्कृतिया के सम्मिश्रण के कारण उन नगरों का सस्कृति की अपनी विनिष्टता है। उसका प्रभाव यनाधिक माना में कई गनियों तक पजाव से मध्यसागर तक की सस्कृतियों पर पडता रहा।

फारस के साने और चादी का लेकर अलेक्जेंडर ने मिकका का अच्छा प्रचलन किया। मरयूकस वग ने उस नाति का एसा अनुमरण किया कि विनिमय द्वारा व्यापार एक प्रकार से उनसे साम्राज्य में उद हा गया। मिकका के प्रचलन से व्यापार की तिना दिन उत्तनि गता गयी। वका द्वारा व्यापार और लेनदेन वन्ता गया। मडका के सुधार में यातायात की अधिक सुविधा हो गयी। दमिदक वैस्त, आदिआक बेबीलोन स्मरना परसेयस आदि दजला नगरों की कन्नूगूक समद्धि हुई।

इतने बड़े साम्राज्य का शासन तत्कालीन साधनों की दखत हुए बहुत कठिन

या । तीसरी गताली ३० पू० म ही उमका कटना छटना आरम्भ हा गया । यह गति सीमान्त प्रत्या स आरम्भ हुई । नय नय स्वतन्त्र राज्य समरकद बल्क (वक्रिया) फारम आरमीनिया जाति धीरे धीरे जलग हा गय । बबर कल्टा जीर गाला न भा हाथ-पाव भारना प्रारम्भ किया । दूसरा गती ई० पू० के मध्य तक मन्विकम वग न अपनी गक्ति ही नहा बरन बची चुची स्वतन्त्रता भी खानी । राम साम्राज्य का बाटखाला हा गया ।

मिस्र के टास्मी

अन्तर्जण्डर क गव जीर उमका प्रथमी थाइस रा उमका वाग्य सनापति टास्मी मिस्र क सम्पिम नगर गया (३२३ ई० पू०) । गव का ती उमन एक मय्य स्मरण-समाधि (Mausoleum) म रख दिया जीर थाइस से ब्याह कर दिया जिमम दो पुत्र उत्पन्न हुए । अन्तर्जण्डर के सम्पूर्ण साम्राज्य पर शासन करने की शक्त्या म न फम कर उमन मिस्र का ही अपना वाय क्षत्र बना लिया । अन्तर्जण्डर के तन बह गामन और गक्ति क मगठन म लगा रहा । तन्तर ३०५ ई० पू० म राजमिहामन पर बन्कर उमन मिस्र में टास्मी राजवग का प्रतिष्ठित कर दिया । समराज्य प्रथम तीन टास्मी वाग्य और गक्तिगती थ । उमक ग्राह उतका राज्य निरन्तर हाता चला गया । आपार कृषि तथा उद्योग धंधा न उसकी उता त्तरता म उन्नति की । राजधाना क लिए उमने अन्तर्जण्डिया नगर सम्रिण बना दि वनी म बह मूमध्यसागर सीम तथा पश्चिमा एशिया की गतिविधि का निराक्षण जल्पा तन्त्र कर मरगा और आन्वयता पठन पर उमम भाग भी ल मरगा । समर मिस्र ममध्य सागर तथा गग सागर क तन द्वारा बह पूव जीर पश्चिम क ब्यापार म ययत्त गम भी उठा मरगा । ममध्यय क अनुगार उतन प्रन्त्र जगता बह का निमाण कराया । अन्त जीर म्यत्त का मता म और गगा का यथासम्भव मरगा दिया । अतन ममती अधिपत्य का पुत्र करन जीर ब्यापार का मरगा करन क लिए टास्मिया न र्हा रगा मारिया जीर अन्तर्जण्डर पर अपना अधिकार जमा दिया । टास्मी द्वितीय न नाग का गग सागर म मिगन क लिए पुत्रन नगर का मरगा करवादा तिनु कुण ममय क बाट यत्त निर बत्त हा गया । त गदा गद अन्त का फरा का अन्तर्जण्डर मान थ । यद्यपि उतान भा तन्त्र का सम्पतिक स्वतन्त्रता मनी थी तथापि नगर एउ मार राज्य पर टास्मा अन्त का ही पुग अधिकार था । मिहामन मारा जमान नरन की ही मानी

जाती थी तथापि व्यवहार में नरमी प्रतीत जानी थी। टोलमी का निवाचित ममा, समितिधा की काई आवश्यकता प्रतीत न हुई। फेरा के वगा की तरह वह एक-छत्र राज्य अपन सबका के द्वारा करता था। बीस वर्ष तक सगठन करने के उपरांत वह बड़ी गान शौकन के साथ ३०५ ई० पू० में गर्जामहामन पर बठा। उस समय में रोम साम्राज्य की मिस्र पर विजय तक उसके वंश बड़ा राज्य करते रह राजा के बाल अधमन्त्री का पद विाप महत्त्व रखता था। वह भी बडे छोट-बोट के साथ रहता था। जिमीदारी तथा व्यापार में उसका बड़ी जामदनी था।

फेरा के विधान के अनुकूल राज्य लगभग चाहीस भागों में बटा हुआ था। प्रत्येक भाग (नाम) में कई जिल और प्रत्येक जिले में कई गाव थे। प्रत्येक नाम का एक अधिपति (नामाक) हाता था किन्तु वास्तविक अधिकार ग्रीक सेनापति के हाथ में रहता था क्योंकि नाम में शक्ति रखन और दण्ड का व्यवस्था का कार्य वही करता था। इतनी शक्ति के हात हुए भी उसका वित्त विभाग में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार न था। ग्रीकों और मिस्रिया के दावानों मामल उनके अपने-अपने विधानों तथा व्यवहारों के अनुकूल उनकी अपनी-अपनी जगलता में तय किये जाते थे। ग्रीकों और मिस्रिया के बीच बगडे उपस्थित होने पर ग्रीकों और मिस्रिया की संयुक्त जदालत मामला तय करती थी।

प्रथम और द्वितीय टालेमा राजाओं के काल में अल्बजेण्ड्रिया की विभूति और समृद्धि ने इतनी उन्नति की कि वह प्राचीन मुग का सब प्रकार में प्रमुख नगर माना जाने लगा। व्यापार द्वारा चारा आर स उस नगर में धन गिंचा चंग आता था। वहाँ की जनता भी मिथित था। ग्रीक मिस्रों, यहुदी पारसी अरब हबगी जादि जानिया का बहा जमघट था। मम्मवत पश्चिम तथा दक्षिण भारत के लग भी बहा पहुँचे हाए। विभिन्न देश और जानिया के लग के साथ उनका मस्कूनिया का भा सगम हुआ। जमीरा की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कारीगरों सेवका गुलामों जादि की मर्या उत्तरोत्तर बढ़ती रही। ऐग-जागम जामाद प्रमाण विनाद के लिए बगकारों गायक-गायिकाओं, नतक-नतकिया रूपजीविया की मर्या में अच्छी वृद्धि हुई। व्यापार का ही नहीं बल्कि विद्या विलास का भी वह एक विश्वविदित बन्ना हा गया। कत्रिया गणितिका विद्वानों उपयामकारों नाटककारों जयापकों आर नान विनान की उच्च गिथा के लिए जाये विद्यार्थियों की बहा कमी न थी। अनुमान किया जाता है कि अल्बजेण्ड्रिया की जनसंख्या द्वितीय गंगा ६० पू० में पाच लाख से कम न हागी।

श्रीगम्पन्न नगर का विभिन्न जायस्यवताओं का शिष्ट नगर का रचना बड़े पैमाने पर श्रीगम्पन्नता का अनुरूप हुई। नगर में गा-गो पशु चोरा बर्ग मंडल, गामा-सम्पन्न विद्यालय राजमंडल, राजकीय भवन गामनालय का शिष्टाचार पुस्तकालय रंगमंच नाट्यशाला चामामणालय का भवन प्रांगण, शिष्टाचार सुरालया भाजनालया जालि का गायधानता के साथ विभाग रिया गया। गन्तों एक दूरम का श्म तरह वाटता था जिमस नगर रानार चोपना म प्रग गया था। आदयध है कि सडवा पर रानाना का प्रबन्ध न था। अमीरा त भी जाता अपना स्थिति आवश्यकता एव रवि क अनुगार कई मजिस्ट का वाटिया प्राग-वगा आदि प्रनवाय। बाजार म ध्यापारिया न टाटार दूरान बनराया जिनम हर प्रकार की चीज मिल सकती था। निज क मराना म सत्रम मुत्तर मरान गणिनाओ और श्पजीविनिया क थे। सारांग यह है कि विद्या विनाम व्यमन एव विलास क सभी माधन उस नगर म प्राप्त हो सकते थ। पुरपा की तरह श्रियी भी बाहर जाता-जाता खरीद-फरागत करता बिया एव विनाम म स्वतन्त्रतापूर्वक भाग नेता था। उनका उपस्थिति म मामाजिन जावा म अप्रव चाग्ता लालित्य एव रमणीयता का सचार हो गया था जिमका प्रभाव तत्कालान गद्य एव पद्य की रचना में झलकता है। हलनिक संस्कृति का प्रभाव नगरा तन ही सानित रहा। श्रीका गौर यहूदिया का अपने विधाना आर मस्कृतिया क अनकूल रहन की स्वतन्त्रता थी। बाहर के लाग अपन पुराने ढर्रे पर चलत रह। आने-जान की असु विधाएँ तथा खच्च क कारण नगरा म उनका अधिक सम्पक न हुआ।

टोलमी युग म राजकीय समाजवाद का उल्लसनीय प्रयाग बड़े पैमाने पर हुआ। अलेक्जेंड्रिया नात्रटिस तथा टोलेमेइस नगरा म स्वायत्त गामन-का-मा विधान था। मिश्र क पुराहिता और धम-वजा का राजनानिक तथा जाधिक महत्व क्षीण हो चुका था उनका सम्पत्ति का प्रबन्ध भा राजा ने अपन हाथ म ल लिया। उनका छाडकर राजा का जमीन पर पूरा अधिकार हो गया। अपन श्मचारिया द्वाग वह कृपि का नियन्त्रण करवाता था। कृपक उही क जागेगा क अनुसार खेती-बाडी करत थे। भूमि की उपज राज्य की सत्तियो म भेज दी जाता थी। विशेष स्थिति और सनिक वग के लिए उपयुक्त विधान को व्यवहार में डीला कर दिया जाता था किंतु कानून म इसके लिए कोई विशेष रियायत नहीं रखी गया थी। धीरे धीरे राज्य द्वारा कृपि का नियन्त्रण बल सा हो गया किंतु उस परिवर्तन म डेढ-दा मी वष लगे। उसी प्रकार राज्य की खाना का भी नियन्त्रण

बन्ती गयी। वहाँ का नीकरगाहा अपन युग में आगमन का म अङ्गाय थी। गन्ना तथा नीकरगाहा पर गन्ध बन्द बन्द गया था। अमलिका नामा प्रान्त व कर, अगान आदि लगा दिये गये थे। आमन्ना व वान व अित आगत अनेनय अर वार माघन माघन रहते थे। मित्त व जातीय ममात्रयत् वा मन्तु ध्यय प्रधितारिक अन्तर्गत करना था। पम्पा तथा बडा रत्नयत् व उपयाग म गितार का अटा प्रत्य किया गया अर आम्न के नियन्त्रण में था। नित्त दम म गन्ना की जान ला। पम्पा व म्पू बन्द स राज्य की आमन्ना वत्। गन्ना दम्प हान व गान्ना वारणाय हा नत्। बरन पूव ना माना जाता था। उम्पा आत्ता वा पात्ता अर सना करना घामिन बन्य था। उम्प लिप बगरा करना क्षम द्वारा अर गन्ना करना था। जिनके विचार उनके ऊँचे न थे उनमें अथ प्रकार व अम्प डात्तर बगार करवाया जाना था। कृषि म्पूव पादय अन्त व अम्प गान्ना, वन्तारि तला उद्दाघ घन्ना और व्यापार पर एक प्रकार का पूव अथ अम्प अन्तार हान म्पूव का अम्पना बन्द बन्द गया। उम्प आमन्ना अथा वार व सपा अर उपयाग स मित्त में बन्त पमान पर राजवाय यानताएँ चन्नायी गदा नित्तमें दाट व पानी का नियन्त्रण म्पूवें मित्त व प्रवध विगात् अम्प अर उम्प अन्तरीय है। छाट-भाट राजार व्यापारिया के अित्त छाट लिये गये। उम्प युग में पूवकात् स अधिक जाविष्कार हुए। म्पूव व्यापार अर वक्ति आम्न द्वारा नियन्त्रित हुआ था। मानवान व सविना पर ना उम्पका पूव अन्तार था। अम्पन प्रवध स जा लाम हाता वह प्राय श्रीका वा प्राप्प हाता था। मित्त व निम्नमिया का व्मगठन वस रचित्तर हा म्पूवता था। अम्प कि अम्प अित्त गवा ह् टात्मा प्रवध का ध्यय अधिकारिक अम्पना था, न कि अ्याययुक्त वितरण। अम्प मित्तिया में अम्पनाय वन्ता गया ह् टात्ते हाने लगी। अम्प श्रीका वा समाज हात्तर मित्तिया में विद्येत हाता रहा। निम्न अर बद्मान अम्पटाया वन्चारिया व कारण अन्तरीय सामाजिक विधान अम्प-अम्प हा गया अर टात्मा राज्य का म्पूवता नष्ट हा गया।

सैन्य-वृत्त (३०५ से २८१ ई० पू०)

अम्प अम्प व सेनापतिया में सत्पूवत्त नादर (विद्ययी) ने एगिया में अम्पना अम्प व्म्यापित किया। एगिमाई कावत् पर पुन अन्तार अम्पने व अित्त अम्प अम्पना म्पूवता म्पूवता किया सत्पूवत्त और टात्मी ने अित्त अम्प अम्पने में

एण्टिआक्स ने बर्किया और भारत पर चढ़ाई का जिगम उग्रता सिाप वाता का सामना नही करना पडा। वहाँ से लौटकर उसने राम के विरुद्ध हताशा का महायत्ना के लिए प्रयाण किया। किंतु एक युवता के प्रेम में बहनेवाला प्रेम सि उसने गन वाता में लापरवाही दिग्गयी। फलतः युद्ध में परास्त होकर उस गौटना पडा। छत्तीस वर्ष राज्य करने के बाद उसकी मृत्यु हो गयी (१८७० पू०)।

एण्टिआक्स चतुर्थ १७५ इ० पू० राजमिहासन पर बैठा। उसका स्वभाव बिल्गण और विरुद्ध गतिमति का निकला। गाननित्र योग्यता के साथ ही साथ उसने पागलपन के लक्षण भी पाये जाते थे। बला के सख्दने के साथ उग्रम भन्ता और श्ररता भी विद्यमान था। मन्त्रिा प्रमत्ता-मन्त्रा एस दर्जे का था कि उन्हा एक प्रदयी का तीन नगरों का अधिकार ले लिया। यद्यपि एण्टिआक्स नगर का उमन थी और गामा-सम्पन्न तथा तत्कालीन कला का कर्ता बना लिया तथापि अपन रहने सहने में उस मादगा ही परसूद्ध थी। राजमा टामटाडम का उम गौरव न था। साधारण जनता में अन्तत रूप से मिलजुलकर उनका सुख सुगम विचारों और व्यवहारों का सम्पन्न का प्रयत्न करता था। कारीगरों का टुकाना और कारखाना में जाकर वह उनका काल और ध्ववसाय का देखा भाग करता था। मन् १२९ इ० पू० में उसने मिन्न पर चढ़ाई का किंतु राम राज्य में उसका वापस जान का आग्रह किया। वह रोम राज्य में सधप करना अहितकर समझ कर लौट आया। फारस में मिर्गी से उसकी मृत्यु हो गयी (१६३० पू०)

वैकिट्रिया

सायकस वग के सम्राट एण्टिआक्स तृतीय के समय से वैकिट्रिया के गवर्नर ने स्वतंत्र शासक की तरह व्यवहार करना आरम्भ किया (२२० इ० पू०)। उसने दमन के लिए एण्टिआक्स तताय न बल्ल पर चढाई की (२०८ इ० पू०)। उस समय बर्किया में यूथीदिमस राज्य कर रहा था। गार्ई वर्ष तक नगर का घरा चलता रहा। अन्त में यूथीदिमस के पुत्र दमन्त्रिम ने एण्टिआक्स का समन्वाया कि यदि दम्ब का शासन निवृत्त हो गया तो उत्तर के राज जादि दम्ब गीना का नाग कर साम्राज्य और सस्कृति को नष्ट भ्रष्ट कर देगा। उसने उन्हे दम्बन में सत्यता थी। एण्टिआक्स का अपन साम्राज्य की परिचया सामा पर सधप बडने की भी जागका था। परिणाम यह हुआ कि एक सर्प ब हुद् विना अनुमार एण्टिआक्स ने यूथीदिमस का राज्याभिषेक ही नही किया बर्कि अपना एक पुत्री का

विवाह भी उसमें कर लिया (२०६ ई० पू०)। यूथीदिमस ने घीरे घीरे मीय-दशोय राजाओं को प्रभुत्व को हटाकर अफगानिस्तान, पूर्वी इरान और पंजाब की उत्तर पश्चिमी सीमा पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। उसका पुत्र देमेट्रिअस उससे भा उल्लाही निकला। उसने आरिजा और अराकोगिआ प्रान्ता को अपने राज्य में मिलाकर भारत से पश्चिम के व्यापार मार्ग को अपने अधिकार में कर लिये। उसने बाद वह भारत की आर घुमा। टैकिमला में राजधानी स्थापित कर उसने मिनाण्डर नामक मनापति को भारत पर जायमण करने भेजा और वह स्वयं मिथु नदी का घाटा में मिथु और सम्भवतः सौराष्ट्र तक पहुँच गया। मिनाण्डर बटने बहुत पार्थिवपुत्र तक पहुँच गया (१८७ ई० पू०)। किन्तु थोड़े ही समय के बाद उसका पीछे हटकर मथुरा में पर जमाने पड़े। उसके पीछे हटने का कारण यह था कि गुप्तवंश के सम्राट पुष्यमित्र का उत्थान और दूसरा पश्चिम की ओर स एण्डिआनम चतुर्थ द्वारा राम का साम्राज्य विस्तार की नीति में घनराकर अपने भाद मनेतिम का बन्दित्रया जीत लेने के लिए भेजा जाता। सम्भवतः उस सघप में मित्रिअम मारा गया और यूथेतिदस ने फिर सम्पूकम वग का प्रभुत्व स्थापित करना शुरू कर लिया (१६७ से ६० ई० पू०)। यह सफरना क्षणिक सिद्ध हुई। दमत्रिअम का पुत्र ने यूथेतिदस का परास्त कर परलान भेज दिया। मिनाण्डर की चिन्ता दूर हुई और वह बौद्धों से मिल-जुलकर अपने देहावसान (१५० ई० पू०) तक गामन करता रहा। बन्दित्रया को यहची कबीले के चीनिया ने नष्ट भ्रष्ट कर डाला। ईसा की प्रथम शती के मध्य तक भारत में ग्रीकों का भी पतन हुआ गया।

संस्कृति

होमर का युग (८०० ई० पू०)

होमर का युग में पुरुष लम्बे-नाड़े, मुड़ीय और बलिष्ठ थे। वे गिर पर लम्बे पात्र और दाढ़ी रखने सहमत की तरह कमर में बंधा लपट त थाय गरीर का लिंग भाग का चारों ओर घनत तब लटकना था टन कर बन्ध का पाय पिन से जड़ना दा थे। घर में बनी पर भूमन थे, किन्तु बाहर जाते समय चण्ड का तरह का पत्राग पटन लेन थे।

स्त्रियों भी लम्बी मुनीय स्त्रिय और गुदरी टांता थी। यमा गुप्ताजस हा सुष्ठ बप पहनता था, स्त्रिय बन्धनद वाधनी आर दुष्टा-भा ऊपर में जा लता

थी। स्त्री-पुरुषों के दोना हाथ खुले हाते थे। पुरुषों के पर सुले किन्तु स्त्रियों के टेंके रहते थे। दाना को आभूषण पहनने का शौक था। अमीरा और गरीबों का एक-सा पहनावा था किन्तु अमीरा के कपड़े कीमती हाते थे।

जमीरलोगों की सम्पत्ति प्रायः गाया बला घोड़ा भेडा बकरिया मुअरा जादि पशुओं के रूप में होती। किन्तु साधारण लोग कृषि द्वारा जीवन निवाह करते थे। अमीर अच्छा मांस भक्षण, और गक्कर सात, किन्तु साधारण व्यक्ति मछली चरबी और गहूँ पर गुजारा करते थे। जमीन कवाला या कुटुम्ब की होता थी न कि व्यक्ति की। उसका प्रत्येक एकका कुलपति किया करते थे। पशुओं के चरने के लिए बड़े-बड़े मदान थे जिन पर आरम्भ में सबको चराई का अधिकार था। धीरे धीरे इन चरागाहों पर जमीन और सबल लोगोंने अपना-अपना प्रभुत्व जमाना शुरू कर दिया।

जमीर गरीब मर औरत सभी अपना आवश्यकताओं की अधिकांश चीजें अपने हाथ से बनाते थे। किन्तु जो उनसे न बन सकता उन्हें वे कारीगरों का बुला कर अपने घर में बनवा लेते थे। कारीगर उन युग में स्वतन्त्र व्यक्ति थे। गुलामों के द्वारा चीजें बनवाने का रिवाज बहुत बाद का चला। मालिक और मजदूर का पारस्परिक व्यवहार सहानुभूतिमय था। यहाँ न केवल लडाईं में पकड़े गये वस्तुओं के ही साथ अपितु गुलामों के प्रति भी उदार व्यवहार किया जाता था। तत्कालीन जीवन ग्रामीण था। उस समय सिक्के न थे। अधिकतर व्यापार विनिमय में होता था, किन्तु कौसा, लाहा सोना आदि वस्तुओं के टुकड़ा जयवा गाय बैल आदि पशुओं के रूप में लेन-देन होता था। यात्रा, परिवहन जयवा व्यापार हेतु गाड़ियाँ तथा सव्चर आदि पशुओं से काम लिया जाता था।

रोम के युग में लोग अकनड उजडड और चगडातू थे और मरने-मारने के लिए तयार रहते थे। यदि युद्ध में वे विजय प्राप्त तो अपने पशु वस्तुओं में से पुरुषों का मार डालना और स्त्रियों का उनके रूप रंग के अनुसार या तो अपने घर बगल में या गुलाम बना देते थे। जहाँ जयवा स्थल-भाग से डोर डालना और लटमार करना उनका व्यवसाय था। उस युग में अस्त्रजानाहाना व्यापार में अधिक महत्त्व और सम्मान का व्यवसाय माना जाता था। शूद्र वस्तुओं और दगाऊजी साधारण बान गिना जाता थी। कायस्ता भयंकर और अशुभ दाय माना जाता था।

कुटुम्ब का नाम गिना माना जाता था। उसका असीमित अधिकार था। वह चाहता तो अपनी मन्त्रिणी का वस्त्र चुरा देता चाहे जिनकी स्त्रियाँ से व्याह कर

लेता अथवा उनको जिसे चाहे दे डालता था। साधारणतः अपनी शक्ति का वह जतिशय दुरुपयोग न करता होगा क्योंकि ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिनमें पिता के सतति के प्रति स्नह और स्त्री के प्रति आदर-सम्मान के भाव स्पष्ट दिखाई देते हैं। उम युग में स्त्री का स्थान परिवर्तन के सांस्कृतिक युग से श्रेष्ठ था। यद्यपि कन्या का बरण प्रथम द्वारा होता था तथापि उमका पिता अच्छा-खासा दहेज भी कन्या के निमित्त देता था। विवाह के अनन्तर प्रेम का प्रसंग उठता था, न कि उमके पूर्व। प्रायः स्त्रियाँ अपने पति की अनुरक्त रहती थीं। किन्तु पुरुष प्रायः डबर-उधर मटक जाते थे। स्त्रियाँ घर के भार-काम—जनाज पीसना, सूत काटना, कपड़े बुनना, कशीदा कान्ना और भाजन पकाना आदि—कतव्य समझ कर सह्य करती थीं। उनको पढ़ने लिखने का नता समय था न उसकी आवश्यकता ही प्रतीत होती थी। पुष्प की भी पढ़ने लिखने में काइ रचि न थी। वह व्यायाम अथवा शस्त्र संचालन, सवारी करने, शिकार करने मछली पकड़ने और पशुपालन का ही पर्याप्त सम्मन था। लिखना-पढ़ना एक प्रकार का राजगार था। आवश्यकता पटन पर उन्ही राजगारिया से काम चला लिया जाता था। माटा और गदिया की सेवाएँ उसी प्रकार समय-समय पर ली जाती थीं।

उम युग में स्थापत्य अथवा ललित कलाओं का कोई उल्लेखनीय प्रदर्शन नहा मिलता। कारागरी घातुजा को टाकपीट कर आवश्यक चीज बनाने और सजाने तक ही सीमित थी। लग बच्चे छप्परदार घरा में रहते थे। कभी भीतर की दीवारों का रंगते और सजाते थे। घरा में नता रसाई घर होता था न शोचादि के लिए कोई प्रबन्ध ही। घरा में प्रमुख दरवाजा तो रहता था, किन्तु खिड़कियाँ अथवा गवाला का जमाव था। बटने और लेटन के लिए लकड़ी की नक्काशीदार कुम्भियाँ और पलग बनते थे। क्रीड़े के प्रमुख नेताओं और राजा के रहने के लिए गढी अथवा गढ का निर्माण होता था। उम युग में दवालया के निर्माण का शायद आरम्भ भी न हुआ था।

राजा का मुख्य कार्य सेनापतित्व था। यद्यपि साधारणतया राजा वशानुगत होता था तथापि अयोग्य राजा को स्थानव्युत् करने का अधिकार जनसभा को था। यदि मना राजा ने सन्तुष्ट और उमकी आज्ञानुवर्तिना हाती ता उसका कोई हानि नहा पहुँचा सकता था। उसकी आज्ञा तथा निणय में भीत मल निकालने की कोई गुजाइश न थी। प्रचलित परम्परा को ही अधिकतर कानून का महत्त्व दिया

जाता था। राजा की जामदना लटक आग स अथवा प्रजा की मदद से हाना थी। उस युग में सम्भवतः लगान टनम जाति का अग्नि बन था।

यूनान की गृहमुखी ससृति

होमर के युग की ससृति और सम्यता ग्रीस की ससृति और सम्यता का पहला अध्याय था। उसके पश्चात् सामन्त और कुलीन के युग का आरम्भ हुआ। उस युग में जालम्पिया आदि देवस्थानों के खला के ग्रीस के सामंतिव जातीय जीवन में महत्व बढ़ गया। धार्मिक समाजों का भी प्रत्येक राज्य में स्थापन हुआ जिससे एवता की एक नयी सजाजन शक्ति उत्पन्न हो गयी। आपस के सम्पर्क से यूनानिया में एक ऐसी भाषा प्रचलित हो गयी जिसके द्वारा विभिन्न राज्यों के निवासी निचारा का जादान प्रदान कर सकते थे। धार्मिक सामाजिक एवं भाषा के अनुबन्धन से ग्रीस वालों में एकात्मवता का स्तना अभिमान बढ़ा कि वे अपने सिवा इतर लोगों का वन्दन और असम्भ सम्मान लगे। यद्यपि उनमें अपनी-अपनी राष्ट्रीय विभिन्नताएँ थी तथापि वे अपने को हलन दबो ही की सतति मानते थे। फिर भी ग्रीस के राज्यों में स्वायत्त-साधन तथा उत्पन्न की इतनी लालसा घबकती थी जिससे ऐक्य भाव में भयकर विघ्न पन्ता रहा।

सामन्त-कुलीन युग में ग्रीक जनता का रहन-सहन दीन हीना का-सा था। उनका नगर गन्ने मरान मन्दिर छाटे और मड़े थे। उनकी देव मूर्तियाँ तक भागी थीं। पढन लिखन वालों की सख्या बहुत कम थी। जाचार विचार का बल्पना अपनी प्रारम्भिक दशा में थी। किन्तु प्रगति के लक्षण कुछ-कुछ लिखाद पढन लग थे। उन लक्षणा में साहित्य की उत्पत्ति विनापत उल्लेखनीय है। वारा की गाथाओं के सिवा उस युग में साधारण जनता के कष्टमय जीवन का चचा साहित्य में आन लगी थी जिसका प्रमान आग चलनर ग्राम के राजनीतिक जीवन और संगठन पर विनाप रूप से दिखाई पडा। लोग म मनुष्य के नतिन बतव्या और यवहारों का विचार आरम्भ हुआ। उस युग का सबसे प्रसिद्ध कवि हसिजट बोईनिया नगर का एक साधारण किसान था।

आर्थिक विकास

कुलाना के युग के उपरात्त ग्रीस में अनाचागिया के युग का आरम्भ हुआ। ग्रीस के लोग प्रायः सती करते और जतून के बाग लगाते थे। जतून का तेल वे दग-

बदेगा में भेजते और उससे बड़ा मछरी, अनाज, जम्बर, धातु की तथा अन्य वस्तुओं की चीजें जैसे कालीन आदि बाहर से मगवाने थे। कुछ बालक उपरांत बाहर से आने वाली चीजों की वे स्वयं नकल करने लगे। मीठय प्रिय होने के कारण कुछ चीज तो वे ऐसी सुंदर बनाते थे कि उनकी मांग बाहर से भी आने लगी। उनका बनाये मिट्टी के बरतन गिन पर रंगीन दृश्य अथवा चित्र हाते, इतने सुंदर थे कि आज तक उनका सम्मान होता है। इस युग में ग्रीस के लोगों में उद्योग धंधे प्रदे व्यापार की उत्पत्ति और विस्तार की चेतना जाग्रत हुई जिसका उनके जीवन और इतिहास पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। उनका उपनिवेश बटली मिसली एशियाई कांचक तथा मिस्र में स्थापित हो गया। उनके जहाज मध्य सागर के तटों पर व्यापार करते थे। व्यापार और समुद्रयात्रा के कारण यूनानिया का अर्थ दशा स मम्पक बढ़ता गया। नव दशा की सस्कृतिया कला-कौशल, सम्यताआ का ग्रीस के सास्कृतिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनमें नये जीवन का मचार हुआ जिसमें उनकी सुप्त प्रतिभा और अविकसित शक्तिया चमत्कृत हो उठी। कला-कौशल की वृद्धि और उत्पत्ति के साथ व्यापारिक ममद्वि बढ़ी। नये प्रश्न और नवीन समस्याएँ उत्तरोत्तर उत्पन्न होती गयीं। उद्योग धंधा के बढ़ने से गुलामा की अधिकाधिक आवश्यकता पड़ी जिससे उनकी संख्या बढ़ती गयी। बड़े हुए व्यापार की रक्षा के लिए यह आवश्यक हुआ कि ग्रीस का जहाजी बेटा कम-से-कम पानागिया की नौ शक्ति का ता मामना कर सके। या तो सारे ग्रीस का जल-सेना की आवश्यकता थी किन्तु समुद्र तट पर अवस्थित नगरों के लिए सबसे अधिक थी। उनका उत्तरदायित्व भी अधिन था। सम्भवत इसी कारण एथेस का जगसर हाना पड़ा। वह यहा तक आगे बढ़ा कि उसको ही ग्रीस का नेतृत्व प्राप्त हो गया। ग्रीस में जहाज बनाने का अच्छा काम होने लगा।

व्यापार की वृद्धि के साथ मिकका का बनना बढ़ता गया। लीगिया के सिक्का का उठाने अनुकरण शुरु किया किन्तु आगे चलकर वे उनसे भी बटिया सिक्के बनाने लगे। मिकके सुद पर चलने लगे जिसकी दर साधारणत अठारह प्रतिशत वार्षिक होती थी। व्यापार तथा मूल पर सिक्के चलाने के कारण द्रास में धनिका और मध्य श्रेणी के लोगों का उत्पन्न और विनाम होने लगा। अक्वेण्डर के युग में अक्वेण्डिया नगर व्यापार का बड़ा प्रसिद्ध केन्द्र हो गया। स्पन में चीन तक का माल यूरोप अफ्रीका और एगिया से उसके बंदरगाहों से जाता जाता था। व्यापार की वृद्धि के साथ वहा वहा की स्थापना हो गया। चार हजार टन के

तबत्र गरी चला थे । जहात्र क सुर्म त क विद्युत् मनी एव विद्युत्त धी एव म
आवारा-नीत आगोति विद्युत् मनी ।

माताजित जीवत

एव एव वा एविव्य जीवत माताजितत मीगा एा एता । एव वि ए मर के
मग में था । एता एवव एता वि एववव एता एता एता एता एता एता एता
सुतिताता की एव मतातुता एता एता एता । एता मतात म व ना एता
एता मता मता एता एता एता की एव एता एता एता एता । एता मताता
की एता वा एवव वर विता जय ता एता एता एता मता एता एता एता ।
जाता जीवत में एता एता व एता माता व एता एता एता एता एता एता
माता जाते एता । एताता में एतात एता एताता एता एता एता मतात म
विद्युत्त हाता । एता मता म एताता वा अधिवार त विद्युत्त एता ।

मतात में म्निता की दा श्रेतिता थी । एवव एता एता एता विद्युत्त
विद्युत्त हातर गतिता अद्यता एताता वा एता एता एता । एता वा विता
जाद्यता कु एता एता म्निता एता एता एता वा विद्युत्त वर एता एता एता
एता विद्युत्त वर एता वा । विद्युत्त वा मता एता एता एता एता एता एता
एतात वरता था । विद्युत्त म एता एता व कुतामिन्त वा एता एता एता
जाती था । विद्युत्त क एता १५ वर वा एता एता एता एता था । एता वा
जाता जननी और गतिता एतात क एता एताता विद्युत्तता एता जाती
थी । एताता में ता म्निता वा एताता व बीत में एता एता म्निता-जाता वा एताता
सी थी जिमवा उल्लव पीट विद्युत्त जा एता है । विद्युत्त एतात में विद्युत्तता म्निता
वा वायव्यत घट व मीतर ही सामिन्त था । वाटर वा एताता म एताता वाई
मतातर ही न था । एता एतात एता-एतात जात की वाई आवद्यतात त मताती
जाती थी । हाँ, जातात एव घामिन्त एताता में जात एताता एताता एतात एतात
न था । साधारणत वे मवान क जनानतान में एताता और मताततान में त
आती-जाती थी । जनानताने वा सात एतात एता व अधिवार में एताता था ।
एताता एतात एताता वा था । एता अद्यता एता एता एतात में एताता नही
वरते थे अपितु एताती मान मतात वा आदर वरत थे ।

यह स्मरण एताता चाहिए वि श्रीत के निवामा गातीरिक् सम्बध वा ही प्रेम
समझते थे । मानसिक समवेदना वा भावुकता वा एताती वल्यता में वाई महत्त्व

न था। रोमास के लिए बहुत कम स्थान था। इसीलिए विवाहिता स्त्री के प्रति उनका मन भावुक न था। सम्भव है कि भावुकता को वे लग सन्तान के लिए अनिष्ट और अहितकर मानते हों। उनसे सन्तति में कामलता विचार तथा विवेचन शक्ति की दुबलता तथा भावुकता की अनावश्यक अधिकता आदि दापा के आ जाने का काल्पनिक जयवा वास्तविक भय उन्हें था। विवाहिता स्त्री से रमण करना पति का कर्तव्य माना जाता था, जिसका प्रतिपालन गम्भीरता के साथ समय-समय पर किया जाता था। जननी या गृहिणी होने के नाते विवाहिता स्त्रिया का स्थान समाज में अग्रगण्य था। कहा जाता है कि ग्रीम वाले गार्हस्थ्य जीवन के मुख से अनभिन्न थे। ग्रीम के प्रमुख दार्शनिक प्लेटो की राय में गार्हस्थ्य जीवन से न तो कोई लाभ हाना है और न उसकी आवश्यकता है। यदि पुरुष और स्त्री का सम्बन्ध केवल गर्भधान तक ही सीमित कर दिया जाय और विवाह की प्रथा उठा दी जाय तो सबथा उचित आर लाभदायक होगा।

उक्त प्रेम की वासना की पूर्ति के लिए अथवा रोमास की पूर्ति के लिए ग्रीक लोग उपपत्नियों गणिकाशा, वदयाशा आदि स्वरिणिया से सम्बन्ध स्थापित करते थे। न तो विवाहिता स्त्रिया स्वयं और न समाज ही उस प्रकार के सम्बन्धों में मयकर अनाचित्य अथवा निन्दनीय दुराचार समझता था। सालन ने वेश्यावृत्ति का बन्ध बनाकर वेश्यालया का निरीक्षण और उनमें बर बमूल करना गुरु कर दिया। उसकी आय से एफराडाइट (पेण्डिमास) नाम की नग्न किन्तु सुन्दरी देवी के मन्दिर का निर्माण कराया गया। वारागनाशा की तीन श्रेणिया थी। सबसे निम्न श्रेणी की वदया पोरनई कहलाता था जिनकी एकमात्र जीविका दाम ल्वर थोड़े जयवा अधिक समय के लिए एक या अनेक व्यक्तियों का अपना शरीर अर्पित कर देना थी। मध्य श्रेणी की वेश्याएँ 'आग्रादडम' कहलाती थी। वे नाच-गान के पेने के साथ पुरपा का मनाविनोद और वेश्यावृत्ति भी करती थी। स्वरिणिया की सबसे उच्च श्रेणा 'हनेरी' नाम से प्रख्यात थी। वे प्रायः सुन्दरी, शिक्षित कलाविद, समाचनुर और व्यवहारकुशल हाती थी। गान नृत्य के सिवा वे काव्य दान का अध्ययन ही नहीं करने शास्त्र चर्चा भी करती थी। वे प्रायः अपने ही घर में रहती थीं। जिनको उनसे मिलना हाता वे उनके घर जाते थे। उनकी गोष्ठी में चित्रकार गित्यकार, माहित्य तथा पौराणिक विषयों के प्रेमी दार्शनिक इतिहास प्रेमी आदि विचार विमर्श तथा विवाद के लिए खुलमखुल्ला आते-जाते थे। यद्यपि वेश्याशा का नागरिक अधिकार प्राप्त न था और न वे अपने देवी-

देवनागा के सिवा दूसरे देव मंदिरा में जाने पाता थी, तथापि उनसे प्रति लोका में दया अथवा घृणा के भाव न थे।

ग्रीक के माघारण लागा का ही नहीं, बरन प्रसिद्ध दार्शनिका जाग गिहित जना की यह धारणा थी कि मत्रा का भाव प्रेम से बल्कर है। यद्यपि कभी-कभी किमा स्त्री पुष्प में प्रेम का परिपाक मत्री के लक्षण उत्पन्न कर देना था तथापि माघारणतया स्त्री-पुष्प का सम्बन्ध गारीरिक प्रेम तक ही सामित रहता था। ग्रीका की धारणा थी कि मत्री वस्तुतः पुष्पा में ही हो सकती है क्योंकि उनमें ही जीवन के जितने अंग हूँ पृष्ण रूप में विकास प्राप्त कर सकते हैं। सग्य भाव का प्राणपण से निर्वाह करना मनुष्य का श्रेष्ठतम कर्तव्य माना जाता था। उसमें उमको बलौकित सुख को अनुमूति होती थी। प्रायः लाग किमी नवयुवक को अपना सगी या चेला बना लेते थे और उसकी शिक्षा-दीक्षा में यथाशक्ति बाई कोरकर न छोड़ रखते थे। वे एक दूसरे के सुख-दुख के साथी ही जान थे। कभी-कभी मत्री का सम्बन्ध प्रेमवामना अथवा कामुकता का अम्वाभासिक दोष ग्रहण कर लेता था। स्पाटी और श्रीट में एम सम्बन्ध में बाई अनाचित्य नहीं माना जाता था। एयस में जिन पर यह आरोप लगाया जाता उनका नागरिक अधिकार छीन गिये जाते थे किन्तु समाज में उम दाय का उमशा की दृष्टि से देना जाता था।

शिक्षा-दीक्षा

ग्रीक में स्त्रियाँ के लिए अस्मात् न था। शिक्षावीं अध्यापन के घर में एनयित हात थे। बाट्टरा या पुम्परीं लरर नाम उमरी साथ जाना और वेत कर बटा रहता। अध्यापन प्रायः गराय गता और समाज में अनात्तर की दृष्टि में दया जाता था। बाट्टरा के पिताजा में जा कुछ मित्रा उमम उमता मित्रा हाता। उनका पढ़ान का अंग पुराना पद्धति के अनसार था। शिक्षता-मन्ता जाग पुराने कान्या के अंग का अंग कराना बाट्टर की पिता के लिए पयात्त गमना जाता था। बाट्टरना का शिक्षा के लिए बाई प्रयत्न न था। शिक्षा में गाय का कवठ कनीनी शिक्षाया था कि उमका शिक्षा अनिष्ट कर्मप्राणी बाई वान उम न पढ़ाई पाय। दमरिग गाय का जाग में कुछ लाग तीव कर्म के लिए नियुक्त कर गिये जात थे। अट्टर कय का अवस्था में तीन वर तक गनिक शिक्षा घुरसा का दी जाता था। प्रयत्न दृष्टि का दृष्ट्यगम करा गिया जाता था कि उताता परम कर्तव्य

सामन की आजा पर चलना, दंग, देवम्याता का समादर आर उनकी रत्ना आगिरी दम तक करता ह । युवक प्राय अपना समय मलान के खेल और श्रौटाआ में प्रतीत करते थे । कुस्ती मुष्टियुद्ध, दौड़ अश्व और रथ-संचालन गैल पकना कदना-फादना उनमें मुख्य खेल थे । बाकी समय वे गप्पे लडाने, हज्जा गुजा खलने में हज्जामा की दूकाना अथवा सुरालया में, गाने-बजाने में, दापतें खान जार आपन म धक्का मुक्की करने म खच करते थे ।

परिवलाज के युग में एक नवीन परिपाटी चल पडी । गाने-पीने के समय लाग साहित्य कलाआ आचार विचार और संगीत के विषय में विचार विनिमय करत लगे । उस समय तार्किका जथवा हत्वामासिया का एक नया समुदाय पदा हो गया जा प्रत्येक विषय पर निर्बाध शकएँ और आलाचनाएँ किया करता था । वे लाग भाषण कला गणित ज्यातिष प्रकृति विज्ञान तथा साहित्य एव अलकार कला की भी शिक्षा देत थे । हत्वामासी सज्जनाके ही परिश्रम से ग्रीसमें उच्च शिक्षा और ज्ञान विज्ञान का विकास हुआ । उनकी शिक्षा से ग्रीस म गद्य शली का विकास भी प्रता से हाने लगा । लोगा में एन नयी चेतना, विद्यात्रिलास की रचि तथा तार्किक चिन्तन की पद्धति पर विचार करन की परिपाटी चल पडी । पुराने लोग इन नयी प्रवृत्तिया म धवगते और शक्तिन हाने थे, किन्तु युवका का उनमें जगुराग बढ़ना ही गया । व्यक्तिगत विभिन्नविचारा के सवदहन और सधप से बाद्रिफ उन्नति हानी चगी गयी जिसके फलस्वरूप ग्रीस म दार्शनिक तथा दार्शनिक विचारो जार सप्र दयावा किलक्षण सृष्टि हा गयी । हत्वामासिया की धारणा था कि वास्तव में किमी चीज का अस्तित्व नहा यदि हा भी ता वह जानी नही जा मरती जार यदि जनुमूति हुई भी ता वह वणनातीत है । मनुष्य ही प्रत्येक वस्तु का मापदण्ड न चाहे वे अस्ति जथवा नास्ति जगत का हा । जत बाल्यनिर्ज जगत म व्यथ भटकना छात्रर मनुष्य के लिए 'यावहारिक गुणा का साधना करना ही समाचीन है ।

ग्रीस क दार्शनिक विचारा के विकास म सबसे पहला प्रदन सृष्टि अथवा विद्वज की उत्पत्ति क रूढ्य का उठा । इमा मे छ मी वष पूव मेरिटम पुगन का अत्म नाम- दार्शनिक दम परिणाम पर पहुँचा कि सृष्टि का विकास जल तत्व म हुआ और जत म उसा में उसका जवमान भी हागा । कुछ काल के बाद उसी नगर के एनिससमण्डर ने यह स्थापना की कि 'मृष्टि की उत्पत्ति अतन्त्रत्व' से हुई । बट गनिदीक था और लपर-नीचे, आगे-पीछे की धार धूमना था । उससे टुकडे घीरे घीरे फलकर विद्व रूप में परिणत हो गये । उन दाना मनो को असन्तोषजनक समझकर उसी

विश्व की भौतिक सत्ता के सम्बन्ध में उपयुक्त विचारधाराओं का महत्त्वपूर्ण विनाश 'अणुविज्ञान' सिद्धांत में हुआ। उसके सस्थापना में ल्युकिप्स और डिमा प्रिंटस प्रमुख हैं। उनका सिद्धांत यह था कि परमाणु अगणित तो अवश्य हैं पर उनके गुणों में कोई भौतिक विभिनता नहीं। उनके आकार और रूपा में अवश्य बहुवृत्ता है। प्रत्येक परमाणु में स्वाभाविक गति-विक्षिप्त निहित है जो उसका गनिय करती है। परमाणु स्वयं एक-मे और अनन्त हैं, किंतु उनके संयोजन और वियोजन के आकार, सत्याओं और प्रकारों में परिवर्तन होता रहता है।

भौतिक सत्ता के विचारका के मत जिन विचारका को अमतोपजनन प्रतीत हुए उनमें प्लेटो (अणुगत) का महत्त्व सबसे अधिक है। उसकी धारणा यह थी कि परिवर्तनशील पदार्थ शाश्वत सत्य नहीं हो सकते। वास्तविक सत्य सत्ता उस विचार-लोक की है जिसके प्रतिबिम्ब मात्र हमारी अनुभूतिया हैं। उसी शाश्वत सत्य की प्रतिच्छाया हमका पदार्थों और अनुभूतिया के रूप में भूतिमान जान पड़ती है। वह सत्य सत्ता अनादि और अनन्त है। परिवर्तनशील पदार्थ-जगत से उसका वाइ विरोध सम्बन्ध नहीं क्योंकि वह अनन्त और आदि वास्तविक सत्ता है। भौतिक पदार्थ पर शाश्वत सत्य के विविध रूपा का आगम होता रहता है। भौतिक जगत का, जो चन्द्रिय ग्राह्य है, सजन हुआ है। वह उम मर्ति सत्ता की रचना है जो स्वयं दाप रहित सम्पूर्ण और सबका प्रेरक है। प्लेटो ने यह नहीं बताया कि उस प्रेरक का स्वरूप क्या है। जगत में जो अपूर्णता और दाप दिखाई देते हैं वे सब कारण हैं कि पूर्ण सत्य के पूर प्रतिबिम्ब का भौतिक पदार्थ ग्रहण करने की शक्यता नहीं रहती।

परमाणुवाणिया और नेकात्तर सत्य सत्तावाणिया के विचारों की विपमता का दूर करने का प्रयत्न प्लेटो के गिप्स मुप्रसिद्ध अरस्तू ने किया। उनमें वास्तविक पूर्ण सत्य की सत्ता तथा भौतिक जगत की अपनी निजी सत्ता दाना का अन्वित्व माना। अतः सत्य सत्ता के स्थान पर उनमें द्वैत सत्ता के सिद्धांत की प्रतिष्ठा की। उनकी यह धारणा थी कि दोना सत्ताएँ पथक नहीं बन सकत हैं। सकल्प और उमकी मर्ति में पथक्य करना भ्रमात्मक है। उसका पारम्परिक सम्बन्ध सदन रहता है। अतः दृश्य जगत असत्य नहीं, वरन् सत्य का ही एक प्रकार है। दाना सत्या का अस्तित्व मानना आवश्यक है। सकल्प (विचार) के अनुकूल भौतिक पदार्थों की रूप रेखाएँ बदलती रहती हैं। उसी को परिवर्तनशीलता कहते हैं। जब भौतिक पदार्थ सकल्प का पूरा तरह ग्रहण नहीं कर पाता तब उसमें कुरूपता

तथा जय विकारी दाप जा जाते ह । भौतिक पन्थ का एक मात्र उद्देश्य सत्य सवरूप का प्रतिमान करना है । उमकी प्रगति उसा दिगा म चलता रही ह और चलती रहगी । उत्तगत्तर पूणता को व्यक्त करना पदाथ का ध्येय है । दाना मत्ताजा क समुक्त रहन हुए भी दाना के पायक्य का मानमिक कल्पना की जा सगती है ।

इनी कारण प्लेटा का यूराप म श्रद्धा तथा विश्वास का प्रथम प्रतिष्ठापक कहा जाना है । उपयुक्त विषया के अतिरिक्त जमरत्व श्रम, जोर नीतिशास्त्र की भी उमने मममदी निवचना की है । जनसत्ता क आत्मानरव का महत्त्वपूण दानिक प्रतिपादन उसन सप्रम पहल किया । प्लेटो ससार क प्रतिभाशाली दाशनिका की प्रमख श्रेणा म प्रतिष्ठित ह । प्लेटा के शिष्य जरस्तू (अरिस्टाटिल ३८४ स ३२२ ई० पू०) न भी अपना जदमुत प्रतिभा का प्रमाण लिया । प्लेटा की तरह वह कल्पना और वाद सवाद क आकाश म उडान न भरकर यथाथ और नातय तथ्य की गवपणा म दत्तचित्त हुआ । उसका दष्टिकाण उनना दाशनिक न था जितना कि 'बनानिक' । व्यावहारिक गवपणा और जवीक्षण द्वारा घटनाजा को सग्रह करक उम परिणाम तथा सिद्धान्त निकालने का बनानिक ढग उसको प्रिय था । जतु जगत का उसका इतिहास उस पद्धति का देशी यमान प्रमाण है । विद्याया का वर्गीकरण जिस योग्यता और कुशलता स उसने किया वह सबथा स्तुय ह । उसको जमरत्व या दविक त्रिधान म इतनी दिलचस्पी न थी जितनी कि 'यावहारिक विषया म । जाएव उसने राजनीति विज्ञान का व्याखार और आचार पर श्रय रचे । दौष्टिक धनम जरस्तू का जाज तक सम्मान होना है । ग्रीस क इतिहास की ईसा से पूव की पाचवी और चौथी शनिया दाशनिक विकास का स्वर्णयुग मानी जाती है । प्लेटो और अरिस्टाटल क मत म दशन जीवन की कल्लोल लहरी है ।

हमरा महत्त्वपूण विषय जिसपर हेरवाभासिया और विचारका ने अपना विचार प्रकट किया, विश्व म मनुष्य की स्थिति का था । भौतिक सिद्धांतवादिया क अनुसार मनुष्य भी उहा तत्त्वा से बना है जिनम जय धीजा की रचना हुइ । जत उस पर भा वही नियम लाग है जो जय वस्तुआ पर लगत है । इसलिए मनुष्य का भौतिक जगत क निग्रमा के अनमार जाचरण करना चाहिए । इस मत क प्रतिकूल प्राटागारस ने कहा कि मनुष्य ता विश्व का कद्र बिन्दु है एव विज्ञ की सत्र स्थितिया और वस्तुआ का मापण्ड ह । उसमें बन् गक्ति आर स्वतयता है कि वह अपने जीवन का अपने मन के जनुकूल निमाण कर सवता ह ।

अपन ध्येय की पूर्ति के लिए वह प्रकृति की शक्तियाँ एवं सत्ताओं का अपने मन के अनुकूल नियोजन कर सकता है। एथेस के प्रसिद्ध दार्शनिक सांक्रैनीज (मुकरात) ने उम विचारधारा का पुष्ट करते हुए कहा कि विद्वत् का रचना के सम्बन्ध में ऊहापाह करना समय व्यर्थ नष्ट करना है। जानने का मुख्य विषय ता मनुष्य है। उसके लिए क्या अच्छा एवं हितकर और क्या बुरा या अहितकर है यह जानना आवश्यक है और उसी में दार्शनिक विचार की सायकता है। पंटा ने भी उस मत का समर्थन करते हुए कहा कि मनुष्य में ही वह योग्यता है जिससे वह विविध विषयों के गुण एवं वास्तविक सत्ता एवं सत्य का समझ-बूझ सकता है। जय दशन ही नहीं वह आत्मदर्शन भी करने की क्षमता रखता है। अतः विद्वत् में उमका अपना विनिष्ट और अद्वितीय स्थान है। उसकी आत्मा में अलाकिक एवं दैविक ज्ञान तत्त्व का संचार पाया जाता है। पार्थिव शरीर के बंधना से ऊपर उठकर मनुष्य मनस लोके में स्थित होकर गार्श्वत सत्ता का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अरिस्टोटल (अरस्तू) का भी यह मत था कि मनुष्य में जय जात्रा की विशेषताओं के साथ अपनी अनुपम विनिष्टता उसकी विचारशक्ति है जिसमें रचनात्मक गुण हैं। उसकी यह दीय शक्ति दैविक है। माराग यह है कि मनुष्य में आधिभौतिक और आधिदैविक सत्ताओं का विलक्षण सम्मिलन हुआ है। यदि वह प्रयत्न करे तो दयस्व प्राप्त कर सकता है, देवता बन सकता है किंतु यह स्पष्ट नहीं होता कि वह ईश्वर तत्त्व में मिल सकता है या नहीं।

ग्रीक लोग देवताओं का मानते आर उनका सम्मान करते थे। परम्परागत विश्वास के कारण देवताओं में उनकी जास्था थी। फिर भी विचारकों और दार्शनिकों ने उनपर भी कुछ विचार किया। जिनाफेनीज (छठी शती ई० पू०) ने तत्कालीन देवता सम्बन्धी विचारों का उपहास करते हुए कहा था कि देवाधि दय केवल एक ही है जो अचल और गार्श्वत है। वह सत्ता मनुष्य रूप ता हो नहीं सकती। वह देवाधिदेव ही अचल और अद्वितीय अनश्वर, अविच्छिन्न तथा सष्टि का विधाता परम तत्त्व है। सृष्टि के यावत् व्यापारों में शक्ति रूप से वह अर्तहित रहता है। सम्भवतः वह वर्णनातीत है। ऐसा प्रतीत होता है कि जिनाफेनीज का मत अद्वैत और द्वैत की संधि रेखा तक पहुँच गया था।

एकेश्वरवाद और अनेक-देवतावाद पर विचार विमर्श होना रहा। सांक्रैनीज (मुकरात) ने उम पर सागापाग विवाद उठाया जिसका परिणाम यह हुआ कि उम पर जातीय देवताओं का विरोधी होने का अक्षम्य दाय लगाकर उसे प्राणदंड

की गन्ता ली गयी। अगले विभाग में समाप्त के पश्चात् उमा विपरीत प्रायः स्थित। तब छाडकर चतुर्जान का प्रभाव उमा तात्कालिकता के अभाव में विरुद्ध समन्वय पर ही अग्रगण्य बन गया था। उमा विपरीत स्थिति (अज्ञान) में विज्ञान जारी रहा, किन्तु ज्ञान में का दृश्यत्व में निष्पत्ति सिद्धांत उमा के ही ज्ञान का दाप में लगाया जा रहा। उमा की आगे चलने में ही प्रतीत होता है कि वह बस एक ही सत्ता का स्वर मानना था। यही सत्ता गुरु की रचना और उमा का नियंत्रण करती है। जीवामा उमा का अर्थ है जो जगत् के बचाने में मुक्त है परमात्मा में मिलने के लिए व्याप्त और प्रयत्नशील रहता है। उमा में का गूढ रहस्यवादी बना जा सकता है।

अग्निटाल (अस्तु) की यह धारणा थी कि मग्न के व्यापार का स्वर ईश्वरीय ज्ञान का पदार्थ (मग्न) पर आरोपित कर उमा में बनकर है। ईश्वर नियंत्रक पदार्थ उपलब्ध और प्रतिमान निमित्त कारण बने जा सकते हैं। प्रकृति अथवा पदार्थ में निहित ईश्वरीय ज्ञान अनवानर स्था में प्रकटित और भूमिमान होता है। यही गुरु का स्वरामिमुक्त सम्बन्ध है। स्वयं काई जन्म नहीं क्योंकि ईश्वर जोर उमा का ज्ञान जन्म है। स्वयं अथवा ज्ञान सनातन ज्ञान हुए भी विरुद्ध ईश्वरीय सत्ता में पदार्थों का अनुप्राणित और समरणीय करनी रहता है। भागे सृष्टि उमा का जोर बचने का प्रयत्न करती रहती है।

ग्रीस वाला न जड प्रकृति और चतुर्ध क सम्बन्ध में भी विचरन किया। जड प्रकृति और चतुर्ध के अर्थ की जोर स्पष्ट रूप से हिस्कीटम ने सम्बन्ध करने पर ध्यान आवेपित किया था। उसने बाद परमनाडीज ने यह सुनाया कि चतुर्ध मनसतत्त्व जड प्रकृति में निहित है जोर वही उस अनुप्राणित करके अनेक प्रकार की रचना रचता है। उमा के प्रेरणा से जगत् का सारा व्यापार चलता है। पाचवी गती इ० पू० में अनेकसागरम न यह सिद्धान्त स्थापित किया कि मनस्तत्व ने ही जड प्रकृति का सत्ता प्रदान की है और इस सत्ता का प्रसार किया है। वह भूत वर्तमान और भविष्य का पूर्ण ज्ञान है। धीरे धीरे विश्व के मनस्तत्व के सिद्धांत को विचारका ने मनुष्य के चतुर्ध मनस्तत्व पर लागू किया। प्लेटो ने मनुष्य के चतुर्ध मनस्तत्व को ही जीव की सत्ता दे दी। उसने मत से यह तत्त्व जब शरीर में प्रविष्ट हो जाता है तब उसका ज्ञान रुद्ध हो जाता है और उसे एक प्रकार की विस्मृति हो जाती है। फिर चिन्तन मनन और विचार से

उमकी पूव स्मृति जाग्रत होती है, पूव जम में प्राप्त पान का विकास हाने लगता है । मनस्तत्व ही अपन मक्षित पान से पदार्थों में अपना ससार बनाता रहता है । वस्तुन मन ही सच्ची सत्ता है । ससार उसी की कल्पना और विचार की प्रति मति ह । प्लेटा ने स्पष्ट रूप से यह नहा बनाया कि शुद्ध चतयमनस का प्रवृत्ति तत्व स कमे गठवघन हुआ । इस प्रसग का वह कवल यह कहकर छाट दता है कि चतयमनस में इन्द्रिया के जगत म विचरण की इच्छा ही उमका प्रवृत्ति के ममग म ले जायी और वह उसम वघ गया । अरिस्टाटल (अरस्तू) वह समस्या ता हल न कर सका किन्तु उसने यह मुयाव दिया कि चतयमनस और प्रवृत्ति में सभवन का न कोई घनिष्ठ सम्बध रहा होगा । उमकी समय म चेतन और अचतन सत्ताआ का मूलत दा पथक सत्ताएँ मानता भ्रमात्मक है । व दाना एक दूमर में गुथी हुई जार अभिन्न ह । प्रवृत्ति म जल्यामी हैसियत से व उमका अनुप्राणित और नियाजित करता ह ।

जीवात्मा

ग्रीसवाला में बहुत पहले से यह विचार पग हुआ था कि शरीर मृत हो जाने पर जीवात्मा का नाग नहा होता । वह प्रकाशीन लोक म जनन्त काल तक पडी मानव-लाक पर विसूरती रहती है । ग्रीक विचारका की राय में जीव की रचना अत्यन्त सूक्ष्म परमाणुआ स हुई है । किसीने उसमें वायुतत्व की और विमी ने अभिन्नत्व की प्रधानता बतलायी । दाशनिक पाद्यागारस के अनुमार जीव की उमक कर्मों के अनुसार गति होती है । अच्छे कर्म करने से मरणापरान्त उसे मुख आर दुरे कर्मों स दुस मिलता ह । गुम और अगुम कर्मों की उन्तान सूचिया वना दा जिसके अनुसार चलने से मरणापरान्त अच्छा या दुरी गति प्राप्त होती ह । एम्पिक्वलीज क मत से जीव अपने कर्मों क अनुसार एक शरीर छाटकर दूसर में चला जाता है । आरम्भिक सम्प्रदाय के लागे का ता पुनजम म पूण विश्वास था । हेरक्लिटम की राय म जीवा म विभिन्नताएँ होती हैं जा सूखी और उष्ण होती हैं । वे उष्ण वग की हैं और विश्वात्मा क गुणा से कुछ मिश्री-जुग्ती ह । परमाणुवाणिया की राय म जीव अत्यन्त सूक्ष्म परमाणुआ से बनता है । दा साधारण परमाणुआ के बीच में एक जाव का सूक्ष्मतर परमाणु प्रतिष्ठित रहता है । जीव क सूक्ष्मतर परमाणु शरीर भर म फल रहत हैं स्वाम निश्वास के साथ आत-जाते रहते हैं । मरने पर व विखर जाने ह, किन्तु उनका अभाव नहा होता ।

व किमी अणु गरीर म मित्र तया करी है । म्गी जोर म्ग म विचार आर विवेक व गुण हान है ।

पन्ना ने विश्वात्मा और जावात्मा म यह न बाना रि विद्वान्मा जपरा परमात्मा स ही गति समृति प्राण म, गान, मौन्य-अनियत और ममग्गा अथवा सगति व सुष्टि हाना है । विचार-जगत् और भांगारिक स्थिति व बीर की वह कठी है । ईश्वर ने ही प्रकृत एत तया स्थिति व आत्मा प्रकाश है । ये आत्माएँ अविनाशी और शुद्ध गान स ममग्ग हाना है । विष्णु गरीर हान व इच्छा स गरीर व बंधना म पन्ना व बद्ध और मूत्र स्मृति हा जाता है । आ जीव व परम ध्येय गरीर व बंधना स मुक्त हा जाता है । जावात्मा विद्वान्मा व ही एक अणु है अत गारवन है । न ता वह छिन्न मिश्र वा धन विगत हा गाना है न नष्ट ही हा सयता है । यह चतुस्र सत्ता है और अणु सत्त अणुस्र व प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है । मुक्त हाने पर वह अनी शुद्ध गति व प्राप्त कर लेता है । अरिस्टोटल की धारणा थी कि जहाँ कहा जीवा विगार्द पन्ना है वहाँ जीव की सत्ता हाती है । मन्थर गति म यह वनस्थिति तथा जन्म, मन्थर और नमचर प्राणिया म भी विरमिन पायी जाती है । मनुष्य में उमका ममग्ग अधिक विकास तथा प्रकाश हाता है । उमा में विचार और विरम और गान व रचनात्मक गुण प्रकाश पाता है । गरीर उमकी आत्मस्थिति व वार्द क्षति गहा पन्नाना जत गारीरिख चेतना के धूय हा जाने पर भी उमकी वार्द हानि नहीं होती । वह जजर और अमर है ।

सच्चा गान प्राप्त करने व माधना पर मा ग्रस व विचारना और दाग निवा ने काफी ध्यान दिया । ऐत्रिक गान ता साधारण श्रणा व गान है क्यारि वह सीमित अपर्याप्त और वमी-वभा भ्रमात्मक हाता है । तव और बुद्धि के द्वारा जा ज्ञान प्राप्त होता है वह अधिक विवसनीय और परिष्कृत हाता है क्यारि बुद्धि म और ईश्वरीय गान में कुछ तात्कालिक सम्भव है । बुद्धि पार्थिव सीमाआ व भा उल्लंघन कर ऊपर उठने की क्षमता रखती है । साभटीज की धारणा थी कि बुद्धि और तव के द्वारा जागिक सत्य जयवा आमक विचारा व सदन और शुद्ध व्यापक सत्य व गान प्राप्त हाता है । प्लटो व विश्वास था कि जीव म स्वय सत्य व गान होता है जा गरीर म बंधने से धूमिल जयवा विस्मृत हो जाता है । उसके जावरणा को बेधकर जीव अपने सुपुप्त गान की स्मृति जगा हा नहीं देता, वरन उसे प्राप्त कर सकता है । अरिस्टोटल की यह मायता है कि मनुष्य की

मासिक अनुमतियाँ सत्य ह, किन्तु उनका रहस्य और पूरा ज्ञान व्यवस्थित तब और विचार से ही प्राप्त हो सकता है। तार्किक अनुसंधान के लिए उन्हे 'याव-पाश्चात्य का अपनी सूर्य के अनुसार व्यवस्थित किया।

अल्फाट्टर की विजया से ग्रीस का अफीवा और एशिया से संबंध अधिक घनिष्ठ हो गया। उसने गुरु अरस्तू की मृत्यु के पश्चात ग्रास के दार्शनिकों का दृष्टिकोण बदलने लगा। धन और सम्पत्ति के बढ़ने से वात्पनिक अथवा सद्भावित व्यापारों में लगाव की रुचि घट गयी। ये मानसिक विचारों अथवा भव्य विचारों में सुख-प्राप्ति के भाव से सतुष्ट न होकर सुख प्राप्ति के लिए सुखद पदार्थों और विविध भौतिक वस्तुओं के संग्रह और भागापभाग को मुख्य साधन समझने लगे। आत्मवाद के गूँथे लाल से हटकर यथाववाद के मरल मुद्राह्य विषयों और प्रत्यक्षानुभव की ओर आकर्षित होने लगे। इस नवीन युग के विचारों में एपिक्यूरस (३४२ से २७० ई० पू०), जेना (३५० से २६०) और एपिस्टेमोनीज थे। पहले का मत एपिक्यूरियन सिद्धान्त कहलाता है। उसके अनुसार ईश्वर तथा जाव भी मूढ परमाणुओं से निर्मित ह। देवताओं की दुनिया दूमरी है, उसका मनुष्यों के जावन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। धर्म की अवहलना करना अच्छा है क्योंकि उससे जीवन के नसर्गिक प्रवाह में जनावश्यक बाधा पड़ता है। राज्य मनुष्य के लिए है न कि मनुष्य राज्य के लिए। मनुष्य के लिए दुख और पीडा संवचना और परिमित आहार विहार का सुख उठाना स्वाभाविक तथा श्रेयस्कर है। जतिगणना संकष्ट और दुख ही होता है। जावन में मनी की भावना तथा मजसे मनी का व्यवहार संग्रह श्रेष्ठ और सेवनीय है। जीनो भी, जो समेटिक जाति का साम्रम निवासी था (३५० से २६० ई० पू०), मौनिकवादी था तथापि वह मानता था कि मनुष्य को शुद्ध भाव से संकष्ट खोलने का जम्मासी होना चाहिए। महानालता मनुष्य का कवच है। उसकी सम्पत्ति में भी धीमान के लिए राज शासन के बदलो का प्रतिपादन आवश्यक है। शासन का कवल मान उद्देश्य सामाजिक सुविधा की स्थापना है। मनुष्य को आत्मवान होकर बुद्धि विवक के साथ प्राकृतिक जीवन का उपभाग करना चाहिए। जो ऐसा नही करता वह मूल दुख उठाता है। मनुष्य का मुख्य ध्येय शान्तिपूर्वक जीवन का व्यतीत करना है। सब मनुष्यों में भ्रातृ भाव होना श्रेयस्कर है क्योंकि बहुत्व तथा मनी श्रेष्ठतम गुण है। समझदार लोगो को माता बुराई से दूर रहना चाहिए अथवा उसका अपने लिए हितकर बना लेना चाहिए। ऐसे के बाजार के पुराने रीति द्वार प्रकोष्ठ में जिसे 'स्टोआ' कहते

य वह उपदेश करता दिया हुआ था। इसीलिए उमा मन का 'स्टाड्जम' बहुत है। यह मन श्रमवाला का अधिक ब्राह्म प्रीति हुआ।

एण्मिनोज का मन मिनिमिजम बन्नाता है। यह नामका की उमा श्रम उनका उपहास तथा मामाजिन मर्यादा का जवटन्ना करता था। घनिता तथा जाधिन त्रिपमता व प्रति उम घृणा था। उमा मन व अनुगार जाना गुणात्मन है किन्तु उमका मन्पसाग ज्ञान त्रिपन जात्मज्ञान द्वारा ही हा गन्ता है। जा बुठ है अथवा हाता है वह ठाक है इसीलिए त्रिगा मा म्पिन ग त्रिमुग हाता न चाहिए, उम स्वानार कर रना चाहिए।

श्रीम तथा हेरनिव जगत् व दानिना का ध्येय था मनुष्य मृष्टि की उत्पत्ति उमा उद्दस्य जीव साफन्व पर तब बिनव पूवन विचार करना। उहान इस्वर का सत्ता तथा सबव्यापकता का मत म्पिर त्रिया। जीव व मन बनमान एव भविष्य की व्याख्या की। मत्य और सुदर का अनुमधान त्रिया और आत्मन बनने का जादग उपस्थित किया। यह स्मरण रगना उचित हागा कि उनका दानिन विचारा पर एगिया का विाप प्रभाव पडा जिमका गति अल्कजाडर व वाद बहुत बढ़ गयी थी।

दानिका व अध्ययन-अध्यापन व लिए एयस में एक वद्रीय महाविद्यालय स्थापित हा गया जिमम चार विभाग थे—एकडमी लादमिजम स्टाआ एपि क्यूरम का उद्यान। एक हा स्थान पर विभिन्न मता तथा मिद्वान्ता का अवाध पठन-पाठन हाता था। दान जीव ज्ञान विज्ञान म हानिम का युग परिवर्गीज व युग स भी अधिक महत्वपूर्ण है। उच्च गिगा व साधना व अभाव की उम युग न यगस्वर पूर्ति हा गयी थी। पढने लिखने का गौक निना दिन बन्ता गया। हस्तलिखित पुस्तका व मग्रह किये जान लगे। कहत है कि अनेकत्रिया व पुस्तकालय म मत्तर हजार हस्तलिखित ग्रन्थ सगहीत थे। उमने वाद परगेमम व पुस्तकालय की गणना बडे पुस्तकालया म हानी है। बहुत समव है कि एगिया और मिस्र व जय ग्रीक नगरा में भी छाटे-बड पुस्तकालया का निर्माण हुआ हा।

विज्ञान

यूनानिया न विज्ञान के क्षेत्र में ना प्रारम्भिक किन्तु बुठ महत्वपूर्ण गवणणाएँ का। उनका दानिका म पहला नाम मलिटस नगर के निवासा थेल्स का है (६२४ से ५४८ ई० पू०) जिसन गणना करक सूयग्रहण की पूव घापणा की थी। उसके

मत में जल ही प्रारम्भिक तत्त्व है जिससे पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। उसी के ममनालीन अनेनिसमेण्डर ने वायु को प्रारम्भिक तत्त्व घोषित किया और यह भी क्या कि जानवरा का विकास मछलिया से हुआ है। पादयागारम ने यह मत प्रवृत्त किया कि सब तत्त्वा का मूल में अक है और जीवन का यावत् व्यापार गणित तथा नाद स्वर से नियंत्रित हात है। चतुर्थ गता ई० पू० म एम्पिहावलीज इस नियम पर पहुँचा कि पार्थिव जगत की रचना एक तत्त्व मन्त्रा वरन् चार तत्त्वा मिट्टी पानी अग्नि तथा वायु से हुई। प्रारम्भ से ही दन चांग की अपनी-अपनी स्वतंत्र सत्ता हानी है। वे अनादि और अनन्त हैं। उहीक समय से सृष्टि हाती और वियुक्त हो जाने से नष्ट हो जाती है। अरिस्टाटल ने जतु एक वनस्पति जगत् का गभीर अध्ययन करके यह सिद्धान्त निवाला कि बेचुगा तथा कीट-पतंग की सृष्टि एक से सहज ही आप ही आप हो जाती है। इसके अलावा विक्रम त्रम सरलता से जटिलता की ओर प्रवाहित होता है। मलिटस नगर में थेल्स के गिप्या और प्रगिप्या ने भी कुछ वसी प्रकार के त्रम का अनुमान लगाया था। उन्होंने यह भी कहा था कि पृथ्वी पहले जल में मग्न थी और कम समय भी जलराशि से परिवर्षित है। तन्नुसार उन्होंने सबसे पहले पृथ्वी का मानचित्र बनाया। हर्किलेम ने मिस्र और बेबीलोनिया का भ्रमण कर वणनात्मक भूगोल की रचना का। उन्हें यह भी पता हा गया कि सूर्य जलता हुआ पथरीला गोला है जो उमा से चन्द्रमा को प्रकाश मिलता है। यही नहा, चन्द्रमा म धपहाडिया तथा घाटिया का होना मानते थे। उन्होंने यह भी कहा कि पृथ्वी अपनी नमगिन गति म स्वय घूमती है। जामुबेदे के क्षेत्र में डायजेनीज ने मनुष्य की शरीर रचना का विश्लेषणात्मक वणन प्रकाशित किया। हिपोक्रेटस ने रोग का मौक्त कारणों से निदान किया और घोषणा कर दा कि रोग अथवा आरोग्य के देवी-दवता मूत प्रेरणा कारण नहा हो सकते। स्वच्छता, आहार विवेक रक्त, नियंत्रण स्वेदन आदि उपाया से रोग शान्त किये जा सकते ह। हिरोपिल्स ने ततीय गती ई० पू० म स्नायु जाल तथा पेशिया आदि का कार्य और नाडी की गति जाचन के उपकरणों की रचना की। ग्रीस में पुरुष ही नहीं वरन स्त्रिया भी चिकित्सा करती थी। कहा जाता है कि मेलिटस नगर में ही यूनानी दशन की उत्पत्ति हुई थी। यद्यपि आजकल ये वाने अत्यन्त साधारण-सी प्रतीत होती ह तथापि ये बडे महत्व की, और उस युग के लिए तो महान वज्ञानिक उपलब्धि गिनी जानी चाहिए। उपयुक्त वज्ञानिक अनुसंधाना का यह भी परिणाम हुआ कि कुछ लोगा में दवताआ

की जलाशय शक्तियों में श्रद्धा पट गयी और अथ नगर्गिन गतिपा में अधि-
हाने लगी। इस नये दृष्टिकोण का यहाँ वं दाशनिना पर भी समावेश प्रमाण पाया
जाता है।

इतिहास

प्रथम पश्चिमी इतिहासकार ग्रीक नित्रामी हरोडोटस (४८६ ग ४२५
इ० पू०) को इतिहास माहित्य का पितामह कहा जाता है। मिस्र और कई
एशियाई देशों का भ्रमण कर उसने कुछ इतिहासिक सामग्रीएँ एकत्र की तथा
साहित्यिक महत्त्व का एक ग्रन्थ इस ढंग से लिखा जिसमें एशिया मध्य की वास्तु-
स्थापित हो सके। उमक इतिहास का मुख्य विषय ग्रीस वाला था ईरान व साथ
सफल सघष है। वह एशिया कोचक का निवासी था। उसका नित्राम था कि-
नासांखिक महत्त्व क्षणिक है और ससार का सारा प्रवाह दैनिक विधान से चलता
है। वह प्रतिकारवादी था। उसकी गली, उमका पान घटनाओं का विवरण
मान है। उसका ध्येय ग्रीस व वीरा का गुणगान तथा एशियामाला की फारस
वाग्य पर श्रेष्ठता स्थापित करना था। यद्यपि हेरोडोटस के इतिहास में प्राचीन
लागा के सम्बन्ध में बहुत सी उपमाएँ सामग्री हैं तथापि उसमें काफी गप्पें भी
हैं। दूसरा प्रसिद्ध इतिहासकार थ्यूसिडाइडीज (४६० से ४०० ई० पू०) था
जो मानुषीय इतिहास की घटनाओं को दृष्टिकोण से प्रकृत न मानकर उनका ऐति-
हासिक कारणों पर अवलम्बित मानता था। उनका अन्याय सम्बन्ध पर अपनी
जालचना भी करता था। उमके पूर्व इतिहासकार लौकिक अथवा अलौकिक
घटनाओं का सग्रह तो कर लते थे किन्तु उनसे यथातथ्य की जालचना और उस
पर निजी अनुसंधान द्वारा सम्मति व नहीं दे पाय थे। उसने इतिहास का मुख्य
विषय एथेन्स के पतन के कारणों का विवेचनात्मक वर्णन है। ग्रीस का वह सबसे
श्रेष्ठ इतिहासकार है जिसका आज भी आदर होता है। उसका इतिहास उस
स्थान से आरम्भ होता है जहाँ हेरोडोटस का इतिहास समाप्त होता है। उसने
पलपानेशियन युद्ध का मनीव और विवेचनात्मक इतिहास लिखकर ग्रीस की
तत्कालीन स्थिति पर अच्छा प्रकाश डाला। हेरोडोटस ने स्त्रिया का स्थान नहीं
दिया था किन्तु थ्यूसिडाइडीज ने उनका भी वर्णन किया है। तीसरा उल्लेखनीय
इतिहासकार जेनापन हुआ (४३४ से ३५६ ई० पू०)। उसका प्रसिद्ध ग्रन्थ
हल्लनिका है जिसमें उसने थ्यूसिडाइडीज के इतिहास के पश्चात् की घटनाओं का

चणन किया है। उसने ग्रीस के अनेक राज्या का विवरण देकर यह प्रयत्न किया है कि पूरे ग्रीस के ऐतिहासिक इतिवृत्त का चित्र पाठक का मिल जाय। मगर मिला उसने ऐतिहासिक व्यक्तियों के महत्त्व और कार्यों पर विशेष बल दिया जिसका जान वाले इतिहासकार तथा जीवनचरित्र के लेखकों पर दृष्ट प्रभाव पड़ा। उसका दूसरा ग्रन्थ 'एनाबनिम काफी मनारजक है। ग्रीस के सिपाही पशावरा की पश्चिमी एशिया की यात्रा और उनके अनुभवों की उसमें कहानी है।

राजनीति शास्त्र

प्राचीन ग्रीस वालों की धारणा थी कि मनुष्य के संरक्षण तथा निर्वाह के लिए सामाजिक व्यवस्था आवश्यक और अनिवार्य है। सम्भव है कि इसी कारण मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति सामाजिक जथा सामूहिक जीवन की ओर रही है। सामाजिक व्यवस्था के बिना मनुष्य का जीवन निरर्थक है अतः उसको सुव्यवस्थित ढंग से स्थापित करना परम कर्तव्य है। विचारक पाइथागोरस का विश्वास था कि समाज का स्थान व्यक्ति से बहुत ऊँचा है। समाज की रक्षा व्यक्ति की रक्षा से बहुत अधिक महत्त्व रखती है। अतएव मनुष्य का श्रेय इसी में है कि वह सामाजिक व्यवस्था को सहज स्वीकार करे। उसकी रक्षा के लिए कष्ट खेल्ने की कान बत सबस्व ही नहीं, प्राण तक त्याग करना व्यक्ति का परम कर्तव्य है। उसमें शासन, कानून, नियम, मान मर्यादाओं का सम्मान और प्रतिष्ठाओं की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का धर्म है। राज्य की भलाई के लिए व्यक्ति को सदा प्रयत्न करना चाहिए। ईरान से सफल संधि होने के कारण विचारकों में राजनीति विधानों के प्रति सक्रिय रुचि बढ़ी। वे भी उनके तार्किक अनुसंधानों का विषय हो गये। राज्य के नागरिकों के कर्तव्यकर्तव्य की आलाचना होने लगी।

सात्रेटिज (सुकुरात) ने मौलिक प्रश्न यह उठाया कि राज्य के क्या लक्षण हैं नीति की क्या परिभाषा है। उसकी सम्मति में ज्ञान बढ़ाना नागरिकों का मुख्य ध्येय होना चाहिए। जमी के द्वारा वह कलव्याक्तव्य समर्थ सत्ता और व्यवहार कुशल हो सकना है। राष्ट्र के प्रति विद्रोह की भावना किसी भी दशा में न होना चाहिए। मातृभूमि या राष्ट्र का जननी के समान सम्मान करना श्रेयम्कर है, किंतु उसके दापों का आलाचना और उसके मुद्धार करने का प्रयत्न करना उचित है। प्लेटो का मत है कि राज्य की आवश्यकता इसीलिए है कि उसके द्वारा मनुष्य का उचित एवं पूर्ण विकास हो सके। राज्य का विधान ऐसे ढंग का होना चाहिए

जिसमें हम उद्देश्य की पूर्ति है। प्लेटो जच्छा नागरिक उसी को मानना है जो अच्छा मनुष्य है। शासन का काम बुद्धिमान्, विचारवान्, और चरित्रवान् तथा विवेकी व्यक्तियों के द्वारा होना चाहिए। उनका निर्देश का प्रतिपालन सबदा मगलमय होगा। उनका द्वारा ही अधिकार-मय प्रदर्शन होना चाहिए तथा नागरिक लोग तदनुकूल आचरण करें। नागरिकों को उनका योग्यता तथा प्रवृत्ति के अनुसार श्रेणियों में संगठित कर उनको उपयुक्त कार्य में लगाना चाहिए। इस प्रकार राज्य का शासन या दान, व्यापारियों की तीन मुख्य श्रेणियाँ हो सकती हैं। मजदूरों आदि कामों का दासा से कराना चाहिए। यदि अपने-अपने धन में प्रत्येक श्रेणी और प्रत्येक व्यक्ति अपना-अपना कर्तव्य कर तो राज्य तथा समाज का सबथा हित होगा। प्रत्येक नागरिक को अपने विचारों के व्यक्त करने और शासन में हाथ बटान का अधिकार होना चाहिए। प्लेटो ने अपने सिद्धांत और विचार अपने दो ग्रन्थों रिपब्लिक तथा लाज में विशद रूप में लिखे हैं। रिपब्लिक का आज भी एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना जाता है। प्लेटो आदर्शवादी था। उसके विधान में वगसत्ता तथा दासा के प्रति उत्पत्ती का दोष माना जा सकता है। इसके सिवा उसके विचार समाजवाद और कुछ अंश में साम्यवाद का भी सूक्त हैं। वह नागरिकों के सभी विचारों का और व्यवहारों पर राज्य का नियंत्रण स्थापित करने के पक्ष में है। इन आदर्श विचारों के अनुकूल सिद्धांतों का शासन और शासन को सुधारने का निम्नण उसने स्वीकार कर लिया था। तान्त्रिक प्रयत्न करने पर भी उसे सफलता नहीं मिल सकी। कुछ लोगों की धारणा है कि अपने दार्शनिक विचारों को राजनीतिक क्षेत्रों में प्रचलित करने में हुई उसका विफलता ही प्लेटो की असफलता का एक प्रमाण है।

प्लेटो के शिष्य अरिस्टोटल (अरस्तू) का विश्वास था कि सामाजिक जीवन के कारण मनुष्य अपना पूर्ण विकास समाज के ही द्वारा प्राप्त कर सकता है। राज्य का मुख्य उद्देश्य सम्यक् तथा आदर्श नागरिक पदा करना है। यदि उसमें वह असफल हुआ तो वह विधान बुरा है। राज्य में अनेक सभ्य और सभ्यता में योग्य तथा योग्य अच्छे और बुरे व्यक्ति होने हैं। अतएव राजनीति का मनुष्यों की असमानताओं और विभिन्नताओं के अस्तित्व को मानते हुए उनका योग्यता आचरण और क्षमता के अनुकूल उनको अधिकार प्रदान करना चाहिए। सब धन बर्बाद पसरा नहीं तोला जा सकता। विभिन्नताओं का मुख्य कारण स्वाभाविक गुण-अवगुण सम्पत्ति वंश और स्वतन्त्रता का प्रवृत्तियाँ हो सकती हैं। स्वतन्त्र नाग-

रिवा और गुलामा का समान अधिकार नहीं दिये जा सकते। राजा, शिष्ट समूह और पार्लटी तीनों ही अपने-अपने परिष्कृत रूपा में अच्छे हो सकते हैं। विद्वत् रूप में वही भयकर हानिकारक और जायगी हो जाते हैं। किसी प्रकार के शासन को अरस्तू ऐसा न समझते थे कि जिसका स्वार्थी अथवा मूल लोग दुरूपयोग न कर सकें और जो अत्याचारी न बन जा सकें। अरस्तू की राय में दासा तथा मजदूर पशा वाला को राजनीतिक अधिकार देना अनुचित है। विविध विधानों में वे एक सुयोग्य व्यक्ति के शासन को ही सत्रसे कम अहितकर अनुमान करते थे। यदि वसा व्यक्ति न मिल सके तो मध्य श्रेणी का शासन सम्भवतः सबसे कम हानिकारक सिद्ध होगा।

ग्रीका का सारा जीवन राजनीतिमय था। राजनीति से उनका तात्पर्य उन मूल तत्त्वों और सिद्धान्तों से था जिनके व्यवहार से मनुष्य का जीवन साथक और सदाचारपूर्ण हो सकता है। राज्य का मुख्य उद्देश्य सुख और सत्त्वृति का रक्षण तथा सबद्धन माना जाता था। अतएव कोई जाश्चय नहीं कि राजनीति शास्त्र पर दार्शनिक तथा वैज्ञानिक प्रयत्न बड़े चिन्तन के साथ बहाँ लिखे गये। उनकी विचारधारा में दुर्भाग्य से तीन बड़े दाप थे। पहला यह कि यूनानी अपने मित्रों सब जातियों को असम्य समझते थे। दूसरा यह कि उनका ध्यान नगर राज्या में ही प्रायः उलझा रहा। यद्यपि विश्व स्थिति में छोटे राज्या के सगठित होने की चर्चा मिलती है तथापि बड़े साम्राज्य उनकी कल्पना के बाहर थे। उनकी राय में जनसत्ता सीमित छोटे राज्या में ही सम्भव हो सकती थी। तीसरा यह कि नगरवासियों को या या कहिए कि मनुष्यों को ही व दा भागा में विभक्त कर बड़े थे एक व जो स्वतंत्र ह और दूसरे जा स्वभाव से ही दासता और सेवा के लिए जन्म ह। इन धारणाओं ने उनका राजनीतिक दृष्टि और विचारों को कुछ संकुचित कर दिया जिससे उनकी रचनाएँ सकीण और दूषित रह गयीं। यद्यपि व समाज अथवा राज्य का व्यक्ति के साथ ठीक सम्बन्ध स्थापित न कर सके तथापि अपनी कल्पित परिधि तथा अनुमत्त क्षेत्र की सीमाओं के भीतर उन्होंने राजनानि के प्रमुख मूलतत्त्वों, विभिन्न प्रकार के सगठनों के गुणों और अवगुणों पर सारगर्भित तथा मार्मिक विचार किया है। उन्होंने राजनीति के जादस तथा उसकी प्राप्ति के साधनों पर अच्छा तक वितक किया है। प्लेटा का रिपब्लिक और अरस्तू का पोलिटिक्स उनके ही युग की नहीं बरन आज के सम्य समाज की भी जादरणीय रचनाएँ हैं। जनमतसारमक राज्य में रहते हुए भी उसका दापा का निर्भीक वणन उन्होंने किया है।

धम

यूनानी अपने देवताओं का अपनी ही तरह काम, शोध, माहादि गुण दोषों से मुक्त समझते थे। किन्तु वे अमर माने जाते थे। वे अपने-अपने क्षेत्रों में इतने व्यस्त रहते थे कि मृत्यु के निवासियों के कार्यों में उन्हें हस्तक्षेप करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। मनुष्यों के लिए वे जादू-टोकाई के विषय थे। उनका सबसे न्यम्रीत हान का कोई कारण नहीं था। यूनानी मनुष्यों की उत्पत्ति देवताओं में मानता था और मरुतु के पश्चात् मम्मवल देवता हो जाने की आज्ञा कर सकता था। देवताओं का मरुतु अणुनालीन थी। देवताओं का अधिपति प्रकाशरूप ज्याम (इंद्र), जागा का देवता था। उसका अस्त्र वज्र था। पूरे एक दर्जन पुत्रों और अपनी स्त्री तथा माधिया के साथ आलिम्पस पर्वत की हिमाच्छादित चोटी पर वह निवास करता था। उसने अपनी पत्नी ऐमनर (धरती) का १० वर्षों द्वारा अभिसिद्धि कर रागी नाम की पुत्री का जन्म दिया। ज्याम के दो भाई थे एन का नाम पारिपस (वसु) था जिसका अधिपत्य समुद्र पर था और जा भूवम्प उत्पन्न करता था। ज्याम का दूसरा भाई ह्यज था जिसका पानाल का अधिपत्य मिला। मा प्रतालिपुष, मूर्तों के अक्षर-ग्रन्थ लाक का वह स्वामी माना जाता था। उमका विषय सम्बन्ध गुह्य रहस्यात्मक एयूसानिम्न सस्या से माना जाता था। ज्याम का पुत्र धनुचर एपाळा देवताओं में बड़ा ही प्रविष्टिमान माना जाता था। उसका विषय काय था पणुपालन एवं वृषभ का संरक्षण। अति हृष्टान, सगीत-पारंगत मुरत के रूप में उतकी कल्पना की गयी थी और ई० पू० पाँचवीं शती में उमका कीर्तन (गूय) का स्थान प्राप्त हुआ था। वह ऐसा दयावान् स्वभाव माना गया जिसने जाग अपनी मनोमामना पूर्ण करने का प्रायत्न करने से। दिवातिसम म्रिया का मुख्य उपास्य देवता था जिसका व, अरिस्टोपनाज के अनुसार वक्षस (सर्पिण्ड व दन्ता) के उत्सवों में निश्चिन्त के रूप में म्वाभाविक एवं म्वाभाविक मयनामन वशापर द्वारा तथा नाच-गानों प्रदर्शन करता था। उमका चित्त और प्रताप विषय विषयतया गिर जागति विषय था। जगत् जगत् सन्ता और चारहा पर एन विषय का स्थापना ग्राम में का गया थी। जागप्रिय स्वभाव का म ह्यमाज का विषय स्थान माना जाता था। जाग उमका पिता और मय्या उमका माता थी। एयूसान राजा के ध्यान में जाग प्रताप का वह विषय एन मरुतु माना जाता था। एन जाग का मरुतु था। मरुतु मरुतु तार विषयमणि था। एयूसान ध्यान तथा मरुतु का मरुतु हान के अंगों पर वक्षसों का

भी मिद्धि प्रदान करता था। दयावान और जागृताप होने के कारण लोग उससे बड़ी आगाएँ रखते थे। ग्रीस वाले अनेक देविया की भी पूजा करते थे। देविया में अस्त्र-गन्धधारिणी गमरमयकरी किन्तु शांतिदायिनी, जन रजिनी और नानेश्वरी देवी एथेना थी। अपने पिता ज्यूस के मस्तक से उसने अस्त्रादि सहित जन्म पाया। सबसे पहले उसने वायुमण्डल के तूफानों का दमन किया पश्चात् जन्म (जित वक्ष) गकर ग्रीस में प्रतिष्ठित किया। वह निरंतर ग्रीस की रक्षा और ममद्धि का विधान तथा उसका सम्भाग प्रदर्शन करती रही यद्यपि स्वयं छिपकर वह मास जाति जय देवताओं तथा मनुष्यों में प्रणय करती रही। दूसरी देवी एफान्थो थी जो प्रेम तथा काम का संचार और दाम्पत्य तथा प्रेम के नियन्त्रण करती थी। उसका रूप था। एक रूप से वह पवित्र प्रेम और अन्तरे में भाग विद्या और कारी कामरता का प्रात्माहन करती थी। विवाहिता स्त्रियाँ ही जलावा कहीं-कहाँ वह देवताओं की भी आराध्या देवी थी। राम बाल उस वीनम बहल थे। वही क्यपिड का माना थी। वह समुद्र से पूष युवनी के रूप में निकट हूँ थी। उसने जगत्विष साध्य देवताओं में बड़ी देवनी फलाया और उनका वामनाओं को जगा दिया। ज्यूस ने उसे यलन का दे दिया। वह स्वयं एक शिशु पर मुग्ध हा गयीं और उससे युवा होने पर उसके प्रेम में लिप्त हा गया। उसी ने जागे चलकर इरास नामक रूपवान पुत्र का जन्म दिया जो कामनासना का प्रेरक और सबद्धक ह। स्त्रियाँ की दूसरी किन्तु अत्यन्त प्रभावशालिनी, अरगस नगर की प्रमुख देवी ज्योस की पत्नी हेरा नाम की थी। स्त्रियाँ के जन्म समस्त्यु तक जितने व्यापार थे उन्हीं के निर्देश से होते थे। ग्रीस वाले धरती माता की, जिसका नाम 'देमीतर था, उपासना करते थे। वह ज्योस की श्रेष्ठ पत्नी थी। उसी से अस्यपिणा कुमारी कारा का जन्म हुआ। चंद्रमा को वे लोग विपुल-स्तनी अरटेमिस' देवी के नाम से पूजते और उसी से बप का आरम्भ मानते थे। हफासदास नाम की देवी जगामुखा पवता की उमुखज्वाल अग्नि की अविष्टानी थी।

उपयुक्त देवा और देविया के मिवा यूनान में अगणित देवी-देवता माने जाते थे। जानीय मवमाय ल्वी-देवताओं के अगावा नगरों ग्रामों कुशा, घरा के तथा राग प्रतिहाम काय नाटक गान नृत्य, निद्रा, मत्यु आदि के जनवानक उपाम्य देवी देवता थे। अतु-परिवतना पर प्राय उनके लिए विविध विधानों से उमव जाते पूजन किय जाते थे। पूजा में लोग जाते, फल फूल, पत्र सुरा वस्त्र साना चानी जाति चदान तथा बाजे-गाजे खेल कूना नाच-गाने के साथ पूजन करते

और उत्सव मनाते। व तरह-तरह की मानताएँ मानत और ताना प्रवार के सम्बार जन्म से मृत्यु पर्यन्त करत थे। देवताओं के नाम से वे शपथ लेत थे। ग्रीस में पुजागिरी का काम प्रायः घर या जाति के बड़े-बूढ़े ही करत थे। पुजारिया की कोई विशेष श्रेणा न थी। घम के मना दार्शनिक थ। जय देवताओं की प्रवृत्तिया उनके गुण कम स्वभाव और उनकी सुख-दुःख की अनुभूतियाँ उनके अनुयायियों के हाँ ममान थी तब उनका प्रभाव मनुष्या पर विशेष हितकारक होने की सम्भावना क्या हो सकती थी, यह कहना कठिन है। उनके पूजने का एकमात्र ध्येय जानुकूल्य का स्थापन और प्रातिकूल्य का उन्नत प्रतीत होना है। समार के विभिन्न दगा और जातियाँ म पुरातन युग म अत्र फल फल वनस्पर्ति तथा मानुषी जगत में स्त्री पुरुष की जननद्वियाँ उत्पत्ति जयत्रा मजन की प्रतीक मानी जाती हैं। पैदाग मे मन्वघ रगतवाले तरह-तरह के रिवाजा और उत्सवा का प्रचलन पुराने युग मे चल जाता है। ग्रीस म भी उन प्रकार के उत्सव मनाये जात थ। दमेतर (भू देवी) दायानेगिआ, हर्मीज तथा अतमिम देवी या दयनाजा के पूजना और उत्सवा में गग मजनन के मानवी प्रताप का उपयोग करत और कभी-कभी तो उत्सवा के अवसर पर साधारण सामाजिक मयादाओ और जाचार का ताक में रखकर स्वच्छ कामकाज में प्रवृत्त हो जात थ। एस उत्सव कामकाज सभी स्थाना पर होते थे हिन्दु एथेस एफिमम एल्यूसिस जागस और जार्जेडिया म व बड़े पमाने पर उलाह और घूमघाम म मनाय जाते थे। गिशन दस (प्रिण्णम) की पूजा और उत्सव में स्वरिता तथा उच्छ्वसना का मुक्त प्रयोग होना था। अरिस्टोफनीज के अनुसार न्यातिअम और बकम के उत्सवा म गिशन का पूजन स्वाभाविक जयवा अम्यानाविक मैथुनात्मक व्यापार होता था। पारनाई श्रणी का बर्याएँ अपनी गालात्रा के बाहर प्रिण्णम के गिशन का चिह्न प्रदर्शित करत थी।

ग्रीस के धार्मिक विचारा म तान विघपता थी। पहला यह कि धार्मिक विचारा तथा जवात्रा का मतिवना म कोई जनियाद तन्त्र न था न उनका कोई आनन्द बयन ही था। दूसरा यह कि यद्यपि दयनात्रा का अपना लाज था किन्तु ताम जमरत्व के गिशा तान अगारिस्ता का कारण नहा मिया गया। उनका व्यवहार और व्यापार मनुष्या के ममान जन्म-मर सभी प्रकार के होत थ। यद्यपि घाम के मतिचारा न यनात्रा और दयिया का मय मतिव्याँ म्यारिण की है तथापि कस्तुन के दयनात्रा का प्रसार मनाय के आजार प्रवार का नहा मानन थ। देवी दयनात्रा का बरना व मृ, त्या अदवा आकाश के स मूम तत्वा के ममान करन

थे। इसीलिए स्वास्थ्य, यौवन, सम्मान, भाग्य, जाशा भय सन्तुष्टि, विजय, कामाय आदि के भावात्मक प्रतीक कल्पित करके वे उनमें श्रद्धा तथा विश्वास रखते थे। भूत प्रेतादि अनिष्टकारी सत्ताओं में भी उसका विश्वास था। देवी-देवताओं का सम्बन्ध उनकी आध्यात्मिक जगत् या विषय में न था, बल्कि व्यावहारिक विषयों से था। लोग अपनी आकांक्षाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए देवताओं की सहायता मागत थे। उनका प्रसन्न करने के लिए विविध विधान, कर्मशास्त्र तथा प्राथना जानि करते थे। इस विषय में जो लिखित ग्रन्थों में जिक्र है, वे सब कुटुम्बा, वंशों का था वही राज्या का भी था। वान यह कि ज्यास का छाटकर पण्य मर ही देवी-देवता किसी विषय जन-समूह जयवा जानि के थे। उन सबका धीरे-धीरे लोगो ने अपना लिया। जो देवताओं के देवता थे उनका हलके रंग के और पत्थर के देवताओं का गहरा रंग के पत्थरों की प्रति चढ़ायी जाती थी।

रहस्यात्मक मस्था

ग्रीस में एल्युसियन गुह्य समाज नाम की मस्था अपना विशेषता रखता है। उम समाज का मान दासक भी करता था किन्तु उसका अलावा स्वतंत्र छोटे-छोटे समाज विभिन्न स्थानों में थे। अद्यावधि एल्युसियन का पूरा हाल काई नहीं जानता क्योंकि उम समाज में जा कुठ होता था उमका गुप्त रखने की सन्ध्या का सपथ लनी पड़ती था। अनुमान किया जाना है कि उनके काई निश्चित सिद्धान्त न थे किन्तु उनका विश्वास था कि मानुष्य भावना, विश्वास तदात्मता तथा आध्यात्मिक प्रयत्न से देवत्व एवं अमरत्व प्राप्त कर सकता है। समाज में उच्च-नाच का कोई भेदभाव न था, समानता का भाव रखा जाता था। उस सिद्धि के लिए साधन तथा सहानुभूति की आवश्यकता होती थी। उनका समाज अथवा चर में जा क्रियाएँ हाता थीं वे प्रतीकात्मक होने के अलावा साधनात्मक महत्त्व भी रखती थी। नृत्य, अभिनय तथा लालाओं द्वारा के आध्यात्मिक वातावरण और रमानुभूति जाप्रत करने का प्रयत्न करते थे। उनका सन्प्रणय थे। एक को 'वेकनाल' कहते थे। वह मद्यादि उपचारों द्वारा मस्ती पत्थर ईश्वर से ऐक्य स्थापित करने का साधन करते थे। दूसरे का नाम था आरफिज्म जिमकी साधना व्यापारिक थी। इसी प्रकार का भेद एपिक्थूरिअन और स्ट्राइका के सिद्धान्तों में पाया जाता है।

ग्रीस के धार्मिक विचारों पर एशिया मिनर, फ्रीट का प्रभाव जाग्म स ही पटना रहा, किन्तु जलक्रेप्टर के समय से वह वैसा ही बढ गया जसा कि दार्शनिक

क्षेत्र में बना था। धीरे धीरे बौद्धिक नीतिक तथा सांख्यिकशास्त्र की वृद्धि के साथ समा-दशताया में उनके विचारों का विकास हुआ जाता गया। सामक्यवाद राजनीतिक शासन के लिए दक्षताया तथा पुराने उपयागा धार्मिक शासन का रक्षण और धारण करने रह। स्वयं अनेकतन्त्र प्रवृत्ति का उदाहरण है। साहित्य भी समस्त पुष्टि करता है। सांख्यिकवादी धार्मिक स्पष्टतया कहने लग कि यद्यपि परमदशर एक ही है किन्तु अनेकत्व भी उभा के अंतर्गत है। अन्तर्गत का अन्तर्गत कर्तव्य वह सबानिगाथा है। शासन में धार्मिक और सांख्यिक विचारों का अन्तर्गत प्रयत्न समस्त समावेश हमसा रहा। उनका दूसरा धर्म के विकास पर भी बड़ा प्रभाव पड़ा। प्लेटो के और ईसा के मत में बहुत कुछ सामान्य पाया जाता है। शासन में जगत की अस्थिरता को उत्पन्न करने अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत मानते हैं।

साहित्य

अनुमान किया गया है कि इसा से हजार या बारह सौ वर्ष पहले यूनानिया ने फालीगिया वाग से अक्षरों का ज्ञान प्राप्त कर उनका कुछ हदपर के साथ अपना लिया। अन्तरव्यजन के क्याकि स्वरा के लिए कोर चिह्न निर्धारित न हुआ। अक्षरों की संख्या बार्स था। शासन वाला न स्वरा के चिह्न निर्धारित किया जिम्मे लिखन-सूझने की सुविधा हुआ गयी। मिस्र देश से कागज, कलम तथा सागनाई के मगवा लेन थे। ईसा पूर्व चौथी शती तक लिखन-सूझने की पुरा सुविधाएँ ग्रीस वाला को प्राप्त हुआ गयी थी।

ग्रीक भाषा में सबसे पुराना साहित्य वीर-गाथा काव्या का है। कहा जाता है कि उन गाथाओं को एकत्रित परिष्कृत तथा संगठित करके इलियड की रचना की गयी। उनका श्रेय हमर नामक किसी कात्पनिव अथवा ऐतिहासिक व्यक्ति का किया गया। ग्रन्थ की भाषा प्रधानतः जायानिक है किन्तु उसमें एपार्थिक भाषा का भी कुछ सम्मिश्रण हुआ। हमर सम्भवत एथिया काचक के हमरना नाम के नगर के जासपास का निवासी था। ग्रन्थ का विषय है ग्रीस वाग का राज्य (इलियड) नामक राज्य में सघष और युद्ध। क्या का युद्धवीर नामक एथिया है। गाथा के अनुसार टाय के राजा का पुत्र परास स्पार्टा के राजा की परम सुन्दरी रानी हेलन का छत्र अथवा वरुण में उठा ले गया। उस दुःखित तथा स्पर्मान का

सणकारिया का नेतृ आरगम का राजा एगामेमनान था। द्राय का दीवारे बनी मजबूत थी। दम बप तक घेरा डाल रहने जौर भयकर मार-काट क पश्चान नगर टकर विध्वम कर लिया गया। विजय प्राप्त कर राजा लग अपन राज्य में जय पहुँचे तब उनका चात हुआ कि राज्या पर जय गंगा ने अपना प्रभत्व जमा लिया था। अनेक राजा हतांग हाकर लौटे जौर जहाजा पर दूमर स्याना म भाग्य परगना क गिए चल गये। इलियड म वीरा और याद्दाआ के चरित्रा का जारदार बणन है। नीरगपी आत्मनी आन्त्रिनिया का चित्रण अत्यन्त मधुर काम जौर आत्मापूण है। इलियड का उपमहार हामर ने जाज्म काव्य म किया है। शाना ग्रन्थ ग्रीम की प्राचान सम्यता क पान क लिए मुख्य माघन हाने क जलावा श्रा वात्मीकि समायण की तरह विश्व माहित्य म अमरत्व का स्थान पा चुके ह।

होमर के जलावा दूमरा प्रसिद्ध कवि हीमिअट्ट ह जा एक किसान था (७५० म ७०० ई० पू०)। यराप का यह पहला कवि था जिमने गरीबों क पन आर हिन म अपना आवाज उठायी। पजीपनिया तथा भूमिपनिया के अत्याचार का उमने विग्राह किया तथा कृपक जीवन की प्रामा की। अत्याचारा का दबकाप की नेतापनी दी। ऐतिहासिक दष्टि म हीमिअड का काव्य अपना विग्राह महत्त्व रखता है। उमर समय तक गीतिकाव्य का जा वांसुरी जौर तन्त्री क साथ गाये जान थे चामा प्रचलन हा गया था। पौराणिक टग क काव्या या वीरगाथाआ के स्थान पर भावुकता प्रधान काव्य में लागा की रचि जौर प्रवृत्ति धरती गयी। प्रेम तथा कर्णा क भाव अधिक लाकप्रिय हान लगे। इम नयी प्रवृत्ति का हृदयस्पर्शी प्रस्फटन लम्बाम सफा नाम की मुप्रसिद्ध कवियित्री क गीता म हुआ (उठी गता ई० पू०)। उमका सम्मान आज तक यूराप म हाना ह। ग्रीम था तो उम कविता दबी का दाम अवना मानत थे। अस प्रमग म थवाज क किसान कवि पिटर का नाम इसलिए आवश्यक है कि यह ग्रीम की औद्यागिक आति क युग का भावनाआ का प्रकट करना है। उमने बडी मधुर तथा आजमयी भाषा में जालिम्पिया के खेला क यगम्बी विजेताआ का गुणानुवाद किया। इसके सिवा धनपतिया के मुखमय जीवन का चित्रण करत हुए उनके उत्तरदायित्व का सबेत् भी किया। चर्हा के गग ता उस सगीन का दबना मानत थे। उम समय तन्त्री तथा बगा का काफी प्रचलन हा गया था जिसस कविताआ का स्वर एव लय सहित गाने का शौक उत्पन्न हा गया था। अमारिया म प्रचलित गाना का लिखने की साकतिक लिपि

नेखने के लिए एकत्रित हो जाते थे। नये नाटका म केवल कथोपकथन न था। गान, नाच भाव प्रदर्शन, चित्रपट आदि का उसमें मिश्रण रहता था। प्राचीन युग में नाटक ने ग्रीस के बराबर सम्भवत कहीं भी उत्पत्ति न की। उसके उत्थान काल में वियागान नाटका का प्राधाय रहा किन्तु पतन काल में सुखान्त नाटका का अधिक सम्मान हुआ।

यूनानी लोग सौंदर्य तथा मगीत व प्रेमी थे। वे निम्न काम को हाथ म लते जमम सुदरता लाने का प्रयत्न करते। इसीलिए उनकी कलाआ जीर माहित्य म असाधारण सुदरता मिलती है। पद्य म रचना करने की परिपाटी तो पहले से चली जाती है। होमर क काय मेही भाषा पद वियास व्यजना शक्ति, छन्द तथा अलंकार आदि के बहुत-स गुण विद्यमान थे। उनकी वद्धि उत्तरात्तर होती गया। किन्तु जब ऐतिहासिक तार्किक दार्शनिक वनानिक और राजनातिक विषया की रचि आर आवश्यकता पडी तब गद्य में भी पुष्टता व्यापकता प्रौढता, गज सूक्ष्म(तथा जटिल भावा का सरलता म प्रकट करने की विलक्षण क्षमता विकसित हुआ गयी। सस्कृत आर अरबी की तरह ग्रीक भाषा भी सुम्यिर और समद्विगाली माना जानी है। वनत्व कला म भाषा का बडी सफलता से उपयोग हाता गया। एथेस के सुप्रसिद्ध यानयाता डेमास्थनीज के आजपूण और प्रभावगाली भाषण आज तक जोग स पढे जाते हैं।

कलाएँ

ग्रीस की स्थापत्य कला प्रारम्भ में ता भाडी थी और लकडी का उपयोग इमारता के बनाने म बहुतायत से होता था। किन्तु मुदर सफेद पत्थर के सुगमना से मिल जान के साथ ही मिल्स और ग्रीट की कलाआ का पान भी उन्हें प्राप्त हो गया। उन साधना का प्राप्त कर ग्रीस वाला ने अपनी प्रतिभा से उसको अधिक परिष्कृत, भव्य तथा मुदर ही नही बनाया वरन् उस पर अपने यकित्तत्व की ऐसी छाप लगायी कि आगे चलकर यूरोप वाला के लिए उनकी कला आत्मा मापण्ड का काम करने लगी। उस कला के ध्वसावशेषा से यह प्रतीत होता है कि जन्डी इमारते प्राय दब-भदिर अथवा देवनाआ की स्मृति म निर्मित की जाती था। उनमें देवमूर्तियाँ प्रतिष्ठित नही की जाती थी क्याकि उनके निर्माण का एक मात्र उद्देश्य देवा देवनाआ का प्रति सम्मान प्रकट करना और उनकी स्मृति का ददीप्यमान रखना था। उनकी इमारता की भव्यता म सागापाग सगति के अलावा विनाल

वाले मनुष्य के शरीर का प्रकृति की कला का उच्चतम प्रतीक समझते थे, अतएव वे उसका सुंदर और सुदौल बनाने के लिए अधिकाधिक चेष्टा करते थे। उनका यह भी विश्वास था कि देवी-देवताओं और मनुष्यों के शरीर की रचना में केवल सुंदरता और मनोहरता का भेद है। ग्रीसवासियों का आदर्श मनुष्यत्व से दूरत्व प्राप्त करने का था। तदनुसार मनुष्य की प्रतिप्रकृति का वह देवी-देवताओं का कल्पना के जितना निकट लजा सके, उतना ही अधिक साम्य लाने का वह प्रयत्न करते थे। देवी देवताओं, वीरों और नेताओं की मूर्तियाँ अधिकतर बनायीं जाती थीं। परिणाम यह हुआ कि उनकी बनायीं मूर्तियाँ ऐसी भय और मुग्धकारी हूँ कि उनका अनुकरण कमादेश आज तक होता जा रहा है। शरीर का जितना अधिक उनका ज्ञान होता गया उतना ही आत्म मिश्रित यथायथा भावमग्नता और गति उनकी मूर्तियाँ प्रतिभासित होती गयीं। पहले वह मूर्तियाँ पर रंग चित्रित थीं किन्तु बाद में उम्र पद्धति का उद्घाटन हुआ तथा और शब्द मगमरमर का उपयोग करने लगे। शारीरिक पूषता एवं शरीर का अभुष्ण प्रदान का निमित्त वह मर्ममूर्ति के भी बनाने में सक्षम न करते थे। पत्थर के जलावा के ताव की मूर्तियाँ भी निर्माण करते थे। पत्थर की मूर्तियाँ भी वह चतुरता से करते थे। जकेला मूर्ति के जलावा मूर्ति समूह द्वारा भी वे किसी विशेष प्रसंग का प्रदर्शन करते थे। वहाँ के कलाकारों में पिथिजस भास्करन, पालीक्लीटस आदि प्रसिद्ध हैं। जलेक्जण्टर के युग में स्वाभाविकता तथा साधारण प्राकृतिक प्रदर्शन की ओर कलाकारों की रुचि बढ़ी जिससे उनके मुख-रूप साधारण जीवन की आभाओं और निराशाओं का प्रदर्शन कलाकृतियों में ज्ञान लगा। परगमस की मगमरमर की मूर्तियाँ बड़ी सुन्दर और रंग की श्रेष्ठतम निर्माण हैं। उनका समता करना आज भी कठिन कार्य है। जलेक्जण्टर के युग में मूर्तिकला तथा चित्रकला में विशेष उन्नति यह हुई कि विभिन्न व्यक्तियों की प्रतिप्रकृतियों बनायीं जान लगीं जिनसे हम उनका साक्षात्कार आज भी कर सकते हैं।

चित्रकला की उन्नति उम्र पमाने पर तो नष्ट हुई जितनी कि मूर्तिकला की तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि उसमें विनिष्टता नहीं प्राप्त का। पहले चित्रकला सुराहियों शराओं हाडियों आदि पर बनायीं गयीं। शीशों पर भी जनक प्रकार के दृश्यों का चित्रण किया जाता था। चित्र रचना में सम्भवतः शीशों तथा मित्र आदि का प्रभाव पड़ा होगा। चित्रों में मरलता, रक्षाओं की कामलता निर्गह एवं प्रमाद के गुण पाये जाते हैं। एथेस के एक पाश्च जलिन पर मराथान विजय का दृश्य चित्रित है। मूर्तिकला का तरह चित्रकला भी ग्रीस वासी का जीवन और

स्तम्भा की विशेष छटा और महत्त्व रहता था। इमारता में स्तम्भा के हिसान से तीन शालिया थी—आरिक् जायानिक और कारिथियन। डोरिक कला का सबसे सुंदर प्रदर्शन सत्रापागीम पहाड़ी पर स्थित श्वेत सगमरमर के पाथेनान मंदिर में है। उसका खम्भे ३६ फुट ऊँचे नाच की ओर अधिक किन्तु ऊपर कम माट बने हुए हैं स्तम्भा पर नालिया खचित हैं। मंदिर की प्रीज पर सुप्रसिद्ध मूर्ति कलाकार फाडियस द्वारा उकेरे टाय का युद्ध के दृश्य तथा खेला का जुड़न ह। पीड-माट पर ज्यादा का उल्भव से एथेना देवी के जन्म तक की मूर्तियाँ हैं। सत्रका सामूहिक प्रभाव एतना सुन्दर पटना है कि उसका स्थापत्य तथा तक्षण का अष्टतम नमूना माना जाता है। जायोनिक शैली की विशेषता उसका स्तम्भा में है। वे उतन माट नहा हात में उनका नीचे तथा ऊपर का भाग अच्युत होते हैं। इमारता का दरवाजा कानिमें घड़ी और उनका बीच का भाग पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ जयवा जजीरलार लटिया बना जाती हैं। उस का का अछा नमूना एरविथियम है जो पाथेनान का समाप बना हुआ है। कारिथियन शैली का खम्भा पर प्राय बड़ा मजाबट और वागगरी का प्रदर्शन है। अल्ब्रेण्डर के समय में धार्मिक इमारता का बनना कम था गया और आगा की प्रवृत्ति प्रासाद सप्रहाय नाचघर मवान शानागार श्राद्धभवन नाट्य मन्दिर पुस्तकालय आदि बनाने का आरंभ हुआ। एणियार्स काचर का उत्तर-पश्चिमी काण पर ग्रीम का पास परगमम नगर का ध्वजा-उत्थापना जान पता है कि प्राय नगर निर्माण का न सम्भवत मित्य तथा फारस में प्रभावित हाकर बना उपनि की। अन्य शिवाय नगर में सावजनिक सुन्दर इमारत जम सप्रहाय पुस्तकालय वाचनालय तथा रत्न का मकान जिनका आवाग पर बरिया परम्परा चढ़ आर चित्रादि बन थे—वृद्धतायत न थे। नगर में घन घन पाक बाग-बगीचा चरन का शिष्ट परिवारों पक्की सीढ़ी मरक पाता का निवास का शिष्ट शरी और बाग नालिया पाता लान का पाण्य आदि का सुविधाजनक प्रवृत्त था। इमारत मरगमर बनाया जान आया था। छान टाट नगर प्राय लकरी का लक पर उगाय जान थे। अन्तर्द्वारा मरम बना समृद्धिगाय नगर था। घनी का मरक का आर मरक पथर का बन थे। इन उत्तरगायत इमारता का फा सुन्दर मरक या का पथर का जान थे। स्तम्भा पर अति अच्युत वागगरी और शारा पर विविध मूर्ति का शिष्ट उत्तरगा नामा बनान थे। नथ लक का नगरा में अन्तर्द्वारा मरम प्रधान और मरगम था।

इमारत का अतिशय प्राय में मरिचक की मा बना उपनि हुई। प्राय

वाक्ये मनुष्य के शरीर का प्रकृति की कला का उच्चतम प्रतीक समझते थे, अतएव वह उसका सुन्दर और मुडौल बनाने के लिए अधिकाधिक चष्टा करत थे। उनका यह भी विश्वास था कि देवी-देवताओं और मनुष्या के शरीर की रचना में केवल सुन्दरता और मनाहरता का भेद है। श्रीमवागिया का आदर्श मनुष्यत्व से दैवत्व प्राप्त करन का था। तदनुसार मनुष्य की प्रतिकृति को वे देवी-देवताओं की कल्पना के जितना निकट जा सकत थे उतनाही अधिक साम्य लाने का प्रयत्न करत थे। देवी देवताओं, वीरा और नैनाओं की मूर्तियां अधिकतर बनायी जाती थीं। परिणाम यह हुआ कि उनकी बनायी मूर्तियां ऐसी भाव और मुग्धकारी हूँ कि उनका अनुकरण कर्मावेश जाज तक हाता आ रहा है। शरीर का जितना अधिक उनका चान हाता गया उतना ही आदर्श मिश्रित यथाथता भावमगिमा और गति उनकी मूर्तियां में प्रतिभासित हाती गयी। पहले वे मूर्तियां पर रंग चडात थे किन्तु बाद में उस पद्धति का उद्धान छोड़ दिया और गुद्ध सगमरमर का उपयोग करन लगे। शारीरिक पूणता एवं गौरव क जशुण्ण प्रशान्त क निमित्त वे नग्नमति के भी बनाने में सक्ताच न करत थे। पत्थर क जलावा क ताबे की मूर्तियां भी निर्माण करत थे। पशुओं की मूर्तियां भी वे चतुरता से गतते थे। जवेली मूर्ति के अलावा मूर्ति समूह द्वारा भी वे किमा विगेष प्रमग का प्रशान्त करत थे। वहाँ क कलाकारों में फिदिजम माडरन पाणीवलीटम जादि प्रसिद्ध है। जलेक्झण्डर के युग में स्वामाविकता तथा साधारण प्राकृतिक प्रदशन की आर कलाकारों की रचि बना जिनसे उनक मुख श्रव साधारण जीवन की आशाओं और निराशाओं का प्रदशन कलाकृतियां में होन लगा। परगेमम की सगमरमर का मूर्तियां वणी मुन्दर और कला को श्रेष्ठतम निदशन है। उनकी नमता करना आज भी कठिन काय है। जलेक्झण्डर के युग में मूर्तिकला तथा चित्रकला में विगेष उन्नति यह हुई कि विगिष्ट कृतियां की प्रतिकृतियां बनायी जान लगी जिनमें श्रम उनका साभात्कार जाज भी कर सक्ते हैं।

चित्रकला की उन्नति उम पमाने पर ता नहीं हूँ जितनी कि मूर्तिकला की तथाकि यह नहीं कहा जा सकता कि उमन विगिष्टता नहीं प्राप्त की। पहले चित्र कला मुराशिया, गरावा हाडिया आदि पर बनाये गय। दीवारों पर भा जनक प्रकार के कथा का चित्रण किया जाता था। चित्र रचना में सम्भवत नीट तथा मिय जादि का प्रभाव पडा हागा। चित्रों में मरणा रेखाओं की कामगता, निग्रह एवं प्रमाद क गुण पाय जात हैं। एथेस के एक पाइव अर्चि पर मेराथान विजय का दश्य चित्रित है। मूर्तिकला का तरह चित्रकला भी ग्रीस वाग क जीवन आर

आदर्शों का प्रतिबिम्बित करना है। उनका ध्येय मुन्दर और गिव व गयाजन म
भावनात्मक सत्य का प्रतिष्ठा करना था। धम जार जातीय जीवन ही उनम उमप
और प्ररणा उत्पन करते थ।

सगीत

ग्रीस वाला का सगातका इतना प्रेम था कि बिना उसम मनुष्य जगित न समना
जाता था। इसीलिए शिक्षा के नम म सगीत का अनियाय विषय निर्मागिन निया
गया था। अकते जयवा सगत या सामहिक गाना का प्रचलन था। मिस्र स जामुरी
एशिया स तत्री जार असीरिया से सगीत-रसन की कला का अपनाकर उहाने
उह अपने व्यक्तित्व स अनुप्राणित कर लिया था। खला तमारा जुल्सा मन्त्रिया
उल्लवा जादि म बाद्य गान नत्य का सदा स्थान दिया जाता था। ग्रीस म पहल
तीन तारा का फिर सात तारा की तत्री का प्रयाग होन लगा।

उपयुक्त सन्धिप्त विवरण से यह अनुमान करना कठिन न हागा कि इतिहास
तया ससृति व क्षत्रा में ग्रीस वाला का स्थान जादरणाय तथा उचा था। उननी
प्रतिमा विलक्षण और विशिष्ट रूप स रचनात्मक थी। जिस नियय या प्रमग का
उहान हाय में लिया उसका बहुत विनसित एव परिमाजित करके छाग। सौन्द्य
मानना कुगाय बुद्धित्व प्रगतिशीलता स्वातन्त्र्यप्रियता प्रतिमा धात्न्या प्राप्त
वाला ने अद्धा प्रदगन किया और मनुष्य व इतिहास म अपनी अमर कीर्ति स्थापित
कर गय। उनक दार्शनिक एव धार्मिक विचारा का दसा के मत व विवाम पर गहरा
प्रभाव पटा। रोम की सम्यता और पुनजागरण युगीन नवीन यूरापीय सम्यता
पर उनका गहरी छाप लगी हुइ है। आयुनिक यूराप व निमाण म उनका विगप
प्रभाव माना जाता ह। उनका ससृति और सम्यता का प्रभाव यूराप वाला पर
आज तक पड रहा है।

अध्याय ०

ईरान

इरान का इतिहास और उसकी सभ्यता चार युगों में विभाजित की जा सकती है। पहला युग हमना का था। उस युग में इरान ने ऐसी उन्नति की कि उसका ऐतिहासिक क्षेत्र सिंधु नदी से ग्रीस तथा वहाँ से मिस्र तक फैल गया। साम्प्रतिक क्षेत्र में वह प्रायः स यदि अविनाशित होता तो उसकी बराबरी का दावा कर सकता है। उसका दूसरा युग अलेक्जेंडर की विजय से आरम्भ हुआ। यद्यपि ग्रीक विजेता थे तथापि अनेक जगहों में ईरानी जीवन से इतना मिल-जुल गये थे कि ईरान में एक मिश्रित सभ्यता का विकास हुआ। जब रोम के साम्राज्य ने ग्रीकों की शक्ति नष्ट कर दी तब ईरान में पार्थियन का अस्तित्व हुआ, जिन्होंने रोम से सफलतापूर्वक लड़ाई ली और उन्हें दो बार भूमध्यसागर के तट तक धकेल दिया। किन्तु हनुवत चला रहा जिसने पार्थियन और रोमन का पतन हाता रखा। ईसा की तृतीय शताब्दी में आरम्भ में सासानी युग के नेतृत्व में फिर ईरानी उत्तरात्तर शक्तिशाली हो गये। सासानिया ने इरान के उत्तर-पूर्व प्रान्तों में कुषाणों का मूलच्छेद कर दिया और पश्चिमी एशिया में रोम के साथ का प्रभुत्व इतना शिथिल कर दिया कि वे इरान से डरने लगे। सामानिया के युग में ईरान की जातीयता प्राचीन सभ्यता और सभ्यता अपना पराकाष्ठा पर पहुँच गयी।

इससे बाद महान् युद्ध आर्यों की वृद्ध शाखा जाइण्डो इरानियन नाम से प्रसिद्ध हुई समूहों में ईरान की ओर बढ़ने लगी। उनमें से मिट्टनी काकेशिया पार कर फरान नदी के उत्तरी भाग के पास रहने वाले हर्खानों के प्रान्तों में जा बसे। १४५० ई० पू० तक उन्होंने अपनी शक्ति काफ़ी बढ़ा ली किन्तु आर्यों की हिट्टिया की शाखा ने उन्हें पतन देने न दिया। अण्डाआयना की दूसरी शाखाएँ जगराम पर्वत की घाटियाँ में आकर बसने लगी। अमीरिया वाला ने जहाँ तक बन पड़ा उनका दमन करने में कोई प्रयत्न उठा न रखा। किन्तु ईसा की नवी शती (८४४ ई० पू०) तक परसूआ तथा मीड (मिडई) अच्छी तरह जम ही गये। मीडा

का शक्ति का क्षय हमदान व आमपाम जोर परमुआआ का उनमिआ बाल व पश्चिमी भाग में था। माडा न हमदान तक अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। कस्पिजन व पूव व हिरान जोर गुरासान तक पायब आ जम। उ ही जाग चलनर पाथियन कहलाए। या ता र्णनाआयना व जोर भी बवाउ व किनु उनमें स समयत (जिवित) जा तबरीज तर बढ जाय थ उल्लगनीय ह। परमुआ धार धार बढ कर गुम्तर के पूव की पलायिया व प्रात में जाकर बस गय। उमा प्रात का जमीरिया बाल परमुमा कहत थ।

मीटिया

यद्यपि हिट्टी मिट्टीना जोर कुछ अण तक गटियन गग मा जाय जाति का उम गाखा व थ जा बाउ समद्र व पाम में एगिया माइनर हाती हूड डरान तथा हिट्टस्तान तर फल गयी थी किनु उनका शक्तिस तथा उनका सम्यता न ता उतनी दीघनालीन जयवा महत्व की र्णी जिननी कि डरान के जाय लागी की। डरान व उत्थान व पूव महत्वगारिना सम्यताए सिव नील तथा दजला परात की तल हटिया में पगी थी। उनकी निमाया सम्भवत इविट्ट महटिक तथा समटिक मानव गापाएँ रही हागी। किन्तु अमारिया व पतन व अन्तर सात्तिया अरब व उत्तरी अर ममापनामिया में जोर पूर्वोय प्रणा में उनर उत्तराधिकारा हुए। मीट्ट जाय गाखा स थ। उनक यग में मानव सम्यता व निर्माण में जाय लागान उत्तरातर मन्वपूण भाग लिया। व्यापकता महत्व तथा स्वायी प्रभाव की शक्तिया में जाय सम्यता उन मत्र पूव सम्यताआ में बढ गयी जोर अपना शिापनाआ का छाप समार पर गगता रही। प्रस्तुत प्रमग में र्दान की सम्यता का शिग्यान जावश्यक है। र्गना मुख्य कारण यह है कि यरगप तथा भारत व बीच में उमन कर्षा का ही काम न किया बरन शाना पर कुछ न कुछ अपना प्रभाव भा डाला। र्गन मिया अन्क गनाशक्तिया तर उहान चान की बढर जातिया स प्राचान सम्यताआ का र्णा का।

कस्पिजन मारर जोर पारस की रानी व बाच में जा तिमुज भू भाग ह बढ डरान व नाम स प्रसिद्ध है। वह पठार पलाशिया में घिरा है जिनका लम्बाई तान मा माठ जोर चौडाई एक सौ बाम माठ है। उम पर्वतभाग में अन्क घाटिया ह जिनका लम्बाई तीस में माठ माल तक जोर चार्ल छ स बार माठ तक है। उनमें मुन्तर चरगागाह व मिया बानाम पिस्ता जनार अगूर जोर जमीर आदि

के पेड़ बहुतायत से पाये जाते हैं। मैंगू जौ रई की अच्छी पटावार हानी है। निमुज के उत्तर में अलबुज नामक विशाल पवन है जिसकी चाटी उन्नीस हजार फुट उँची है। दजला के प्रायः आठ उत्तर पश्चिम में दक्षिण पूर्व का जगराश नाम का पर्वतमाला के पीछे समुद्र के सूप जान से बहुत बड़ा रश्मिमान बन गया है। इस प्रकार ईरान में कुछ भू भाग पथरीले कुछ हरे मरे कुछ जगनी और कुछ रश्मि स्थानी हैं। साधारणतः बहा की जावहवा खुशक है। गरमी में मयकर गरमी तना जाड़े में कटाक का जाड़ा पड़ता है। किंतु बहा की वायु शुद्ध तथा स्फूर्तिदायक और स्वास्थ्यवद्धक है। वहा ननिया के मिवा नहरा से भी भलीभांति काम लिया जाता है। फारस में पत्तू फूला की तो बहुतायत है किंतु आ की कुछ कमी है। जनत प्रकारके पशु भी बहा है किंतु दुग्धाभेद तथा घाटे विशेषतया उत्प्रेक्षणीय है। बहा के निवासी मारम और पत्तू का जधिर तथा आ का कम उपयोग करते रहे हैं। अच्छे घाटा के कारण बहा घुड़सवारी का शौक लागे में बहुत पढ़े में ही पना हा चुका है। उनके हृदय में स्फूर्ति तथा विचार और भावा में काय और कपना का उद्बेग हुआ जिसमें उनमें अहम्मायता की बद्धि हानी रही है। ईरान में पूर्वी तथा पश्चिमी सभ्यताओं की लहर जाती रहीं जिनसे उनकी उत्पत्ति में अच्छी सहायता मिली।

दजला नदी के पूर्वी तथा उत्तरी प्रांता में अनेक जाय कबीले या ताँस गये थे अथवा कंधर उधर घूमते फिरते थे। नवी गनी ३००० के एक लख में पना चलता है कि कुदिस्तान की पहाणिया के परसुआ प्रान्त में सत्ताइस विभिन्न गामक थे किंतु मत्तान में अरदई या मीड लोग थे जिनके छ कबीले थे। जद्ध घुमक्कड़ होने के कारण वे न दे के तम्बुजा में रहते थे। जब कहीं बस जाते तब बस्ती के चारों ओर मिट्टी की दीवार बना लेते थे। वे पशुपालन करते घोड़ा बला, बकरा, भेडा और कुत्ता के गिराण रखते गादिया में भी काम लेते थे। जहा सम्भव हुआ वे जमकर खेती करने लगते थे। वे बीर गिकार के बड़े गीकीन और प्रसिद्ध धनपधारी थे। उनका समाज पतक या और उनमें बहुविवाह का प्रथा थी। प्रत्येक कबीला या गिराण स्वतंत्र था किंतु आपत्काल में वे सब मिल जाते थे। वे लग आय मापा बालते थे। कहा जाता है कि वे मरकत दुभारा भव, बग्न और खुरासान हाते हुए ईरान में पत्तू गये थे। उनका माना चानी, सीमा, ताना लाहा तथा मणिया का भी गान था।

मीडा का दमन करने के लिए असीरिया के सम्राटा ने अनेक प्रयत्न किये।

की गति तथा धर्म हमेशा के जागृतांग और परगुणाओं का उपाधिगत भाग के पश्चिमी भाग में था। माला ने हमेशा के जागृतांग प्रवेश ग्यागता के लिए। तन्मित्रण के पूर्व में त्रिगत और रागगाता के पाथक जो तम। तू की जाय तन्त्र पाथिया कहलाए। दो ता तन्त्राजायता के आर मा कता थ तिन उनम ग समन (दिनिन) जा तरगीत तन त् आय थ उ-गगीय। परगुणा धार धार वर वर तन्त्र के पूर्व का पन्थिया के प्रान्त में जातर उग गथ। उवा प्रान्त का अगाथिया वात परगुमा कन्थ।

मीडिया

यद्यपि हिट्टी मिडनी तीर कुछ अण तर पश्चिम राग मा जाय जानि ता उम गाया के थ जा बाउ समन त पाग म पथिया मात्तर तया त् तान तथा हि-स्तान तक प- गयी धा तिनु उनता त्रिगता तथा उनता सम्यता नता उनती दीधनालान अथवा महत्व की र्था जिनता नि-रान के जाय तया व। त्रान के उत्थान के पूर्व महत्वपार्थिया सम्मताए सित नी- तथा त्रजग परगत की तल इटिया म पन्थी था। उनकी निमात्रा सम्भवत द्वि-हमन्त्र तथा सम्पति मानन गालाए रहा हागा। तिनु जयागिया के पन्थ के जनतर राथिया अरव के उत्तरी और मसापटामिया में और पूर्वोय प्रन्ता में उन- उत्तराधिकारग हए। उत्तरात्तर महत्वपूर्ण भाग लिया। व्यापकता महत्व तथा स्थाया प्रभाव के दक्षिण स जाय सम्मता उन मर पूर्व सम्यताओं स व- गयी और जपना विापनाओं की छाप समार पर डालता रहा। प्रस्तुत प्रमग में इरान का सम्मता का त्रिगान आवश्यक है। तन्मा मुख्य कारण यह त् त्रिगुण तथा भागन के वाच म उमन की वा हा काम न किया वर- ताना पर कुछ न कुछ अपना प्रभाव मा डाला। दसन सिवा अनक गताथिया तन उ-हान चान की बवर जातिया स प्राचान सम्मताओं की र्था की।

कन्मित्रण मागर और पारम का त्वाटी के बीच में जा त्रिभुज भू भाग है वह इरान के नाम से प्रसिद्ध है। वह पठार पहाथिया में घिरा है जिनकी लम्बाई तीन सौ साठ और चौगई एक सौ बीस मील है। उन पवतमाला में अनक घाटियाँ हैं जिनकी लम्बाई तास में साठ मील तक और चौगई छ स वारह माल तक है। उनम मु-त्र चरागाहा के सिवा वागम पिस्ता अनार अगूर और अजीर आदि

साते, एक पत्नी-व्रती होते और मादा एव शुद्ध जीवन यतीत करते थे। उनमें एक प्रकार की सस्कार विधि प्रचलित थी। प्रकृति के चार तत्त्वा भिति जल पावक और सपौर का पूजन व पत्र पूजा जथवा पशुवलि द्वारा करते थ।

फारस (५३५-३३१ ई० पू०)

परसुआ की बुदिस्तानी पहाडिया पर अके छाटे माटे रजवाड थ। इन रज वाडा म इण्डोजायन भाषा वाली जाती थी, सम्भवत वहा के निवासी दक्षिण रस की आर स बुसारा, समरखद तथा मव होते हुए ईरान में आकर बस गये थे। मीडाका तरहू ये मी मानव की आय गाखा थ गग थे। जामान किया जाता है कि जब मीडा का साम्राज्य बडा तब उन लोगा के सबसे प्रमुख बश पनरगदी के हख मनिग नामक कुल के लाग परसुआ से हटकर एलाम की तराइ म आकर बस गये और वहा के गसक बश से उन्हाने राज्य छीनकर अपना प्रमुत्व मी स्थापित कर लिया। उनके कम्विसस प्रथम नामक राजा का विवाह मीडिया क राजा अस्त्वगस की पुत्री से हुआ जिससे उसका महत्व और मी बढ गया।

हखमनिग (एकेमनी) बश का पहला प्रतापी राजा करण का पुत्र कायरस हुआ (५५३ वष ई० पू०)। उसने मीडिया के सम्राट के विरुद्ध विद्रोह का झडा उठाया। सम्राट का सना ने मी कायरस का साथ दिया और उस अपना नेता स्वीकार कर लिया (५५० ई० पू०)। वह मीडिया का सम्राट ता था ही किन्तु उसने अपने का फारम का सम्राट मी घोषित किया। मीडा के प्रति उसका वर्ताव गिण्ट तथा सहानुभूतिपूर्ण रहा। अपनी सेना में उन्हें भरती करके उसने उन्हें आत्मसात कर लिया।

कायरस की पहली टक्कर लीडिया के राजा नीमन से हुई क्योंकि उसने फारस के नये सम्राट की बढ़ती हुई शक्ति का शीघ्र ही दमन करना आवश्यक समझ कर उस पर आक्रमण करने की याजना बनायी थी। शीसस का आगा थी कि वेदी-लान, यूनान तथा मिस्र की राजाकिनया उसकी सहायता करेंगी। यह समाचार पाते ही कायरस ने उस पर चढाई कर दी। युद्ध क पूव उसने शीसस का अपना आधिपत्य स्वीकार करने के लिए आमन्त्रित किया किन्तु उसने इकार कर दिया। युद्ध मे कायरस का विजय हुई (५४६ ई० पू०)। शीसस पकडकर नजरबंद कर लिया गया। लीडिया की राजधानी में कायरस की पनावा फहरान लगी। तदनन्तर एक के बाद दूसरा नगर जीतकर फारस वाला ने इजियन सागर के पूर्वी

हजारों मार डाले गये और मुल्तान की तरह पकड़ कर निवासित किये गये । तथापि वे सधप करत ही रह और सधप जारी रहा । इस परिस्थिति में व्याबुल हाकर मीडा ने पोयान (त्रिजोक्स) नामक एक नेता या राजा चुन लिया । वह वार और व्याया प्रिय था । उनमें उनको संगठित करके अपनी राजधानी एक्त्राना में जो हमदान के समीप है स्थापित की । तभी से वहाँ एकसत्तात्मक राज्य का आरम्भ हुआ (७०८ से ६५५ ई० पू०) । असीरिया के बल का विचारकर उसके उत्तराधि कारिया ने कुछ समय तक शांतिपूर्वक कर देने का नीति का अनुसरण किया । दो पीढ़ी तक शांति रखकर उनके राजाओं ने अपने संगठन का ष्ट कर लिया और युद्ध करके जय कबीला को भी अपने अधीन बना लिया । वेमरियन वंश भी उनके साथ था ।

कायक्षत्रस (६३५—५८४ ई० पू०) ने शासन को तथा बरछे काग्य धनु धरो और सवार सेना को विशेषण ऐसा संगठित किया कि उसका जातक चारा आर फलने लगा । फिर उसने असीरिया पर भयकर आक्रमण किया और निनेवह को घेर लिया । यदि स्वाइथियन लाग मीडिया पर भयकर आक्रमण न करते तो सम्भवत वह निनेवह को फनट कर लेता । फिर भी उसने स्वाइथियन आक्रमण कारिया के मुख्य नेता का छल से मारकर और उसकी सेना का हराकर निनेवह पर पुनः चढ़ाई कर उसे नष्ट भ्रष्ट किया और जला दिया । (५१० ई० पू०) असीरिया के छत्र भंग में मीडा का भाग प्रशस्त हो गया । मीडा राजा पश्चिम की ओर आरमीनिया तथा केपोगिया जीतकर जागे बढ़ा किन्तु लीडिया वाला ने उसका राधा । सात वर्ष तक युद्ध होने के पश्चात् दाना में संधि हा गयी (५८५ ई० पू०) । हालिस नदी (किर्गिलहरमन) दाना राधा की सामा निर्दिष्ट हुई । मीडा का राज्य हालिस नदी से भारत की सीमा तक माना गया । कायक्षत्रस का उत्तराधिकारी इष्टवग बभव से मग्य हाकर सैर शिकार में फस गया । शासन में ढाल पडने से अमानाप बढ़ा । उस परिस्थिति में राम उठाकर परगु प्रदेश के ह्खमणि कुल के नेता कायरम ने जिसका प्रभुत्व एलाम तक हा गया था, मीडा पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया । मीडिया राज्य के स्थान पर परशिया राज्य कायम हा गया (५१० ई० पू०) ।

यद्यपि मीडा की सम्मता ने कोई मारी उन्नति तो न की तथापि उन्हें ३६ अक्षरों की वणमाला तथा पाचमण्ट कागज पर कलम से लिखने का ज्ञान था । उनमें एक वंश मग्य लाग का था जो सम्भवत कमवाण्डी रहें हगे । वे माम न

खात, एक पत्नी ब्रती होते और सादा एव शुद्ध जीवन यतीत करत थे। उनमें एक प्रकार की सस्कार विधि प्रचलित थी। प्रकृति के चार तत्त्वा क्षिति, जल, पावक और समीर का पूजन के फल फूला जयवा पगुबलि द्वारा करते थे।

फारस (५३५-३३१ ई० पू०)

परसुआ की कुलिस्तानी पहाडिया पर अनेक छोटे-मोटे रजवाडे थे। इन रजवाडा म इण्डोजायन भाषा बानी जाती थी, सम्भवत वहा के निवासी दक्षिण रम की आर म बुझारा, समरखद तथा मव होते हुए इरान म जाकर बस गये थे। मीडा की तरह ये भी मानव की आय गाखा के लोग थे। अनुमान किया जाता है कि जब मीडा का साम्राज्य बडा तब उन लोग के सबसे प्रमुख वंश पमरगती के हखमनिश नामक कुल के लाग परसुआ सं हटकर एलाम की तराई म आकर बस गये और वहा के शासक वंश से उहाने राज्य छीनकर अपना प्रभुत्व भी स्थापित कर लिया। उनके कम्बिसस प्रथम नामक राजा का विवाह मीडिया के राजा अस्त्यगम की पुत्री से हुआ जिससे उसका महत्व और भी बढ गया।

हखमनिश (एकमेनी) वंश का पहला प्रतापी राजा कर्ण का पुत्र कायरस हुआ (५५३ वष ई० पू०)। उसने मीडिया के सम्राट के विरुद्ध विद्रोह का झंडा उठाया। सम्राट की सना ने भी कायरस का साथ दिया और उमे अपना नेता स्वीकार कर लिया (५५० ई० पू०)। वह मीडिया का सम्राट तो था ही किंतु उसने अपने का फारस का सम्राट भी घोषित किया। मीडा के प्रति उमका बतार शिष्ट तथा सहानुभूतिपूर्ण रहा। अपनी सना म उन्हें भरता करके उसन उन्हें आत्मसात कर लिया।

कायरस की पहली टक्कर लीडिया के राजा त्रीसम से हुई, क्याकि उसने फारस के नये सम्राट की बढ़ती हुई शक्ति का शांति ही दमन करना आवश्यक समझ कर उन पर आक्रमण करने की याजना बनाया थी। त्रीसम का आशा थी कि वेधी एतन यूनान तथा मिस्र की राजशक्तिया उसकी सहायता करेंगी। यह समाचार पाते ही कायरस ने उस पर चढाई कर दी। युद्ध के पूव उसने त्रीसम का अपना आधिपत्य स्वीकार करने के लिए आमंत्रित किया किंतु उसने इकार कर दिया। युद्ध में कायरस की विजय हुई (५४६ ई० पू०)। त्रीसस पकडकर नजरखद कर लिया गया। लीडिया की राजधानी में कायरस की पताका फहराने लगी। तद नन्तर एक के बाद दूसरा नगर जीतकर फारस का नई ईजियन सागर के पूर्वी

तट तब अपना साम्राज्य बना लिया। उगी प्रचार पूव तथा उत्तर म भी उहाने समरकन्द, मव आदि स्थाना का जीतकर मर दरिया तब अपना साम्राज्य बनाया। पूव में शकस्तान (मिजिस्तान) तथा मकरान तब उहाने अपने राज्य सीमा बना ली। कायरस की प्रबल शक्ति के सामने बेबीलोन न भी शिर झुका लिया। ग्रीकोनिया का राजा नबूनेट अपने देवताआ का लंकर भाग गया (५३० ई०)। उमकी प्रजा ने कायरस का स्वागत किया। कायरस ने इस प्रकार तीन साम्राज्या का मिलानर एक बहुत बड अधि साम्राज्य की स्थापना की। उमकी विजया का रहस्य उसके श्रेष्ठ धनुर्धारिया की वीरता ही नहीं बरन उमकी उदारनीति भी था। वह न तो किसी के देवा देवताआ या देनालया का अपमान करता था, न व्यय के लिए नगरा का विध्वंस करता, न पराजित लोगा के साथ कडा अनावश्यक क्रता का व्यवहार करता था अपितु वह उनका उचित सम्मान करता था। मृतक का ता वह दवादिन्व उपाधि के साथ सम्मानित करता रहा। जिस दंग म वह जाता वहा के शासक वश का अपने का उत्तराधिकारी मानना था और वना ही व्यवहार करता था। इसक अतिरिक्त विजित प्रान्ता म वह यथाशीघ्र शान्ति की स्थापना तथा शासन की व्यवस्था कर देना था। सेमेटिक लोगा की सी निदयता फारस वाला में न थी। एही कारण स कायरस का विराघ सफलता न प्राप्त कर सका। ५२८ ई० पू० म किमी उत्तरी शक जाति के साथ युद्ध म कायरस का निघन हा गया। कहा जाता है कि एक वश की उसकी एक रानी तोमाथ्रिस ने बदला लेन के लिए उसे घोला देकर फँसवा लिया जिससे उसकी पराजय और मृत्यु हा गयी।

कायरस के उत्तराधिकारी ज्यष्ठ पुत्र कम्बिसस ने बन्दुजा की सहायता से मिस्र पर चढाई की। मेम्फिसनगर को जडटा बना कर यूबिया तक के मिस्र दंग पर उसने अधिकार कर लिया (५२५—२४ ई० पू०)। यद्यपि कार्थेज और यबिया जीतने का उसने प्रयत्न किया किन्तु मारममि म उसकी सेना नष्ट हा गयी और वह विफल रहा। फोनीशिया के जलसैनिका न कार्थेज पर आक्रमण करने से साफ इकार कर लिया।

मिस्र से जत्र कम्बिसस लौट रहा था तब उस समाचार मिला कि बरदिया नामक उसके भाइ न राज सिंहासन पर अपना अधिकार जमा लिया है। इस समाचार से चौंखला कर वह पागला की तरह जत्याचार करने लगा। कहा जाता है कि उसी पागल्पन में उसने आत्महत्या कर ली। तदुपरांत बरदिया ने अपने का सम्राट घोषित कर लिया। प्रजा का स्वानुकूल करने के लिए उसने तान वप के लिए कर

माफ कर लिये और युद्ध के लिए बलात् सैनिक मरती करना बंद कर दिया। विन्नु के द्वीकरण की उमकी नीति तथा बुल दवताआ की उपाय के कारण सामन्ता में अमताप पला। फन्त दरयावांग (दारा) के नेतृत्व में उमका बंध कर लिया गया (३२२ ई० पू०)। बरदिया के बंध की घटना कुछ समय तक गुप्त रखी गयी जिमम लाम उठाकर मगग बगी (मीडी) गामत नामक व्यक्ति ने अपन का बरदिया हान की घोषणा कर दी। कर्मियम के अत्याचारों से दुगी हाकर गंगा न गामत का अपना राजा मान लिया। जब पायिया के प्रशासक के पुत्र दरयावांग ने उमक पागण्ट का मण्णपाट कर लिया तब लागा न उमका मार डाला और परयावोश का अपना मन्नाट मान लिया। दरयावांग का जन्म हक्मनी बग में हुआ था, अतः उमक बगज हक्मनी के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुए। दारा ने जरयुष्ट के मन का अपना लिया और मीडा के मन का विराध किया।

दारा प्रतापी योग्य चतुर और उत्साही मन्नाट सिद्ध हुआ। दा बंध में ही उसने गान्ति स्थापित कर दी जो बीस वर्ष तक निर्विघ्न रही। मिय बग की भी उमकी उपायना और महानुभूति में अपूर्व मन्नाप हुआ। उमका साम्राज्य पूर्व में मियु नदी तक फैला हुआ था। उम विनाय साम्राज्य की राजधानी सूसा नगर में स्थापित की गयी। पश्चिमी प्रदेश मिस्र और पूर्वी देश फार्सों के रूप में वार्षिक कर देते थे। उमक पत्नी आय थी कि उम फार्स पर काबू कर लगाने की आवश्यकता नहीं थी। मीडिया और परमिया बवल सैनिक भेजे जाते थे। साम्राज्य की आय जय वस्तुओं का छांटकर चांगीन कराइने कर दी। उता बटा और उतना ममद्विगाला साम्राज्य उम समय तक पृथ्वी पर कही न बना था। इनने बड़े साम्राज्य का शासन करना जिमम विभिन्न जातियाँ एक मस्त्रुतिया के लाग रहने थे, मानव-मगठन की क्षमता का महत्वपूर्ण प्रमाण है।

दाग के नामने एक मुग्य प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि भूमध्य तथा काले सागर के तट पर स्थित ग्रीक रियासतों के प्रति उसकी क्या नीति होना चाहिए। ग्रीक प्राय द्विपिन, नाविक, युद्धप्रिय उद्यमी एवं व्यवसाय-कुशल थे। उनका कुछ न-कुछ सम्बंध स्पार्टा और एथेन्स के राज्यों से रहता था। प्रत्येक नगर अपना स्वतन्त्रता की रक्षा करना तथा अन्य नगर राज्यों में प्रतियोगिता में जागे रहना चाहता था। अपने साम्राज्य का काठ मागर के तट तक बढ़ाकर ग्रीकों की रियासतों को उसके अन्तर्गत लाने का कामना दारा के लिए अस्वाभाविक नहीं थी। चिन्ता केवल इस बात की थी कि उनसे युद्ध करने समय सेना बहुत दूर तक फल जायगी जिमसे स्वाइधियत

जाति के संचरणगील समूह उस पर आक्रमण अथवा लूट मार करी ता जल्जल जवमर पा सकत थे । जतएज उमने सजस पहूँ स्वाधियना पर आक्रमण करना निश्चित बिया बयानि दग अभियान म गपन्ता प्राप्त हान म स्वाधिया की सोने का खाना पर भी उमका अधिकार हा जान का गम्मापना था ।

वई लक्ष सना सहित ईरानिया न वामफारस पर वर यूराप पर उगाई का (५१२ ई० पू०) । एगियाई शक्ति का यराप पर सजस प्रथम आक्रमण हान क कारण इतिहास म वस अभियान का विदाप महत्व माना जाता ह । श्रम विजय तर दारा न वहा एक प्रबल सना नियुक्त वर दी ।

ग्रीका की अधिवाग सुमम्पन्न मुशिक्षित जननरया दारा क जाधिपत्य क जतगत पहले ही जा चुकी थी । शेष ग्रीका वा भी मिला लने की अभिलाषा दारा क लिए स्वाभाविक थी । इसके सिवा एथेस का स्पार्टा की आर स भयभर गना रहती थी । स्पार्टा फारस का घोर विरोधी था । एथेस म एक एगा दल पना हा गया था जा फारस से मंत्री स्थापित करना चाहता था । उम उद्देश्य म क्लीस्थिनीज के नतरन में एथेस ने फारस स मेल करन क प्रस्ताव भज जिनके स्वीकृत हान क पहूँ ही एथेस की जनता क्लीस्थिनीज क विरुद्ध हो गयी जीर वह दग स निष्पासित कर दिया गया । दो वष बाद दस आदालन का हिपिअस नामक नता भी अयाचारी हाने क दाप पर दस से बहिष्कृत कर दिया गया । हिपिअस का पुन अजकार वापस करने क लिए दारा क भाई अतफनाज ने जा सारजिस का गवनर था एथेस का मावूर करना चाहा । धमकी स एथेस बात उत्तेजित हाकर लडने के लिए तयार हा गये । एस जवसर पर जायानिया क यनानिया ने भी फारस क विराध वा अण्डा उठाया । एथेस न उनकी सहायता क लिए बीस जहाज भेज दिये । विराधिया ने सारजिस पर आक्रमण कर उसम जाग लगा दी । इरानिया ने लीडिया क लागा का सहायता से आक्रमण का निष्फल कर दिया । विद्राहिया को पाछ हटना पडा, किंतु इरानिया ने उनका वुरा तरुह हरा लिया । उधर गग्न राज्या म जापसी झगडे आरम्भ हा गय जिसम जो नौ-सना जादि जाया थी वापस चली गयी । किंतु धार धार झगडा बन्ता ही गया । ईरान का विराध जीर विगाधिया का दमन बटन वन्त धार युद्ध का नौबत जा गयी । इस प्रसग म यह भी स्मरण रखना चाहिए कि एगियाइ तट क यूनानी राज्या तथा ग्रीस म भी प्राय निरकुश जनाचारी शासन-विधान प्रचलित थे । दारा का दामाद मर्दानिअम जत्र प्रमुख सेनापति नियुक्त हुआ तब उसी यह घोषणा की कि ईरान का मुख्य उद्देश्य निरकुश जनाचारा शासन

के स्थान पर जनसत्तात्मक शासन जसा कि ग्रीस राज्या में प्रचलित है, स्थापित करना है। इस काय में इरानिया का इतनी सफलता हुई कि यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने भी उनकी प्रशंसा की। दारा का यह आशा थी कि ग्रीस के राज्या में जनसत्तात्मक पंक्ति गेगा का उसकी नीति से बल प्राप्त होगा और वे उमना स्वागत करेंगे। किन्तु इरानिया का जागाआ के निष्फल होने के कारण में सबसे मर्यादा दमिर घटना थी। समुद्र में एकाएक मयकर तूफान ने ईरानिया के तीन मी जहाज टुटा दिये। जिससे बीस हजार सैनिक डूब गये (४९२ ई० पू०)। उन दुघटना के जमाने में मर्दोनिअम को जा अवाध सफलता प्राप्त हो रही थी, उमम विघ्न पड़ गया। मसीडानिया के एक युद्ध में उसकी सेना हार गयी और घायल होने के कारण उसका इरान छोड़ना पड़ा। उसके स्थान पर भीड़वशी दत्तीस सेनापति नियुक्त हुआ (४९० ई० पू०)। सबसे बड़ी भूल ता यह हुई कि स्थल मार्ग में चढ़कर ग्रीस पर आक्रमण करने की नीति को त्याग कर जहाजी बेड़े में एथेन्स जातने का प्रयत्न किया गया। दूसरी भूल यह हुई कि शक्ति प्रदर्शन के लिए सेना न एबी टिआ के दरम्याना को जला दिया जिससे ग्रीस में रोप और अविश्वाम घड़ गया। फलतः ईरानी सेना का महयोग के बदले प्रचण्ड विराध का सामना करना पड़ा। मराथान के मरान में दत्तीस का एथेन्स की सेना ने परास्त कर दिया। इस पराजय का प्रभाव ग्राम के इतिहास और सामूहिक विकास पर अमूल्य मिद्ध हुआ किन्तु उसके कारण मिस्र देश में फारस के खिलाफ विद्रोह का आग भटक उठी। यदि दारा का सकल्प सफल होता तो गायद समार के इतिहास और सम्म्यता का रूप ही कुछ और हो जाता। किन्तु यह यथा प्राप्त होने के पश्चात् मर्यादा उसे क्रम लिया (८८५—८६६ ई० पू०)। प्राचीन काल के इतिहास में दारा प्रथम फारस का सबसे बड़ा सम्राट हुआ जिसका नाम आज तक इतिहास और साहित्य में जावित है।

उसके उपरांत उमका पुत्र जेरस्तीज सम्राट हुआ। यद्यपि उममें उल्गाह था किन्तु तदनुकूल पराक्रम न था। उसने अपने पिता के सरल्य को पूरा करने और मरिह समाराह का काम उठाने के लिए पहले ता बेबीलोन राज्य को निरस्त कर दिया। तदनंतर मिस्र के उपद्रवा को शान्त किया। उनसे निश्चित होकर उमने यूनान पर जल तथा स्थल मार्ग से चढ़ाई कर दी। यूनान की रियासता ने सम्मिलित होकर फारस की सना का सामूहिक विराध किया। प्लाटी के मदान में युद्ध ठना (८७९ ई० पू०)। दुभाग्यवश फारसी सेना के सेनापति मर्दोनिअम का निधन हो गया जिससे उसे मदान से हटना पड़ा। यही नहीं ईरान का जहाजी बेड़ा मयकर तूफान

वे कारण जन्त व्यस्त हो गया। उसी क्षीण दशा में यूनानियों ने उगपूर मन्मिग में जात्रमण कर दिया और विजय प्राप्त कर ली। प्राचा का उत्साह पराक्रम और साहस ही फारसी मना की पराजय का एकमात्र कारण न था। फारसी मना में कई आन्तरिक कमजोरियाँ थीं। मरने पहुँची कमजारी यह थी कि फारसी मना विभिन्न प्राचा व एस सन्निह न्ना का मिलाकर बनी था जिनका अपना अपना स्वतंत्र सगठन था। उन दश ने न ता किसी व्यापक सिद्धांत या विधान पर न साम्राज्यीय स्तर पर सगठन और संचालन का कोई मतापजनन प्रयत्न किया था। फलतः उसकी क्षमता और जाघात गति सेना की विनाशना व अनुपयुक्त न थी। हमरी यह कि उनका विशाल मना के लिए मान-मान और मन्म पञ्चान का यथेष्ट प्रयत्न न था। विजित प्रान्ता में जा गाधन प्राप्त हो मन्म ये उन पर ही उनका अधिकतर भरोसा करना पड़ता था। सन्निह जन्मन्नी पूर छोड़ नष्ट कर यन वन प्रकारेण अपना काम चगन का प्रयत्न करने थे किन्तु उनमें उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं पाती थी। इससे उनका जा कष्ट और अमुविधा होता उससे बहुत अधिक कष्ट विजित प्रदेशों की प्रजा को भागना पड़ता था। तामरा यह कि फारस का नौ सेना के नाविका में जायानिआ तथा समुद्रनट के निवासों की बड़ी सन्ध्याम थे। उनकी महानुमूर्ति विराधी ग्रीका के साथ थी जत फारस का विजय के प्रति व उदासीन थे। इन सत्र युटिया के निवा मरने बनी कमजारी मना संचालका की जक्षमता और रण-कौशल की कमी थी। जरकमोज़ में वायम्म आर दारा का सी घाम्यता का अभाव था। मर्निजस का निघन हो गया था और उससे स्थान की पूर्ति करने वाला कार्य अय सनानायक ईरानियाक यहाँ न था। इरान की जयपत्ता से यह परिणाम निवाल्ता ठीक न हागा कि ग्रीस का अधिक गक्ति गाली थे और ईरान उन पर विजय प्राप्त करने की क्षमता सदा के लिए खा बटा था। ईरानिया के पास तन साधन थे कि यदि व चाहत तो वारम्बार आक्रमण कर सकते थे। किन्तु उधर ध्यान न देकर व जय महत्वपूर्ण कार्यों में लग गये। ग्रीका की जार से उन्हें कोई भी आशका न थी।

प्लाटी और सेलमिस की दुषटनाओं से ईरान का जातक क्षीण हो गया तथा यूनानियों का जात्मविश्वास उत्साह और साहस बहुत बढ़ गया। उनका प्रभाव दाना महाद्वीप के इतिहास और मन्मता पर ऐसा पडा कि जिसका मल्य जमी नव आँका नहीं जा सका। इतना अवश्य है कि कई गनिया तक मन्मता का प्रवाह पूव से न जाकर पश्चिम की जार से आता रहा। जरकसीन थोड़ी, आल्सी, दुबल तथा

विगसी था। उपयुक्त दुधटनाआ मे उसका जातक नष्ट हो गया। पडयत्र करके उसका वध कर दिया गया।

ईरान की शक्ति एव प्रताप का उत्तरोत्तर श्रय हाना चल गया, यद्यपि कई सम्राट साधारण योग्यता व हुए तथापि इरान की अवनति हाती ही चली गयी। यूनान के राज्या म पारम्परिक वगडे बनाये रखने तथा किसी का भी बहुत प्रयत्न न होने देने की नीति ईरान न ग्रहण की। इसी युक्ति के कारण यूनान की आर म उसका कम चिन्ता रही। ईरान व सम्राट का प्रताप क्षीण हाने के कारण मिस्र ही म नही, वरन ईरान म भी उपद्रव हाने लगे। जेरेक्मीड व पुत्र अतजरेक्मीड व भाई ने जा बेक्रिआ (वल्त्र) का प्रणामक था विद्राह कर दिया। विद्राह का दमन कर अतजरेक्साज ने अपने सत्र भाग्या का वध करवा लिया। फिर उमन मिस्र पर चढाई की। नील नदी के मुहाने से ग्रीका का भगाकर उसन पुन फारम पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया। अतजरेक्सीड की मृत्यु के पश्चात फारमी सम्राज्य का जातक घटता रहा। गह्यूद्ध, राजकुल म रक्तपात, प्राता में विद्राह और स्वच्छन्द हान के जादालन जादि उपद्रव हाने रहे। पश्चिमी एशिया और मिस्र फारम क अधि-कार से निकलन चले गये। फारम के सम्राट अतजरेक्मीड ने विश्रुखलता गवन का प्रयत्न किया। अपने भाग्या और बहना का वध करवा डालन क बाद उमन मिस्र पर आक्रमण किया और फेरो का भगाकर फिर फारम का आधिपत्य स्थापित कर लिया। एशियाई वाचक को भी उमका आधिपत्य स्वीकार करना पडा। विद्राहिया का बडी क्ररता म दमन लिया गया। फारम का साम्राय एक बार फिर अनुप्राणित हा गया। ममीडानिया (मक्दूनिया) के राजा फिलिप व भय स एथेस का भी फारम के सम्राट म मित्रता स्था-पित करने का प्रस्ताव करना पडा। किन्तु जिम वष एथेस पर फिलिप ने विजय प्राप्त की उमी वष अतजरेक्माज का उमक चिकित्सक ने विष डेकर मार डाला (३०८ इ० पू०)। पडयत्रकागिया ने राजकुल मे खून-खूनचर मचाने क बाद पतालीस वष व दारा तीय को राजमन्गमन पर बठा लिया (३२६ इ० पू०)।

दारा योग्य, अनुभव और वीर ग्रासक था। अपने गुणा व कारण ही उमका आरमानिया जस प्रान्त के प्रणामन का भार लिया गया था। सिहामनाण्ड हाने के लगभग एक ही वष में उमन मिस्र व विद्राहिया का ममन कर वहाँ अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिया। अन्वेक्सेण्टर (सिखंदर) जम प्रतिभाशाली, अदम्य परा-

रमी और रणबुशल सेनानायक स उसकी यदि टक्कर न हानी ता सम्भवत इरान की शक्ति का यथेष्ट सगठन वह कर लेता ।

अलेक्जेंडर ने अपन पिता क वध का कारण दारा का पडयंत्र बताया जिमका बदला लेना आवश्यक था । इसके सिवा ग्रीस की शरैयियन लोग क प्रधान नायक हाने क नात उसन पुराने शत्रु फारस को लुट देने का मार उम मुपुद किया गया । सिक्न्दर स यद्ध करने के लिए एथन्स ने दारा स सहायता मागी किंतु दारा ने अपनी क्षमता जीर शक्ति को लवते हुए इकार कर दिया । सम्भवत दारा को सिक्न्दर का प्रतिमा और योग्यता का ठाक जदाजा न हा सका हो । दारा ने शायन् यह भा सोचा हो कि ग्रीस क राज्य जापनी क्षमता तथा मेसिडोनिया के जात्रमणा स जयवस्थित हो गये अत व अलेक्जेंडर का यदि सहायता दना चाहें तो न दे सकेंगे । एशिया के ग्रीक राज्या की अधिकांग सहा नुमूति फारस के साथ थी न कि अलेक्जेंडर के साथ । इसलिए दारा ने अलेक्जेंडर के विरुद्ध बहुत बडी सेना नहीं भेजी । फारस की तथा जानामक सेनाएँ करीब करीब वगवर था । ग्रानिक्स म पहली टक्कर हुई । पहले एसा प्रतीत हुआ कि जात्रमणकारी परास्त हो जायेंगे । एक वार अलेक्जेंडर मरत मरते भी बचा । पर अततोगत्वा उसी का विजय हुई । फारसी सनिका को ता उमन भाग जाने गिया किंतु उनके ग्रीक सहायगिया का बल्लजाम करवा दिया । इरान पर सीधा जात्र मण न करके अलेक्जेंडर ने अमठ्यागी ग्रीक नगरा का विध्वंस कर डाला । लूट मार करके सपद्र के किनारे तक एगियाद काचन पर उमने अपना प्रमुद्र स्थापित कर लिया । इसके बाद इसस के मदान म इरानी सेना पर उसकी विजय प्राप्त हुई । दारा ता अपनी सेना का डगमगाता देखकर भाग निकला किंतु दमिशन में उसकी माता गाहरानी और बच्चे पकड लिये गये । यद्यपि उनका सिक्न्दर ने यथाचित सम्मान किया तथापि उह वापस करने से इकार कर दिया । दारा ने जत्र सघि का प्रस्ताव भेजा तत्र उसने उत्तर दिया कि वह इसी शत पर हो सनगी कि अलेक्जेंडर का वह जाधिपत्य स्वीकार कर ले । दारा ने उसे हालस नदी के पश्चिम क प्रदश तथा बहुत सा धन देने का प्रलोभन दिया, किंतु वह प्रयत्न मा विफल रहा ।

मिस्र विजय कर अलेक्जेंडर ईरान की ओर बढ़ा । जरजला के समीप गाग मेला में इरानी सना ने उसस लाहा गिया किंतु वह पराजित हुई (३३१ ई० पू०) । दारा मुद्गभेन से भाग गया, किंतु अलेक्जेंडर ने उमका पीछा न छोडा ।

अतः में बल्ल के प्रशासक बेमस ने दमगान के समीप दारा का वध कर डाला। दारा तनाय की मृत्यु के साथ ही ईरान के इतिहास के सम्भवतः सबसे महत्त्वपूर्ण युग का अन्त हुआ गया। किन्तु ईरान के प्राचीन इतिहास का वह पूवाद्ध मात्र था।

हखमनी युग की सभ्यता—इरानी समाज

इरान के निवासी सुदर, सुढील, पुष्ट, सत्यवादी वीर और उदार हृदय थे। उनका साधारण भोजन जौ तथा गेहूँ से बने पदार्थ और विशेष मांस थे। उनमें गरीब ढके रहने का ऐसा गिबाज था कि चेहर का छोड़कर शायद हा उनका कोई अंग खुला रहता था। इसका कारण सम्भवतः वहाँ की भयंकर सर्दियों और सूखी गर्मी थी। व शिर पर टोपी और पैरों में कसा चट्टी या जूते पहनते थे। उनकी पागाक कमीज के ऊपर ढीला लबाटा था जिसका व कमरबंद से कस लेते थे। उनका अधोवस्त्र पजामा था। वे स्वेन तथा रगीन और तडक मडक या जक बकदार कपडा तथा सुगन्धित पदार्थों के शौकीन थे। स्त्रियाँ तथा पुरुषों के कपडा में नग्नता का भेद था। पुरुष जुल्फ और दाढ़ी रखते थे जिसे वे तेल और कर्षी से सँवारा करते थे। स्त्रियाँ अग्राग तथा सौन्दर्यवचक वस्तुओं का प्रयोग करती थीं। सम्पन्न लोग सुदर भवना भँ रहते वागा म भर करते कीमती कालीन तस्त मर्जे और गद्दी मसनद लगाते थे। सुसम्पन्न लोग कपडा में ही नहीं, बरन जूता तन में रत्न जडवाते थे। गरीब धक्के खाते थे।

इरानी लोग म समेटिक लोग की तरह निदयता न थी। वे पराजित शत्रुओं के साथ क्रूर व्यवहार प्रायः न करते थे। यथासाध्य उन्हें स्वानुकूल करने की चेष्टा करते थे। देश समाज तथा राजद्रोहिता का सकुटुम्ब नष्ट करने में वे हिचकते न थे। व लोग बात के धनी थे। उनका वादा पर विश्वास किया जा सकता था। यूनानी भी मानते थे कि इरानी लोग स्पष्ट तथा सत्यवादी थे। वे शिष्टाचार का बड़ा विचार रखते बड़ा का आदर सम्मान तथा छोटा के प्रति स्नेह का व्यावहारिक प्रदर्शन करते थे। शारीरिक और मानसिक सफाई का उनको बड़ा ध्यान रहता था। रास्ता पर खाना पीना थूकना नाक माफ करना, वे बुरा समझते थे। कायरसक समय तक वे खाने-पीने में समय का पाठन करते रहें। प्रायः एक बार भाजन करते तथा सुरापान से बचते थे। कुरश के समय से सुरापान का रिवाज बना। कम काण्ट के अवसर पर वे हौम (माम) पीते थे जिममें सुगंधक जवगुण के बदले शुभ गण माने जाते थे। व्यभिचारी तथा बुराचारा को कठोर दण्ड दिया जाता था।

ये गुण साम्राज्य तथा सम्पत्ति की वृद्धि के साथ कम होत गये। स्त्रियों का सम्मान, चटारापन और अविवाहित बच्चे बढ़ गये। वे लोग विवाहित और गृहस्थ जीवन का अविवाहित जीवन से बहुत थोड़ा मानते थे। यद्यपि वहाँ बड़े विवाह लगने लगे थे तथापि उमर अच्छी न समझते थे। भारी बहिन पितृ पुत्री माना और पुत्र के विवाह का रिवाज कम-कम मर-जागाम ता अवश्य था। धना और सम्पन्न लोग उपपत्निया रखते थे। दारा के पहले स्त्रियाँ मर्त्या न थीं किन्तु उमर का उमर का रिवाज जमीरों में गहरा हुआ गया। विवाहित स्त्री का अपन पितृ भ्राता और बच्चे भाँसे मित्रता बढित हो गया। पुत्रियाँ का जन्म लगे लोग पसन्द न करते थे किन्तु भ्रूण हत्या का बंधन पानक मानते और उमर लिए प्राणच्छेद करते थे। विवाह की उमर वहाँ पंद्रह वर्ष की ठीक समझी जाती थी।

जायिक स्थिति

इरान का सामाजिक और जायिक जीवन चार श्रेणियों में विभक्त था। सम्राट और उसके कटुम्ब का स्थान सबसे उचा था। उसके बाद बगानुगत जमींदार और उसके पदाधिकारियों का स्थान था। धर्मधिकारियों का भी विशिष्ट स्थान था और उनका सम्मान होता था। सबसे नीचा स्थान था माघारण जनता का जिसमें किसान और मजदूर थे। जमींदारों के कठोर पत्रों में वे कम रहते थे। साराण यह कि शक्ति और सम्पत्ति राजवंश और जमादारों की वधाता थी। शराही लोग कृषि तथा वागवानी का श्रेष्ठतम व्यवसाय मानते थे। खेता अलाहदा अलाहदा अथवा मिलकर भी की जाता थी। जिनके पास जमान न होता वे जमीन दूसरों से उपज का एक भाग देने की शर्त पर जानने के लिए उमर लेते थे। जमीन की सिकार्य ज्यादातर वर्षों पर या नदियों के जल पर निर्भर थी। ईरानी लोग नहर भी बनाना जानते थे। जहाँ पानी की कमी होती वहाँ नहरों द्वारा पहाड़ियाँ या नदियाँ से नालियाँ द्वारा पानी लाया जाता था। जहाँ दलदल था वहाँ से पानी निकालकर भूमि को कृषि योग्य बना लिया जाता था। ईरान की इस कला का अनुकरण अनेक देशों ने किया। राय के ओर से प्रेरणा दी जाती थी कि अय दगा से वशा और फला के पंजा का लाकर इरान में लगाय। लाया का बाग लगवाने का शौक था। ईरान में नदियाँ तथा उपजाऊ भूमि अनुपातत कम थी, इसलिए अन्न कम होता था। अतएव उसकी कमी फला तथा मांस से पूरा की जाती थी। गिकार और मच्छा पकड़ने का लोग को शौक था।

प्रायः पाठ कण्ठस्थ कर लेते थे। विनय तथा आचार की शिक्षा का महत्त्व दिया जाता था। कुछ लोग का गायन कला की भी शिक्षा दी जाती थी। प्रत्येक व्यक्ति के लिए चाहें वह अमार हा अथवा साधारण श्रेणी का सैनिक शिक्षा करना अथवा राहण अस्त्रशस्त्र संचालन तथा बाण विद्या सीखना अनिवार्य था। शिक्षाविद्या का महत्त्वशालता या बढोर परीक्षा ली जाती थी। साधारण श्रेणी के लोग पढना-लिखना अनावश्यक समझते थे। सैनिक शिक्षा का ही वे उचित तथा काफी समझते थे। इरान की शिक्षा का ध्यय व्यक्ति में विनय शिक्षाचार व्यवहार-कुशलता तथा वीरता स्वामिमान और पौरुष के गुण पदा करना था। विद्वान और धुरंधर पण्डित बनना उनका आदर्श न था।

प्राचीन ईरान में कई भाषाएँ बोली जाती थी किन्तु राजभाषा तथा घम-भाषा मस्कृत से बहुत कुछ मिलती-जुलती थी। फारसी एलामी तथा बेबिलोनी भाषाओं को राष्ट्रभाषा का स्थान दिया गया था। बेबीलोन के अशुरा से ईरानिया ने ३० अक्षर बना लिये थे जो उनके व्यवहार के लिए काफी समझे गये थे। लोग में लिखने-पढने का शौक न था। वहाँ लेखक याडे वेतन पर नौकर रख लिये जाते और उनसे सब काम लिया जाता था। कविता गान तथा कहानियाँ में उनका कुछ रुचि अवश्य थी अथवा साहित्य से सम्भवतः उनको कोई सराकार न था। उनकी राय में वह यथ ही था। हा गान बजाने नाच रग से उनका चित्त न उचटता था। यह मनावृत्ति भी साम्राज्यीय सम्पदा का परिणाम थी। यद्यपि पुराना फारसी के टेल क्यूनीफाम लिपि में इमा पूव सातवी शती के मिले ह तथापि उम लिपि का विकास अत्यन्त शिथिल और नगण्य सा रहा। इसका एक यह भा कारण हा सकता है कि हखमनी युग में मिल से भारत के पश्चिमोत्तर प्राता तक आरम्भ में प्रायः लिखा-पढी जाती था। फिर भी फारसी के शिक्षालेख क्यूनीफाम लिपि में सचिन किये जाते थे। पपाइरस पर कलम और रोशनार्ई से लिखन का रिवाज था। ईरान में मूर्तिकला का विकास बहुत कम हुआ क्योकि उसक पीछे धार्मिक अथवा कलात्मक प्रेरणा का अभाव था। फिर भी पशुओं के वास्तविक अथवा काल्पनिक मूर्ति चित्र तथा कास की बना मूर्तियाँ सुंदर, सजीव तथा गनि प्रदाक ह।

कला

1

इरान में कबल गृह निर्माण कला का ता मयेष्ट विकास हुआ किन्तु अथ

कलाआ का सवदन न हुआ । ईरानी सम्यता की यह एक उड़ी कमी रह गयी । गह निर्माण के विधान में उनकी कला की अपनी विशेषता थी । उनके यहा दवालया की अधिक आवश्यकता न थी जएव वहाँ गह निर्माण विधान की ही विशेष उन्नति हुई । वहा के घुसावगोपा स नात होना हे कि ईरानिया को बडे आगना, चबूतरा वारहदरिया पतले सुदर सम्मा चौकी सीटिया खुले बडे कमरा दीवाग पर चमकीले पालिगदार रमान टादला का विविध भाति सजाने तथा वागा का गाक था । कही-कहा उन टादला पर मेसापटमिया क फैशन क चित्र भी बने रहत थे । किंतु य मव विशेषताएँ अय विदगी ककारा से ली गयी थी । इरानिया का उनका विशेष श्रेय न था । ईरानी सम्राटा का नगर निर्माण करने का गाक था । सियाक, मूसा, पसिपोलिस विगापुर फीराजागद आदि नगर बडे गानगर और कलापूण थे । वहाँ के खन्ना चबूतरा टादला आदि पर बने पगुआ और मनुप्या के चित्र तथा महला की बनावट से यह स्पष्ट है कि स्थापत्य कला ने वहा अच्छी उन्नति की ।

धर्म

आर्यों के आगमन के पूर्व ईरान वाहे भूगोक और अफाग के दवता वर्ण को प्रमुख देव मानत थे । उमके वात अहुर मजदा तथा मित्र आदि थे । प्रत्यक आधिपत्याधि और जवर आदि रोगा का मूल कारण कोइन-काइ दवी गस्ति ममथी जाती थी । सत्रसे भयकरी शक्ति सुरापान से उमत्त एपमा' नाम का था । पिगाचा म भयकर नमुद्रज प्रघान गिने जाते थे । अनिष्टकारी कष्टदायिनी तथा आपत्ति विपत्ति की फलाने वाली यावत शक्तिया का प्रघान पापात्मा अग्रमयु था । उन सव अनिष्टकर गस्तिया और पिगाचा का शान्त रखने के लिए सुगन्धित द्रव्या क साथ चाट-पूक आदि का उपचार किया जाता था । दवताआ को पगु बलि देकर प्रमन किया जाता था । मग (मीड) वश के लोग इन पूजाआ में पुराहित और यात्रिक का काम करते थे । मग पुराहित युद्ध में भी सेनाआ के साथ जाते और त्वताआ की सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न करते थे ।

कहा जाता है कि आय लोग गुम गुण सम्पन्न देवताआ की कल्पना अपने माथ लेकर आये । उनके सत्रस प्रमुख देवता थे आहुर (देवाधिपति) और मजदा (पान स्वरूप) । आहुर की अनेक पत्नियाँ थी जा प्राय नशिया की देवियाँ थी । अनाहिता आहुर मजदा की प्रतिरूप मानी जाती थी । प्राचीन हखमनी वश के

ारम्भ का म जनाहिता किरिरिस्त एव ननया जालि नामा म दवी की पूजा मूय चलित थी । उसक बाद मित्र या मिथ का स्थान था जा कभी मूय कभी जाकाग भी उपा के रूप म प्रकट हाता था । याय करना उमवा एक विगप कतव्य । वसीलिए उसके दस हजार नन और टार कान रे । जिम पर बह प्रसन्न हाता उसको हरी भरी भमि गाधन पुन तथा रूपवती मित्रया प्रदान कर दता । म प्रसन्न करने क लिए किसी पुगहित पुजारी की आरश्यकता न थी । नेवल हाथ ठाकर उसका गणगान और अपना मनारथ कहकर सविनय याचना करन ही साम सिद्ध हा जाता था । यलि को अधिक कठिन समस्या जा जाती थी ता नाम साम) रस क साथ बल की बलि चला दी जाती थी । नौरान के वापिन जाताय त्मव क अवसर पर राजा मामरम पीकर मस्ती के माथ नाचना और श्वत घाटो बलि चढाता था । उसका विशेष कारण यह था कि युद्धा का नतत्व भी मिथ का कतय समझा जाता था । उसी में दुष्ट गकितया को परास्त करन की क्षमता थी । सग्राम मे उसके वायी जार रण्णु और दाहिनी जार श्रौष आर आगे विजयी म और बल-वीरता प्रलायिनी देवी रहता थी । करनधन जयवा वनधन मायादी बता था । था ता वह वायु दवता किंतु इच्छा करन पर पशु पक्षा जयवा मनुष्य का वेग धारण कर लता था । राजशक्ति स्वास्थ्य और वीय जोज प्रदान करताय उसके अधिकार म था । उपयुक्त प्रमुख दवताआ के सिवा तिष्टपटय नक्षत्रा के देवता) माह (चद्रमा) जम (पथ्वी) वाह्य (वायु) अपन नतर जल) अतर (जग्नि) जालि दवता भी थे । अनाहिता नाम की पवत निवासिा विन दवी की कृपा से पथ्वी पर पवित्र जल का प्रवाह बहा । गाय का ब सेवनीय गत थ । यज्ञ म होम (साम) पान को ब वामिक वृत्य का उग ममज्ञन थे । न के अवसर पर पशुबलि दन की प्रथा भी प्रचलित था ।

उपयुक्त धारणाआ और विधाना म प्रयात धम प्रवतक जरथुष्ट ने कुछ व्रचारणीय सशाधन किये । इसा की ठठी गती मे जारमानिया या मारिया प्रान्त उनका जम (६३० जयवा ५३०) हुआ माना जाता है । उनक म्पिनम वगज मता का नाम पोम्पम्य और जननी का नाम गुग्धाव था । उहान सम्भवत देवताआ जाहुर और मजला का मिलाकर एक जाहुर मादा की कल्पना की आर उ ह व्वाधिदेव मानकर उनकी जनय भक्ति का प्रचार किया । उनके मद्धात क अनुसार वस्तुन वही एक मात्र दवता प्रकाशस्वरूप है । उमे किसी जय वी-दवता की आवश्यकता नहा क्याकि वह सवगविनमात और अद्वितीय है ।

उसी ने विश्व की रचना की है और वही सत्रक भरण पापण का प्रयत्न करता है।
 म दष्टि स जरथुष्ट्र को एवेश्वरवादी मानता चाहिए। प्रचलित दबताजा का
 वे देवता नहीं बरन दत्य जयवा मिथ्या कहन थे। किंतु उनमें मतासाार जाहुर
 मजदा की विविध शक्तिया की कल्पना की ता मकती ह आर तदनुसार उह विभिन्न
 नाम लिये जा सकने ह। उस दष्टि स म्पत्त मयु (पवित्रात्मा), जास (धमत्त्व)
 गहमन (सद्बिचार) आदि सात मुख्य और आगिर (भाग्य), विवि (स्वाप)
 सेवा आर अतर (जग्नि) गौण शक्तिया मानी जा सकती ह। जाहुर मजदा का
 विगिष्ट निवासस्थान जद्व लाक ह।

गुम गुण म्पन्न जाहुर मजदा का पापात्मा जहरिमन स निरतर मघप हाता
 रत्ता ह। म धारणा के मठ में यह विचार ह कि विश्व म प्रकाश तथा जघकार
 धम तथा अधम, पुण्य तथा पाप ज्ञान तथा अज्ञान का पागम्परिक द्वन्द्व स्वभावत
 जनत काल स चला जा रहा है। जततागत्वा गुम गुणा की अगुम पर विजय
 हानी रहेगी। पापात्मा व ही कारण समार म अनेक प्रकार क कष्ट वदनाएँ और
 पाप फलें टुए हैं। जरथुष्ट्र के मन स जीव ही मुग्यत्त्व है। गरीर उसका वाहन
 मात्र है। मनुष्य का स्वतन्त्रता ह कि उन दा प्रवृत्तिया म से वह जिसका चाहे
 अनुसरण कर। इतना निश्चित ह कि जततागत्वा गुम की विजय और अगुम की
 पराजय हापी। यह स्मरण रखना चाहिए कि जतिम निणय यायमूलक ही हागा
 न कि दयामूलक। सब हिसाब किनास व्यक्ति क मरने पर किया जायगा। गुम
 गुण विमूषित मन वचन एव कम स हा मुख शान्ति और निस्तार की सम्भावना
 म जयवा नहा। गम भाग वाल स्वग जायेंगे और कुकर्मों जग्नि म जलन मुलगत
 रगे। मन वचा एव कम स जा गुद्ध हात ह व ही स्वग प्राप्त करने क अधिकारी
 हागे। साराण यह कि कम ही जाच क। एकमात्र कमीटी थी। कुछ लागा का विचार
 है कि इरानी विचारधारा म ही यहूदिया, इमादया और मुसलमाना ने गतान की
 कल्पना ली ह।

जरथुष्ट्र ने होम (भाम) आदि सभी मात्क द्रव्या क सेवन का धार विराध
 किया। पगुवलि आर परपीडा का विराधता किया ही, सबके साथ दया के व्यवहार
 का उपदेश भी उहाने दिया। इस विषय म उनका मत भारत के उनके समसामयिक
 गानम बुद्ध के मन म मिलता जुलता है। हराशटम लिखना है कि ईरान म न ता
 मन्दिर थे और न मूर्ति-पूजा हानी थी। यह ठीक है कि ईरान मे श्रीका के से प्रतिमा
 अनिष्टिन मन्दिर न थे। उनक धार्मिक कृत्य भी खुल स्थाना म हात थ किन्तु पवित्र

अग्नि का रक्षा के लिए विशिष्ट ढग के गृह बनाये जाते थे । वे देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ भी बनाते थे । इरानी लोग म मूर्ति पूजाय अनाहिता देवी क मंदिर एकवताना सूसा आदि अनेक नगरों में स्थापित किये गये । इनमें पक्ष-सहित सूय विम्ब क ऊपर अहुर मजदा का कमर से ऊपर का भाग निर्मित किया जाता था । सम्भवतः वह कल्पना इरानिया ने मिस्र देश से ग्रहण की होगी । पक्षा को जाकाश का जार उस पर बनी मूर्ति का अहुर मजदा का प्रतीक माना जाता है । जरथुष्ट्र ने मनुष्य के मृतक शरीर का जलमग्न करने अग्निदाह देने तथा पृथ्वी में गाड़न का इसलिए बुरा कहा कि उससे 'ल' अग्नि तथा पृथ्वी तत्व अपवित्र हो जाते हैं । इसलिए उहाने शव को पशु पशिया को खाने के लिए छोड़ देना ही सबसे अच्छा ढग बताया । भगवशी पुरोहिता की व्यक्तिगत जीवनचर्या उनके आचार और मगठन का मुधारने का उसने प्रयत्न किया । सरल और सुनियंत्रित जीवन-यापन की जार उनका जाकृष्ट कर उसने उनका पूव सम्मानित तीन श्रेणियाँ निर्धारित कर दी । पहला श्रेणी के लोग मावेद (अनुयायी) दूसरी के मावेद (श्रुष्ठ) और तामरी के तुम्नूर मोवेद (उत्कृष्ट) कहलाये । उहाने गाथा नामक धार्मिक और नास्तिक ग्रन्थ की रचना की ।

जरथुष्ट्र और उनके मत का मीडिया ने धार विराध किया और जरथुष्ट्र को मार डालने का प्रयत्न भी किया गया । लाचार होकर उनका अपनी जन्मभूमि पारिया क हखमनी सरदार विशतास्पक क पास चला आना पडा । स्वागतपूवक मने उनके मत का ग्रहण किया । उसी सरदार का पुन सुप्रसिद्ध सम्राट दारा उस त का अनुयायी ही नहा, वरन उत्साही प्रचारक भी हुआ ।

शासन

माझाय का मुख्य अधिपति सम्राट था जो शासन सना तथा नाय व्यवस्था में एकमात्र अधिकारी था । उसकी जानाएँ तथा निणय अंतिम एक जमाघ मानी जाती थी । दारा ने यह घोषणा की थी कि अहुर मजदा ने ही उनका सम्राट बनाया और नायाधीन देवता गम्म की आजाआ का पालन करना उनका परम कतव्य है । परम म छ या सात वग प्रमुख मान जाते थे । उनका कुल-पशिया को मन्त्वण विपदा पर अपना सम्मति देने का अधिकार था । उनका एक समिति था जिस सम्राट की परामर्शदात्रा सम्था कहा जा सकता है । उनकी सम्मति का सम्राट सामाध्य जात्र करना था । समिति का सम्राट का उत्तराधिकारी चुनने का अधि

करना ठाठगाटणार गगन उनाथ रगनर कशीय गगन का पगनग या गिराज देन क गिए प्रान्त को जायिक म्थिन क अनुमार द्रव्य गाजा-भामान तथा अत्र पदाथ जुगाने की व्यवस्था करता आनि क्षत्रप क मुख्य वक्तव्य थ । प्रगामन क मिवा प्रत्येक प्रात म एउ सनाध्यथ एक जथ (वित्त) भत्रा ममाट स्वय नियुक्त करता था । व मा एवमात्र सघ्राट क प्रति ही उत्तरदायी थ । उनर वार्यों तथा गतिरिति की जाच करने क लिए प्रत्यथ अथवा मण निगणन रहत थ । व निग-क्षक अपनी रिपाट सघ्राट का सीध भेजन थे । प्रान्त क तीना मन्त्रा अपन अपन क्षत्र म पूण अधिकार रगत थे । प्राय उनरा घनाव फारम क कुगीना म न किया जाता था । मघ्राट क वगज भी प्रगासन नियुक्त किये जान थ । प्रगामना क साथ एक मन्कटरी (मन्चिव) हाता था जा उनर विमागा क बाध मम्पन करता और केद्राय गामन का ममाचार भजता रहता था ।

गामन मना तथा व्यापार की मुद्रिधा क गिए माम्नाय में वनी-छाया मन्का के जाल बिछे हुए थे जिनका यथामम्मव रीक-ठाक रखने का प्रवध था । मग्न बटी सञ्क जा सूमा स एफिमम तक जाती था माग्ग मी सत्तर भीग् लम्बी था । दूमग वडी मडक मिध नदा क किनार स काग्ग रमगान बगिलान हाता हुई करीब-करीब मिध तक जाता थी । सटका पर चौग्ग या पद्दह मील क फामल पर चौकिया बनायी गयी था जहा डाक - जाने क लिए तज घाटे माजग रहत थे । ग्मा से पूव चतुथ गती भ घागा तथा अय भारवाही खुर्गार पगुआ क खुग म तावे चमडे अथवा घाटा के पाला म वने नाल बाधन का रिवाज चल पटा था । दान्नीन गती गान् लाह की नालबदी भी प्रचलित हो गयी । जिससे पगुआ का उपयोग अधिक सनापनक हा गया । जिस गस्ते का कारवा न्ध्व गिना म त करने उम गजकीय डाक चौकी वाट सात गिन म ही न कर डालत थे । उसी मुविधा के कारण सघ्राट का अपने सुविम्भन माम्नाज्य क समाचार वगनर मिलत रहत थे । भत्र प्रात एक स ३ थ । काई जघिन और काद कम मम्पन था । ग्मी कारण कर बसूल करने क लिए ममान नियम नही रखे गये । प्रात की जायिक एव गाम-निक म्थिन क जनकूठ कर लगाया जाता था । एच काटकर गा वचता वह क द्वीय गामन क पास भेज दिशा जाता था । वन्त मम्मव है कि प्रत्येक प्रात से प्राप्य कर का पूठ अनुमान कक्षीय गामन द्वारा कर लिया जाता हो । फारस और मीडिया प्राता स कर क वन्त क वन्त भनिक लिये जात थे । हिन्द प्रान्त स प्रचुर परिमाण म स्वणघलि ली जानी थी और बेबीलोनिया मे एक मह्म टलेण्ट चाँदी ली जाती

पुनः या जवगर गिया जात था । गिग्यात रात गारा अग मग, वाग जुमान, व, आदि की राजा जात । राजराह बलात्कार जति कुछ अगगया वा छाटार ईरान म प्राणरणा गे वा नियम त था ।

पतन के कारण

प्राचीन ईरानिया के पतन का कारण उनका साम्राज्य की गिग्यात जात जाचरणा की अष्टता थी । साम्राज्य में अनन मन मतान्तर जाचार विचार और विविध भाषाभाषी जानिया मम्मिलित थी जिनका अपनी अपनी बिगपताएँ तथा व्यक्तित्व थे । यद्यपि उन विभिन्न तत्वा का एक मा रगन का बला में दग निया ने अपूर्व गुगलता का परिचय दिया तथापि उह अनिश्चिन कात तन एक मूत्र म बांधे रगना दु साध्य हा नहीं बरन जमाध्यमा था । इतने बड साम्राज्य से जा ममद्वि और अपार मम्पति रानिया का मिली उमन उहें प्रमत्त ऐयाग तथा व्यभिचारी बना दिया । नाच रग गराब-बचाप एग-गराम का बाजार रग हो गया । गुलठरें उठान में समाट और उनके बडे रग गये । राज्यासिहासन के लिए हत्याकांड सूब बडा । गामन और मना के सुधार एव समयानुसार विराम का घ्यात छाटकर के ऐंद्रिक सुखा के माघन म फस गये । परिणाम यह हुआ कि साम्राज्य इतना निबल हा गया कि यूनानी विजता के गे घक्का म ही वह ठिन्न मिन्न हो गया । चूकि जनता ने स्वतन्त्रता तथा स्वावलम्बन की तीक्षा न पायी थी और सग सम्राट तथा गसका की मुखापेक्षी रही थी जतएव उनका बिनाग होत ही प्राचीन इरान की प्रजा का बल एव बमब भी विलीन हा गया ।

उपयुक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि ग्यापार कला विज्ञान तथा साहित्य के क्षेत्रा में प्राचीन ईरान ने काई स्मरणीय काय नहा किया । उनकी मुख्य वृनिया गसकन-वीशक गसिता के प्रति उगार नीति एव सदाचार पापक एकेश्वरवात मूलक धम के क्षत्रा म मानी जाती ह । वहत्तर साम्राज्य के शासन की कला म सम्भवत राम साम्राज्य के सिवा कोई भी देग इरान का अतिप्रमण नहीं कर पाया । इस ओर उसन जो पथ प्रन्शन किया उससे राम ने भी लाभ उठाया । उसके मगठन का अनुकरण गनियो तक बहा होता रहा । इरान के लिए यह कम गौरव की बात नहीं है ।

इरान-पार्थिया

आधुनिक खुरासान और उमके आस-भास के उत्तरा मर भूभाग का प्राचान

नाम पारतवज अथवा पाथव था। उसका तथा कस्पियन सागर के बीच में हरकनिया प्राप्त था। वह प्रांत ह्यमनी बग के माघ्राज्य में था। ३३० ई० पू० अलेक्जेंडर ने उस भी जीत लिया। वहाँ अघबबर सचरणगोल कबीले कस्पियन सागर के पूर्वीय ओर से आकर बस। पाथव प्रदेश में बसने के कारण के लाग पाथियन नाम प्रसिद्ध हुए। पाथियन का सामाजिक संगठन बहुत कुछ यूरोप के मध्ययुग की सामन्तशाही में मिलता-जुलता है। उनका मान प्रमुख बग थे और उनसे लगी बट और छाट सरदारा की सम्बद्ध शृंगला भी बाफा फग हुई थी। सिपाही जपन सरदारा और सामना के जितना अनुभव थे उनका राजा नहीं। जावदमता पटन पर के अपने नेताओं के जागानुमार सन्निवृत्ता करने का तयार हो जाते थे। पाथियन की सत्ता घुडसवारा की थी। हाथिया का उत्तम बाई स्यात न था किन्तु उनकी जगह उठा के दान हीन थे। घुडमजार लाह का शिलम यन्तर पहनकर भाग्य और तलवारा से लड़ते थे।

प्राप्त के सैल्यूकस बग के निश्चित हान पर स्वादियन जाति की दाही शाखा के पानी कबीले ने जार पकटना शुरू किया। वे लाग बड़े प्रसिद्ध घुडमजार और युद्धप्रिय थे। सघाम में बीरगति प्राप्त करना अपने जावन की के पूरा सफरता मानते थे। यन्तर पर मरना उनकी दृष्टि में दुमायमय एक निन्दनीय समझा जाता था। ईसा के तृतीय शताब्दी के मध्यकाल में उत्तान बकिट्टिया पर आक्रमण किया, किन्तु वहाँ के राजा लिआस ने उनका भगा दिया। तब रुम और ईरान की सामा पर स्थित पाथिया प्रान्त में वे घुस पड़े। उनके नेता निरिदनस ने अस्तक (अरमक) नगर में सिंहासनासन हाकर अपने स्वतंत्र राज्य का घोषणा कर दी। कुछ वर्षों के बाद उसने अस्तक से हटकर राजधानी ह्वेटामपालम में स्थापित की। 'यापारिक दृष्टि में वह स्थान अच्छा था क्योंकि पूव और पश्चिम के प्रसिद्ध यापारिक मार्ग पर उनकी स्थिति थी।

सल्यूकस द्वितीय ने उन पर चढ़ाई की, किन्तु एण्टिओक ने उपद्रव हान के कारण उस वापस लौटना पड़ा। उस अवसर से लाभ उठाकर पाथियन ने हरियाना प्रान्त पर भी अधिकार जमा लिया। तब से वे अपनी शक्ति मजबूत करत और राज्य का धीरे धीरे विस्तार करत रहे। यद्यपि घाट समझ के लिए एण्टिओकस तृतीय ने उन पर अपना जाजिपत्य स्थापित कर लिया था किन्तु द्वितीय शती (ई० पू०) के प्रथम दशक के समाप्त होने के पश्चात् एण्टिआक्रम का रामना ने परास्त किया। जिसमें पाथिया ही नहीं, बल्कि मीडिया आदि अन्य प्रांत भी स्वतंत्र हो गये

कारण साम्राज्य छिन्न मित्र होन लगा। ऐसी विषम परिस्थिति में मिथ्रदतस द्वितीय, पार्थिया के सिंहासन पर जासूद हुआ। (१२३ ई० पू०) पश्चिमी प्रान्ता में शान्ति करके उसने पूव में मव हिरात और सीस्तान एव कंधार पर पुन आधिपत्य जमा लिया। शक के जाक्रमण का विरोध परिणाम यह हुआ कि मध्य एशिया और पूर्वी ईरान के ग्रीक राज्य सत्ता के लिए नष्ट हा गये। फलत आवमम नदी क उत्तरी और दक्षिणी प्रान्ता में नवीन जाक्रमण करने वाली शाखाएँ जम गयी। पश्चिमी दिशा में बसन्त वाल लाग शक और पूर्वी दिशा में यूधी जथवा तुखारी थे। यूथियो ने बैक्ट्रिया राज्य का हृदय लिया। उनक कुछ कबील (प्रथम शती ई० पू०) पजाब और सिंध में घुम आये और वहा के ग्रीक और बैक्ट्रियन राज्या को नष्ट करके स्वयं स्वतंत्र राज्य करने लगे। किन्तु सीस्तान और अराकोशिया के प्रान्ता के निवासियों को पार्थियन वश के गण्डोपरस नाम के राजकुमार ने एकता के मूत्र में बाध कर एक नया राज्य स्थापित किया जा सीस्तान से सिंध नदी की सीमा क इम पार तक फल गया।

मिथ्रदतस द्वितीय जितना पराक्रमी था उतना ही नीति एव सगठन कुशल भी। उसक पास चीन के सम्राट ने अपना दूत भेजकर व्यापारिक संधि का प्रस्ताव किया जिसका स्वीकार करके उसने ईरान और चीन के व्यापार का प्रात्साहित किया (११५ ई० पू०)।

पार्थिया के उत्तर-पश्चिम में आरमीनिया राज्य था। वहा का राजनीतिक उलट पुलट में उमे यह जागका रहती थी कि रोम वाल वहा अपना प्रभुत्व स्थापित न कर बटें। जनएव जबसर पाकर उमने अपने अनकल तिग्रनम नामक व्यक्ति को राज्य सिंहासन प्राप्त करने में सहायता दी। एशियाई काचक के निवासी रोम राज्य की नाति रीति से जसतुष्ट और श्रमन्त थे। तिग्रनम ने पाण्डस क मिथ्रदतस (१२०—६५ ई० पू०) की सहायता से एशियाई काचक का एक प्रबल सगठित राज्य बना दिया। रोम वाले अफ्रीका के जुगाथा युद्ध में फँसे होने के कारण उस सगठन का राक न सके (११२—९४ ई० पू०)। उम युद्ध से परमत मिलने पर राम ने पूर्वी समस्या पर ध्यान लिया। रामन सेनापति सेला पश्चिमी एशिया के ग्रीक का हराकर यूफ्रेटीज नदी तक पहुँचा तब मिथ्रदतस ने उसक पास संधि का प्रस्ताव भेजा। सेला को पार्थियन शक्ति का यथेष्ट ज्ञान न था। उमका जसम्भ और बबर समझकर सेला ने उसके संधि प्रस्ताव को ठुकरा दिया (१२ ई० पू०)। मिथ्रदतस ने एशियाई बोचक के निवासियों को स्वानुबूल मजबूर राम से युद्ध

छेड़ लिया। निश्चित तिथि का इटालियना का कर-प्राम गुरु हुआ। कहा जाता है कि अस्मी हजार स्त्री-पुरुष जोर वच्चे तलवार के घाट उतार दिये गये। राम के विरुद्ध विद्रोह तना बड़ा कि ग्रीस जोर उमक दक्षिणी और पश्चिमी तटा पर बस इटालियना का बहा रहना अगम्यव-मा हा गया (८९ ई० पू०)। ऐसी विपम परिस्थिति के कारण मला फिर पूव की ओर भेजा गया। ग्रीस की रियामता का रौंदता जोर लटता हुआ वह एगियाई बाचक जलमागसे पहचा। सम्भव था कि युद्ध जीव गयकर हाना किन्तु अपो विरात्रिया का जोर राम में दहता देपकर सला ने मिथ तनम स धम गत पर मधि कर ली कि रामना से छोड़े स्थाना का वापस कर लिया जाय और हरजाना या जर्माना भी जन्म किया जाय (८५ ई० पू०)।

मिथदतम द्वितीय की मत्यु क वात् पार्थिया राज्य कमजार हा गया। तीस वष तत्र बहा की जातरिक स्थिति उगमगाती रही और राज बल्लन रहे। इम अवधि म आग्नीनिया क निघ्ननम न जपनी गनिन यहा तक बन्ग ग्री कि उमका अधिनार पार्थिया क बइ प्राता पर स्थापित हा गया। ऐसा प्रतीत हाने लगा कि पार्थिया का राय पूणत नष्ट ग जायगा। भयाग स एगियाई बाचक म पाण्टस राय के हे-निक मिग्रन्स और उमक महयागी निघ्ननम का राम स युद्ध छिड गया। राम न पार्थिया क राजा प्रस्तम द्वितीय स मत्रि का प्रस्ताव किया जा उमन स्वीकार कर लिया। राम का मना जय गयकर सत्रट में फम कर डगमगा उठा तत्र भी पार्थिया क उमका माय न छाटा। फिर भा राम क अभिमाना सनानायक पाण्ट क पार्थियन गगा की कन्तर न की बरन उनका मोचा हा ममझता रहा। यही नहा पाण्ट ने पार्थिया में फर वानन तथा उमक बुद्ध पश्चिमा प्राता का छोडन तन म काद ग्नाक न किया। रामना का कुटि नानि म क्षुत्र और जयमानित हाकर पार्थिया क राजा न उनका माय छाट लिया जोर राम क सनानायक तमम म ईगन का रणा बरन क लिए उम युद्ध करना पन्ग। पार्थिया क मुरन नामक मनापति न करही क युद्ध में राम की मना का छिन्न भिन्न हा नया बरन नष्ट तक कर लिया। त्रमम तथा उमक पुत्र का प्राणयान करना पन्ग (३ ई० पू०)। राम वाला का जय पार्थिया का गनिन का टान अनुमान हुआ। उनका जीयें सुत्र गया। यह युद्ध महत्वपूर्ण मसलिए भा ममगा जाना है कि यन् अनेकगुणर गरा र्गन की पराजय क प्रदिनाय जोर र्गन क पुनर्यात का प्रताक है। इस गिया राम का मट मबक भा मिया कि धुग्गवार मना का यणि गुचार म्प म मचागन किया जाय ता पन्ग मना उमका क्षुत्रिया नया कर मक्ता। उम पाठ का ह्म्यगम कर राम न भा

घुडमवार सेना का सगठन आरम्भ कर दिया। उस विजय से ईरान की प्रतिष्ठा तनी बनी गयी कि अरब के छाट बडे राज्य उमरा फिर मम्मान करने लगे। विजय से उत्साहित होकर तथा राम वाला का गहदुद्ध म फेमा देखकर पार्थिया वाला ने भूमध्यसागर के तट तक अपना आधिपत्य स्थापित करने क प्रयत्न किये। मम्भव था कि उनका यथेष्ट मफन्ता भी प्राप्त हाती, किन्तु पार्थिया क सम्राट आरान्स का ईर्ष्या क कारण सुरेन क वध तथा राजकुमार पकारम के अपमान ने वीरा का दिल ताड दिया और जमन्ताप बढा दिया। दस वष तक अकमप्यता चलती रही। उसने बाएँ एक बार फिर जागे बढन का प्रयत्न किया गया। एगियाई कोचक सीरिया पेन्स्टाइन तक ईरान (पार्थियन) सना बढता चगी गया। किन्तु रामना ने उनकी बाएँ का छल बल स राक दिया। ईरानी मना का पगजित टाकर पीछे लौटना पडा। बूढे आगेदस से उब कर पुत्रा ने उम मार डाला (३७ इ० पू०) और राजसिंहामन के लिए आपस मे लडाई हाने लगी। उनम स फम्नस चतुथ का विजय थी प्राप्त हुई किन्तु सरदाग और सनिका में आपसा लडाइ अगड और दलबदिया चलती रहा। उम अव्यवस्थित दशा म लाम उठाने की इच्छा स रामन सेनानायक एण्टनी एक प्रबल सना लेकर आया। किन्तु पूर्वीय राज्या और प्रजा का रामना की निष्पूरता, मुटिलता और श्रुता का इतना कटु अनुभव था कि किसी ने दिल गाल कर उनका साथ न लिया। यद्यपि आरमीनिया जीत कर मीडिया पर उठाने आक्रमण किया किन्तु फम्नस चतुथ ने उनका साज-सामान लूटकर उनकी किला ताडने की मनीना का जला दिया। एण्टनी का लाचार हाकर पीछे लौटना पडा। रामन में पार्थियना ने उमकी सना का बडा क्षति पहुचाया। एक जतिम किन्तु निष्फल प्रयत्न करने के बाद एण्टनी की हिम्मत टूट गयी। उधर जागस्टस क विराध के कारण राम स किसा प्रकार की सहायता प्राप्त करना ता दूर रहा, विराधिया क आक्रमण का प्रतिकार मात्र करने के लिए उस लौटना पडा। विजय जागस्टस की हुई। जागस्टस ने पार्थियना के साथ मत्री की नीति का निर्वाह श्रेयस्कर समझा। उधर पार्थिया वाला न भी राम स उलझना अनुचित समझा। फन्त वमनस्थ कम हा गया जिसस राम का व्यापार आनि म सुविधा प्राप्त हुई। अब राम के मामने मुग्य प्रश्न यह रह गया कि पूव में कहा पर वह अपनी सामा निरारित कर आर किस प्रकार उसका दह बनाव। अतः म यह निणय हुआ कि आरमीनिया वाला माम्राज्या का सीमा रहे। यह निणय भी जागे चलकर अम तोपजनक सिद्ध हुआ, याकि आरमीनिया राज्य में रोम वाले स्वानुकूल व्यक्ति को और पार्थिया वाले,

अपने अनुकूल व्यक्ति का राजा बनाने के लिए उत्सुक रहते थे। पार्थिया व राजसिंहासन के लिए वहाँ के राजकुमारा में इतने झगड़ बढे कि मिश्रदत्तम व वगैरे के हाथ से राज्य निराल कर अतबनस के वश के अधिकार में चला गया।

ईसा की द्वितीय शताब्दी के आरम्भ में (११४ ई०) रोम के सम्राट टजन ने लड मिडकर वाले समुद्र के तटस्थ प्रदेशों पर अधिकार स्थापित कर लिया। वहाँ से दजला नदी तक रोम का आधिपत्य जम जाने से उसके मन में भारत पहुँचने का लालसा जाग्रत हुई और जलकण्ठर महान की समता प्राप्त करना उसका लक्ष्य बन गया। किंतु पश्चिमी एशिया एवं मिस्र में उपद्रव होने के कारण उसकी आगाआ पर पानी पड गया। उसके उत्तराधिकारी सम्राट हेरियन ने दजला से जागे बढने का विचार अव्यावहारिक समझकर छोड दिया। रोम के इस नीति-परिवर्तन का एक कारण यह भी हुआ कि पश्चिमी एशिया में मिस्र और ग्रीस इटली तक प्लेग का प्रचंड प्रकोप हुआ। रोम में गह-कण्ठ और सम्राट पर के लिए भयकर संघर्ष मचे रहने के कारण दूरस्थ देशों में साम्राज्य-स्थापना की आशा व्यर्थ प्रतीत हुई। इन परिस्थितियों में भी सन १९७ ई० में सेप्टिमस सेवरस ने एक बार फिर प्रयत्न किया किंतु वह निष्फल सिद्ध हुआ। रोम का अंतिम चटका तब लगा जब रोम का सम्राट मन्त्रिस (२१८—१८) निमिर्विस में बुरा तरह से परास्त हुआ। आखिर द्वितीय शती की समाप्ति के साथ रोम के ईरान में बर्तन का प्रश्न समाप्त हो गया। रोमना का बाढ क्षीण होते दखकर सासानी वश ने रोम को एशिया से बहिष्कृत करने के अनप्यान का आरम्भ कर दिया।

रोम में संघर्ष होते रहने के कारण पार्थियना का बल पूर्वी प्रांता में भी कम हाता गया। प्रथम शती से यूची जाति की कुषाण नामक शाखा ने बल सचय करना आरम्भ कर दिया था। उनके राजा कुजुल केडफान्सिस ने कस्पियन सागर में सिन्धु नद तक अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया जिससे भारत एवं चीन के यरोप से व्यापार करने के एक विशाल मार्ग पर उसका अधिकार हो गया इससे उसको अर्ध आर्थिक लाभ हुआ। उसके पुत्र तथा उत्तराधिकारी वेम केडफान्सिस ने अपने पिता की नीति का अनुसरण कर हिरात सीस्तान तथा जराकोशिया पश्चिम में पजाब तथा सिंध प्रदेश तक अपना राज्य बढा लिया। फलतः लाल सागर से सिंधुमागरी के समुद्र तक का व्यापार मार्ग उसके अधिकार में आ गया। पश्चिम की ओर से रोमना तथा पूर्व से कुषाणा के दबाव में फँसकर पार्थिया की शक्ति उत्तरोत्तर कम होती चली गयी। रोमना ने कुषाणा से मित्रता कर ली। कुषाणा

ने पश्चिमी रेगिस्तानों की ओर बढ़ना उतना लाभदायक न समझा जितना कि धन धारण पूरा समृद्ध भारतवर्ष की ओर। अतएव पारस में न फौसकर उन्हाने भारत में राज्य विस्तार करना ही श्रेयस्कर समझा।

ईरानी सभ्यता और समाजिक तथा शासनिक विधानों के मूल स्रोत हूब मनीय युग की रीति-नीति में विकसित हुए थे। उसी रीति-नीति का कमोबेश अनुसरण सामानिया क काल तक हा नहीं बल्कि आगे तक भी हाता रहा तथापि परिस्थितियों के उलट फर स समय-समय पर कुछ परिवर्तन भी हाते रह जा विने पन युद्धकला और धार्मिक क्षेत्र में दिवाइ पटते ह।

पार्थिया का राजवर्ग मधुरणशील जाति का था जत उनम उस जाति की विनेपताओं का किसी अंश तक रहना स्वाभाविक था। राजा प्राय एक ही कुटुम्ब से चुना जाता था किन्तु यह रिवाज अनिवार्य न था। राजकुमारों में से कोई भी राजा बनाया जा सकता था। उदाहरणतः पार्थिया क राजमिहासन पर एक राज महिपी जा पहले दासी थी बढायी गयी। राजा की पत्नी उसके मुख्य सरदारा पर जबलम्बित थी जा प्राय मात प्रमुख कुल क थे। प्राचीन ईरानी समाज विधुरणशील न था वह अधिकतर स्थिर था।

पार्थिया के संगठन म दो प्रकार के प्रणे थे। एक ता व राज्य थे जा अनेक अंशों में स्वतंत्र हाते हुए भी पार्थिया क सम्राट के नतत्व में रहते थे। दूसरे व थे जिनके शासन के लिए समय-समय पर प्रशासक नियुक्त किये जाते थे। अनुयायी राज्या की सख्या अठारह थी जिनमें ग्यारह उच्च श्रेणी में और सात निम्न में गिने जाते थे। उनके अनिर्वाक साम्राज्य प्रांता म विभक्त था जिन पर अधिकतर वगानुगत शासक शासन करते थे। उनके अनिर्वाक अनेक नगर थे जो स्वयं अपना प्रबन्ध करते थे। उनके विधानों और स्थानीय शासन में सम्राट यथासम्भव हस्त शेष न करता था। ये नगर व्यापार तथा सस्कृति के केन्द्र थे और उनका प्रभाव साम्राज्य के आधार विचारों का परिवर्तित करता रहता था। जिस प्रकार सम्राट के अनुयायी प्रमुख सरदार थे उनी प्रकार सरदारों के अनुयायी उनके क्षेत्र क छोटे सरदार हाते थे। ये छोटे सरदार ही कृषक समुदाय पर शासन करते थे। इस सक्षिप्त ढंगन स यह प्रतीत हाता है कि पार्थिया के साम्राज्य में सामन्तशाही और जमादारी प्रथा प्रचलित थी। प्रमुख सामन्ता क सहयोग और सहायता स ही राजकुमार साम्राज्य के सिंहासन को प्राप्त कर सकता था कयान्कि पार्थिया का सम्राट राजकुमारों म से ही काई चुना जा सकता था। यह आवश्यक न था कि

सम्राट् भा ज्येष्ठ पुत्र हा उमका उत्तराधिकारी हा । इम प्रया क कारण राज कुमारा का प्रभुग गामन्ता का मृगाप ॥ हाता पटना था । उनम जाग म तीर पत्र चलन रहत थ जिगन कारण साम्राज्य म सातानानी गन्ता और उमर अग अच्छा प्रकार म दूढ़ ग्हा हान पात थ । फिर भा साधारणतया सत्रुर जीर बलगाता सम्राट मगटन का यथागति अव्यवस्थित न्हा हान दन थ । ईरान म उपभुक्त विधान नुरा हेर पर म बहुते प्रारिण काठ स चला आ रता था ।

मनिक व्यवस्था

पाथिया क मरगारा का अपना अपनी सनाछे हानी थी । आन्वयकता पठन पर जधना सम्राट क आमन्त्रण पर व मसय एकत्रित हा जात थे । उननी सना का गति अधिराज मुगमद घुडसवारा पर निभर थी । उपर गिया जा चुना है कि सचरणगाल जातिया क जत्राराही सनिक गामन जयवा मुडकर पाठ म राण-वषा करन म मिद्धहस्त थे । जिग वग म व आम्रमण करत उननी ही गीघना स व पाठ भी हट सकत जीर आवश्यकता पठन पर पुन एकत्रित भा हा सकते थे । उमी बला और लाघव क कारण व गावा जीर रोमना का सामना मफलता क साथ कर सक थ । घुडसवारा क मित्रा पदल सना भी उपप्य न थी । पत्नति तन्वारा और बरछा स लडन के अभ्यस्त थ । पत्नति प्राय कृपक जयवा गलाम हात थ ।

समाज

पाथिया क युग का इरान हबमनी युग स कुछ महत्वपूर्ण जगा म भिन्न था । ग्राना और रोमना के आकर बस जान स ईरानी समाज म नय रवत नयी सस्कृति नये कीटुम्बिक विधान तथा नये दष्टिकाण का प्रादुर्भाव हुआ । जापस म विवाह जीर निरंतर सम्पक होते रहने स उपयक्त प्रवर्तिया तीव्र गति स चलने लगा । ग्रीना जीर रामना के आचार विचार सामाजिक आन्श बला-कौशल, दक्षन विधान के ईरानिया की सम्यता और सस्कृति क साथ सम्मिश्रण हाने रहन क कारण इरान में नयी स्फूर्ति उत्पन्न हुई । दूध और चीना के समान व ऐस घुल मिल गये कि काला न्तर म उनके भेद विभेत्त विलान हा गये और समाज में नया यकितत्व आ गया । सासानियो क युग में इरानी समाज चार वर्गों म विभक्त था जर्थात् सामन्ता तथा सनिहा के पुरोहिता लेखका तथा राजकमचारिया क और भज्रदूर तथा उद्याग धधे वाला के वर्गों में । शिक्षा तथा व्यापार की वृद्धि स जमीनारा जीर किसाना

था मजदुरों का बाच नवीन बडिया जयवा स्तर प्रकट हो गये । नागरिक और व्यापारिक जीवन की वृद्धि से नये प्रश्न और विधि विधानों की सृष्टि होती रही यद्यपि पुराने ढंग में पड़े हुए ईरानी उस प्रवृत्ति से असंतुष्ट रहे किन्तु उनका लिए उसका प्रवाह रोकना अनम्भव था ।

व्यापार

पार्थियनों के समय में चीन तथा भारत का यर्राप में व्यापारिक सम्बन्ध मम्भवतः पहले से अधिक बढ़ा । सिन्धु देश से फारस की खाड़ी तक का समुद्री व्यापार शीघ्रता से बढ़ता रहा । पञ्जाब से हिन्दूकुश पार करता हुआ महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग काबुल में मिल जाता था और दाना देश में यानायात होता था । व्यापार के कारण साम्राज्य का बहुत आमदनी होती थी । ईरान पूर्व में सामान मंगाकर पश्चिम की ओर पश्चिम से लेकर पूर्व की ओर भेजा करता था । पूर्वी पैसा की वस्तुओं का विशेषतः भारतीय पीलाद और तांबा आदि अथवा धातुओं का तथा कपड़ा तल, ममाला जोपधिया रत्ना रत्ना, गाने की चीजा चमटा आदि का बाजार अच्छा था । सड़कें भी पहले से अच्छी थी । डाक चौकी का अच्छा प्रबन्ध था जिसमें पौने दो सा मील की यात्रा आवश्यकता पटन पर एक ही दिन में सम्भव था ।

उम युग में कृषि की उन्नति हुई । छोटे छोटे खेतों को बजाय बड़े-बड़े खेतों में बड़े पमाने पर खेती की जाने लगी क्योंकि अमीरों और सरदारों का उस पमाने की गुजार्ग लिलाद पडी । इसका यह परिणाम हुआ कि छोटे पमाने पर स्वतन्त्र खेती करने वाले उत्तरात्तरकम हान गये और उन्हें स्वावलम्बनक बदल मजदूरी करनी पडी । फलतः उनका मर्यादा और स्थिति कमजोर होती चला गयी । चान से जाये हुए फल के बाग लगाने तथा मधे की खेती करने का शौक गंगा में बढता गया ।

धर्म

पार्थियनों में बौद्धि ही नहीं नर-बलि का भी रिवाज प्रचलित था । जर्बुष्ट के सिद्धान्त के अनुसार पशुबलि स्थाय थी । इस सिद्धान्त का प्रभाव बबर कबीला पर बहुत कम पडा किन्तु ईरानिया का मल्लि दवी अनाहिता का पूजन पार्थिया में अधिक लोकप्रिय हुआ । सूमानगर में वह दवी 'नानिया' नाम से पूजी

जाती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि सिमी न सिमी नाम से कम से कम पश्चिमोत्तर प्रांतों में ईरान की पूर्वी सीमा तक और गमजा उमम आग भी उम स्त्री का पूजन होता था। वहीं-वहीं जन्मवी से उमका परिवार जन्म स्त्री के रूप में पाया जाता है। यद्यपि अधिकतर उमकी प्रतिमाएँ गमजा या तथार्थि निम्नना रूप में भी उमका पूजा होता था।

जय घमों के प्रति पार्थियन राज्य की नीति उग्र थी। यहाँ जहाँ वे त्रिम प्रांत में बस जाते थे वहाँ के घम ग्रहण कर लेते थे। वे लोग जय का घमना के अन्दर काठरी गान्धर रूपनाते थे किन्तु वहीं-वहीं उनमें मगस की मनक विद्या का भी अनुकरण होने लगा था।

मासान घम

पार्थियना के हलाम के माय मागान वग का उग्र्य जोर प्रमुख बना। अनुग्रति के अनुसार उम वग का प्राग्म अनाहिता दबी के स्तय के मन्त्र के अध्यक्षता में से मस्सन नामक एक यक्ति से बनाया जाता है। उमके पुत्र पपक ने तिसका विवाह उस प्रांत के एक मरदार की बटी के माय हुआ था अपने मगुर की जमानाग हडप कर अपने वश की उन्नति का बीजागपण किया (२०८ ई०)। जब पार्थियना के राजा ने पपक के पुत्र गापुर का उमका उत्तराधिकारी बनाने का प्रस्ताव अस्वाकार किया तब से विशाह का प्रारम्भ हो गया। गापुर की मत्स्य जन पर उसका छाटा मां अशार जा फम नामक नगर से स्थापित बना का सनापति था पमिस का राजा बन बठा। प्रतिराध हात हुए मा उसने पार्थिया के राजा जतवनस पचम का हरा कर मार डाला (२२६ ई०)। तदुपरांत कसाफान (कसीफिआ) नगर में जाकर उमने सम्राट की उपाधि धारण कर ली (२२६ ई०)। अदशीर के विरुद्ध एक प्रबल सघ तयार किया गया जिसमें जारमीनिया का राजा सुसरा प्रथम स्वाथियन जाति के कुछ कबीले कुपाणा का राजा जादि गामिल हुए। सघ का राम वाला से भी सहायता का आश्वासन मिला। उम प्रबल सघ को माम दाम भेले के द्वारा शिथिल करके अदशीर ने अततागत्वा छिन्न भिन्न कर लिया। उमका राज्य मव हरात सीस्तान से फरात नदी तक बढ़ गया। उसके समय से ईरान में नबीन उत्साह बढ़ता गया। लोगो में यह धारणा उत्पन्न हो गयी कि प्राचीन साले पाँच सौ वर्षों के दुर्दिन खेत कर पुरस्त्यान के राजमाग पर अग्रसर हो रहा है। अदशीर ने जेरधुष्ट के घम का अभ्युत्थान

करने की बाड़ा उठाया जिससे फारस में धार्मिक जोग उमड़ा। उस स्फूर्ति से सासानी वंश के प्रभाव और जातीय बल की खूब वृद्धि हुई।

पचास वर्ष तक राज्य करके जदगीर ने अपने पुत्र शापुर को साम्राज्य सुपुत्र कर लिया और स्वयं विरक्त होकर अपने जीवन के अन्तिम वर्ष शांतिपूर्वक व्यतीत करता रहा।

सम्राट शापुर भी अपने पिता के ममान योग्य शासक और सेनानी सिद्ध हुआ। उनके साम्राज्य के पूर्व की ओर कुषाण राज्य और पश्चिम में रोम राज्य था। कुषाणा पर विजय प्राप्त करने में उनका व व्यापार मार्ग मिल सकत थे जिसमें कुषाण समर्थ हुए थे। अतएव उमन पहले कुषाणा पर चढ़ाई की। उनका परास्त कर शापुर ने पश्चिम से सिन्धु नदी की घाटी तक तथा बल्लूक तांगक और समरकन्द तक का समस्त भू-भाग अपने साम्राज्य में मिला लिया। कुषाण राज्य समाप्त के लिए समाप्त तो नहीं हुआ किन्तु वह ईरान का अधीनस्थ हो गया।

उत्तर और पूर्व में विजय प्राप्त कर तथा आर्थिक व्यवस्था सुदृढ़ और सम्पन्न करके शापुर पश्चिम की ओर झुका। स्वयं का ह्यमना सम्राट का उत्तराधिकारी घोषित कर उसने रोमना को एशिया से हट जाने के लिए कहा किन्तु वह क्यों हटने वाला था। एशिया से उनका व्यापारिक द्वारा अनेक लाभ होने थे। यद्यपि रोम ओर उसका जनक अवसर पर नराशय का सामना करना पडा किन्तु वह विचलित न हुआ। धीरे-धीरे वह सीरिया और एशियाक अर्थात् मध्य मार्ग के तट तक पहुँच गया। अरबों का अपने प्रभाव में लाकर उसने उन्हें अपना कर अनुगामी बना लिया। अपना शक्ति को मजठित और मजबूत बनाकर उसने रोमना से पुन युद्ध छेडा। इस बार विजयलक्ष्मी उसके हाथ रही। रोम का सम्राट वेलेरियन एडेमा के युद्ध में मारा गया और उसके मत्त हज़ार सैनिक पकड़े जाकर उधर उधर निर्यामित कर दिये गये (२६० ई०)। तदनन्तर सीरिया और कपाडाशिया तक ईरानी सेना ने अपना जातक जमा लिया। केवल पाल्मिरा में उस मफलता प्राप्त न हो सकी।

शापुर का मृत्यु (२७२ ई०) के बाद इरान में गृहयुद्ध छिड गया और साम्राज्य का दशा अव्यवस्थित होने लगी। इसमें रोमना तथा कुषाणा ने लाभ उठाकर अपनी शक्ति बढ़ा ली। साम्राज्य के कुछ हिस्सा पर अपना प्रभुत्व भी स्थापित कर लिया। ईरान की सेना पर रोमना ने विजय प्राप्त कर एक बार फिर दजला नदी तक साम्राज्य बढ़ा लिया। किन्तु चतुर्थ शती में जब शापुर द्वितीय सम्राट हुआ (३०९—७९)

पत्नी श्रणा के अन्तगत इन्तर तथा पत्नी और दूसरी में मत, यत्नमान एव भविष्य (नाल) ह । मतवाल में प्रकाश तथा अघकार पृथक् थे किन्तु उनमें जब सङ्घट्ट हुआ तब अघकार की विजय हुई । यह दगा तब ईश्वर ने अपनी गरितया का दावार प्रयाग करके प्रवाण का उद्धार किया तथापि अघकार की मत्ता बनी ही रही । उम परिस्थिति में पुष्प मूर्ति अवस्था में पडा रहा । तब ईश्वर ने विश्व की रचना का और पुष्प में प्राणविक्रम का गचार किया । इस अवस्था में यद्यपि उपयुक्त दाना तत्त्व आपन में गुप्ते रहें फिर भी व्यग्रस्था में प्रचार का दुर्लभ जन्म प्रवाण ने ईश्वरीय तत्त्व गूय और चन्द्र की मुक्ति का माग निकल सका । यत्नमान का उम प्रगति की धारा उमी गम कर रहा है । अघकार की मत्ता के प्रभाव और सष्टि के कारण मनुष्य में दाना लिए उपस्थित रहें जिनमें मज्जनन का विधान चलता है उम विधान का पता है कि प्रवाण पूण रूप में मुक्त नहा जाने पाता । इस गुत्थी का खालने के लिए ईश्वर ने अपन पवित्र प्रवाण से महात्मा र्मा का पदा कर मनुष्य का अघकार से निवृत्त कर प्रवाण में पहुँचने का माग लिखान के लिए अवतरित किया । माक्ष प्राप्त करने के एकमात्र रास्त मय्यक त्याग का उमन मात्त और उपत्त लिया । मत्ता मनायी बही हा सक्ता है जा स्या-महाराज मास मन्त्रि तथा सम्पति-सग्रह का पूणतया परित्याग करे । उमका मुख्य नतय उात्त तथा आचरण द्वारा मनुष्य का माक्ष का माग बनाना है । साधारण अनुयायिया का विराह करके श्रुतिया में रहने की आज्ञा है । ये लाग श्रात्रा की श्रणा में रखे गये । भविष्य का जा परिस्थिति हागी उममें दाना मल तत्त्व फिर अपनी आरम्भिक अवस्था में पहुँच जायेंगे । किन्तु अघकार कर कर लिया जायगा और शरार के वधन में मुक्त हाकर जीव पूण प्रवाण में स्थिर हा जायगा ।

मानी का ध्येय एक विश्व-यापक धर्म का निमाण और प्रचार करना था । इमात्तिए गायद उमन उम समय के फारस तथा पश्चिमी एशिया की प्रचरित विचारधाराओं के सम्मिश्रण से अपना सिद्धान्त बनाया । शापुर प्रथम ने मानी का स्वागत कर और अनेक प्रकार से उसका सम्मान कर अपना मत प्रचार करने की पूण स्वतन्त्रता दी । जय धर्म थाता न उसका घाट विराध किया । शापुर प्रथम की मत्तु के बाद माना पर अभियाग चलाया गया और उम मत्तुण्ड लिया गया । उमके मत्तानुयायियों का भी निरन्तर कष्ट लिय जात थे फिर मनीषी सिद्धान्त का प्रचार करके, सीरिया एशियाई कोचक उत्तरी अफ्रीका मिक्र तुकिस्तान चीन और उत्तर पश्चिम भारत में हाता चला गया । चीन में ता जब भी चलता है

मनीषी घम के सिधिल होने पर फारम में फिर जरघुष्ट्र व घम का उत्थान हुआ। प्राचीन सिद्धांत के इस नवीन सम्बरण में कुछ परिवर्तन हुए जिनमें वह फारम वाला के लिए सुगम और सुग्राह्य हाकर जानीय घम का स्वरूप ग्रहण कर सका। उस नव सिद्धांत का लेकर बौद्ध एव ईसाई धर्मों के प्रचार का फारम ने सफलतापूर्वक राक दिया। तत्कालीन असहिष्णुता के वातावरण में पारसी घम का जातीय जीर जमहिष्णु हा गया। जय धर्मों तथा घमावलम्बिया का भयकर न्यून किया गया। पारसियों में यह धारणा पली कि उनसे अप्रसन्न हाकर जहूर मजद ने उनके गनुआ का विजय प्रदान की है। उनकी मलाई उमर प्रसन्न करन स ही सम्भव है। वह धार्मिक कृत्या द्वारा सम्भव हागा। परिणाम यह हुआ कि उनमें कमवाण्ड, जाचार और उपचार की प्रवृत्ति पुन बनी जिसका प्रमाण धदि दाद एव निरगिस्तान नामक ग्रथ है।

कला कौशल

पार्थियना का नगर जालि निर्माण करान का शौक न था। किन्तु सामानिया द्वारा स्थापित नगरों के ध्वसावशेष मिलते हैं। उनमें प्रतीत होता है कि वे गालाकार हागे। अधिक सञ्चरणशील होने के कारण गृहनिर्माण का आर भी उहाने विशेष न्यून न किया। सामानिया के समय में कुछ गहा में आगन रखन की पुरानी परिपाटी चलती र्ना किन्तु ऐसे मकान भी बनाये जाते थे जिनमें आगन के बल सायवान निर्माण किया जाता था। पक्क गार स जाड जनगढ पत्थरा के टुकडा की जथवा डटा की दीवार बनायी जानी थी। गढ पत्थरा का दीवारों पर गीन चित्र या रिजा इन भी बनाये जाते थे। समद गगा के मकाना में बडे महारावदार फाटक और दीवारा पर जनक प्रकार की सुंदर रपाए तथा सिंहद्वार और प्रवेश-द्वार बनाए जाते थे। महला के पाम दबे हुए गुम्बद और मदिदरा के पाम मीनार पडे हुए मिलते हैं। ऐसा प्रतात हाता है कि पार्थियना तथा पू। सामानिया के युगा में मकाना के बाहरी भाग को रिगालता और महत्त्व प्रदान करना अच्छा समझा जाता था। उनक मदिदर चौकार हाते थे जिनमें अग्नि निरन्तर जलता रहता था। धार्मिक कमवाण्ड और कृत्य गुल भगान में किय जाते थे। उस प्रकार का अग्नि गान का अवगप तशगिला में भी मिला है। स्थापत्य कला न उम काल वस्तुन काई विशेष उन्नति नहा की। तत्कालीन कला हखमनीय वास्तुकग के सामन मिलकुल फीकी लगती है।

ईरान

पार्थियन युग में काँसे की बड़ी मूर्तियाँ की रचना ने विशेष उन्नति की। इन मूर्तियों की पोशाक बहुत स्पष्ट और वास्तविकतापूर्ण है। मिर्जई ल्यादे और कई प्रकार के पैजाम और जूत पहने हुए व्यक्ति सफाई के साथ बनाये गये हैं। सम्माम के ऊपरी भाग में उत्कीर्ण विविध प्रकार की सजावट भा रोमना की दगा-देगा प्रकृति की गयी थी। कम उमरी हुई उबेरी बलाकृतियों की भी अच्छी उन्नति हुई। तबीबुन्नाम का मगया दृश्य सामूहिक चित्रण का मुदर नमूना है। कम ही चित्रण राजदरवार भोज-उत्सव जाति के भी मिलते हैं। राजाआ तथा पगुआ के चित्रता ईरान में पुराने जमाने में बनते चले जाये थे। उस काल उनमें भी कुछ उन्नति हुई। बरतना और धातु के दुकान पर भा जनक प्रकार के चित्र अंकित किये गये जिनसे यह अनुभव होता है कि ईरानियों का चित्रित वस्तुआ का बेहद गौरव था।

आर्थिक स्थिति

सामानियों के युग के आर्थिक जीवन में पुराने युग की अपेक्षा कुछ विचारणाएँ परिवर्तन हुए। इस युग के राष्ट्रीय जीवन में व्यापार में अर्थिक दृष्टि का महत्त्व था। फलन सम्पत्ति का वितरण पहले से अधिक मतापजनक हुआ। पश्चिमी राया में भी सम्भवतः उतनी अच्छी व्यवस्था उस युग में न थी। चाँदी और ताँबे के सिक्के का विस्तृत प्रचलन हुआ। इंडिया और चवा के द्वारा आदान प्रदान का नया ढंग का उपयोग अधिकाधिक पमाने पर होने लगा। सब हिसाबा वाम सिखा-पत्री के जरिये किया जाना लगा। सम्भवतः चव गद्द का उत्पत्ति भी पहचाना जाया है। उपयुक्त व्यवस्था प्रायः गहरा म थी। सामान्य जनता में विनिमय तथा मजदूरी की मजदूरी और लगान का अधिकांश भाग वस्तुआ के रूप में देने की प्रथा चलती रहा। दुर्भिक्ष अथवा आयात की कमी पड़ जाने पर उस विधान में माघारण समा का अधिक कष्ट न उठाना पड़ता था। व्यापार की वृद्धि के कारण यानिया और व्यापारियों का मुविधा के लिए राय की जाय म नहरा मडका नलिया के पासपास अधिक मराया जिनमें साने पीने की उचित व्यवस्था था का निर्माण हुआ। सामानियों के जमाने में ईरान में रानी वस्तुआ के कारणने हुए। रान के व्यापार का इजारा और नियंत्रण राज्य ने अपने हाथ में रखा। गान की चीजाँ के बनाने में इरान ने खासी उन्नति की। इराना राज्या ने अपनी आवश्यकताओं के अनुसार राजकीय कारखाना में अनेक

चीजें बनवान का व्यवस्था की। सम्भवतः इसलिए जयवा राज्य के जायिन जीवन में विपमता तथा अव्यवस्था बनने के डर से गामन द्वारा आवश्यक चीजा की कामता और भावा पर कड़ा नियंत्रण रखा जाना गया। राज्य के जलाया इरान के बड़े जमानार भी अपना नीकरों में मजदूर बर्दे लाए, बुनत बाल तली जाति रखते थे। उपयुक्त साधन न हान तथा चीजा के भाव का बटार नियंत्रण रहने के कारण किमाना की दगा चित्त हा गया और वे दीन मलीन हा गये। किमाना का अपना रक्षा और निवाह के लिए बड़ जमानारा जोर मामता की शरण लना अनिवाय सा हाता गया। जमानारा की भूमि सम्पत्ति और प्रभाव में बद्धि हुई। जपन जपन दुग बनाकर वे अपनी जमीनारी में गणा आराम करने तथा आनन्द से रहने लग और वहा किमाना के परिश्रम के बत कृषि एवं वाणिज्य के अपने साधना और शक्ति का ब मवद्धन करते रहे। साम्राज्य और जमादारा का गच बनता गया जिसकी पूर्ति के लिए जनक प्रकार के कर चुगा जाति लगाय गये। इस प्रमग में यह स्मरण रखना चाहिए कि सामानी युग में राज्य की जोर में गिणा का अच्छा प्रात्माहन मिला। नगरा एवं नागरिका का जीवन-स्तर पहले से कुछ उचा हो गया। जातायता का विकास अधिक पुष्ट और सक्रिय हुआ और ईरान से राम साम्राज्य का जातक जाता रहा। सार्व निया के युग में इगनी सम्कृति उत्पत्ति के उंचे शिखर पर पहुच गया थी। सर शिकार मुद्धकला साहित्य सगात रहने-सहन पागाक चाल ढाठ जाति में इरान में अच्छा उत्पत्ति की। उनका सामाजिक संगठन सामन्तात्मक था। यद्यपि मध्य श्रेणी के गगा का भी तत्कालान विधान में गम हुआ किन्तु राजनीति में वे सामन्तग्राहा के जायित रहे। उनमें शक्ति का विशेष सचार न हुआ। कृषक तथा मजदूर श्रेणी के लाग समाज में कमजोर रहे जिसका परिणाम जागे चलकर साम्राज्य के लिए अहितकर सिद्ध हुआ।

अध्याय १०

चीन

भौगोलिक स्थिति

हिन्दुस्तान की तरह चीन दश भा स्वत सम्पन्न और समार क जय देशा स पथक ह । (उमके पूव म प्रशान महासागर है जिमका तट बहुत कटा फटा है । दमी कारण उमके सागर तट पर बहुत स अच्छे बंदरगाह ह । चीन के दक्षिणी तथा पश्चिमी भाग पहाडो स घिर है । उत्तर मे भी पहाड एव रगिस्तान ह । उत्तर-पश्चिमी भाग का बह खड जिमम उत्तरी प्रात के बबर चीन क मदान म घुमत थे मसार की प्रसिद्ध चीना दोवार द्वारा बंद कर दिया गया । इस प्रकार उत्तर पूव का सुविशाल मदान तथा पूर्वी प्रात चारा आर स रमित या या कटिए कि पथक कर लिया गया है ।) दम कारण चीन क निवासिया म विजाताय मिश्रण अधिक परिमाण म नही हाने पाया । कुछ विद्वाना का मत है कि आधुनिक मगाल जाति एकदम शुद्ध नही है और उममें मगोलिया तथा दक्षिण रम की अनेक उपजातिया का मिश्रण पाया जाता है । किन्तु वाम्नुम्यिति यह है कि यद्यपि इनने विशाल दंग म प्रान्तीय परिस्थितिया की विभिन्नता स लागे के रूप रग एक जातार आदि म भिन्नता दिखाइ पडनी है तथापि मूलत ब मव मगाल जाति क ही अंतगन ह । रम की पथकता के कारण वहा की सम्यता भा अपनी जनय विनोपता रखती है कयाकि उम पर अय लागे का प्रभाव नगी पड सका न दूसरी सम्यताया का उनस अधिक सम्भव ही हाने पाया । फलत उनकी सम्यता मे स्थिर एकरसता रही और रमी कारण उममें अधिक विभेद या विषयय न हा सका । चान का सम्यता बहुत पुरानी तथा अप्रगतिगाल रह गयी ।

चान के जल्बाय में स्थानीय भिन्नता है । उत्तरी प्रेगा म कडाक का जाडा पटना है और दक्षिणी भागा में काफी गर्मी पडती है । साधारणतया वहा का आवहवा मानसूना दंगा की सी है । वहा वर्षा अच्छा हाना ह । (हिन्दुस्तान का तरह चीन में भी तीन बडो नदिया के जाल ह । वहा की नदिया प्राय पश्चिम स

पूव की ओर बढ़ता है। सीक्याग नया जगला तथा पहाडा म होती टूड एक सहस्र
 मील लम्बा जाती है। उस म कुछ दूर तक जहाज भी आ जा सकत ह। इसकी
 घाटी म चावल वाम तथा लकड़ी की अच्छी पदावार होती है। दूसरा नया याड-
 टी सी नयाड है। इसकी घाटी विशाल तथा महत्वपूर्ण है। इसकी लम्बाई तान
 हजार मील है। यह नया ममार का सबसे बडा जलमार्ग मानी जाती है। इस पर
 सान मी मील तक बड जहाज जा जा सकत ह और सहस्र मील तक नाव
 चल सकती ह। इसके माग म कई झील पडने स इसमें भयकर बाल अधिक नहीं
 आता। इसका घाटा म घान की बडी-बडी फसल बटती ह। जोर गहू जो
 रू आदि भी होती है। इसका डाला पर गहवृत खूब हाता है जिमस रंगम ब
 बीडा का अपार पालन-पापण हाता है। स्वभावतः स नयी क तट पर बहत म
 नगर बस ह। तामरी नया ह्विट्टा या पीनी नयी है। यह बड धूमधमाव स
 मगालिया क रंगिस्तान म हाती हुई उत्तरपूर्वी चीन क मुविगाल मगन में बहती ह।
 अपन माय बहन रत जोर पीनी मिट्टी लाती है जा खती क लिट बडी ही लाम
 दायक है। किन्तु उम माग प्रगन का बरा बान है। रत और मिट्टी की अधि
 कता म उमका स्तर उपर उठना चला गया है। उस बाघ स जखडन क प्रयत्न किय
 गया किन्तु कमा-कमी बह उह ताडकर तूफान बरपा कर दती है जिमम भयकर
 हानि हाती है। उमका बहान भा कतना तेज है कि उस पर जहाज आदि नहीं आ
 जा सकत। बार-बार नया मिट्टी पडन से घउ क कारण रामने सरास हा जान ह।
 गानप्रधान प्रांत हान क कारण उमका घाटा म चावल ता नया हा पात किन्तु
 जा गहू जवार बाजरा सन आदि सय पला हात ह। वृषि का मुविधा क कारण
 उमका घाटा में घना बस्त्रिय है। दाल आर मटागी हान क कारण इसका घाटा
 म मिचाड का प्रयुक्त हाता बठिन है। विगान का मघ-वष्टि का आशय रहता ह।
 यदि अनावष्टि हूँ ता मयकर जवाल पर जाता है। इसका घाटा म विगय
 स्य म और साधारणतया समक और याड टी-मा-नयाड क बाच क प्राता म
 ही पान क इतिहास का जोर उमकी सम्पत्ता का निर्माण हुआ। नयिया क
 जा के कारण चान भारत का तरा वृषिप्रधान स्य है और उमका सम्पत्ता वृषि
 मूलक है।

चान क समरी तट पर बून-म जाउ बरगात ह जोर वर्य यात्राएँ प्राय
 प्रमाय म का जाता ह। उगी मुगमता क कारण वर्य की बस्त्रियाँ नयिया क
 नया पर ह।

यद्यपि चीन में गहू, कायले तथा तला का अच्छा मडार प्रकृति ने एकत्रित कर रखा है तथापि आधुनिक युग से पूर्व वहाँ के निवासियों का उस मडार का प्रायः कुछ भी ज्ञान न था। चीन का उत्तरी भाग मध्य कृषि के लिए अधिक उपयुगी रहा।

म्यल रूप से चान चार खंडों में बँटा हुआ है। ह्यांगहो (पीला नदी) और उससे मलग्न नदियाँ की घाटी चीन का उत्तरी खंड है। यांगसी और उमम मन्व-घिन पहाड़ियाँ और नदियाँ की घाटी का ऊपरी भाग दूसरा खंड और उमका निचला भाग तीसरा खंड कहा जा सकता है। चौथा खंड याद टी सी क्याड के दक्षिण का समुद्र तट है। चीन का उत्तर न दक्षिण तक लम्बाई मात्र पाँच हजार और चौड़ाई ५००० किलोमीटर है।

चीन का अपना देश को चंगुओ (मध्य राष्ट्र) कहते हैं। मध्य युग में चीन का पश्चिमी देशों में वह खिताब के नाम से प्रख्यात था। हम में अब भी वह नाम प्रचलित है। भारकापालान उमका नाम के थे लिखा है। चीन का इतिहास अपना विंगिष्ट स्थान रखता है। पुरातन युग से आज तक वहाँ एक ही जाति और एक ही चीनी राज्य चला आता है। चीन मन्ववत सबसे पुराना राष्ट्र है। उमकी संस्कृति भी मिस्र मेमोपटेमिया और सिन्धु घाटी की सम्यताओं की तरह पाँच हजार वर्ष पुराना कही जाती है। समार का जय प्राचीन राष्ट्रों और संस्कृतियों के साथ अधिक संपर्क न रहने के कारण चीन वाला का संस्कृति पर गहरा बर्तन का बहुत कम प्रभाव पड़ा जिससे उनकी संस्कृति की अपनी विशेष रूप रखा और आत्मा न। उमका चीनियाँ का इतना सब है कि वे अपने का औरों से ऊँची जाति का मानन और जय जातियों से खिच रहते हैं और बहुत कम मिलत जुलते हैं।

चीन का इतिहास मा अय दगा का इतिहास की तरह कई युगों में विभक्त है। अनुश्रुति का अनुसार सबसे पहला युग जिस का मतयुग कहते हैं इससे लगभग २८५२ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ जब कि फूमा राजमिहामन पर बठा। उसका वंश ने १७६६ ई० पू० तक शासन किया। उसके बाद अनन्त गांग (घिन) का प्रभुत्व बढ़ा जो ११२० ई० पू० तक चलता रहा। उन दोनों का वंश पौराणिक ढंग का अनुश्रुतियों का मा है। उस युग की घटनाओं का कालक्रम एवं प्रामाणिक और व्यवस्थित ढंग से लिखना सम्भव नहीं हो सका। किन्तु साम्प्रतिक विकास का कुछ पान अवश्य प्राप्त हुआ है। चीन का दूसरा युग चाउवंश की जिसका

संस्थापक बूवांग था, ई० पू० १२२२ में हुई स्थापना से प्रारम्भ होकर २५३ ई० पू० तक चलता रहा। चीनिया के यह पूवज कहां से और कत्र जाकर चीन में बस निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। कोई केस्पियन सागर के समीप से, कोई मुमरिया से और कोई मध्य एशिया से उनका उदगम मानत है। चीनिया के जाने के पूव चीन के मूल निवासी असभ्य और बबर थे। उनका हराकर चीनी ग्राग पींग नदी की घाटी में बस ही जम गये जैसे आय लग पड़ाव और उत्तर प्रदेश में बस गये थे। विजेता सम्वत गे रहते थे क्योंकि अनुश्रुति के अनुसार चन पाग राजा ने सबसे पहले उनका पशुआ की खाल से शरीर ढाकना सिखाया। कालान्तर में उन्हें घर बनाना अग्नि उत्पन्न करना, भाजन पकाना भी जा गया। माराश यह कि विजयी चीना उस समय तक सभ्यता में बहुत नीचे थे। उनके पूव चीन के मूल निवासियों का स्थिति सम्वत उनसे और भी गराव रही होगी। पुरातन युग के चीनिया का समाज सम्वत मातक रहा हागा क्योंकि पिता के नाम में सत्तति का परिचय पहसी के समय से प्रारम्भ हुआ जिसका राजत्व काल २८५७ से २७३८ ई० पू० तक माना जाता है।

चान में पुरातन युग की कुछ अवशिष्ट सामग्री तो मिली है किन्तु वह इतना कम है कि उसमें बड़ा का सभ्यता का प्रारम्भिक साक्ष्य का टीका-टीक पता नहीं लग पाता। चीनिया की अनुश्रुतियों के अनुसार उनका सभ्यता यदि लाखा वर्ष पुराना रहा तो अठारह या बीस सहस्र वर्ष से भी अधिक पुराना है। कई राजा १०००० वर्ष तक राज्य करत रहे। किन्तु उनके अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं मिलता। 'ब्रमावण्य' की कमी का पूरि उनके ऐतिहासिक जयवा प्राचीन स्मृतियों के मग्न करत है। मग्न प्राचीन सभ्यत चान के प्रसिद्ध तत्त्ववत्ता कल्पसिद्धि के (५ १-६० २० पू०) मिलता है। उसमें अनुसार दसा से तीन महस्र वर्ष पूव चान में सामाजिक और राजनानिक मग्नन ही चका था। चानी अनुश्रुति के अनुसार मग्न पत्त तान महापुण्या और उनके पत्तान पांच प्रतिष्ठित राजाओं में २६०३ से २२२ २० पू० तक राज्य किया। वे मभा पौराणिक युग के जाण्य राजा थे। उनके राज्यका में मभा युग और मग्न प्रकार में सम्पन्न थे। राजाओं में अग्नि मग्न थे। वे चान का मग्न युग था।

उन आण्य राजाओं के मग्न में 'गननग' (२७३३ २० पू०) में चानियों का मग्न करना गांधा में बमना और कुछ माघारण जीपधियों का मग्न सिखाया। उमा मग्न का एक प्रसिद्ध राजा दागनी था। (२६०३ से २५८ २० पू०) जिमने

पराक्रम और मगठन की योग्यता के कारण चीनी लोग उमका अपने वंश का मस्थापक मानते हैं। उमने कम्पास, गौका गाड़ी, धनुष-बाण तथा बाम के बने बाद्य-यंत्रों का आविष्कार किया। कहा जाता है कि उसी ने मंत्रिया और निरीश्वरों की मजसे पहल नियुक्ति की। उमकी रानी ने रंगम के क्रीडा से कपड़े बनाने का आविष्कार किया। उसके वंशजों ने लेखन-कला का व्यवस्थित रूप दिया। राज्य का नौ प्रदत्तों में विभक्त कर प्रत्येक के गणन की व्यवस्था की।

पुरातन चीन का अनुश्रुति के जामार प्रतिष्ठित जय राजाजों में याथा और शासन विधेय रूप से रयानि प्राप्त हुए। शासन विधान में उन्हां कई सुधार किये। उनका समय से राजमहिमान्त का उत्तराधिकारी राजा का पुत्र ही हान लगा। फलतः जागे चलकर राजे शासनोक्त से रहने और भाग विलाम में काल यापन करने लग। मंत्रियों की सख्या दस और प्रान्तों का बारह कर दी गयी। प्रत्येक प्रान्त में एक राजकुमार नियुक्त किया गया जो वहां के शासन का निरीक्षण और गठन करे। राज्य की भूमि पर राजा का अधिकार स्थापित हुआ। किसानों का उम पर खेती करने की आज्ञा बही दना था। उमके लिए कृषकों का कर दना पड़ता था। राजा सरदारों मंत्रियों विद्यालयों एवं शिक्षकों के खर्च और निवाह के लिए जमीन देना दी गयी। राज्य के जमींदारों की सरया दस महल थी। दंड विधान कठोर किन्तु निश्चिंत था। उपयुक्त दानों राजाजों के शासन काल में शिक्षा मंगीत साहित्य और शासनिक प्रबंध में अच्छा खामी उत्पत्ति हुई। लाह का गला और गलकर चीज बनाना मा उमा युग का दन माना जाती है।

उम युग के समाप्त होने पर ताम्रयुग का प्रारम्भ हुआ जिसका प्रवर्तक यू नाम का राजा हुआ जो ह्यदया बश का था। उमके वंश २२०५ से १८१८ ई० पू० तक राज्य किया। इन दानों बश के राजत्व काल में चीन में विवाह पितृ पतामहिक दाय तथा जयाय सामाजिक संस्थाओं का निर्माण हुआ। उन्हीं के मत्व में शासन एवं काल का व्यवस्थित जंत्री जग्नि प्रकट करने की विधि गहन-निर्माण कला कृषि जोषधिया के गुण बाद्ययंत्रों की रचना नौका निर्माण नाप जाय के विधानों लेखन-कला रंगम शिक्षा आदि अनकानेक विषयों का नान लागों का प्राप्त हुआ गया। पीली नदी का अदम्य बाढ़ का नियंत्रण करने के लिए बंद नहरें बटवा दी गयी जिसे जनेक प्रदत्तों का लाभ हुआ।

चीन के पुरातत्व का इतिहास कमबद्ध नहीं मिलता। इसीलिए उसका

मध्ययन सांस्कृतिक युगा के अनुसार किया जाना अनिवार्य था है। वहा समयकत
 ीटुम्बिक प्रथा प्रचलित थी। व्यक्ति का जीवन कुटुम्ब के हित के लिए माना जाता
 था। अतः व्यक्ति क कर्तव्य और जाचरणा पर जोर दिया जाता था।

प्रागतिहासिक काल में चीन में आठ मुख्य जनसमूह थे जिनका रहन सहन
 एक सा न था। उत्तर पूर्व प्रांत में जिसके अंतगत आजकल होपी, शतुंग और
 शिखी मचूरिया ह तुंग्स लाग रहने थे जा शिकार तथा कुछ कृषि क द्वारा अपना
 जीवन निवाह करते थे। उनक मिट्टी के बरतन माटे और भड़े थ। आगे चलकर
 पुजरा का पालना उनका विशेष व्यवसाय हो गया। दूसरे थे व लोंग जिनका निवास
 प्यान आधुनिक शांजानसी प्रान्त तथा मंगालिया का भीतरी भाग था। व शिकारी
 लोग पशु पालने वाले भ्रमणशील (धूमककड) लाग थे। व सब मंगोल जाति
 के अन्तगत थ। तीसरे लोग उत्तर पश्चिमी प्रांत के निवासी थे। समस्त उसी
 भूभाग में शाआसी और कानसू के मगन ह। आरम्भ में व मंगयाजीवी थे, किंतु
 बाद का भेद और जुआर की खेती भी करन लगे। वे ही लाग तुर्कों के पूर्वज थे।
 चौथा समस्त कासू और शाआसी के पहाडी भाग तथा जचवान में था। ये
 ही लाग तिब्बत वालाके पूर्वज माने जात ह। भेडाक शडाका व पहाडी पर चरात
 फिरत थ। चीन के दक्षिणी भूभाग में भी चार जातिया थी जिनमें जाग्ने एगिवाई
 रक्त का मिश्रण हुआ। एक थे तिब्बत जाग जा मभ्यता की बहुत नीची श्रेणी
 में फसे रह और गिआरिया की लंग से ऊपर न उठ सके। उनके पूर्व में याआ
 लोग थ जा गिआर के सिवा कुछ खेती भी करत और पहाडिया में रहते थे। काला
 काल में उनका मिश्रण तिब्बत के ताई मभ्यता वाला से हा गया जिनका मुख्य व्यव
 साय कृषि था। व ही लाग म्याम वांग के पूर्वज माने जात ह। उसी प्रकार याआ
 और ताईया जातिया के मिश्रण में एक समस्त यचिया का उत्पन्न हा गया जा दूणा
 जातिया में फल गया। उपयुक्त जातिया में आग्नि तुर्कों तथा ताईया का मभ्यता
 लोग के मकासि में कुछ अच्छा था।

उपयुक्त समूहों के आग में मभ्यता तथा मभिमिश्रण ज्ञान से सस्कृति का स्तर
 ऊंचा हा चला। उदाहरण के लिए पश्चिम में यागगाआ मभ्यता के युग के
 मभ्यता लाल और काली मिट्टी के वन उच्च सुन्दर पाथ मि ह जिनका गायक
 गौश में स्तन वाता न बनाया जागा। व आग पचयरा के जोआर बनात थ क्याकि
 उनका लंग का पान न था। समस्त र्म्या के मान मौ वष पहाड उनका काँग
 का भा पान न था। यागगाआ मभ्यता में तिब्बतिया का अधिप प्रभाव तिब्बत

पड़ता है किन्तु तुर्कों का भी उसमें हाथ था। इसा से दो हजार वर्ष पूर्व वह सम्यता चीन की उत्तरी और पश्चिमी पहाड़ियों में प्रचलित थी।

मम्मिथ्रण से उत्पन्न द्मरी उल्लेखनीय सम्यता लुगान के नाम प्रसिद्ध है। उसका प्रचार गाँवा में बसकर खेती करने वाले लोगों में था जो आधुनिक गान्तुग, कियामसू, चेकिआग आदि प्रदेशों में निवास करते थे। व मुरयत ताई और याआ कुटुम्ब के लोग थे। उपर्युक्त दोनों प्रमुख सम्यताओं का संगम शाआन्सी और पूर्वी होनान में हुआ। कुछ लोगों का अनुमान है कि याआ और शुन सम्यता का ही आगे चलकर राज्या की सभा दे ली गयी वन्तुत वे राज्य नहीं बरन सम्यताए थी।

ईसा के पूर्व १८०० से १४०० वर्ष के बीच दक्षिण चीन से उत्तरी चीन तक तुर्का द्वारा कासे का अच्छा प्रचलन हुआ। ईसा पूर्व १८०० से १५०० के बीच में ही अनुश्रुति के अनुसार हासिया के राजवंश का उत्थान हुआ था।

पुरातत्व के अनुसंधान ही उपयुक्त धारणाओं के आधार हैं। कल्पयूसिअस के युग में माच काल तक प्रचलित अनुश्रुतियों के अनुसार पुरातन चीन का जो चित्रण किया गया है वह भी कुतूहलवर्धक है। समझ है उसका भी कुछ आधार है। चीन वाले साधारणतया उन अनुश्रुतियों में विश्वास रखते हैं इसीलिए तदनुसार सभित इतिहास यहाँ बना अनुचित न होगा।

पुरातत्वशास्त्र के अनुसार प्रस्तर ताम्रयुग में चीनी लोग मिट्टी के सुंदर बरतन बनाते और उनका कठपुष्प रंगीन चित्रकारी में सजाते थे। बरतनों पर कई प्रकार के रंग चढ़ाये जाते थे यद्यपि लाल रंग का प्रधानता रहती थी। वे लोग कृषि करते कपड़े बुनते चटाइयाँ बनाते थे। उन्हें सुअर पालन का शौक था क्योंकि उनका मांस बखाने में। यद्यपि उनका चक्का पान था तथापि पहिया के विविध प्रयोग का कोई सतोपजनक प्रमाण नहीं मिलता। उस युग में मत्क सस्कार का खासा विज्ञान बन गया था। मत्क प्रायः किसी ऊँच स्थान पर दफना दिये जाते थे। अनुमान किया जाता है कि प्रस्तर ताम्रयुग का सम्यता २५०० से २००० ई० पू० तक प्रचलित रहा। कुछ पुरातत्वशास्त्रियों का विचार है कि उन्नीसवीं युग अथवा उसके आस-पास वहाँ लेखनकला का भी सूत्रपात हुआ गया था। यह कहना अनावश्यक-सा है कि यह लेखनकला स्वतंत्र थी। उसकी उत्पत्ति शांग युग में अच्छी हुई।

कुछ आधुनिक अबका का विचार है कि १०० ई० पू० तक का चीनी सम्यता का इतिहास आनुश्रुतिक कल्पनात्मक और अत्यन्त सन्दिग्ध है। प्राग

तिहासिक युग की चर्चा ६०० ई० पू० में आरम्भ हुई और तब से धीरे धीरे उगका अतिरिक्त विवरण बढ़ता गया। चाओ का सम्बन्ध मन्थन पत्र पत्र माच युग (सप्तहवा शती ई० पू०) में किया गया। वस्तु १०० २० पू० तक चान में बर्तन व्यवस्थित मन्थना नहीं। उम युग में चाओ में विभिन्न जानिया आर सम्कृतिया का दौर-पौरा रहा। हाँ १००० ई० पू० में उन मन्थना मन्थनप्रण और समाहार आरम्भ हुआ जो उत्तगत उन्नति करता चला गया।

शागवत

शागवत का युग दसा के पूर्व १७६६ से ११५६ अथवा १६० से १०० तक माना गया है। वस्तुतः उमा युग से चान के पुराने इतिहास का घुघला रमा त्वाड पडने लगती है। तत्कालीन चान का मुख्याधार प्रायः वह मामशी है जिस चीन के सुविख्यात तत्त्वज्ञान के प्रयोगों में एकत्रित किया था। पुराने चान का खोजने का उम पर कुछ प्रकाश डाला है। शाग मन्थना उपयुक्त मन्थना की ही एक शाखा-शाखा थी। उत्तर-पश्चिम हानान और शाओमा पहाटिया का तराई से मदान तक उमका शक्ति विकास हुआ।

शाग युग में नगरों की स्थापना हाता रही। नगरों का रक्षा उनकी चहार दीवारी करती थी। नगर के मध्य में राजा का भवन हाता था जिसके आस-पास कारागारों की बस्ती बनायी जाती था। सरलरों के बाद नगर में कारागारों का स्थान लिया जाता था। हथियार बरतन तथा काम का काम, वहाँ अच्छी उन्नति पर था किन्तु उसका प्रयोग अतिरिक्त धार्मिक कामों में हाता था। साधारण जीवन में चीनी मिट्टी के बरतन से काम लिया जाता था। यद्यपि उम समय तावा टिन जस्ता चांगी और लाहा में जयवा कई धातुओं का मिलकर चीज बनाना शाग जानने से तो भी महगी होने के कारण धातुओं का चान में अधिक प्रचलन नहीं मका था। धातु के मिक्का का मलय उसके बजन के अनुसार निर्धारित हाता था। रंगम पदा करन का चान पहले से उत्तरी चीन में चला आता था। शाग युग में रंगमी बनाई के काम में अच्छी उन्नति की। रंगम के सिवा सन और छाला के ततुओं में भी कपडा बनाया जाता था। उन के होने का बहा कई प्रमाण नहीं मिलता।

शाग युग में लखन-कला का प्रचलन हुआ। लखन-कला चित्रात्मक था किन्तु उनमें उच्चारण का कुछ विधान किया गया। दो हजार से भी अधिक चित्रित

विह्वलन गये थे जिस साधारणन लोग का काम चल जाता था। खया तो हट्टी पर भयवा बहूआ की पीठ की पपी पर लिखे जात थे। हजा की मय्या में वसे लेग आज तक पाये जान ह।

अनुमान किया जाता है कि उम युग में वहाँ का समाज कुछ अगा में मातक प्रया के अनुमार रहा हागा। व लग अनेक देवी-देवता मानत थे, जिनके रुपगुण स्थान-स्थान पर विभिन्न थे। मरसे प्रमुख देवता का नाम शगती है जिसका रूप मनुष्या का सा मपिन किया गया था। वही मजनहार ह उसी न वनस्पतिया पगुजा तथा मनुष्या का उत्पन्न किया आर उनका मरणण किया। शगती ने ही घन्ती माता म उन भव का जाघान किया। कालातर म वह घरती से जुदा होकर जाका मे चगा गया। किन्तु वर्षा करक वह पथी का सदा गर्भित करता रहता ह। कुछ भ्रान्ता म यह मा विश्वास प्रचलित था कि प्रारम्भ में एक त्रिनाड (त्रह्याण्ड) था जिसमें प्रथम देवता का जन्म हुआ। उमका गरीर पथी अवयव पवत और घाटिया का वनस्पति ह। उमक सिवा पवता ननिया, बादला, कृपि त्रिजली वायु आदि के देवता हैं जिनका पूजन करना चाहिए। देवी-देवताआ का सतुष्ट और म्वानुक्क बनाने क लिए बलि चढाना आवश्यक है। कभी-कभी जावश्यकता क अनुमार मनुष्या की भी बलि दी जाता था जिसके लिए युद्ध क बन्दी लग और जबरन पकडे भूल मटक परलसा मनुष्य काम आत थे। मद्य चढाकर नाचना-गाता मा पूजन का अग था। त्वताआ क सिवा उम युग म पूवजा की भी पूजा की जाती थी। लागा का विश्वास था कि मत्यु के बाल व परलोक में रहते ह। सतुष्ट जयवा जसतुष्ट हान स व लाभ या हानि पहुचाते ह। उनका प्रसन्न करने का भी गमग वही ढग था जिसस त्वता प्रसन्न किये जात थे। कभी-कभी ता मौ पगआ का बलि चढाने पर ही पुरस्व प्रसन्न हा सकत थे।

गाग युग में हाथी घाणे बल, भेड मुर्गी सुअर और कुत्ते पाल जाते थ। हाथी आर घाडे गायल रय म जात जात थे। पगुपालन क जलावा कृपि का भी अच्छा विस्तार हुआ जिसका एके कारण अच्छे हग का प्रचार हा सकता है। मक्का वाजरा, चावल का खेती अतिक हाती था। वाजर म घनी शराब का माग नागरिक में बढता जाती थी।

गाग राज्य क राजा का उपाधि ता थी जिसका प्रयाग दशार्दिव के लिए भी हाता है। इ मम यह अनुमान किया जा सकता है कि घग राजत्व और देवत्व का सम्बन्ध मान सा लिया गया था। फन्त राजा ही राज्य का मुख्य धर्माध्यक्ष

भी था जिमकी महायता अथवा सवा करन क लिए कई पुराहित नियुक्त किये जाते थे। राज्य के मुख्य प्रांत का वही गामन करता था, किन्तु अन्य प्रांतों में मामत लोग राजा का अपना अधिपति और धमाध्यम मानते हुए भी एक प्रकार से स्वतंत्र गामन करते थे। पुरातन चीन की सामन्तशाही की यह पहली झलक नहीं जा सकती है।

गांग युग के मध्य काल में तुर्कों और मगान्त न राज्य पर अधिनायिक दबाव आने प्रभाव डाला। वे लोग अपने साथ सितारा की पूजा और घाडा से खींचे जान वाले पशुओं के रख लाये जिससे वहाँ की युद्धकला में महत्वपूर्ण परिवर्तन होने लगा। राजा तथा उनके सामंत जो रख और घाटे रख सके साधारण नताजा में प्रबल हो गये। उन लोगों ने अपने नये साधना द्वारा अपना अधिकार-क्षेत्र बढ़ाना शुरू कर दिया जिससे राज्य क्षेत्र का अच्छा विस्तार हुआ। कान्तर में प्रबल सामंत गांग तथा जीत हुए प्रदेशों के लोगों में स्वतंत्र हो जाने की प्रेरणा देने लगे। उधर राजा लोग भी ऐंगोआराम के गिनार होने लगे। राजवंश के विराधियों में हुए आक्रमणकार प्रबल होत जाते थे। ऐसी परिस्थिति में चाऊ वंग के एक राजकुमार ने प्रजा का उत्तर अपने हाथ में लेकर गांग वंग में राज्य छान लिया (११२२ या १०५० ई० पू०)।

चाऊ वंग (११२२ ई० पू० में २५५ ई० पू० तक अथवा १०५० ई० पू० से २४७ ई० पू० तक)

कुछ विद्वानों की धारणा है कि चाऊ वंग वस्तुतः तुर्कों का था। जारम्म में उनकी स्थापना में तुर्कों के मित्र निरन्तर गांग में रहते थे। उनके राज्य पर तुर्कों के अन्य कर्तव्य न एमा प्रभाव डाला कि उनके गांग राज्य में शरण देने लगे। फलतः उन पर गांग सामन्तों का गहरा रंग बढ़ गया। उनकी शक्ति उनके मगदन के साथ बढ़ती गई कि चाऊ गामक व-बाग ने पींगी नदी पारकर गांग राज्य पर चढ़ाई कर दी। तब वे तब हुआ कर्णमाय युद्ध करन के कारण गांग राज्य शोण हो गया या कर्णमाय व-बाग को उस पर आधिपत्य जमा करने में आसानी हो गया।

व-बाग के सामंतों ने प्रमुख मगम्याएँ उपस्थित हुईं। पहली थी राज्य के दक्षिण मगदन का जिसमें गान्ति स्थापित हो गये। दूसरी मगम्या थी राज्य के उत्तर के बाग के बढ़ाने की जिम्मेदारी हुआ आदि आक्रमणकारियों का दमन किया जाय।

उन समस्याओं का हल करने के लिए उसने कई सुधार किये। उसका सबसे महत्वपूर्ण काम सामन्ता का सगठित करना था। सामन्ता की उमने पांच श्रेणियाँ बनायीं। सबसे ऊँची श्रेणी के मामन्ता का उसने लगभग तीस वग मील के क्षेत्र का शासन सुपुद्र किया और उमस नीची वाले का मोल्ह या मत्रह वग माल का क्षेत्र दिया गया। मामन्त प्रायः चाऊ वग स चुने गये थे किंतु उनमें म्यानिक् तथा उन सरगारा का भी स्थान दिया गया जिमने चोड वग का आधिपत्य स्वयं स्वीकार कर लिया था। सामन्ता का अपना अपनी जागोरा व मरक्षण और शासन का भार सुपुद्र कर लिया गया। सामन्त अपनी अपनी गढा में रहते थे। गढी के जाम पाम सना का पडाव हाता था जा वहाँ से कुछ दूरा पर रहता थी। सामन्त राजा को कर, भेंट तथा सनिक सेवा देता और उसका अपना अधिपति मानता था। राजा ने करीब ३३५ वग मील का प्रदेश स्वयं अपने लिये रख छोडा था। कहा जाता है कि राज्य का दासा दम रियामत ना प्रदेशों में विभक्त थी। प्रत्येक प्रदेश करीब ३३५ वग मील का था। स्वरभित्त प्रदेश का शासन राजा अपने कमचारियाँ द्वारा करवाता था।

जारम्भ में साम्राज्य के छोटे-बड़े सामन्ता की संख्या एक महत्त मात सा तीन थी। उनके अलावा देश के अन्य भागों में पनाधिकारियाँ की नियुक्ति की गयी थी जिनका काम पांच दम, तीस या दासौ दम बस्तियाँ तक के समूहों का निरीक्षण करना था। सामन्त विधान से एकता यह लाभ हुआ कि सामन्ता का अपनी-अपनी जमींदारियाँ की रक्षा करने की स्वाभाविक उत्तेजना मिली जिससे साम्राज्य की रक्षा का भार सम्राट के सर से कुछ उतर गया। दूसरी यह कि सामन्ता और उनके क्षेत्रों के निवासियों में घनिष्ठ एवं स्थायी सम्बन्ध स्थापित हुआ गया जिससे शान्ति तथा रक्षा के कामों में पारस्परिक सहयोग सहानुभूति और श्रद्धा विश्वास की वृद्धि हुई। इससे सामाजिक सगठन अधिक दृढ़ हुआ और राष्ट्र की शक्ति बढ़ गयी। सामन्ता में परस्पर तथा बंबरो से निरंतर युद्ध होते रहने के कारण सठी शती (ई० पू०) तक चीन में व्यथस्थित सेना-मचालन कवायद अनुशासन विधान व्यवस्था तथा युद्ध-कौशल की अच्छी उन्नति हुई गयी।

सामन्त शासन का प्रायः सबसे बड़ा दोष यह हाता है कि सामन्ता में स्वच्छन्दता म्पथा तथा उच्छलता बढ़ जाती है जिससे वे कभी-कभी अत्याचारी और उपद्रवी हो जाते हैं। इस दोष का निराकरण करने के लिए चीनी सम्राटों ने दा प्रबंध किये। पहला यह कि सामन्ता व शासन का निरीक्षण करने के लिए उमने अपनी ओर स

मन्त्री को युद्ध विभाग और मन्त्री का दंड विभाग और सिंगिर मन्त्री का साधारण गामनवाय मुमुन किया गया। उस युग की धारणा ने अनुमार आकांग म तीन सौ माठ नभप्र मान जान थे। तनुसार प्रत्येक मन्त्री क विभाग म साठ-साठ बम धारी नियुक्त कर दिये गये जिनका जाण तीन सौ साठ हुआ। इस प्रकार आकांग और नभप्र क अनुरूप रागा और उमरा कनाय गामन जन गया। पहल राजा का भारा दण्डवा था किन्तु जाग चलनर मामना न एतनी गकिन उहा गी कि व उमकी बराबरी करने लगे। फिर भी राष्ट्रीय याग का अधिकार राजा के ही हाथ म रहा, बहा प्रमग घर्माध्यक्ष रहा।

चाऊ गामन म वृषि का भी व्यवस्थित प्रबंध किया गया। एक बग ली (१/३ माल) का नौ भागा मे बाँट कर आठ भाग प्रजा का लिये जात थे और नवाँ भाग जा प्राय बीज का क्षेत्र हाता था राज्य क लिए रक्षित रहता था। उस प्रथा का चिग ति एन विधान महन थे। चीना चिह्न क अनुमार क्षेत्र विभक्त किय गये। टुपक आग बारी-बारी स पहल राजा का भूमि की जातार्द मिचाइ करन फिर अपने खेता में काम करने थे। खेता म हरफर कर विभिन्न फसलें पला करने का उत्तजना दी गयी जिससे फलवार बढ़ गया। वृषि का घट रहस्य धराप का आधुनिक युग क आरम्भ तक पालन हा मना था। क्षेत्र का अधिकार पचीम वष की उम्र वाल वृषक का दिया जाता था जा पतीस वष तक उस पर खेता करता। माठ वष की उम्र पूरा हा जाने पर क्षेत्र उससे लेकर दूसर युवक का द दिया जाता था। वडा क भरण-यापण का जिम्मनारी सम्भवत राय की होती थी। यतीमा, जगला गुगा बहुरा और पागला का भी उसी प्रकार पालन-यापण किया जाता था। भूमि पर किसान का पूण अधिकार सम्भवत चाऊ राज्य के अन्तिम दिना में स्थापित न हुआ हागा। उपयुक्त व्यवस्था क मिवा चाऊ राजाआ ने दलदला का सुगाकर, नहर खुदवानर और बेकार जमीन का वृषि के याग्य बनाकर वृषि का अच्छा विस्तार किया। उमी युग में (सम्भवत पाचवी शती इ० पू०) धातु के मिक्का के प्रचलन स यापार न भी अच्छा उन्नति की जिससे नये-नये नगर स्थापित हात गये। फलत ग्राम्य जीवन क स्थान पर नागरिक जीवन सम्बधी व्यवसाय यापार और आचार विचार के नये शक्तिशाली तथा मस्थाआ का विकास होने लगा।

चाऊ काल में व्यवसाय न भी अच्छी उन्नति की। एकडी धातु घमडे रगमाजी गेहारी स्थापत्य आदि क कामा में अधिक मफाद तथा उन्नति हुई।

ध्वंसमाया की वृद्धि में नगरों का मरना बढ़ने लगे। उद्योग पत्र उस समय बगल नगल थे। नागरिक जीवनाय्या व कारण शिष्टाचार और मर्यादा का अधिार विकास होना था। त्रय त्रित्रय म तीव्र व गिरा। रगम व कपण। मान व टुन। माती एव रत्ना ग काम शिया जाता था।

चाऊ मुग म उत्तराधिकार की नयी परिभाषा ली। उमर पहलू मार उत्तराधिकार शाना था किन्तु मघाट व त पुत्र का उत्तराधिकारी निर्धार कर शिया और सामाजिक तथा राजनीतिक धारा में उग प्रथा का पानु कर शिया। मार तीव्र परम्परा की तरह चीन में भी कुटुम्ब का मगटन अमरिभवन जयरा मयका था। चानी जीवन में कुटुम्ब का बडा महत्त्व और मग्मान था। पल्लव गृहपति तथा महत्तर कुटुम्ब अर्थात् शप्ट व पनि मघाट का भी बडा आन्तर और मग्मान होता था। कुलपति का वत य था कि मर आश्रिता का मरण-यापण म्मह मर यायपूर्वक कर। बीटमिन्व जीवन का पुष्ट तथा मभर बनान व शिष्ट त्रिनय एव शिष्टाचार व नियम व साच त्रिचार आर वारीकी व माय निर्धारित किय गय। म्मवा मग्रह चाऊ ला नामक ग्रथ म है।

चाऊ राज्य का दण्ड विधान कठार था। जुर्माना अग विच्छल जस नाक पर अण्डकाप आदि कटवा देना चहारा विकृत करना और मत्व म्म दना प्रचलित था। कमा-वभी दण्ड के वल्ले जुर्माना ले लिया जाता था।

अनश्रुतिया क जनमार चाऊ यग म शिक्षा के प्रचार के लिए अच्छा प्रयत्न किया गया। पचीस शामीण कुटुम्बों के लिए एक प्रारम्भिक पाठशाला थी। माध्यमिक शिक्षा के लिए एक पाठशाला प्रति पाँच सौ कुटुम्ब के लिए स्थापित की गयी थी। उच्च शिक्षा के लिए उत्तरात्तर मन्स्व की तीन प्रकार की पाठशालाएँ स्थापित थी। दार्द हजार कुटुम्बियों के नगरा म एक शिक्षालय था। बड नगरा म उममे भी उच्च शिक्षा के और राजधानी म सर्वोच्च विद्यालय प्रतिष्ठित थे। छ से जाठ वष तक की उम्र स बालक की शिक्षा का आरम्भ होता था और बीम वष की उम्र तक वह चलती रहती थी। सबसे पल्ल विनय जाचरण शिष्टाचार तथा नतिकता की शिक्षा दी जाती थी। तदनन्तर बाण विद्या समीत रथ-सचालन गणित एव साहित्य का स्थान था। बालिकाओं की शिक्षा दस वष स बीस वष तक होती थी किन्तु वह घरा मे ही दी जाती थी क्योंकि बाहर जाना अनुचित माना जाता था। उनकी शिक्षा में मघर बाणी विनीत व्यवहार जग सचालन शिष्टाचार आदि की शिक्षा के साथ ही साथ खाने-पीने की चीजें बनाने और उह

रखने का ढग सिखाया जाता था । रेगम तथा छाला के तन्तुआ के धागे बनाकर उनसे वस्त्र बुनना भी सिखाया जाना था । साराग यह कि स्त्री शिक्षा का ध्येय पुण्या की शिक्षा से मिद्धात एव व्यवहार में मित्र था ।

चोऊ युग में पद्य और गद्य में साहित्य की सृष्टि हुई । उसकी कविना में व्यंग प्रेम प्रसंग, उत्सवा और विनोद अवमरा पर गाने योग्य गीत आदि का गार्दचिग नामक एक सग्रह अब तक विद्यमान है । गद्य में अनुश्रुतियाँ गाथाएँ राजकीय कारनामे कानूनी फमल भूमिदान के पत्रे आदि मिलते हैं । गायन सम्बन्धी ममाचार आनाएँ वित्त सम्बन्धी भौगोलिक विवरण एव राजनीति सिद्धात भी गद्य में लिखे जाते थे । उनका आंगिक सग्रह गूचिग नामक ग्रन्थ में अब भी विद्यमान है । लेखक सामयिक घटनाओं का कालक्रम, तिथि तथा तत्सम्बन्धा व्यक्तिया के नाम-महिन लिपिबद्ध करते थे । उनमें हमें तत्कालीन इतिहास का थाडा-बहुत ज्ञान प्राप्त होता है । चाऊ युग की अंतिम गतिया में चीन का ईरान तथा यूनान से साराय की सीमाओं के विषय में सम्पर्क हुआ जिसे गणित तथा ज्यातिष की जार चीनीया की उत्सुकता बटने लगी ।

ससार के ज्ञानिक इतिहास में छठी शता अपूव महत्त्व की मानी जाती है । इस गती में भारत इरान, यूनान की तरह चीन में भी दार्शनिक विचारधारा प्रवाहित हो उगी थी । गाय युग में उसका सूत्रपात हुआ और चोऊ युग में उसका सबद्धन जाना रहा । चीनीया का विश्वास था कि जगत् सभी शक्तिया से भरा हुआ है । अनेकानेक प्रचार के देवता और देवियाँ विश्व में विद्यमान हैं । गह येन नदी नाल जल-थल-नम जहाँ देखा उनकी मत्ता दिवाइ पडती है । उनके अलावा पुग्वा की भी जलथल रूप में मत्ता है । सारे देग के विश्वास और धारणाए मलत एक-सा हान हुए भी कल्याणामक एव व्यावहारिक दृष्टि से परस्पर मित्र और विविध प्रकार की थी । देवी-देवताओं का शक्तियाँ और क्षेत्रों के विषय में भी मित्रता थी । कई देवता बहुत बडे और कोई छोटे गिने जाने थे । यद्यपि बडी महत्त्वशाली देवी शक्तिया में पथ्वी और आसमान की गिनती थी तथापि सर्वोपरि शक्तिमान तीतिएन अथवा गायता माना जाता था । जगा का विश्वास था कि बिना दैविक शक्तिया की सहायता के मनुष्य को सफलता और सुख नहीं प्राप्त हो सकता । इसलिए उनका तुष्ट करने के लिए धारण एव कर्मकाण्ड प्रचलित हुए । पूजा में अन्न मास और नर की भी बलि दी जाती थी । चीनीया में लिंग पूजा भी प्रचलित थी । चोऊ युग में ही उपयुक्त विज्ञान में सुधार जान लगे थे । यथा की

श्रीमत्सता बहुत कुछ दूर हागयी और लिंग शब्द की माधारण परिभाषा का रूप होकर उसे नवीन और लापरहित रूप दिया गया। पूजना का पूजन प्रायः मन्दिरा अथवा घर के पूजा-गृह में होता था। देवी-देवताओं और शक्तियों का पूजन नगरों के समाप्त मदाना में बंदी बनाकर किया जाता था जिसमें अधिक जनता समा गृह में एकत्रित हो। चीन में पुराहित न थे। गृहपति अथवा राज्याधिपति ही पूजा करवाना था। उमकी सहायता के लिए उच्चकुल के यज्ञित जा विधि विधानों से अच्छा तरह परिचित होने से बुला लिये जाते थे। कभी-कभी देवी या देवता किमी व्यक्ति पर चाहे वह पुरुष ही अथवा स्त्री चढ़ आता था जिससे उसका भावों का आशान हो जाता और उस वह धारित कर देता था।

चाऊ युग के सैनिक संगठन का भी अपनी विशेषता है। राज्य के भीम से साठ वर्ष के प्रत्येक पुरुष को सैनिक गिनना एक या दो वर्ष के लिए अनिवार्य थी। राज्य का जनसंख्या अनुमान न बरीर इक्यावन लाख था। प्रति पाँच से बारह घरों तक से चार घाड़े एक रथ तीन सारथी बहत्तर पदाति पचीस कायबाह्व और बारह बल लिये जाते थे। इस हिमाज में चालीस सहस्र घोड़े दस हजार रथ मान आठ बीस हजार पदल तक सेना एकत्रित हो सकती थी। राज्य की सन्नद्ध मना उममय पचहत्तर हजार थी जो मात्र बारह बारह हजार के छ भागों में विभक्त थी। प्रत्येक भाग का एक बड़ा सनाध्यक्ष नियुक्त किया जाता था इसका अधिकार्य में २५००-२५०० सैनिकों के छ मनायम हान थे। उनसे उतर कर पाँच सौ के छ सरदार होने से जिनके नाम १०० के सरदार हान थे। उनके नतव में पचीस-पचीस सैनिकों के नायक हान थे। अन्तिम दुकाई पाँच की थी। पाँच सौ और उममय नाके के पण प्रायः चिना का प्रदान किये जाते थे।

बना सना रखने का आवश्यकता प्रायः इसलिए थी कि राज्य पर तुर्की और मंगोलों के आक्रमण प्रायः हुआ करते थे। उनके चरामाहा पर चाऊ राजाओं ने अधिकार जमा लिया और रक्षा के लिए वहाँ मण्डियाँ बनाकर मनाए स्थापित कर दी तथा अच्छा-खासा प्रतिरक्षा कायम कर दी। पणन चाऊ राज्य का उनसे संधप गहन लगा। भ्रमणगीत तुर्क और मंगोलों के लिए लट-नरमात्र के अलावा काँ और रास्ता न रहे गया।

चि इन वश (२५५-२०६ ई० पू०)

। वग का मयम प्रसिद्ध पहलू ज्ञाननी और उमका मुख्य मन्त्रा

लीस्मू हुआ। ह्यूगता का मुख्य ध्येय था कि वह सारे चीन पर जा सभार का एक मात्र सम्य महाप्रदग मममा जाता था अपना प्रभुत्व जमा द और पुराने युग की संस्कृति का मूलान्छेद करके नया संस्कृति और सम्यता के प्रबन्ध हाने का श्रेय प्राप्त करे। ऐसा करने से वह स्वत्व प्राप्त कर अपने नाम का सायक करेगा। प्रथम उद्देश्य की सिद्धि के लिए उसने सामन्ता का बलप्रबन्ध अत करके सामन्तगणही का समाप्त कर लिया। उसने साम्राज्य का पचपन या छत्तीस (बाद का ४१ या ५१) प्रांता में विभक्त कर ममें एक-मा सामन प्रबन्ध स्थापित कर लिया। प्रत्येक प्रांत में तीन प्रमुख अधिकारी नियुक्त कर लिये गये। उसा भाति स्थानिक व्यवहारा रिवाजा आचार्य और विभिन्न प्रकार के नापन-जोखने के तरीका का बन्ध कर उसने सर्वत्र एक से जाचार विचार तथा विधान चाल कर दिय। राज्य व सभी किसाना का उसने अपना जमीन पर अधिकार प्तान कर एक जातिकारी मुधार किया जिमका महत्त्व सामन्तगणही का समाप्त करने से कम नहा कहा जा सकता। लिपि शली में मुधार करके साम्राज्य भर में एक लिपि का प्रचलित कर दिया। जाति स्थापित करने के लिए प्रजा में हथियार छीन लिये। दग की रक्षा के लिए चाऊ राजा न चीन के उत्तरी पूव भाग में जिघर से हूणा के जात्रमण प्राय हुआ करत थे जातीवार बनवाना आरम्भ कर दिया था उसे ह्यूगता ने पूरा करवा लिया। दीवार १५०० मील लम्बी है जा मिन्न के पिरामिडा की तरह ससार की महा जाश्चयजनक इतिया में गिनी जाती है। यदि उसमें सभी पन्डियाँ भी जाड दी जाय तो दीवार तीन हजार मील लम्बी ठहरगी। उसके बनाने के लिए तीन लाख सिपाही लाखा कदा और अपराधी दम वप तक लगे रहे। उस दीवार का रक्षा के लिए त्तस्तन किन्ने बजिया जादि भा बनवा दा गयी। दस दीवार के तथा अन्य प्रासादा के बनवाने के लिए सम्राट का कई प्रकार के कर लगान पड। दावार के नारण हूणा के आत्रमण यद्यपि एकत्रम बंद तो न हा सके तथापि बहुत बुड कम हा गये। उसी के कारण हूणा न पश्चिम की आर बढ़ना गुम्किना जिमका अत में परिणाम रोम राज्य के लिए ही नही वरन भारत के गुप्त राज्य के लिए भी विनाशकारक सिद्ध हुआ।

साम्राज्य की व्यवस्था ठीक रखने के लिए उसने अनेक सटके बनवाया। अपन लिए उसने एक बहुत चौडा राजपथ बनवाया जा ह्यूगहा और याड टी सी क्याङ्ग नदिया का घाटिया का मझाता था। उसके दोना आर उसने दबलार के गुदर वक्ष लगवाये। सम्राट का प्रकट या गुप्त रूप से साम्राज्य में यात्रा करने

और राज्य की तथा प्रजा की परिस्थिति का प्रथम ज्ञान प्राप्त करने का श्रेष्ठ था। अगले मिस्र दृग नाम के राजा नियुक्त होने पर मिस्र का भी उगता निरन्तर गया तार मिला रहा था। जहाँ तक सम्भव जाता वह स्थिति सुधारने का प्रयत्न भी करता। डाकुआ और उगदविया का पकड़-भेद कर वह सामान्य प्रजा में सुदन के लिए मजदूरी था। अगले भी साम्राज्य का कुछ परिणाम मिला। मही मही २ ई० पू० में उगन द्वादि है। राजा का राज मिस्र-यूज की आरंभ हुआ और एक महार काट कर दो नदियों का मिला निया जिनमें आज भी मिस्र-यूज एक स्थान में दूमरे स्थान का मजा जा रहा।

उपान सम्मिता का युग स्थापित करने के समय की पूर्ति के लिए उगन यह आज्ञा दी कि विधान अर्थात् विधान ग्यायन बटकर कृषि वनस्पति आदि का पुनरावृत्ति का छाहकर अथ मारित्व विचारण माया अतिहास और नीति आदि के सब कार्य जगत् स्थित जायें। दृग आज्ञा का उगन बनी बटार के माय प्रचलन किया। यह चाहता था कि वनस्पति विषया का छाहकर पुराना अतिहास विचारण का जन्त कर लिया जाय जिनमें नया सम्मिता अवाधित रूप में धन मज। पुरानी सम्मिति की जा प्रणाम करता अथवा नये विधान में दाप बनलाता उग मनुष्य मार डालने की राजा धापित की गया। महा महा पुराना सम्मिति की रक्षा और विचारा की स्वतंत्रता के मजदूरी प्रचारण मान के घाट उतार लिये गये। ही अन्त उमन अवश्य प्रवचन कर लिया था कि प्रमिद्ध पुस्तका का प्रतिष्ठा राज्य के संप्रहास्य में रख दी जाय ताकि आजा प्राप्त करके जिन्जन उनका स्व मज आर व मूर्खों तथा माधारण मनुष्या के हाथ न लग पायें क्याकि व उनका यथाचित आणयन ममचर या ता लकीर के पकीर बन रहग जयवा उनका अरपयाग करग।

कि इन की राजधानी हियनयाग में थी। वहाँ मीला तक उमन महत्ता का निर्माण कराया। दूर रह कर उपद्रव करने से उन्हें रावन तथा राजधानी का सम्पन्न और सबल करने के लिए उसने अमीरा तथा सब व्यक्तियों का राजधानी में ही बसने के लिए बाधित किया और जन्मन वस्तुआ का ठाकर वहाँ अजायबघर स्थापित किया। विजित राजधानिया के महत्ता के नमूना पर उमन अपना राजधानी में भी महल खड कराये। इस प्रकार उस उसी साम्राज्य का प्रतीक लघुचित्र सा बना दिया।

मझाट ह्यागती ने कबल ग्यारह वष तक राज्य किया। पचास वष की अवस्था में उमकी मृत्यु हो गयी। इतने स्वल्प काल में उसने अपनी कमठना, दूरदर्शिता

ता कायकुशलता मे जाश्चयजनक काम कर डाले । उसी के प्रयत्न से चीन देश का चि इन नाम मिला । उसी ने उसकी वह स्तूपरेखा बनायी जिस पर भविष्य में चीन की रचना होती गयी । उसका साम्राज्य उत्तर में ह्यांगहा दक्षिण में अनाम, पूब में समुन्द्र एवं कारिया और पश्चिम में उच्च पर्वतमाला तक था । वह प्रजा का एक सम्यता तथा साम्राज्य का एक शासन के मून में दाघ कर राष्ट्रीय एकता द्वारा सशक्त एक समृद्धशाली बनाना चाहता था । अपनी कृतिया एवं अथय कानि क बल पर वह स्वत्व का सम्मान प्राप्त करना तथा चीन का प्रतीक बनना चाहता था । उसका कामा में विलक्षणता रहने हुए भा उसका ध्येय में महत्ता जसदिग्ध रूप में दिग्गत् दती है । उसकी एकछत्र राज्य की आदत्त कल्पना भी ऐक्य स्थापन क ध्येय से ही प्रेरित-मा प्रतीत हानी ह । यद्यपि लग कई पीढ़िया तक उसकी गिग करते रह तथापि हममें मन्ह नही कि वह ममार क महापतापी और प्रसिद्ध विजयी सम्राटा में गिने जाने योग्य है । उसकी मत्य २१० ई० पू० में हुई ।

ह्यांगहा का विधान कृत्रिम था जतएव उसको चलान क लिए बल का प्रयाग अनिनाय-मा था । उसका कलावा आक कग क लगाये जान क कारण लागा म यथा जसताप था । उसकी मत्य के बाद उसका पुत्र निक्ममा निकला । साम्राज्य में अशांति और विद्रोह की अग्नि भडक उठी और २०६ ई० पू० में चि इन वग के हाथ से लिउपग ने जो मत्यु क बाद काआत्मू के नाम से प्रसिद्ध हुआ साम्राज्य चीनकर अपने हातवग की पताका गाड दी । चि इन वग की स्वगतुल्य राजधानी भग्म कर दी गयी ।

हानवश (२०६ ई० पू० से० २०० ई० तक)

हानवग क सम्थापक लिउची या लिउपग का जन्म पूर्वी चीन के एक किसान क कुडुम्ब में हुआ था । अपनी योग्यता तथा पराक्रम के कारण वह किसान का, जा सामन्तशाही में सम्भवत जन्तुष्ट रह हागे नेता बन गया । उसका भयकर शष्प और युद्ध करन पटे जिनमें उसका निरंतर सफलता मिलता रही । विद्रोही दतने प्रवल हो गये कि उसने चि इन वश आर उसका सामन्तशाही का विध्वंस करके उसकी प्रतीक राजधानी का भी भग्मगत कर दिया ।

काआत्मू=काओती

अनुश्रुतिया क अनुसार यद्यपि पुरातन राजाआ और राजा ने चीन की सम्यता

और सस्कृति का कुछ-कुछ बढि और स्फूर्ति प्रदान की, किन्तु हान वग की वृत्तियाँ पर उनका विशेष गव है। अपन जिले के एक छाटे स सनिक के पद मे बढकर लिउची न अपनी मायता और पुरपाय के बल पर तत्कालीन सामन्ता का परास्त कर दिया। उमक अनुयायियाँ ने २०६ ई० पू० आग्रहपूर्वक उम राजसिंहासन पर बिठा दिया। गामन की डोर हाथ में जाने पर उसने उपद्रवकारिया का क्षमा कर देने की घोषणा कर दी और कठ कानूना का रद्द कर दिया। कनफयूसिअस के इस सिद्धान्त को कि गामन प्रजा के हित के लिए है उसने अपना मूलमन बनाया। राज्य के पदाधि कारिया के चुनने में सावधानी बरती और सदाचारी विद्वाना की आमन्त्रित कर ८०० यथाचित पदा पर नियुक्त किया। यद्यपि उमका गामनतन्त्र चि इन काल का ना था तथापि उसन सामन्ता की उच्छ्रिता और बेद्रोय गामन की कठारता का यथासम्भव कम करन का प्रयत्न किया। उमका ख्याल था कि चि २०० वश का ह्यास सामन्ता के विराय के कारण हुआ। अत उसने पून प्रचलित परिपाटी के अनुसार अपने वश वाला को सामन्ता के पदा पर नियुक्त किया। किन्तु गामन उनन हाथ में न दकर अपने नियुक्त पदाधिकारिया के अधिकार बजावर उक्त सुपु कर लिया। इस मध्य माग न द्विराजकता का रूप ग्रहण किया तिससे यह प्रयाग असतोपजनक सिद्ध हुआ। लिउची या लिउपग की मृत्यु के बाद उमका काआत्मू की उपाधि दी गयी।

हानवग के उल्लेखनाय राजाआ में वेन ती (१७९) ने शामन की आत्तचना के लिए आलाचका का दण्ड दना बल्लमा कर दिया। मृत्यु दण्ड का यथासम्भव कम कर दिया अनेक कर हटा दिये। प्रान्तीय गामनन की जागीरा और अधिभारा का कम कर लिया और यह नियम बना लिया कि गामक की मृत्यु के बाद उमकी जागीर उमके पुत्रा में बाट दी जाय अर्थात् एक व्यक्ति के हाथ में न रहने दी जाय।

हान वू ती (१४० से ८७ ई० पू०)।

हानवग का चरम उत्थप महाराज हान वू ती के राजत्वनाम हुआ। साल्ट वष का उम्र में सिंहासन पर बठा और निरूपन वष तक शास्य करता रहा। राज्य का सामाआ का उत्तर और दक्षिण का आर उमन बठा लिया। यूचियान चान के उनरा परिचमा प्रान्त का छाबकर बुगारा राज्य का म्यापना कर ला। फयन उत्तर पश्चिम चान में हुआ का राजन वाला काइ उरग। यूचियान हान राजा का

जपेशा तत्कालीन उत्तर भारत के राज्य से नीतिक सम्बन्ध स्थापित करना उचित समया ।

बू ती की नीति सामन्त निधान का उपरी ढांचा रखते हुए नियन्त्रण द्वारा सामन्ता की शक्ति तोड़ देने की थी । प्रत्येक सामन्त के पास उसने अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया जो उसे परामर्श देता उस पर निगरानी रखता थार सन्नाट को सब समाचार भेजता रहता था । इसके सिवा उसने साधारण श्रेणी के तीन पदाधिकारिया का नियुक्त किया जा घूम घूम कर सामन्ता के आचरण एवं व्यवहार का निरीक्षण करते और उनके बल को ताडन की तरकीब मुझाते रहते थे । उन्होने एक युक्ति यह सूझायी कि सामन्त के निघन के बाद उसकी रियासत उसने बडे पुन का न देकर सब पुन में बाट दी जाया करे । इस तरकीब से रियासता के खण्ड-खण्ड होते गये । इस युक्ति में यदि कोई दोष था तो यह कि इसकी प्रगति बहुत मद थी और सफलता बहुत दीघ काल म सम्भव हो सकती थी । दूसरा तरीका जो बू न निवाला यह था नये नये ढग क जनक श्रेणिया के जमीर उमरा उत्पन्न करके उनके और पतक जमीरा के बीच ईष्या-द्वेष भटकाये रखने का ।

सम्राट बू की नीति के द्वीय शासन का दबदबा और शक्ति बढाने की थी । उमे वेन की नीति अच्छी न लगी । उसन राजसी ठाट बाट का सबदन करना शुरू किया । चडगन राजधानी की शाना नये-नये महला, उद्यानो, तडागो नहरा पुष्प-बाटिकाओ अजायजघरो चिटियाघरो पशु-शालाया शायामशालाया एवं नाचघरा सवशायी जाने लगी । विजित प्रदेशो से रेशमी कपडो मोतिया, रस्ता और सोने चादी का जा प्रवाह चीन मे आ रहा था उसमे शौकीनी और ऐश-आराम की अपार सामग्री जुटती चला गयी । सिक्के ढालने तथा नमक, शराब और लहू पर शासन का एकमात्र स्वत्व स्थापित करने से भी खूब आमदनी बट गया । चीन के इतिहास में इस युग में यह एक प्रकार के सोशलिज्म का सूनपात होना माना जाता है । इसके सिवा व्यापार भी उत्तरात्तर उन्नति करता जा रहा था । तुर्किस्तान जैसे नये-नये देश तथा नये नये बाजारो म चीनी व्यापारी श्रय विनय करते दियाइ देने लगे । नदी नहरा सबका भागों मनिग यानी विश्राम मयना (मराया) के खुल जाने स जावागमन की सुविधा मभी को विगोपत व्यापारिया और सेनाजा का हां गयी । अकाल पडने की आशका भी कम हो गयी । बू के राज्य काल में मध्य एशिया बकिट्रया तथा बर्मा से सम्बन्ध स्थापित हो जाने के कारण चीन का रोम साम्राज्य तथा भारत और पारस से व्यापारिक तथा सांस्कृतिक आदान

प्रदान होने लगा। चीन का यूरोप और भारत में सम्पर्क ही जाना-बिनाम का एक महत्त्वपूर्ण घटना है क्योंकि उसका प्रभाव समारक व्यापार, राजनयिक तथा सभ्यता पर उत्तरोत्तर बढ़ता गया।

हूणों की समस्या

हियंग नू जयवा हूण विभी विाप जाति का नाम नगी घग्न् यह नाम उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता था जो दक्षिण की तरफ समूह। म चीन का उत्तरी मार्ग पर चीनी दीवार के उस ओर मड़राते रहते थे। उनका जनगत मार्ग तुंग तुंग आदि जनत उपजातियाँ थी। वे जम्मर पान ही भीतर घम पडते थे। जिस भूमिभाग में वे रहते थे उनके प्रति प्रवृत्ति उत्तमोत्त ही नही बरन पिष्टुन र्था। वहा का विधम जलवायु जल्पत बठार गीत और भाजन के नगण्य माघन उनका जीवन रथा न लिए हरे भरे प्रस्था की जार बर चलन के लिए बाधित करत रहत थे। वे बर ऊँटे, मठ जाति पालन थे और घाटा पर चर कर छापा मारत थे। चमडे की पोगक पहनने वाले ये लोग बर सिद्धहस्त घग्धर और लडाक थे। प्रागति हासिक काल में चीन के ऊपर उनकी जवाछनीय एव भयावह छाया पडती रहा जिसका कुछ लिग्शन ऊपर किया जा चुका है। हान युग के उत्तम काल में उनकी शक्ति अपने पूर जोर पर पहुच गयी थी। उनका जाधिपत्य चीनी शीसार के उपरा माग से कस्पियन सागर तक स्थापित ही गया था।

हानयुग के राजाआर जारम्म में हूणा का घन घाय एव निर्या दक्षर मानुष्ट रग्ने की चप्या की किन्तु उससे कोई स्थायी लाभ न जाता दिखाई पडा। इमर जतिरिक्न उहाने यूचिया से मल जोल बढाकर हूणा के दमन का यथासाध्य प्रयत्न किया। चीनी सम्राट वू ने उनका चीनी दीवार के उस पार गदड कर उनका उपनिवगा में जयवा उनके जामपाम अपना प्रजा का बसा दने की नीति का भी जवलम्बन किया। जाठ बप के जन्म (१२७ से ११८ ई० पू० तक) उमन उन पर तानवार चढा की और भयकर युद्ध करके कम सन्धम कुठ काठ के लिए उनका बल तोड दिया। इमर सिवा चीनी तुकिन्तान की बूमन आदि बक्षर जानिया से जिनका हूणा के माय भघप होता रहता था मर बटाकर तथा हूणा में आपमा थगड सटे करके उन्हें दवाये रखने का प्रयत्न किया। धकिट्टया तक अपना नानिक प्रभुत्व स्थापित करके सम्राट वू ने हूणा का रण मध्य एशिया की ओर मात्र लिया।

सम्राट ने अपना विजया से चीन की सीमाएँ तुकिन्तान से चीनी समद तक

और मचूरिया तथा उत्तरी बारिया में बर्मा, अनाम तथा इण्डोचाइना तक पहुँचा दी। हान सम्राट की सफलता का कारण उनकी सेना थी जो रया के प्रयाग का त्याग कर घुडमवारा और पैदल सिपाहियों पर आश्रित की गयी थी। उस बड़े साम्राज्य की प्रजा सुखी तथा मत्तपट थी क्योंकि सम्राट ने जल्द ही चांगुल मृत्यु का नियंत्रण तथा अनाज की संप्राप्ति और विनय व्यवस्थित कर दिया था। व्यापारियों का अधिक भूमि मूल होने जयवा निश्चित मात्रा से अधिक सम्पत्ति जयवा घन एकत्रित करने की बड़ी मनाही सम्राट ने कर दी थी तथा उनकी जामदनी पर पाच प्रतिशत आय कर लगा दिया था। नहर काटकर अन्न उपजाऊ बड़े क्षेत्रों का कृषि के योग्य कर दिया। नयी नहरों और सड़कों के कारण यातायात भी बढ़ गया। राज्य आवश्यक सामान सस्ती में खरीद कर मँहगी आने पर बच देता था। नमक और लोहे का टेका शासन ने अपने हाथ में रखा। सम्बद्ध राजाओं का उद्वेग करने वाला व्यक्ति की जायदाद जप्त कर ली जाती और दण्ड भी दिया जाता। बेकारी दूर करने तथा जुआ घुडदौड आदि व्यमना को छुड़ाने के भी प्रयत्न किये गये, यद्यपि उनमें उन्हे यथेष्ट सफलता प्राप्त न हो सकी। सम्राट स्वयं यात्राएँ करके साम्राज्य तथा प्रजा की परिस्थिति देखता रहता था। उसके समय में चीन के व्यापार तथा मन्थना का अच्छा सबद्धन और विस्तार हुआ।

तब तक भटक, गान शक्ति, सैनिक तथा काप-बन्धन रहते हुए मा उपयुक्त विधान में कोई ऐसा गुण या शक्ति नहीं जो उसे अधिक स्थायित्व द मन्गी। विना सित्तु की वृद्धि होने में यह अनुमान किया जा सकता था कि वह ऐसा सुयोग्य चतुर कमठ शक्तिशाली शासक के अभाव में साम्राज्य की व्यवस्था का टाक रहना कठिना होगा। उसके बाद ऐसा ही हुआ भी। बूक पश्चात योग्य व्यक्ति सम्राट हुए। इन का एक सम्राट वांग मांग ने गुलामी तथा जमींदारों का जत करने के लिए गुणमा का स्वतंत्र कर लिया और जमादारों का जमीन बराबर हिस्से करके विमाना को बाट दी। तथापि साम्राज्य का नतिक और आर्थिक पतन बड़ी गतिप्रता से हाना चला गया। कौटुम्बिक पडयंत्रा ने राजवन्ध की शक्ति खाली कर दी। जमीनदार और शरीरों का भेद दिना दिन बढ़ता गया। जमींदार और व्यापारी समझशाही बनते गये और किसान उजड़ने लगे। खता छाटकर विमान गहना में नौकरियों और घघे दते फिरने लगे। धनिक व्यापारियों को दवाये रखने के भी कुछ प्रयत्न किये गये। रोगी कपड़े पहनने तथा पर चढ़ने जमीन खरीदने या उच्च पदापर नियुक्त किये जान की मनाही समय-समय पर की गयी। अमीरा पर

धर भी बलाये गये तथापि वे फलन फूलत चल गये। उनका गिराफ कानन प्राना तो आसान था, किन्तु उन्हें उन पर चलाना कठिन मिश्र हुआ। उधर गगना पर ह्यागहो के बांध के टटने, टीडिया के दला की उत्पत्ति तथा पुन-पुन जनावटि से मारी आपनि टट पडी।

जातरिक यवस्था की गटबडी दय कर हूणा ने फिर उपद्रव करना शुरू कर दिया। हान साम्राज्य ने भी उनका राकने के प्रयत्न जा शा कर शिय। चान की ग्या के लिए राजमहल की एक प्रमुख सुदरी ने हूणा के नता से विवाह करके उस राके रगा किन्तु यह तराका बर तक चलता। दगा की प्रथम गती के अंतिम चरण में तीन भयकर युद्ध हुए। इन युद्धों में हूणा की पराजय हुई। उनका तुमाग्य से उनका सेना महामयकर बफ के तूफान में फँसकर नष्टप्राय हो गया। इन घटनाओं का यह परिणाम हुआ कि हूणा का प्रवाह दक्षिण की ओर से पश्चिम की ओर मुड़ गया।

पन खाआ नामक एक यमित न हूणा के साथ यद्ध करने में अपने सनिक तथा राजनतिक बौशल के लिए अच्छी स्यानि प्राप्त की। उसकी नीति-कुशलता तथा घतता से चीन की पश्चिमी सीमा के जासपास के राज्य चीन के प्रभाव में जा गये। उसी ने कुपाणा के सम्राट कनिष्क से खोतान काशगर दारकद छीनकर हूणा का गावी के रगिस्तान की ओर तथा यूचिया का पामीर से जागे ढकल दिया। उसकी इन युक्तियों से भारत और चीन के मार्गों पर चीन का प्रभुत्व जम गया और दाना देशों के परस्पर सम्बन्ध स्थापित होने का रास्ता खल गया। उसी ने चीन का राम राज्य से सम्बन्ध स्थापित करके की उत्तजना दी।

ईसा की दूसरी शती में हान साम्राज्य का विनाश स्पष्ट रूप से हाने लगा। राज्य खिजडा के प्रभाव में फँस गया। यदि कोई शासन की आलाचना में स्वतन्त्रता दिखाता तो उसका प्राणण्ड दिया जाता। सेनापतियों में स्वतन्त्र हान की लालसा प्रकट हुई। परिणाम यह हुआ कि हान साम्राज्य निस्तेज और क्षाण हाता गया। हूणा जादि ने फिर सिर उठाया। उन्होंने ह्यागहो घाटी का जन जीवन अस्त-व्यस्त कर दिया। इन सब उपद्रवों के कारण यद्यपि हान साम्राज्य बदल गया किन्तु चीन की सम्भना उनसे बच कर जाधित रह सकी।

पूती के शासन से राज्य में अतनी स्थिरता आ गयी कि एक गता तक कोई भयकर स्थिति पैदा न हुई यद्यपि उस अवधि में कोई प्रतिभाशासन और तजस्वा सम्राट न हुआ। इधर उधर विद्रोह हुए, किन्तु उससे साम्राज्य की गति का कोई

विशेष आघात न पहुँचा। हूणाने भी उपद्रव और आक्रमण किये, किंतु वे भी निष्फल हुए और उनका हान सम्राट् का अधिपत्य स्वीकार करना पडा। वे साम्राज्य की सेना में भा भरती होने लगे। यह सब होते हुए भी राजवंश में कुछ-कुछ षगडे हाते रहे। सम्राट् आल्सी और विलासप्रिय होने लगे जिससे उनका प्रभाव दिन-प्रति दिन अधिन गिथिल हाता गया। ईसा पूव की प्रथम शती के मध्य में तत्कालीन सम्राट् का एक पटरानी के वंश का साम्राज्य में जन्मतपूव अभ्युदय हुआ। पटरानी का भतीजा वाग माग अपनी उदारता जीवन की सरलता विद्वत्ता एव दानशीलता के कारण लावप्रिय हा गया। उसका महत्व और प्रभाव इतना बढा कि इसा की शती के प्रारम्भिक वष में ही तत्कालीन सम्राट् की शसवावस्था में यह राष्ट्र का सर्वेसवा हा गया। सयाग से सम्राट् का मयु विष पान स हा गयी। वाग माग स्वयं मिहासन पर जासीन हो गया। फलत यह प्रवाद बढता गया कि उसी ने राज्य लालुपना के कारण शिगु सम्राट् को जहर दिलवा दिया। वाग माग को वाप्यसिअस मत व विद्वाना का ममथन मिला। उसने जमींदारा की जमीन जल कर ली और किसाना का बाट दी। प्रजा के लाभ के लिए यवहार की साधारण वस्तुधा का निव्व सम्ना और निश्चित कर दिया। किसाना को थडे सूद पर कृषिक लिये और बिना मूल के धन और अत्येष्टि क्रियाधा के लिए बज देना आरम्भ किया गया। प्राचीन माहित्य के उद्धार तथा नवीन के सवद्धन का प्रयत्न भी उसने किया। गुलामा का त्रय विषय बन्द करने का वाग माग ने प्रयत्न किया। उसके सुधारा से जमींदारा, व्यापारिया और कन्फ्यूसिअस से इतर सम्प्रदायवालो में क्षाम और विद्रोह की जाग भटक उठी। सीमात्ता में उपद्रव बढे और राज्य में अराजकता। विद्रोह का प्रमुख और सबसे सफल नेता लिउ सिद्ध हुआ। अतनागत्वा वाग माग का वध कर दिया गया और उसका सिर सडक पर ठुकराने के लिए फेंक लिया गया। उसका शासन काल (९ से २३ ई० तक) केवल चौदह वष रहा।

उत्तरकालीन अथावा पूर्वी हानवंश (२५ से २२० ई० तक)

जिउबंग का प्रथम शासक कुआंग वू ती हुआ। उसने राजधानी चंगन से हटाकर लायंग में स्थापित की जिससे वह शाखा पूर्वी हान के नाम से प्रख्यात हुई। नया सम्राट् कमठ साहसी और जोरदार सिद्ध हुआ। उसने उपद्रविया का दमन कर राज्य में शांति स्थापित कर दी और अनाम प्रदेग पर भी अपनी सत्ता जमा दी। छत्तीस प्रदगा के स्थान पर उसने तेरह प्रदेश बना कर वहाँ शासन की व्यवस्था

कायम रखा। मध्य एशिया, इरान, भारत और सम्भवतः रोम तक चीन की घाक उसके व्यक्तित्व से जमी रही। बद्धावस्था में अपने पुत्र के हाथ में शासन देकर वह विरक्त हो गया।

हान साम्राज्य में प्रथम शती से ही दलबन्धिया हो रही थी। राजमहल में म्त्रिया और हिजड़ा के पञ्चन निरन्तर चलते रहते थे। दूसरी शती में वह लीला साम्राज्य भर में फैल गयी। प्रान्तीय सेनापतियों ने अपना बल बढ़ाना शुरू कर दिया और सम्राट को अपने बगल में लाने का प्रयत्न करने लगे। हान सम्राट हुए नाना (१९० से २३० ई० तक) कभी एक के और कभी दूसरे सेनापति के चंगुल में फँसा रहता था। उस छोटी सी घपटा का कारण यह था कि जब तक कोई सम्राट राज्य त्याग कर अपनी माँहूर बाकायदा किसी को न दे दे तब तक बाद मिहासन पर घटने का अधिकारी नहीं माना जा सकता था। महत्वाकांक्षी नेताओं के आपसी युद्धों से शासक समुदाय निरल होता चला गया। सेनापतियों में प्रभुत्व के लिए ना सघप था ही किन्तु उससे तीव्रतर ही जान का एक यह भी कारण था कि कनपयसिअस मन के लाल साम्राज्य में अधिक महत्त्व पा गये थे जिससे ताजा मन वास्तु द्वेष करते थे। किसान और गरीब जनता का नतृत्व ताजा मतावलम्बियों का इम्पिण प्राप्त हो गया कि वे कनपयसिअस मतानुयायियों का जा प्रायः घी और जमींदार के विरोध करते थे। किसानों और गरीबों के नेताओं ने पीले रंग की पगडों पहनने का फगन निकाला। वही उनके दल का चिह्न हो गया। उस प्रकार महत्वाकांक्षी के साथ धार्मिक तथा आर्थिक समस्याएँ गुथकर जटिल हो गया। उस मघप नायक का पहला जक तब समाप्त हुआ जब हूणा को मिलाकर उत्तरी प्रांत के सेनापति त्साओ पई ने सम्राट फेई ती को राजनिहामन छाउने पर मजबूर किया और वे ई बग ने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया (२२० ई०)। लोबाग का पुनः राजधानी बना दिया गया। त्साओ पई की विजय हूणा की बदौलत हुई। उस घटना से प्रेरित होकर पक्षिण पश्चिम प्रान्त में ग हान बग और दक्षिण पूव में ब बग ने भी स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिये (२२१ ई०)। तदनन्तर उत्तरी दक्षिण भचगिया के येन नामक राज्य का भी जिन लिया (२३० ई०)। ग हान बग के राज्य का बई बस बाग ने हूडप लिया (२६३ ई०)।

हान की परिस्थिति जव्यवस्थित ही रही। निरन्तर युद्धों से प्रजा की आर्थिक दगावगी विगड ही रही थी किन्तु भी सेना तथा शासक के बीच टाट-घाट भ्रष्टाचार तथा उद्दण्ड कबालों का घूस देकर शात रखने जादि के लिए प्रजा के मयकर

कायम रमा । मध्य एशिया, ईरान, भारत और मध्यवर्त राम तब चान की धार उमरे व्यक्तिव मे जमी रही । बडावस्था म अपने पुत्र के हाथ म गगन दरर व विरक्त हा गया ।

हान साम्राज्य में प्रथम गती से ही दृश्यदिर्घा हा रही था । राजमहल म स्त्रिया और हिजडा व पडपत्र निरन्तर चलते रहत थे । दूसरी गती म यह लोग साम्राज्य नर में फूठ गयी । प्रान्तीय मनापतिया ने अपना बल बढ़ाना शुरू कर लिया और सम्राट का अपने वग मे लाने का व प्रयत्न करन लग । हान सम्राट हूण नती (१९० स २३० ई० तक) कभी एक के और कभी दूसरे मनापति व चमूट में फँसा रहता था । उस छोटी सपटी का कारण यह था कि जय तय बाद सम्राट राज्य त्याग कर अपनी माहूर वाकायदा किसी का न द द तब तब बाद मिहान पर बटने का अधिकारी नही माना जा मरता था । महत्वाकांशी नताजा व जापसी युद्धा म गामक ममुनाय निबल हाना चला गया । सनापतिया म प्रभुत्व के लिए ता सघष थाही, किन्तु उमरे तीव्रतर हा जाने का एक यह भी कारण था कि कनफ्यूसिभ्रम मन के लाग साम्राज्य म अधिक महत्त्व पा गये थे जिभस ता ता मत वाटे द्वेष करत थ । विमान और गरीब जनता का तन्त्र ताओ मतावलम्बिया का मन्त्रिण प्राप्त हा गया कि व कनफ्यूसिभ्रस मतानुयायिया का, जा प्राय घी और जमीदार थे विराध करन थे । विमाना और गरीब क नताजा ने पाले रग का पगी पहनन का पशान निकाग । वही उनके दल का चिह्न हा गया । इन प्रकार महत्वाकांशी के साथ धार्मिक तथा जायिक समस्याएँ गुथकर जटिल हो गयी । म सघष नाटक का पहला अंक तब समाप्त हुआ जब हूणा को मिगनर उत्तरी प्रांत के सेनापति स्माआ पद ने सम्राट् फेई ती का राजसिंहासन छाडने पर मागूर किया और व इस ने स्वात्र राज्य स्थापित कर लिया (२२० ई०) । लायाग का पुत्र राजगानी बना दिया गया । स्माआ पई की विनाय हूणा की बलीलत हुई । उम घटना म प्रेरित हाकर दक्षिण पश्चिम प्रान्त में ग हान वग और दक्षिण पूव में वू वग न भी म्यन ग राज्य स्थापित कर लिये (२२१ ई०) । तदनतर उत्तान दक्षिण मचरिया के येन नामक राज्य का भा जीन लिया (२३० ई०) । ग हान वग के राज्य का बई वग वाग ने हडप किया (२६३ २०) ।

चीन की परिस्थिति अव्यवस्थित ही रही । निरन्तर छुट्टा से प्रजा की जायिक दगा ता विगड ही रही थी, फिर भी सना तथा गामक के सच टाट-घाट भ्रष्टाचार तथा उद्दण्ड कवीला का घूस देकर शान रखन आदि के लिए प्रजा का भयकर

गापण जारी रहा । उद्धत सेनापतिया का बाबू मे रखना सम्राट के बूत के बाहर था । राज-परिवार में वमनम्य, कलह और हत्याएँ चल रही थी । राज्या की आपसी कलह तथा साम्राज्य की अवस्थित गति से लाभ उठाकर सीमाप्राप्ता पर हूण, मंगोल जादि के कबील आक्रमण करने लगे । चिन वश के बू ती (२६५—२८७) के समय में सम्राट की स्थिति कुछ समली । सामन्ता को अनुशासन में रखने के लिए केंद्रीय शासन के कमचारी नियुक्त किये गये और सामन्ता का आपस में लडाते रहने की नीति का भी सहारा लिया गया । इस सबसे राज्य में अपनी शक्ति तो अवश्य जायी कि उसने दक्षिण के बू राज्य को जीतकर आत्मसात कर लिया । शू हान पर तो पहले ही प्रभुत्व स्थापित हो चुका था । बू के आ जाने से चीन साम्राज्य का आकार एक बार फिर लम्बा चौड़ा हो गया । राज्य में शांति रखने के लिए उस समय एक उत्क्रेखनाय प्रयोग किया गया । यह निश्चय हुआ कि लोगो में हथियार छीन लिये जायें और सनिका को कृषि आदि के उत्पादक कार्यों में लगाया जाय । यद्यपि उपयुक्त नीति का अक्षरण पालन न हो सका तथापि निरस्त्रीकरण भारी पमाने पर हुआ । बहुत से अस्त्रधारी साम्राज्य से भागकर उत्तरी चीन के हूणा ह्य एन पी जादि कबीला से मिल गये । वही उनका खेती हथियारा के व्यापार तथा निम्न प्रकार की माधन सम्बन्धी नौकरिया मिल गयी जिममे उनका निर्वाह के बतुन कुछ माधन प्राप्त हो गये । निन्तु जा लाग साम्राज्य में ही रह गये उनका जमीन न मिलने के कारण सामन्ता की नौकरी करनी पडी जिससे सामन्ता के बल की वद्धि होने लगी । उपयुक्त नीति से शांति सस्थापन और कृषि-व्यवधान का जो जागाए की गया वह भ्रममूलक मिथ्य है । उससे सम्राट की शक्ति तो अवश्य क्षीण हुई परन्तु लाभ बाई भी न हुआ । साम्राज्य की सनिक शक्ति के कम हो जाने का यह नतीजा निश्चय कि हूण मंगोल तुर्क और तिब्बता आदि जातियां न चीन साम्राज्य पर आक्रमण करना और उसके भातर घुसना आरम्भ कर दिया । सन २८१ ई० में मंगोलो का मूयग नामक कबाला दक्षिण चीन तक घुस जाया और पकिंग के आस-पास जम गया । भयकर युद्ध के बाद मूयग कबीला जिम पर मचूरिया की आर में द्मर कबीले ने आक्रमण आरम्भ किया चीन का अधानना स्वीकार करने पर मजबूर हो गया । कुछ समय तक आपसिता तो टल गया निन्तु साम्राज्य ने उसमें बाई सफल न माया । पन्थन दम्भितियां और हत्याकाण्ड बन्धुर चलते रहे । उपद्रवांस घमण कर चीनी लोग सामाजा की आर अंधर-उधर भागने लगे । कुछ समय तो हूणा के प्रान्ता में ही जाकर बस गये क्याकि हूणा न उनका स्वागत

बिया और उनको अध्यापक तथा राज्य के परामर्शदाताओं तक म स्थान दिया गया ।

हुन हान वंश

सन ३०९ ई० से हूणा ने पाँच सौ वर्ष पहले के हाना से कुछ ववाहिक सम्बन्ध बनाकर हान वंशीय हान का दावा किया और लिउ यु जान नामक हूणा के एक नेता ने हान पर दावा दाग दिया और उसके पुत्र लियू त्मुअंग ने पहले लायाग और फिर च अंग अन राजधानिया पर अधिकार कर लिया । चीनी सम्राट हु अइ ती का वध कर दिया गया (३१३ ई०) और साम्राज्य के पश्चिम भाग पर हुन हान वंश का अधिकार हो गया । लियू त्मुअंग की मृत्यु के पश्चात् उसका दा सेनापतिया ने राज्य वाट लिया । लियू याआ ने लोयाग के पश्चिमी आर का भू भाग ल लिया । वादको लायाग के पूर्व आरके भाग पर भी प्रभुत्व जमा लिया । दूसरे सेनापति सिहू ने उत्तर चीन में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया । उसके वंशज उत्तर चाआ वंश के नाम से प्रख्यात हुए (३२९ से ३५२ ई० तक) । कनू प्रांत में वहां के गवर्नर ने ३१३ ई० में पूर्वी लिअंग वंश की स्थापना कर दी जा ३७४ ई० तक राज्य करता रहा । इस प्रकार उत्तरी चीन में एक सौ पत्तीस वर्ष में साल्ट राज्य बने विगड़े । दक्षिणी चीन की परिस्थिति भी अच्छी न थी । वहां भी गहमुद्ध निरन्तर चलत रहे और चीन साम्राज्य टूट फूट कर अनेक भागों में बँट गया । चीन के विहासकार वहाँ के अधिकांश युग का आरम्भ ३१७ ई० से मानते हैं । यह अवस्था ५८१ ई० तक जारी रही ।

चिहवा (२५६-२०६ ई० पू०)

इस पूर्व तीसरी शती के उत्तरार्द्ध में चिन साम्राज्य के संस्थापक चंग ह्यांग शी ने सामन्तशाही का अन्त करने राजकर्मचारियों द्वारा प्राप्तो के शासन की व्यवस्था की । प्रत्येक प्रांत में तीन मुख्य पदाधिकारी नियुक्त किये गये—एक सेनाध्यक्ष दूसरा दीवान और तीसरा निरीक्षक । केंद्रीय शासन के मंत्रिमण्डल में सेनाध्यक्ष प्रांत शासनाध्यक्ष या प्रांतीय शासन का उत्तरदायी हाता था धनुषराध्यक्ष भवता के कर्मचारियों का अध्यक्ष राजप्रासाद के संरक्षक का अध्यक्ष राजा के सामान का अध्यक्ष यायायिक राजा के कारखाना का अध्यक्ष राज्य की वस्त्र आतिया का अध्यक्ष, राजधानी की पुलिस का अध्यक्ष, इस प्रकार ग्यारह या बारह

मन्त्री मन्त्रिमण्डल में थे। उद्युक्त सूची से यह स्पष्ट पता नहीं है कि जय वित्त और वाप की अध्यक्षता किसके पास थी। सम्भव है कि प्राप्त सूची पूरा-पूरी न हो, किन्तु यह स्पष्ट है कि सामन्तगर्ही के स्थान पर नौकरशाही का स्थापना हो गयी।

शि हागती का मुख्य मन्त्री ली गि हुआ जो सम्राट की नीति और आशय का न केवल अच्छी प्रकार समझता ही था बल्कि उसका परिष्कृत करके वाप रूप में परिणत भी करता था। उसने यह सुझाया कि प्राचीन युगा के ममाप्त हो जाने से तत्कालीन प्रचलित नियम नवीन परिस्थिति में लागू नहीं हो सकते। जब चीन अनेक राज्या और सामन्तशाहिया में विभक्त था तब विभिन्न नियमों का होना सम्भवतः अनिवार्य रहा होगा। शि हागती ने एक महान साम्राज्य स्थापित करके एक नये युग का आरम्भ कर दिया है। जब एक साम्राज्य, एक सम्राट हो जाने से एक ही समान नियमों का प्रचलन आवश्यक था। इस ऐक्यबध्द गुण वाप के प्रति पुराने विचारों, पथाओं और नियमों के अनुयायी अनेक प्रकार की शिकायतें और आलाचनाएँ किया करते थे जिससे साधारण प्रजा में क्षान और अश्रद्धा पैदा होनी थी तथा अशांति का वातावरण बना रहता था। इसलिए यह सबथा उचित और युगांतर के लिए उपयुक्त समझा गया कि पुराने दकियानूसी विचारों का मला ज़ेद कर दिया जाय जिससे जागे का शान्ति साफ सुथरा हो। उस नीति के अनुसार प्राचीन ऐतिहासिक, राजनीतिक, समाज-नीतिक और दार्शनिक ग्रन्थों का जल करके जला दिया गया। उनमें सम्बन्ध में तथा उन विषयों पर जो व्यक्तित्व वाप विवादास्पद उठाने का प्रयत्न करे उसको सपरिवार नष्ट कर देने की घोषणा कर दी गयी। इतनी खरपत हुई कि चिकित्सा, ज्योतिष कृषि और उद्यान सम्बन्धी ग्रन्थों पर बड़े नियम नहीं लगाया गया। बढारता से उस कानून का प्रतिपालन करने और विविध प्रकार के प्राणदण्ड देने पर भी यथेष्ट सफलता प्राप्त न हो सकी और माहसी पुरुष कुछ-कुछ विरोध करते ही रहे।

एकीकरण की नीति से एक लाभ तो अवश्य हुआ। विविध प्रकार की लिपियाँ और उच्चारणों को हटाकर एक टकसाली लिपि और शब्दों के निश्चित उच्चारण का साम्राज्य में प्रचार हुआ जिससे चीनियाँ का एक सांस्कृतिक मूल मवाधने का व्यावहारिक उपाय निकल जाया।

इस काल की एक उल्लेखनीय कृति चीन की सुप्रसिद्ध प्राचार दीवार की कृति है। उत्तरी भूमणशील कबीलों के आक्रमणों का रोकने के लिए चाऊ राजाओं ने

उसका बन्दवाना शुरू किया था। समय समय पर प्रान्तीय सामन्तों ने भी अपने अपने क्षेत्रों में इधर-उधर दीवार खड़ी कर ली थी, किन्तु इस युग में उसका पूर्ण जोर अधिक दृढ़ बना दिया गया।

यद्यपि चिन साम्राज्य बहुत थाटे निर रहा किन्तु उसकी एकीकरण की नीति वही कारण उस देश का चीन नाम प्रख्यात हो गया। पश्चिमी चिन इनका निरन्त्रीकरण की नीति (२८० ई०) में लाभ के बदले केवल हानि ही हुई। उस नीति से पसा उचने की आज्ञा वैसी ही श्रममूलक सिद्ध हुई जैसे मजदूरों से कृषि करवा कर राज्य की उपज बढ़ाने की। उपज बढ़ने से राज्य में कर वृद्धि की तथा व्यापार वृद्धि की आशाएँ यथ सिद्ध हुए। बर्खास्त हुए मिपाहिया का राज्य जमीन न दे सका इसलिए वे या तो सामन्तों की सन्तान में भरती हो गये या सीमान्त निवासी स्वानावदाशा में सम्मिलित हो गये। सबसे बड़ी हानि साम्राज्य के सैनिक बल के टूटने से हुई। इस परिवर्तन से सीमान्तवासी कबीलों का उत्साह बढ गया और उन्होंने आक्रमण शुरू कर दिये।

साम्राज्य की सीमाओं पर मँटराने वाले तुक जाति के तोया और ह्युअन (हूण) नामक दो कुल तथा मंगोल तुक मिश्रित जाति के तगत (तिबती) और ह्यु एनपी दा कुल मुख्य थे। जल साम्राज्यीय शासक का के राजकुमारों का बंध करके चिआवंग सिंहासनाारूढ हुआ तब गह्युद्ध छिड़ गया जिसमें सेनापतिया और सामन्तों ने सक्रिय भाग लिया। यही नयी विभिन्न दलों ने सीमांत की जानिया से भी सहायता मागी। उस परिस्थिति से लाभ उठाने के लिए बड़ी तत्परता के साथ वे किसी न किसी दल से जा मिलीं। फल यह हुआ कि एक के बाद दूसरा व्यक्ति राजसिंहासन पर बवल मरने के लिए बिठाया गया। क्रांति न जब उत्तरोत्तर भयंकर रूप धारण करना शुरू किया तब चीनी लोग प्राणरक्षा और शांति की तलाश में इधर-उधर भागने लगे। उन आक्रमणों में एक लक्ष चीनियों का निधन हुआ। पश्चिम में हूणों ने अपना सम्पूर्ण हातबग से उगाकर हूणहान उपाधि ग्रहण कर अपनी सत्ता स्थापित कर ली। लायांग (३११ ई०) और चअंगअन (३१६ ई०) नाम की दाना राजधानियाँ उनके अधिकार में चली आयीं।

उत्तर पूर्वी चान पर हूणों के दूररे नेता गिह लो ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। उसकी नीति उस हूण नेता से जिसने लोयांग बार चंग अन पर अधिकार प्राप्त कर लिया था, भिन्न थी। गिह लो चीनियों के शासन विधान और स्थिर सामाजिक जीवन का पक्का न करता था। उस हूणों का तरह स्वानावदाशा रहना

और कुला व नेताआ का नेता बने रहना ही अच्छा लगा। हूण पल धीर धीर लि उत्पन्न जग का जिसे चीनी सम्यता की हवा लग गयी थी, साथ छाड़कर शिह ला व पास जाने लगा जिसमें उसकी शक्ति बहुत बढ़ गयी। शिह ला ने अपन सम्राट् होने की घोषणा इसलिए नहा की कि तुर्कों और हूणा की प्रथा व अनुमार जब तक वाइना किसी राजवंश से अपना सम्बन्ध सिद्ध न कर दे तब तक व जातिया उमका राजत्व स्वीकार न करती थी। वह दस्तुत हूण राजा का गुलाम था। यद्यपि वह चानिया का सम्यता का विराधी था और उमकी प्रवृत्ति उजड्ड थी ता भी कोई दूसरा रास्ता न देखकर उत्तर चाओ वंश के सम्राट की पत्नी ग्रहण कर ली (३२९—३५२ ई०)। हूण और तुर्कों के बचोला ने शिह ला का साथ अवश्य पकटा था, पर उसका सम्राट मानन व लिए तयार न हुए। राजत्व ग्रहण का उसकी इस नीति को देखकर कुछ कवील दधर-उधर चले गये और कुछ ताया राज्य में चले गये। फलत उसके वंश की शक्ति उत्तरोत्तर घटता गयी यहाँ तक कि मंगोला के एक कवील हुएन पी ने उत्तर चाओ वंश का अन्त कर दिया (३५२ ई०)।

आधुनिक कासू प्रांत का सरदार चिन वंश का भक्त था। चिन सम्राट की हत्या का समाचार पाकर उसने लियांग वंश व स्वतंत्र राज्य की स्थापना की घोषणा कर दी। चीनी लोग भागकर उसकी शरण लेने लगे। यद्यपि यह राज्य बड़ा न था तथापि उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी और उसका विस्तार तुर्किस्तान तक बढ़ गया था। इस राज्य में व्यापार और सिद्ध सम्प्रदाय न अच्छा उन्नति की।

चतुर्थ शती के उत्तरार्द्ध में तिब्बतिया ने जमूनपूर्व उत्पन्न प्राप्त किया। तिब्बतिया का सैनिक संगठन तुर्कों और मंगोला से भिन्न था। उनका संगठन कवीला अथवा उनके नेताओं पर आधारित न था। तिब्बत में कवील न थे। विशेष तबसर उपस्थित होने पर कुछ मुख्य व्यक्ति किसी याग्य और समर्थ व्यक्ति का अपना नेता चुन लेते और उमकी आज्ञा का पालन कर लेते। जब युद्ध समाप्त हो जाता तब मनापतित्व का अन्त हो जाता और सैनिक अपना-अपने स्थान का वापस चले जाते थे। तिब्बतिया की दूसरी विशेषता यह थी कि सेना व सैनिक किसी जाति या कुल व लागू न से ही भरती न किये जाते थे अपितु स्वतंत्र रूप से विभिन्न जातिया व जागों में से भरती किये जाते थे। उदाहरण के लिए तिब्बतिया की सेना में चीनी भी बड़ी संख्या में भरती थे। इनकी तीसरी विशेषता यह थी कि उनकी सेना में तुर्कों या मंगोला की तरह केवल मवार ही न रहते थे बरन् उनमें जलावा बड़ा

मग्या में पैदल सिपाही भी रने जाते थे। पैदल सेना किला के अवराध और विजय में तथा नदी-नाला से कटे पटे भदानों में सवारा से अधिक उपयोगी सिद्ध होती थी।

तुका जाहूणा के संगठन में एक यह दाप था कि जत्र कबीला युद्ध में हार जाता तब उसके मंत्र व्यक्ति गुलाम बना लिये जाते और कबीले का अन्त ही जाता। दूसरा दोष यह था कि सब कबीले बराबर हमियत के गद्दी गिने जाते थे। इसलिए प्रमुख कबीले के राजत्व का अधिकार तब तक चलता रहता जब तक वह विवा और निमूल न हुआ जाता, चाहे उसमें सैकड़ों वर्ष बसा न लगे। उन दानों दापों से निम्नती संगठन मुक्त था किन्तु निम्नती प्रबन्ध में उतनी स्थिरता एवं गतिशीलता नहीं जिससे बहुत काँ तक साम्राज्य चल सके।

उत्तर चीन राज्य के विगडने पर उनकी निम्नती सेना का एक नेता जा पड़ अथवा फूचंग का था, स्वतन्त्र हो गया और भारी सेना संगठित कर उसने पूर्व कि इन राज्य की स्थापना की। उस वंश का फूचिएन नामक राजा बड़ा प्रतापी निकला (३५७—३८५)। उसने मयुग वंश के सिएनपी को परास्त कर कागिया और मचरिया तक में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया (३७० ई०)। तदनन्तर उसने पूर्व लिजंग के चीनी राज्य तथा तोबा के तुर्की राज्यों को भी अपने साम्राज्य में मिला लिया (३७६ ई०)। उन विजयों से सारे उत्तरी चीन में उसका आधिपत्य हुआ। चीन गिना और सम्भ्रता का तथा बौद्ध धर्म का पापक होने के कारण चीनियाँ और बौद्धों ने उसका साथ लिया। दक्षिण चीन का जीतने की उस उत्कृष्ट इच्छा थी। इस लक्ष सेना लेकर उसने आक्रमण भी किया किन्तु उसका इरादा सफलता न हुई कि उसकी सेना मवारा की बहुत बड़ी सरया थी। सवार गीत्रना में बड़ तो सकते थे, किन्तु उनके लिए रसद का समय पर पहुँचना असम्भव-सा था। इसके सिवा सवारा की छाटा-भाटो टोलियाँ अथवा रसद वाले पर लोग एकाएक छापा मारकर हानि पहुँचाते थे। उन कठिनाइयों से हताश होकर आक्रमणकारी दल टिन्न निन्न होकर भाग जाता था। पराजय के कारण फूचिएन का महत्त्व गतना घट गया कि साम्राज्य ही उसका हाथ जाता रहा। उत्तरी चीन में फिर जनक राज्य स्थापित हुए और अत्यन्त उत्पन्न हो गये। दक्षिणी चीन प्रायः मत्तना गति नहीं कि गानु की हार से लाभ उठाकर उत्तर में अपनी मत्ता कायम कर मदन।

फूचिएन साम्राज्य के नष्ट होने के पश्चात् गान्गो प्रांत के उत्तर में तांग कुल के राज्य ने उत्पत्ति की। आरम्भ में तांग तुका जाति के थे किन्तु उनमें हूणा तथा

मंगाला व रत्न का भी जच्छा-नागा सम्मिश्रण हो गया था। यह उत्तरी मन्चूरिया और मंगोलिया से दक्षिण की ओर आकर बग गये थे। उन पर मंगोलिया का मिश्रित जातियाँ के कबीले आक्रमण करने से ज़िम्म व अपना विस्तार न कर सका। फिर भी पाँचवाँ शताब्दी के दूसरे चरण में उन्होंने अपने साम्राज्य का विस्तार करना आरम्भ कर लिया। पाँचवाँ शताब्दी के अन्त होने तक वे बंगू प्रान्त तक पहुँच गये जिसमें उनका दरबारा तुर्किस्तान पर जम गया। अगले दिनों वे पून का आरंभ बड़े जोर दक्षिण के हानान प्रान्त पर भी उठा। अधिकार स्थापित किया। अगले प्रान्त ४४० ई० में तांग वंश का राज्य चीन का ही नहीं बरकरा पूर्व की ओर जाकर मन्चूरिया-गाली राज्य गिना जाने लगा। उमर सामन में फिर चीनियाँ का समलन का अवसर प्राप्त हुआ। विजता सैनिक संगठन युद्ध और साम्राज्य बढान में सिन्चम्पी रखते थे। अन्त में सामनात्त राजकाज उद्धान चीनियाँ के हाथ में सुपुद कर लिया था।

सामाजिक व्यवस्था

चीनी एक ही जाति के लोग न थे। दक्षिणी चीन के जयरा यागत्मा नगी की घाटी में सम्भवतः चीन के मूल निवासी रहते जागे किन्तु उनका विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। बहुमत के अनुसार चीनी लोग मध्य एशिया में आकर पीले तना के जा जान सी पात में बस गये थे (३००० ई० पू०)। उनके पश्चात् उनके जातियाँ के लग जाने रहे अन्त में ह्यिअंग (हण) तुर्क माल तगत जूचेन माचू जादि के विषय में थाडा-बहुत नान प्राप्त है। अनेक जातियाँ के सम्मिश्रण से चीनियाँ का जातीय निर्माण हुआ है। अन्त में ऐसा कोई विवरण जा सारे जातुतिक चीन और चीनियाँ पर लग हा सने दुप्राप्य मा है।

चीन का संस्कृति के नम्बू के में यह स्मरण रखना चाहिए कि नटिया की घाटियाँ और उनके जामपास के प्रदेशों में कृषि ही मुख्यतः आर्थिक जीवन की आधार गिला थी। पहाडा प्रदेशों और विशेषतः उत्तर की ओर जहाँ गोवी की मरुभूमि है तथा साइबेरिया में जहाँ भयंकर सर्द पडती है कृषि के साधन सुरुभ न थे। अन्त में वहाँ का आर्थिक जीवन अनिश्चित मा रहा। ये कबीले चर उधर चरागाहा अथवा लूटमार की तलाश में घूमते फिरते थे।

कृषि प्रधान शासनात्मक व्यवस्था में रहते थे जो किन्ता ऊँची जगह पर बसाव जाते थे। वहाँ अधिक वर्षा या नटिया की भयंकर बाढ़ कम हानि पहुँचा पाती थी। इसके सिवा ऊँचे स्थान से खेता की देखभाल में भी सुविधा होती थी। गावा के

चारा ओर या ता कच्ची दीवार या घनी बाडिया खटी कर दी जाती था। पटा की छाल और फूस से मकान छाये-बनाये जाते थे। उनके टट्टे पर मिट्टी का पलस्तर चढा दिया जाता था। बोपटिया में प्राय एक ही कोठा होता था जिसमें एक जार पत्थर का चूल्हा और दूसरी जार पयाल और चटाइया का त्रिस्तर हाता था। दरवाजा दक्षिण की ओर बनाने का रिवाज था। कालान्तर में मेज-कुरसी भी काम में आने लगी।

पुरातन चीन के लोग बड़े जानवर पालने के शौकान न थे। उनमें खेती का काम न करे बल्कि वही काम करना पसन्द करते थे। जैसे चत्वर जहा बहा घाडा में खेती होती बहा भा यह टर रहना था कि राय युद्धानि के लिए कहा उन्हें छोड़ न ले। खेती के लिए कुत्ते जार खाने के लिए मुग सुअर आदि पाले जाते थे। मछलिया एक चिटिया जान स पकडी जाती थी। वे खाना तन्त्रिया में खाने और शराब भी पीते थे। जमीर और बड़े गांविया अथवा गम रहने के लिए रेगमी वस्त्रा का उपयोग करते थे, किन्तु साधारणत मूती कपडे पहनने का रिवाज था। भोगने से लाग घबराते थे। इसलिए छाता का उपयोग चीन में प्राचीन काल में ही प्रारम्भ हो गया था। जते कपडे अथवा चमड़े क बनाये जाते थे। किसानों की जमीन का मालिक जमान्तर या राजा हाता था।

चीन के सामाजिक जीवन में कुटुम्ब तथा गान्स्थय जावन का बडा महत्त्व था। तीस वय की उम्र तक प्रत्येक व्यक्ति का विवाह हो जाना आवश्यक समझा जाता था। कुटुम्ब की प्रधानता बड़े पुरुषों जार स्त्रिया के अधिकार में रहती थी। प्रत्येक पुरुष तथा स्त्री की भर्त्या उमका उम्र के अनुसार निर्दिष्ट हाती थी। बडा का आदर सम्मान करना परम कर्तव्य समझा जाता था। चीनिया में माता का स्थान बहुत ऊँचा माना जाता था। इसका कारण कुछ लोगो की राय में पुरातन काल में मातक समाज का प्रचलन था। इसी भावना पर उनके विष्टाचार की रचना की गयी थी। धीरे धीरे वह पूर समाज और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में किसी-न किसी ढंग से लागू हो गयी। ऐसी परिस्थिति में गाव भी एक कुटुम्ब-मा हो गया, जिससे सामाजिक नियम और शासन में सरलता हो गयी और सहयोग तथा उदारता का स्वाभाविक प्रचलन सम्भव हो सका। हम व्यवस्था का कनफूसि असके आचारक सिद्धान्त में विनिष्ट व प्राप्त हुआ। चीन की यह कौटुम्बिक व्यवस्था ही चीनी सभ्यता और उसके स्थायित्व के लिए मुख्य आधारगण सिद्ध हुई। उपयुक्त कौटुम्बिक विष्टाण प्रामा तथा प्रान्ता तन ही सीमित न था,

राज्य पर भी लागू हो गया था। कुटुम्ब का ही एक सर्वाधिकार रूप प्राप्त तथा राज्य गिना जाता था।

चीना विश्वास के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के लिए सन्तान होना आवश्यक माना जाता था। बिना पुत्र के पुत्र्य का जीवन यथार्थ नहीं दुर्भाग्य का द्योतक समझा जाता था। उसमें बिना न ता पित ऋण ही जदा होता था, न पितरा की तृप्ति और शान्ति सम्भव थी। लड़की-लड़किया का विवाह उनके माता पिता अथवा अन्य सम्बन्धी ठहराते थे। भावी पति-पत्नी के स्वयं विवाह करन का रिवाज न था। वयस्कता के पहले ही विवाह निश्चित कर दिया जाता था। मंगनी हो जाने पर सम्बन्ध विच्छेद अत्यंत बुरा समझा जाता था। विवाह के अवसर पर लड़की और लड़के के घर में क्या सामान जाना या जाना चाहिए यह पहले से ही ठहरा लिया जाता था। यदि लड़की का पिता चाहता तो बिना कुछ लिये ही स्वयं मंत्र सामान लड़की को दे सकता था। तब केवल इतनी थी कि वह सामान लड़की का ही समझा जाता था और उसके मरने पर उसकी सन्तान का उस पर अधिकार होता था। एक ही पत्रक कुटुम्ब के लड़के-लड़किया में विवाह मना था। मान शूल में विवाह करना अच्छा समझा जाता था। विवाह हो जाने पर लड़की पति के कुटुम्ब में सम्मिलित हो जाती थी और उसी को रम्मा और भयान्त्रा का पालन करती थी। पति की जाना का प्रतिपादन स्त्री का मुख्य कर्तव्य माना जाता था। स्त्री मृत्यु के बाद पति के कुटुम्ब के बड़े बूढ़ों की जाना का पालन करना पड़ता था। चीन में कुठ दगाआ में तिनम बध्यत्र टुगचार कटुभाषण आदि नामित वे स्त्री को तलाक दिया जा सकता था किन्तु स्त्री के लिए तलाक दना बग समझा जाता था। तलाक देने पर स्त्री का दूसरा विवाह करना अत्यंत अनिच्छित माना जाता था किन्तु पुत्र्य का नहीं। हा, विधवा या कल्याणभाष हा पर ताना विवाह कर सकते थे। पला के मरने के बाद उनमें मायन की दूसरा लड़की से पति याह कर जाता था। माघारणन माप्य को एक ही विवाहित स्त्री रखने का नियम था किन्तु उपनिषद् के विषय में बाद नियम न था। समाज में अच्छा न माने जाने पर भा घना गण बंधा उन-पत्निया रख लेते थे। पुत्रहीन दम्पति यदि चाहते तो विवाह लक्ष्य का गान् विवाह कर सकते थे। जम लक्ष्य बनिम्बन लक्ष्मी के अच्छा समझा जाता था उनमें स्त्रिया के मुखावर्ग में पुत्र्य का म्यान ऊँचा गिना जाता था। स्त्रिया और पुत्र्य के मिलने स्त्रिय का विवाह चीन में न था। उनका वाय क्षेत्र ना निम्न थे, दम्पति उनका गिना-गाना भा निम्न होती थी। उनका

क लिए पाठालाएँ थीं किन्तु लड़कियाँ का घर में ही घरेलू शिक्षा दी जाती थी।

चीन में न तो वण-व्यवस्था ही थी न जानिपति का भेदभाव ही। परम्परा क अनुसार सम्मान के मुख्य पात्र प्रमत्त विद्वान राज्य-सहायिकारी, योद्धा और अध्यापक थे। साधारण लोगाँ मनी श्रमियाँ थे। जन उत्पन्न करने वाले, माली लड़की वाले पशु-पक्षा पालने वाले कपड़े बुनने वाले नौकर चाकर कारीगर व्यापारी और फुटकर काम करने वाले। कुलीना और साधारण लोगाँ म अथवा श्रेणियाँ और व्यवसायाँ म ऊँच-नीच का भेद कायम था। पर यह विभेद नगण्य-सा था। अपनी योग्यता के अनुसार मनुष्य का स्थान घटता-बढ़ता था। गण आपस म विवाह आदि मिना मिसा बाधा के बरत थे। चीनियाँ में विद्वान और सेनापति विशेष जादर क पात्र समज जात थे। हिजडे नाटका, गुग्गम हरकारे तथा वेद्याएँ नाच स्तर के लागी म समझा जाती थी। चीन म गुग्गमा की दशा उतनी खराब न था जितनी राम और यूरोप के मध्य युग म। गुलामाँ स प्राय घरेलू काम लिये जाते थे। उन की कार् विक्षप जाति न थी। यद्यपि उन्हें खरीदा या बेचा जा सकता था तथापि उनसे उता नीच काम लिय जात थे, न अनुचित व्यवहार ही किया जाता था।

चीन म मिन्वारियाँ की सरया अधिक थी। नदियाँ के जलहडपन क कारण कृषि की डावाडाल स्थिति दुर्मिक्षा भूमि विहीन जनो की बड़ी संख्या लुटेरे क्रांती के आक्रमणा तथा ताआँ मत क अकमण्यता सिद्धांत आदि के कारण देश म अकमण्य मिन्वारियाँ का दल बढ़ता चला गया। यद्यपि दान तथा भोज्य पदार्थों का वितरण प्रायश होता रहता था किन्तु उससे समस्या की विभीषिका कम होने की सम्भावना न थी।

चीनी समाज में शिष्टाचार तथा विनयपूर्ण व्यवहार को बहुत महत्त्व दिया जाता था। कनफूमिअस ने तो उम अपने मत का मेरुदण्ट ही बना दिया था जिससे उमकी अधिकधिक पुष्टि होती गयी। सदा प्रसन्न बदन रहने विनीत स्वभाव मृदु भाषण तथा नम्र गतिविधि पर बहुत जार दिया जाता था। चार्नियाँ की मभ्यता का वह विनिष्ट लक्षण ही बन गया था। इस गुण का चीनी समाज म प्राधाय चीनियाँ म अतर्हित किसी दास भावना या कायरता का परिणाम मानना मूल होगी क्योंकि व साधारणत स्वामिमानी थे और उजहडपन, मार-पीट का अशिष्टता का घातक मानते थे।

नागरिक जीवन

नगरों का निवासी गाँववाला का समान घटिया समझत था कि उनका पिछा-चार का दृष्टिगत न होता था और वह उमरा जल्दी तरह से निगाह में न कर पाता था। गाँववाला भी अपने धर्म का बाहर गावर्जनिक कामों और सामान्य कामों की नौकरग करना बरा समझत था। उम प्रकार का काम वह गहर बाग का ही लिए छाट देत था। साधारण नगरों में बाजार माना का चीनरा और पूरजा का जाल मूचक मंदिर तथा पूर्य पूरजा के पूज्य स्थान जादि बनाये जान थे। पूरजा में माना का स्थान सबसे ऊचा गिना जाता था।

नये नगरों का निर्माण बड़ी लम्बा चौडी विधिवा तथा उपजारा द्वारा किया जाता था। सबसे पहल नगर की चहारलीबारा रखी जा जाती थी क्याकि उसी का मजबूती, उचाई लम्बाई और चौडाई पर नगर की दृष्टियत निर्भर होता था। नगर की रचना मन्दि पडाव के नये पर चारवार का जाती थी। नगर में बड़े-बड़े प्रसाद बनाय जात थे। दीवारा पर चित्र बनाकर उन का शोभा बढ़ायी जाती थी। गहर के बीच में नगर का मुख्य जघिष्ठाता की काठी ऊच स्थान पर बनायी जाती थी जिससे वह सारे नगर का निरीक्षण कर सके। नगर के प्रयेक महल्ल का एक मुखिया होता था जिसका कर्तव्य था शांति रखा तथा कर वसूल करना। बठपुनलिया और जादूगरा के खल के अलावा गाना का भी जिनम कभी-कभी सी पात्र तक भाग लेन थे प्रदर्शन होता था।

चीन के विविध उत्सवों में नये वर्ष का उत्सव हर जगह मनाया जाता था। तीन चार दिन बड़ी धमधाम रहती रंग रिरंगी कागज की कडीत जगमा जाती कागज के विशाल जजदहा का जुल्म निकाला जाता और जातिशवाजी छुड़ाई जाती थी। उसके सिवा पुरखा का जानीय स्मृति लिख जजदहाई नौकाया की प्रतिया गिता का समाराह पशुचारका तथा कपडे बुनने वाला के मठे अन्न सचय के दिवस, वनपयमिअस का जन्म लिख मकर सन्नाति (उत्तरायण) आदि उत्सवों के दिन ताथ-यानाएँ त्याहार तथा पव उत्साह सहित मनाये जाते थे।

आमोद-प्रमोद

चीनिया का कष्ट साथ खेला का ज्यादा शोक नथा। तीरदाजी, गिकार, मछली पकटना, तरला गद खेलना पतंग उडाना नाटक करना और नाटक इत्यादि

देयना उनके विनाद के विशेष साधन थे। साधारण ढंग की कुदृता भी लड़ी जाती थी। गप्प लड़ाना, किस्सा कहानी बहना-मुनना तथा पढ़ना जुजा खेलना, तांग शतरज खेलना, अथ यदि अनेक प्रकार की श्रौटाएँ उनकें यसन थे। यद्यपि चावल की मन्त्रिदा जातगा से तीन आतगा तक तांग पीने थे किन्तु उस मद्यपान ने वहाँ भयकर जानीय दाप का स्वरूप धारण नहीं किया। चीन में मध्य तथा उच्च श्रेणी की स्त्रिया और पुरुषों में मिल-जुल कर गेठने-कदने सर-मपाटे करने गप्प लड़ान या जामाद प्रमाद करने का रिवाज न था। स्त्रिया तथा पुरुषों के लिए मकानों में जनानखाने और मर्दानखाने अलाहदा-अलाहदा बनाये जाते थे। नीचे के तांगों में अनुपानन अधिक बघन था। नियंत्रण का अभाव था। चीन में हान युग से नाटकों का विकास होता रहा। उत्तमवा और बड़े बाजारों में नाटक खले जाते थे। नाटकों में गान-बजाने का भी प्रबन्ध रहता था। स्त्रिया और पुरुषों के बठने के लिए अलाहदा अलाहदा प्रबन्ध कर दिया जाता था। किस्सा सुनने के शौक के कारण चीन में किस्सा कहने वाली का एक अच्छा-खासा राजगार ही पनप गया था। जादूगरों और बठपुतलियों के खेल देखने का भी लोगो को शौक था।

शासन विधान

चीन के राजनीतिक संगठन में सम्राट का महत्त्व अपार माना जाता था। दवी शक्ति से उसका मजबूत होना कहा जाता था। उसके गुणा जयवा श्वगुणा पर ही साम्राज्य का दारोमदार था। प्रजा का सामान्य अथवा दुर्भाग्य उसी पर जातिरत समझ कर उस राजाचित्त जाचार पर आरुढ रखने के लिए कुछ विविष्ट लाकमममानित योग्य चतुर मदाचारी विद्वानों का नियुक्ति कर दी जाती थी। राजकुमारों तथा वमचारियों के लिए भी सदाचार एवं ब्यस्थित कायपरायणता का ध्यान रखना आवश्यक था। जनता उन सब पर श्रद्धा और विश्वास रखती थी जब उनकी आज्ञाओं का आदर करना एक प्रतिपालन वह अपना परम कर्तव्य समझती थी।

चाऊ वंग (११२२—२५६ ई० पू०) के पहले से ही चान में शासन विधान पर काफी ध्यान दिया जाता था। चाऊ युग में यद्यपि सामन्तशाही थी तथापि विश्व की रचना तथा नियमों के अनुसार राज शासन विधान का निर्माण होना आवश्यक समझा गया। इसीलिए चाऊ काल में शासन के छ जग स्थापित किये

गये। प्राग्ति व छ जगा—दव (जाकाग) पृथ्वी वसान, ग्रीष्म गरल और गिगर व समान वित्त और व्यक्ति गिगा और गनहार धम और पगान्ति, मनिव तथा युद्ध याय और अपराय माधारण गसता तथा लाय बल्याण जाति गामन व छ विभागा गी यवम्या की गया जा तलगम्प्राधा काय करेन थ।

केन्द्रीय

नानयुग म सम्राट का एक मुख्यमन्त्री हाता था जा सम्पूर्ण गामन व मन्त्रीरि पनाधिकारी और कमचारी की सैसियत स गामन वा गचालन करता था। उमने वाट राजा का सचिव और सना का अध्यक्ष थे दा पनाधिकारी थ। मनाध्यक्ष वा कनाय सना का गानन था न कि सनापतिरन। मुख्य मन्त्री तथा उभयन्त दाना पनाधिकारी उच्चतम श्रेणी व गिने जान थ। दूसरी श्रेणी म नी मन्त्री थ जयान धम जा र शिष्टाचार मन्त्री रथ तथा अन्न मन्त्री याय मन्त्री जातर-मत्वार मन्त्री पूवज राजकीय मन्दिर ध्यवस्था मन्त्री राजकीय सामान मन्त्री राजप्रामा दीय मन्त्री राजद्वारपालध्यक्ष तथा राजसमा मन्त्री। राजधानी के प्रन्ध व लिए तीन मुख्य जधिकारी थे पहला राजकुमार व महंगा का दूसरा नगर का गान्ति आर मरक्षा का और तीमरा गसन के नगर रक्षवा द्वारपाला और वमार। का प्रन्धकता। उनके सिवा प्रान्तीय शासना के मन्त्री तथा विगप नीनि मन्त्री मी हान थे।

प्रांतीय शासन

चीन म किमी समय ग्यारह सौ स अधिक प्रान्तथे किप्टु घटते घन्ते उनकी सग्या छत्तीस व लगभग रह गयी। प्रत्येक प्रात में दो या तीन क्षेत्राग हात थे तथा प्रत्येक क्षेत्राश म दा या तीन जिले। प्रत्येक जिले मे परगने और परगना म कई गाँव हान थे। प्राता के अध्यक्ष और जिलाधाशा में से प्रत्येक की अधीनता में लगभग मी कमचारी काम करते थे जिसका चुनाव प्राय प्रात व निनासिया में से किया जाता था। उनकी नियुक्ति जिलाधीन तथा प्रात के अध्यक्ष ही करत थे। प्रांतीय अध्यक्ष के साथ एक प्रान्थेट सेनेटरी एव वित्ताधीश जा र एक मुख्य निय ता नियुक्त रहता था। गामनाध्यक्ष वा परामन्न देने और सरकारी पत्रव्यवहार करने के लिए एक एक पनाधिकारी नियुक्त था। गसन में मुख्य विभाग थे परिवहन वित्त, शिक्षा, याय सगन्ध्य, जय सेना, बाजार प्रन्ध तथा पगकग। प्रांतीय

शासन का संगठन और नियंत्रण प्रत्येक प्रांत की आवश्यकता तथा परिस्थितियाँ के अनुरूप होता था। प्रांतीय विधानों में केंद्रीय शासन यथासम्भव हस्तक्षेप न करता था। इसलिए अपने अपने क्षेत्र में उनको बहुत कुछ स्वतंत्रता था। उमर एक यह बड़ा लाभ था कि प्रांतीय शासन अधिकतर स्वावलम्बी होता था। यदि केंद्रीय शासन में विघ्न उपस्थित होता तो उससे प्रांतीय शासन में बाधा पड़ने की सम्भावना बहुत कम होती थी। केंद्र से नियुक्त किये गये प्रमुख पदाधिकारी एक स्थान से दूसरे स्थान पर तब्दील किये जाते थे, किंतु प्रांतीय शासन विधान चला रहता था।

चीन के शासन के पदाधिकारी और कर्मचारी परीक्षा द्वारा चुने जाते थे। उच्च राजकर्मचारियों की परीक्षा छ विद्याओं में होती थी। याय, स्वास्थ्य आदि दो-तीन विभागों में विशेषता की नियुक्ति अनिवार्य थी, औरों में नहीं। कुछ विविष्ट विभागों को छोड़कर एक विभाग के पदाधिकारी दूसरे विभाग में भी नियुक्त किये जा सकते थे। परीक्षा द्वारा पदाधिकारियों के चुनाव की परिपाटी चीन में प्राचीन काल से प्रचलित थी। यह वहाँ का अपनी महत्वपूर्ण विशेषता थी।

चीन में जनगणना हर तीसरे साल की जाती थी जिसके अनुसार प्रांतीय शासन विधान में हेर फेर कर दिया जाता था। सामन्तों के अत्याचारों को कम करने के लिए ग्रामों में बस्तियाँ एवं बाँडों का अपने-अपने मुखिया के चुनने पुरस्कार प्रदान करने का उपाय तथा जनगणना के नियम बनाने आदि के अधिकार दे दिये गये थे। एक विद्वान् का कथन है कि यदि शासन की महत्ता अनुशासना की यूनता तथा राज्य की यथार्थ प्रगति मानी जाय तो चीन में बढकर अच्छे शासन का उदाहरण सत्तर के इतिहास में पाया नहीं मिलेगा।

सम्भव है कि प्राचीन भारत ही उसका समकक्षता कर सक। दशक की सामाजिक व्यवस्था ऐसी ढंग की थी कि वह लोकाचार सदाचार कृत्याकृत्य के नियमों पर चलने और उन पर विश्वास रखने एवं जीवन-मृत्यु तदनुसार बनाये रख कर व्यवस्थित मार्ग पर चलने की प्रेरणा करती रहती थी। इसीलिए ऊपरी दबाव या शासन की उनको उतनी आवश्यकता नहीं रहती थी जितनी अन्धकार में अनुभव की जाती थी। यह इन देशों का उच्च सभ्यता का प्रमाण एवं चमत्कार था। इसी में सम्भवतः उनके दीर्घजीवी हान का रहस्य निहित था। यहाँ पाया उनका सभ्यता की मन्द गति का कारण भी था।

आर्थिक व्यवस्था

गाय यग में ही मगला और तुर्की में यान वाला न पहिले द्वारा मगला यान का यान प्राप्त कर लिया था । उनका यान महत्त्व प्राप्त हुआ कि याना की सख्या व अनगण है उनका मालिका का यान का अनुमान जीर ममाज में उत्तर स्यात का निधारण यान गया । यान यानि के परिणामस्वरूप यान वाला में सामन्ताधी का प्रारम्भ हो गया । ममाज में यान की प्रधानता में हानि सामन्तों का यान विस्तार हुआ । सामन्तों के विस्तार में यान-धी भूमि उगम आ गया जिसे पर तथा बहिष्कार लगा हो गया । उनही यान के लिए सामन्तों के मनस्वि में मन्तव्य स्थापित का गया । यान विज्ञान में सामन्तों के मन्तव्य और यान का वृद्धि पायी गयी । यान यान में यान के यानि का भी प्रारम्भ हो गया जिसे भूमि तथा यानस्वरूप और यान के यान हुए यानि के यान जाति सामन्तों का यानि यान का यानि मुद्रिया हो गया । यान यान यान में यान के यानि यान और यान यान यान यान यान यान यान

शामकव दल को बड़ी चिन्ता हुई क्योंकि विद्रोही लगाम्राज्य के सेवकों की हत्या और ठूटमार करते थे तथा जाग भी लगाने लगे थे। उनके दमन के लिए जासदिक भेजे जाते उनमें से कुछ तो विद्रोहियों से मिल जाते और कुछ स्वयं ठूटेरा के दल बना लेते थे। साम्राज्य में अराजकता बढ़ती रही। यह दुर्भाग्य ऐसी चीजें कि गलत मनुष्य मारे गये और पूरे हानकरी का आधिपत्य भी समाप्त हो गया। अधिक मर्यादा कृपका के नष्ट हो जाने के कारण बच हुए किमानों को खेती कराने के लिए अधिक भूमि मिल गयी और राजधानी लोयांग में जाकर बस जाने के कारण अन्न के उत्पादकों और व्यापारियों का यातायात गंभीर रूप में रुका गया। अन्न भी मस्ता हुआ और किमानों का भी लाल हुआ। बदली परिस्थिति से कुछ शान्ति तो हुई किन्तु वह अस्थायी थी। सीमांत प्रांतों के तुर्कों मंगोलों और हूणा से युद्ध चलते रहने पश्चिम के व्यापार मार्गों का खुला रखना तथा सम्राट और सामंतों की प्रसिद्धता बनाये रखने और उनके अनापनाप स्वार्थों के कारण आर्थिक समस्या का सुलझना दुम्तर सा रहा। अन्न लगाने तथा कर के ठीक दान से और ऊँचे पदों के चयन से भी काम पूरा न चला नव राज्य ने सिक्के बनाने का पूरा अधिकार अपने हाथ में ले लिया। भारी बजन किन्तु घटिया धातु के सिक्के का मतलब उनका धातुई मूल्य के अनुमान माना जाता था। घटिया धातु के सिक्के से व्यापार में बाधा और राज्य की साख पर मद्दह हाने लगा। राज्य ने हिरन का खाल के सिक्के चलाये किन्तु उमम वह अमफल रहा। पर उस प्रकार के प्रयोग का आर्थिक इतिहास में अपना विशेष महत्त्व है।

शामक दल में चाह वह केंद्रीय था जयका सामंती विलासप्रियता और गहकह बढ़ती गया जिससे शासन में गिरावट आरंभ की बढ़ि जारी रही। रानिया पटरानिया तथा उपपलिया की सरया बढ़ने लगी और उनका तथा उनका कुटुम्बियों के आचाराएव व्यवहार के कारण राजघराने में गम्भीरता, गिरावट तथा शान्ति का वातावरण बनाये रखना अमम्भव-सा हो गया। द्वितीय गती ईसवी में साम्राज्य का बल सेना नायकों पर निर्भर हो गया। सम्राट कमाएक और कभी दूसरे सनानायकों के हाथ की बठपुलली हो जाता था। उन लोगों के पारस्परिक मधुपर्कों और गुलछरों का भार जनता का उठाना पड़ता था। अन्न परिस्थिति हृद में बाहर हो गयी तब विद्रोह की ज्वाला भटक उठी। विद्रोहियों ने पीली पगड़ी को अपने दल की सदस्यता का प्रतीक बनाकर युद्ध छान दिया। उस आन्दोलन का स्थायी विचारकों ने जा किमानों के पुराहित-से थे समर्थन किया। इस विद्रोह

आदालत का मूत्रपात १८४ ई० में हुआ। चीन की सीमा पर रहने वाले कबीला की सहायता से किसानों के इस विद्रोह का दमनता हो गया, किंतु उसी के साथ राजाधिराज सत्ता हान वंश के हाथ से निकलकर वेई वंश के हाथ में चली गयी (२८८ ई०)।

हानयुग की उत्तरेखयोग्य घटनाओं में एक घटना यह भी थी कि राज्य ने कुछ व्यापार मन्वर्गी क्राय स्वतन्त्र व्यक्तिगता को न देकर अपने ही हाथ में ल लिये। पहाड़ी प्रान्ता समुद्र चीला तथा दलदली क्षेत्रों से कर उगाहना तथा यातायात क साधना का प्रवर्ध करना राज्य के कमचारिया को सुपुद किया गया। चीन म अजर दुर्भिक्ष पट जाने थे जिनका मुकाबला करने म किमान असमथ थे। अकाल स लाग बनी सरया मे मरते थे भीख मागते फिरत या बेगार करते थे। नये प्रवर्ध का शायद यह ध्येय था कि साधारण आवश्यकताओं की चीजे इस ढंग से नियंत्रित की जायें जिससे उनकी कीमता और दरा में अनावश्यक अथवा चिन्त्य हेरफेर न हो पाये। अच्छे सस्ते समय में अनादि पदाथ खरीद कर जमा कर लिये जायें और महगाद होने पर बाजवी दाम पर बच दिये जायें। कमी पडने पर एक स्थान स आवश्यकतानुसार दूसरे स्थान को माल यथामन्वर्ग गीघ्रता से पहुंचाया जाय तथा दुर्भिक्षादि दबी प्रकापा के समय राज्य के काष्ठा और खसिया में सचित पदाथ वाजिरी दाम पर लोग को मिल जाय करे। बाजार का भाव नियंत्रित रखने म जनता का उपकार और आवश्यक चीजा के सग्रह से सनिक रसद का मुमाना होने की सम्भावना थी। उपयुक्त नीति साम्राज्य भर में लागू थी।

उद्योग धंधे

चान मुरयत कृषिप्रधान देग था, किन्तु वहाँ उद्योग धंधे भी किसी हद तक होते थे। लकड़ी के काम में चीनी पहल से ही हागियार थे। हान युग में काच कुरमा मज बनायी जाता था। उनके बनाने में कास स भी काम लिया जाता था। चीन का हिल्मुस्तान स बाँस मिलता था। चीनी मिट्टी के बतन भी बहुत बनिया आर कगमर बनाये जात थे। गीने की चीज द्वितीय गता स बनने लगी थी। उमी गनी म हिल्मुस्तान स रई चीन पहुँची जिसम वहाँ मूर्ती कपड बनने लग। उस युग में चीनी लाग अन्व प्रकार के कागज भा बनात थे। वहाँ के उद्योग धंधे कानानुगत और कारीगर श्रेणीयद्ध थे। चीन में अधिन्तर रगम नमक लाहा, जल गग का वस्तुओं का व्यापार हाता था। पहेले ता वस्तु विनिमय का चलन

था, किन्तु पाँचवीं शती ई० पू० से सिक्का का प्रयोग होने लगा और बका द्वारा लेन-देन भी। पर तृतीय शती ई० पू० में ही विनिमय की प्रथा बंद कर दी गयी थी। नहरा और मडवा की वृद्धि तथा माल लाने और ले जाने के साधना का राज्य द्वारा नियंत्रण होने के कारण व्यापार बढ़ता गया। प्रथम शती ई० पू० में चीन का यूरोप से व्यापार होने लगा था।

शिक्षा-दीक्षा

चीनी लिपि में न तो वण हैं न वाक्यविन्यास और न समुच्चार। विचार प्रकट करने के लिए लगभग चालीस हजार चित्रीय प्रतीक थे जो मात्र सा उच्चारण द्वारा प्रकट किये जाते थे। उनमें दस सौ चौदह नितांत बुनियादी चित्र थे और छ सौ व्यावहारिक जिनसे साधारणतया काम चल जाता था। पटना लिखना केवल उच्च श्रेणी के लोगों के लिए ही सीमित था। सुशिक्षित व्यक्ति वह माना जाता था जिन्होंने तर्कशास्त्र, आचार नीति, इतिहास तथा प्रकृति विज्ञान का अध्ययन किया था। किन्तु श्रेष्ठ लोग वे माने जाते थे जिन्होंने लिखने-पढ़ने तथा गणित के अलावा संगीत व्यवहार-कौशल धनुर्विद्या एवं अश्वारोहण भी आता था। ऐसी जटिल लिपि के होते हुए भी चीन में साहित्य ने आश्चर्यजनक उन्नति की। प्राचीन साहित्यकारों में दार्शनिक कनफ्यूसिस का सबसे ऊँचा स्थान था। उसने गिफ्टाचार व्यवहार इतिहास दर्शन गायत्रि तथा काय सम्बन्धी विशाल साहित्य की रचना की जिसका सम्मान अद्यावधि होता है। यद्यपि गद्य रचना अच्छी-भासी होती थी तथापि चीन के लोगों में नैसर्गिक कविता की स्वभाविक प्रवृत्ति भी थी। वणनात्मक या प्रबन्ध काय के पोषक न थे। उनकी धारणा थी कि क्षणिक अथवा संचारी भाव ही काय का विषय है। शब्द तो सबेत् मान्य हैं। इन सबके व्यञ्जनात्मक भाव ही कविता के प्राण हैं। चीनी कविता प्रायः अतुलान्ता होती थी। हान युग तक काय न खासी उन्नति कर ली थी यद्यपि उसका पूर्ण विकास जागे चलकर हुआ। उनके लावणीयता से पुरातन चीन के जीवन तथा विचारों का चित्रण होता है।

द्वितीय शती ई० पू० में चीन के ज्योतिष के सिद्धांत से परिचित हो गये थे। चीनी कहते हैं कि हानयुग (२०८ ई० पू० से २२० ई० पू० तक) में ही उन्होंने कम्पास बना लिया था। कन्फ्यूसिस के समय से गणित द्वारा ग्रहण पटन का समय बताया जा सकता था। फलित ज्योतिष का भी प्रचार होने लगा था।

चीन का वैदिक-आ से सम्पर्क हो जाने के कारण यूनानी गणित का प्रभाव चीन पर पड़ा। सम्भव है कि उसी के प्रभाव से चान में कीमिया (रसायन) तथा अगूनी गारा का भी प्रचार हुआ है। चिकित्सा शास्त्र में भी चीन ने अच्छी उन्नति कर ली थी। चीनिया ने रोग का वर्गीकरण ऋतुओं के अनुसार किया। उस समय क उल्लेख है कि ज्वर शिग पीडा वायुजनित पीडा चमराग, कण्ट जोर फेफडे के रोगों का वर्णन और उनकी चिकित्सा विधि मिलती है। चानिया को यह बात हा गया था कि हृदय में ही रक्त शरीर में धोका जाता है। बहतर प्रकार की मज्जा का उल्लेख उहाने किया है। औषधिया बनस्पतिया घातुओं पशुओं तथा अनाज से बनायी जाती थी। चीन वाठ जल, अग्नि काण्ट स्वर्ण और मिट्टी को मूल पच-तत्त्व मानते थे। चिकित्सा में वे जाटू-टाटके आदि का भा प्रयोग करते थे।

साहित्य

ईसा पूर्व पाचवी शती के अन्तिम वर्षों से लगभग दस सौ वर्ष तक चीन में सामन्तों के भयकर युद्ध हात रहें। उस युग का सामन्ती राज्या के मघप का युग कहते हैं। इस युग में चीन की बानानिक साहित्यिक एवं कलात्मक प्रतिभा ने अपूर्व चमत्कार का प्रदर्शन किया। राजनीतिक क्षेत्र में अधिक काल तक अवस्था तथा घात प्रतिघात में सतप्त जोर उत्तेजित हाकर चीनिया के बाह्यिक जोर वात्पनिक जीवन में विलक्षण स्फूर्ति एवं चेतना उत्पन्न हा गया जिसका प्रभाव साहित्य, कला तथा ज्ञान विज्ञान के क्षेत्रों पर स्थायी रूप से पडा। व्यवस्था तथा शांति का राज के मिलान में आधिपत्य जोर जाधि भौतिक लावा तथा उनके रहस्या का चितन उठाने स्वतंत्र रूप से किया। विचार और विमर्श की दृष्टि से चान का बह युग उस दग के इतिहास में अद्वितीय ममचा जाना है।

ज्ञान युग की रचनाओं में प्रथम स्थान छ जाप ग्रंथा (पनाट्टु) का दिया जाना है। वस्तुतः उनमें पुरातन मन्त्रों और विचारधाराओं का संग्रह है। ये छ आप ग्रंथ ये का य (गि) इतिहास (ग) सम्कार तथा गिप्याचार (ग) गान (यूच) पग्गिन (ई) गिगिर बमान बतान (चु जन चि' इन)। उन ग्रंथा का मग्रहणता अथवा रचयिता क उग फूज (बनपयसिअम) माना जाता है जो भगवान गौतम बुद्ध का समसामयिक था। इन पद्य विद्या के गिगता में माजुग (३०-१६६ २०) मुख्य कहा जाता है। चान के इतिहासकारों में स्मु में चि एन (म० १० २० पू०) का स्थान प्रमुख माना जाता है। चान वाट इमना बह

स्यान दते ह जा ग्रीम के ट्राडोटम का बराप में प्राप्त ह । उसका ग्रंथ 'गि ची नाम म प्रसिद्ध है । उसकी मृत्यु के पश्चात् का चीना इतिहास पन पिआजा जीर उसका पुत्री पनचाआ ने लिखा । वह इतिहास सौ भागो म लिखा गया । पनचाआ विदुषी था । इतिहास के अलावा उसने कविताएँ निबन्ध अदि भी रत्न । म्गांग पर जिममें वनस्पति और जन्तु जगत का वर्णन भी शामिल है । सन हाद चिंग नामक ग्रंथ की रचना हुई । सप्टि रक्षा पर 'लिउ जान ने (म० १२० ई० पू०) हाउन्न त्ज नामक ग्रंथ लिखा । दाशनिना म यांग ह्यउगने त अर्ध ह्यन नामक प्रतिष्ठित ग्रंथ की रचना की जिममें उमने लाओत्ज तथा कनफ्यूमिअस के विचारो म समक्य स्थापित करने की चष्टा का ।

हानयुगीन साहित्यक प्रतिभाशाली कवियो म म्मु म ह्य जग मई गग एव त मई पुग गिने जात ह । छंद रचना क विधानो का सम्कार करन क माय ही उनकी कविता में भावा की सरलता और श्वाभाविक वर्णन की छटा लिखाई देती है । ईमा की ततीय गती म ह्यिक अग नामक एक प्रसिद्ध कवि हुआ जिमकी कविता मे ताजा मिद्धात का प्रबल प्रभाव लिखाइ देता है । उसने एक सचरणशील कवि-समाज की भी स्थापना की । चतुर्थ गती मे लू ची वायु जीर उनक बाद मुप्रसिद्ध त जाचिएन नामक कवि हुए जिनकी रचनाआ का प्रशंसा जाजनक हाती है । ताआ मत की-मी स्वतंत्रता विरहित जीर आत्मस्थिति की भावना उनमे झलकती है । चीन म गद्य म भी रचनाएँ होनी थी । ततीय गती के चतुर्थ शतका म का हुग सत्रम प्रसिद्ध लयक हुआ । चाना भाषा तथा लिपि विज्ञान पर ह्युशेन ने एक उल्लेखनीय ग्रंथ की रचना का ।

विज्ञान क गणित जीर ज्यातिष जग पर दसलिए विषय ध्यान लिखा गया कि उनका चीन क दर्शन तथा धार्मिक विश्वासो स घनिष्ठ सम्बन्ध हा गया था । दक्षता तथा शक्य विचारका की कला विद्या एव विचारधारा अधिकतर उन पर ही जाधिन थी । ज्यामिति बीजगणिता और गणित म हानयुग से पूर्व भी कुछ कार्य हो चुका था । किन्तु हानयुग मे चांग ह्येग नामक प्रतिभाशाली विद्वान ने ज्यातिष क नया ग्रंथ रचे । उनके विचार स ह्य्याण्ड एक जण के समान थे जिमका छिलका जाकांग जीर जण्टपीन (अरबी) पथवी ह । इससे यह जनमान किया जाता है कि वह अण्डाकार गोल के समान पथवी की कल्पना करता था । गणित न इतनी उन्नति कर ली थी कि जिममे व्यास का वत स अनुपात घनत्व फल मूल्य की ऊँचाईका करीब-करीब ठीक अनुमान तथा साम्यिकी क प्रयोग सम्भव हा गये थे । इसके

हाना दुस्तर रहा। बाँस की बनी जानबरा की विविध जासनस्थ मूर्तियाँ विलक्षण एव आश्चर्यजनक ह। बटे-बडे घटे और घडियाल च उ युग में भी बनाये जाते थे। मनुष्या एव पशुआ की उत्कीण मूर्तियाँ म मजीवना और गति का अच्छा प्रमाण मिलता है। कासे पर की गयी पालिश गीने की तरह चमकदार और प्रतिबिम्बग्राही हानो थी। लकड़ी पर नस्नानो का विचित्र काम बनाकर उस पर रंग त्रिरगी पालिश की जाती थी जो सम्भवत विदगिया से सीसी गयी थी।

हानयुग में चित्रकला ने भी उन्नति की। बटे पमाने पर पशुआ देवी देवताआ तथा प्राकृतिक दश्या क चित्र बनने लग। मनुष्य क चित्रण में पहले से अधि-कृष्णता और वामलता दिखाई देती है। रसाआ क प्रयोग म चीनिया ने इस युग म लाघव और कोमलता की ओर विशेष ध्यान देना आरम्भ कर दिया था। जागे चक्रर इसा म उनक चित्रा का महत्त्व बढ़ गया। मिट्टी, धातु जयवा लकड़ी की चीजा पर विविध प्रकार की नस्नानो और चित्र बना कर मोने चान्नी के गगा-जमुनी काम स उन्हें मजान का उनको चास गोक था। कुछ कुछ पौराणिक ढग की बल्प-नाआ तथा अन्तहित स्वामाविक कौतूहल के कारण क देवी-देवताआ की मूर्तिया तथा पशु-पशुविया के चित्र कुछ ऐसे रूप मे बनाते थे जिसका अस्तित्व धाम्त्विक ऋगन में नही केवल कात्पत्रिक ऋगन में ही पाया जा सकता था। उनसे चीनिया क कपना लोक के मजन पर अच्छा प्रकाण पडता है। सामूहिक चित्रण तथा जुगुसा का प्रदगन भी उनकी कला में मिलता ह। यद्यपि चीनिया क चित्रा म हाम्य और मयानक का पुट रहता था तथापि यह माना जाता था कि पशुआ तथा मनुष्या क मानसिक भावा तथा उनकी गारीरिक गतिविधि का प्रदशन करने का भी क प्रयत्न करते थे। सम्राट ह्य जन ती स्वय अच्छा चित्रकार था और उसने चित्रकारा का यथेष्ट प्रोत्साहन दिया। उस युग क चित्रकारा मे माओ एन शू प्रमुख गिना जाता है। हानयुग के अन्तिम काल में यूनानिया और बौद्धा की मिश्रित कला चीन म प्रविष्ट हुई। उसका प्रभाव हानयुग क बाल के चित्रा तथा चीना कला पर अधिक माना मे पाया जाता है। हान सम्राटा में दू ती सगीत विद्या का कवत्र प्रेमी ही न था बरन उसने दरबार में एक सगीत समा की स्थापना भी की था जिसमें तत्कालीन सगीताचार्यों की नियुक्ति का गयी थी।

दशन

दशन का ओर चीनिया की स्वामाविक प्रवृत्ति है। बहा बटे प्रतिमाशाली

जीर प्रभावशाली दार्शनिक हुए हैं जिनका स्थान विमान या मन्मथा व दार्शनिका रा उभ नही । मत्र स आरव्य की वा ता यत्र न वि चान व प्राचान दार्शनिका ने एस एस सिद्धाना वा निरूपण किया न जा प्राचीन वात्र व हा नहा वरन जापुनिक बाल व दार्शनिक सिद्धान्ता व लिए भा चमत्कारा ह । दूसरी विचारणाय वात यह न वि सामंत युग की कुयप्रस्था म ही चीन व र्णत एत्र वाय का अभ्यन्त्य हुआ । यह कहना अभी ता सम्भव नहा कि चाउ वग (११०२ ई० पू० स १५० २० पू०) व पहल चान व लगा व सामाजिक जयना धार्मिक विचार जीर विचारम क्या ये । चाउ युग म जिस प्रकार स उनना प्रम्पुटन हुआ उसम प्रतात हाता ह नि पत्र म ही विचारा जार विद्यामा का प्रवृत्त धारण चला जा र्ण हागा । उम युग व विचारका म सम्भवत छ नहा ता चार मत ता जवय ही स्पष्ट रूप म प्रचलित हा गय व जा विचार वा दृष्टि स गभीर जीर महत्वपूण ये । उन विचार-धाराजा वा सम्बन्ध ऐतिहासिक पण्डितमि स ह । उन युगा व इतिहास वा रूप र्था पहल लिखा जा चुकी न इसलिय इतना सवत करना काफी हागा कि उन युगा म एक प्रकार की राज सत्तात्मक सामन्ताही थी जीर हूण तुक तथा तिब्रता लगा व जानमण होत रहत थे जिसस माधारण श्रणी जीर किमाना मजदुरा का दगा अच्छी न थी । उन पर मुनीवता व वात्र बाल मडराया करत थ ।

उपयुक्त परिस्थिति मे विचारना व सामने कुछ महत्वपूण समस्याएँ उठ खडी हूट । पहली यह कि सामाजिक संगठन किस ढंग वा हो जिससे लोग गार्ति जीर सुय का जीवन यतीत कर सक । दूसरी यह कि उम जादग समाज की रचना व क्या लक्षण जीर माधन होने चाहिए । तासरी यह कि मनुष्या के जापस म क्या कत यह जार उनना समाज तथा प्रकृति से क्या सम्बन्ध हे ? चीनिया की ये समस्याएँ लाकिक थी पारगैकिक नहा जार उनक समाधान व लिए लौकिक साधन ही जाव-न्यक थे । लाकिक ज्ञान का मापदण्ड प्राकृतिक मण्टि की यवस्था सम्बन्धी सिद्धान्त ह । प्रकृति निरीक्षण से यह स्पष्ट प्रतीत हाता है कि उसका व्यापार व्यवस्थित ह उसके नियम स्थायी रूप स विभिन्न श्रेता म काम करत रहते ह । इनीलिए प्रकृति में अन्या-याश्रयिता जीर सहयोग का नियम अवाध रूप से काम करता है । जन प्रकृति को ही गिशक जीर गुरु मानना चाहिए । चीनिया का यह भी विश्वास था कि प्रकृति और उसके जवयव एकदम जड नहा ह व सब अनुप्राणित ह । हर एक हिस्स का अपना-अपना प्राण तेज तथा स्थान है । उन सब म सामजस्य तथा सहयोग की स्थापना एक विश्वा-मा द्वारा होती है जिसकी अपनी विगिष्ट

मत्ता है जोर जिस चीनी त इ एन जयवा गग तो कहने थे । सष्टि रूपी प्राकृतिक
मात्राग्य का वही अधिष्ठाना जोर मन्नाट है । उसका प्रतीक जाकाग है जा सारे
प्राकृतिक जगत् का घेरे हुए ह जोर जिसकी गोद म सारा प्राकृतिक व्यापार व्यवस्थित
ढग से चल रहा ह । साधारण गग ता विगिष्ट यक्ति के रूप में उमकी कल्पना
करत हागे, कि तु सिक्षित विचारक उमको एक यापक सत्ता जयवा व्यापक तत्त्व
मानत थे । वह तत्त्व यापक होने पर भी अपनी स्पष्ट एकाकी स्वतन्त्र मत्ता रखता
था । जय दवनाआ का भी अपनी स्वतन्त्र मत्ता त इ एन जमी थी । प्रकृति की
विभिन्न शक्तिया और उपयुक्त सब यापक तत्त्व के अनुरूल मानव समाज की रचना
हाने से सर्वोप्य, गति सुख की स्थापना हा सकती है । समाज का प्रत्येक अंग
और व्यक्ति अपनी अपनी सीमा अथवा परिधि में अपने स्थान के अनुकूल अपना
चतन्य पालन कर ता मानव समाज के श्रेय जोर प्रेय क लक्ष्य की पूर्ति हा सकती है ।

चीनिया का विश्वास था कि मृत्यु का व्यक्तित्व मृत्यु के बाद भी कायम रहता
ह आर उस व्यक्तित्व को भी सुख और दुःख का अनुभव हाना है । उसकी भी मानव
समाज का ही नहा, बरन अपने-अपने वयनिक कुल वग, कुटुम्ब और परिवार का
भलाइ म सश्रिय दिलचस्पी रहती है । उमकी बुराइ स उसको वदना हाती ह । अत
उसका जाशीवाद और सहयाग प्राप्त करने के लिए उसको प्रसन्न रचना उसक
परिवार वाला का आवश्यक कतय है । चीनिया का यह विश्वास जीवित लोग
का दिवगत लाग से अथवा या कहिए कि मृत्यु लोक का पितलोक के माथ अटूट
सम्बन्ध स्थापित करता था । इसीलिए चीनिया की अपने पूवजा और पुरखो म
मन्य बडी श्रद्धा रही ह ।

प्राकृतिक शक्तिया तथा पूवजा का स्वानुकूल रखने और उनका सहयाग प्राप्त
करने के लिए दा वाता की आवश्यकता माना जाती थी । पहिली यह कि समाज का
अंगठन प्रकृति क प्रतिरूप हाना चाहिए । समाज क प्रत्येक अंग जयवा यक्ति का
अपनी अपना परिधि म अपने निर्दिष्ट कतव्या का पालन श्रद्धापूर्वक करना चाहिए ।
दमरी यह कि प्रकृति की शक्तिया तथा पूवजा का स्वानुकूल बनाये रखने जोर
उनका सहयाग प्राप्त करने क लिए श्रद्धा एव विधिपूर्वक यजन याजन, कमवाण्ट
और सस्कार जाति करने चाहिए । पूवजा के निर्दिष्ट विधिनिषेध माग का अनुकरण
श्रद्धापूर्वक करत सफलता का एकमात्र साधन है ।

उपयुक्त सक्षिप्त बणन स यह अनुमान किया जा सकता है कि चीनिया जोर
भारत के आर्या क विश्वासा में पयाप्त मूलगत समानता है । उनकी विश्वात्मा,

दक्षिण शक्तियुग तथा पितृलोक की कल्पना मानव जगत् का उनका सम्प्रदाय, पारस्परिक सहयोग, यज्ञानि, आचार विचार सम्बन्धी विचारधाराएँ परम्परागत नीति नीति व निर्याह व्यक्ति व कुटुम्ब, वंश-जार कुल म सम्प्रदाय श्रद्धा त्रिाय तथा निष्ठाचार की कल्पनाएँ आदि मत्र ज्ञान परम्पर मिश्रणी जुगना ह । एसा जान पन्ता - कि या ता जनि पुराणा काल म, जब उनका मूल पुण्य मध्य एगिया जयवा तिद्यत मे रहते थ परम्पर दाना का घनिष्ठ सम्प्रदाय रहा हागा या दाना का एन हा सस्कृति के काप से अपनी-अपनी विचार धाती प्राप्त हुई हागा । इम अनुमान में सत्य की सम्भावना किसी जस तक है, किन्तु पर्याप्त प्रमाणा व जभाव में दडतापूर्वक कुछ कहना जमी सम्भव नहीं । उपयुक्त समानताआ व रहत हुए भी कुछ विचारणीय और गम्भीर विभिन्नताएँ भी प्रतात होती ह । एक तो यह कि धर्मि विचारका म यह विश्वास था कि सर्वोपरि दक्षिण सत्य में इश्वरत्न का गुण स्वभाव स है जिससे प्रेरित हाकर वह सृष्टि की रचना करता है जिसमें जड-जगम दव तथा मानव जगम जादि मत्र कुछ ह । वह सबव्यापक ही नहा सबन और सबशक्तिमान है । उसी के इच्छानुकूल विश्व का सारा यापार चलता है । मनुष्य व उपकार व लिए उसा ने आवश्यक कत याकत य का ज्ञान वेदा के रूप म जवनरित किया । उसकी जानाआ के प्रतिपालन से मनुष्य का ऐहिक और पारलौकिक कल्याण हा सफता है । दूसरी बात यह कि चीनी सस्कृति का ध्येय मुख्यत लौकिक ही रहा किन्तु भारत को सस्कृति का प्रवाह धीरे धीरे पारलौकिकता की आर हा गया । लोक की जार स विरकन होकर जाध्यात्मिकता का जोर भारतीयों की प्रवृत्ति बढती चली गयी । तीसरी बात यह कि चीन म पुरोहितो अथवा यानिका की विगेष श्रेणा या वग न या किन्तु भारत व धण घम म उहें विशिष्ट स्थान बाद को दिया गया । यद्यपि समानता और जसमानता के बहुत-से जय रोचक विषय भी ह किन्तु उनका विस्तार के लिए यहां स्थानाभाव है ।

चीनिया के सिद्धांत के अनुसार शक्तियुग दो प्रकार की ह अधिकतर उपकारी और कुछ अनिष्टकारी भी । उन शक्तियुग के प्रतीक बनाकर वे उनका प्रसन्न रखने का प्रयत्न करते थे । वहां गह देवता ग्राम या नगर के देवता तथा कुल वंश देवता व सिवा अनेकानेक देवता विभिन्न क्षेत्रा कार्यों और जवसरा के लिए प्रतिष्ठित थे । देवताओं के लिए देवालय, वेदिया विशप स्थान जादि स्थापित कर दिय गये थे । हर एक प्रांत और स्थान के अपने अपने देवता थे । त इ एन का पूजन और उसका निमित्त यज्ञादि कृत्य एक ऊँचे विशाल खुले हुए चतूतरे पर प्राय राजा ही करता था ।

त इ एन के सिवा व्योम सूय चद्र नक्षत्र, तारक, राशि, पथ्वी वायु, अग्नि दवा मघ जल, पवत, सेती जादि के अनेकानेक देवता थे । बहुता के लिए दवालय बने हुए थे और जयो के लिए स्थान बनिया जादि बना दा गया थी । सबसे कुतूहलवधक व दवालय थे जिनमें माहित्य देवता, सस्कृति देवता विधान क देवता प्रतिष्ठित विचारक तथा ग्रन्थान सेनापनि नेता शहीद जादि प्रतिष्ठित कर दिये जात थे आर उनका भी पूजन किया जाता था । अनिष्टकारी शक्तिया को भी आल्यो में प्रतिष्ठित किया जाता था क्याकि उनकी भी तुष्टि करना आवश्यक था । कभी कभी मंदिरा में पाठशाला अथवा न्यायालय क लिए भी स्थान बना दिया जाता था ।

सुगन्धित द्रव्य तथा धूपदीप से तथा विविध प्रकार क बलिदाना द्वारा जिनमें मान्य और पय तथा पशु और नरवर्ग भी शामिल थी देवताआ का पूजन हाता था । पूजन में यत्न मात्रपाठ स्तुति के अलावा गाने-बजाने का भी सिलसिला रहता था । अनेक प्रकार के आमनो द्वारा वदना की जाती थी ।

चीन के धार्मिक विधान में कुछ उल्लेखनीय विशेषताए मिलती ह । पहली यह कि उनके धार्मिक विचार म जटिलता अथवा मनोबन्ति म असहिष्णुता या कट्टरपन नहा पाया जाता । सब सम्प्रदाया के प्रति उनके भाव उदार थे जिससे उनकी धारणाए बहुमुखी और मिश्रित रही । दूसरी यह कि उनम पुरोहिता अथवा धर्माधिकारियो का कोई विशेष बग अथवा वशानुगत धेणी न थी । तीसरी यह कि गिप्टाचार और यत्नादि पूजन विधान की विविध क्रियाआ एव विधियो के अक्षरम पालन पर बहुत जोर दिया गया । कतव्याकतव्य तथा नैतिकता का भाव उनके धर्म का मुख्याधार गिना जाता था । उसकी सहायता से वे व्यवस्थित ही नहीं बरन जादश समाज का निर्माण करने का प्रयत्न करते रह । चौथी यह कि पूवजा, गुरुजना और बटे नूहो क प्रति उनकी अटूट श्रद्धा रही । उनका सम्मान करना और उनके अनुशासन का प्रतिपालन करना कुटुम्ब, समाज तथा लोक-कल्याण क लिए अनिवाय गिना जाता था । फलन सहानुभूति, सुहृदभाव वफादारी, निमल व्यवहार आदि गुणा को सामाजिक जीवन में विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ । पाँचवा यह कि राजनीतिक और धार्मिक संगठना में भिन्नता न होने क कारण उनमें पारम्परिक सघप होने का प्रश्न ही नहीं उठता था ।

चीन में एक सम्प्रदाय दवज्ञा अथवा शकुनशानिया का था जा विविध प्रकार की रवाआ पर विचार करके भविष्य बतलाता था । उसका विश्वास था कि शिदु या ता एक साथ सटे हात ह जिनम लकीर बन जाती है या पथक पथक हाते हैं जिससे

रेखा टट जाती है। उनके मदा धार प्रमत्ता का विचार कर उपाय चागठ छ वान
वाल चत्र बनाय जो विश्व के सम्पूर्ण रट्म्य का उन्घाटन करन म ममथ गमग
गये। भन्न रखा स्त्रीलिंग, जनमण्यता गच्छिण्णुता तथा जाधीनता की जोर सीधी
लकीर पुल्लिंग, मवमता जा र सत्रलता की प्रतीक माना गयी। उहा दाना व जगणित
सयाजन और वियाजन अथवा मागायाग म विश्व का मय व्यापार चन्ता बनाया
गया क्याकि उहा में विश्व की जट छिपी हुई थी। जाकाग और वय्या जिह चीना
एग जोर यिन कहने ह न्रभश पुल्लिंग जोर म्थालिंग बनाय गये।

यद्यपि चतुथ शती में विश्विगिया की सत्ता के कारण वनपूसिअम तथा लजागम
के मता का जवननि हा गयी थी तथापि बौद्ध धम ने चान म उन्नति की। उसका मय्य
कारण यह बताया जाता ह कि चीनिया का सिष्ट और शिक्षित वग जा उपयुवन
चीनी विचारका का अनुयायी था, बौद्धा का निम्न श्रेणी का समझता था। फलत
चीनी बौद्ध मध्य जोर निम्न श्रेणी म मिलकर काम करने लग। मन्थानी बौद्धा
ने चीनिया का मनुष्य की मरणोपरात गति जोर कर्मानुमार फल का सिद्धात
सिखाया। लागा को यह आश्वासन हुआ कि जयायी का जततागत्वा दड जा
दलितता का उद्धार हागा। यह विचार चीन की दलित जोर पीडित जनता का
घय जोर आशा का सम्बल प्रतीत हुआ जिससे वह प्रभावित हो गयी। इसके सिवा
बौद्धा के विहार, व्यापारिया के लिए बक मालगागम एव नय विशय व स्थान भी
वन गये। व्यापारिया की सहानुभूति पाकर विहारा का घन और भूमि प्राप्त हान
लगी। अपनी जमीन पर बसने वाले लागा स बौद्धा ने जया की अपेक्षा अच्छा
वताव किया। यदि असली चीनिया के हाथ म राजसत्ता हाती ता गायन बौद्धा
को उतना सुविधा या अच्छा जवसर न मिलता। कि तु हूणा, तुकां जोर तिबतिया
का बौद्धा के कामा में अधिक लिचस्पी न हाने के कारण उहाने उनक सान्त म
वाइ बाधा न टाली जोर व फलत फरने रह। यही नही चीनिया की राज्य व
प्रति उदासीनता के कारण उहाने शिक्षित बौद्धा म मे ही राजकमचारी नियुवन
किये जिससे बौद्धा का महत्व जोर भी बढ गया जोर अपने मत व प्रचार करने का
अमृत्य जवमर भी उह प्राप्त हो गया। खातान बाद्धा के धम का वटा के द्र बन गया।

पाचवी शती के दूसर चरण म तागा वश ने एक वटा साम्राज्य स्थापित किया
जिसमें चीनिया का महत्व बढता गया। कि तु तागा सम्राट न बौद्ध धम के प्रति
अनुराग दिखाया जिससे चीनी भा अधिकाधिक उस आर युक्ने लगे। बौद्धा न
सम्राट का जवतारी होने की प्रतिष्ठा दी जिससे उने इश्वरत्व की प्रमा उती प्रकार

प्राप्त हुई जगी कि चीनिया के देवपुत्र की कल्पना द्वारा हुई थी। यह स्मरण रखना चाहिए कि चीन में बौद्ध धर्म भारतीय बौद्ध धर्म से बहुत कुछ मिश्रित हो गया था। उमन श्रमणा तथा चीनिया के मिद्धान्ता से लेकर जादू टोना आदि अनैतिक विद्वानों का आत्मसात् कर लिया था। अतएव चीन में इस धर्म का प्रचार करने की उनका अधिक मुविषा भी हो गयी।

कन्फ्यूसिअस (५५१ से ४७९ ई० पू० तक)

कन्फ्यूसिअस का जन्म ५५१ ई० पू० का विन्चिंग महत्त्व है। उस युग में भारत, फारस तथा यूनान आदि सभी देशों में बड़े-बड़े महात्मा और विचारक प्रकट हुए। चीन के सत्त बन्फ्यूसिअस का भी उन महात्माओं में उँचा स्थान है। कन्फ्यूसिअस ने विन्चिंग प्रांत में चीन के प्रसिद्ध सम्राट ह्वान ती के दरबार में उनका जन्म हुआ था। जब वह तीन वर्ष के थे तभी उनके पिता का देहान्त हो गया। जत बढ़ा माना के पापण के लिए उन्हें विद्याध्ययन के माध्यम-माध्यम धनोपाजन के लिए भी परिश्रम करना पड़ता था। उन्नीस वर्ष की उम्र में उनका विवाह हुआ तथा एक पुत्र भी हुआ। कहा जाता है कि चार वर्ष के बाद उनका वैवाहिक सम्बन्ध टूट गया। बारह वर्ष के उम्र में अपने स्वतंत्र विद्यालय स्थापित कर इतिहास, वाक्य तथा सदाचार की शिक्षा देना शुरू कर दी। धीरे-धीरे तीन सहस्र विद्यार्थियों को उन्हीं शिक्षित किया। यद्यपि कन्फ्यूसिअस का उन्नति की आकांक्षा थी तथापि वह किसी भी श्रृंखला के जगिलापी नहीं रहे जपितु स्वतंत्र प्रवृत्ति के ही रहे। तान वर्ष के शिक्षा देने के बाद वह एक नगर के मजिस्ट्रेट नियुक्त किये गये (५०१ ई० पू०)। यहाँ से बढ़ते-बढ़ते मन्त्री के पद तक पहुँच गये। कहा जाता है कि प्रत्येक स्थिति में उनका आचरण एवं गामन शुद्ध वाक्यमूलक एवं आत्मिक था। जब कभी वह अपने स्वामी का आचार भ्रष्ट पाते तब उसकी नीकरी छोड़कर अलग चले जाते थे। तेरह वर्ष तक वह इधर-उधर भ्रमण करते रहे अपमान भी सहते रहे किन्तु अपने सिद्धांत पर अटल रहे। जीवन के अन्तिम कुछ वर्ष उन्होंने साहित्य, इतिहास तथा दर्शन की रचना में व्यतीत किये। बन्फ्यूसिअस ने नौ प्रामाणिक ग्रन्थों की रचना की जिनका सम्मान चीन में ही नहीं बरन सत्तर में आज तक होता जाया है। तेरह वर्ष की आयु में उनका देहावसान हो गया। तब तक उन्हें अपने देशवासियों का चरम आदर तथा अभूतपूर्व सम्मान प्राप्त हो चुका था।

कन्फ्यूसिअस की धारणा थी कि चीन के पुरातन युग में लोगो का जीवन

और उनसे जाचार विचार जाना था। तन्नुकूल जाचरण करने से मरवा कल्याण की जासा की जा सकती है। शिष्टाचार में ही समाज दृढ़ दीर्घजीवी जा र मुगी हो मरवा है अथवा दुखी हासर नष्ट हा जाता है। पूरजा का सम्मान जा राधन जा र अनुकरण मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है। कनफूसिअस का विचार था कि मर्राट सामरत, कमचारी गिथिन जन ठुपक तथा मरदूरा का चारिण कि अपन अपने वग म रहकर अपना-अपना कर्तव्य करने रह। उसी में सबका कल्याण है। निमी भी वग अथवा व्यसित को वह जमना ऊंचा-नाचा नहीं मानते थे। समाज अपना अपना स्थान और महत्व ममज्ञत थे। उनसे विचार से अपनी परिधि म रहकर कर्तव्य पालन करना ही मानव-जावन का मुख्य उद्देश्य था, तथा वर्गानुसार कर्तव्य करना ही धम। वग की मर्यादा का ताडने जा र वर्गों को ताड फाडकर व्यतिश्रमण करने से सामाजिक व्यवस्था विगट जाती है जिससे कर्श जा र अत म विनाश हा जाता है। उनके इस सिद्धान्त से यह न समझना चाहिए कि वह अव्यवस्थित, अनियमित स्वेच्छाचारी या अत्याचारी सामाजिक विधान या गामन के पोषक थे। वास्तव में वह उसके विरोधी थे। उनके कथन का माराग यह था कि जहाँ व्यक्ति अथवा वग अपनी मर्यादा क अनुकूल आचरण करते हैं वहा जीवन मधुर मुगी और शान्त होता है। वह सरल एव स्वाभाविक जीवन के पक्ष में यहा तर्क थे कि रहन सहन के अलावा बालने लिखने पढने में भी सरल स्पष्ट भाषा का प्रयोग कृत्रिम शली की अपेक्षा श्रेष्ठ समझते थे। उनके मत में अपने गुणों और कर्मों के अनुसार विना उपद्रव अथवा क्रांति के कोई भी व्यक्ति एक वग से दूसरे में जा सकता है पर जहा कही भी वह हो उसे उस वग के कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

कनफूसिअस ने किसी नवीन धम या दारानिक सिद्धान्त का प्रचार नहीं किया। जीव मर्यु अलौकिक शक्तियाँ आदि विषयक ऊहापोह से वह बचते रहते थे। किन्तु उनका विश्वास था कि अनेकता में एक गम्भीर एकता निहित है। उसका समझना जा र जीवन में स्थापन करना शिक्षा-दीक्षा का मुख्य ध्येय है। प्रत्येक व्यक्ति का समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। कौटुम्बिक जीवन म ही उसकी माधना हो सकती है। मनुष्य को सफरता समाज के द्वारा हो सकती है विलग होकर नहीं। समाज या राष्ट्र भी तो अततोगतवा कुटुम्ब का ही एक विशाल रूप है। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति आचार जा र कर्तव्य का शुद्ध भाव से प्रतिपालन कर तो निश्चय ही समाज और राष्ट्र सुखी तथा समृद्धिगाली हो सकता है। मनुष्य को बौद्धिक ज्ञान से अधिक आचरण की आवश्यकता है। अतएव प्रत्येक

को भी मित्रता चाहता था किन्तु उममें उस सफलता न हुई। चुनाव में सीजर का गल हो गया। अपने बाप व अनुसार उसने पाम्पे की मांग तथा ममि सम्प्रदाय कुछ प्रस्ताव सनेट और जनमभा में रने। जब उनका पास कराने में अधिक विरोध हुआ तब उमने पाम्पे व सनिका का जो रोम में था, सम्प्रदाय के प्रयाग व लिए उत्त-जित किया। जानक और त्राम दिवाकर यथेष्ट प्रस्ताव पाम करा लिये गये। सीजर ने अनुभव कर लिया कि बिना एक सबल मना की सहायता व उमका भविष्य अनिश्चित रहेगा। उमने अपने सनिकों के व की परत स्पन में की थी जिममें उमका आम विश्वास बढ गया था। उमका इच्छा पूर्ण हुई जब उमका इगारिजा और गाल की सूचना मिल गयी।

गाल उम प्रवेश का बहुत धे जिममें जाजकल प्राप्त आर बेजियम सम्मिलित ह। वहाँ कई जानिया व लाग रहन थे जिममें बल्ट, लाइजरिन, जमन जालि थ। जिस समय रामना से उनका सम्पर्क हुआ उम समय कम से कम पचास कबीले गाल में रहन थे। प्राय व जापस में लडत और सघष करत रहत थे जिमका सम्भवन पराग उद्देश्य विगाल संगठन होगा। पन्त जरवनों नामक कबीला के आक्रमण से पाजित होकर ममिन्धिया (भारसई)के व्यापारिया ने राम से महायता की प्रायना की। मयाग में दक्षिणी प्राग की ओर रामना का ध्यान विरोध रूप में क्मलिए आकर्षित हुआ कि कार्वेज व सनानायक हनीवाल न स्पन से उमी प्रात की मलाकर इटली पर आक्रमण किया था। इटली को स्थल माग से स्पेन जान व लिए दक्षिणा प्राप्त होकर जाना पन्ता था। ममिलियना का निमन्त्रण स्वीकार कर रामना ने वहा सेना भेजी जिमने लाजरियन और जरवनों कबीला का हराकर दक्षिणी प्राग पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया (१२१—१२१ ई० पू०)।

गाल व निवासी असभ्य न थे। यद्यपि साधारण लाग रखन-कला से अपरिचित थे तथापि उनका धार्मिक नता अपने कामों में ग्रीक लिपि का प्रयाग करत थे। गाल व निवासी अच्छा और भाजित मापा बालत और वीर काय रखन थे। धार्मिक विषया में उनके नेता डूइड लाग थे जिमका जनता व उपर अच्छा प्रभाव था और व धर्म तथा शांति की रक्षा के लिए समझौते से कर बहिष्कार प्राणशुष्ट आदि अतिम दण्ड तब देने का अधिकार रखत थे। गाल व कुछ कबीला पर राजा किन्तु अधिकतर सामंत राज्य करत थे। वहा शासनिक संस्थाए तथा पदाधिकार भी काम करने थे। उत्तरी यूरोप और पश्चिमा मध्य मागर तथा स्पन का व्यापार उनके ही द्वारा अधिकतर हाता था। व्यापार जलमार्ग और स्थलमार्ग

और उनके आचार विचार जाण्यथ। तन्नुकूल जाचरण करन स गवया वन्व्याण की आशा की जा सकती है। गिप्टाचार में ही समाज दट दापजीवी जार मुगी हो सकता है जयथा दुती हानर नप्ट हा जाता है। पूवजा वा सम्मान जाराधन और अनुकरण मनुष्य वा मुग्य वत य है। वनपयसिअस वा विचार था कि सम्राट सामत कमचारी सिमित जन वृषक तथा मजदूरा वा चाहिए कि अपन-अपन वग म रहर अपना अपना कलय करत रन्। उसी म सवना कल्याण है। किमा वग जयथा यनित वा वह जमना ऊवा-नाचा नही मानत थ। सपना अपना मी वग जयथा यनित वा वह जमना ऊवा-नाचा नही मानत थ। सपना अपना अपना स्थान और महत्व ममज्ञत थ। उनर विचार स अपना परिधि म रहर करत य पालन करना ही मानव-जीवन वा मुख्य उद्देश्य था तथा वर्गानुसार वत य करना ही धम। वग की मयाग वा तोडन और वर्गों वा ताड फाडकर यनिप्रमण करने से सामाजिक यवस्था विगड जाती है जिसस क्लेश और जन्त में विनाग हा जाता है। उनर इस सिद्धात स यह न समझना चाहिए कि वह अव्यवस्थित अनियमित स्वेच्छाचारी वा जत्याचारी सामाजिक विघान वा शासन क पापय थ। वास्तव म वह उसक विरोधी थ। उनके कथन वा साराग यह था कि जहा व्यक्ति अथवा वग अपनी मर्यादा के अनुकूल जाचरण करते ह वहाँ जीवन मधुर मुगी और दान्त होता है। वह सरल एव स्वामाविक जीवन के पक्ष में यहा तन थ कि रहन सहन के अलावा बोलन लिखन पढन म भी सरल स्पष्ट भाषा का प्रयोग वृत्रिम शली की अपेक्षा श्रष्ट समझते थ। उनके मत में अपन गुणा और कर्मों के अनुसार जिना उपद्रव जयथा शान्ति के वाई भी यनित एव वग से दूसरे म जा सकता है पर जहाँ वहा भी वह हो जते उस वग के कतव्य वा पालन करना चाहिए।

वनपयसिअस ने किसी नवीन धम या दासतिक सिद्धात वा प्रचार नही किया। जीव मत्यु अलौकिक शक्तियो जादि विपयक ऊहापोह से वह बचते रहते थे। किनु उनका विश्वास था कि अतकता म एक गम्भीर एकता निहित है। उसका समझना और जीवन में स्थापन करना शिक्षा दीक्षा वा मुख्य ध्यय है। प्रत्यक व्यक्ति वा समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। बौटुम्बिक जीवन म ही उसकी साधना हो सकती है। मनुष्य की सफलता समाज के द्वारा हो सकती है विलग होकर नहीं। समाज वा राष्ट्र भी ता अततोगत्वा बुटुम्ब वा ही एक विशाल रूप है। यनि समाज वा प्रत्यक व्यक्ति जाचार और कतव्य वा गुड भाव से प्रतिपालन कर तो निश्चय ही समाज और राष्ट्र मुगी तथा समद्धिगाली हो सकता है। मनुष्य की बौद्धिग नान स अधिक जाचरण की आवरयकता है। अतएव प्रत्यक

ना भी मित्रता चाहता था सिन्धु
 वास हो गया। अपने वायु के
 कुछ प्रस्ताव सन्ट और जनममा में
 तथा तत्र उमने पाम्य व सनिका वा
 जिन रिया। आनक और ग्राम
 मीजर ने अनुमन कर लिया कि बिना
 अनिश्चित रगा। उमने अपने मनि
 उमना आम विवास बढ गया था। उनका
 और माल की मूजारी मिल गया।

गाल उम प्रदेश का बहुत थे जिममें
 ह। वहाँ कई जानिया व लाग रहत
 जिस समय रामगा म उनका सम्पक
 मे रहते थे। प्राय व आपस में
 पराण उद्देश्य विगा मगहन हागा।
 से पाडित हावर ममिन्धिया (मारमद)
 की। सयाग म दणिणा फाम का आर
 आकपित हुआ कि कार्येज के मनानायक
 ष्टली पर जात्रमण किया था। इत्या
 प्राप्त हावर जाना पता था। ममिन्धिया
 वहा सेना भेजी जिमने लार्जरियत
 पर अपना आधिपत्य स्थापित कर
 गाल व निवामी अमम्य न थे। यद्यपि

चित्त थे तथापि उनका धार्मिक नगा
 थे। गाल व निवामी अच्छी और
 थे। धार्मिक विषया में उनके नना
 प्रभाव था और व घम तथा गान्धि
 प्राणच्छेद जाति अतिम दण तक दान
 पर राजा सिन्धु अधिकतर गामन
 धिवासी भी काम करत थे। उत्तमी
 का व्यापार उनका ही द्वारा अधिकतर

गिना,
 - है।
 यधि
 १।
 ना
 न

।
 १

१

१

१

१

१

१

१

१

१

वायता स्पष्ट हो गयी। गणतंत्र राज्य व अन्तिम दिना में उपस्थित समस्याओं के
 जटिल अथवा प्रतिकूल समापतिथी धनिका, राजतानिक व्यवसायिका, तथा
 जनता का अल्पदिना वनता प्रिगन्ती रहा। समापति सेग मनेट का पापक
 आर भरिअस जनता का समथक था। मरिअस व बन्धिचूत हा जान पर मला न
 मन्ट के अधिकार स्थापित कर दिम और जनसभाओं की अयहलना का। त्र
 वृष्ट युद्ध बरन व लिए एगियाई वाचक चग गया तत्र राम व मेनेट और जन समा
 व प्रतिद्वन्द्विता म रन लच्छर गे लगा। उम जबगर पर जनसभा व निर्वाचिन
 समापति के भाते मेग्निम ने जाकर मेाट के पापका का भयकर वध करा दिया।
 यद्ध स जब मला लौटा तब तब मरिअस मर चुका था। मला ने अत्र समा के पापका
 में और भी भयकर बदला बनाया और जनता की संता का पराम्त करव स्वय
 डिक्टटर बन बठा। उमने मेनेट की शक्ति की पुन स्थापना की (८२ ई० पू०)।

मेला की मध्य व उपरांत जनसत्ता का एक पोषक मिल गया। यह सुयाग्य
 आर प्रबल सेनापति पाम्पे था। पाम्पे को स्पन, पूर्वी मध्य सागर और एगियाई
 वाचक में जा अभतपूर्व सैनिक सफलताएँ प्राप्त हुए उनसे उमकी धाक और शक्ति
 बहुत बढ़ गया। पाम्पे ने सेग के वनवाये हुए वानन रद्द करा दिये (७०—६९
 ई० पू०)। मयाग स पाम्पे का सम-सामयिक जल्लिअस भीजर हुआ जो मरिअस का
 मतीजा था। उसने पाम्पे का पूण रुपेण समथन किया। पाम्पे के विदगा में जाने
 के कारण राम में जत्रिअम भीजर नतस्य करता रहा और अपनी वाग्मिता स लोक
 प्रियता बडाता रहा। उसका एक पटोणियन मित्र था वेटलीनि, जो कासल हान
 के लिए ग्टनी मर म विद्राह की अग्नि भइवान का पडयत्र करता था। मिसरा ने
 जा अपने युग का मरसे प्रभावशाली वाग्मा और सुशिात ता था, इन पत्र-
 यत्रा का निष्फल कर दिया और आक पडयत्रवागिया को प्राणलुब्ध दवर गति
 स्थापित कर दी। उम पार मन्ह था कि सीजर भी उसम स्पन रूप स सम्मिन्धित
 था। का स्पष्ट प्रमाण न मिन्ने व कारण सीजर त्रच गया।

सयाग म पाम्पे उमी समय पूव ग लौटकर आ गया। जात ही उसने अपनी
 सना विवरित कर दी। उमे जागा था कि उमकी सवाजा व उपलक्ष्यम उमक सनिका
 का भूमिदान मिलगा और राज्या व साथ उमके क्रिये हुए समचीने स्वीकृत हा जायेंगे।
 ग्लिनु सनेट न दा वप तत्र उमक प्रस्तावा का लक्ष्य रगा जिसम वह धात्र हा गया।
 सीजर न उमक प्रस्तावा का स्वीकृत करा इन का अत्यासन दवर उम मिला लिया
 और दाना ने ब्रासम नाम व ममूडगाती यक्ति का भी साथ ल लिया। वह सितारा

व्यक्ति का छाटी छाटी बातों जसे उठना-बठना, बोलना चालना, साना-पीना पहनना चलना फिरना आदि में भी शिष्टाचार का ध्यान रखना आवश्यक है। कृतव्यय के यथावत् पालन में ही अधिकार की रक्षा हाती है। कनफ्यूसिजस यद्यपि शांतिप्रिय थे तथापि आवश्यकता पडने पर बल के प्रयोग के वह विरोधी न थे। फिर भी उनकी धारणा थी कि नतिक बल के सामने 'गस्तास्त्र बल अततागत्वा नही चल सकता किन्तु नैतिक बल की आधार शिला दृढ विश्वास निष्ठा, शुद्धाचरण और सहिष्णुता है।

चीन में पुरातन काल से ताओ की कल्पना चली जाती थी। कनफ्यूसिजस के समय में उमका अर्थ था मांग यानी 'आचरण का पथ'। आगे चलकर उम शब्द की परिभाषा बदलती गयी। कनफ्यूसिजस की धारणा के अनुसार 'ताओ का ध्येय आचरण द्वारा सफलता की आरंभ जाना था जिससे इसी जीवन में सुख प्राप्त हो सकता है। ध्येय के सम्बन्ध में उसका चरम लक्ष्य था नतिक सदाचार। समाज के सम्बन्ध में वही लक्ष्य था 'याय तथा सदाचारपूर्ण विधान। दाना स्थितियों में वह सहानुभूति तथा प्रेमसहित कम मांग पर चलने का प्रतिपादन करते थे। उन्हें तान की उत्तनी आवश्यकता न थी। वह सत्ता की नहीं बरन सिद्धांत की निष्ठा के साथ उपासना तथा सेवा करना सिखाते थे। कनफ्यूसिजस ने देव (व्योम) शब्द का भी प्रयोग किया है। उसमें उनकी अभिप्राय चीनिया के प्रमुख देव तत्त्व से था जो अगरीरी होने हुए भी सदाचार, 'याय और विश्वव्युत्पत्ति पर जागृत व्यक्ति अथवा समाज की सदैव सहायता करता है। कनफ्यूसिजस ऐहिक जीवन का साथक और सफल बनाना ही परम धर्म समझते थे। पारलौकिक चिन्तन में उनकी कोई दिलचस्पी न थी और न उम प्रसंग का उहाने वही भी उठाने का प्रयत्न किया। उनकी राय में जो सिद्धांत विश्व में स्थापित है और जिससे प्रकृति का नियंत्रण होता है वही मनुष्य तथा समाज पर लागू है। जत सामाजिक विधान चाह वह धार्मिक हो अथवा राजनीतिक उसी सिद्धांत का प्रतिरूप है। इस धारणा के अनुकूल सम्राट का स्थान देव (ति एन) का है। मन्त्री जादि जय सत्ता और कमचारिया का स्थान विश्व व्यापार के अनुरूप है और उनका वह स्थान और कृतव्यय निश्चित है। जो कुछ इस लाक में है मत्प्य है। इनमें किसी निहित रहस्य की कल्पना भ्रमात्मक विनोद है। इसलिए समाज अथवा तान का मुख्य ध्येय मनुष्य को सुखी रखने के सिवा अर्थ कुछ नही हो सकता। ताओ को छोडने से हानि के सिवा काद भी लाभ नही है। जब कमी वही भी अव्यवस्था, अनाचार, अत्याचार या दुराचार दिखाई पडे तब वही समझना

चाहिए कि ताजा का उत्खनन ही रहा है और उस पर यथाशीघ्र फिर जाहूँड हो जाने का आवश्यकता है जयथा विनाग अवश्यम्भावी होगा। यह स्मरण रखना चाहिए कि मानव जीवन का मग्न मानि समथना ही बुद्धिमत्ता है। प्रेमसाधना ही मग्नधरण का मुख्य लक्षण है।

लाओत्जे (६०८ ई० पू०)

बुडू लाग कहते हैं कि लाओत्जे एक कल्पित प्रतीक है व्यक्ति नहीं। अधिक लाग का विचार है कि उमका जन्म हानान प्रात म ६०८ ई० पू० एक गरीब घर म हुआ था। वह कनफ्यूमिअस का समकालीन और थोडू साम्राज्य के पुस्तकालय का अध्यक्ष था। उमका नाम एह्ल उपनाम तन और वश ली था। वह चू राज्य का निवासी था। यद्यपि उमकी विचारधारा भिन्न थी तथापि कनफ्यूसिअस उसका जादर करते थे। लाओत्जे ने सम्भवत सबने पहल ताओ का उल्लेख किया। उसस उमका जाशय था कि मनुष्य विश्वतत्त्व का जिसम समार व्यवस्थित ढग से चल रहा है, फिर जाध्य ले। उमने ताओ विचार का सूत्रपात मोटे तौर पर किया था। उमक सिद्धान्त म वस्तु स्थिति और आदस में मेद करना भारी भल थी। जा बुडू है वही तथ्य है। मनुष्या ने अपनी अल्प बुद्धि और विद्याना के आधार पर अच्छा बुरा घाषित कर प्राकृतिक जीवन क स्वाभाविक और सरल प्रवाह का दूषित कर लिया है और व उमी भँवर म उडूगन-तैरते हैं। दाप म मुक्त हाने पर प्रवाह स्वाभाविक रूप म चरने लगेगा। अपनी चेष्टा और प्रयत्न को छाडकर यदि मनुष्य निश्चेष्ट और निष्क्रिय हा जाय ता मत्र प्राधान्य आप-म-आप मिलीन हा जायगी।

‘ताओ विश्व का मूल तत्त्व है, मनु उसस दा तत्त्व उत्पन्न हात है जिनकी सृष्टि क प्रयास क लिए जायश्यकता है। एक तत्त्व है यग और दूसरा है यिन। यग ज्ञान है प्रकाश पुष्पव तथा मश्रिमता का और अघकार निष्क्रियता तथा म्शान का ज्ञानक है यिन। इन ज्ञाना तत्त्वा की उत्पत्ति मूल तत्त्व ताओ स ही हुद है जन् सिद्धान्तानुसार जगती मत्ता ना एक ही है। इस विषय का मूलम विवरण दू चिंग जयान परियानन’ (विजयन) की पुष्पन म किया गया है। कनफ्यूमिअस तथा जय ज्ञाना विज्ञान ता उमका मूल य माननी है जाधुनिक मनोविज्ञाना युग का भा कयन है कि उक्त मय में चानिया का मसृष्टि का मार पाया जाता है। जाधुनिक दूनानीय परिभाषा में उमका प्रतिपाद्य विषय क लिए मादिक परास्त्रिम नाम उपयुक्त है।

इन सिद्धान्ता का विशिष्ट विवेचक त्सोऊ एन, हानयुग में च इ राज्य का निवासी था। उसका मत था कि उपयुक्त दोना तत्त्वा के पारस्परिक व्यवहार स ही विश्व में परिवर्तन हाता रहता है, ऋतुएँ बदलती रहती ह और प्रकृति एव मनुष्य पर प्रभाव डालती ह।

लाओत्जे ने उससे एक बार कहा कि पूवजा की अस्थिया गल-सड गयी उनके शब्द-मात्र रह गये ह। उनके आचारा तथा 'यवहार' व कल्पित चित्रा के पीछे दौडना मरु-मरीचिका का अनुसरण करना है। जीवन को कृत्रिम विधान पर चलाने स विशेष लाभ नही। उसका निर्माण प्रकृति व सिद्धान्त पर हाता चाहिए। प्रकृति के नियम के लिए उसने ताओ शब्द का प्रयोग किया। ताओ अनादि काल से अनन्त काल तक अक्षुण्णरूपण चलता रहता है। प्रत्यक्ष या पराक्ष सभी ध्यापार उसी के प्रसार मात्र रह ह और रहेंगे। उसके अनुकूल जो कुछ है वह सफल और प्रतिकूल विफल होगा। जिस प्रकार जड जगम उसके प्रभाव स चल रहे वसे ही मनुष्या को भी उसी प्रवाह में अपने को छाड देना चाहिए। उसके प्रवाह को रोकना सरासर मूर्खता ही नहा वरन अनिष्टकारक है। मनुष्य जत्र अपनी बद्धि और ज्ञान-विज्ञान, विधान का सहारा लेना है तभी वह ताओ स बहक कर भटकने आर बिखरने लगता है। नान वम, इच्छा सम्पत्ति पद इन्द्रिया के सुग और दुःख, जीवन मरण सब सारहीन विडम्बना मात्र है। व सब स्वप्न के सन्श मिथ्या ह। यदि धम, शास्त्र, नान, विनान, शिक्षा दीक्षा जाचार विचार स्वाध और परमाध की जाका धाआ के काल्पनिक भँवरजाल स न फँसकर ताओ के प्रवाह का स्वाभाविक प्रवाह में चलने दिया जाय ता फिर न तो कोई समस्या ही रहेगी और न किसी आवश्यकता की पूर्ति का ही प्रश्न रहेगा। समस्याएँ तथा आवश्यकताएँ भ्रमात्मक कल्पनाएँ हैं फलत उनकी पूर्ति या अपूर्ति भी स्वप्नवत नि मार है। प्रकृति के स्वर से स्वर मिलाकर ताओ से सगति जमाकर प्रकृति का प्रवाह चलने लिया जाय। शान्ति और कल्याण का यही नसर्गिक माग है। सुग उसी स ह। लाओत्जे का सिद्धांत इतना सूक्ष्म और गूढ है कि 'यवहार' मे उसका लाना असम्भव-सा है। वह समाज शासन मगठन, विधि निषेध को अमगलकारी कहना था। जल्पत ज्ञानिकाग हाने के कारण उसके मत का चीन व बाहर प्रचार सम्भव न हा सका। चीन स भी वह एक सकुचित सम्प्रदाय के ममान जविकसित ही रह गया। 'यवहार' का विषय न होकर वह विश्वास का ही विषय बना रहा। जलौत्रिक कल्पनाआ से आवेष्टित हाने के कारण कालान्तर स वह गुप्त रहम्यात्मक भाव बन गया जिससे

अततो गत्वा वह जयवन्धित, विलक्षण जीर विचित्र विचारा का एतत्ता चा का मुरता मात्र बन गया। हान युग म बौद्ध धर्म क सम्पन्न स उमरा प्रचार हुआ जिसस सिद्धा तथा मौती वात्राआ नी भरमार जीर मठा की स्थापना हा गयी। लाजात्त्रे ने 'ताता जीर त विषयक दा भाषा क एक ग्रन्थ की रचना की। कहा जाता है कि उमकी मृत्यु सत्तासी वष की आयु म हुई।

मोती (४५० इ० पू० ?)

तीमरा उल्लेखनीय दार्शनिक माती है जिसका कायकाल १०५० पाचवा गती के अंतिम दशका स लेकर चतुर्थ शती के आठवें दशक तक हाना अनुमान किया जाता है। कुछ लोगा की धारणा है कि वह भी बनफूसिअम का बनिष्ट समकालीन था। कहा जाता है कि मुग राज्य के सनिक विभाग में वह रक्षा मंत्री जीर एक अथशान्न विशेषण था। उसका मत था कि किसी नी काय जयवा याजना का उद्देश्य उसकी उपादेयता जीर लाभ पर आश्रित हाना चाहिए। परम्परागत विधाना या सस्थाआ की सफलता का भी वही सिद्धांत मापदण्ड हो सता है। निसग लीला अत्यंत दुरूह तथा अगम्य है। उसी प्रकार जच्छे-बुर नी शाश्वत परिमापा मो या तो स्वरचित हा सकती है अथवा काल्पनिक। अत उसका आश्रयदूढना युक्ति-सगत नहीं प्रतीत हाना। वस्तु की उपात्यता और उससे प्राप्य लाभ यावहारिक ही नहीं अपितु इस परिवर्तनशील जगत का वास्तविक प्राप्य सत्य है। माती की दूसरी धारणा यह थी कि सहानुभूति, सहयोग एव प्रेम का पूरा परिपाक कुटुम्ब या वश मे नहीं हा सकता। वस्तुन विना विश्वघृता के भाव के मनुष्य म प्रेम का प्रकाग अधूरा रहगा। विश्वघृता के भाव से कुटुम्ब वश कुल आदि लाभ उठा सकत है। इसलिए उसकी साधना ही उचित और युक्तिसगत है। उसमें प्रेमी तथा प्रेमपान दाना को लाभ होता है। ज्ञान तथा स्वायके कारण साधारण मनुष्य प्रेम के महत्त्व को नहीं समझ पाता। इमीलिए उसम प्रेम भावना जगाने एव निष्ठा के साथ उम पर उके जास्ट रखने के लिए प्रेममय तथा यायमूर्ति परमात्मा के प्रति धार्मिक चेतना जागत करना चाहिए जिमसे यह विश्वास हो जाय कि प्रेम का प्रसाद श्रेय है और उसकी अवहेलना का परिणाम किसी-न किसी रूप में दण्ड है। यही भावना पाप और पुण्य की रक्षा कर सती है। केवल राज्यवधन अथवा जपहरण के लिए युद्ध छेडने का वह विरोधी था। माती के सिद्धांत में एक ग्रास आपत्ति यह उठायी गयी कि वह व्यावहारिक ऐहिक

लाम के साथ स्वाथहीन प्रेम का सामञ्जस्य बठाना चाहता है जो यवहारत दु साध्य है।

मेसिसअस अथवा मॅंगत्जे (३७२ इ० पू०)

कनफ्यूसिसअस के अनुयायियों में मॅसिसअस का अच्छा स्थान है। उसका विश्वास था कि मनुष्य जन्म से अच्छा जाना है किन्तु वह यह नहीं मानता कि वह सबदा अच्छाही रहेगा जोर सत्य का प्रतिपालन करेगा। हा, यदि वह चाहता ऐसा कर भी सकता है और न चाहेता उसकी उपेक्षा भी कर सकता है। उसकी राय में मनुष्य को विनयपूर्वक मध्य भाग का प्रतिपालन करना चाहिए। यदि राष्ट्र मे मनुष्य मुरय आर शासक गौण है, यदि शासक जनता के हित की हानि करता है तो जनता को उस पदच्युत करने का अधिकार है। मेसिसअस की दृष्टि में माना पिता के प्रति आदर-सम्मान का भाव रखना सबके लिए आवश्यक है। पत्नी और राजा का भी स्थान उसे उतरकर है।

मेसिसअस की धारणा का कि मनुष्य प्रकृत्या अच्छा होता है ह्युनत्जे (म० २३५ इ० पू०) ने धार विरोध किया। उसकी राय मे मनुष्य की प्रकृति दुष्ट होती है क्याकि उसमें सम्पत्ति एकत्रित करने तथा प्रभुत्व प्राप्ति की स्वामाविक प्रवृत्ति देखी जाती है। राग, द्वेष, ईर्ष्या से दूर रख कर उसको ठीक रास्ते पर चलाने के लिए सिवाय कानून के बाधन के कोई दूसरा उपाय नहीं है। सदाचार और शिष्टाचार की मर्यादा की परिभाषा और रक्षा कानून द्वारा ही हो सकती है।

उपयुक्त दार्शनिक विचारों में से कनफ्यूसिसअस और मॅसिसअस के विचारों का चीन पर विशेष प्रभाव पडा। तो भी यह न समझना चाहिए कि अय विचारों का वे मतों का चीनियों ने परित्याग कर दिया। सभी सिद्धांतों का चीन में क्रमावेश आदर किया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि साधारण लोगों में उदारता, सहिष्णुता और गुणग्राहकता का संचार हुआ जोर साथ ही प्रत्येक मत का कुछ-कुछ सद्बिचार उनकी विचार परम्परा में मिला-जुला पाया जाता है।

बौद्ध धर्म के प्रचारक मध्य एशिया तथा आगम तक पहुँच चुके थे। यह असम्भव नहीं कि वे ईसा की प्रथम शती से पहले ही चीन पहुँच गये हा किन्तु उत्तरकालीन हानवंश के सम्राट् मिंग ती ने एक विद्वान् सेनाध्यक्ष चि इन चिंग का नियुक्त किया कि वह बौद्ध धर्म के ग्रन्थों और विद्वानों को भारत जाकर ले आये। दो वर्ष तक खोजने के बाद वह यूची (कुपाण) राज्य से कश्यप मातंग और धर्मरक्षक का कुछ

बौद्ध ग्रन्था के माय ७ गया। दाना विद्वान मध्य भारत व निरागी थे। बठिनाणियाँ गल कर भी धर्म प्रचाराय व मध्य एशिया गय। वहाँ स चीनी भाषापति व गाय व हान सम्राट की राजधाना ला माग पहुँचे (६८२०)। सम्राट न उनका जादर-भत्तार किया और उनके रहने के लिए श्वेत अश्व नाम का निहार बनवा दिया। कश्यप न एक आर धमराज न पाँच बौद्ध ग्रन्था का चाना भाषा म अनुवाक किया जिनम बुद्ध चरित्र जातक धर्म-ममुद्र शामिल थे। आरम्भ में बौद्ध धर्म की आर चीनी विगप रूप स आर्वापित नहा हुए। उसका व अपना सदृष्टि और विचारा से मित्र गमझते थे। इसका कारण मम्मयत यह हा मनना है कि चानी जावन की आर स विरक्त न थे उनके विद्वान के अनुसार जीवन न ता पाप ही न नष्ट जयवा बंधन ही, जिसस मुक्त हाकर विलीन हो जाना चरम जादग हा। चानिया का जगत से भयन था और न व मसार का जगार समझते थे। वे इमी लास म जीवन का सनुष्ट और सुखी बनाने का प्रयत्न करते थे। गार्मध्य जीवन स चीनिया का ग्नाय था। नष्टिक ब्रह्मचय तथा सयाम के वे पशपाती न थे। यद्यपि ताओ मतावलम्बी जीवन का जमर बनान की चष्टा करते थे फिर भी कुछ लाग उस ताओ सम्प्रदाय से मम्बधिन समयत थे। ताओ मनानुयायिया ने बौद्धा की विचारधारा का स्वागत किया क्याकि बौद्ध धर्म की कुछ बात उनसे विचारा स मिलती थी। उग्रहरण के लिए दाना कम और सदाचार को विशेष महत्त्व देने थे। वयनिक स्वाय-साधन के दोना विराधी और जनकल्याण व समथक थे। सष्टि व कता मना मवन मज्जन्तान ७ सवगकिनमान परमद्वर का उन दाना ही की कपना में बाद स्थान न था। चीनिया म अनुपातत विचारा की उदारता होने व कारण बौद्ध धर्म के प्रति उनका द्राहात्मन भाव न था। व लाग आरम्भ म याद धर्म का ताजा सम्प्रदाय स मम्बधिन ही समयते थे।

धीरे धीरे मथर गति से बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ, किंतु उसका कोई सिलसिले वार वक्तान नही मिलता। वेय वही-वही शब्द मिल जाती है। मन १०० ई० का बना हुआ एक बौद्ध मन्त्रि (चत्य) अहुइ नगर में मौजूद था। इसा की दूसरी गनी म लायाग में बौद्धा की मग्या बढने तथा उनकी सस्थाए खुलन का मनेत मिलना है।

कानून का मन

उपयुक्त मता व भिन्न एक जाग उन्तेषनीय मन है जिसको कानन का मन

कह सकते हैं। उनके प्रचारक में कुअनत्ज, गगयग जोर हान फ्रीइत्ज के नाम लिये जाते हैं। उनका कहना था कि मनुष्य स्वभावतः दुष्ट और अज्ञानी है, किन्तु उसमें सुप्रवृत्ति तथा पानापाजन करने की शक्ति है। इसीलिए उसका नियन्त्रण कानून द्वारा होना आवश्यक है। उनकी धारणा थी कि मनुष्यता आत जात और बदलत रहता है किन्तु कानून स्थिर रहता है। बिना कानून के समाज का बचना और चलना मनुष्य की पहचान तथा कतव्याकतव्य का ज्ञान होना असम्भव है। इसलिए व्यक्तिगत ध्यान छोड़कर कानून का अध्ययन करना आवश्यक है। हा, समय-समय पर आवश्यकतानुसार कानून में परिवर्तन अवश्य हो सकता है। इस सिद्धान्त में पहला दोष तो यह है कि वह ऐसे कानूनों की कल्पना करता है जो अत्यन्त अच्युत और अटल हैं। मनुष्य ही कानून बनाते, बदलते उनका प्रतिपालन अथवा उल्लंघन कर सकते हैं। उनका प्रभाव और उनकी प्रतिनिधिता के महत्त्व की, कानून वालों का मत अच्युत बनाना है। यह कहा कि बुरे कानून भी कानून का एक ही अभाव में अच्युत हैं सबथा चित्त और भ्रमात्मक हैं। उन मत का विशेष महत्त्व केवल यतना हो सकता है कि वह कानून के राज्य की वनिस्त्वन व्यक्तिगत के राज्य का अर्थ मानता है।

इस प्रसंग में यह भी जानना आवश्यक है कि प्राचीन चीन में प्रवृत्तिवादियों का भी एक मत था जिसका अच्युत विकार नहीं हो पाया। इस मत के प्रचारक का नाम त्सूयेन है जो गान्ध्याग का निवासी था। उसके अनुसार वाष्प जल, मिट्टी, जल और धातु में पांच मुख्य तत्त्व हैं जिनके उलट फेर से उत्पत्ति तथा विनाश की विभिन्न व्यवस्थाएँ होती रहती हैं। भू-मण्डल में केवल एक ही महाद्वीप नहीं है जिसके अन्तर्गत चीन है। उसमें तो महाद्वीप है जिनके मध्य में एक विशाल पर्वत है। मण्डल तथा सहार के सिद्धांत को उमने ज्योतिष तथा राजनीति के क्षेत्र में लागू करता हुआ सत्यता सिद्ध करने का प्रयत्न किया।

वनक्यूसअस तथा मो ती के सिद्धान्तों का धार विरोधन यहू (३९० ई०) हुआ। उसका मत था कि मनुष्य का जीवन ही दूषित और व्यर्थ है। जो यही टीक जान पड़ता है कि उनमें जहाँ तक सम्भव हो सके सुख का अनुभूति प्राप्त की जाय। उनके माथन में किमा जय के विचारों और भावनाओं का लिहाज न करना चाहिए। प्रससा अथवा निन्दा से अन्त में व्यक्ति का कोई लाभ नहीं होना, सम्भवतः जानि हो जाती है। ये केवल निःसार गान्ध्याग मात्र है। अपनी इच्छाओं अभिलाषाओं आशाओं, वामनाओं का यथाशक्ति और यथासाध्य इसी लोक में पूर्ण कर सुख

प्राप्त करता ही गमनागर मनुष्य का वास है। कला-मुक्तता का नाम कर्म सुन। इस मत की भारत के पार्श्विक के मत में बहुत कुछ समीचीनता है।

तुनाय गा ६० तक बौद्ध धर्म। चीन में बहुत प्रभाव समाप्त हुआ। उगन प्रचारक भारत के गिरागागा मुनिगागा जगतागिताग न गायक। मागागा विद्वाना में प्राणि मान मूत्र के अनुयायक धर्माग (२०६०) गायगागी धामिन (२०७६०) नागागा मा प्रताग्य प्रताग्य विद्वाना तुमागागा (३६६—६१३) आदि थे। बौद्ध धर्म की ज्ञानया तथा मयागा गागागा के अज्ञानता मया का चीनी भाषा में अनुयायक किया गया। सागा विद्वाना और धर्मा की मयागागा हृद और बौद्ध धर्म, विगागा उगवी महागागा शागा ने शाग म गायगागा न उगगा करना आरम्भ कर लिया। चागिया म मा बौद्ध धर्म के गायगागा विद्वाना उगगागा हा गय। गिन वग के राजत्व काल में (२६५—४२० ई०) बौद्ध धर्म का शाग का आरंभ काफी प्रतागहन प्राप्त हुआ। मागागागा लागा तथा विद्वाना के गिरा चान के कुछ राजे भी बौद्ध धर्म में शागिता हागर प्रतागकाय करन लय। उनम गगागा वृता का नाम गिरागागा उगगागाय है। रयम प्रवचा करन के गिरा उगन बौद्ध धर्म के त्रिपिटका के चीनी मयागागा का सगह कराया। अहिगा के गिरागागा स प्ररित होकर पगु वलि बद्ध करन का आना मा उगन प्रचारित का। यह मयम माग तर न पाता था। उमके सिवा कई अय सग्राटा न मा बौद्ध धर्म के प्रताग म उगगाहा दिगाया। दक्षिणी चीन में भी जोरा के साथ प्रचार हाता रहा। वही का राजधाना नानकिंग में सात सौ चत्यथ और सहाय बौद्ध रहन थे। चतुथ गता के समाप्त हाग तक पदिचमातर चीन के नब्बे प्रतिगता निगागी बाद्ध धर्मागुयायी हा गय थे।

बौद्ध धर्म के कारण भारत का ससृति का चान पर भारी प्रभाव पडा। यद्यपि चीनिया ने उसमें तागा, वनपयूसिअस जादि के कुछ सिद्धांता को मिलाकर उस जोर भी सुगोच जोर लाकप्रिय बना दिया तथापि उसनी मौलिक रूपरता मिटने नहीं पायी। महायाग का वहाँ विगोप आदर हुआ कयाकि बोधिस्तत्व जोर अमिताम की कल्पनागा से चीनी बहुत प्रभावित थे। कुछ नये बौद्ध सम्प्रदाया की भी चीन में उत्पत्ति हुई। चीन के स्यापत्य, मूर्तिकला और साहित्य पर भी बौद्ध धर्म की छाप लग गयी। चीन में अनेक देवतागा की कल्पना कममिद्धात, पुनजम जगम प्राणिगा के प्रति सहानुमति और दयामाव याग ध्यान, साधन भक्ति नाम स्मरण आदि का प्रचार बौद्ध धर्म द्वारा हुआ। भारत का चीन को देन जितने महत्व की थी चीनिया ने उतनी ही उदारता और सम्मान के साथ उसका स्वागत भी किया।

शब्दानुक्रमिका

शब्दानुक्रमणिका

अ

अकारा ३३
 अक्षर प्रदेश २ ४ ५, ६ १३ ३२
 अखनातान ४६
 अगोद ४
 अग्रमन्यु ३११
 अग्रिया १०५
 अग्रिपिना ११०, १११
 अजन्ता १९१
 अदन १९
 अध्यक्षा (गवन, उरम्) १०
 अन ११
 अनत गाग ३३७
 अनाचारी गामक २३३ २६४
 अनाहिता २११ ३१६
 अनित्तम ३३
 अनि दवता ७
 अन या अनू दवता ७ १७
 अनथागोरम् २३९, २७४
 अनजैरुक्मीज ३०५
 अपाठ दवता १५७
 अफगानिस्तान १७५
 अपीना १ ८० ८१, ९२
 अवात्म २६
 अमरणी ३१७
 अमरा १७५
 अमेरिका १
 अग्गान्सि २२८
 अरजवा ३३
 अस्टर्ड २०७

अरव ०, ५५ ६६ ६६
 अरव मागर २३
 अरवनी ०८
 अरवेल जग्गेग ५६ २६६-६७
 अरस्तू २४८ २७१ ७० २७६, २७९
 अराकागिया ३०१
 अरिना २९
 अरिस्टाडामा ० ०
 अरिस्टोफीज २९०
 अदानी १२० ३०८
 अलबुज २९७
 अल्यतेम ७२
 अलागिक १३३
 अल्पियन १५५
 अक्जेण्टर ६० ८८ ११९ १०१
 १५२ २१० २२१ २६, २६७
 २८७ २९० २०७ ३०५ ०२
 अल्बजण्डिया १०१ ११०, २५०, २६५
 २७८
 अवतार २०३
 अवन्ति १७७
 अग्या ६१
 अगु ७६
 अगाव १२८ १७०, २०१
 अदवधाय १०४
 अगार अगु गग ५६ ६९
 अमास्विन गग ५६
 अमीरिया १० १, ६१ ८० ५-
 ७९ ६०, ६६, ६०, २८० २९६
 ९६
 अमुन १७१

जस्त्या ६५	जायारा १७६ १८० १०६, २०८
जस्त्यागत ७०	जायारा १०३
जस्त्या ६६	जायारा १३०
जहमाग ८४	जायारा-उत्तम २६७
जहूरमाग ३११ ३१० २१८ २३२	जायारा ८६ ८०
जहूरिन ३१३	आयुर्वेदशास्त्र ५६ ५७
अहिलमन १६६	आयुर्वेदाभिप्राय ८ ६१
	आयुर्वेद-विज्ञान १८७
आ	आयुर्वेद ३११
आइमिग २५ ३०	आयुर्वेद-मजला १६६ १० अहूरमजला
आमात्रटाज २४४	इ
आइन वा आधार ५	इअ ३०
आकविअस १०४, १०५, १०६ ११३	इअला ८
आकम नगी ३२१	इआनियन २०१
आगस्टनयुग १५१	इगनातान ८५ ४७
आगस्टम १०७, १०५ १२६, १२७	इजराएल ५७, ६६
१५१ १५२ १५८ ३२३	इटली ७६ ७० ८५ ८९, ९४, १००,
आग्नयवशा १७५	१११, १०३
आजीविक १९७	इटूरिया ७५
आतान ४६	इण्डा आय ३२ २२१, २९९
आमनमुह्त २६	इण्डाचीन १६८
आमान ३४६ ८८	इण्डानिया १६८
आम्मी २४८	इनना ११
आयानियन २२१	इनरस ३९
आरगस २३१	इद्र ४३
आरफिज्म २८७	इपिडम ८९
आरमदक ३१४	इम हातेप २०
आरमीनिया ४२ ५५ ५६ ११४,	इम्परेटर १०७
११५ ११९ १३० १३१ ३०५,	इराक ८ १७०
३२१ ३२८	इरास १२४
आरभएन ६५	इरित्र ३
आरियन १२८ १३२	इलियट २८८
आरिलिजम एण्टोनियस ११३, ११५	इगारिया ८९
आरिलियन १२४ १०५	इल्लियक्स ३९
आर्वेवियन २२१	इष्टर १८
आर्वेमिस ७२	इष्टवग २९८
आय १७५ १७६, १८३ १८४ १९३,	इतिन १२
१९६ २००	

ई

ईमस २४५ ३०६
 ईजाडल १६१
 इनेदुड १५०
 'ईतनाम ३
 'इरान ६, १७, ४२ ७२, ९३, १६८
 २९५
 इमा १६०
 इसाद घम १२७ १२८, १३०, १३२,
 १३५, १५६, १६२, २८८, ३३०

उ

उनु ११
 उत्तर वदिक २०४ २०५ २०९
 उनमिआ २९६
 उपनिषदकाल १८८
 उम्भ ३ ४
 उर ३, ८, ५, ११, १२
 उगनिबर ३

ऊ

ऊक १२
 ऊरनम्म ५
 ऊम २०९

ए

'एकी ७
 एकवताना २९८ ३१४, ३२०
 एकरान ६५
 एक्रियन २२१ २२२ २५२
 एक्रिटस १४५
 एक्कीमिआ २३५
 एक्कान ३४
 एक्रिपिना १२१
 एटिका २२०, २३२
 एटलिक ७४
 एटालियन २५२

एडियाटिक ७३
 एडियानापल १३२
 एण्टनी १०८ १०५ १०६
 एण्टिआक १२१
 एण्टिआम ८९, ९०
 एण्टीगोनस १७८ २५०, २५३
 एण्टीपटर २५३
 एण्टोनान ११७
 एण्टोनियन ११३
 एक्कीनियन २३२
 एथेस ८० ११८, १५२ १७२,
 २२३ २२५ २३१, २६५
 एनमिस ८
 एनाटालिया ५७, ६५, १२३, २१७
 एनाबेसिस २८१
 एनिकम मण्डर २६९
 एनकिमिनस २७०
 एनेटालिया ३०
 एण्टिस्थेनाब २७७
 एयामिनाण्टस २२९
 एपिक्यूरस २७७
 एपिक्रटम १६३
 एपिरम १३३ २२०
 एपोला २८४
 एफराडाइट २६७
 एमेनहातप ४२
 एमोरित १२ १३
 एम्पिडाक्लीज २७०
 एरिआविस्टस ९९
 एरि ३
 एर ८३
 एरसीवायडाज २४१
 एलागेवेलस १२० १२१
 एलाम ५, २०८, २९९
 एलिआ २७०
 एलिस्मा ८२
 एलास १९१
 एन्मुनियन २८७

एगिया १ ३ १७, १८ १० ८०,
८६, ५० ११८ १८६ १ ७
१७७ १७ २८६ २०८

एगियामाप्तर ५ ७१ ८० १० वाता

एगियाद वाता १३ २३ ३२ २५

७१ ७३ १०८ २२० २८

२६ २८ २८ २२१

एगियाद तुर्की ३०

एपमा ३११

एस्पार्लस २००

एम्मुहदा ५८

ऐ

आम ३८८

आमनहातप ८२ ८१ ६६

एल १७६

आ

आग्निजन्म १५१

आग्निमिया २८५

आविट १११

आमिरिम २५ ३०

आ

अण्ववग १८०

अन जानी ६५

अनिष्क १८१

अन्यमिजस २३८ ३४१, ३५६, ३५९,
३८०

अपिठवस्तु १९७

अमीगिया अरिजाटा ७६

अमीगिया टाब्लू टापाप्युलाइ ७८

अमीगिया या सेचुरियाटा, ७८

अमाटिजस ११७

अम्बिस ३००

अम्बाज १७६

अम्यनिम् १३५

अर कृपिपर, भारत में २०४

अगा २६

अगा ५६ ५७

अगा १८१

अगा १२१

अगा ३०

अगा १७६ १८३

अगा माग ३०

अगा ३३

अगा १ ३० ६३ ५५

— वा (गूम गारा) २१ २१

अगा ६०

अगा ७१

अगा ३५०

अगा ५६

अगा ३, १७ २०१

अगा ७८ ८५ ०० ०८ १००

अगा १०७ १३० १३१ १६३

अगा १२५ १२०

अगा १६३

अगा १३०

अगा १९३ १९६

अगा १७६

अगा २९८

अगा २०८ २०९

अगा ४३

अगा ८० ८१ ८२, ८५, ८७, ८८

९२ ९८, २२४

अगा ४५

अगा ७५ ८६

अगा १९४

अगा १५८

अगा १७६ १९३

अगा ३ ४

अगा ३

अगा १५०

अगा ४०

अगा ४०

अगा २३५

कुम्भितान ८२, २६७ २९७
 कुशाण १२२, १८२, २०५
 कृपव २०६
 कटलीन ९७
 केटा १' १
 केपिटालन ७६
 केपिटानादन १४०
 कपुआ ८७
 केपडागिया २०८
 कप्री ११०
 केरकेला ११० १२१ १६७
 करम १२'
 'करेम १७७
 करानिया २६४ २६५
 कलीगुला ११०
 केल्ड ०८
 केडिया ६६, ६९
 केमिअम १०४ ११५
 कोपनिक्म १७
 कारिय २२० २२ २२८ २३० २४०
 कारी ८३
 कालिसियम ११२ १४५ १६७
 कामल १७६
 कौटिल्य १००, २१०
 कौरव १७६
 कौशाम्बी १७६
 कयतीफामलिपि ०, २२, ३१०
 क्रिटम क्विअम १५०
 क्रीमिया ९२
 क्राट २१७ २२१
 क्रीमस १००
 क्रीस्यनीन २४१
 क्लान्जिम १००, ११० १२०
 क्लाइडस प्लोनी १५२
 क्लिओपा १०१ १०४, १०५
 क्लियामना २५०
 क्लारिनम १५७
 क्लेरिमना १२९

'कम्पटर २७

ख

खलिया २९६
 खानाप्रणा १
 खिनाई ३३७
 खरामान २०६
 खर्गिरि
 खानान ३८८

ग

गणदन १३
 गणराज ८०, १०६, १८०
 गजार १७६
 गर्गोविआ ९९
 गादगेज या गग ७१
 गाजा ५७ ६५
 गाय ६५ १२३
 गाया ३१४
 गानिक्म २४५
 गाथार गला १९५
 गायम १५५
 गाल ०६, ९८, ९९ १०७, ११२,
 ११६, १२६, १३१
 गालिव ९९
 गिरिव्रज १७७
 गिलगमिग १०, १६
 गुडिया ५
 गुणान्य १९४
 गुत्ति ५
 गुम्बुल १९३
 गूटरह्म्यात्मवाद २७४
 गूहस्थाश्रम १८८
 'गेषसिआ' ८४
 ग्लन १५२
 ग्लरिजम १२५ १२७
 गेल्वा १११
 गाडापरनाज १८०

	झ	झगवल्लम ११४
		झामीशियन ११२
नागर १७३		झामीगिया ११३
गुवर १७३		झामटिअन १८९, १५८
	ट	ओरियन २२१, २२५
		ड्रान वानियस ११३
टाइटास १८५, १८८		ड्रवा २३३
टावर ७८, ७६, ९२, १०२		
टावरिअस १०९, ११०		त
टाजिल्लिट्ट ४१		तक्षगिला १७६, १७८, १९२, २०६
टारम ९१		तम्मज १८
टायर ६६ ७० २४६		तरनवा ४०
टारवर्गनअस ७६		तवरण ३९०
टालमी ८९ ९०, १०० दे० टोलमी		ताई ४५
टिगलाय पिलीजर' ५६ ५७		ताओ' ३६०, ३६१, ३९१
टेगारा २२८		तानितदेवी ८३
टेरेस १५०		ताप्ती १७०
टेसिटस १४०		ताम्रलिप्ति १६९
टालेमी १७ २५३, २५४		'तिनिया १५६
टयूटन ९६		तिव्यन ३४० ३६६, ३८६
ट्यूनीमिआ ८२		ती' ३४३
ट्राइव्यन ७७, ७९, ९५		तीलिएन ३४९
टाय २१९ २२१, २२२		तीनिया ७५
ट्रेजन ११३ ११४ १४८		तीरइस २२१
ट्राजन २२२, २४६		तीयनर २०३
	ड	तुगचा ३६०
डायजेनीज २७९		तुगुम १३० ३४०
डिक्टेटर' ७८		तुघलियस ३३
डिमाक्रिटस २७१		तुक १३० ३४४, ३५६
'डिमाटिक' २४		तुपरद ४१
डीलियन लीग २३७		तूनातामन ४७
डेयूव १०९ ११२, ११३, ११६, १२३,		तेलिपिनस ३३
१३२ १३४		तेलिपिनु ३०
डेमाथ्यनीज १५२ २४४, २९१		तेगव ३९
डेरिअस प्रथम २३६		तावा ३६५ ३६७, ३८८
डविड ६६		तेरमाण १८३
डेगिया ११४		य
		थटमस ४२

थत्तमोम ४४

न

थत्तमाजय ४५

थर्मापली ९०

थिनिस २३

थिआडोमिजस १३० १५५

थेन्म ०४७

थेनीज २६ ४४, ४५ ५०, २२०

थेमिस्तानलीज २३८

थेस २६० २७० ०८८

थेवण्ड १५१

थेमली २२१ ०००

थ्यसिडाइडीज २८०

थ्योरियन १७

द

दजला नदी ५५ ५६ ६९

दजला फरात १ २ ३ १३, ५५, १३५

२४६ २९६, ३२०

दत्तीस ३०३

दमिदक ५७ ११४, २५३

दरयावाग ३०१

दरशाहकिन ५७

दम्य १७५

दानव १७५

दारा २४९, ३००

दान्त्रिया १८

द्विजोदस ३१९

धेमितर ८३

दमटिअम २६१

द्वपाठ १७

ध्वाना प्रिय २७

द्वत्य १७५

द्विद १७५ १८०, २९६

घ

घननद १७८ २०६

घमरग ३९५

नगर' ०२३

ननिया ३२७

ननर १७

नबूनेद ३००

नबानिदस ७१

नम्म ५

नरगल ११

नरमसिन ८, ३२

नमना १६९ १७०

नर्वा ११३

नवनर ११

नमुद्रज ३११

नाम १८२

नानाकिग ३९८

नासत्य ४३

निआक्स ८८

निकोमीडिया १२५

'निनमह ७

निनेवह ४० ५६ ५८, ६९

निफतस २

नियति १९९

निवाण १९८ १९९ २०१

निपाद १७५

नीरो ११० १११

नीलनदी १, १९ २०, ०६ ५०,

५५ ६८ २०६ २९६

नन २५

नमिह गुप्त १८३

नपच्यन १५७

नेत्ररम्मानो प्रिन बलत १६

नेत्रकद नजर ७०

नेवो पोल्मम ६०

नेग ३३

नाम (कुट्ट या प्राण) २०, २३, २५५

नामाक २५'

नासम १७ २१८

नौकरादा २३	पा १५५
यूत्रिया २३ २६ ८८, ५१ ३००	पालमादरा १२३ १२४, १२५
यूमीडिया ८८, ९२	पिरम ८१ ८९
प	पिरामिड २१, २८
पत्र महायज्ञ १०६	पिम ३३
'पञ्च शुभगुणा' नामका का युग ११३	पिमिट्रेमन २३८
पञ्चाङ्ग १३६	पुराण २०३
पञ्चाव १६९, १७३ १७८	पुर २८८
पञ्चमी ६३	पुरपञ्च ३३
पञ्चपाथा ३५८	पुष्यमित्र १८०
पञ्च १२२	पूष २११
परमनीडाज २७०	पूर्वो गाय १३० १३२
परमनाइडीज २७८	पूर्वो हान ३५९
परगिया २९८ ३०१	पूमिजम ८८
परमुमा २९६	पट्टोणियन ७५ ७७ ७९ ९३ १२२
परमूआ २०५ २९७	पट्टोनियम १५१
परिनिर्वाण १९८	पनीटिअस १५०
परिवतनशीलता २७१	पनानिजा ११७
परगणी १७६	पपात्रस २५ २८, २९, ५१०
परमत्तीस २४९	पपीनियन १५५
परमिअम १५२	परा २०
परिपालिस २४७ २११	पराक्लाज २३८, २३९
परिचमा गाय १३०, १३२ १३३	परिणाडर २२१
पल्लव १८०	पेरीनाज ८६
पाश्चात्यास्त १५, २७०, २७, २७९	पलापानेसम २२५ २२८ २३०,
२८१	२३७
पाटलिपुत्र १७७ १९३ २०६, २१०	पापापानामियन लाग २३७ २४०
पाण्डस ९२	पेल्लेसेज ६५
पाण्डिफेकमभविममत १५७	पलस्टान ११२, ५५९ ३२३
पातिजा १८७	पापावर १८१
पाम्पिजाइ १११	पपी २१
पाम्प ९७ १००, १०४	पटन १८२
पारतक्क ३१९	पा ७३
पार्थिजा ९०, १२२ २९५, ३१९,	पाओरु २९८
३२३	पापनिजम १५१
पार्थियन १००, १०८	पार्लइ २६७
पार्थोनान २४०, २९२	पोलस १५७
	पाण्डिक्स २८३

पाणिनि २/४
 पाणिनीयम् १
 पौष्प १०/८
 पौष्प ८६ ८७ ८८
 प्रकृतिका १६०
 प्रकृतिका भाग ११/ १२ १३
 प्रकृतिका १२
 प्रकृतिका १०३
 प्रकृतिका ३८ १५४
 प्रकृतिका २३३
 प्रकृतिका - ६ २०३
 प्रकृतिका ३४ ३७ ३९ ४० १६०,
 १६६ १५०
 प्रकृतिका २६३ २६७ २७१ २७६ २८१
 प्रकृतिका १६७
 प्रकृतिका १६५
 प
 पत्ता ८६ ४८ ६४ ७० ११२
 १०० २४५
 पारसगण १०१
 पारस २, ३ ५ ४१, ६९, ७२, ९४,
 १२२ २४६ २९९
 पारसलिया १५२
 पारसियान २०८
 पारसियान २९३
 पारसियान १६९
 पारसियान ८९ ९०, २३१ २४३ २४५
 पारसियान २ ४२ ४६ ४८, ५७
 ६४
 पारसियान ३६७
 पारस ३३७
 पारस रामस ३५
 पारस २० २७ ३१ ४८, २४६ २४८
 पारसियान ६८, ५५ २४६, २८८
 पारसियान ६५, ७४ ८९
 पारस ९८

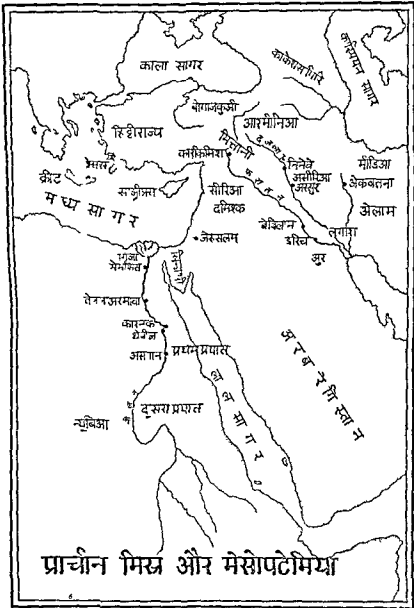
पारस १३१
 पारसियान १११ ११२
 पारसियान ११०
 प
 पारस १ ३
 पारसियान ८३
 पारसियान २
 पारस ४८ १२३ १०८ १३० १३६,
 २०० ३०१
 पारस १६/८
 पारसियान १०३ १०४
 पारसियान १२१
 पारस ६६
 पारसियान १०६
 पारसियान १३०
 पारसियान १३७
 पारसियान १०१
 पारस १०६ १०५
 पारसियान २३५
 पारसियान २८७
 पारसियान १६०
 पारसियान ८८
 पारसियान १४ १५ ३३ ४०, ५६,
 ६४ ६९ ७१ २५९ २९९
 पारसियानियान १ २ १२, १८ ५५
 ६० ९१ ३१६
 पारस १७
 पारसियान १२३
 पारसियान ९८
 पारसियान २४९
 पारसियान ३०७
 पारसियान २६० २६१ ३०५ ३१९
 पारसियान ३३, ३७, ४१
 पारसियान १९६
 पारसियान १५७
 पारसियान १७९ १८१, १८७, १८८
 १९४, १९८, २००

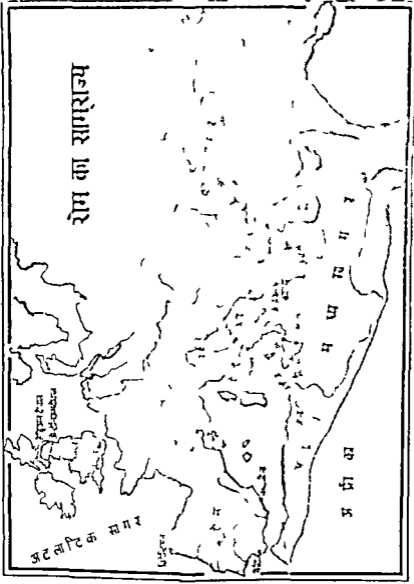
सेलमिम ३०५
 सला ९७
 सलिटम २३५
 सेमिम २३६
 सल्युकन ९१ १७८, २५३, २५८,
 २५९
 सवान ७६
 सदृप ३१७
 सालन २३३ २३४
 साशलिस्ट १३५
 सौर वप २४
 स्काडियन १, २, २९८ ३०१
 स्वाटगण्ड ११२
 स्कप्टिकम मत १६४
 रटारियम १५१
 स्टिल्को १३३
 स्टार्क मत १५९
 'स्टाड्ज्म' २७८
 'स्थानिक' २११
 स्पाटा ७२, २२५ २६०, २६३, २६६
 स्पाटा मम्मलन २२९
 स्पन ८२ ८६, ८७, १०१ १०५ १११
 स्मरना ७१
 स्याम ३६०
 स्वणभूमि १८१
 स्वणयुग १५५, १८३, २४०, २७२
 २९०

ह

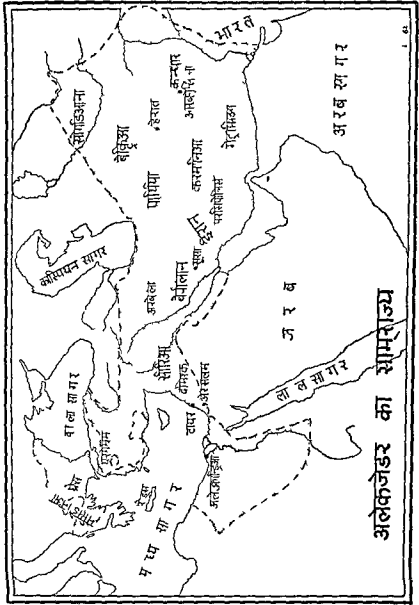
हमरी १७५
 हरवमन २९५
 हटवटार्ड ९९
 हत्तमम ३२ ३३
 हतिरलिम ३३
 हागदग १९
 हासी ४८, १७५
 हमदान २९६ २९८
 हम्मगवी १२, १३, १६

ह्यकिंकुल १७७
 हरमहरव ६७
 हरमीज २८४
 हरक्यगीज २५०
 हरप्पा १७० १७५
 हरिअन २९५ }
 हरियन ३४ }
 हर्ग ४२
 हल्य ३३ ३४
 हलिजस गदी ९१
 हलीस ३२
 हल्दी घाटी २३६
 हस्तिनापुर १७६
 हाइरोग्लिफिक २९
 हाल १ १९४
 हानवश ३५३
 हानवूती ३५४
 हालिस ७१ २९८, ३०६
 हागपमत ४४
 हि जगनू ३६५ ३६८
 हिकसीस ३१ ४४ ४९, ५५
 हिट्टी १३ १४ ३८ ४२ ४८, ५५
 ५६ २९५
 हित्तुसस ३७, ४०
 हि हूकुश २०६ ३२७
 हि हूवम २०२ २०३
 हिपिजस ३०२
 हिप्रावेटस २७९
 हिन्नू ३६, ६१, ६३ ६५ ६७
 हिगत २९६
 हिगकल्स १२०
 हिगक्लाटस २७४
 हिरोकिलस २७९
 'हिसारलिक' २२३
 हिस्तू या खतू ३२
 हीनयान २०२
 हुग ३८१
 'स्फी' २७०

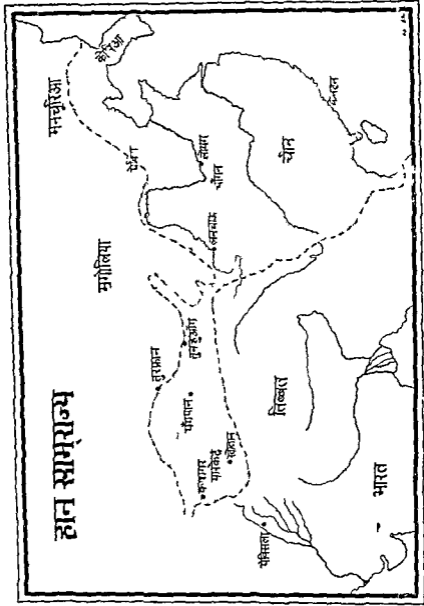




मान चित्र १०२



अलेकजेडर का साम्राज्य

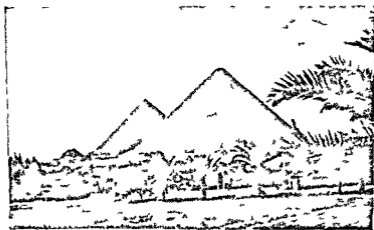




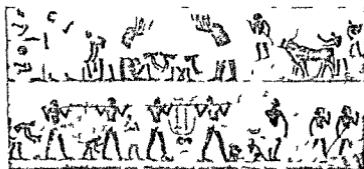
१ राजपुरोहित मुडिया (प० ५)



२ सघाट नरमेर (प० २०)



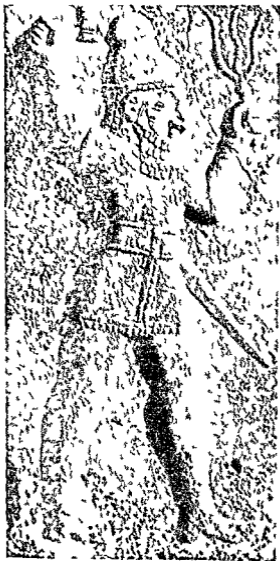
गोसा का पिरामिड (प० २१)



४ प्राचीन मिस्र में कृषकी द्वारा अनाज की मंडाई, ओसाई और दुलाई (प० २२)



५ हिंदी गिलालेख (प० ३२)



६ ऋतुपति देवता तेशव (पृ० ३९)

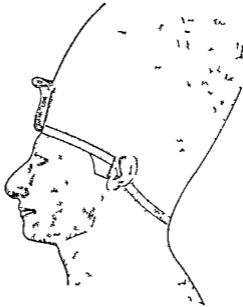


७ सम्राट इखनातोन और उसकी पत्नी सूर्यदेव की जासती उतारते हुए (प० ४५)



८ सम्राट तुताखामन और उसकी पत्नी (प० ४७)

(८)



९ दिग्विजयी सम्राट थटमोसिस ततीय (पृ० ४९)

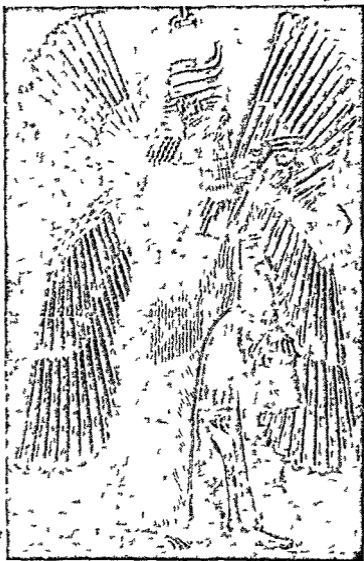


१० एमोन रे क विशाल मन्दिर (प० ५४)





१२ निनबह में सारगन राजमहल के समीप मनुष्य के चेहरे
और पाँच परोवाला बल (प० ५९)



१३ चार पखावाला जसोस्त्रियन देवता (प० ६१)



१४ सुपविम्बयुत जीवनतरु पर जाह्नुड अश्मुर देवता (प० ६१)



१५ सुप्रसिद्ध विजेता जूलियस सीजर (पृ० ९९)



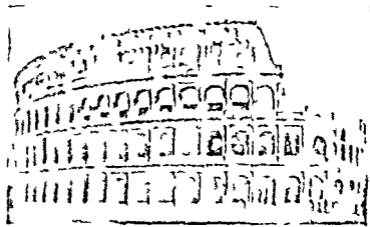
१६ सिसरो (पृ० १०५)



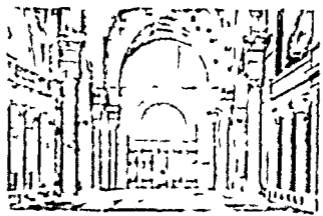
१७ रोमन साम्राज्य निर्माता आगस्टस सीजर (५० १०७)



१८ सम्राट हेड्रियन को समाधि (प० ११५)



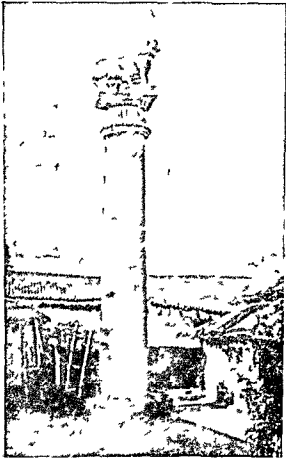
१९. बालिनियम रणपाला (पृ० १६५)



२०. बालिनियम रणपाला (पृ० १६५)



२१ मोहनजोदडो से प्राप्त मोहरें (पं० १७३)



२२ अशोक का वसाह बालिरा सिंहस्तम्भ (प० १७९)



२३ रामपुरवा का स्तम्भ शीष



वयम्बस्तम्भ शीष



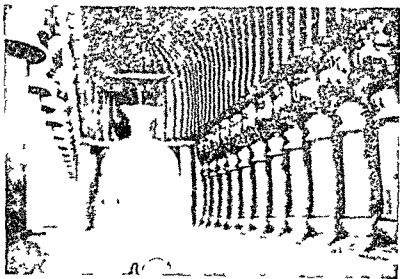
सारनाथस्तम्भ शीष
(प० १७९)



२४ गाधारकला के बुद्ध (प० १८१)



२५ साची का स्तूप (प० १९५)



२६ कालिका का चत्य (प० १९५)



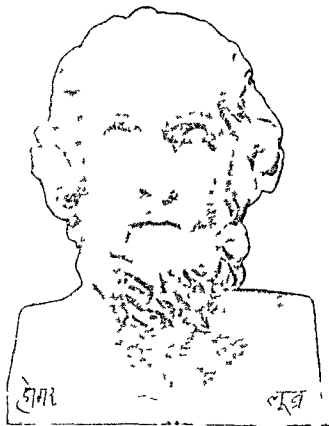
२७ पेरिक्लोज (प० २३९)



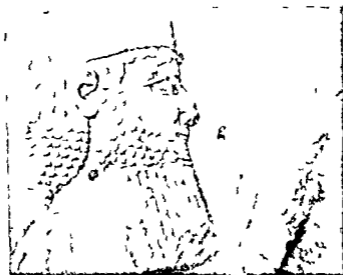
२८ प्लेटो तथा अरस्तू (प० २७१)



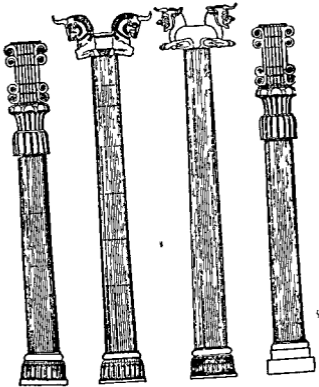
२९ मुकरात (पृ० २७३)



३० होमर (प० २८८)



३१ वारा महान की मूर्ति (प० ३०१)



३२ पसिपोलिस के स्तभ (प० ३११)



३३ जरयुष्ट (पृ० ३१२)



३४ पक्षघर अहुरमज्दा (पृ० ३१४)



३५ सम्राट गापुर से प्रथम रोमसम्राट क्षमा माग रहा है (पृ० ३३०)